चिकित्साचन्द्रोदय

दूसरा भाग

स्वास्थ्यरक्षा, अँगरेजी शिक्षा, हिन्दी बँगला शिक्षा
प्रभृति पुस्तकों के लेखक और गुलिस्तां
प्रभृति कितनी ही पुस्तकों के
अनुवादक

बाबू हरिदास वैद्य

द्वारा लिखित



प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता
७, गौरमोहन मुखार्जी स्ट्रीट के "रुद्र प्रेस" में
बाबू सूर्यकुमार माझा द्वारा
मुद्रित।

सितम्बर सन् १९२२ ई०

दूसरी बार २०००

मूल्य { अजिल्द का ५) / सजिल्द का ५।।।)

वर्तमान संस्करण पर दो चार बातें।

थोड़े ही समय में "चिकित्सा चन्द्रोदय" के पहले और दूसरे भागों के दूसरे संस्करण हो जाने से मेरे हृदय में जो आनन्द की मौजें उठ रही हैं, उनको मैं लिख कर बता नहीं सकता। यह सब इष्टदेव आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र की कृपा का ही फल है, जो मेरे जैसे मामूली लेखक की लिखी पुस्तकों की हिन्दी-संसार में ऐसी कद्र हुई। अतः सबसे पहले मैं अपने इष्टदेव को ही धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। यद्यपि उन जगदात्मा भगवान् की कृपा से ही हिन्दी-प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को हाथों-हाथ खरीदकर मेरा और प्रकाशकों का उत्साह बढ़ाया है तथापि मैं उन्हें भी धन्यवाद से कोरा नहीं रख सकता। अगर जगदीश और पाठकों की ऐसी ही शुभ दृष्टि रही, तो इस ग्रन्थ का चौथा भाग भी शीघ्र ही निकल सकेगा, तीसरा तो अभी प्रकाशित हो ही चुका है। रंग-ढंग देखने से तो यह आशा दृढ़ ही होती है।

मेरा विचार इस संस्करण में कितनी ही कमियों को पूरा कर देने का था, पर अनेक पाठक इस बात को पसन्द नहीं करते। उन्हें थोड़ी सी वृद्धि के लिये फिर व्यय करना पड़ता है। इसी से मैं अपने विचार को कार्य में परिणत न कर सका। साथ ही अवकाश न होने से इसकी पुरानी त्रुटियों को भी दूर न कर सका क्योंकि मुझे प्रूफ संशोधन का भी मौका नहीं मिला। आशा है, पाठक मुझे क्षमा करेंगे। जिस तरह उन्होंने पहले दोनों भाग खरीद कर प्रकाशकों का दिल बढ़ाया था, उसी प्रकार इस बार तीनों भाग खरीदकर प्रकाशकों को उत्साहित करने से न चूकेंगे। इस कृपा के लिए लेखक और पब्लिशर यावज्जीवन उनके आभारी रहेंगे।

कलकत्ता
२२-६ }

विनीत—
हरिदास।

निवेदन।

गत जनवरी सन् १९२० ई०में, मैंने अपने प्रेमी पाठकोंके अनुरोधसे "चिकित्साचन्द्रोदय" का पहला भाग लिखा था। वह मैंने धड़कते हुए दिलसे लिखा था। अनेक बार कह चुका हूँ कि, मैं कोई विद्वान् नहीं, बिल्कुल मामूली आदमी हूँ, इसीसे मुझे अपनी लिखी पुस्तकोंके सम्बन्धमें खटका रहा करता है। पर न जाने क्यों, पबलिक मेरी लिखी पुस्तकोंको बड़े चावसे खरीदती और पढ़ती है। मैं तो इसे सकटहारी दीनबन्धु दयासिन्धु आनन्दकन्द कृष्णचन्द्र की कृपा और सहृदय हिन्दी प्रेमियोंकी महानुभावता ही समझता हूँ। जिस तरह सज्जनोंने 'स्वास्थ्यरक्षा" की एक जमानेमें भूरि भूरि प्रशंसा की थी, उसी तरह अनेक हिन्दी प्रेमियोंने "चिकित्साचन्द्रोदय" के प्रथम भागकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की और दूसरे भागको जल्दी ही प्रकाशित करनेके लिये अतीव ज़ोर दिया। अपने प्रेमी पाठकोंकी आज्ञापालन करनेके लिये ही, शक्ति सामर्थ्य और विद्या-बुद्धिका अभाव होते हुए भी, मैं ने दूसरा भाग लिखकर नरसिंह प्रेसके मैनेजर महाशय को दे दिया और उन्होंने कृपा करके इसे शीघ्र ही प्रकाशित कर दिया। इसलिये मैं बाबू रामप्रतापजी भार्गव महोदयका बहुतही आभारी हूँ।

आजतक "ज्वर चिकित्सा" पर बहुतसे ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं, पर मेरी राय नाकिस में प्राय सभी अधूरे हैं। कोई भी ऐसा ग्रन्थ मेरी नजरसे नहीं गुजरा, जिसे पढ़कर कोई "ज्वर चिकित्सा"में पूर्ण

पण्डित हो जाय और इस विषयके लिये उसे और किसी ग्रन्थके देखने की आवश्यकता न हो। प्रत्येक मनुष्यसे यह हो नहीं सकता, कि वह सभी ग्रन्थोंको देखकर उनका मर्म हृदयङ्गम कर ले। इसलिये अनेक लोग एक दो पुस्तक पढकर ही इलाज जैसी जिम्मेवरीका काम करने लगते हैं, पर सभी बातोंको न जाननेकी वजहसे अनेक स्थलोंमें धोखा खाते हैं, कदम-कदम पर नाकामयाब होते हैं और प्राणियोंके दुष्प्राप्य जीवनको वृथा नाश करके रौरव नरकके दण्ड-भागी होते हैं।

अक्सर साधारण वैद्य, खासकर ज्वर-चिकित्सामें बडी कठिनाइयोंका सामना करतें हैं। सभी रोगोंमें ज्वर राजा है और उसकी चिकित्सा भी बडी कठिन है। जो ज्वरकी चिकित्सा अच्छी तरह कर सकता है, वह प्राय सभी रोगोंकी चिकित्सा कर सकता है। मतलब यह हैं, कि ज्वर चिकित्सामें सबसे अधिक विद्या, बुद्धि और अनुभवकी जरूरत है। मैं ने इस कठिनाईका अनुभव स्वयँ करके, आज २० सालके अनुभवके बाद, यह ग्रन्थ लिखा है। ज्वर-सम्बन्धी कोई विषय, जहाँ तक मेरे दिमाग़ ने काम किया है मैं ने नही छोडा है। समझानेके लिये, एक एक बातको दो दो और तीन-तीन जगह लिखने और उसे बढाकर लिखनेमें आलस्यसे काम नही लिया है। आशा है वे लोग जो बिना गुरुके, चढी उम्रमें, आयुर्वेदके एक दो ग्रन्थ योंही देखकर चिकित्सा करने लगते हैं और सफल-मनोरथ नहीं होते, इस ग्रन्थको आद्योपान्त पढ कर" ज्वर-चिकित्सा" में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। ज्वरके सम्बन्धमें उन्हें और किसी भी ग्रन्थके देखनेकी जरूरत न होगी।

ज्वर-चिकित्साके सिवा, मैंने इस भागमें "बाल चिकित्सा" भी लिख दी है, यानी इस भागमें "बालकोंके प्राय सभी रोगोंके

स्त्रियोंके भी ज्वर तथा अतिसार आदि चन्द रोगोंकी चिकित्सा पूर्णरूप से लिखी गई है। इसके सिवा, चन्द अङ्गरेजी ज्वरों—जैसे टाइफॉइड ज्वर, टाइफस ज्वर और न्यूमोनिया प्रभृति के लक्षण और उनकी चिकित्सा, जहाँ तक मुझे मालूम थी और जो प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थोंमे मिल सकी इसमे लिख दी है। मैं ने स्वयं "रस-चिकित्सा' से बहुतही कम काम लिया है, पर जितना काम लिया है और जितना जानता हूँ, उससे अधिक ही इस ग्रन्थमें मैं ने लिखा है, यानी प्रसिद्ध प्रसिद्ध ज्वरनाशक रसोंका जिक्र जहाँ-तहाँ मैं ने इस ग्रन्थमें कर दिया है। इस पुस्तकमें जितने रस लिखे गये है, उनके तैयार करनेकी विधि मैंने बहुतही अच्छी तरह समझाकर लिख दी है। रस वैद्यको रस तैयार करनेमें अनेक द्रव्योंके शोधनेकी जरूरत होती है इसलिये काममें आनेवाली चीजोंके शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें, स्पष्टरूपसे, लिख दी है। जो रस मेरे परीक्षित हैं और जिस तरह मैंने उनसे काम लिया है, वे सभी बातें मैंने दिल खोल कर इस तरह लिख दी हैं कि, कुन्द-जहन से कुन्द-जहन भी उन्हें आसानीसे बनाकर काममें ला सकेगा और परिणाममें यश और धन अर्जन कर सकेगा।

इस पुस्तकमें एक और खूबी की गयी है; वह यह कि, हर प्रकार के ज्वर या रोग पर एक दो और कहीं कहीं चार छै नुसखे परीक्षित या मुजर्रब लिख दिये गये हैं। चिकित्सकोंको ऐसे नुसख़ोंकी बड़ी जरूरत रहती है। ऐसे नुसख़ोंको वे आँख बन्द करके काममें ला सकते हैं, क्योंकि आजमूदा नुसखे अकसर अकसीरका काम करते हैं। जिन नुसखोंके साथ "परीक्षित" शब्द लिखा हुआ है, वे मेरे कितनी ही बारके आजमाये हुए हैं। परीक्षितोंके सिवा, मैंने प्रत्येक प्रकारके रोग या ज्वरपर अपरीक्षित या विना आजमाये नुसख़े भी लिखे हैं। इसकी वजह यह है, कि बाज बाज मौकोंपर अपरीक्षित योग परीक्षित योगोंसे अच्छे निकल जाते हैं। सभी रोगोंके मिजाज

यकसाँ नहीं होते, इसीसे जिस नुसखेसे एकको आराम होता है, कभी-कभी दूसरेको उससे आराम नही होता, इसीसे महर्षियोंने एक एक रोग पर हजारों योग या नुसखे कहे हैं और मैं ने भी इसी विचारसे परीक्षितोंके सिवा अपरीक्षित योग भी लिखे हैं। इसमें शक नहीं कि परीक्षित या मुजर्रब नुसखे प्राय ७५ या ८० फी सदी रोगियोंको आराम करते हैं।

मैंने अपनी ओरसे इस ग्रन्थको सर्व्वाङ्गसुन्दर बनानेमें कोई बात उठा नही रक्खी है, पर मेरी अल्पज्ञता या कम इलमीकी वजहसे इसमें अनेक दोषों और त्रुटियोंका रह जाना सम्भव है, इसलिये मैं अपने पाठकोंसे नम्रता पूर्वक क्षमा प्रार्थना करता हूँ। आशा है, उदारहृदय सज्जन मुझे क्षमा प्रदान करनेमे सकोच न करेंगे। मैंने यह ग्रन्थ अपना पाण्डित्य दिखानेकी गरजसे नही लिखा है। लोगोंके पण्डित कहने पर भी, मैं अपने तईं पण्डित नही समझता और सच्ची बात तो यही है कि, मैं पण्डित शब्दका मुस्तहक भी नही, क्योंकि पण्डित बननेके लिये पाण्डित्यकी जरूरत है और वह मुझमें जरा भी नहीं। यहाँ यह सवाल खडा होता है, कि वैद्यक विद्याके पूर्ण विद्वान् या पण्डित न होनेपर भी, मैंने यह ग्रन्थ क्यों लिखा है? केवल इसलिये कि, लोग अकाल मृत्युसे अपने दुष्प्राप्य जीवनको वृथा न खोवे। अनाडी वैद्य अपने पापी पेटके लिये जनसहार करनेसे बाज आवे—थोडा बहुत सीखकर ही चिकित्सा-कर्म जैसे जिम्मेनारीके काममें हाथ न डाले। हिन्दीमे अभी तक ऐसी एक भी पुस्तक मेरी नजर तले नहीं आई, जिस एक पुस्तकके देखनेसे ही किसी रोग विशेषके निदान, लक्षण और चिकित्साका यथेष्ट ज्ञान हो जाय। लोग अभाववश "अमृतसागर" आदि मामूली ग्रन्थोंको देखकर चिकित्सा करने लगते हैं, मगर एक दो मामूली ग्रन्थोंके देख पढ लेनेसे चिकित्सा करना आ नहीं जाता। बकौल सुश्रुत महाराजके, कि

जो विषय एक ग्रन्थमें लिखा है, वह दूसरेमें नहीं और जो दूसरेमें लिखा है वह तीसरेमें नही , इसलिये चिकित्सकको अनेक शास्त्रोंका अध्ययन करना चाहिये। पर हमारे सभी आयुर्वेद ग्रन्थ संस्कृतमे हैं। जो लोग संस्कृत नही जानते, वे उनसे कोरे रहते हैं। यद्यपि सभी ग्रन्थोंके हिन्दी अनुवाद हो गये हैं, पर वे अनुवाद भी ऐसे हैं, जिन्हें थोड़े पढ़े लिखे समझ नही सकते- उनके समझनेके लिये भी खासे पाण्डित्यकी जरूरत होती है। इसके सिवा, प्राचीन ग्रन्थोंमें रोगोंका सिलसिला भी ठीक नही। एक बात आरम्भमें है तो उसी विषयकी दूसरी बात अन्तमें है, तीसरी बात एक ग्रन्थमें है, तो चौथी अन्य ग्रन्थमें। इससे सभी ग्रन्थोंको आदिसे अन्त तक पढ़नेकी जरूरत है, किन्तु सभी ग्रन्थोंके पढने समझनेके लिये समयकी जियादा दरकार है। इसलिये बाकायदा तालीम पानेवाले वैद्य महाशयोंके सिवा, चिकित्सा-कर्म करके पेट भरनेवाले अन्य लोग दो एक ग्रन्थ देखकरही कार्य्यारम्भ कर देते हैं। इसका जैसा खोटा परिणाम होता है, वह समझदारोंसे छिपा नही है। इन्ही सब कारणोंसे, मेरे जैसे अल्पज्ञने बौना होते हुए भी चाँद छूनेका प्रयास किया है। मैंने सोचा कि, जब पण्डित लोग इस कामको करना ही नहीं चाहते, तब मैंही यदि अपनी अल्पमतिके अनुसार कुछ करूँ तो क्या दोष है? "अकरणान्मन्द करण श्रेय "के न्यायानुसार ही इस दुस्तर महासागरमें कूद पडा हूँ। भरोसा है भक्तवत्सल भगवान् कृष्ण मुझे पार लगायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है, कि उनकी सहायताका भरोसा करके जो काम किया जाता है, वह अवश्य सफल होता है।

यद्यपि मैं इस ग्रन्थके प्रत्येक भागको इस ढँगसे लिख रहा हूँ कि इसके पढ लेनेपर दूसरे ग्रन्थ की आवश्यकता न हो, पर मुझे यह नही मालूम कि मुझे इसमें सफलता हो रही है या नहीं। सफलता असफलता का निर्णय विद्वान् लोग ही कर सकते हैं।

यह कह देनेमें भी हर्ज नही कि, मैं इस कठिन कामको केवल स्वार्थ-साधन ही के लिये नही कर रहा हूँ। जो विद्वान् मेरी इस बात पर विश्वास करें, उन्हें, मेरी और जगत् की भलाईके लिये, इस काममें मेरा हाथ अवश्य बँटाना चाहिये—मेरी वास्तविक भूलोंसे मुझे आगाह कर देना चाहिये। जो परोपकारी सज्जन मुझे मेरी सच्ची भूले बतायेंगे, उनका मैं बहुत कुछ एहसान मानूँगा और वास्तविक भूलोंको सधन्यवाद, भूल बतानेवाले सज्जनोंका नाम देकर, अगले सस्करणमें दुरुस्त कर दूँगा।

इस ग्रन्थके लिखनेमें चरक सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश बँगसेन, चक्रदत्त, शार्ङ्गधर, वैद्यजीवन, वैद्यविनोद, योग चिन्तामणि, रसायन-सार प्रभृति अनेक प्राचीन और आधुनिक कोई ४० ग्रन्थोंसे मैंने सहायता ली है। सच तो यह है, कि, जो कुछ इस ग्रन्थमें है,वह सब प्राचीन आचार्य्यों का है, मेरा तो ढँगमात्र है। आजकलके कई ग्रन्थोंसे भी बराय नाम सहायता ली गई है, इसलिये उनके लेखकोंका भी मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगा। मुरादाबादके "वैद्य" और अहमदाबादके "वैद्य कल्पतरु"के स्वामी और सम्पादक महोदयोंने अपनी स्वाभाविक उदारतासे, बिना किसी प्रकारकी हील हुज्जतके, मुझे अनुभूत योग लेनेकी आज्ञा प्रदान की थी, उसके लिये मैं उक्त दोनों उदार सज्जनोंका आजीवन आभारी रहूँगा, पर इस बातके कह देनेमें हर्ज नही है कि, मैंने उक्त दोनों सज्जनोंकी आज्ञा जिस ग्रन्थके लिये ली थी, वह ग्रन्थ मैंने अभी नही लिखा है। इस भागमे आठ या दस योग मलेरिया ज्वर पर, "वैद्य" से लिये हैं और "कल्पतरु" से १०१५ पंक्तियाँ मात्र ली हैं। अधिक मसाला लेनेकी आवश्यकता नही पड़ी।

मेरा निवेदन बहुत लम्बा-चौड़ा हो गया है, पर दो तीन महोपकारी परम दयालु सज्जनोंको धन्यवाद दिये बिना इसको समाप्त करनेसे मैं अपनी आत्माके सामने कृतघ्नताका अपराधी ठहरूँगा, इसलिये उनके सम्बन्धमें भी दो चार बातें कह देना परमावश्यक है। सुनिये, गत

जनवरी १९२० में, मैं ने इस ग्रन्थका पहला भाग लिखा था। वह कारणवश इतनी जल्दीमें लिखा गया था, जिसका कोई हिसाब नहीं। उन दिनों, मैं एक घोर विपद्में फँसा हुआ था। मेरे चन्द भाई मुझसे अकारणही ऐसे नाराज हो गये, कि उन्होंने मुझे या इस कम्पनीको रूए जमीनसे उठा देनेके लिये एक जबर्दस्त षड्यन्त्र रचा। इस दल में अनेक लोग शामिल किये गये। मेरे साथ सच्ची दोस्तीका दम भरनेवाले, मुझे घनिष्ट मित्र समझनेवाले, मेरे लिये समयपर जमीन जायदाद, अपना सर्व्वस्व और जान तक दे देने की डींग मारनेवाले प्राय सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भावसे उस दलमें जा मिले। जब मुझे अपनी किश्तीके मँझधारमें डूबजानेमें कोई भी सन्देह न रह गया, तब मैंने अशरणशरण अनाथनाथ दीनबन्धु भगवान् कृष्ण से पुकार की। क्योंकि जिसे कोई आश्रय नहीं रहता, जो सब जगह से निराश हो जाता है, वह भगवान्कोही शरणमे जाता है और वह भक्तवत्सल उसकी रक्षाके लिये अविलम्ब तैयार हो जाते हैं। यद्यपि मैं कोई भजनानन्दी भक्त नहीं, तोभी उन्हें मेरी बेबसी पर दया आई। कहते हैं, भगवान् स्वय नहीं आते, पर वे अपने आश्रितों— अपने शरणागतोंकी रक्षा किसी न किसी तरह करा ही देते हैं। यह पौराणिक बात राई रत्ती सच है, इसमें सन्देह की जरा भी गुंजाइश नहीं। नीचेकी चन्द पक्तियोंसे यह बात प्रमाणित हो जायगी।

यद्यपि मैं अपनी विपद्से मुक्ति पानेके लिये कई सालोंसे प्रयत्न कर रहा था, पर बिना सभी साधन प्राप्त हुए किसी काममें सफलता नहीं होती। अब मैं ने देखा कि, देर करनेसे शत्रुओंकी बन आयेगी, मैंने औरभी जोरदार उपायोंसे काम लिया। भगवान्की कृपासे ही, भारतके वर्त्तमान कर्त्ताधर्त्ता (अब भूतपूर्व्व) विधाता श्रीमान् वाइसराय लार्डचेम्सफर्ड महोदयने मेरे जैसे तुच्छ मनुष्यकी पुकार, बिना किसी सिफारिशके आनन फानन सुनी और मुझे सब तरहसे अभय किया। उन्हीं की कृपासे, मैं आनन्दपूर्व्वक इस ग्रन्थको लिख सका हूँ। मेरी

अन्तरात्मा आपको आशीर्व्वाद देती है और सदा देती रहेगी। अगर जिन्दगी रही और दैवानुकूल रहा, तो मैं अपनी ओरसे ऐसा प्रयत्न करनेमें कोई बात उठा न रखूँगा, जिससे श्रीमान् वाइसरायका शुभ नाम आनेवाली सैकड़ों हजारों शताब्दियों तक लोगोंकी ज़बान पर रहे—भारतके झोपड़े-झोपड़ेमें आपका गुणगान किया जाय। इतना करने और कर सकने पर ही शायद मेरी अन्तरात्माको शान्ति मिले। सच्चा हिन्दू मैं उसे ही समझता हूँ, जो अपने उपकारीके उपकारको न भूले। आपने मेरे साथ वह भलाई की है, जो मेरी जैसी स्थितिके बहुत कम भारतवासियोंको किसी वाइसरायसे नसीब हुई होगी। परमात्मा आपको चिरायु करे और आप इस पदसे भी उच्चपदकी शोभा बढ़ावे। एक और अत्युच्चपदासीन अङ्गरेज सज्जनने भी मेरी विपद्में मुझे बहुत सहारा दिया है। मेरे साथ ऐसे अच्छे सलूक किये है, जिन्हे मैं आजीवन न भूलूँगा। इन सज्जनोंके सिवा सुविख्यात धनकुबेर सदासुख गम्भीरचन्दकी फर्मके मालिक धनीमानियोंमें अग्रगण्य परोपकारपरायण, दयालुप्रकृति, परम उदार श्रीमान् बाबू कस्तूरचन्दजी कोठारी महोदयने भी मेरा अच्छा साथ दिया है—मुझपर बड़ी कृपाये की हैं, इसलिये मै आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ। ऐसे आदर्श सज्जनोंसे ही संसारकी शोभा है। इस विषयमें, परमात्मा चाहे, तो मै फिर किसी समय विस्तारसे लिखूँगा।

विनीत—

हरिदास।

विषय-सूची

पहला अध्याय ।



दूसरा अध्याय।



तीसरा अध्याय ।



पाँचवाँ अध्याय ।



छठा अध्याय ।



चौथा अध्याय।

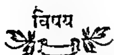


पाँचवाँ अध्याय।



छठा अध्याय।



विषय  पृष्ठ 

सातवाँ अध्याय ।



विषय | पृष्ठ

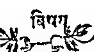



आठवाँ अध्याय।



नवाँ अध्याय।







दशवॉ अध्याय।

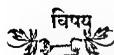
पृष्ठ	विषय
२६५	…ाद मां
२६५	
२६६	
२६६	
२६६	
२६७	
२७०	
२७१	
२७१	
७	

ग्यारहवाँ अध्याय ।



बारहवाँ अध्याय ।

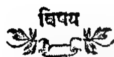
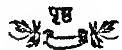



विषय


पृष्ठ

तेरहवाँ अध्याय ।



विषय  पृष्ठ 

चौदहवाँ अध्याय ।



पन्द्रहवाँ अध्याय ।



विषय | पृष्ठ

सोलहवाँ अध्याय।

सत्रहवाँ अध्याय।

अठारहवाँ अध्याय।

उन्नीसवाँ अध्याय।



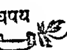
विषय	पृष्ठ
दुग्धकोद्रवा माता	४३७
हाम माता	४३८
चमरगोटी माता	४३८
शीतलाकी साध्यासाध्यता	४३८
यूनानी मतसे माताके सम्बन्धमे दो चार बातें	४३८
डाक्टरीसे शीतलाका वर्णन ..	४३९
म्योरेला (खसरा)	४३९
चिकन पाक्स (दूसरा खसरा)	४३९
स्मालपाक्स (शीतला)	४४०
चिकित्सा	४४०
मसूरिका और शीतला की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	४४१
शीतलाकी चिकित्सा	४५०
शीतलाको रोकनेवाले उपाय	४५०
शीतलाके पूर्वरूपकी चिकित्सा	४५२
शीतलाकी शान्तिके उपाय	४५२
मसूरिका नाशक लेप	४५५
निकली हुई माता रुकजाय, उसके निकालनेके उपाय	४५८
मसूरिक (माता) के पकानेके उपाय	४५९
माताको सुखानेके उपाय	४६०
माताका दाह नाश करनेके उपाय	४६१
माता रोगीको पथ्य	४६१
माताके बाद (कर्त्तव्य)	४६१

बीसवाँ अध्याय ।



बाल रोग चिकित्सा	४६२

विषय | पृष्ठ


वषय


पृष्ठ

॥ श्रीः ॥

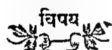
चिकित्सा चन्द्रोदय

दूसरा भाग।

पहला अध्याय

ज्वरकी उत्पत्ति और भेद।

ज्वर रोगोंका राजा है।


विषय


पृष्ठ


सूची समाप्त

॥ श्रीः ॥



दूसरा भाग ।

पहला अध्याय

ज्वरकी उत्पत्ति और भेद ।

ज्वर रोगोंका राजा है ।



सारमे परमात्माने जितने रोगोंकी सृष्टि की है, उनमें ज्वर सबसे बलवान और सबका राजा है। यों तो मनुष्यके प्राण नाश करनेवाले, उसे भयङ्कर कष्ट देनेवाले क्षय, यक्ष्मा, गुल्म अर्श, भगन्दर, उन्माद, प्रमेह, अपस्मार—मृगी प्रभृति अनेक रोग हैं, पर ज्वर की समता करनेवाला, उपद्रव पर उपद्रव पैदा करनेवाला, अनेक प्रकारके रोगोंका जन्म देनेवाला, चिकित्सा में बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित करनेवाला, जन्मकाल से मरणकाल तक प्राणी के साथ रहनेवाला और रोग नहीं है, इसीसे ज्वरको सभी प्राचीन मुनियोंने "रोगराज" कहा है।

"सुश्रुत उत्तर तंत्र" में लिखा है ——

जन्मादौ निधने चैव, प्रायो विशति देहिन ।
अत सर्व विकाराणामय राजा प्रकीर्तित ॥

"पैदा होनेके समय से मरने के समय तक ज्वर प्राय. प्राणी के शरीर में रहता है, इससे ज्वरको सब रोगोंका राजा कहा है।" "चरक" में लिखा है —" जीवके जन्म लेनेके समय ज्वर रहता है और उसके मरनेके समय भी ज्वर रहता है। जन्मकालमें ज्वर रहता है इसी से प्राणी अपने पूर्वजन्म की बात भूल जाता है। शेषमें, ज्वर ही प्राणियोंके प्राण नाश करता है।" दुनियामें यह बात मशहूर है, कि कोई रोग क्यों न हो, देह छुटते समय ज्वर आही जाता है, इसीसे प्राणी उस समय जो भयङ्कर दृश्य देखता है, उसका वर्णन नहीं कर सकता। ज्वरके वेगके मारे मनुष्य बेहोश हो जाता है, गला रुक जाता है, जबान बन्द हो जाती है. उस समय यदि वह कुछ कहना भी चाहता है, तो कह नहीं सकता। मृत्यु समय ज्वर होता है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। "हारीत संहिता" मे लिखा है .—

ज्वरेण मृत्युर्विज्ञेयो न मृत्यु स्याज्ज्वरं विना ॥

"ज्वरसे मृत्यु होती है, विशेष कर ज्वर बिना मृत्यु नहीं होती।"

मनष्य ही ज्वरको सह सकता है।



ज्वर सभी प्राणियोंको होता है, पर मनुष्योंके सिवा और प्राणी इसका वेग नहीं सह सकते। कर्मफलोंसे मनुष्य देवत्व लाभ करता है। जब उसके पुण्यकर्मोंका अन्त हो जाता है, तब वही स्वर्गसे गिर कर मनुष्य-देहमे आता है, इसलिये मनुष्य मे देवांश रहता है। उस पहलेके देवांश के कारण ही, मनुष्य ज्वरके भयानक वेग को सह सकता है। पशु पक्षी आदि और प्राणी ज्वरको नहीं सह

सकते। यदि उनको ज्वर आता है, तो उनकी मृत्यु हो हो जाती है। गाय, भैंस और घोड़ा हाथीमें ज्वर असाध्य समझा जाता है। मनुष्योंमें ज्वर कष्टसाध्य, किन्तु और जीवोंमें प्राणनाशक ही समझा जाता है।

ज्वर पूर्व्वजन्मके पापोंका फल है।



"चरक"मे लिखा है—"ज्वर निर्दोष प्राणीको नहो आता। जिन्होंने पहले जन्ममें पापकर्म या बुरे कर्म किये हैं उन्हींको ज्वर सताता है, इसीसे ज्वर को ज्वर, क्षय, तम, पाप और मृत्यु कहते हैं।

ज्वरोंसे रोगोंकी उत्पत्ति।



"हारीत संहिता"में लिखा है—"अधिक मिहनत करने, कसरत न करने, चिन्ता करने, शोक करने, भय करने, क्रोध करने एवं औषधियोंकी गन्ध और विशेष कर धातुक्षयसे, कोठेकी अग्निको निकालकर, त्वचामें रहनेवाले रक्त पित्त ज्वरको पैदा करते हैं। उस ज्वरसे मन्दज्वर होता है। मन्दज्वरसे अति मन्दज्वर होता है। उस बहुत ही बारीक ज्वरमें रोगी, ज्वरको ज्वर न समझ कर, खट्टी चीजें जियादा खाता है, तो उसे कामला रोग हो जाता है। कामलासे हलीमक पैदा होता है। हलीमकसे पाण्डु—पीलिया होता है। राजरोगसे सूजन, सूजनसे उदर रोग, उदर रोगसे वातगुल्म—वायु-गोला, वातगुल्मसे श्वास और शूल रोग होता है। शूलसे मन्दाग्नि और मन्दाग्निसे स्वरभेद होता है। मतलब यह कि, ज्वरसे इन सब रोगोंको उत्पत्ति होतो है और अन्तमें ज्वरसे मृत्यु होती है। और भी कहा है—ज्वरसे रक्तपित्त होता है। ज्वर और रक्तपित्तसे श्वास होता है। दाह बढनेसे जठर रोग होता है। जठर रोगसे सूजन

होती है। अर्श या ववासीरसे पेटमें दर्द और गोला होता है। जुकामसे खाँसी, और खाँसी से क्षय होता है। इस तरह एक रोग दूसरे रोगका कारण होता है, पर ज्वर प्राय, अनेक रोगोंका कारण होता है।

मतलब यह कि ज्वर वनराजकी तरह रोगराज है और दुश्चिकित्स्य है। इसकी चिकित्सामें बडी होशियारी की जरूरत है। जरा सी भूलसे ज्वर विगड कर विषमज्वर अथवा सन्निपात ज्वरका रूप धारण करता है। सन्निपातज्वरसे कोई विरला ही भाग्यवान बचता है। क्योंकि सन्निपात ज्वर और मृत्युमें कोई भेद नहीं। जो सन्निपात ज्वर होनेपर आराम हो जाता है, वह नया जन्म लेता है।

ज्वरकी उत्पत्ति ।



ज्वरके सम्बन्ध में अथवा ज्वरकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें आयुर्वेदमे बहुत कुछ लिखा है, पर सबका मतलब एक ही है। फिर भी, हम पाठकोंकी जानकारी और मनोरञ्जनके लिये दो तीन श्लोक उद्धृत किये देते हैं—

"हारीतसंहिता"में लिखा है—

> दक्षाद्दूरप्रगमन कुपितोहि महेश्वर ।
> श्वास मुमोच दयिता विधुरश्च तीव्र—
> तेन ज्वरोऽष्ट विध सम्भवतोऽथवास्यात ॥

दक्ष प्रजापतिसे कुपित होकर महेश्वर— महादेवने, सतीके लिए आठ श्वास छोडे, इससे ज्वर आठ प्रकारका हुआ।

"सुश्रुतमे" लिखा है ,—

> दक्षापमानसक्रुद्धरुद्रनि श्वाससम्भव ।
> ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वन्द्वसंघातागतुज स्मृत ॥

दक्षके अपमान करनेसे महादेव को क्रोध हुआ। उस क्रोधसे जो श्वास निकला—उसीसे पृथक्, द्वन्द्व, संघात और आगन्तुज आठ प्रकारके ज्वर हुए।

नोट—ये आठ प्रकारके ज्वर मुख्य हैं। इनसे ज्वरोंकी और बहुतसी शाखें निकलती हैं। उन सबका वर्णन हमने आगे किया है। पाठकोंको चाहिये, ज्वरोंके भेदोंको अच्छी तरहसे याद करलें। क्योंकि बिना भेद याद हुए चिकित्सा हो नहीं सकती।

सुश्रुत उत्तरतन्त्र में भी लिखा है —

रुद्रकोपाग्निसम्भूत सर्वभूतप्रतापन ।
तैस्तैर्नामभिरित्येषा सत्वाना परिकीर्त्तित ॥

ज्वर रुद्र यानी महादेवकी कोपाग्निसे पैदा हुआ है और सब प्राणियोंको सन्ताप देनेवाला है। अलग-अलग प्राणियोंमें वह अलग अलग नामोंसे पुकारा जाता है। जैसे, मनुष्योंमें उसे ज्वर, हाथियोंमें पाकल, घोड़ोंमें अभिताप गायोंमें ईश्वर, भैंसोंमें दारिद्र, मृगोंमें मृगरोग, बकरी और भेड़ोंमें प्रलाप एवं कुत्तोंमें अर्ल। इसी तरह सब प्राणियोंमें ज्वर होता है और उसके जुदे-जुदे नाम हैं। साराश यह कि, ज्वर महादेवके क्रोधसे पैदा हुआ है।

ज्वरकी प्रकृति।



ज्वर रुद्रकोप से पैदा हुआ है। "चरक" में लिखा है कि, क्रोधसे पित्त पैदा होता है। इसलिये, क्रोधसे पैदा होनेके कारण, ज्वरकी प्रकृति पैत्तिक यानी पित्तकी है। अथवा यों समझिये कि, ज्वरका स्वभाव गरम है। इसलिये इसका इलाज पित्तशमन करनेवाले—शीतल द्रव्योंसे करना चाहिये—पित्त विरोधी चिकित्सा अच्छी नहीं। महर्षि वाग्भट लिखते हैं —

उष्मा पित्तादृते नास्ति, ज्वरो नास्त्युष्मणा विना।
तस्मात् पित्त-विरुद्धानि, त्यजेत पित्ताधिकेऽधिकम् ॥

गरमी बिना पित्तके नहीं होती और ज्वर बिना गरमी के नहीं होता, इसलिये ज्वरमें पित्तविरोधी चिकित्सा न करनी चाहिये, विशेषकर पित्तज्वरमे तो भूलकर भी पित्तका विरोध करनेवाली—गरम चिकित्सा न करनी चाहिये।

खुलासा यह है, कि सभी प्रकारके ज्वरोंमें पित्तका कोप होता है। अगर सभी ज्वरोंमें पित्तका कोप न होता, तो ज्वरोंमें गरमी न होती। पित्त से ही ज्वरोंमें गरमीका सन्ताप रहता है, इसलिये सभी प्रकारके ज्वरोंमें ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये जिससे पित्त औरभी कुपित न हो जाय। खासकर पित्तज्वरमें तो इस बातका बहुत ही ख्याल रखना चाहिये। पित्तज्वरमें गरमी बड़े जोरसे रहती है, रोगीको दाह के मारे कल नही पडती, शरीर जलने लगता है। बुद्धिमान् और अनुभवी वैद्य पित्तज्वरमें सुगन्धवाला, खस और चन्दनादि द्रव्योंके योगसे काढा बनाकर देते हैं, केले या कमलके पत्तोंपर रोगीको सुलाते हैं, चन्दन और खस प्रभृतिसे छिड़काव किये हुए खसकी टट्टियाँ लगे हुए, चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल हुए घरमें पित्त-ज्वरवाले को रखते हैं, नाभि पर काँसीका बर्तन रख कर शीतल जलकी धारा देते हैं, किन्तु नासमझ वैद्य सभी ज्वरोंमें और पित्त ज्वरमें भी, शीत आ जानेके भयसे, रोगीको गरम घरमें रखते हैं, उसे गरम कपडोंसे ढक देते हैं, घरके दरवाजे और खिडकियोंको बन्द करा देते हैं तथा शीतप्रधान ज्वरोंमें देने योग्य गरम काढे देते हैं। नतीजा यह होता है कि गरम ही गरम इलाज करनेसे सन्निपातज्वर हो जाता है और रोगी परमधाम की राह लेता है।

मामूली कायदा यह है कि गरमीसे पैदा हुए रोगोंमें सर्द और सरदीसे पैदा हुए रोगोंमें गरम दवा दी जाती है, पर डाक्टरोंकी तरह सिर पर बर्फ रखाना अथवा हकीमोंकी तरह एकदम शीतल दवा देना भी अच्छा नही है। पित्तमें जिस तरह गरम दवा देना अच्छा नहीं, उसी तरह अधिक सरदी पहुँचाना भी बुरा है। ऐसी

चिकित्सा भी न करनी चाहिये, जिससे सिर पर गरमी चढ़ जाय और ऐसी भी न करनी चाहिये, जिससे शीत आजाय। ज्वरमें खूब सोच समझ कर, जहाँ जैसी जरूरत हो वैसीही चिकित्सा करनी चाहिये। पित्तज्वर में तो पित्तका लिहाज रखनाही चाहिये, किन्तु संसर्गज ज्वरोंमें भी पित्त पर ही पहले ध्यान देना चाहिये। "सुश्रुत उत्तरतंत्र" में लिखा है—

नोट—यों तो सभी रोगोंकी चिकित्सामें बड़ी चातुरी और सावधानीकी जरूरत है, पर ज्वरमें इनकी विशेष जरूरत है ज्वर ज़रा सी असावधानीसे बिगड़ जाता है और अनमोल जीवन नष्ट हो जाता है। बहुतसे अनाड़ी वैद्य ज्वरमें शीत आ जानेके भयसे अन्धाधुन्ध गर्म दवाएँ दिये जाते हैं। अगर ज्वरमें सरदी अधिक होती है, तो रोगी बच जाता है, अन्यथा दिमागमें गरमी चढ़ जाती है और रोगी बेहोश होकर मर जाता है।

निर्हरेत् पित्तमेवादौ ज्वरेषु समवायिषु।
दुर्निवारतरं तद्धि ज्वरार्तेषु विशेषत॥

संसर्गज ज्वरों में पहले पित्तको शमन करनेवाली क्रिया करनी चाहिये, क्योंकि ज्वर-पीड़ित मनुष्यों में, विशेषकर पित्त ही कठिन में काबूमें आता है।

ज्वरका साधारण स्वरूप।



ज्वर रोग कैसा होता है, उसमें साधारण रूप से क्या क्या लक्षण होते हैं इसे प्रत्येक मनुष्य और स्त्री बच्चा तक समझता है। सभी जानते हैं, जिस रोग में शरीर गरम होता है, शरीर में दर्द होता है, उसे ही ज्वर कहते हैं। बोलचालकी भाषा में "ज्वर" को बुखार, अँगरेजीमें फीवर, हिकमत में तप और संस्कृत में ज्वर कहते हैं। शास्त्रों में ज्वरके लक्षण इस भाँति लिखे हैं —

ज्वरके लक्षण।

स्वेदावरोधस्संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा।
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यपदिश्यते॥

जिस रोगमें पसीने न आवें, शरीर बहुत गर्म हो और सारे शरीर में दर्द या अकड़नसी हो —उसे "ज्वर" कहते हैं। ज्वरके साधारण लक्षण यही हैं। ज्वर में शारीरिक और मानसिक सन्ताप अवश्य होता है, बिना सन्ताप ज्वर नहीं होता। ज्वर में पसीना नहीं आता, यह साधारण नियम है। पित्तज्वर में कभी-कभी पसीना आता है *।

ज्वर की किस्में।



लक्षण-भेद से ज्वर बहुत किस्म का होता है, पर चिकित्सा-कार्य्य के सुभीते के लिये, मुख्यतया, ज्वर आठ प्रकार का माना गया है —

१। वातज्वर।	४। वातपित्त ज्वर।
२। पित्तज्वर।	५। पित्तकफ ज्वर।
३। कफज्वर।	६। वातकफ ज्वर।

७। सन्निपात ज्वर।
८। आगन्तुक ज्वर।

सन्निपातज्वर के भेद।



आयुर्वेद में रोगों के अनेक वर्ग और उपवर्ग किये गये हैं। डाक्टरी में रोगों का वर्गीकरण और ही तरह से किया गया है। ज्वरके जिस तरह आयुर्वेद में अनेक भेद हैं, उसी तरह

* यहाँ ज्वरके साधारण लक्षणों में पसीनों का न आना लिखा है, किन्तु पित्तज्वर में पसीने आते हैं और वातकफ ज्वर में मृदु पसीने आते हैं, इस से नियम में कोई गड़बड़ी नहीं होती। यह साधारण नियम है, किन्तु पित्तज्वर या वात-कफज्वर विशेष हैं। हाँ, शरीर का आग की तरह कम और जियादा जलना या गरम होना सभी ज्वरों में देखा जाता है

डाक्टरी में भी हैं, किन्तु आयुर्वेदमें जिस तरह सन्निपात ज्वर ५२ प्रकार का या १३ प्रकार का माना गया है, उस तरह डाक्टरी में नही है। सुश्रुत और वाग्भट्ट ने सन्निपात ज्वर के अलग अलग भेद नही लिखे हैं, परन्तु चरकाचार्य्य ने, कमजोर दिमागवालों के लिये, सन्निपातके खास ख़ास लक्षणों से १३ विभाग किये हैं। दोषों की कमी और जियादती अथवा प्रधानता और अप्रधानता के हिसाब से, सन्निपात ज्वर के १३ विभाग कर देने से, चिकित्साकार्य्य में बडा सुभीता हो गया है।

वात, पित्त और कफ इन तीनो दोषों से होनेवाले ज्वर को "सन्निपात ज्वर" कहते हैं। इस ज्वर में जिस दोपके लक्षण अधिक हों, उसी की उल्बणता या प्रधानता समझनी चाहिये। यदि एक दोष अधिक जोर पर हो तो एकोल्बण, दो दोष अधिक जोर पर हों तो दो दोषोल्बण और तीनों दोष अधिक जोर पर हों तो त्र्युल्बण या त्रिदोषोल्बण कहते हैं। दोषों की प्रधानता या उल्बणता के हिसाब से सन्निपात ज्वर सात तरह के होते हैं

१ वातोल्बण, २ पित्तोल्बण, ३ कफोल्बण,
४ वातपित्तोल्बण, ५ वातकफोल्बण, ६ पित्तकफोल्बण,
७ त्र्युल्बण।

जिस तरह वातादिक दोषों की प्रधानता या उल्बणता के भेद से सात तरह के सन्निपात ज्वर होते हैं, उसी तरह दोषों की हीनता, मध्यता और अधिकता के भेद से ६ प्रकार के सन्निपात ज्वर औरभी होते हैं। जैसे, —

१ अधिक वात,	मध्य पित्त,	हीन कफ।
२ अधिक वात	मध्य कफ,	हीन पित्त।
३ अधिक पित्त,	मध्य वात,	हीन कफ।
४ अधिक पित्त,	मध्य कफ	हीन वात।
५ अधिक कफ,	मध्य वात,	हीन पित्त।
६ अधिक कफ,	मध्य पित्त,	हीन वात।

इस तरह ७ दोषों की उल्बणता के हिसाब से और ६ दोषों की हीनता, मध्यता और अधिकता के हिसाब से—कुल तेरह प्रकार के सन्निपात ज्वर हुए,—यही चरक में लिखे हैं। दोषों की प्रधानता अप्रधानता और हीनता, मध्यता तथा अधिकता की पहचान आ जाने से बड़े मजे में चिकित्सा होती है। जैसे, जिस सन्निपात ज्वर रोगी के ज्वरमें वात के लक्षण बहुत हों, पित्तके कम हों और कफ के और भी कम हों,—उसे वातोल्बण, अधिक वात, मध्य पित्त और हीन कफ सन्निपात कहेंगे। दोषों की कमी बेशी के अनुसार ही चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सकों के सुभीते के लिये, अन्यान्य आचार्य्यों ने, सन्निपातों के मुख्य मुख्य लक्षणोंके हिसाबसे, उनके तेरह नाम लिख दिये हैं*। उन तेरहोंके नाम हम नीचे लिखे देते हैं। उनके लक्षण कण्ठाग्र रखने और पहचान लेनेका अभ्यास कर लेनेसे, सन्निपात ज्वरों की चिकित्सामें औरभी आसानी हो जाती है। उनके नाम ये हैं—

१ सन्धिक, २ अन्तक, ३ रुग्दाह, ४ चित्तविभ्रम,
५ शीताङ्ग, ६ तन्द्रिक, ७ कण्ठकुब्ज, ८ कर्णक,
९ भुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी, ११ प्रलापक, १२ जिह्वक,
१३ अभिन्यास।

---

* सन्धिक में सन्धियों या जोड़ों में बड़ी वेदना होती है। अन्तक असाध्य है, वह प्राणी का अन्तही कर देता है। रुग्दाह में दाह का बड़ा जोर होता है, इसी से इस का इलाज पित्तज्वर की तरह होता है। चित्तविभ्रम में रोगीके चित्तमें भ्रम हो जाता है और वह पागल हो जाता है। शीताङ्ग में सारा शरीर बर्फ के समान शीतल हो जाता है। तन्द्रिक में तन्द्राका जोर रहता है, आंखे झिपी जाती हैं। कण्ठकुब्ज में कण्ठ रुक जाता है, रोगी को जल पीने में भयानक कष्ट होता है। कर्णक ज्वर में कान की जड़ में गाठ या सूजन होती है, रोगी बहरा हो जाता है। भुग्ननेत्र में नेत्र टेढे हो जाते हैं। रक्तष्ठीवी में थूक के साथ खून आता है। प्रलापक में रोगी रात-दिन प्रलाप या वृथा बकवाद करता है। जिह्वक में जीभ में भयानक कांटे पैदा हो जाते हैं और रोगी गूँगा हो जाता है।

विषम ज्वर।

जिन ज्वरों का वेग विषम होता है, जो कभी जोर से चढते हैं, कभी जोरसे नही चढते, कभी किसी समय आते हैं और कभी किसी समय,—उनको "विषमज्वर" कहते हैं। ज्वर आने और उसके शान्त होने पर शीघ्र ही स्नान आदि कुपथ्य करनेसे वातादि दोष फिर कुपित होकर रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि मज्जा और शुक्र – इन सातो में से किसी एक धातु में अपना घर कर लेते है। ऐसे ज्वरो को "विषम ज्वर" कहते हैं। आमज्वर यानी कच्चे ज्वर में मूर्खता से औषधि दे देने से भी विषम ज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत" में लिखा है ,—

भेषज ह्याम दोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम्।
शोधन शमनीय तु करोति विषमज्वरम्॥

दोषोंके बिना पके आमज्वर या कच्चे बुखारमें, दवा देनेसे ज्वर प्रचण्डरूप धारण करता है और शोधन शमन क्रिया करने से विषमज्वर हो जाता है। मतलब यह हुआ कि, पीछे कहे हुए वातज्वर पित्तज्वर आदि की ठीक चिकित्सा न होने से, अथवा ज्वरान्त मे कुपथ्य करने से, विषम ज्वर हो जाते हैं और वे रस रक्त आदि धातुओं मे घुस जाते हैं, इसलिये हम विषमज्वरो को उनके बाद लिख रहे हैं। यद्यपि आठ प्रकारके ज्वरो में विषम ज्वरों का नाम नहीं आया है, पर इनकी जड वे ही हैं।

विषम ज्वरों की क़िस्में।

मुख्यतया विषम ज्वर पाँच प्रकार के होते हैं —

१ सन्तत ज्वर ३ अन्येद्यु ज्वर
२ सतत ज्वर ४ तृतीयक ज्वर
५ चातुर्थिक ज्वर।

सप्तधातुगत ज्वर।

रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र— इनमें रहनेवाले सात ज्वर होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

१ रसगत ज्वर। २ रक्तगत ज्वर।
३ मासगत ज्वर। ४ मेदगत ज्वर।
५ अस्थिगत ज्वर। ६ मज्जागत ज्वर।
७ शुक्रगत ज्वर।

---

* सन्तत ज्वर ७ या १० अथवा १२ दिन तक एकसा बना रहता है, किन्तु १२वें दिन अच्छी तरहसे छूट कर फिर बहुत समय तक बना रहता है, इससे इसको विषम ज्वरोंमें मानते हैं। सुश्रुत सन्तत ज्वरको विषम ज्वर नहीं मानता, किन्तु प्रलेपक ज्वरको पाँचवाँ विषम ज्वर मानता है। * सतत ज्वर दिन-रातमें दो समय होता है। अन्येद्यु दिन-रातमें एक बार होता है। तृतीयक, जिसे बोलचालमें तिजारी कहते हैं, जिस दिन आता है उसके तीसरे दिन फिर आता है। चातुर्थिक, जिसे बोलचालमें चौथैया कहते हैं, अपने आनेके दिनसे चौथे दिन आता है।

† रस धातुमें दोषोंके होनेसे सन्तत ज्वर होता है। रुधिर या रक्तमें होनेसे सतत ज्वर, मांसमें होनेसे अन्येद्यु, मेदमें होनेसे तृतीयक एवं अस्थि और मज्जामें दोषके स्थित होनेसे, कालके समान प्राणनाशक, चातुर्थिक या चौथैया ज्वर होता है। जब दोष शुक्र या वीर्य्यमें घर कर लेता है, तब रोगी एकदम असाध्य हो जाता है। उसकी चिकित्सा करना बदनामी मोल लेना है। इन सबके लक्षण और चिकित्सा आगे लिखेंगे।

जब दोष किसी एक धातुमें घर कर लेता है, वह उस धातुको बहुत दूषित नहीं करता तथा अनुलोम होने से कष्टसाध्य भी नहीं होता, किन्तु जब रसमें ठहरा हुआ दोष रसको खराब करके रक्तमें, फिर रक्तको बिगाड़ कर मांसमें, मांसको दूषित करके मेदमें, मेदको दूषित करके अस्थि—हड्डीमें, हड्डीको खराब करके मज्जामें, शेषमें मज्जाको बिगाड़ कर शुक्र या वीर्य्यमें पहुँचता है, यानी इस तरह ऊपर-ऊपरकी धातुओंको खराब करता हुआ भीतर-भीतर की धातुओंमें जाता है, तब उतनाही कष्टसाध्य और असाध्य होता जाता है। इसीसे कितने ही आचार्य्य धातुगत ज्वरोंको अलग मानते हैं। पर इन के जानने से लाभ यह है कि, जब ज्वर सब तरह की चिकित्सा करनेसे न जाय, तब पता लगाना चाहिये, उसने किसी धातु में तो डेरा नहीं लगा दिया है। लक्षणों से पता लगते ही, उसे उस धातु से अलग करने की चेष्टा करनी चाहिये, बस, सफलता प्राप्त होगी।

नोट—इनके सिवा प्रलेपक ज्वर, वातबलासक ज्वर, शीतपूर्व्वक ज्वर, दाहपूर्व्वक ज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर, बहिर्वेगी ज्वर, प्राकृत ज्वर, वैकृत ज्वर, गम्भीर ज्वर प्रभृति औरभी ज्वर होते हैं। उनको हम आगे लिखगे।

आगन्तुक ज्वर *

—※※※—

आगन्तुक ज्वर ही आठवाँ ज्वर है। आगन्तुक ज्वर चार प्रकार के होते हैं।

१ अभिघातज †। २ अभिचारज †। अभिषङ्गज †। ४ अभिशापज †।

इनकी औरभी किस्मे हैं। जैसे,—काम ज्वर, क्रोध ज्वर, शोक ज्वर, भयज्वर, भूत ज्वर विष ज्वर औषधिगन्ध ज्वर प्रभृति। इनके सम्बन्ध में भी आगे लिखेंगे।

चरकसे ज्वरके लक्षण और भेद।

ज्वरके लक्षण

—※—

दैहिक और मानसिक सन्तापका होना—यह सब ज्वरोंका साधा-

* आगन्तुक ज्वरोंको अलग इसलिये माना है कि, इनमे वह पीड़ा पहले होती है, जिसके कारणसे आगन्तुक ज्वर होता है, पीछे दोष कुपित होते हैं, यानी पहले ज्वरकी हेतु—कारण पीड़ा पैदा होती है और पीछे दोष कुपित होते हैं। जैसे, कोई डर गया, डरनेसे ज्वर हो गया, पीछे वायु कुपित हुई। जो दोष कुपित हो, उसीके लक्षणके अनुसार इलाज करना चाहिये। अगर क्रोध करनेसे ज्वर हो, तो पित्त कुपित होगा। फिर भी उसके लक्षण मिलाकर तसल्ली कर लो।

† तलवार लकड़ी प्रभृतिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसे "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मन जपने और जादू टोनेमें जो ज्वर होता है, उसे "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध अथवा भूत प्रभृतिसे जो ज्वर होता है, वह "अभिषङ्गज" तथा शापसे होनेवाला "अभिशापज" कहाता है।

रण लक्षण है। ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है, जिसे ज्वर होने पर सन्ताप यानी गरमी न व्यापे।

ज्वरके भेद।

(१) शारीर और मानस।
सौम्य और आग्नेय।
अन्तर्वेग और बहिर्वेग।
प्राकृत और वैकृत।
साध्य और असाध्य।

इन भेदोंसे ज्वर दो दो प्रकारका होता है।

(२) दोष और कालके बलाबलसे ज्वर पाँच प्रकारका होता है। जैसे,—सन्तत, सतत, अन्येद्यु, तृतीयक और चातुर्थिक।

(३) सात धातुओंके आश्रय भेदसे ज्वर सात प्रकार होता है। जैसे,—रसगत ज्वर, रक्तगत ज्वर, मांसगत ज्वर, मेदोगत ज्वर, अस्थिगत ज्वर, मज्जागत ज्वर और शुक्रगत ज्वर।

(४) वातपित्त और कफके कारण-भेद से ज्वर आठ तरहका होता है,—

१ वातज्वर,	२ पित्तज्वर,	३ कफज्वर,
४ वातपित्तज्वर,	५ कफपित्तज्वर	६ वातकफज्वर,
७ सन्निपात ज्वर,		८ आगन्तु ज्वर।

शारीर और मानस ज्वरके लक्षण।

शारीर ज्वर पहले शरीरमें होता है और मानस ज्वर पहले मनमें प्रकट होकर पीछे देहमें फैलता है। विक्षिप्तचित्तता, चित्तकी अनवस्थता और ग्लानि,—ये मानसिक सन्ताप और मानस ज्वरके लक्षण हैं। इन्द्रियोंकी विकृति होना शारीरिक ज्वरके लक्षण हैं।

सौम्य और आग्नेय ज्वरके लक्षण।



वातपित्तात्मक ज्वर शीतलता चाहता है और वातकफात्मक गरमी चाहता है। मिले हुए लक्षणोंवाला ज्वर सरदी और गरमी दोनों चाहता है।

सौम्य सरदीके और आग्नेय गरमीके ज्वर को कहते हैं।

अन्तर्वेग और बहिर्वेग ज्वरके लक्षण।



देहके भीतर अत्यन्त दाह, प्यास, प्रलाप, श्वास, भ्रम, सन्धिशूल, अस्थिशूल, पसीना न आना, दोष और विष्ठाकी रुकावट—ये लक्षण अन्तर्वेगी ज्वरके हैं।

शरीरके बाहर सन्ताप अधिक हो, प्यास प्रभृति लक्षण थोड़े हों तथा सुखसाध्यता हो—ये बहिर्वेगी ज्वरके लक्षण हैं।

नोट—बहिर्वेगीके सुखसाध्य लिखनेसे मालूम होता है कि, अन्तर्वेगी ज्वर कृच्छ्रसाध्य या असाध्य होता है।

प्राकृत ज्वर और वैकृत ज्वरके लक्षण।



वर्षाशरद्वसंतेषु वाताद्यै प्राकृत क्रमात्।
वैकृतोऽन्य सुदु साध्य प्राकृतश्चानिलोद्भव ॥

वर्षा ऋतुमें वात ज्वर, शरद् ऋतुमें पित्त ज्वर और वसन्त ऋतुमें कफ ज्वर हों, तो "प्राकृत ज्वर" समझने चाहिये। इनके विपरीत, वर्षाकालमें पैत्तिक ज्वर हो, शरद्में कफज्वर हो और वसन्तमें वात ज्वर हो, तो "वैकृत ज्वर" समझने चाहिये। प्राकृत ज्वर सुखसाध्य होते हैं और वैकृत ज्वर दुःसाध्य होते हैं।

नोट—वातजन्य प्राकृत ज्वर भी दुःसाध्य होता है। और रोगोंमें प्राकृतत्व दुःसाध्य है, परन्तु ज्वरमें प्राकृतत्व सुखसाध्य है। वर्षा, शरद् और वसन्त क्रमसे वात, पित्त और कफके प्रकृत काल हैं। इनके विपरीतको विकृत काल कहते हैं।

गम्भीर ज्वरके लक्षण।



गभीरस्तु ज्वरोज्ञेयो ह्यन्तर्दाहेन तृष्णया।
आनद्धत्वेन चात्यर्थं श्वासकासोद्गमेन च॥
हतप्रभेन्द्रियं क्षामं दुरात्मानमुपद्रुतम्।
गम्भीरं तीन्र्‌रोगार्त्तं ज्वरितं परिवर्जयेत्॥

जिसके भीतर दाह हो, प्यास अधिक हो, दोष और मल जहाँके तहाँ रुके हों, श्वास और खाँसीका अत्यन्त जोर हो, कान्ति बिगड़ गई हो, और इन्द्रियाँ भ्रष्ट हो गई हों, चित्त दुर्बल और खराब हो, हिचकी आदि उपद्रव हों, ज्वरका वेग गम्भीर और तीक्ष्ण हो—यह "गम्भीर ज्वर" के लक्षण हैं। ऐसे रोगीको त्याग देना चाहिये। यह ज्वर असाध्य है—सुश्रुत।

आमज्वरके लक्षण।



"चरक"में लिखा है,—अरुचि, अविपाक पेटका भारीपन, हृदयकी अशुद्धता, तन्द्रा, आलस्य, ज्वरका बिना विश्राम एकसा चढ़ा रहना और जोर रहना, दोषोंका निकाल न होना, लार बहना, सूखी ओकारी आना, भूख न लगना, मुखमें लिबलिबाहट, शरीरकी स्तब्धता, सुस्तता, भारीपन, पेशाब अधिक होना, मलका न पकना—कच्चा उतरना और शरीरका चिकनासा रहना—ये "आम ज्वर"के लक्षण हैं। "सुश्रुत"में दस्तकब्ज रहना, कल न पड़ना और नींद न आना वगैर लक्षण लिखे हैं।

नोट—आम दोषसेही ज्वर होता है और आम उपवाससे नष्ट होता है, इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। आम ज्वरमें शमन औषधि और अन्न न देना चाहिये। निराम ज्वरमें दवा आदि देनेसे ज्वर शीघ्र आराम होता है।

निराम ज्वरके लक्षण।



क्षुत्क्षामतालघुत्वचगात्राणाज्ज्वरमार्दवम्।
दोषप्रवृत्तिरुत्साहोनिरामज्वरलक्षणम्॥

भूखका लगना, देहका कृश होना अङ्गोंका हलकापन, मन्द ज्वर होना, अधोवायु खुलना और मनमें उत्साह होना,—ये निराम—आमरहित या पके ज्वरके लक्षण हैं।

पच्यमान ज्वरके लक्षण।



ज्वरवेगोऽधिकातृष्णाप्रलाप श्वसनभ्रम।
मलप्रवृत्तिरुत्क्लेश पच्यमानस्यलक्षणम्॥

ज्वरका वेग, अधिक प्यास, प्रलाप श्वास, भ्रम, मलकी प्रवृत्ति और वमन सी आती जान पड़ना—ये "पच्यमान ज्वर"के लक्षण हैं।



दूसरा अध्याय

ज्वरके कारण और सम्प्राप्ति प्रभृति।

रोगोंके कारण।

हमारे आयुर्वेदमें सभी रोगोंका होना वात, पित्त और कफके कुपित होनेसे बतलाया गया है। वात, पित्त और कफके कुपित होनेका कारण मनुष्योंका "अपथ्य-सेवन" बतलाया गया है, यानी हम लोगोंके उचित रूपसे आहार विहार न करनेसे उपरोक्त वातादिक दोष कुपित होते हैं और कुपित होकर नाना प्रकारके रोग करते हैं। "माधव निदान"में लिखा है:—

सर्वेषामेव रोगाणां निदानं कुपिता मला ।
तत्प्रकोपस्य तु प्रोक्तं विविधाहित सेवनम् ॥

नाना प्रकारके अहित सेवनसे वातादिक दोष कुपित होते हैं और इन तीनोंके कुपित होनेसे सारे रोग होते हैं।

नोट—आरोग्य चाहनेवालेका सदा अहित सेवन से बचना चाहिये, जिससे दोषोंके कुपित होनेसे रोग न हो।

महर्षि चरक और वाग्भट्टने रोग और आरोग्यके कारण बड़ी ही खूबीसे एक-एक श्लोकमें ही लिख दिये हैं। सच पूछिये, तो उक्त महर्षियोंने थोड़में ही सारी आरोग्यताकी कुञ्जी लिख दी है। अगर मनुष्य उनको समझे और समझ कर उनपर ध्यान रक्खे, तो कभी रोगोंके पञ्जोंमें ही न फँसे—सदा आरोग्य रहकर, परमायु भोगता हुआ, सुखसे जीवनका बेड़ा पार करे। वे अनमोल वाक्य ये हैं—

कालार्थकर्मणा योगा हीन मिथ्यातिमात्रका।
सम्यक् योगश्च विज्ञेयो रोगारोग्यैक कारणम्॥ वाग्भट॥
काल बुद्धीन्द्रियार्थाना योगो मिथ्या न चाति च।
द्वाश्रयाणा व्याधीना त्रिविधो हेतुसग्रह॥ चरक॥

काल, अर्थ, कर्म—इनका हीन योग, मिथ्या योग, और अतियोग ही रोगका कारण हैं और इनका उचित योग ही आरोग्य का कारण है।

काल, बुद्धि और इन्द्रियोंके विषयोंका मिथ्या योग, अयोग और अतियोग* —ये तीनों शारीरिक और मानसिक रोगोंके कारण हैं।

नोट—जितने रोग होते हैं, वे सब मिथ्या आहार विहार या काल, अर्थ और कर्मके हीन, मिथ्या और अति योगसे होते हैं, अत बुद्धिमानोंको उनसे बचना चाहिये।

ज्वरके कारण।



यहाँ तक तो हमने मनुष्यके सभी रोगोंके कारण सामान्य रूपसे बतलाये, अब हम ज्वरके ही कारण बतलाते हैं। यद्यपि आयुर्वेदमें लिखा हुआ निदान विवादास्पद है, तथापि युक्तियुक्त है। "सुश्रुत" में लिखा है —

वमन विरेचन आदिके बेकायदे होने अधिक होने या बिगड़ जाने, नाना प्रकार की चोट लगने, किसी दारुण रोगके उठने, शरीरमें विद्रधि प्रभृतिके उठने और पकने, किसी तीक्ष्ण दवाके परिपाक, बहुत मिहनत, अजीर्ण, क्षय, विष, ऋतुओंके विपरीत होने, तेज दवा या जहरीले फूलोंकी गन्ध, शोक, क्रोध, नक्षत्र-पीड़ा, उलटे तन्त्र मंत्र जपने, शाप लगने, मनकी शंका, ग्लानि भय, भूतकी शंका प्रभृति कारणोंसे ज्वर होता है। स्त्रियोंके असमयमें बच्चा होने या अयोग्य प्रसव होने अथवा ठीक प्रसव होने पर भी

* काल कर्म और अर्थके हीन, मिथ्या या अयोगके उदाहरण देखने हों, तो "चिकित्सा चन्द्रोदय" पहले भागका ७७ वाँ पृष्ठ देखिये।

अहित आचरण—कुपथ्य सेवन करने और स्तनोंमें इतना अधिक दूध आनेसे जो बालकसे न पिया जासके प्रभृति कारणोंसे ज्वर होता है। हारीतने कसरत (अति कसरत), भोजन पर भोजन, कूप-जल और झरनेका जल पीनेसे भी ज्वर होना लिखा है।

अन्यान्य आचार्य्यो ने मिथ्या आहार और मिथ्या विहारको ज्वर का मुख्य कारण ठहराया है। बात एक ही है। मिथ्या आहार और मिथ्या विहारके अन्दर ये सभी बातें आ जाती हैं। इनकी खुलासा टीका बडी लम्बी चौडी है। फिर भी, हम पाठकोंके सुभीतेके लिये, इनकी कुछ व्याख्या किये देते हैं। देश, काल, प्रकृति प्रभृतिके विरुद्ध खाना पीना डोलना फिरना या और काम करना, संयोगविरुद्ध* भोजन करना, समय बेसमय चाहे जब खा लेना, कभी कम और कभी जियादा खाना, अपनी पाचन शक्तिसे अधिक खाना, बिना भूख लगे खाना, एक भोजनके बिना पचे दूसरा भोजन करना, भूख लगने पर न खाना, अपनी ताकतसे जियादा काम करना, अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करना अथवा प्रभात-समय स्त्री प्रसङ्ग करना, तेज घाम या धूपमें घूमना, विषैली हवा या बदबूदार हवामें घूमना या रहना, वर्षाके जलमें भीगना, कहींसे चलकर आते ही गरम शरीरमें स्नान कर डालना, स्त्रीप्रसंग या और मिहनत करके तत्काल स्नान कर लेना—ऐसे ऐसे अनेक उदाहरण हैं और ये सब मिथ्या आहार और मिथ्या विहारमें शामिल हैं। इन मिथ्या आहार और मिथ्या विहारोंके कारण से ही बात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित हो जाते हैं और ज्वर पैदा करते हैं। यानी जो लोग मिथ्या आहार विहार नहीं करते अथवा काल, कर्म और अर्थका हीन, मिथ्या और अयोग या अतियोग नहीं करते, उन्हें ज्वर प्रभृति कोई

* दूध-मछली, दही-मूली—इनको एक साथ खाना संयोग विरुद्ध भोजन है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं। इनको न जानने और ऐसा करनेसे ज्वर प्रभृति भयानक रोग हो जाते हैं। बहुतसे उदाहरण देखने हों, तो "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भागका २८४—२८८ पृष्ठ देखो।

रोग नहीं होता और जो लापरवाही से इनका खयाल नहीं करते अथवा मिथ्या आहार विहार करते हैं, उन्हें ज्वर प्रभृति नाना प्रकारकी शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ सताती हैं। हमारे सारे आचरण आहार विहारकी दो क्रियाओंमें आजाते हैं। मिथ्या आहार विहारसे शरीर सिस्टम (Bodily system) बिगड़ जाती है। यहाँ तक कि, अन्नको पचानेवाली सिस्टम, जिसपर सारे शरीरका दारमदार है, बिगड़ जाती है। इस एकके बिगड़नेसे असंख्य रोगोंकी राह साफ हो जाती है। इसके बिगड़नेसे सब रोगोंकी जड़—मलावरोध यानी कब्ज होने लगता है—आँतोंमें जितने समय तक मलको रहना चाहिये, उससे अधिक समय तक मल रुका रहता है। यह मलावरोध या कब्ज आँतोंके शिथिल होनेसे होता है। असल रोग मलका रुकना या कब्ज ही है। इसीसे अनेक रोगोंकी उत्पत्ति है। जब यह मल दोष आँतोंमें पहुँचता है, आँखोंके रोग करता है, सिरमें पहुँचता है, सिरके रोग करता है, हृदयमें पहुँचता है, हृदय शूल प्रभृति हृदयके रोग करता है। जब आँतोंका बिगड़ा हुआ रस खूनमें मिल जाता है, तब सारे शरीरकी नाड़ियाँ उससे भर जाती हैं, वायुकी चाल बन्द हो जाती है; क्योंकि वायु उसे ठेलकर निकाल नहीं सकता, तब वह अटका हुआ खराब द्रव्य वहीं तरह-तरहके रोग पैदा करता है। मतलब यह कि, आँतोंके दोषसे ही सारी बीमारियाँ होती हैं। बीमारी एक आँतोंकी होती है, उसीके नाम मस्तक रोग, हृद्रोग नेत्ररोग, गलगण्ड प्रभृति रख लिये गये हैं। जो लोग सुखी रहना चाहें, वे आँतोंको साफ रक्खें, उनमें कब्ज न होने दें और चिकित्सक चिकित्सा करते समय इस बातको अवश्य खोज करें कि, आँतोंमें क्या गड़बड़ हुई है।

अब यह प्रश्न उठता है कि, मिथ्या आहार विहारसे वातादिक दोष दूषित होकर शरीरमें किस तरह ज्वर पैदा करते हैं, किस तरह शरीर गरम हो जाता है, किस तरह पसीना आना बन्द हो जाता है,

किस तरह पसीना आनेसे शरीरकी गरमी कम हो जाती है इत्यादि। यद्यपि ये बातें हमारे आयुर्वेदमें साफ तौरसे नहीं समझाई गई हैं, तथापि जो कुछ कहा गया है, वही हम लिखते हैं।

ज्वरकी सम्प्राप्ति।

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः ।
बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्युः रसानुगाः ॥

अनुचित आहार विहारके कारणसे वात पित्त और कफ—ये तीनों दोष आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठे की अग्नि की गरमीको बाहर निकाल कर *, ज्वर उत्पन्न करते हैं।

नोट—यह विषय वैद्यक सीखनेवालोंको अच्छी तरह समझ कर याद करना चाहिये। तोता रटन्तसे कोई लाभ नहीं। समझ कर याद करनेसे जन्मभर विषय याद रहता है।

ज्वरमें शरीर गरम क्यों होता है ?



सभी जानते हैं कि, ज्वरमें शरीर गरम होता है, पर वह गरम क्यों होता है अथवा कैसे होता है इसे बहुत कम-लोग जानते हैं। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में शरीर गरम होनेके कारण इस भाँति लिखे हैं —

तैर्वेगतश्चिर्नद्धुधा समुद्भ्रान्तैर्विमार्गगैः ।
निक्षिप्यमाणोऽन्तराग्निर्भवत्याशु बहिश्चरः ॥
रसादि चाप्यपां धातु यस्मात्तस्माज्ज्वरातुरः ।
भवन्त्युष्णगात्रश्च न च स्विद्यति सर्वशः ॥

जब वातादि दोष दूषित होकर आमाशयमें † जाते हैं, उस समय

† आमाशय नाभि और स्तनोंके बीचमें है। यहीं भोजनका परिपाक होता है और यहींसे ज्वरकी उत्पत्ति होती है।

* कोठेकी गरमीको बाहर निकालते हैं, सारी अग्निको बाहर नहीं निकालते। यदि सारी अग्नि निकल जाय, तो पीछे दोषोंका पाचन कैसे हो ?

उनका वेग बढ़ा हुआ होता है। वे उद्दण्डकी तरह वहाँ ऊधम सा मचा देते हैं। ऊधमियोंकी तरह इधर-उधर फैलकर टेढ़े तिरछे घूमते हैं। उनके ऊधमसे भीतरकी गरमी या अग्निके परिमाणु चमड़े और रोम मार्गों की ओर आने लगते हैं और धातुके पतले भाग—पसीनेका बाहर आना रोक देते हैं। पसीनोंके बन्द हो जानेसे ज्वरवाले मनुष्यका शरीर गरम हो जाता है। दोषोंकी इस कारस्तानीसे पसीना बन्द हो जाता है, सारे शरीरमें पसीना नहीं आता और किसी-किसी ज्वरमें (जैसे, पित्त ज्वरमें) आ भी जाता है। *

---

* आमाशयमें भोजन पकनेके कारण, भापके बबखरे पैदा होते और उठते हैं। जब वातादिक दोष, मनुष्यकी ग़लतीसे, मिथ्या आहार विहार करनेसे, कुपित हो जाते हैं, तब भापके गरम बबखरोंमें मिल जाते हैं और रसमें पड़ कर उसे खराब करते हैं तथा रसके साथ मिलकर, रस और पसीने बहानेवाले स्रोतोंकी राह बन्द कर देते हैं एवं जठराग्निको मन्दी करके, पाचकाशयसे बाहर निकाल कर, शरीरके रोम कूपों या चमड़ेकी ओर ठेल देते हैं। रसरूप धातुओंकी राह रुकनेसे पसीने नहीं आते, इसलिये बदन गरम हो जाता है। भीतरकी अग्नि मन्दी हो जानेसे भूख नहीं लगती। अग्निको तेज़ करने और दोषोंके पचानेके लिये ही लंघन प्रभृति कराये जाते हैं। गरम भापके बबखरोंमें, जो चमड़ेकी ओर आते हैं, यदि पित्तका अंश अधिक होता है यानी गरमी ज़ियादा होती है, तो पित्तज्वर होता है और पित्तके लक्षण मिलते हैं। अगर उन बबखरोंमें कफका अंश अधिक होता है, तो गीलापन, चिकनाई और शरीरका भारीपन आदि लक्षण नज़र आते हैं। यदि वायुका अंश ज़ियादा होता है, तो रूखापन, हलकापन प्रभृति वायुके लक्षण मिलते हैं और वात ज्वर होता है। अगर वात और पित्तके अंश अधिक होते हैं, तो वातपित्तज्वर होता है। इसी तरह और ज्वरोंको समझ लो।

इतना लिखनेसे कुछ काम हो गया, पर हमारी पूरी तसल्ली न हुई। "वैद्यकल्पतरु"में एक सज्जन लिखते हैं—शरीरमें ज्वर रूप गरमी बढ़नेका कारण अंगरेज़ी वैद्यक शास्त्र इस तरह बताता है —"विष या ज़हरकी जातिका कोई हानिकारी पदार्थ ख़ूनमें मिल जाता है। उस पदार्थको पकाकर बाहर निकालनेके लिये ख़ूनकी गरमी बढ़ती है। प्रायः सभी ज्वरोंमें पसीना बन्द रहता है। उसका कारण यह है, कि दोषका परिपाक करनेके लिये ख़ूनकी गरमी बढ़नी चाहिये। आयुर्वेदमें जो दोषके पाचन करनेकी विधि है, उसका भी यही मतलब है। शरीरमेंसे सदैव निकलनेवाले पसीनेके बन्द होनेसे गरमी बढ़ती है और ज़ियादा पसीना आनेसे गरमी घटती है। ग्रीष्म कालमें गरमी बहुत पड़ती है, बाहरी गरमीसे शारीरिक गरमी बढ़ न जाय, शरीरमें जितनी गरमी चाहिये उतनीही रहे, ज़ियादा न हो जाय, इसके लिये गरमीमें पसीना अधिक आकर फालतू गरमीको बाहर निकाल देता है। शीतकालमें सरदीके कारण शरीरकी गरमी कम न हो जाय, इसलिये पसीना बहुतही कम आता है। यह प्राकृतिक रासायनिक उलट-फेर है। यह नियम याद रखनेसे ख़ूब लाभ है।

साफ मतलब यह है कि, वातादिक दोषोंकी दुष्टतासे, रस बहनेवाले स्रोतोंके रास्ते रुक जाते हैं, भीतरकी गरमी बाहर आती है, पसीना आना बन्द हो जाता है। इसीसे ज्वरवालेका शरीर गर्म हो जाता है।

नोट—एक बात और भी याद रखनी चाहिये। वह यह कि, वातादिक दोष अपने-अपने कोपकारक आहार विहारोंसे*, अपने अपने समयमें, कुपित होकर और सारी देहमें फैलकर ज्वर करते हैं। वायुके कोपका समय वर्षा ऋतु है इसलिये बरसातमें वात ज्वर होता है। पित्तके कोपका समय शरद् ऋतु है, इसलिये शरद्में पित्त ज्वर होता है। कफके कोपका समय वसन्त ऋतु है, इसलिये वसन्तमें कफ ज्वर होता है।

जिस तरह वर्षके बारह महीनोंमें ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुएँ होती हैं, उसी तरह दिन-रातके २४ घण्टोंमें भी छहों ऋतुएँ वर्त जाती हैं। दिनके पहले पहरमें वसन्त ऋतुका सा समय होता है, दूसरे पहरमें ग्रीष्म, तीसरेमें प्रावृट्, चौथेमें वर्षा, आधी रातका समय शरद्का और पिछली रात हेमन्त ऋतुका समय होता है। दिनका पहला पहर वसन्तके समान है, इसलिये उस समय कफ कोप करता है और उस समय कफज्वर होता या बढ़ता है। तीसरा पहर वर्षाके समान होता है, उस समय वायुका कोप होता है और उस समय वात ज्वरका उत्थान या जोर होता है। आधीरात शरद् ऋतुके समान है, इसलिये उस समय पित्तका कोप होता है और उस समय पित्त-ज्वर होता या जोर करता है।

* वात, पित्त और कफ किन-किन कारणोंसे और किस किस समय कुपित होते हैं, इन बातोंका जानना मनुष्यमात्रके लिये जरूरी है। अगर इनको जानकर मनुष्य सावधान रहें, तो रोग क्यों हो? वैद्यको तो इन बातोंपर खूब ही ध्यान रखना चाहिये। इसका खूब खुलासा हाल "चिकित्सा चन्द्रोदय प्रथम भाग पृष्ठ १२०—१२८में लिखा है। ऋतुओंके सम्बन्धमें १८४, १८५ और १८६ पृष्ठ उसी भागमें देखिये।

इनके सिवा बुढ़ापा, दिनका अन्त और रातका अन्त, वर्षाकाल और भोजन पच चुकनेके बादका समय - ये वायुके समय हैं। इसी तरह गरमीका समय, शरद् ऋतु मध्याह्नकाल, जवानी और भोजन पचनेका समय—ये पित्तके समय हैं। वसन्त, दिनका पहला भाग, रातका आरम्भिक काल और अन्तिम काल बालकपन और भोजन कर चुकनेका समय—ये कफके काल हैं। इन सब समयोंको ध्यान में रख कर इलाज करनेसे बड़ी अच्छी तरह सफलता होती है। वैद्योंकी जानकारीके लिये ही धन्वन्तरि महाराजने कहा है —

दोषा प्रकुपिता स्वेषु कालेषु स्वै प्रकोपनैः।
व्याप्य देहमशेषणा ज्वरमापादयन्ति हि॥

वात, पित्त और कफ अपने-अपने समयमें, अपने-अपने कोपकारक आहार विहार प्रभृतिसे कुपित होकर और सारे शरीरमें फैलकर ज्वर करते हैं।

ज्वरके सामान्य पूर्वरूप।



श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः।
इच्छा द्वेषो मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु॥
जृम्भाङ्गमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः।
अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पतस्यति ज्वरे॥

बिना मिहनत किये थकान सी मालूम होना, शरीरका गिर जाना, चित्तका न लगना—बेचैनी सी मालूम होना, शरीरका रंग बदल जाना, मुँहका जायका बिगड़ आना, आँखोंमें पानी भर आना, सरदी, हवा और धूपका कभी अच्छा और कभी बुरा लगना, जँभाई आना, शरीर टूटना और भारी होना, रोएँ खड़े होना, भोजनकी इच्छा न होना, आँखोंके सामने अँधेरे या चक्करसे आना, आनन्दका

नाश और सरदी सी लगना—ये ज्वरके सामान्य पूर्व रूप हैं, यानी ये लक्षण उस समय नजर आते हैं, जब कि ज्वर आनेवाला होता है। अगर किसीमें इन लक्षणोंमेंसे दो चार लक्षण कम भी मिलें, तोभी समझ लेना चाहिये कि, ज्वर आनेवाला है।

नोट—"चरक"में इन लक्षणोंके सिवा, आँखोंमें आँसू आना, नींद जियादा आना, आवाज, शीत और धूपका बुरा मालूम होना, जरा से कामको बहुत देरमें करना, अपने काममें लापरवाही करना, माता पिता और गुरुकी बात न मानना, बालकसे द्वेष करना, चन्दनादि का लगाना बुरा मालूम होना, मीठी चीज बुरी लगना, खट्टे चरपरे और नमकीन पदार्थों पर मन चलना प्रभृति लक्षण अधिक लिखे हैं। ये लक्षण ज्वरके पूर्व रूपमें होते हैं, इसीसे हमने यहाँ लिख दिये हैं।

पूर्वरूप जाननेसे क्या लाभ ?

किसी भी रोगके पूर्व रूप जाननेसे मनुष्य सावधान होकर उस रोगसे उसी तरह बच सकता है; जिस तरह आनेवाली विपद्के पूर्व-चिह्न जान लेने और उसका यथायोग्य उपाय करनेसे मनुष्य बच जाता है। राहमें चलता हुआ मनुष्य सिरपर घनघोर घटा उमडी देखकर किसी सुरक्षित स्थानमें बैठजाय, तो भीगनेसे बच जायगा और जो उन घटाओंको देखकर उनकी परवा न करेगा, वह भीग जायगा। इसी तरह अगर मनुष्य ज्वरके पूर्व रूप देखते ही उनका यथोचित उपाय करले, तो ज्वरसे बच सकता है। ज्वर आमाशयसे पैदा होता है। ज्वरके पूर्णरूपसे आनेके पहले उपरोक्त चिह्न नजर आते हैं। उस समय, यदि मनुष्य हलका भोजन या लंघन करे, अथवा वमन विरेचनसे मलको निकाल डाले तो निश्चय ही ज्वरसे बच जायगा। ज्वरके पूर्व रूपोंमें क्या करना चाहिये, इस विषयपर "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है, —

ज्वरके पूर्वरूपमें कर्तव्यकर्म्म।



ज्वरस्य पूर्वरूपेषु वर्तमानेषु बुद्धिमान्।
पाययेत घृत स्वच्छ तत स लभते सुखम्॥
विधिर्मारुतजेष्वेषु पैत्तिकेषु विरेचनम्।
मृदु प्रच्छर्दनं तद्वत्कफजेषु विधीयते॥
सर्वं त्रिदोषजेषूक्त यथादोषम् विकल्पयेत्॥
अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लघनादिना।
रूप प्राग् पयोर्विद्यान्नानात्व वहनिधूमवत्॥

ज्वरका पूर्वचिह्न नजर आते ही * बुद्धिमान् साफ-पुराना घी रोगी को, वातज्वरके पूर्व्वरूपमें, पिलावे। पित्तज्वर के पूर्वरूपमें हलका जुलाब दे और कफज्वरके पूर्वरूपमें साधारण हलके उपायसे वमन करा दे। द्वन्द्वज और त्रिदोषज ज्वरोंके पूर्व्वरूपोंमें उपरोक्त तर कीबोंमेंसे, दोषोंके विचारसे, जो मुनासिब समझे सो करे। इन उपायोंसे सुख होता है। यदि किसी कारणवश घी पिलाना, हलकी दस्तावर दवा देना या एक दो वमन—कय—कराना अनुचित या हानिकर जँचे, तो उसे लंघन करावे और गरम जल पिलावे। एक दो लंघनों और गरम जलसे भी काम हो जायगा, क्योंकि ज्वर

* निराम वातज्वर में या शुद्ध वातज्वर में ही पुराना घी पिलाना चाहिये। निराम वायु, निराम पित्त और निराम कफके लक्षण आगे लिखेंगे। वायु लंघन नहीं सह सकती, पित्त और कफ लंघन सह सकते हैं। लंघन हमेशा विचार कर कराने चाहिएँ। लंघन कब कराने, किस को कराने और किस को न कराने—इस विषय में आगे लिखेंगे। वातज्वर में वायु आम-रहित हो तो लंघन नहीं कराते, किन्तु आम-सहित हो तो लंघन कराते हैं।

नवीन ज्वर में वमन विरेचन की मनाही है (विशेष अवस्थाओं में नहीं भी है), किन्तु पूर्वरूप और रूप में आग और धुएँ की तरह भेद है, इसलिए घबराना नहीं चाहिये। पूर्वरूप में दोष प्रायः आमाशय में ही रहता है, इसलिये शोधन (वमन या विरेचन) से साफ हो जाता है, किन्तु पूर्वरूप प्रकट हो जाने पर, दोष रस और स्वेदवाहिनी नसों द्वारा चमड़े की तरफ आ जाता है। उस अवस्था में शोधन करने यानी दस्त कराने या कय कराने से दोष धातुओं में जम कर विषम ज्वर या धातुगतज्वर उत्पन्न करता है।

दोषोंके कारण से होता है और अग्नि मन्द हो जाती है। यदि भोजन न किया जायगा ; तो जठराग्नि, भोजनरूपी ईंधन न पानेसे, खराब दोषोंको पचा डालेगी , फिर ज्वर क्यों होगा ? "चरक"में लिखा है—"दूषित आमाशयको हलके भोजन या लंघनसे शुद्ध करले, तो ज्वरका भय न रहे।" निस्सन्देह ये दोनो उपाय सर्वोत्तम हैं। इनमें कोई खटका नहीं।

ज्वरके विशेष पूर्वरूप।



सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भात्यर्थं समीरणात।
पित्तान्नयनयोर्दाह कफान्नान्नाभिनन्दनम्॥

वात ज्वर आनेके पहले जँभाई या अँगड़ाइयाँ आती हैं। पित्त-ज्वर आनेके पहले नेत्रोंमे दाह या जलनसी होती है। कफज्वर आनेके पहले भोजनसे अरुचि हो जाती है।

नोट—वातज्वर आनेके पहले शरीरमें पीडा और हाथ पैरोंमें भड़कन तथा पित्तज्वरमें सिरमें दर्द होते देखा जाता है।

द्वन्द्वज पूर्वरूप।



यदि वातपित्त ज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और नेत्रोंमें जलन होती है।

यदि वातकफज्वर आनेवाला होता है, तो जँभाइयाँ आती हैं और भोजनसे अरुचि हो जाती है।

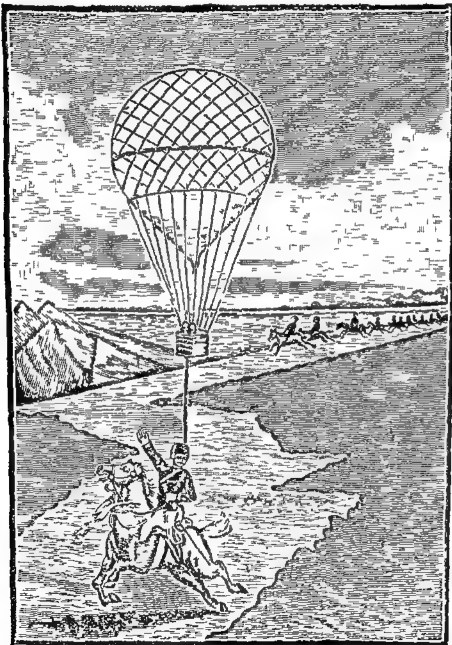
यदि पित्तकफज्वर आनेवाला होता है, तो आँखोंमें जलन और अन्न पर अनिच्छा होती है।

सन्निपातके पूर्वरूप।

अगर त्रिदोष-ज्वर आनेवाला होता है, तो उसके आनेसे कुछ पहले जँभाई, आँखोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये लक्षण होते हैं।

ज्वरके सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें पसीने नहीं आते हों, शरीरमें सन्ताप हो; यानी बदन गरम हो और सारे शरीर में दर्द या जकड़न हो, उसे "ज्वर" कहते हैं। अगर ये लक्षण हो, तो समझ लो "ज्वर" है।



जिस पुस्तकका यह चित्र है, उसका नाम "बेलून विहार है"। वह उपन्यास बड़ा ही दिलचस्प, शिक्षाप्रद, साहसवर्द्धक और सफरमें पढ़ने-लायक है। दाम



ज्वरकी सामान्य चिकित्सा।



वात, पित्त और कफ,—इन तीनों दोषोंके जियादा और कम होनेसे प्रधानता और अप्रधानता होती है। मान लो, किसीके ज्वरमें वात का जोर सबसे अधिक हो, पित्तका जोर बीचके दर्जेका हो तथा कफका जोर नीचे दर्जेका हो, तो उसे "वात-प्रधान त्रिदोष ज्वर" कहेंगे। इस तरह भी समझिये, किसीके त्रिदोष ज्वर है। उसमें पित्तकोप के कम लक्षण हैं वायुके कोपके उससे अधिक हैं और कफके कोपके सबसे अधिक हैं, तो कहेंगे - वृद्धपित्त है, वृद्धतर वायु है, और वृद्धतम कफ है। क्योंकि यहाँ कफ वृद्धतम यानी सबसे अधिक है, इसलिये उस ज्वरको 'कफप्रधान सन्निपात" कहेंगे। इसी तरह ठीक ठीक इस बातका भी पता लगा सकते हैं कि, पित्तका कोप तीन आने है, वायुका कोप पाँच आने है, और कफका कोप आठ आने है। जब इस तरह अंशांशकी कल्पना हो जाय, तब नुसखेमें औषधियाँ वात, पित्त और कफके कोपके अन्दाजेसे मुकर्रर की जा सकती हैं। जिन वैद्योंको वात, पित्त और कफके कोप, क्षय और वृद्धिके लक्षण अच्छी तरह याद होते हैं, वेही लक्षणोंको देखकर अंशांशकी कल्पना कर सकते हैं। प्रत्येक आयुर्वेद-चिकित्सकको ये बातें अच्छी

तरह याद रखनी चाहिये और रोगोंमें अंशांशकी कल्पना का अभ्यास करना चाहिये। अभ्याससे कौनसा काम सहज नहीं हो जाता? लेकिन यह काम साधारण बुद्धिवालेका नहीं है, इसीसे शास्त्रोंमें दोषोंके अंशांशको न जान सकनेवालेके लिये "सामान्य चिकित्सा" करनेकी सलाह दी गई है। "भावप्रकाश"में लिखा है :—

> ज्वरो यत्र दोषांशा विवेक्तुं नैव शक्नुयात्।
> साधारणीं क्रिया तत्र विदध्यात्तु चिकित्सकः॥

जिस ज्वरमें वैद्य दोषोंके अंशांश को न जान सके, उसमें उसे साधारण चिकित्सा करनी चाहिये।

अब यह विचार करना है कि साधारण चिकित्सा कैसी होती है और उसमें वैद्यको क्या क्या करना होता है। ज्वरकी साधारण चिकित्सामें, मामूली तौरपर, ऐसे काम करने होते हैं जिनसे किसी भी प्रकारके ज्वरमें हानि न हो, वरन लाभ ही हो, औषधियाँ ऐसी देनी होती हैं, जो ज्वरकी किस्म या दोषोंका अंशांश न जान सकनेपर भी, रोगीके पक्षमें लाभदायक ही हों, हानि किसी सूरतमें भी न करें। विशेष चिकितसा परमोत्तम और शीघ्रफलप्रद होती है, पर यदि कोई ऐसा स्थान हो, जहाँ प्रवीण और सर्व्वशास्त्रोंके जाननेवाला तथा अनुभवी वैद्य न हो, तो साधारण वैद्य भी साधारण चिकित्सासे रोगीको देर-अबेरसे रोगमुक्त कर सके अथवा शास्त्रज्ञ वैद्यकी समझमें भी जलदी ही रोग न आवे, ज्वरके अंशांश या उसकी किस्मका पूरे तौरसे भेद न मालूम पड़े, तो पहले मामूली उपाय तो कर दे, पीछे विचार किया करे अथवा किसी और वैद्यसे सहायता ले। हमने अनेक बार अपनी आँखोंसे देखा है, बड़े-बड़े डाक्टरी और कविराजी-शिक्षाप्राप्त धुरन्धर विद्यान वैद्य कई-कई दिनों तक रोगका असली मर्म नहीं समझ सके हैं—उन्होंने अपने नामके घमण्डमें रोगीको अव-तर की हालतमें पहुँचा दिया है। चिकित्सा-कर्ममें अभिमान

करना बड़ी बुरी बात है। सभी शास्त्रोंके ज्ञान लेने और वर्षों अनुभव प्राप्तकर लेनेपर भी, मनुष्य चूक जाता है। आखिर मनुष्य ही तो मनुष्यही न ? भगवान् तो है ही नहीं, कि उससे भूल न हो। इस काममें दूसरे वैद्योंसे सहायता लेने और मिलकर काम करनेमें बड़ा सुभीता है। डाक्टर लोग प्राय ऐसा ही करते हैं, पर हमारे वैद्यराज तो दूसरेके नामसे उसी तरह चिढ़ने लगते हैं, जिस तरह स्त्री अपनी सौतके नामसे चिढ़ने लगती है।

ज्वर रोगी की सामान्य चिकित्सा करनेवाले वैद्यको भी निम्न लिखित विषयोंका ज्ञान अच्छी तरह होना जरूरी है। कम से कम इतनी बातोंके जाने बिना कोई वैद्य किसी तरहकी चिकित्सासे भी रोगीको आराम नहीं कर सकता, बल्कि उलटा बेचारेको यमसदन की राह दिखा सकता है :—

(१) ज्वर-रोगीको कैसे घरमें रखना चाहिये।

(२) ज्वरवालेके लिए हवाका कैसा प्रबन्ध करना चाहिये।

(३) ज्वरवालेको किन-किन आहार विहारोंसे बचाना चाहिये।

(४) ज्वर-रोगीको लघु पथ्य देना या लङ्घन कराने चाहिये। यह काम किस तरह करना चाहिये। किन्हें लङ्घन कराने उचित हैं और किन्हें लङ्घन कराने अनुचित हैं, यह सब जानना चाहिए। अन्धाधुन्ध लघन न कराने चाहिये।

(५) ज्वर रोगीको गरम या शीतल जल देना चाहिये ?

(६) लघन और गरम जल प्रभृतिसे भी दोष न पचें, तो क्या दवा देनी चाहिये ? किस प्रकारके ज्वरमें वमन-विरेचन मना हैं, और किसमें देनेकी आज्ञा है ? पहले पाचन देना या शमन औषधि देनी, कब देनी, कब तक न देनी, किस समय औषधि सेवन करानी जिससे अधिक लाभ हो इत्यादि बातोंका अच्छा और पूरा ज्ञान वैद्यको होना चाहिये।

(७) सब तरहके ज्वरोंपर चलनेवाले ज्वरके परीक्षित योग या नुसखे याद रखने चाहियें।

(८) रोगीको कब अन्न देना चाहिये? ज्वर-रोगियोंके लिये कौन कौनसे अन्न पदार्थ अथवा फल और तरकारियाँ अथवा मांस हितकारी हैं और कौन कौनसे अपथ्य या अहितकारी हैं? रोगी को कैसे स्थानमें भोजन कराना चाहिये, उसके मुखका स्वाद सुधारनेको क्या उपाय करना चाहिये इत्यादि बातें तथा ज्वर रोगीके देने योग्य मण्ड, भात, यवागू पेया, रसौदन प्रभृति बनाने की विधि जाननी चाहिये।

नोट—इन आठों विषयोंको हम आगे अच्छी तरह समझा समझा कर, साथ ही शास्त्रोंके प्रमाण दे देकर, विस्तारपूर्वक लिखेंगे। जिसे चिकित्साकर्म करना हो, उसे इनमेंसे प्रत्येक विषय खूब याद कर लेना चाहिये।

ज्वररोगी के रहने का स्थान।



ज्वर आते ही ज्वर-रोगी को ऐसे मकान में रखना चाहिये जो खूब साफ सुथरा हो—मैला कुचैला न हो, जिस में बदबू न आती हो, जिसमें खाने पीने के सामान आटा दाल मिर्च मसाले प्रभृति न रक्खे हों, आदमियों का जमघट न हो, बाहरी हवा बहुत तेजी से न आती हो। "भावप्रकाश"में लिखा है—

सामान्यतो ज्वरी पूर्व निवाते निलय वसेत।
निर्वातमायुषो वृद्धिमारोग्य कुरुते यत॥

"जिस दिन ज्वर आवे उसी दिन से, ज्वर रोगी को वायुरहित घरमें रक्खो, क्योंकि वायुरहित स्थान उम्र को बढ़ानेवाला और आरोग्यता करनेवाला है।" इस शास्त्राज्ञा का मर्म न समझ कर

आजकल लोग रोगी को ऐसे मकान मे रखते हैं, जिसमे हवा का अश भी न आता हो। दरवाजों को वन्द कर देते हैं जाली झरोखों में कपडे ठूंस देते हैं, इस से रोगी का दम घुटने लगता है, रोगी अधमरा हो जाता है, रोग वढ जाता है और उसकी मृत्यु न हो तोभी मर जाता है। इस वात को न रोगी के घरवाले विचारते हैं और न चिकित्सक महाशय ही कि, यदि विल्कुल हवा न मिले तो कोई भी प्राणी विना रोग ही मर जाय। हवा से ही प्राणियों की जिन्दगी है। आरोग्य के लिये जिस तरह साफ हवा की जरूरत है, रोगी को भी उसी तरह वल्कि उससे जियादा साफ हवाकी जरूरत हे, क्योंकि तन्दुरस्त मनुष्यों की अपेक्षा रोगी हवा को जियादा और जल्दी खराव करता है। रोगी के सांस द्वारा गन्दी और रोग के परमाणुओं से भरी हुई जहरीली हवा निकलती है, उसके वाहर जाने और वाहर से ताजा हवा के आने की परमावश्यकता है। अगर हवा के आने जाने के सव द्वार वन्द कर दिये जायेंगे, तो गन्दी हवा कैसे वाहर जायगी और साफ तन्दुरुस्ती को वरशनेवाली हवा कैसे आवेगी? उपरोक्त शास्त्र-आज्ञा वहुत ठीक और उचित है। उसका अर्थ जैसा लगाया जाता है, वैसा नहीं है। उस का यह मतलव है कि वाहर की तेज हवा या तेज हवा के झोंके सीधे रोगीको न लगने पावे, क्योंकि तेज हवा के झोंके निश्चय ही रोगीके ज्वर को वढानेवाले होते हैं, इस लिये रोगीको साफ हवादार मकानमें रखना चाहिये, घरके दरवाजे वन्द न करने चाहिये, हवा के आने-जाने की राह खुली रखनी चाहिये, पर इस वातका ध्यान रखना चाहिये कि, रोगीके शरीर को वाहरी हवाके झोंके न लगे, क्योंकि वाहरी हवा पसीनोंका आना औरभी वन्द कर देती है तथा किसी-किसी दिशाका हवा वात वढानेवाली, पित्त को कुपित करनेवाली अथवा कफको कुपित करनेवाली होती है। अगर रोगीको वाहरकी हवा न लगने दी जाय

तो कोई खटका ही न रहे, इसी से वायुरहित स्थान की बात लिखी गयी है; पर हवा का आवागमन ही बन्द कर देने की बात नहीं लिखी गयी है। अगर हवा के लगने का भय हो, तो रोगी के पलँग के पास, कुछ स्थान छोड़ कर साफ़-सुथरा पर्दा लगा देना चाहिये और दरवाजे तथा छत के पास की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहियें। हाँ, नवीन ज्वर वाले को भारी और गरम वस्त्र उढ़ा देने में हर्ज नहीं, पर वह भी ऐसा उढ़ाना चाहिये, जिससे रोगी घबरावे नहीं और उसका साँस न घुटे। ये सब व्यवस्थाएँ ज्वर के अनुसार करनी चाहिएँ। कोई ज्वर ऐसे होते हैं, जिनमें मकान को गरम रखना होता है, गरम वस्त्र उढ़ाने होते हैं और कोई ऐसे होते हैं, जिनमें मकान शीतल रखना होता है और शीतलही उपचार किये जाते हैं। पित्त ज्वर और दाह ज्वर में रोगी को ऐसे मकान में रखते हैं, जो शीतल हो, जिसमें ख़सकी टट्टियाँ लगी हों, चन्दन और ख़स का छिड़काव हो रहा हो। "भावप्रकाश"में लिखा है —

हर्म्ये शुभ्राभ्रसंकाशे शशांककर शीतले।
मलयोदक सम्सिक्ते स्यात्पित्तज्वरी नर ॥

पित्त ज्वर-रोगी सफेद बादल के समान निर्मल, चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल हुए तथा मलयागिर चन्दन के जल से छिड़काव किये हुए मकान में सोवे।" कहिये, अब तो समझ गये न? सभी कामों में बुद्धि से काम चलता है। जिसमें भी इलाज मुआलिजे के काम में तो कदम कदम पर बुद्धि की जरूरत है।

ज्वरवालेके लिये हवा।



क्योंकि ज्वर रोगी के लिये बाहर की हवा की मनाही है, और बहुत से ज्वरों में ज्वररोगी को इतनी गरमी लगती है कि, रोगी

व्याकुल हो जाता है। इसलिये कृत्रिम उपायो से रोगी की हवा करनी चाहिये। पंखे की हवा से हानि नही होती, बल्कि लाभ ही होता है। क्योंकि शास्त्र में कहा है—"व्यजनस्यानिलस्तृष्णा स्वेदमूर्च्छाश्रमापह" अर्थात् पंखे की हवा पसीना, प्यास, बेहोशी और थकान को नाश करती है। परन्तु जिस किस्म के पखे की हवा रोगी के लिये अच्छी हो, उसी किस्म के पंखे की हवा करनी चाहिये। "भावप्रकाश" में लिखा है :—

"ताडके पखे की हवा त्रिदोष नाशक होती है। वासके पखे की हवा गरम और रक्तपित्त को कुपित करनेवाली होती है, कपडे की हवा त्रिदोषनाशक, चिकनी, हृदयको हितकारी और उत्तम है। चमर, मोरछल और बेतके पखे की हवा भी कपडे के पखेकी तरह परमोत्तम होती है। "हारीत-सहिता"में लिखा है—

'ताड के पंखे की हवा तथा केलेके पत्ते की हवा शीतल और मधुर है। इन को हवा थकान को हरती है, नींद लाती है और आनन्द करती है तथा शोक, रोग, विकार, दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रम को शान्त करता है। इन दोनो तरह के पखो की हवा सब तरह से उत्तम है, पर इस में भी एक दोष है, वह यह कि गीलेपन के कारण कफ को कुपित करती है।" ताड का पंखा सूखा हो सकता है, पर केले के पत्ते का पखा सूखा किसी काम का नही। केले के पत्तेका पखा पित्तज्वर और दाहज्वरमें हर तरह उत्तम है।

खसके पखे और मोरपख से बने पखे की हवा अच्छी होती है। इसकी हवा सुगन्धित, किसी कदर शीतल, ग्लानि, भ्रम, मूर्च्छा, बेहोशी, शोष, विसर्प और विष के नाश करनेवाली होती है।

कांसी के वर्तन की हवा रूखी और गरम होती है, किन्तु वात को शान्त करती, श्रम, दाह—जलन और थकानको नाश करती तथा सुख देती और नींद लाती है।

बाँस के पखे की हवा तन्द्रा और निद्रा करती है, रूखी और कषेली है, किन्तु वातको कुपित नहीं करती।

कपडेकी हवा घाव पर सूजनवाले के हकमें अच्छी नहीं है। यानी इसके सिवाय और सबको अच्छी है। लाल कपडेकी हवा सदा खराब है। लाल कपडेकी हवा सदा त्यागनी चाहिये क्योंकि यह कफ और रक्त—खून को कुपित करती है तथा अनेक रोग पैदा करती है और परिश्रम, ग्लानि, प्यास, तन्द्रा तथा निद्रा बहुत करती है।

नोट—रोगानुसार या देशानुसार जैसे पखे की हवा उपकारी हो, वैसा ही पखा काम में लाना चाहिये। लाल वस्त्रका हवा सदा त्यागनी चाहिये। घाव पर सूजनवाले को किसी तरहके भी कपडेके पखे की हवा अच्छी नहीं है। कफप्रधान रोग में केले और गीले ताडके पखे की हवा अच्छी नहीं है। बाँस के पखेकी हवा रक्त-पित्त, पित्तज्वर और दाहज्वर में अच्छी नहीं है। साधारणतया, ज्वरवालों के लिये सफेद वस्त्र, मोरपख, चवर और सूखे ताडके पंखे की हवा हितकारी है। बिजली के पखेकी हवा ज्वरवालेके लिये हितकारी नहीं है।

ज्वरमे पथ्यापथ्य

(ज्वर रोगीके त्यागने और सेवन करने योग्य आहार विहार)

सभी रोगोंमें पथ्य और अपथ्य पर ध्यान देनेकी सबसे बडी जरूरत है, क्योंकि पथ्य यानी हितकारी आहार विहार सेवन करने और अहितकारी आहार विहार त्यागने से, बिना किसी दवाके भी रोग आराम हो जाता है, पर अपथ्य सेवन करने से, हजारों दवाइयाँ खाने से भी, रोग नाश नहीं होता। कहा है—

विनाऽपि भेषजैर्व्याधि पथ्यादेव निवर्त्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजाना शतैरपि॥
पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणै।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैं॥

सारे रोग, बिना औषधि सेवन किये, केवल पथ्यसे ही नाश हो जाते हैं, परन्तु कुपथ्य सेवन करनेसे, सैकडों दवाइयाँ होने पर भी, रोग आराम नहीं होता।

यदि पथ्य सेवन करे तो औषधि की क्या जरूरत? अर्थात् हितकारी आहार विहार सेवन करनेवाले को दवा खानेको जरूरत नहीं वह तो पथ्य सेवन करनेके कारण, बिना दवा ही आराम हो जायगा, इसी तरह अपथ्य सेवन करनेवाले यानी अहितकारी आहार विहार सेवन करनेवालेको भी दवा की ज़रूरत नहीं, क्योंकि जो अपथ्य सेवन करता है, वह हजार उत्तम से उत्तम दवाइयाँ खानेसे भी आराम न होगा।

कैसे अनमोल उपदेश हैं। इनके भीतर कैसा अमृत भरा हुआ है। ये रोगके नाश करने और आरोग्य रहनेके सच्चे मत्र हैं। पर दुःख है कि, आजकल भारतवासी आयुर्वेदका पढना छोड देनेके कारण, इन अनमोल उपदेशोंको जानते ही नहीं। जानते हैं, केवल चिकित्सक, पर वे भी दुर्भाग्यसे जितना ध्यान अच्छी अच्छी औषधियों पर देते हैं, इन मुख्य और शीघ्र रोग नाश करनेवाली तत्व पूर्ण बातो पर नहीं देते। आजकलके वैद्य अच्छी तरह रोगोसे बात भी नही करते, जरा नाडी छुई, दो चार बातें पूछी और नुसखा लिखा। फीस हाथमें आते ही नौ दो ग्यारह हुए। रोगी या रोगी के परिचारकने पूछा कि, वैद्य जी। रोगीको क्या पथ्य और अपथ्य है तो जूते पहनते हुए फरमा दिया—"अभी तो लघन होने दो।" यदि रोगीको अन्न दिलाना हुआ तो कह देते हैं—"सूखी रोटी, मूँगकी

दालका पानी अथवा साबूदाना देदो।" बस हो गया, सब काम। वैद्यराजका फर्ज़ अदा हो गया। अब रोगीका परिचारक या घरका आदमी आयुर्वेदका ज्ञाता हुआ, तब तो वह रोगीको हितकारी आहार विहार सेवन करावेगा और अहितकारी आहार विहारोंसे बचावेगा, नहीं तो वैद्यजीका यश धूलमें मिला और रोगीके प्राण सङ्कटमें पड़े। रोगी या रोगोके परिचारकको पथ्यापथ्य-सम्बन्धी बातें बतला देना वैद्यराजका पहला कर्त्तव्यकर्म है। जो वैद्य इस ओर ध्यान नहीं देते, अँधाधुन्ध दवा दिये जाते हैं, उन्हें कर्म भाग्यसे ही कभी सिद्धि प्राप्त होजाती है। आयुर्वेदमें लिखा है –

भिषक् सर्वेषु रोगेषु निर्दिष्टानि यथायथम्।
निदान पथ्यापथ्यानि त्रीणि यत्नात् विचिन्तयेत्॥
पूर्वं सर्वगदे कुर्यात् निदानपरिवर्जनम्।
तेनैव रोगा शीयन्ते शुष्क नीराइवाकुरा॥
ह्यथा सर्वास्व पथ्यानि यथास्वं च विवर्जयेत्।
ता ए पथ्यैर्विवर्द्धन्ते दोहदैरिव वीरुध॥

वैद्यको चाहिये कि, समस्त रोगोंमें यथार्थ रीतिसे कहे हुए निदान, पथ्य और अपथ्य,—इन तीनों पर विचार करे।

पहले सब रोगोंमें रोगका निदान यानी कारण बन्द करना चाहिये, क्योंकि रोगके कारणको त्यागनेसे रोग इस तरह नाश हो जाते हैं जिस तरह जलके सूख जानेपर वृक्षके अङ्कुर सब नष्ट हो जाते हैं।

रोगी अपथ्य पदार्थों को बिल्कुल त्याग दे, क्योंकि अपथ्य सेवनसे रोग इस तरह बढते हैं, जिस तरह जल सींचनेसे बेल बढती है।

साराश यह है कि, रोगीको अपथ्य सेवनसे बचाना चाहिये और पथ्य सेवनकी सलाह देनी चाहिये। साथ ही रोगके कारणको जानकर उसे फौरन बन्द करना चाहिये, नहीं तो अमृत पिलानेसे भी उपकार न होगा। जिसको मिट्टी खानेसे पीलिया हुआ है, उसका मिट्टी खाना बन्द न किया जायगा, तो कैसे आराम होगा? जिसे एक साथ दूध-मछली या दूध-मूली खानेसे रोग हुआ है, उसका

दूध-मछली या दूध मूली एक साथ खाना बन्द न किया जायगा तो रोग कैसे आराम होगा ? जिसे अति स्त्रीप्रसंगसे क्षयरोग हुआ है, उसको आगे स्त्रीप्रसंग करनेसे न मना किया जायगा, तो कैसे क्षयरोग जायगा ? इसी तरह और उदाहरण भी समझ लीजिये । यदि कोई नये ज्वरवाला ज्वरमें स्नान अथवा स्त्रीप्रसंग करेगा तो वह कौन सी दवासे आराम होगा ? यदि नवीन ज्वरवालेको अँधाधुन्ध वमन या विरेचन करा दिया जायगा, तो उसका ज्वर बिगड़कर विषमज्वर न हो जायगा ? यदि ज्वरवालेको ज्वरकी हालतमें क्रोध करनेकी मनाही न की जायगी और वह क्रोध करेगा, तो उसका ज्वर बढ़ेगा या घटेगा ?

ज्वर रोगीको जिसतरह अपथ्य सेवन हानिकारक है उसी तरह मूढ़ वैद्यकी दवा लेना भी अनिष्टकारक है। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं —

औषधं मूढ वैद्यानां त्यजन्तु ज्वरपीडिताः ।
परसंसर्गसंसक्तं कलत्रमिव साधवः ॥

ज्वर-पीडित मनुष्य मूढ वैद्यकी दवाको उसी तरह त्याग दे, जिस तरह परपुरुषरता नारीको सज्जन लोग त्याग देते हैं।

बहुत समझा चुके, समझदारोंके लिये इतना कम नहीं है। अब हम यह लिखते हैं कि, ज्वरवालों और खासकर नवीन ज्वरवालोंको किन-किन बातोंसे परहेज करना चाहिये —

नवीन ज्वरमें अपथ्य

परिषेकान्प्रदेहांश्च स्नेहान्संशोधनानि च ।
दिवास्वप्नं व्यवायञ्च व्यायामं शिशिरं जलम् ।
क्रोधं प्रवातं भोज्यांश्च वर्जयेत्तरुणज्वरी ॥

तरुण ज्वर यानी नये बुखारमें रोगीको स्नान प्रभृति करने चन्दनादिका लेप करने, तेलकी मालिश कराने, स्नेहपानादि—घी तेल खाने पीने, वमन, विरेचन—जुलाब वगैर लेने, दिनमें सोने

मैथुन करने, कसरत करने, शीतल जल पीने, क्रोध करने, (बाहरी) हवा और भोजन—इन सबसे बचना अर्थात् इन्हें त्याग देना चाहिये। इन अपथ्योंके सेवन करनेसे शोष, वमन, मद मूर्च्छा, भ्रम, तृषा—प्यास और अरुचि आदि उपद्रव उत्पन्न होते हैं।

"हारीत संहिता"में लिखा है—"कसरत करनेसे ज्वर बढ़ता है, मैथुन करनेसे शरीर जकड़ासा हो जाता है तथा मूर्च्छा और मृत्यु होती है, स्नेह पान करनेसे मूर्च्छा—बेहोशी, वमन, मद और अरुचि होती है। भारी अन्न खाने और दिनमें सोनेसे मलविष्टम्भ हो जाता है, दोषोंका कोप होता है, जठराग्नि मन्दी हो जाती है और शरीरके स्रोत या छेद बन्द हो जाते हैं।

"चरक' में लिखा है —

नवज्वरे दिवास्वप्न स्नानाभ्यंगान्न मैथुनम्।
क्रोध प्रवात व्यायाम कषायांश्च विवर्जयेत् ॥

नये ज्वरमें दिनमें सोना स्नान करना, शरीरमें तेलकी मालिश कराना *, अन्न भोजन, अत्यन्त हवादार स्थान, परिश्रम और कषाय यानी कषैले रसका क्वाथ पीना—इन सबसे बचना चाहिये।

---

* वातज्वरमें तेलकी मालिशकी मनाही नहीं है। "चरक"में लिखा है।—

ज्वरे मारुतजे त्वादावनपेक्ष्यापिहिक्रमम्।
कुर्यान्निरनुबन्धानामभ्यंगादीनुपक्रमान् ॥
पाययित्वाकषायन्च भोजयेद्रसभोजनम्।
जीर्णज्वरहरकुर्यात सर्वथाश्चाप्युपक्रमम् ॥

यदि वातज्वरमें कफ अथवा पित्तका सम्बन्ध न हो, यानी शुद्ध वातज्वर हो, तो पहले ही लंघन आदि कर्मकी उपेक्षा करके, अभ्यङ्ग आदि चिकित्साका अवलम्बन करो अर्थात् शुद्ध वातज्वर हो, उसमें पित्त और कफका लवलेश न हो, तो लंघन वगैर न कराकर, तेलकी मालिश वगैर कराओ, रोगीको मीठे और चिकने काढ़े पिलाकर मांसरस पिलाओ। वातज्वरमें सारे काम जीर्ण ज्वरकी तरह करो। यानी वात ज्वरका इलाज जीर्ण ज्वरकी तरह करो।

ज्वर और श्रमज्वर या निराम वातज्वर हो, तो रोगीको हलका भोजन देना चाहिये, पर भूलकर भी भारी भोजन न देना चाहिये। "वंगसेन" लिखते हैं :-

गुर्वभिष्यन्धकाले च ज्वरी नादद्यात्कथञ्चन।
न तु तस्याहित मुक्तमायुषे वा सुखाय च॥

ज्वर वालेको कदापि भारी और अभिष्यन्दी पदार्थोंका भोजन तथा विना समय भोजन न देन चाहिये, क्योंकि भारी और असमयका भोजन रोगीकी आयु और सुखके लिये हितकारी नही होता।

आजकल नये पुराने सब तरहके ज्वरोंमे दूध देनेकी चाल हो गयी है। डाक्टरोंकी नकल वैद्य लोग भी करने लग गये हैं। वैद्य इस बातको नही समझते कि, डाक्टरी दवाइयोंकी प्रकृति ही ऐसी है कि, उनके साथ दूधकी आवश्यकता है। हमारी आयुर्वेदीय औषधियाँ नये ज्वरमें दूधको नही मानती। दूध पौष्टिक पदार्थ है, इसीसे शास्त्रकारोंने नवीन ज्वरमें दूधकी सख्त मनाही की है। देखिये "सुश्रुत"में लिखा है —

कृशोऽल्प दोषो दीप्तश्च नरो जीर्णज्वरार्दित।
विबद्ध सृष्टदोषश्च रूक्ष पित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्त सदा हो वा पयसा स सुखी भवेत्।
तदेव तु पय पीत तरुणे हन्ति मानवम्॥

जो रोगी दुर्बल हो, जिसके अल्प दोष हों, जीर्णज्वरसे पीडित हो, जिसके विवन्ध हो और विवन्ध होनेके कारण दोष अनुलोमन न होते हो, जिसके दोष कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा हो, पित्तवात ज्वरवाला हो, प्यास और दाहसे युक्त हो—ऐसा रोगी दूध पीनेसे सुखी होता है, परन्तु तरुण ज्वरमें पिया हुआ दूध रोगीको मार देता है। सारांश यह है कि, कफ क्षीण होने पर, जीर्णज्वरमें दूध देना चाहिये। नये ज्वरमे दूध विषका काम करता है।

नोट—(१) नवीन ज्वरमें वमन या विरेचन मना है, पर तत्काल अधिक खा जानेसे ज्वर हुआ हो तो वमन करा देनेमें हर्ज नही है। यदि स्रोतोका मल पक कर कोठेमे ठहर गया हो, तो वमन या विरेचन से निकाल देना चाहिये, क्योंकि पका हुआ दोष, न निकालनेसे, विषम ज्वर आदि भयकर रोग करता है। अगर बलवानके कफ ज्वर हो, तो हलकी वमन करा देनी चाहिये, अगर पित्तप्रधान ज्वर हो और पक्वाशय शिथिल हो, तो हलका जुलाब देना चाहिये। अगर वेदना-सहित उदावर्तयुक्त वातज्वर हो, तो निरुहण वस्ती करनी चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, तो सिरका आरोपन और दर्द दूर करनेवाली नस्य देकर, सिरका मलगम निकाल सकते हो। अगर ये हालतें न हों, तो आमज्वर या कच्चे ज्वरमें शोधन औषधि देने या शोधन शमन औषधि देनेसे विषम ज्वर हो जाता है। हाँ, जिसने लघन किये हों, उसे तथा गर्भवती, बालक, दुर्बल तथा डरे हुयेको वमन न करानी चाहिये। इस विषयमें हम आगे विस्तारसे लिखे गे। जहाँ तक हो, वमन विरेचन न कराना चाहिये। अगर रोगी अत्यन्त दुखी हो, बिना हलके जुलावके रोग जाता न दीखे तभा, मजबूरीसे, जुलाव—परन्तु बहुत हलका जुलाव देना चाहिये। क्योंकि, बिना विशेष अवस्थाके, नवीन ज्वरमें जुलाब देनेसे वमन, मूर्च्छा, मद, श्वास, मोह भ्रम, तृषा और विषम ज्वर होनेका भय रहता है। जहाँ तक हो, गुदामें बत्ती वगैर डालकर दस्त करा देना चाहिये। इस विषयमें भी आगे विस्तारसे लिखेंगे।

२ नवीन ज्वरमें कषाय या काढेकी मनाही है पर यह काढा यदि जल और पेया प्रभृतिके संस्कारके लिये काममें लाया जाय, तो मनाही नही है। नवीन ज्वरमें "आरग्वधादि पाचन"की मनाही नही है क्योंकि वह त्रिदोषनाशक, आमपाचक, दीपन और शूलनाशक है। "षडग पानीय" क्वाथ ही है, पर उसकी भी मनाही नही है। वह दिया जाता है, क्योंकि उसमें काढेके लक्षण नहीं मिलते। षडग पानीय प्रथम तो पकाया ही नही जाता और यदि पकाया भी

जाता है, तो आधा पानी रक्खा जाता है, किन्तु कषाय या काथमें जलका चौथा या आठवाँ भाग शेष रहता है और वह कषैले रस और कषैले रंगका हो जाता है। कषाय पीनेसे बढ़े हुए दोष अपना अपना मार्ग छोड़कर आममें मिल जाते हैं। उस समय उनको काबूमें करना महा कठिन हो जाता है। इसीसे नवीन ज्वरमें, बिना दोष पके, कषाय न देना चाहिये।

३ जिस तरह नवीन ज्वरमें दूध विषके समान है, उसी तरह नवीन ज्वरमे घी" भी नुकसानमन्द है। बारह दिन हुए बिना ज्वररोगीको "घी" न देना चाहिये। "सुश्रुत"में लिखा है,—

घृत द्वादशरात्रात्तु देय सर्वज्वरेषु च।
तेनान्तरेणाशय स्व गता दोषा भवन्ति हि॥

सब तरहके ज्वरोंमें १२ दिन बाद "घी" देना चाहिये, क्योंकि इतने दिनोंमें सब दोष पककर अपने- अपने स्थानोंमे आ जाते हैं।

"बंगसेन"में लिखा है —

पक्वेषु दोषेष्वमृत तद्विषोपमन्यथा।
दशाहात्परतो दाने ज्वरोपद्रववृद्धिकृत्॥

ज्वरकी पकी अवस्थामें घी अमृतके समान गुण करता है, किन्तु ज्वरकी अपक्व अवस्थामें यानी आमज्वर या कच्चे ज्वरमें घी विषके समान अवगुण करता है। दश दिनके भीतर घी ज्वरके उपद्रवोंको बढ़ाता है।

"हारीतसंहिता"में लिखा है —

ज्वरे विबन्धे विषूचिकायामरोचके वा शमिते तथाग्नौ।
पानात्यये वापि मदात्यये वा शस्त न सर्पिर्वदुमन्यते सुधी॥

ज्वर, विबन्ध, हेजा, अरोचक, मन्दाग्नि, पानात्यय, मदात्यय— इन रोगोमें वैद्य "घी" देना अच्छा नहीं समझते।

४ ज्वर-रोगीको दिनमें सोनेकी मनाही इसलिये है कि, दिनमें सोने से कफ बढ़ता है और ज्वरमें कफका बढ़ना अच्छा नहीं। हाँ, गरमीके मौसममें दिनमें सोना मना नहीं है। जिनको सदा दिनमे सोनेकी आदत है, उनको दिनमें सोनेकी कभी मनाही नहीं है, क्योंकि दिनमें सोनेकी आदतवाले अगर दिनमें नहीं सोते, तो उनके वायु आदि दोष कुपित हो जाते हैं, इसलिये आदतवाले बेखटके सोवें।

इनके सिवा जो कसरत, परिश्रम, स्त्रीप्रसंग, अधिक राह चलने और हाथी घोड़ेकी सवारी करनेसे थक गये हों, वे भी दिनमें सो सकते हैं। थका हुआ, अतिसार रोगी, शूल रोगी, श्वास रोगी, वमन रोगी, तृषा रोगी, हिचकी रोगी, वात रोगी, क्षीण, कफक्षीण रोगी, बालक, बूढ़ा, अजीर्ण-रोगी, रातमें जागनेवाला, शराब वगैरःका नशा करने वाला और जिसने लङ्घन या उपवास किये हों—ये सब मनुष्य इच्छानुसार सो सकते हैं। जिसे मार्ग चलनेसे बुख़ार आया हो, उसे भी दिनमें सोनेकी मनाही नहीं है। "भावप्रकाश" में लिखा है —

अध्वश्रान्तेषु चाऽभ्यङ्ग दिवा निद्राञ्चकारयेत्।

जिसे अत्यन्त मार्ग चलनेसे ज्वर हुआ हो, उसके बदनमें वैद्य तेलकी मालिश करावे और दिनमें सुलावे।

५ नवीन ज्वरमें तेलकी मालिश करानेकी मनाही है, पर यह मनाही क्यों है, इस बातको भी जानना जरूरी है। असल बात यह है, तेलकी मालिशसे पसीने रुकते हैं, दूसरे तेल अपने चिकनेपनके कारण कफकारक और आमवर्द्धक है, इसीसे नये बुख़ारमें तेल मालिश कराना मना है, किन्तु किसी औषधके साथ पकानेसे तेलके गुण बदल जाते हैं। रूखी औषधिके साथ तैयार किया हुआ तेल रूखा होता है, मेदनाशक द्रव्योंके योगसे बनाया हुआ तेल मेदनाशक होता है, पसीनेनाशक द्रव्योंके साथ बनाया हुआ तेल

पसीने नाशक होता है और पुराने ज्वरनाशक द्रव्योंके साथ पका हुआ तेल पुराने बुखारको नाश करता है। पुराने बुखारोंमें तेलकी मालिशसे ज्वर छूट जाता है। नये ज्वरमें भी, वातज्वरमें, तेलकी मालिश करानेकी आज्ञा "चरक"में है। राह चलनेकी थकानसे पैदा हुए ज्वरमें तो तेलकी मालिश कराना स्पष्ट ही लिखा है। जहाँ कही सारे शरीरमें तेल मलवाना मना किया है, वहाँ भी किसी खास मुकाम पर तेल लगानेसे हर्ज नही।

ज्वरमें पथ्य ।



ज्वरवालेको यवागू, भात तथा खीलोंके लिये लाल शालि चाँवल और पुराने साँठी चाँवल अत्यन्त हितकर और ज्वरनाशक हैं।

जिन ज्वरवालोंको यूप मुआफिक हो, उनके लिये मूँग, मसूर, चने और कुलथी तथा मोठका यूप देना हितकर हैं।

ज्वरवाले साग खाना चाहें तो पटोल पत्र, बैंगन, परवल, करेला, ककोडा, पित्तपापडा, कच्ची मूली और गिलोयके पत्ते—इनका साग वैद्य उन्हें दे। ये सब ज्वरनाशक हैं।

जिन ज्वरवालोंको मास माफिक है, उनको लवा, तीतर, काला हिरन, लाल हिरन, चितकबरा हिरन, खरगोश, किसी कदर लाल हिरन, काली पूँछ का हिरन अथवा सारी जातिके हिरनोंका माँस देना हितकर है।

जिस ज्वर रोगीको वायुका दोष हो उसको, मात्रा और कालका विचार करके, सारस, क्रौञ्च, मोर काला तीतर और मुर्गेका मास दिया जा सकता है, परन्तु इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि, इन पक्षियोंका मास गरम और भारी होता है, इसलिये वह सब ज्वर-रोगियोंके लिये हितकर नहीं हैं।

जिन रोगियोंको खटाई सात्म्य या माफिक हो, उनकी इच्छा हो तो नीबू, अनार, आमला और पुरानी काँजी दी जा सकती है।

नोट—चूँकि सात, दस या बारह दिन तक ज्वरोंमें लंघन कराये जाते हैं, और ज्वर सात दिन तक नवीन तथा बारह दिन तक मध्यम और इसके बाद पुराना समझा जाता है, इसलिये हम नवीन ज्वर, मध्यमज्वर और जीर्णज्वर प्रभृति ज्वरोंके पथ्य, पाठकोंके सुभीतेके लिये, अलग-अलग लिखते हैं।

नवीन ज्वरमें पथ्य।

यथोचित समय पर वमन, लंघन यवागू, पसीने लेना, पाचन सेवन करना तथा कड़वे और तिक्त रस सेवन करना "नवीन ज्वर"में हितकारी है।

नोट—नवीन ज्वरमें चेष्टा करके वमन न करानी चाहिये। अगर आपसे-आप वमन हो जाय तो हानि नहीं। हाँ, बहुत खा जानेसे तत्काल ज्वर हो जाय, तो वमन करायी जा सकती है, क्योंकि आरम्भमें विकार आमाशयमें ही रहते हैं। अगर बलवान रोगीको कफज्वर हो दोष पककर कोठेमें ठहरा हुआ हो, तो उसको किसी हलकी वमन करानेवाली दवा—जैसे नमक और गरमजल—से निकाल देना ही अच्छा है। बिना दोष पके, ज्वरवालेको कोई भी दवा देने, वमन विरेचन कराने या रोग शान्त करनेवाली दवा देनेसे ज्वर बिगड़ कर विषम ज्वर हो जाता है। वमनसे लंघन कराना अच्छा है, क्योंकि वमनमें बड़ी तकलीफ होती है। किन्तु कफ-ज्वरमें दोष पके हों, तो वमन करा देना लंघनसे बहुत अच्छा है, क्योंकि जो काम लंघनोंसे कई दिनोंमें होगा, वह वमनसे शीघ्र ही हो जायगा। लंघन कराने और वमन कराने अथवा जुलाब देनेका

मतलब एकही है, यानी सबका मतलब ज्वर पैदा करनेवाले दूषित पदार्थों का निकाल देना है। लंघनमें खटका कम है। वमन विरेचन कराना जरा अधिक समझ बूझ चाहता है। फिर भी, जिसमें सुभीता हो वही कराना चाहिये।

'सुश्रुत"में लिखा है—अगर स्रोतोंका मल पककर कोठेमें ठहर जाय, तो थोड़े दिनके ज्वरवालेको भी विरेचन दे देना चाहिये, क्योंकि पके हुए दोषको न निकालनेसे वह भयंकर विषमज्वर प्रभृति रोग पैदा करता तथा बलनाश करता है। बलवान रोगी हो तो कफ-ज्वरमें वमन और पित्त प्रधान ज्वरमें, यदि पक्वाशय शिथिल हो विरेचन देदेना चाहिये। वेदना-सहित वातज्वरहो और उसमें उदावर्त भी हो, तो निरूहण वस्ती करनी चाहिये। अगर जठराग्नि दीप्त हो और कमर तथा पीठ जकड़ रही हों, तो अनुवासन वस्ती करनी चाहिये। यदि सिर कफसे भर रहा हो, तो सिरका भारीपन और दर्द नाश करनेवाली तथा इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली नस्य देकर सिरका मलगम निकाल देना चाहिये। अगर रोगी कमजोर हो, उसके पेटपर अफारा और दर्द हो, और दस्त कराना जरूरी हो तो—दारूहल्दी, वच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन,—इन छहों दवाओंको कांजीमें महीन पीस कर, पेटपर लेप करना चाहिये। इससे अफारा और दर्द आराम होगा। यदि अपान वायु न खुलती हो, यानी हवा न निकलती हो, पाखाना और पेशाब रुक गये हों, तो मोटी अँगुलीके बराबर कपड़ेकी बत्ती बनाओ। उस बत्तीपर उपरोक्त दारूहल्दी वच प्रभृति छहों दवाओंको महीन पीस कर लेप कर दो। पीछे उसे गुदामें घुसाते समय, उसपर कुछ चिकनी चीज घी या तेल भी लगा दो या गुदामें लगा दो, जिससे कि बत्ती गुदामें आसानीसे घुस जाय। बिना घी या तेलके बत्ती गुदामें न जायगी। इस बत्तीसे ख़राब मल निकल जायगा। आजकल डाक्टरोंने भी ऐसीही एक सफेद सफेद बत्ती निकाली है। उसमें जरासा घी

चुपडकर, उसे वे गुदामें घुसाते हैं, बस, पाँच मिनटके अन्दर सूखा लकड-सा मल भी ढीला होकर बाहर आ जाता है। रोगीको कोई कष्ट नहीं होता। पर डाक्टर लोग अभी उस बत्तीका प्रयोग केवल बच्चों पर ही करते हैं। हमारी समझमें वह गिलेसरिनकी बत्ती है।

२ लङ्घन या उपवासके समान रोगनाशक और उपाय संसारमें नहीं है। ज्वर तो लङ्घनोंसे शान्त होता ही है, पर औरभी बहुतसे दुस्साध्य रोग लघनसे आराम हो जाते हैं। लघन कराना प्राकृतिक चिकित्सा है। लङ्घनका बडा महत्त्व है। हमारे आयुर्वेदके मतसे सभी रोग वात, पित्त और कफकी घटती बढतीसे होते हैं। जब ये तीनों दोष समान रहते हैं, तब मनुष्य निरोग रहता है। लङ्घन करनेसे दोष नष्ट होते हैं और जठराग्नि तीव्र होती है। मतलब यह कि, लङ्घनोंसे रोग ही नाश हो जाते हैं। शास्त्रोंमें लिखा है, अगर मनुष्य भोजन करता है, तो जठराग्नि भोजनको पचाती है, किन्तु जब उसे आहार नहीं मिलता, तब शरीरकी धातुओंको जलाती है; यानी जब रोगी खाना छोड देता है, तब वही अग्नि शरीरके खराब विकारोंको जलाती है। जब विकारोंका नाश हो जाता है, तब रोग भी नाश हो जाता है। इसीलिये ज्वरमें लङ्घनकी महिमा गायी गई है। सचमुचही, नवीनज्वरमें लङ्घन भगवान्‌का शुभाशीर्वाद है। वातज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमें पचता है। वातज्वरमें सातवें दिन, पित्तज्वरमें ग्यारहवें दिन और कफज्वरमें तेरहवें दिन अन्न दिया जाता है। इतने-इतने दिन इन ज्वरोंमें उपवास करानेसे ज्वर पैदा करनेवाला खराब मल नष्ट हो जाता है। इन मियादोंके बाद, हलका अन्न, पाचन या शमन दवा देनेसे रोगी सहजमें रोगमुक्त हो जाता है। दोष पचजाने पर स्वयं भूख लगती है और दोष पचजानेकी यह पहचान सर्वोत्तम है। बिना दोष पके, कच्चे ज्वरमें, अन्न या कोई औषधि देना रोगीको मारना है। लङ्घन करानेमें बहुतसी बातोंका विचार करना होता है, उन्हें हम आगे लिखेंगे। अंधाधुन्ध लङ्घन कराने, न कराने योग्य रोगी

को लङ्घन कराने, अथवा लङ्घन हो चुकते ही भारी पथ्यादि दे देने, अथवा लङ्घनवालेको वमन करा देने प्रभृति भूलोंसे रोगीकी जानको खतरा हो जाता है। गर्भवती, बालक, वृद्ध, जीर्णज्वर-रोगी, क्रोधज्वर वाले, कामज्वरवाले, श्रमज्वरवाले, क्षयरोगी एवं निराम वातज्वर-वालेको लङ्घन करानेसे बड़ी हानि होती है।

३ यदि रोगी कमजोर हो, निराहार लङ्घन न कर सकता हो, बहुत से लङ्घन करानेसे हानि नजर आती हो, रोगीको भूख हो, वह भूखा-भूखा चिल्लाता हो, तो समय हुआ हो या न हुआ हो, उसे हलका अन्न देना उचित है। क्योंकि बिना आम पचे भोजनकी इच्छा हो नहीं सकती, और जब आम पच जायगा, तब भोजनकी इच्छा होगी ही होगी। मगर ज्वर रोगीको भारी अन्न भूलकर भी न देना चाहिये। शास्त्रोंमें यवागू या पेयाकी बड़ी तारीफ है। ये सबसे हलके और ज्वरनाशक खाद्य समझे गये हैं। पर मन्दाग्निवाले और प्याससे व्याकुल तथा सदा शराब पीनेवाले रोगीको, गरमीके मौसममें, पित्त और कफसे हुए रोग में, ऊपरके रक्तपित्त और ज्वरमें, यवागू नहीं देनी चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है, यदि रोगी मन्दाग्नि और प्याससे पीड़ित हो, तो पतली यवागू पिलानी चाहिये। अगर रोगीको प्यास, क्षय, दाह जलन और गरमीसे अधिक घबराहट हो तथा रोगी शराब पीनेवाला हो, तो उसे लाजातर्पण देना चाहिये; यानी धानकी खीलोंको पानीमें भिगोकर, मल छानकर, उसमें शहद मिलाकर पिलाना चाहिये। जब वह पच जाय, तब यूषरस या भात देना चाहिये। अगर लङ्घन करने, व्रत उप वास करने या बहुत मिहनत करनेकी थकानसे ज्वर हुआ हो, रोगी कमजोर हो या वातात्मक ज्वर हो, पर रोगीकी अग्नि दीप्त हो यानी रोगीको भूख हो, तो चतुर वैद्य ऐसे रोगियोंको रसौदन यानी मांसरस के साथ भात खिलावे। अगर कफज्वर हो, तो मूँगका यूष और भात दे। अगर पित्तज्वर हो, तो वही मूँगका यूष और भात मिश्री मिलाकर और कुछ शीतल करके दे, अगर वातपित्तज्वर हो, तो अनार, आँवले

और मूँगका यूप दे। वातकफज्वरमें कच्ची मूलीका यूप दे तथा पित्त-कफज्वरमें परवल और नीमका यूप दे। जिसे दाह और छर्दि हो, यानी जिसके जलन हो तथा कय होती हों और वह रोगी दुर्बलहो तथा उसने अन्न न खाया हो एव प्याससे व्याकुल हो, ऐसी अवस्थामें, रोगीको मिश्री और शहद मिलाकर धानकी खीलोंका तर्पण देना चाहिये। अगर रोगी कफपित्तसे व्याप्त हो, गरमीका मौसम हो रक्तपित्तहो, रोज शराब पीता हो—तो उसे "यवागू" नही देनी चाहिये। ऐसे रोगीको यवागू हानिकर है, मगर उसे खटाई या बिना खटाईके यूप, जंगली जानवरोंका मांस रस अथवा और हितकारी पथ्य देना उचित है। नवीन ज्वरवालोंको दूध कभी न देना चाहिये। नवीन ज्वरमें दूध रोगीको मार डालता है। नवीन ज्वरमें या अपक्वज्वरमें "घी" भी जहरका काम करता है ज्वरआनेके दश दिनके भीतर दिया हुआ घी ज्वरके उपद्रव वढाता हे, पर ज्वरको पक्व अवस्थामें अमृतका काम करता है।

"वङ्गसेन"में लिखा है —लङ्घन करनेवाले रोगीके लिये पेया अत्यन्त हितकारी है। यथा दोषानुसार पाचन द्रव्योंसे बनाई हुई पेया दीपन पाचन, हलकी और ज्वर रोगीके ज्वरको हरनेवाली है।

वातपित्तज्वरमें लघुपञ्चमूलके द्वारा बनाई हुई पेया हितकारी है। कफपित्तज्वरमें पीपल और धनियाके द्वारा बनाई पेया हितकारी है। वातकफज्वरमें वृहत् पञ्चमूलके द्वारा बनाई पेया देनी चाहिये। त्रिदोष ज्वरमें कटेरी, जवासा और गोखरू, इन तीनोंके काढ़ेसे बनाई हुई पेया देना हितकर है।

वातज्वर, कफज्वर, पित्तज्वर, आमज्वर अथवा तरुण—नवीन ज्वरमें, पहले, परवल और पीपल के द्वारा सिद्ध किया हुआ मण्ड या माँड अत्यन्त हितकारी हे।

वस्ती, पार्श्व रोग तथा शिरोरोगमें लाल शालि चाँवलोंकी पेया देनी चाहिये। ज्वरमें गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे बनाई पेया भली होती है। मलबद्ध रोगमें जौ, पीपल और आमलेके द्वारा सिद्ध की हुई

स्वेद" करना चाहिये। "वालुका स्वेद' वातज्वर और वातकफ ज्वर दोनों मे हितकारी है। सैंधानोन, कालीमिर्च और बिजौरे नीबू की केशर का कवल भी अच्छा है।

वातपित्तज्वरमें पथ्य।

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन दवा देनी चाहिये। मूँग और आमलों का यूष पथ्य है। अगर दाह बहुत ही हो तो चनेका यूष देना चाहिये। अनार, आमले और मूँगका यूष इस ज्वरमें सब से अच्छा है। लघु पञ्चमूलके काढे से पकाई पेया भी बहुत अच्छी है।

नोट—मूँग और करेला आदि कफवात नाशक पदार्थ वात-पित्तज्वर में न देने चाहिये। इनके देनेसे विष्टम्भ, शूल, अफारा और ज्वर होता है।

पित्तकफ ज्वर।

पित्तकफ ज्वर मे दूसरे दिन दवा देनी चाहिये। इस ज्वर में परवल और नीमका यूष, खटाई या बिना खटाई डाला यूष, जंगली जानवरोंका मांसरस, धनिया और पटोल पत्रके यूष से सिद्ध किया हुआ अन्न—ये सब पथ्य हैं।

नोट—पित्तकफ ज्वरवाले, रक्तपित्तवाले तथा रोज शराब पीने वाले को, गरमी की ऋतु मे, यवागू हितकारी नही है।

सन्निपातज्वर में पथ्य।

सन्निपातज्वरमें करेरी, गोखरू और जवासेके काथसे सिद्ध की हुई पेया देनी चाहिये। इसके सिवाय, नवीन ज्वरके समान काम करने चाहिये। आम और कफनाशक विधियोंसे काम लेना चाहिये। पहले

कफको सुखानेका उपाय करना जरूरी है। पित्तको शान्त नही करना चाहिये, क्योंकि कफ और वातकी अधिकता वाला सन्निपात रोगीको मार देता है। कफ सूखजाय, तव वातको निवारण करना चाहिये, पीछे पित्तका कोप दीखे, तो पित्तको भी शान्त करना चाहिये, किन्तु कफ और वातको अवश्य सोखना चाहिये, पित्तको कभी नष्ट न करना चाहिये। अञ्जन, नस्य, गण्डूष, दागना प्रभृति क्रियाएँ सन्निपात ज्वरमें हित हैं। पैरो और हाथोकी जड, कण्ठकूप और कनपटियोमें पसीने आते हो, तो भुनी हुई कुलथी को पीसकर मलवाना चाहिये।

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिनसे चौदहवी, वीसवी अथवा चौवीसवी रात्रिमें शान्त हो जाता है या मार देता है। इस ज्वरमे पहले उत्तम विधिसे लंघन कराने चाहिये। औटाकर ठण्डा किया हुआ पानी पिलाना चाहिये, सन्निपात ज्वरमें वहुत प्यास लगने, मुँह सूखने और पसलीका दर्द होने पर, विना औटाया कच्चा पानी देना, रोगीको विष देकर मारना है। मतलब यह है, कि औटा कर जल देना चाहिये। रुग्दाह सन्निपात ज्वरको छोडकर और सन्निपात ज्वरोंमें शीतल जल छिडकना और नहलाना रोगीको मारना है। केवल रुग्दाह सन्निपात में ही जलमें घुसकर स्नान करना अच्छा लिखा है।

इस ज्वरमें पहले लिखे हुए जवासे, कटेरी और गोखरूके काढेसे सिद्ध किया हुआ आहार देना अच्छा है। यह आहार दोषोंको शान्त करता तथा वल और जठराग्नि को बढाता है। दशमूलकी औषधियोके द्वारा सिद्ध किया हुआ खीलोका माँड देना भी अच्छा है। यह मण्ड दीपन, पाचन, पसीने लानेवाला और हित-कारी है। सन्निपात ज्वर रोगीको अग्निके अनुसार वटेर, वतक, लवा, तीतर, खरगोश, कुलिंग, (घरका चिडा)—इनका मासरस देना चाहिये। सन्निपातज्वरमें भूखसे व्याकुल रोगीको मासयुक्त भात

हरगिज न देना चाहिए। अगर सन्निपात ज्वरवाला काँपे, बकवाद करे और अज्ञान होजाय, तो पहले उसके शरीरमें "पुराने घी"की मालिश कराना और पीछे बलादि, रास्नादि और गुडूच्यादि औषधियोंका तेल बनाकर सेवन कराना हितकारी है।

रुग्दाह सन्निपातवालेके लिये, सौ बार शीतल जलसे धोये हुए गायके घीमें चन्दन घिसवाकर शरीरपर लगवाना, कमल और कमोदिनीकी माला पहनाकर शीतल जलके कुण्ड या जलाशयमें प्रवेश कराना, रोगीको चित्त सुलाकर उसकी नाभिपर ताँबे या काँसीका गहरा बर्तन रखकर—उसमें बहुत शीतल जलकी धारा छुड़वाना, बेरके पत्तोंको दहीमें पीसकर लेप करना, नीमके पत्तोंको दही या माठेमें पीसकर लेप करना, मिश्री और शहत मिलाकर जौओंका सत्तू खिलाना, तथा ऐसे घरमें रखना जिसमें शीतल जलके फव्वारे छूट रहे हों, कमल खिल रहे हों और स्तनोंपर चन्दन कपूर लगाये हुए मोतियोंकी माला पहने हुए, मदमाती युवतियोंसे आलिंगन कराना—ये सब परम हितकर हैं।

नो—पित्तज्वर और रुग्दाह सन्निपातज्वरकी चिकित्सा एकसी है। इनके सिवा और ज्वरोंमें ये क्रियाएँ भूलकर भी न करनी चाहियें।

जीर्णज्वरमें पथ्य।

जुलाब, वमन, अञ्जन*, नस्य, हुक्का या धूमपान, वस्ती, फस्त, संशमन औषधियोंका प्रयोग, तेलकी मालिश, जलमें स्नान, शीतल वस्तुओंका सेवन, काला हिरन, चिरौंटा, मामूली हिरन, मोर, लवा खरगोश, तीतर, मुर्गा, बगुला, कुछ लाल हिरन, बुँदकीवाला लाल

* "चरक"में लिखा है, कि धूप और अञ्जनसे ऐसे जीर्णज्वर रोगीका ज्वर भी शान्त हो जाता है, जिसके शरीरमें मास और चमड़ा थोड़ा ही रह जाता है। समग्र आगन्तुज ज्वर धूपन और अञ्जनसे आराम हो जाते हैं।

हिरन, चकोर, सफेद तीतर प्रभृतिका मांस, गाय या बकरीका दूध, घी, हरड़, पर्वतके झरनेका जल, अरण्डीका तेल, सफेद चन्दन, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्यारी स्त्रीका आलिङ्गन,—ये सब जीर्णज्वर* या पुराने ज्वरवाले को पथ्य हैं।

नोट—जुलाब देने और वमन करानेका काम बड़ा कठिन है। यह काम खूब सोच-विचार कर करना चाहिये, केवल शास्त्र पर ही नहीं रहना चाहिये।

"भावप्रकाश"में लिखा है —

जीर्णज्वरे गरच्छर्दिगुल्मप्लीहोदरेषु च।
शूले शोथे मूत्राघाते कृमिरोगे विरेचयेत्॥

जीर्णज्वर, विष-विकार, वमन रोग, वायुगोला, प्लीहा, उदर रोग, शूल, सूजन, मूत्राघात और कृमिरोगमें जुलाब देना चाहिये।

और भी लीजिये :—

विरेचनं छर्दनमंजनं च नस्यं च धूमोऽप्यनुवासनं च।
ज्योत्स्ना प्रियालिंगनमप्ययं स्यादगणा पुराणज्वरिणां सुखाय॥

विरेचन—जुलाब, वमन, नस्य, अञ्जन, धूम, अनुवासन बस्ती, चन्द्रमाकी चाँदनी और प्रियाका आलिङ्गन—ये सब जीर्णज्वर रोगी को हितकारी हैं।

"वङ्गसेन"में लिखा है,—

जीर्णज्वरीनरः कुर्यान्नोपवासं कदाचन।
ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं न विरेचनम्।
कामन्तु पायसं तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान्॥

* "वंगसेन"के मतसे ज्वर सात दिन तक तरुण, चौदह दिन तक मध्यम, इसके उपरान्त यानी १४ दिन बाद जीर्ण हो जाता है। कोई १२ दिन बाद और कोई २१ दिन बाद जीर्णज्वर होना मानते हैं।

जीर्णज्वरवालेको उपवास या लङ्घन* हरगिज न कराना चाहिये। ज्वरसे क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन हितकारी नहीं हैं। उसे इच्छानुसार गायका दूध पिलाना हितकारी है। दस्तकब्ज हो, तो निरूह वस्ती (आजकल एनिमा) द्वारा सञ्चित मल निकाल देना चाहिये।

"चरक"में लिखा है,—यदि विधिपूर्वक चिकित्सा करनेसे ज्वर शान्त न हो और रोगीका बल और मांस क्षीण न हुआ हो, तो विरेचन यानी जुलाब देकर रोग शान्त करना चाहिये। ज्वरसे क्षीण रोगीको वमन विरेचन हितकारी नहीं होते, इसलिए ऐसे रोगीको यथेष्ट दूध पिलाना चाहिये तथा निरूह वस्तीसे मल निकालना चाहिये। दोष-समुदायके पक जानेपर, यदि निरूह वस्ती की जाती है, तो शीघ्र ही बल और अग्नि की वृद्धि होती है तथा प्रफुल्लता और रुचि होती है एवं रोगीका ज्वर चला जाता है।

कहीं वमन विरेचनको आज्ञा और कहीं निषेध है, इसका यह मतलब है कि, आम तौरसे पुराने बुखारमें वमन विरेचन करा सकते हैं, पर सभी रोगियोंको नहीं। सब जगह विवेक बुद्धिकी जरूरत है। जहाँ जैसा मौका हो, वहाँ वैसाही काम करना चाहिये। पुराने बुखारके रोगी अक्सर अत्यन्त कमजोर हो जाते हैं उनका कफ सूख जाता है। उनको यदि दो चार दस्त भी करा दिये जाते हैं, तो वे फौरन ही परमधाम जानेको तैयार हो जाते हैं, इसलिये अगर रोगी बलवान हो, वमन विरेचन को सह सकता हो, वमन विरेचन बिना और उपायसे

---

* "बंगसेन"में लिखा है —

पुराणेऽपि ज्वरे दोषा यद्यपथ्यै पुनस्तथा।
लघयेत्तत्र पश्चाद्यथोक्तां कारयेत् क्रियाम ॥

पुराने बुखारमें, कुपथ्य करनेसे, वातादिक दोष फिर बढ़जावें, तो पहले लंघन कराकर पीछे ज्वरका इलाज करना चाहिये।

काम न चलता हो, तभी वमन विरेचन कराने चाहियें, अगर कराने ही हो, तो हलके कराने चाहियें। जहाँ तक काम चल सके, वमन, विरेचन और लङ्घनका न कराना ही अच्छा है।

जीर्णज्वरवालेकी गरमी बढ जाती है, उसमें वायुका अधिक कोप रहता है। शरीरमें बुखारके बहुत दिन रहनेसे, रक्त मांस नाममात्र को रह जाते हैं। ऐसे रोगीको यदि लंघन या वमन-विरेचन कराये जाते हैं, तो रोगीके बिना मौत मर जानेकी सम्भावना रहती है।

२ जीर्णज्वरमें घी दूध खिलानेकी बडी जरूरत दिखाई गई है।

"वंगसेन' में लिखा है —

ज्वरोष्मणा ज्वरेऽ जीर्णे वायु कुप्यति रूक्षिते।
घृतं मशमन तस्य दीप्तस्येवाम्बु वेश्मन॥

जीर्णज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरके रूखेपनसे वायु कुपित होता है। उस वायुके शान्त करनेके लिये "घी" पिलाना चाहिये। घी पिलानेसे वायु इस तरह शान्त होता है, जिस तरह जलते हुए घर पर पानी डालनेसे घरकी आग शान्त होती है*।

"सुश्रुत"में कहा है —

कृशोऽल्प दोषो दीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दित।
विवद्ध सृष्टदोषश्च रूक्ष पित्तानिलज्वरी॥
पिपासार्त सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत्।
तदेव तु पय पीत तरुणे हन्ति मानवम्॥

यदि रोगी कमजोर हो अल्पदोषवाला हो, दीन हो, जीर्णज्वरसे पीडित हो, विवन्धयुक्त हो, दोष कुछ-कुछ निकलते हों, रोगी रूखा

* चरकमें लिखा है—सब तरह के जीर्णज्वरों में अपने-अपने लक्षणों के अनुसार, औषधियोंके संस्कार से बना हुआ "घी" देना चाहिये। सिद्ध किया हुआ यानी औषधियोंके साथ तैयार किया हुआ घी वायु की शान्ति करता है, संस्कार-योग से कफ की शान्ति करता है और शीतल होनेसे पित्त की भी शान्ति करता है।

हो, पित्तवातका ज्वर हो, प्यासेसे पीडित और दाहसे युक्त हो,—ऐसी अवस्थामें मनुष्य दूधसे सुखी होता है, परन्तु तरुणज्वरमें पिया हुआ दूध मनुष्यको मार देता है।

"सुश्रुत"में ही लिखा है —

> शृत पय शर्करा च पिप्पल्यो मधुसर्पिषी।
> पंचसारमिद पेय मथित ज्वरशान्तये।
> क्षतक्षीणे क्षये श्वासे हृद्रोगे चैतदिष्यते॥

औटाया हुआ दूध मिश्री पीपल, शहद और घी - इन सबको मिलाकर, ज्वरको शान्तिके लिये पीना चाहिये। इसे "पचसार"कहते हैं। यह क्षत, क्षीण, क्षय, श्वास और हृदय-रोगमें श्रेष्ठ है।

"चरक"में लिखा है —

> जीर्णज्वराणा सर्वेषा पय प्रशमन परम्।
> पेयतदुष्ण शीत वा यथास्व भेषजै श्रृतम्॥

सब प्रकारके पुराने ज्वरोके नाश करनेमें दूध सबसे बढकर है। दोषोंके अनुसार औषधियोके साथ पकाया हुआ दूध, गरम या शीतल जैसा मुनासिब हो वैसाही पीना चाहिये। जैसे,—पुराने रक्तपित्त ज्वरमें शीतल करके पीना चाहिये, किन्तु पुराने वात या कफ ज्वरमें गरमागरम पीना चाहिये। "चरक"में ही लिखा है कि, धारोष्ण दूध पीनेसे पुराना वातपित्त ज्वर तत्काल नष्ट होता है। पञ्चमूल द्वारा सिद्ध किया हुआ दूध पीनेसे जीर्णज्वर नाश होता है।

जीर्णज्वरमें रोगी ऐसा कमजोर हो जाता है, अग्नि ऐसी मन्द हो जाती है, कि उसे कुछ भी नहीं पचता। उस दशामें दूधके आग खिला कर वैद्य रोगीको खडा करते हैं।

"हारीत सहिता"में लिखा है —

> जीर्णे ज्वरातिसारे च सामे च विषमज्वरे।
> मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पय फेन प्रशस्यते॥

क्षीणज्वर, अतिसार, आमज्वर, विषमज्वर और कफाश्रित मन्दाग्नि—इनमें दूधके झाग पीना बहुत अच्छा है।

कहाँ तक लिखें, आयुर्वेदमें जीर्णज्वर आराम करनेके लिये घी और दूधकी बड़ी ही तारीफ की है। अनेक प्रकारकी औषधियों द्वारा बनाये हुए घी और दूध जीर्णज्वर नाश करनेके लिये लिखे हैं। हमने वर्द्धमान पिप्पली, क्षीरपाक, सितादि क्षीर, पञ्चसार प्रभृतिको जीर्णज्वरमें रामबाणके समान पाया है। जीर्णज्वरमें कफ सूखगया हो, रोगी रूखा हो गया हो, प्यास और दाहके मारे घबराता हो, तो उसे दूध अवश्य देना चाहिये। बहुतसे अनाड़ी वैद्य—क्या नये और क्या पुराने—सभी ज्वरोंमें घी दूध नहीं देते। यह उनकी भारी भूल है। नये ज्वरमें घी दूध बेशक हानिकारक है, परन्तु पुराने बुख़ारोंमें ये रोगनाश करके रोगीकी जान बचानेवाले हैं।

"चरक"में लिखा है—जिस तरह धातुओंकी क्षीणतासे क्षयज्वर होता है उसी तरह जीर्णज्वरका प्रधान हेतु देहकी धातुओंकी दुर्बलता है, ज्वरका सम्बन्ध जब किसी धातु या धातुओंसे हो जाता है, तभी वह चिपट जाता है। जब अनेक प्रकारकी चिकित्सा करने पर भी ज्वर न जाय, तब तो कम से-कम वैद्यको इस बातकी खोज करनी चाहिये कि, इस ज्वरका सम्बन्ध किस धातुसे है। जिस धातुसे ज्वरका सम्बन्ध हो, उस धातुसे उसका सम्बन्ध छुड़ाते ही ज्वर आराम हो जाता है। इस तरहके ज्वर बलदाता और बृंहण आहारोंसे जाते हैं। धातुओंके जिस प्रमाणसे क्षीण होनेसे ज्वर हुआ हो, बलवर्द्धक और बृंहण आहार उसी प्रमाणसे शरीरके भीतर पहुँचानेसे ज्वर आराम होता है।" ऐसे जीर्णज्वरोंमें विशेषकर गरमी बढ़ जाती है और वायुके कोपसे शरीर एकदम रूखा हो जाता है। जब तक वायुको शान्त करनेवाली क्रियाएँ नहीं की जातीं, कोई लाभ नहीं होता। वायुको शमन करनेवालोंमें 'घी' सर्वोत्तम है। कहा है :—

लवणेन कफ हन्ति पित्त हन्ति शर्करा।
घृतेन वातजान् रोगान् सर्व रोगान् गुड़ान्वित.॥

"नमक"से कफ नाश होता है, शकर या चीनीसे पित्त शान्त होता है, "घो" द्वारा बादीसे हुए रोग आराम होते हैं और गुड मिली दवाओंसे सब रोग आराम होते हैं।" बस,इसी वजहसे जीर्णज्वरमें घी दूध देने पर जोर दिया गया है। पर इससे यह न समझ लेना चाहिये, कि जीर्णज्वरोमें एक तोले घो या एक पाव दूध भो पचानेको ताकत या अग्निबल हो या न हो, उसे दमादम घी दूधसे भर दिया जाय। सभी जगह अक्लकी ज़रूरत है। यद्यपि घो और दूध जीर्णज्वरमें अमृत हैं,मगर यही रोगोके बलाबलको बिना विचारे अनापशनाप दे दिये जायँ, तो रोगी न मरता होगा, तोभी मर जायगा। कोई कोई जीर्णज्वरी ऐसे होते हैं कि, उन्हें छटाँक भर दूध या तोले भर अन्नसे दस्त होने लगते हैं, कुछ भी नही पचता, तब चतुर वैद्य दूधके झाग मिश्री मिलाकर पिलाते हैं। ज्यों-ज्यों शक्ति बढती जाती है, त्यों-त्यों और ताकतवर पदार्थ दिये जाते हैं। बिना घी दूध जीर्णज्वरी औरभी रूखा होता चला जाता है, इससे इनका देना जरूरी है, पर जितना पच सके उतना ही देना चाहिये।

"चरक"में लिखा है.—विसर्प ज्वर और विस्फोटकज्वर(चेचक प्रभृति) में,यदि कफ पित्तको प्रबलता न हो,तो,पहलेसे ही घी पिलाना उत्तम है। किन्तु इस बातका भी ख़याल रखना चाहिये कि,विसर्पज्वर और विस्फोटक ज्वरमें सर्वत्र कफपित्तको ही प्रबलता रहती है। यदिकोई चिकित्सक यह समझकर कि,विसर्पज्वर और विस्फोटकज्वरमें चरकने आरम्भसेही घी पिलानेकी आज्ञा दी है, घी पिलाना शुरु करे और कफपित्तकी प्रबलता है या नहीं,इस बातका ख़्याल भी न करे और इन ज्वरोंमें कफ पित्तकी प्रबलता हो, तो परिणाम क्या हो? मतलब यह है कि,चिकित्सकको चलना तो शास्त्रानुसार ही चाहिये, पर शास्त्रकी आज्ञाओं पर बारीकीसे विचार करना चाहिये और हर बातमें तर्क वितर्कसे कामलेना

चाहिये। जो लोग अक्लसे काम नहीं लेते, दिमागको तकलीफ नही देते, वे रोगियोंको मारते हैं और यहाँ अपयशके भागी होकर, मरनेपर घोर नरक भोगते हैं।

"हारीत संहिता"में लिखा है :—

> बलक्षये तर्पणभोजनेषु श्रमे च पित्तास्रजि रोगयुक्ते।
> नेत्रामये कामलपाण्डुरोगे क्षये नव सर्पिर्वदन्तन्ति धीरा ॥

बुद्धिमान वैद्य बलक्षय, तर्पण, भोजन, थकान, पित्तरक्त, नेत्ररोग, कामला, पीलिया और क्षयमें "घी"देना अच्छा कहते हैं। ठीक बात है, इन मौकों पर घी देना वास्तवमें गुणकारी है, पर पाचन-शक्तिका विचार किये बिना, निर्बल क्षय रोगीको अथवा और रोगके रोगीको या निरोगको ही, उसकी ताकतसे जियादा, घी दे दिया जायगा, तो उसे निश्चय ही दस्त लग जायँगे—नीरोग रोगी होजायगा और रोगीका रोग बढ जायगा। ज्वरमें जो हर जगह भारी पदार्थ देनेकी मनाही की है, उस पर भी सदा ध्यान रखना चाहिये। खूब भूख लगने पर पथ्य देना चाहिये और उतनाही देना चाहिये, जितना आसानीसे पच जाय। अहितकारी पदार्थ भी यदि थोडासा खा लिया जाय, तो किसी तरह पच जायगा, उतनी तकलीफ न देगा और कोई उपाधि न पैदा करेगा। कोई भी चीज जियादा न खानी चाहिये, चाहे वह अमृत हो क्यों न हो। प्रत्येक चीज मात्रा या कायदेसे खायी हुई अमृतका काम करती है। इसी लिये कहा है :—

> अति भोजनं रोगमूलं आयु नयकरम्।
> तस्मादति भोजनं परिहरेत्॥

बहुत खाना रोगकी जड है, बहुत खानेसे उम्र कम होती है; इसलिये बहुत खानेसे सदा परहेज करना चाहिये।

३ जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन अर्थात् नास देकर सिरका मलगम निकालना जरूरी है। नास देनेसे शिरका भारीपन मिटता है, सिरदर्द आराम होता है और इन्द्रियोंमें चैतन्यता आ जाती है तथा रुचि होती है। जीर्णज्वरमें शहद या चिकनाईके द्वारा नस्य देना अच्छा समझा जाता

है। जैसे, हींग और सेंधे नमकको पुराने घी में मिलाकर नास देनेसे सिरका दर्द मिट जाता है*।

४ जीर्णज्वरमें अक्सर कफक्षय हो जाता है, इससे, तथा नस्य, लङ्घन, चिन्ता, शोक, क्रोध और मैथुन प्रभृतिसे मनुष्यकी नींद नाश हो जाती है। ऐसी दशामें, नींद लानेके लिये, रोगीके दोनो पाँवों पर तिलीके तेल या सौ बार धोये घी की मालिश करना, भाँगको बकरीके दूधमें पीस कर लेप करना अथवा नाना प्रकारके मधुर बाजोंका स्वर या गाना सुनना वगैरः उपाय हितकारी हैं।

५ जीर्णज्वरवाले रोगीको बलाबल देखकर निम्नलिखित आहार विहार भी सेवन कराये जा सकते हैं :—

मूँग या अरहरकी दाल, पुराने चाँवलोंका भात, गेहूँके अच्छे सिके पतले-पतले फुलके, गाय या बकरीका दूध, गायका घी, औषधियोंके योगसे तैयार हुआ घी, अनारदाने, आमले, कैथ, कागजी नीबू कैथ या पोदीनेकी चटनी, जीरा, धनिया, हलदी, सेंधानोन, नारायण तेल, चन्दनादि तेल या लाक्षादि तेल, षट्तक तेल प्रभृति तेलोंकी मालिश। नारायणतेल और चन्दनादि तेल साधारण अवस्थामें मलवाने चाहिएँ। दाह हो, तो "षट्तक तैल" मलवाना चाहिये। मालिश कराकर स्नान करना †, चन्दन और कपूर गुलाब जलमें घोटकर लगाना, फूलोंकी माला, अशूदकजल, झरनोंका जल, बागकी सैर, चन्दन कपूर लगाये हुए मोतियोंकी माला पहने हुए नवयौवना स्त्रियोंसे आलिंगन मगर मैथुन हरगिज नहीं),—ये सब परम पथ्य हैं। क्रोध, शोक, मैथुन, चिन्ता और वहम,—ये सब महा हानिकारक हैं।

---

* जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन देना चरक, सुश्रुत और बङ्गसेन प्रभृति सबने जरूरी और हितकारी लिखा है, बशर्ते कि रोगी का सिर भारी हो और उसमें दर्द वगैर हो।

† चरकमें लिखा है,—वैद्य जीर्णज्वरमें, विचारपूर्वक, शीतल या गरम मालिश कराये, शीतल या गरम चिकना लेप लगवाये और शीतल या गरम जलमें स्नान कराये, तो बहिर्मार्गगत ज्वर तत्काल शान्त हो जाय।

विषम ज्वरोंमें पथ्य ।



"भावप्रकाश"मे लिखा है,—जो मनुष्य माठेके साथ मास, दूधके साथ मास, दहीके साथ मास अथवा उडदके साथ मास भक्षण करता है वह विषमज्वरसे छुटकारा पा जाता है ।

अग्निवेश ऋषि कहते हैं—विषमज्वरवाले मनुष्यको वैद्य माँडके साथ शराब पिलावे और मुर्गा तथा तीतर और समस्त विष्किर जातिके जीवोंका मास खिलावे,— ये पथ्य हैं ।

"सुश्रुत' मे लिखा है—सवेरे ही सवेरे "घी और लहसन", खानेसे विषमज्वर जाता है । घी, दूध, मिश्री, शहद और पीपल—इन पाँचों को, यथाबल, सेवन करनेसे विषमज्वर जाता है । दूध और मांसरस खाते हुए, वर्द्धमान पिप्पलीका सेवन करनेसे विषमज्वर नाश होता है । मुर्गेके साथ उत्तम शराब पीनेसे भी विषमज्वर शान्त होता है ।

"वंगसेन"मे लिखा है :—

> पिप्पली शर्करा क्षौद्र शृत घृत नवम् ।
> स्वजेन मथित पेय विषमज्वर नाशनम् ॥

पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सबको कलछीसे मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश होता है । और भी लिखा है—लहसनके कल्क (लहसनकी जलके साथ पिसी हुई लुगदी) को तिलोंके तेलमें नित्य सेवन करनेसे विषमज्वर और वात ज्वर दूर होते हैं । विषमज्वरमें रोगीके पीनेके लिये शराब और माड देना चाहिये तथा भोजनके लिये मुर्गा, तीतर और मोरका मास देना चाहिये । क्षीण मनुष्यका बहुत दिनोंका सतत या विषम ज्वर बढ जाय, तो उसे ज्वरनाशक पथ्योंसे जीतना चाहिये । रूखे मनुष्यका ज्वर कषाय, वमन, लङ्घन और हलके पदार्थों से शान्त न हो, तो उसे घी पिलना चाहिये ।

सभी विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं ; यानी तीनों दोषोंके कोपसे होते हैं, इसलिये जिस-जिस दोषका अधिक ज़ोर हो, उसी-उसीक इलाज करना चाहिये ।

वाताधिक्य या वातप्रधान विषमज्वरमें घी पिलाना चाहिये अनुवासन वस्ती करनी चाहिये तथा चिकने और गरम पदार्थ खाने पीनेको देने चाहियें ।

पित्ताधिक्य या पित्तप्रधान विषम ज्वरमें, गरम दूधमें घी मिलाक देना अच्छा है, इससे दस्त हो जाता है। इस ज्वरमें तिक्त औ शीतल पदार्थ खाने पीनेके लिये देने चाहियें ।

कफाधिक्य या कफप्रधान विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न पान (खाने-पीनेके पदार्थ) लङ्घन और गरम दवाइयोंके काढ़े— सब पथ्य हैं ।

सब तरहके विषमज्वरोंमें पहले वमन विरेचनादि* कराना हित कारी है। किसीने लिखा है :—

विषमे वमनं चैव रेचनं कारयेत्भिषक् ।
तथा संभोजनं पथ्यैर्लघुभिः समुपाचरेत् ॥

विषमज्वरमें वैद्यको कय और दस्त कराने चाहियें तथा हल पथ्य पदार्थ खाने पीनेको देकर विषमज्वर नाश करना चाहिये ।

* हमने देखा है कि, कितने ही विषमज्वर दो तीन दस्त करा देनेसे अथवा तीन हलके दस्त कराकर "महाज्वराङ्कुश बटी" देनेसे बहुत जल्दी आराम हुए हैं निशोथके चूर्णमें शहत मिलाकर चटानेसे ही, दस्त होकर,अनेक बार विषमज नाश हो जाता है ।

"चरक"में लिखा है,—ज्वरवाले घी और शहदके साथ निशोथका चूर्ण, घी औ शहद के साथ त्रिफले का काढ़ा, दूधके साथ अमलतास का गूदा, दाखोंके काढ़ साथ निशोथ का चूर्ण अथवा दाख और हरड़का काढ़ा,—इन में से कोई सा नुसख काममें लावे। दाखोंका रस पीकर, ऊपरसे गरम दूध पीना भी अच्छा है। ये स नुसखे, ज्वरोंमें, दस्तोंके लिये उत्तम हैं। मात्रा बलाबल देखकर नियत करनी चाहि एवं घी और शहद बराबर-बराबर न लेने चाहियें ।

विषमज्वरमें वमन विरेचन बड़े लाभदायक हैं, फिर भी, जो रोगी इनके योग्य हों, उन्हींको ये कराने चाहिये। बहुत ही जरूरत हो और रोगी कमजोर हो, तो हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहिये, जिससे मामूली तौर से दो तीन दस्त हो जायँ और रोगीको कष्ट न हो। जिनको वमन कराना उचित हो, उनको वमन करानी चाहिये और जिनको दस्त कराने उचित हों, उनको दस्त कराने चाहिये। जिनको ये दोनों ही हानिकर हों, उन्हें नहीं कराने चाहिये। जो घी दूध के लायक हों, उन्हे घी दूध देना चाहिये, पर उनकी शक्तिका खयाल जरूर रखना चाहिये। जो मांस देने योग्य हों, उन्हे मांस देना चाहिये, जिनको मांस न पचे उन्हे और हलके भोजन देने चाहिये। हमने बलवान और दुर्बल सभीके लिये हितकारी, पथ्य और ज्वरनाशक पदार्थ लिख दिये हैं, पर बलाबल और दोषोंकी प्रधानता और अप्रधानता प्रभृति का ख़याल तो वही करेगा, जो इलाज करेगा।

महेश्वर प्रभृति धूप देने, अञ्जन लगाने, टोने टुटके करने, यन्त्र मंत्र करने, और लाक्षादि तेलकी मालिश करानेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। हमने कितने ही रोगी इस तरह आराम किये हैं। दाह होनेसे सौ बारका धोया घी या नीम अथवा बेरके पत्तोंके झाग मालिश कराने अथवा ऐसे ही और-और लेप करनेसे दाह फौरन शान्त हो जाता है। "दाहमें "प्रह्लादनतेल या षट्कट्वर तेल"से हमने बड़ा फायदा उठाया है। इनसे दाह और शीत फौरन मिट जाते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है —

निर्विषैर्भुजगैर्नागैर्विनीतैं कृततस्करैः।
त्रासयेदागमे चैनं तदहर्भोजयेन्न च॥

जिस समय ज्वर चढनेवाला हो, उस समय विषहीन साँपों या पालतू हाथियो अथवा बनावटी तस्करोंसे रोगीको डराना चाहिये और उस दिन उसे खानेको न देना चाहिये।

जिस तरह डराने धमकाने या विस्मयजनक बात कह देनेसे "हिचकी" आराम हो जाती है, उसी तरह कई "विषम ज्वर"भी ऐसे उपायोंसे जाते रहते हैं; पर डरानेके लिये वही साँप मँगाने चाहिये, जिनके दाँत तोड दिये गये हों। बिना दाँत तोडे—जहरवाले साँप, भूलकर भी, न मँगाने चाहियें। उनसे तो अर्थमें अनर्थ हो सकता है।

आगन्तुक ज्वरोंमें पथ्य।



इन ज्वरोंमें लङ्घन नहीं कराने चाहियें। तलवार, लकडी, घूँसा प्रभृति किसी प्रकारकी चोट लगनेसे होनेवाले अभिघातज ज्वरोंमें घी पीना, मालिश कराना, खून निकलवाना यानी फस्त खुलवाना अथवा सींगी वगैर, लगवाकर खून निकलवाना, शराब पीना, मांस रस पीना और भात खाना पथ्य है। पहले मांसरस और दूध पीना ही अच्छा है।

"चरक"में लिखा है,—अभिघातज ज्वरमें (चोट प्रभृतिसे होनेवाले ज्वरमें), घी पिलाना और घीकी मालिश कराना ठीक है। फस्त खुलवाकर खून निकलवाना प्रकृतिके अनुकूल—मिजाजके माफिक शराब पीना, मांसरसके साथ भोजन करना अच्छा और आवश्यक है। जो कहींसे गिरकर बेहोश होगया है, उसे होशमें लानेके लिये फस्त खुलवाना और शराब पिलाना आवश्यक है, किन्तु यदि भूलसे जियादा खून निकाल दिया जायगा, तो वायु कुपित हो जायगा, और अगर शराब अधिक पिला दी जायगी तो पित्त कुपित हो जायगा। ऐसी हालतमें, गलतीके कारणसे, रोगीकी मृत्यु भी हो जा सकती है।" देखा पाठको! चिकित्साकर्म कितनी होशियारी, सावधानी और जिम्मेवरीका काम है।

क्षतज ज्वरमें यानी उस ज्वरमें, जो तलवार भाला प्रभृति हथियार लगनेके कारण, जख्म या घाव होनेसे चढा हो अथवा व्रण

ज्वरमें यानी उस ज्वरमें जो फोड़े फुन्सियोंके जोर धरनेसे हुआ हो, पहले वैद्यको घाव या फोड़ा-फुन्सीका इलाज करना उचित है। उरः क्षत और व्रण-रोगियोंके ज्वरमें भी चरकने मद्य और मांसरस—शोरवा देनेकी व्यवस्था की है।

मार्ग चलनेकी थकानसे हुए श्रमज्वरमें, प्राचीन वैद्योंने, दिनमें सोना और तेलकी मालिश कराना पथ्य बताया है। मारने, बाँधने, अत्यन्त परिश्रम करने, बहुत मार्ग चलने, पेड़ वगैरःसे गिरने और छेदन भेदन प्रभृतिसे पैदा हुए ज्वरोंमें,—पहले मांसरस और दूधका पीना हितकारी है,

तीक्ष्ण औषधियोंके सूँघने और विष या जहरसे उत्पन्न हुए ज्वरोंमें, बुद्धिमान वैद्यको विष और पित्तको नाश करनेवाला "सर्व गन्ध" * का क्वाथ पिलाना चाहिये। इन ज्वरोंमें विष और पित्तको शान्त करनेवाली क्रिया करनी चाहिये। औषधिकी गन्धसे हुए ज्वरमें चित्तको प्रसन्न करनेवाले काम करने उचित हैं।

क्रोधसे उत्पन्न हुए ज्वरमें पित्तनाशक क्रिया करनी चाहिये। महात्माओंके वचनोंको माननाभी पथ्य है। ऐसा ज्वर धीरज बँधाने, तसल्ली देने, [illegible] वस्तुके मिलने, वायुको शमन करने और आनन्द पैदा करनेवाली बातोंसे शान्त होता है। क्रोधसे उत्पन्न हुआ ज्वर चाही हुई चीज मिलने, धिक्कार आदि, भय पैदा करनेवाली बातों और पित्तको शान्त करनेवाले उपायोंसे शान्त होता है। क्रोधको मनमें रोकने और क्रोधको परमशत्रु समझनेसे भी क्रोधज्वर शान्त हो जाता है। कामसे भी क्रोधज्वरका नाश होता है, यानी क्रोध ज्वरीका चित्त सुन्दरी स्त्रियोंकी चर्चामें लगा देनेसे भी बहुत लाभ होते देखा गया है। इस ज्वरमें गरम खानपान न देकर, पित्तको शान्त करनेवाले मीठे और शीतल पदार्थ देने चाहियें।

* तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केशर और लौंग—इन नौ औषधियोंके समुदायको "सर्वगन्ध" कहते हैं।

कामज्वरमें वायु कुपित होता है। इस ज्वरमें वायु शमन करने वाले काम करने चाहियें। यह ज्वर भी तसल्ली देने, चाही हुई वस्तु के मिल जाने और आनन्द बढ़ानेवाली बातोंके कहनेसे शान्त होता है। कामको मनमें रोकना भी अच्छा है। जिस तरह कामसे, यानी इश्क़ या प्रेमकी बातें करनेसे क्रोधज्वर शान्त होता है, उसी तरह क्रोध से कामज्वरका भी नाश होता है। इस ज्वरमें वातको कुपित करने वाली कोई क्रिया न करनी चाहिये। इस ज्वरके नाश करनेवाली औषधियाँ हम आगे लिखेंगे। एक ग्रन्थमें लिखा है, यदि किसी स्त्रीको कामज्वर हो तो वह, सन्ध्या समय, अत्यन्त सुगन्धित फूलोंके पलँग पर लेटे और रातको अपने प्राणप्यारेके साथ क्रीड़ा करे।

शोकज्वर और भयज्वरोंमें भी वायु कुपित होता है, इसलिये इनमें भी वायुको शमन करनेवाले काम करने चाहियें। धीरज बँधाना, शोक और भयनाश करनेवाली बातें कहना, दिलको खुश करनेवाले उपाय करना—इन ज्वरोंमें हितकारी हैं। क्रोध और कामके पैदा होनेसे, इन ज्वरोंका नाश अवश्य होता है।

भूतज्वर भूतबाधासे होता है। इसमें तीनों दोष कुपित होते हैं। इसे भूत-विद्यामें लिखे हुए उपायों—ताड़ना, आवेश, बन्धन प्रभृतिसे जीतना चाहिये, सहदेईकी जड़ कण्ठमें * बाँधनेसे एक, दो, तीन या चार दिनमें भूतज्वर नाश हो जाता है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है, जड़ियोंमें अमित शक्ति और प्रभाव है।

समस्त ज्वरोंमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

"विष्णुसहस्र नाम"का पाठ "मह [illegible] प, अपने इष्टदेव [illegible]
की उपासना या पूजन, ब्रह्मचर्य, हव [illegible]

* यहीं ऐसा भी लिखा है—"ज्वरहन्ति [illegible] । [illegible] यथा"
सहदेईकी जड़ सिरमें बाँधनेसे [illegible] ।

दर्शन, हीरा, पन्ना प्रभृति रत्नोंका धारण करना और लघु पथ्य सेवन करना,—ये सब ज्वरोंमें पथ्य हैं।

अपथ्य।

खुशबूदार तेल शरीरमे लगाना, लाल फूलोंकी माला या लाल कपड़े पहनना, वमन या कफको रोकना दाँतुन करना, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, सयोग विरुद्ध अन्नपान, दाहकारक और भारी यानी देरमें पचनेवाले पदार्थों का खाना, दिनमें दो बार खाना, पूर्वाह्णमें यानी दोपहर पहले या दिनके पहले चार घण्टोंके भीतर खाना, अभिष्यन्दी, तीक्ष्ण और भारी अन्न खाना, एक साथ पेटभर खाना,—ये सभी ज्वरोमें अपथ्य हैं। इनसे गया हुआ ज्वर फिर लौट आता है।

इनके सिवाय दूषित जल, खार, खटाई, पत्तोंके साग, अङ्कुर उपजा हुआ अन्न घसका जल, पान, तरबूज, बडहर, तोड़ा मछली, तिलोंकी खल, पिट्ठी और मैदाके बने पदार्थ, कचौडी, बड़े तथा और भी कफकारी पदार्थ ज्वरोंमें त्याज्य हैं।

ज्वरान्तमे अपथ्य।

ज्वर छूट जाने पर भी कसरत, मैथुन,स्नान, भ्रमण, परिश्रम, हवा खाना और शीतल जल—इनसे परहेज करना चाहिये। जब तक पहले कोसो ताकत न आजाय, तब तक अवश्य बचना चाहिये। ज्वर जानेपर भी जल्दी ही स्नान कर लेनेसे फिर ज्वर आजाता है, इसलिये ज्वर-मुक्त मनुष्य स्नानको विषके समान समझे। जबतक बल, वर्ण—शरीरका रंग, अग्नि और देह, पहलेके समान प्रकृतिके अनुसार न होजायँ, तब तक ज्वरमुक्त मनुष्य भी त्यागने योग्य कामोंको त्याग दे।

सुश्रुतमें लिखा है —

परिषेकावगाहाश्च स्नेहान्सशोधनानि च।
स्नानाभ्यग दिवास्वप्न शीतव्यायाम योषित ॥

अथवा शीतल शर्करोदक† या कोई उत्तम शर्बत पीना हित है। साथ ही दूध भात खाना भी पथ्य है। इन उपायोंसे वह शेष रहा हुआ पित्त शान्त हो जाता है और ज्वर छूट जाता है। अगर कफ या वायुके शेष रह जानेसे ज्वर आने लगे, तो पसीना देने और तेल प्रभृतिकी मालिशसे काम निकालना चाहिये।

---

† शुद्ध जलमें मिश्री या सफेद खाँड घोलकर उसमें अन्दाजसे छोटी इलायची, कपूर, लोंग और काली मिर्च पीसकर मिला दो। खूब मिलजाने पर छानकर पी जाओ। यही "शर्करोदक" कहलाता है। इसकी विद्वानोंने बडी तारीफ की है। यह वीर्यको पैदा करता है, शीतल होनेसे जलन मिटाता है, दस्त लाता है, ताकत लाता है, रुचि करता है, हलका है, जायकेदार है तथा वातपित्त, रुधिर-विकार, मूर्च्छा, वमन, प्यास और दाह ज्वरको शान्त करनेमें परमोत्तम है। पित्तशेष ज्वरमें यह रामबाण है। इसमें इतनाही दोष है कि, यह कफको बढाता है, किन्तु वातको शान्त करता है और पित्तज्वरमें, शुद्धपित्तज्वरमें, अमृत है।



ज्वररोगियोंके लिये अन्नसाधन विधि ।

मंड ।

उत्तम शालि चाँवलोंको १४ गुने जलमें पकाओ । जब चाँवल अच्छी तरहसे सीज जायँ, पसाकर चाँवल अलग कर दो । जो पतला पतला पदार्थ रहे, उसे ले लो । इसीको "मंड" या "माँड" कहते हैं । इसमें सोंठ और सेंधानोन, अन्दाज से डालकर ज्वरवालेको दो । यह मंड अग्निदीपक, पाचक, ग्राही हलका, शीतल, धातुओंको समान करनेवाला, तृप्तिकारक, बलकारक और ज्वरनाशक एवं पित्त, कफ और श्रमनाशक है ।

पेया ।

लाल शालि चाँवलों वगैर को चौदह गुने जलमें पकाओ । जिसमें चाँवलोंके कण कम हों तथा जियादा पतली हो, उसीको 'पेया" कहते हैं । पेया अत्यन्त हलकी, मल रोकनेवाली, धातुपुष्ट करनेवाली ; प्यास, ज्वर, वात, कमजोरी तथा कोखके रोगोंको नाश करनेवाली, पसीना लानेवाली, अग्नि दीपन करनेवाली, वायु और मलको अनुलोमन करनेवाली होती है। अगर इसमें अन्दाजका सेंधानोन और सोंठका चूर्ण मिला दिया जाय , तो यह दीपन, पाचन, रुचिकारक और आमशूल तथा विबन्धको नष्ट करनेवाली हो जाती है ।

नोट—जिसमें जरा भी कण न हो, उसे "मंड" कहते हैं । जिसमें थोड़े कण हो और पतली हो, उसे "पेया" कहते हैं । जिसमें कण जियादा हो और पतलापन कम हो, उसे "विलेपी" कहते हैं ।

प्रमथ्या ।

चार तोले चाँवल या और कोई अन्न, जिसकी प्रमथ्या बनानी हो,

लेकर साफ करलो। पीछे उसे जलमें पीसकर लुगदीसी बनालो और अठगुने या ३२ तोले जलमें उसे पकाओ। जब चौथाई यानी आठ तोले माल रह जाय, उतार लो। यही "प्रमथ्या" है। इसके गुण पेयाके समान ही हैं बल्कि इतनी विशेषता है कि, यह और भी हलकी है।

यूप।

दो दालवाले मूँग, मोठ, चना प्रभृतिमें से किसी एकको लेकर १८ गुने जलमें पकाओ, जब अन्न अच्छी तरहसे गल जाय और पेयासे कुछ गाढा हो जाय, तब उतार लो। इसको "यूप" कहते हैं। यूप बहुत ही रुचिकारक होता है।

दूसरी विधि।

दो दालवाला अनाज मूँग या चना वगैर चार तोले लेकर जल में पीस लो। पीछे ६ माशे सेंधानोन और ६ माशे पीपरको भी एक जगह जलमें पीस लो। शेषमें दोनो पिसी हुई लुगदियोको ६४ तोले जलमें पकाओ, जब रस सा हो जाय, उतार लो। इसे भी "यूप" ही कहते हैं। यह यूप बलकारक, पाक में हलका, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी और कफनाशक होता है।

मूँगका यूप।

आठ तोले मूँग लेकर १२८ तोले (१ सेर ६॥ छ०) जलमें पकाओ। जलते-जलते चौथाई पानी रह जाय, तब आगसे उतार लो। पीछे मूँगोंको हाथोंसे खूब मलकर कपडेमें छान लो। फिर इस छने हुए रसमें अनारका रस चार तोले, सेंधानोन १ तोले, सोंठ का चूर्ण १ तोले और धनियाका चूर्ण १ तोले मिला दो। अन्तमें जरासी पीपल और जरासे जीरेसे छौंक दो। इसे "सस्कृत मूँगका यूप" कहते हैं। यह यूप पित्तनाशक, जठराग्निवर्द्धक, शीतल, हलका, घाव, उर्द्ध जत्रुरोग, प्यास, दाह, कफ, पित्तज्वर और रुधिरके

त्रिकारको नष्ट करनेवाला और सब यूषोंमें उत्तम है। पित्तज्वरमें मूँगके यूषसे लपेटा भात मिश्री मिलाकर देनेसे बड़ा लाभ होता है।

मूँग और आमलेका यूष।

इन दोनोंका यूष दस्तावर, पित्त और वातनाशक, तृषा और दाह शान्तिकारक, शीतल तथा मूर्च्छा, श्रम और मदनाशक है।

मसूरका यूष।

मसूरका यूष मल रोकनेवाला, पुष्टि करनेवाला, जायकेदार और प्रमेहनाशक है।

चनेका यूष।

वातपित्तज्वरमें, अत्यन्त दाह होनेके समय, चनेका यूष अच्छा काम करता है।

यवागू।

चाँवलोंको ६ गुने जलमें पकाओ। जब अन्न गलजाय और खूब गाढा रहे, परन्तु कण अलग अलग रहें और थोडा पानी भी रहे, तब उतार लो। इसे ही "यवागू" कहते हैं।

यवागू ज्वर रोगीके लिये अत्यन्त हितकारी, अग्निदीपक, हलकी, प्यासनाशक, वस्ती शोधक, थकान और ग्लानि नाशक है। ज्वर और अतिसारमें यवागू परम पथ्य है।

"चरक"में लिखा है, नवीन ज्वरवालेको वमन करने और लंघन करनेके बाद 'यवागू' देनी चाहिये। वह यवागू, दोषोंके अनुसार, औषधियोंके साथ बनानी चाहिये। पहले मंड देना चाहिये और जबतक ज्वर हलका न हो या जबतक ६ दिन न हो जायँ, तबतक 'यवागू" देनी चाहिये। ईंधनसे जैसे आग तेज होती है, उसी तरह

"यवागू" से रोगीकी अग्नि दीपन होती है। यवागू* औषधियोंके साथ संयोग होनेसे तथा हलकी होनेसे अग्नि दीपन करती है, वात मूत्र और पुरीष को अनुलोमन करती है, यानी इसके सेवनसे हवा खुलती तथा पाखाना पेशाब साफ होता है। "पेया" पतली और गरम होनेके कारण पसीने लाती है, पतली होनेके कारण प्यासको नाश करती है, आहार होनेके कारण प्राण धारण करती है, सरत्व-गुणके कारण देहमें हलकापन करती है और ज्वरमें सात्म्य होनेके कारण ज्वरनाशक है, इसलिये पहले पहल पेया प्रभृतिका पथ्य देना चाहिये।

विलेपी।

शालि चाँवलोंको चौगुने जलमें पकाओ। जब चाँवल गल जायँ, पर अलग अलग हों और जल भी अलग हो, उतार लो। यही "विलेपी" है। यह अग्निदीपक, बलकारक, हृदयको हितकारी, मल रोकनेवाली, हलकी, घाववाले और नेत्ररोगीको पथ्य तथा तृप्तिकारक, प्यास और ज्वरनाशक है।

भात।

१६ तोले चाँवलों को चौदह गुने जलमें पकाओ, ज चाँवल खूब गल जायँ, तब पसाकर माँड को अलग कर दो।

† मद्यसे पैदा हुए ज्वरमें, अधिक शराब पीनेसे हुए ज्वरमें, रोज-रोज शराब पीनेवालेके ज्वरमें, पित्तश्लेष्म प्रधान (पित्तकफप्रधान) ज्वरमें तथा ऊर्ध्वगत—ऊपरके रक्तपित्त ज्वरमें "यवागू" अहित यानी नुक्सानमन्द है। इसी तरह पेया भी मद्यजनित ज्वरोंमें न देनी चाहिये। दाह, वमन, प्याससे घबराये हुए, गरमीसे पीड़ित, दुर्बल और निराहारको भी यवागू या पेया न देनी चाहिये। ऐसे रोगीको सन्तर्पण देना अच्छा। यवागू तीन तरहकी होती है —(१) मंड, (२) पेया,, (३) विलेपी। ये उत्तरोत्तर भारी हैं, यानी मंडसे पेया भारी है और पेयासे विलेपी भारी है। यवागू पतली खिचड़ी सी हो जाती है। यवागू चाँवल, मूँग उर्द और तिल इनमेंसे जिसकी उचित हो बनानी चाहिये।

इन पके हुए चाँवलों को ही "भात" या "भक्त" कहते हैं। भात मधुर और हलका है। यह अग्निदीपक, पथ्य, तृप्तिकारक, पेशाव लानेवाला और हलका होता है।

अच्छी तरह धोया हुआ, पसाया हुआ गरम भात विशद और जियादा गुणोंवाला होता है। नही धोया हुआ, नही पसाया हुआ और शीतल भात वीर्य पैदा करनेवाला, भारी और कफकारी होता है। शीतल और सूखा हुआ भात कठिन से पचता है। अच्छी तरह न पका हुआ भात, बहुत समयमें, बडी दिक्कतसे पचता है।

भुने हुए चाँवलोका भात—रुचिकारक, सुगन्धियुक्त, कफनाशक और हलका होता है। ऐसा भात वातरोगी, निरूह बस्तीवाले मन्दाग्निवाले और और जुलाब लेनेवाले को अत्यन्त हित है।

नोट—मूँग के यूष के साथ भीगा हुआ भात कफज्वर मे और मूँग के यूष से भीगा और मिश्री मिला भात पित्तज्वर म बहुत उत्तम है।

रसौदन।

पुष्ट जानवर की जाँघ का मास अथवा हड्डी रहित तीतर का मांस १६ तोले लेकर, उसके महीन महीन टुकडे कर डालो। पीछे पानी से धो लो। इसके बाद पीपल, पीपलामूल, सोंठ, जीरा और धनिया—इनमें से हरेक आठ आठ माशे ले लो। अन्तमे सब को मिला कर, १२८ तोले (१ सेर ६ छटाक) जलमें पकाओ। जब चौथाई पानी रहजाय, तब मास को कलछी से कूट कर और हाथों से मलकर उसका रस निकाल लो। इस के बाद इसे हींग, सेंधेनोन और भुने जीरे से बघार लो और तैयार किये हुए भात में मिला दो। इसी को "रसौदन" कहते हैं। रसौदन —वमन विरेचनसे शुद्ध हुए और शुद्ध होने की इच्छा करनेवाले

दोनों के लिये पथ्य है। यह भारी, मैथुनशक्ति बढ़ानेवाला, बल कारक और वातज्वर हरनेवाला है। श्रम, उपवास और वायु से पैदा हुए ज्वर में बहुत ही हितकारी है।

मांसरस।

अगर गाढ़ा मांसरस बनाना हो, तो पहले मांस के टुकड़े करके धो लो, पीछे १६ तोले मांस ४ सेर जल में पकाओ। अगर पतला मांसरस बनाना हो, तो ४८ तोले मांस ४ सेर जल में पकाओ। अच्छतर मांस का रस बनाना हो, तो पहले ८ तोले मांस को पत्थर पर पीस कर गोलियां बना लो और घी में भून लो। पीछे उसे चार सेर जल में पकाओ और चौथाई पानी रहनेसे उतार लो। थोड़ासा मांस बहुत से जल के साथ सिद्ध किया जाय, तो उसका गल जाना सम्भव है।

औषधियों के योग से मंड आदि बनाने की विधि।

चार तोले औषधि लेकर ३ सेर ३ छटांक जल में पकाओ। जब जलते जलते आधा पानी रह जाय, उतार लो। इस काढ़े से मंड और पेया विलेपी आदि तैयार कर लो, यानी जल के स्थान में ऐसा पकाया हुआ काढ़ा देकर पेया वगैर बना लो।

औषधि से तैयार की हुई पेया के गुण।

जो जो दोष हों, उन उन दोषों के अनुसार पाचन औषधियों से तैयार की हुई पेया, भोजन के समय, देने से हितकारी, अग्निदीपक पाचक, हलकी और ज्वरनाशक होती है।

भिन्न-भिन्न ज्वरोंमें भिन्न-भिन्न पेया।

वातज्वर में पंच मूल (सरवन, पिथवन, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और गोखरू) का काढ़ा पाचन है। इसलिये अगर वातज्वर

में पेया देनी हो, तो चार तोले उपरोक्त पंचमूल लाकर, २५६ तोले या ३ सेर ३ छटाँक जलमें पका कर काढा कर लो। जब आधा जल रह जाय, तब काढेको उतार कर छान लो। पीछे ६ तोले चाँवल लेकर, इसी पंचमूलके तैयार रक्खे हुए काढे मे पकाओ। जब उसमें थोडेसे कण रह जायँ और पतली सी हो जाय, उतार लो। यही औषधि से सिद्ध की हुई पेया है। यह पेया वातज्वरमें हित है।

पित्तज्वर में नागरमोथा, कुटकी और इन्द्रजौ—इन तीनोका काढा पाचन है। उसी ऊपर की रीतिसे चार तोले तीनो दवाये ले कर, ३ सेर ३ छटाँक जलमें काढा बनाओ। आधा जल रहने पर उतार कर छान लो। फिर उस काढे में ६ तोले चाँवल डाल कर पकाओ। थोडेसे कण रहने और जियादा पतली होने पर उतार लो। यह पेया पित्तज्वर में पथ्य है। इस ज्वरमें मूँग के यूष के साथ मिला हुआ भात, मिश्री मिला कर देना भी अच्छा है। यह पथ्य शीतल है।

कफज्वर में पिप्पल्यादि क्वाथ पाचन है। पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद जीरा, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ इन्द्रजौ, बकायन, मूर्वा (चुरनहार) अतीस, कुटकी और वायविडङ्ग—इन २१ औषधियोंको पिप्पल्यादि गण कहते हैं। इनको उसी तरह ले कर, उतने ही पानीमें काढ़ा बना कर, आधा रहने पर उतार लो। शेषमें उसी तरह चाँवल डाल कर पेया बना लो। यह कफज्वरमें हितकरी है।

नोट—मूँगके यूपके साथ भीगा हुआ भात भी कफज्वरमे हितकर है।

वातपित्तज्वर में लघु पंचमूलके क्वाथ से पेया बना कर देनी चाहिये।

कफपित्तज्वर में पीपल और धनियेंके क्वाथ से पेया बनानी चाहिये।

कफवातज्वर में बृहत पचमूल (बेल, अरनी, खमारी, पाढल और स्योनाक) के क्वाथ से सिद्ध की हुई पेया देनी चाहिये।

त्रिदोषज्वर में कटेरी, जवासा और गोखरू के काथ से सिद्ध किया हुआ अन्न, विशेष कर, पेया देनी चाहिये।

ज्वर में अगर मूत्राशय, पसली और सिर में दर्द हो, तो गोखरू और कटेरीके क्वाथ से सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलों की पेया दो। यह पेया उक्त पीडाओंको नाश करती तथा ज्वर हरती है।

ज्वर में मल मूत्र यानी पाखाना पेशाब रुक जायँ, तो पीपल और आमलों के क्वाथ से पकाई हुई पेया घी डाल कर देनी चाहिये। इस पेया से दोष उचित मार्गों से निकलते हैं।

ज्वर में श्वास, खाँसी और हिचकी हो, तो लघुपंचमूल या बृहत्पचमूलके क्वाथ से सिद्ध की हुई, लाल शालि चाँवलो की पेया देनी चाहिये।

पंचमुष्टिक यूष।

जौ, बेर, कुलथी, मूँग और सोंठ—इन में से हरेक को चार-चार तोले लेकर, अठगुने (१६२ तोले) जलमें पकाओ। जब चौथाई भाग जल बाकी रहे, तब हाथों से मल कर छान लो। इसी को "पञ्चमुष्टिक यूष" कहते हैं। यह यूष वात, पित्त और कफ को नाश करता है तथा शूल, वायुगोला, खाँसी, श्वास, क्षय और ज्वर में अत्यन्त हितकारी है।

ज्वर में बत्ती।

ज्वर में अगर दस्त पेशाब बन्द हो जायँ, तो पीपल, पीपलामूल, अजवायन और चव्य—इनको जल में पीस कर मोटी अँगुली के बराबर, कपडे की बत्ती बना कर, उसमें लपेटो और ऊपर से थोड़ा

घी भी चुपड दो। इस वत्ती को गुदा में चलाने से पाखाना हो जाता है।

नोट—इसके साथ ही दोषोंको यथार्थ मार्ग मे स्थित करनेवाली, ऊपर लिखी हुई पीपल और आमलोके काढ़े से सिद्ध की हुई पेया भी देनी चाहिये।

दूसरी वत्ती।

दारूहलदी, वच, कूट, सौंफ, हींग और सेंधानोन—इन छै औषधियों की वत्ती भी, उसी तरकीब से बना कर, गुदा में चलाने से मल मूत्र हो जाते हैं। अगर पेट में दर्द और अफारा हो, तो इन्हीं ६ दवाओं को काजी में पीस कर, गरम करके, पेट पर लेप करना चाहिये।

सन्तर्पण।

खीलो का सत्तू, दाख, अनार और खजूर—इन को जलमें घोल कर, उस में मिश्री, शहद और घो डाल कर, जो चीज बनायी जाती है, उसे "सन्तर्पण" कहते हैं। वैद्य खीलों के सत्तू को जल में घोल कर, उस में मिश्री और शहद मिला कर भी तर्पण रूप से पिलाते हैं।

जिन रोगियो को यवागू या पेया देना मना है उनको ये सन्तर्पण अच्छे होते हैं। इनके पीने से विशेष कर वमन, अतिसार, प्यास, दाह, विष, मूर्च्छा और ज्वर का नाश होता है।

"चरक"में लिखा है,—दाह और वमन से पीडित तथा लंघनोसे क्षीण हुए ज्वरवालेको दाख,अनार,खजूर, चिरौंजी का पका फल और फालसे—इनका रस मिला कर तर्पण देने से ज्वर नाश होता है।

दुग्धफेन।

ताजा गायका दूध आँखों सामने कढा कर ले आओ। उसे दो लोटों में भर कर, भाँग की तरह एक दूसरे मे उडेलो, यानी एक लोटेमें थोडा दूध रक्खो और दूसरे लोटे में भी थोडा दूध रक्खो।

पहले लोटेको हाथ में थामो और दूसरे लोटेको ऊँचा ले जाओ, पीछे उसका दूध ऊँचेसे नीचेवाले लोटेमें उडेलो। इस तरह सैकड़ों बार करो। इस तरह करने से जो झाग आवें, उन्हें दूसरे बर्तन में रखते जाओ। जब झाग आना बन्द हो जाय, तब दूध को किसी को दे दो या फेंक दो। ये झाग ही बड़े कामके हैं। इनको ही 'दुग्धफेन" कहते हैं। इन में जरा सा मिश्री मिला कर, उस जीर्णज्वरी या अतिसार रोगी को दो,—जिसे तोले दो तोले अन्न भी न पचता हो। ये दूधके फेन त्रिदोषनाशक, रोचक और भूख बढ़ानेवाले हैं। "दुग्धफेन" बहुतही हलका पथ्य है।



लंघन-विचार।

हमारे शास्त्रोंमें लङ्घन की बडी तारीफ की गयी है। ज्वरनाश करनेमें तो इसे सर्वोत्तम ही माना है। वास्तवमे लङ्घन है भी ऐसा ही। शरीरके विकारों और रोगोंके नाश करनेमें इसका सानी और नहीं। लङ्घनसे शरीर और मन दोनोंकी शुद्धि होती है। जो शारीरिक और मानसिक रोग अच्छी से अच्छी दवाओंसे आराम नहीं होते, वे केवल लघनोंसे आराम हो जाते है। शरीरकी वेढङ्गी मुटाई नाश करनेमें भी लघन सर्वोत्तम है।

जो विद्वान् हैं, वे तो जानते ही हैं कि "लघन" शब्दका अर्थ क्या है, लघनसे कौन-कौन रोग नाश होते हैं, लघन किसको कराना चाहिये और किसे नहीं, लघनों से क्या लाभ और क्या हानि होती है लघन किस रीतिसे कराने चाहिये परन्तु अधकचरे वैद्य जिन्होंने शास्त्र नहीं देखे, इन बातोंका मर्म बिना समझे ही, ज्वर रोगमें सभी रोगियोंको, चाहे लघन की जरूरत हो या न हो, चाहे लघनसे हानि होनेकी ही सम्भावना क्यों न हो, लघनकी आज्ञा दे देते हैं। इसका बडा बुरा परिणाम होता है। अनेक रोगियोंके रोग बढ जाते हैं और अनेक रोगी कुटुम्बियोंको रुलाकर परमधाम को सिधार जाते हैं। ससारमें जितने पदार्थ या कर्म अच्छे हैं, उनमें दोष भी मौजूद है। भोजन अमृत है, क्योंकि इससे प्राणोंकी रक्षा होती है, किन्तु वही अधिक या नियम-विरुद्ध सेवन करनेसे मनुष्य को मार डालता है। स्त्री आनन्दके बढानेवाली, सुखके देनेवाली, कुलका नाम रखनेवाली, विपद्में सच्चे मित्रकी भाँति सहायता देने वाली है, पर उसके भी अधिक सेवनसे बहुतसी शारीरिक, आर्थिक और नैतिक हानियाँ होती है। बहुत ही स्त्रीसेवा करनेवालोंको क्षयरोग

हो जाता है, जिससे वे असमयमें ही कालके गालमें समा जाते हैं। मीठा भोजन सबसे अच्छा भोजन है, परन्तु अधिक मीठा खानेसे कृमिरोग प्रभृति अनेक रोग हो जाते हैं। जल प्राणियोंका जीवन है, जलके बिना मनुष्य शीघ्रही चोलेको छोड देता है, पर वह भी बेकायदे और अधिक सेवन करनेसे मनुष्यको मार डालता है। शराब थकान दूर करने और चित्तको प्रसन्न रखनेके लिये परमोत्तम पदार्थ है, पर वह भी बेकायदे पीनेसे भयकर रोग पैदा कर देती है। मुर्गका मास ताकत लानेमें सबसे बढ़कर है, पर वही निहायत कम-जोर को एकदम खिला देनेसे मार देता है। शहद कफपित्तनाशक पदार्थों में सर्वोत्तम है और अनेक रोगोंका नाश करता है, पर गरम करके लेने या घीके साथ बराबर लेनेसे विष हो जाता है। कसरत शरीरको मजबूत करनेवाले उपायोंमें राजा है, पर वह भी बेकायदे की जाती है, तो अनेक प्रकारके रोग पैदा कर देती है। दूध जीर्णज्वर वालोंके लिये अमृत है, पर नवीन ज्वर-रोगीके लिये विष है। दूध और मास बलवर्द्धक पदार्थोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं, पर वे भी एक साथ खानेसे कोढ आदि भयानक रोग पैदा करते हैं। स्नान थकान नाश करनेवालों और चित्त प्रसन्न करनेवालोंमें परमोत्तम है, पर वही ज्वरवाले और ज्वरमुक्तको मार देता है। उपवास या लघन ज्वर प्रभृति अनेक रोगोंके नाश करनेमें सर्वोत्तम उपाय है, पर नियम विरुद्ध या बिना विवेक विचारसे कराये जानेपर मनुष्यके प्राण ही नाश कर देता है। संसारमें जितने कर्म और पदार्थ हैं, सभीमें कुछ न कुछ नुक्स या दोष भी हैं। जितने अच्छे-अच्छे वचन हैं उनके साथ उनके खण्डन भी हैं। बुद्धिमानको नियम और छूट वाक्य और खण्डन दोनोंपर ध्यान देना चाहिये। दोनों पर ध्यान रखनेसे ही सफलता मिलती है। शास्त्रमें यदि लघन करानेकी आज्ञा है तो मनाही भी है, क्योंकि लघन लाभदायक भी है और हानिकारक भी है।

लंघन किसे कहते हैं।



"चरक"में लिखा है :—

यत्किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लंघनं स्मृतम्।

जिससे शरीर हलका हो या जो शरीरको हलका करे, उसे "लङ्घन" कहते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

शरीर लाघवकरं यद्द्रव्यं कर्म वा पुनः।
तं लंघनं इति ज्ञेयं बृंहणं तु पृथग्विधम्॥

जिस द्रव्य या जिस कर्मसे शरीर हलका हो, वही लङ्घन है, यानी जिस औषधि या कामसे शरीर हलका हो उसे "लङ्घन" कहते हैं। बृंहण इसके विपरीत है।

"हारीत संहिता"में लिखा है :—

अनशनवमन विरेचन रक्तस्रुति तप्ततोयपानैः।
स्वेदनकर्मसहितं षट्विधं लंघनं गदितम्॥

न खाना, वमन करना, जुलाब लेना, खून निकलवाना, गरम-गरम पानी पीना, पसीने निकालना—ये छहों लङ्घन कहलाते हैं।

"चरक"ने कहा है :—वमन विरेचन, निरूह वस्ति, शिरोविरेचन, प्यास रोकना, हवा खाना, धूप खाना, पाचन, उपवास (न खाना) और परिश्रम - ये लङ्घन हैं।

जो चीज लघु, उष्ण, रूक्ष प्रभृति गुणवाली हो, उसे भी "लङ्घन" कहते हैं। यहाँ लङ्घनका अर्थ उपवास ही है, क्योंकि सुश्रुतने कहा है कि, जिस द्रव्य या कामसे शरीर हलका हो वही लङ्घन है। वमन विरेचन, निरूह वस्ति और शिरोविरेचन—इनको यहाँ लङ्घनके अर्थमें नहीं लेना चाहिये। यद्यपि ये चारों भी शरीरको शुद्ध और

हलका करते हैं किन्तु इनका उपयोग ज्वरकी खास खास अवस्थाओंमें, ऐसी ही जरूरत आपड़नेसे, किया जाता है। सभी ज्वरोंमें वमन विरेचन आदि नही कराये जाते।

"सुश्रुत"में साफ लिखा है :—

प्रव्यक्त रूपेषु हितमेकातेनापतर्पणम् ।
आमाशयस्थे दोषे तु सोत्क्लेशे वमन परम् ॥
आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावत कालमातुर ।
कुर्यादनशनं तावत्तत संसर्गमाचरेत् ॥
क्रमेण बलिने देय वमनं श्लैष्मिके ज्वरे ।
पित्तप्राये विरेकस्तु कार्य प्रशिथिलाशये ॥
सरुजे निलजे कार्य सोदावर्ते निरूहणम् ।
कटीपृष्ठ महार्तस्य दीप्ताग्नेरनुवासनम् ॥
शिरोगौरवशूलघ्नमिन्द्रिय प्रतिबोधनम् ।
कफाभिपन्ने शिरसि कार्य मूर्द्ध विरेचनम् ॥

ज्वरका रूप प्रकट होते ही बेखटके लघन कराने चाहिये। अगर आमाशय में उत्क्लेश सहित दोष हों, तो वमन करानी चाहिये। जब तक दोष पच न जायँ, रोगीकी हालत न सुधर जाय, शरीर हलका न हो, तब तक लंघन कराने चाहिये, इसके बाद अन्न देना चाहिये। इससे साफ जाहिर है, कि लघन शब्दसे यहाँ उपवास करानेसे मतलब है। पका हुआ दोष शरीरमें रह जानेसे भयङ्कर रोग पैदा करता है, उसका निकाल देना ही हितकर है। इसलिये कहा है, अगर बलवान रोगी के कफज्वर हो और रोगीका कोठा कडा हो, तो दस्त करा देना चाहिये। अगर वायुसे ज्वर हो और उसमें वेदना या उदावर्त हो, तो निरूहण बस्ति करनी चाहिये। अगर कमर और पीठ जकड रहे हों, तो अनुवासन बस्ति करनी चाहिए। अगर सिरमें कफ भरा हो, तो सिरका दर्द और भारीपन मिटानेको इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाली कोई नस्य देकर, सिरका मलगम निकाल देना चाहिये। इस वचनसे स्पष्ट मालूम होता है, कि ज्वरकी

विशेष हालतोमे, जब कि पका हुआ मल कोठेमें रुकजाय, थोडे दिनके ज्वर रोगीको भी, वमन विरेचन प्रभृति करानेकी आज्ञा दी है। इसलिये चारो प्रकारकी वमन विरेचन आदि संशुद्धियोको यहाँ लघन न समझना चाहिये।

ज्वर-रोगीको थोडा-थोडा जल देना चाहिये, रोकने की जरूरत नहीं, बहुत पोना भी खराब है। ज्वर की विशेष अवस्थाओं में प्यास रोकनी होती है।

अब रहा हवा खाना —ज्वर में हवा सभी आचार्य्यो ने बुरी कही हैं। हाँ, ज्वरकी अवस्था विशेष में, वायु सेवन अच्छा है, सभी ज्वरो में नहीं। यही बात धूप के सम्बन्ध में भी है।

परिश्रम करना तो ज्वर में कतई मना है। सुश्रुतने तो यहाँतक कहा है कि, रोगीको उसके पलँग पर ही खाने को देना चाहिये और हाथके सहारेसे उठा कर पास ही मल मूत्र त्याग कराना चाहिये। ज्वर में परिश्रम करनेसे अनेक उपद्रव खडे हो जाते हैं।

गरम पानी ज्वर में अच्छा है, इस से ज्वर में बडा लाभ होता है। शीतल जल ज्वर को बढाता है, किन्तु गरम करके शीतल किया हुआ जल ज्वर को घटाता है।

यदि लघन करने से, गरम जल देने से और यवागू पीने से दोष न पचे, तो मुँह की विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वर-नाशक तथा हृदय को हितकारी पाचन रूपी क्वाथ पिलाना चाहिये। ज्वर के आरम्भ में लघन यानी उपवास ही कराना चाहिये।

फस्त खुलवाकर या सींगी प्रभृतिसे खून निकाला जाता है, इस से शरीर हलका हो जाता है; पर यह काम भी सभी ज्वरों में नहीं किया जाता—ज्वर की विशेष अवस्थाओं में किया जाता है। जैसे,—रक्तगत ज्वर में खून निकलवाने की आज्ञा है।

अब यह बात खूब साफ हो गयी कि, लंघन के अनेक अर्थ होने या लंघन कई प्रकार के होने पर भी ज्वर में लंघन का मतलब उपवास से ही है। अब यह विचारना चाहिये कि लंघन से लाभ क्या होता है अथवा लंघन क्यों कराया जाता है।

लंघन क्यों कराया जाता है?



भट्टी की आग हवा के झोंके से जब बाहर आने लगती है, तब उसके ऊपर रक्खी हुई कड़ाही की चीज एकदम पकतीही नहीं या अच्छी तरह नहीं पकती; मनुष्य-शरीर में भी भट्टी की आग की तरह आग जलती है। उसकी गरमी जब दोषों के कुपित होने के कारण बाहर निकल जाती है, तब वह आहार को नहीं पचाती अथवा हलका अन्न खाया जाता है, तो धीरे धीरे पचाती है। वह अग्नि दब जाती है या मन्दी हो जाती है। उस अग्नि को तेज करने के लिये ही लंघन-चिकित्सा की जाती है।

"चरक"में लिखा है—जीव की नाभि और छाती—इन दोनों के बीच में आमाशय है। आमाशय में ही चर्व्य, चोष्य, पेय और लेह्य, चारों प्रकार के आहारों का परिपाक होता है। खाये हुए भोजन का पाक होने पर रस और रस से खून बनता है। वह धमनियोंके द्वारा शरीरके भिन्न-भिन्न आशयोंमें पहुँचता है। इसी आमाशय से ज्वर की उत्पत्ति होती है।

"चरक और वाग्भट्ट" दोनोंमें ही लिखा है—दूषित हुए वातादि दोष, आमाशय में स्थित हो कर—ठहर कर, जठराग्नि को ढक कर, आम के साथ मिल कर शरीर के छेदों को ढक कर, ज्वर को उत्पन्न करते हैं। आम दोष के कारण से ज्वर होता है, इसलिये उस

आम दोष को पचाने के लिये, जठराग्नि को दीपन करने के लिये और शरीर के छेद्रों को खोलने के लिये ज्वर में लंघन कराते हैं।

लंघनसे लाभ।



"बंगसेन"में लिखा है —

लंघनेन क्षयं नीते दोषे संधुक्षितेऽनले।
विज्वरत्वं लघुत्वं च क्षुच्चैवास्योपजायते॥

लंघन करने से वात आदि दोषों का क्षय होकर, जठराग्नि दीप्त होती है तथा ज्वरकी हीनता और लघुता होती है एवं भूख लगती है।

"सुश्रुत"में लिखा है —

अनवस्थित दोषाग्नेर्लंघनं दोषपाचनम्।
ज्वरघ्नं दीपनं कांक्षारुचि लाघवकारकम्॥

जिस मनुष्य के दोष और अग्नि ठीक नहीं होते, उस को यदि लंघन कराया जाता है, तो उसके दोष पच जाते हैं। लंघन ज्वर नाश करनेवाला, अग्निदीपक, कांक्षा और रुचि तथा हलकापन करनेवाला है।

तात्पर्य यह कि, लंघन करने से बढ़े हुए दोष क्षीण हो जाते हैं, जठराग्नि दीपन होती है, इसलिए ज्वर नाश हो जाता है, शरीर हलका हो जाता है और भूख लगती है।

"शास्त्रों"में लिखा है —

आहारं पचति शिखी दोषानाहारवर्जितः।
पचति दोषक्षये धातून्प्राणान्धातुक्षयेऽपि च॥

शरीर की अग्नि खाये हुए आहार को पचाती है। आहार

न होने से वात, पित्त और कफ को पचाती है, दोषों के क्षय होने पर धातुओं को पचाती है और धातुओं का क्षय होने पर प्राणों को पचाती है, यानी प्राण नाश कर देती है।

इस एक वाक्य में रोगनाशक तत्त्व भरा हुआ है। इसे हम रोग नाश करने का महामन्त्र कह सकते हैं। जब मनुष्य को ज्वर आता है, तब अक्सर भूख बन्द हो जाती है। वह भूख बन्द होना —अग्निका इस बातका इशारा है कि, मेरे ऊपर इतना बोझा पड़ा हुआ है कि, मैं दबी जाती हूँ। जब तक मैं इस बोझे की सफाई न कर चुकूँ, मेरे ऊपर और बोझा मत डालना। अगर बीमार इस इशारे को समझ लेता है और तदनुसार काम करता है, तो अग्नि कई दिन में रोग के कारण दूषित मल को जला डालती है। जब वह उस को जला डालती है, तब और ईंधन माँगती है और उसी समय मनुष्य को सच्ची भूख लगती है।

इस तरह भी समझिये।—प्रकृतिके हुक्म से अग्नि शरीर के यंत्रों को चलाती है, शरीर की पालना करती है और यंत्रों को साफ रखती है। जब उस को शरीर में शरीरनाशक कूड़ा करकट दिखाई देता है, तब वह भूख बन्द कर देती है, यानी वह इशारतन कहती है,—तुम्हारी मूर्खता से घर में बहुतसा रोगीला मैला जमा हो गया है। पहले मैं इसे साफ करूँगी। जब तक मेरा इशारा न हो, मेरे ऊपर और बोझा मत डालना। उस समय यदि मनुष्य खाना बन्द कर देता है, लंघन करता है, तो पचाने को आहार न होने से फुरसतमें वह उस मैले को जलाती है, क्योंकि उस का स्वभाव ही कुछ न कुछ जलाना है। जब वह रोग की जड़—मैले को जला कर भस्म कर देती है, तब फिर भूख लगती है। यह उसका इस बात का इशारा है कि, मैं मैले को जला चुकी, अब मेरे लिये हलका ईंधन दो। क्योंकि मुझे उस मैले के जलाने में बड़ा जोर लगाना पड़ा है और मैं थकी हुई हूँ।

इस सब का मतलब यह है, कि जब तक अग्नि को आहार मिलता है, वह आहार को पचाती है, जब शरीर में रोग हो जाता है, तब वह आहार पचाना पसन्द नही करती। पहले शरीर के दूषित अंशों – रोग के बीजों को जलाती है। जब इनको जला चुकती है, तब आहार रूपी इंधन माँगती है। अगर समय पर वह नही पहुँचता, तो धातुओं को जलाती है, धातुओं के जलनेसे प्राणी मर जाता है। परमात्मा ने कैसे कैसे प्रबन्ध किये हैं। हमारे शरीर के भीतर ही हमारे रोगों को नाश करनेवाला वैद्य बैठा दिया है। अगर हम अपने शारीरिक वैद्य की बात सुने, उसकी इच्छा के विरुद्ध न चले, रोग होते ही खाना छोड दे यानी उपवास करे, तो शीघ्र ही ज्वर से छुटकरा पा जायँ। उपवास का आरम्भ आहार त्यागनेसे और अन्त सच्ची भूख से होता है। भूखों मरने का आरम्भ सच्ची भूख से और अन्त प्राणनाश से होता है। मतलब यह है, कि उपवास से कोई मर नहीं सकता, वरन फायदा ही उठा सकता है, बशर्ते कि मनुष्य ठीक रीति से काम करे। कह चुके हैं कि, अग्नि पहले शरीर के खराब अंशों—दोषों को पचाती है। जब वे नहीं रहते, तब भूख लगती है। उस समय यदि मनुष्य हलका भोजन करता है, तब तो कोई हानि नही होती, किन्तु यदि रोगीको उस समय भोजन नहीं दिया जाता, तो अग्नि शरीरके रक्तमांस प्रभृति धातुओंको पचाने लगती है। उनके भी शेष हो जानेपर प्राण-नाश कर देती है, इसलिये उपवास तभी तक करना चाहिये, जबतक शरीरके दूषित अंश न ख़तम हों। दूषित अंशोंका खातमा होते ही भूख लगती है, तब अवश्य ही खाना चाहिये, पर बहुत हलका भोजन करना चाहिये, क्योंकि उस वक्त अग्नि कमजोर रहती है। अगर लंघन करने बाद, कोई बहुत भारी पदार्थ खालेगा, तो वह निश्चय ही फिर बीमार हो जायगा और मर भी जायगा। पाश्चात्य विद्वानोंका मत है कि, लंघनके बाद जल्दी पचनेवाला पथ्य देना

चाहिये। जो लोग दूध पचा सकें, उन्हें दूध देना चाहिये, जिन्हें दूध भी न पचे, उन्हें फलोंका रस देना चाहिये। हमारे यहाँ ऐसे मौके पर यवागू, पेया अथवा मंड वगेरःको व्यवस्था है और ज्वरमें यही ठीक भी हैं, क्योंकि नवीन ज्वरमें दूध देना मना हैं।

क्या सभी ज्वररोगियोंको लंघन कराने चाहियें ?



उपवास सभी रोगियोंको न कराना चाहिये। जिनकी सामर्थ्य घट गई हो, जिनमें हाडमासका ढेर रह गया हो, उन्हें भूलकर भी उपवास—लंघन न कराने चाहिये। क्योंकि यद्यपि लंघनसे आरोग्य लाभ होता है और रोगका नाश होता है, तोभी आरम्भमें शक्तिका ह्रास ही होता है। शक्ति या बलका घटना बुरा है। रोग रहे न रोगी, ऐसा काम करना महामूर्खता है।

"बंगसेन"में लिखा है :—

> बलाविरोधेनाऽमैनं लंघनेनोपपादयेत् ।
> बलाधिष्ठान आरोग्य यदर्थोहि क्रियाक्रम ॥

वैद्यको लंघन इस तरह कराने चाहिये, जिससे रोगीका बल न घटे, क्योंकि बलके अधीन ही आरोग्यता है और उस आरोग्यताके लिये ही इतने काम किये जाते हैं। जिनमें लंघन सहने योग्य बल हो, उन्हींको लंघन कराने चाहियें। पुराने ज्वरवालो और क्षयरोग वालोंमें बल नहीं रहता उनका रक्तमास सूखजाता है, कफक्षय हो जाता है और वायुका कोप हो जाता है, इसलिये ऐसोंको लंघन कराना मारना है। पाश्चात्य विद्वान् भी लिखते हैं, जिन लोगोंकी जीवनीशक्ति क्षीण होगई हो, उनको लंघन नहीं कराने चाहिये।

लंघन निषेध ।

लोग भूल न करें, इसलिये हमारे महर्षियोंने लंघनके अयोग्य रोगियोंका खुलासा कर दिया है।

"सुश्रुत"में लिखा है —

तद्विमारुत तृष्णा क्षुन्मुखशोष भ्रमान्विते ।
न कार्य गुर्विणी बालवृद्ध दुर्बल भीरुभि ।
न क्षयाध्व श्रमक्रोध काम शोषचिरज्वरी ॥

वातज्वरवाले, प्यासवाले, भूखे, मुँह सूखनेके रोगवाले, भ्रमरोगी, गर्भवती स्त्री, बालक बूढ़े, बलहीन यानी कमजोर, डरे हुए धातुक्षयवाले, क्षयरोगी, बहुत रास्ता चलनेसे थके हुए, मिहनत करके थके हुए, क्रोधी, कामपीडित, शोषरोगी और बहुत दिनोंके ज्वरवाले—इनको लंघन नहीं कराने चाहिये।

नोट—"चरक"में लिखा है, वातज, परिश्रमसे हुए, पुराने और क्षयसे हुए ज्वर और तपेदिकमें लंघन हितकारी नहीं है। इन ज्वरोंमें शमन औषधियों से इलाज करना चाहिये।

हारीत कहते हैं,—पैत्तज्वर, भूतज्वर, श्रमज्वर, क्रोधज्वर, भयज्वर और कामज्वरमें लंघन कराना मना है। बालक, बूढ़े, दुबले, क्षीण, अतिसार रोगी, घाव रोगी, गर्भवती और नाजुक,—इनको भी लंघन मना है।

वातज्वर रोगीका वायु आमरहित हो, तो लंघन नहीं कराने चाहियें, किन्तु यदि वायु आमसहित हो, तो अवश्य लंघन कराने चाहियें, क्योंकि वातज्वरमें आम * के पचानेके लिये लंघन कराये जाते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि जिस तरह कफमें आमके पक जानेपर भी लंघन कराये जाते हैं, उस तरह वातमें आमके पक जानेपर लंघन नहीं कराये जाते। इसकी वजह यह है कि कफ और पित्त तो पतले होनेके कारण बहुतसे लङ्घनोंको सह सकते हैं। किन्तु वायु तो आमके पच जाने पर क्षण भर भी लङ्घन नहीं सह सकता।

* आहारका सारस्य रस जब अग्निकी मन्दतासे नहीं पचता, तब उसेही "आम" कहते हैं, अर्थात कच्चे रसको आम कहते हैं। कोई अन्नके कच्चे रसको "आम" कहते हैं, कोई मल-समूहको "आम" कहते हैं, कोई दोषोंकी पहली दुष्टताको "आम" कहते हैं और कोई अपक्व—कच्चा, मलसे अलग रहनेवाला, बदबूदार, बहुत चिकना और सब शरीरको पीड़ित करनेवाला जो पदार्थ है, उसे "आम" कहते हैं। उस आमसे मिले हुए दोष और दूष्य तथा उन दोष और दूष्योंसे पैदा हुए रोग को "साम" कहते हैं।

भ्रम और मुखशोष में भी जो आमसे रहित होते हैं, तो लंघन नहीं कराते, किन्तु यदि आम सहित होते हैं, तो अवश्य लंघन कराते हैं। *

इसी तरह गर्भवती, बालक † और बूढ़े वगैरः को भी, अगर आमसे रहित होते हैं, तो लंघन नहीं कराते, किन्तु यदि आम-सहित होते हैं तो अवश्य लंघन कराते हैं।

सूचना—जिन लोगोंको लंघन कराना मना है, उनलोगोंकी चिकित्सा करते समय, विशेष करके, इस बातकी परीक्षा कर लिया करो, कि दोष साम—आम-सहित हैं या निराम—आम रहित हैं। साम-निराम वायु, पित्त और कफके लक्षण नीचे फुटनोटमें लिखे हैं।

---

* आम दोष से ही ज्वर होता है। उपवास करनेसे आम नष्ट होता है, इसीसे ज्वरमें उपवास कराते हैं। लेकिन वातज्वरमें उपवास सहन नहीं होता, इससे चिकित्सामें विरोध होता है। वातज्वरमें लंघन घटता नहीं और ज्वरकी आम अवस्थामें लंघन कराना जरूरी है। इस विरोधके कारण, वातज्वरमें 'वत्सनाभविष' काममें लाया जाता है, क्योंकि वह आम दोष नाशक और वात नाशक है। वत्सनाभविष देनेसे वातज्वर सुखसाध्य होता है।

† पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं कि, लंघनसे बालकको जितना लाभ होता है, उतना बड़ेका नहीं होता। दूधपीनेवाले बच्चेसे १५ साल तकके बच्चेको उपवास बहुत ही हितकर है। ऐसे बालकोंकी छोटी बीमारियाँ केवल उपवाससे ही निर्मूल हो जाती हैं। बालकोंको दवा देना अच्छा नहीं। बालकमें एक ऐसी शक्ति है, जिससे वह अपना रोग आप नाश कर सकता है। दूध पीनेवाले बच्चोंको जो रोग होते हैं, वे माता पिताके दोषसे होते हैं।

१ साम वायुके लक्षण—सामवायु मलको रोकती है, अग्निको मन्द करती है, तन्द्रा और आलस्य करती है, आँतों में आवाज़ करती है, क्रमसे वेदना, सूजन, तोड़नेको भी पीड़ा करती है और कुपित हुई साम वायु एक ही समय आम सहित सारे अङ्गोंमें विचरती है और सब अङ्गोंको पकड़कर पीड़ित करती है तथा घी तेल प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, वर्षाकाल, सूर्योदय और रातके समय बढ़ती है।

निराम वायुके लक्षण—निराम वायु स्वच्छ, रूखी, दुर्गन्धरहित और बहुत थोड़ी पीड़ा करनेवाली होती है। अपनेसे विपरीत गुणोंवाले पदार्थोंसे, विशेषकर तेल घी प्रभृति चिकने पदार्थोंसे, शान्त होती है।

लंघनसे रोगोत्पत्ति।

लंघनके रोगनाशक होनेपर भी, नियम विरुद्ध लंघन कराने या जिनको लंघन कराना मना है, उनको लंघन करानेसे अथवा उचितसे अधिक लंघन करानेसे उल्टा रोग पैदा होता है। "चरक"में लिखा है कि, लंघनसे देहकी अग्नि, बल, वर्ण, ओज, शुक्र, मांस और बल, इनका क्षय होता है। ज्वर, खाँसीका अनुबन्ध, पसलीका दर्द, अरुचि, सुननेकी शक्तिका कम होना, उन्माद, प्रलाप—वृथा बकना, हृदयमें दर्द, मलमूत्रकी रुकावट, जाँघ, उरु और तिक-स्थानमें शूल, पौरुष, हड्डी और शरीरके जोड़ोंमें फूटनी और उर्ध्व-वात—ये सब तथा औरभी वातरोग लंघन करनेसे होते हैं।

अति लंघनके दोष।

उचितसे अधिक लंघन करनेसे फूटनी, शरीर टूटना, खाँसी, मुँहका सूखना, भूखका न लगना, प्यास लगना, आँखों और कानों का कमजोर होना यानी कम दीखना और कम सुनाई देना, बारबार डकार आना, मनका व्याकुल होना, सदैव उर्ध्ववात, हृदयका मोह, शरीर और अग्निके बलका नाश,—ये सब दोष होते हैं।

हीन लंघनके लक्षण।

कफ वमनकी तरह निकलनेको तैयार हो, बारंबार उबाकियाँ आवें, रोगी बारम्बार कफ थूके, कफसे कण्ठ जकड़ा हो और तन्द्रा

सामपित्तके लक्षण—साम पित्त खट्टा, बदबूदार, हरा, भारी, कण्ठ और हृदयमें खटाईकी तरह दाह करनेवाला श्यामतायुक्त और स्थिर होता है।

निराम पित्तके लक्षण—निराम पित्त लाल, बहुत गर्म, चरपरा, दस्तावर, बदबूदार, रुचिकारक, जठराग्नि और बलको बढानेवाला होता है।

सामकफके लक्षण—साम कफ मैला, रेशेदार, गाढा, कण्ठको पकडनेवाला, बदबूदार तथा भूख और प्यासको नाश करनेवाला होता है।

निरामकफके लक्षण—निराम कफ बदबूदार, झागदार, पिण्डित, गाठदार, पाण्डुरंगका और मुखकी विरसता को नष्ट करनेवाला होता है।

हो, यानी आँखे मिची जाती हों—ये सब हीन लंघनके लक्षण हैं। इन लक्षणोंसे समझना चाहिये कि, अभी लङ्घन ठीक नहीं हुए, कसर है।

उत्तम लंघनकी पहचान।

अधोवायु और मलमूत्रका अच्छी तरहसे निकलना, शरीरमें हलकापन, हृदय, डकार, कण्ठ और मुँहका शुद्ध होना; तन्द्रा और ग्लानिका नाश, पसीने आना, रुचि होना, भूख प्यासका एक साथ लगना, अन्तःकरणमें किसी तरहकी तकलीफ न होना,—ये लक्षण उत्तम लङ्घनोंके हैं। ये लक्षण हों या दो एक लक्षण कम भी हों या सारे लक्षण एक साथ हों, तो समझ लो कि लङ्घन ठीक हुए। ये लक्षण उस समय होते हैं, जब अग्नि शरीरके खराब अंशों—रोगके कारणों—को पचा डालती है।

लंघन-कालमें कष्ट।

ज्योंही लङ्घन आरम्भ कराये जाते हैं, रोगीको बड़ा कष्ट मालूम होता है—नींद नहीं आती, रोगी तड़फड़ाया करता है। इन बातोंसे घबराना न चाहिये। हमारे शरीरकी रक्षक अग्नि तथा शरीरके अन्यान्य अङ्गोंको—दूषित दोषों, रोगके बीजों अथवा रोगसे बड़ा भारी युद्ध करना पड़ता है, इसलिये गड़बड़ी फैल जाती है और रोगीके कष्ट बढ़ने लगते हैं। इन कष्टोंको देखकर यह समझना चाहिये कि, रोग नाश हो रहा है। ज्यों ज्यों विकार नाश होते जाते हैं, रोगीकी दशा भी सुधरती जाती है। उस समय जो बदबूदार पसीना निकलता है, वह शरीरके विकार निकलनेका चिह्न है। होठों और जीभपर छालेसे भी हो जाते हैं। जिनका पित्त कुपित होता है, उन्हें बड़ी तकलीफें होती हैं, उबाकियाँ आती हैं, और कय भी हो जाती है।

ये सब सुलक्षण हैं, इनको विकारोंका बाहर निकलना समझना चाहिये। जितनाही विकार जियादा होता है, उतना ही कष्ट अधिक होता है। ऐसी हालत होनेपर, रोगीको तसल्ली देनी चाहिये।

लङ्घनसे शरीरमें एक प्रकारका खिंचावसा होता है और रक्तसंचार कम होता है, इससे पैर शीतल हो जाते हैं। उस समय पैरोंको खूब गरम कपड़ेसे ढके रखना चाहिये। बोतलमें गरम जल भरकर, उस पर कपड़ा लपेटकर, पैरोंपर फेरना चाहिये। इससे पैरोंमें गरमाई आकर फौरन नींद आ जाती है। नींद आनेके उपाय हम आगे औरभी लिखेंगे। जरूरत होनेसे, उनसे भी काम ले सकते हो। लङ्घन या उपवासकी हालतमें नींद न आवे, तो कोई हानि नहीं, क्योंकि उपवासकी दशामें शारीरिक शक्तियोंको कोई काम नहीं करना पड़ता।

लंघन करानेके नियम।



सभी आचार्य्योंने ज्वर आते ही, ज्वरके शुरूमें लङ्घन करानेकी सलाह दी है। इसमें कहीं मतभेद नहीं है। यह व्यवस्था है भी सर्वोत्तम। ज्वर आते ही अगर रोगीका खाना बन्द कर दिया जाय, तो जठराग्नि खराब मल या दोषोंको पचाने लगती है। उससे जब ज्वर हलका हो जाय, शरीरका भार कम हो जाय, तभी पाचन, संशमन औषधि और अन्न देना चाहिये। पर आजकल देखते हैं, कुछ वैद्य तो लङ्घनोंकी भरमार कर देते हैं और कुछ ज्वर आते ही ज्वरको शान्त करनेवाली औषधियाँ देते हैं। जो काम उन्हें जीर्णज्वर या क्षयज्वर प्रभृतिमें करना चाहिये, उसीको वे नवीन ज्वरमें करते हैं। जीर्णज्वर, क्षयज्वर, परिश्रमजन्यज्वर आदि ज्वरोंमें लंघन न कराकर पहले संशमन औषधि देनेकी रीति है किन्तु नये बुखारमें तो सभी प्राचीन वैद्य लंघन करानेकी व्यवस्था कर गये हैं। इस बेकायदे

कामसे अव्वल तो बुखार बिगड जाता है, यदि पीछा भी छोड देता है, तो आगे चलकर फिर फिर कर आता है और मनुष्यको निकम्मा कर देता है। पाश्चात्य विद्वानोंका कहना है कि, दवासे इलाज करानेवालोके रोग दवा छोडते ही फिर आ जाते हैं, किन्तु उपवाससे जो रोग आराम हो जाते हैं, फिर कभी नहीं आते। पहलेके वैद्य उपवास प्रभृति कराकर बाकायदे चिकित्सा किया करते थे और आजकल की तरह रोगी भी चट रोटी पट दाल नहीं चाहते थे। पहलेके रोगी वैद्यराज पर विश्वास रखते थे और धैर्य्यसे काम लेते थे। आजकल तो यह हाल है कि, यदि आज किसीने दवा दी और आज ही ज्वर कम न पडा, तो शामको ही डाकृर साहब बुला लिये जाते हैं। वे आते ही दवा दे ही देते हैं। यदि ज्वर उतर गया तब तो खैर, नही तो दूसरे दिन फिर और डाकृर बुलाये जाते हैं। इस तरह सप्ताहके सप्ताह घुला देते हैं, पर जिससे उनका सदाको भला हो, वह काम पसन्द नहीं करते। रोगियोंका यह हाल देखकर, विद्वान् वैद्य भी, अपनी रोजी मारे जानेके भयसे, बेकायदे इलाज करने लग गये हैं। अनेक वैद्य तो नामको आयुर्वेदीय चिकित्सा करते हैं, अङ्गरेजी दवाइयाँ ला ला कर रोगियोंको देते हैं। एकही रोगमें देशी विदेशीकी खिचडी बना देते हैं। सकर क्रियाका भी विचार नही करते। इसीसे आजकल रोगो और डाकृरोंकी भरमार हो रही है। लोग सदा ही किसी न किसी रोगमें गिरफ्तार रहते हैं।

"चरक"के विमान स्थानमें लिखा है,—"आमदोष होनेसे, पहले रोगीको लंघन कराना चाहिये, जिससे बीमारीके पहलेका किया हुआ आहार पच जाय। इसके बाद जब अन्न देनेका समय हो, उस वक्त भी अगर वैद्य देखे कि, आमाशय दोषोंसे लिप्त है, कोठा आर्द्र और भारी है तथा रोगीकी इच्छा खानेको नहीं है, अन्न पर अरुचि है, तो समझ ले कि अभी दोष बाकी हैं। उस हालतमें शेष

दोषोंके पचानेके लिये और अग्नि दीप्त करनेके लिये कोई अग्नि-दीपन करनेवाली दवा दे, पर अजीर्ण रहनेपर, पहलेके दोष न पकनेपर, पाचन औषधि न दे। क्योंकि आम दोषसे ढकी हुई जठराग्नि औषधि और आहारसे पैदा हुए आम—इन दोनोंको एक ही समयमें पचा नहीं सकती। अगर कोई ऐसा करता है, बिना पहलेके आहारके पचे या आमदोषके पचे पाचन प्रभृति देता है, तो आम, आहार और औषधि तीनोंका गोलासा बँध जाता है। उससे भयङ्कर मन्दाग्नि रोग हो जाता है और कमजोर रोगी मर जाता है।" पाठको! अब तो आप लङ्घन कराने और न करानेके लाभ हानिको अच्छी तरह समझ गये होंगे। हमेशा याद रक्खो। जठराग्नि जितना पचा सके, उससे उतना ही पचवाओ, उसपर अधिक भार मत डालो, नहीं तो वह बिलकुल क्षीण या मन्दी हो जायगी और उसके मन्दी होनेसे आपका सारा सुख और जीवन नाश हो जायगा। जब ज्वर आजाय या और कोई ऐसाही रोग हो जाय, तब जठराग्नि को भगवान्‌के विधान-अनुसार, पहले रोगके कारण आम—आहारके कच्चे रस अथवा रोगके बीजको पचाने दो। जब वह उसे पचा ले, तब आप उसे और काम सौंपें।

अनेक बार देखते हैं, बुद्धिमान् लोग ज्वर आनेके आसार देखते ही उपवास करने लगते हैं। मामूली ज्वर या थोड़े से दोष, उपवाससेही नाश हो जाते हैं। उन्हें दवा खानेकी जरूरत ही नहीं होती। बहुत से रोगोंमें, खासकर बुखारमें, उपवास करानेसे चिकित्सामें सहजमेंही सफलता मिल जाती है। "चरक"में लिखा है, थोड़े दोषवाले को लंघन कराना ही उचित है। हवा और धूपसे जिस तरह थोड़ासा पानी सूख जाता है, उसी तरह लंघन करनेसे, जठराग्नि और वायुकी वृद्धि होकर, थोड़ेसे दोष भी सूख जाते हैं। जिस तरह सूरजकी धूप, वायु और धूल—इन तीनोंसे मध्यम (न बहुत न कम) जल सूख जाता है, उसी तरह लंघन द्वारा बढ़ी हुई अग्नि और

वायु तथा पाचनसे मध्यम (न कम न- जियादा) दोष सूख जाते हैं। मतलब यह है कि, नीचे दर्जेके और बीचके दर्जेके दोष तो केवल लंघन—उपवाससे ही, बिना किसी दवाके, नाश हो जाते हैं। दोषोंसे ही ज्वर होता है, जब लंघनसे दोष नाश होजाते हैं, तब ज्वर कहाँ से रहेगा ? इसलिये ऐसा समझनेमें कोई दोष नही, कि लंघनसे हलका और लंघन तथा पाचनसे बीचके दर्जेका ज्वर ही नाश हो जाता है। अगर ज्वरके आरम्भसे ही नियमानुसार लंघन और पाचन की व्यवस्था की जाय, तो दोष बढ़ें ही क्यों ? इसीलिये शास्त्रोंमें लिखा है,— 'दोषेऽल्पे लंघनं पथ्य, मध्ये लंघनपाचनम् ।" दोष अल्प हो तो लंघन कराना चाहिये, मध्यम हों तो लंघन कराना और पाचन देना चाहिये। थोड़े दोषोंमें अकेला लंघन ही काम कर लेगा, यानी थोड़े दोषोंको अकेला उपवास ही मार लेगा। अगर दोष जियादा हों न कम हों, बीचके हों, तो वहाँ उपवास और उसका भाई पाचन—दोनों फतह हासिल कर लेंगे, क्योंकि पाचन भी तो लंघन ही है। इस तरह दोषोंके अत्यन्त बढ़नेकी नौबत ही न आवेगी। अगर पहले ही यानी ज्वर आते ही लंघन वगैरःकी ठीक व्यवस्था न होनेसे दोष अत्यन्त बढ़ गये हों, तो उस दशामें शोधन यानी वमन विरेचन से काम लेना चाहिये, क्योंकि एक साथ ही तो दोष बढ़ नहीं जाते, कुछ समय अवश्य लगता है। उस अवस्थामे दोषोंका पक जाना भी सम्भव है। पके हुए दोष कोठेमें ठहर कर भयानक व्याधियाँ करते हैं, इसलिये यदि दोष पककर कोठेमें ठहर गये हों, बुखार बहुत दिनोंका न हो, तोभी, उन दोषोंको वमन विरेचनादिसे निकाल देना ही बुद्धिमानी है। अगर वे न निकाले जायँगे, तो विषम ज्वर प्रभृति रोग पैदा करेंगे। अत्यन्त बढ़े हुए दोषोंको लंघन काबूमें नहीं कर सकते; दूसरे लंघनोंमें देर लगेगी; देर होनेसे अनर्थ होनेका भय है, इसीसे वमन विरेचन आदि क्रियाकी आज्ञा दी गई है।

इस मौके पर शोधन—वमन, विरेचन, निरूहण वस्ती तथा शिरो विरेचनमें भी बुद्धिसे काम लेनेकी जरूरत है। अगर रोगी ताकतवर हो और ज्वर कफसे हुआ हो, तो वमन कराकर दोष निकालने चाहियें। अगर पित्तप्रधान ज्वर हो, कोठा कड़ा हो, तो जुलाव देना चाहिये। अगर वेदना सहित वातज्वर हो यानी वातज्वर उदावर्तयुक्त हो, तो निरूहण वस्ती—गुदाकी पिचकारी द्वारा मल निकाल देना चाहिये। अगर सिरमें कफ भरा हो, कफके मारे सिरमे दर्द और भारीपन हो, तो शिरोविरेचन—सिरका जुलाव—देना चाहिये, अर्थात ऐसी नस्य या सूंघनी देनी चाहिये, जिससे सिर का कफ निकलकर सिर हलका हो जाय। इस संशोधन-कर्ममें बुद्धिमानीकी बात यही है कि, रोगीका बलाबल देखना चाहिये। बलाबलके अनुसार ही हलका या बीचका जुलाव या वमन करानेवाली दवा देनी चाहिये। कमजोर रोगीको वमन विरेचन मार देते हैं। कफसे हुए ज्वरमें जुलाव नहीं देना चाहिये और पित्तज्वरमें वमन नहीं करानी चाहिये। दोष और बलके अनुसार काम करना चाहिये।

लंघनादिका क्रम।

—※※※—

ज्वरादौ लंघनं प्रोक्तं ज्वरमध्येतु पाचनम्।
ज्वरान्ते भेषजं दद्याज्ज्वरमुक्ते विरेचनम्॥ आत्रेय।
तरुण तु ज्वरे पूर्व लंघनेन क्षयं नयेत्।
आमदोषं लिंगात् वा लंघयेच्च यथाविधि॥ चक्रदत्त।

ज्वरके आदिमें लंघन कराना चाहिये, ज्वरके मध्यमें पाचन देना चाहिये, ज्वरके अन्तमें ओषधि देनी चाहिये और ज्वरमुक्त होने पर जुलाव देना चाहिये। चक्रदत्त महोदय कहते हैं,—'नवीन ज्वरको पहले लंघनोंसे क्षय करना चाहिये। यदि आम—कच्चे दोषके लक्षण नजर आवें अथवा साफ नजर न आवें, तो यथाविधि काम करना चाहिये।

अगर दोष अल्प हो तो लंघन कराना चाहिये, दोष मध्यम हो तो लंघन कराना चाहिये और पाचन भी देना चाहिये, अगर दोष अत्यन्त बढ़े हो, तो वमन विरेचन आदिसे शोधन करना चाहिये, क्योंकि वमन विरेचन आदिसे दोष जड़से नष्ट हो जाते हैं।

वायु सात दिन लंघन करनेसे पचता है, पित्त दश दिन लंघन करनेसे और कफ बारह दिन लंघन करनेसे पचता है।

लंघन करने लायक ज्वररोगीको, दोषानुसार, तीन रात, एक रात और एक दिन-रात लंघन कराना चाहिये। वायुरहित स्थानमें रखकर, पसीने निकालकर या बफारा देकर, लंघन कराकर और गरम जल पिलाकर, आमज्वर * को क्षीण करके, पीछे औषधि सेवन करानी चाहिये।

लंघन करनेसे जिसके दोष नष्ट हो जायँ, उसके बाकी रहे हुए दोषोंको पचानेके लिये और अग्नि दीपन करनेके लिये "यवागू" पिलानी चाहिये अथवा शालि या साँठी चावल और मूँगका यूष देना चाहिये।

नोट—जिनको यवागू अहित है, उनको यवागू न देनी चाहिये। इसी तरह यूष वगैरः भी दोषानुसार विचारकर देने उचित हैं।

* हृदयमें उचेड सी हो, तन्द्रा हो, मुँहसे लार गिरे, अरुचि हो, दोषोंकी स्थिरता, आलस्य, कब्ज ये सब हो, पेशाब जियादा आता हो, पेट भारी हो यानी अफारा हो, पसीना न आता हो, पाखाना ठीक पककर न आता हो, बेचैनी हो, घमकनींद हो, शरीर जकड़ा हुआ और भारी हो, थोड़ी ग्लानि हो, ज्वरका वेग निश्चल और बलवान हो—इन लक्षणोंसे बुद्धिमान्को जान लेना चाहिये कि "आमज्वर" है। आमज्वरकी अवस्थामें दवा और अन्न न देने चाहियें। आम ज्वरमें लंघन करानाही हित है।

विरामज्वर—भूख थोड़ी लगे, शरीरमें हलकापन हो, श्रमसे शिथिलता हो, श्रम और ज्वरका वेग—इनसे रोगी पीड़ित हो, शरीरके भीतर दाह हो, लाल पेशाब होता हो—अगर ये लक्षण हों तो समझो कि ज्वर उतरनेवाला है। ये विराम ज्वरके लक्षण हैं।

अगर रोगीने लंघन मध्यम किये हों ; तो पञ्चकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ) की यवागू बनाकर पिलानी चाहिये। लंघनकी दशामें यवागू या मूँग वगैर.का यूष देना अच्छा है।

जिस रोगीने अत्यन्त लंघन किये हों,—उसको दाख अनार, खजूर, चिरौंजी और फालसेसे तृप्त करना चाहिये। ये फल अत्यन्त हितकारक हैं। जो रोगी तर्पण कराने योग्य हों उनको, ज्वरकी शान्तिके लिए, तर्पण अवश्य कराना चाहिये।

जब तक दोष निश्चल रहें—जबतक रोगी दोषोंसे व्याप्त रहे तब तक लंघन कराने चाहिएँ, पीछे औषधि और अन्नादिका संसर्ग कराना चाहिए ; अर्थात् लघु पथ्य देना चाहिये।

लंघन इस तरह कराने चाहिएँ, जिससे बलका नाश न हो, क्योंकि आरोग्यता बलके अधीन है और आरोग्यताके लिये ही चिकित्सा की जाती है। अंधाधुन्ध लंघन कराना अच्छा नहीं, यानी जो लंघन योग्य न हो, उसे लंघन न कराने चाहिएँ।

"सुश्रुत"में लिखा है :—

> कृशांचैवाल्पदोषंच शमनीयैरुपाचरेत्।
> उपवासे बलस्थं तु ज्वरे संतर्पणोत्थिते॥

अगर रोगी कमजोर या दुबला हो और उसके दोष भी कम हों, तो उसे शमनीय यत्नोंसे ही आराम करना चाहिए—यानी लंघन न कराकर रोगनाशक दवा देनी चाहिए। अगर रोगी बलवान हो तथा अति तर्पणसे ज्वर हुआ हो, तो उसका ज्वर लंघनोंसे ही शान्त करना चाहिये—यहाँ तक लिखा है। फिर भी, आमज्वर हो तो २।३ लँघन कराते हुए, यवागू देते रहने या मूँगका यूष देते रहनेसे भय नहीं है। और भी लिखा है,—अगर रोगीकी अग्नि मन्द हो, साथ ही प्यास हो, तो पतली यवागू देनी चाहिए। अगर रोगीको प्यास, दाह, वमन और गरमी बहुत हो और रोगी शराब पीता

हो, तो लाजातर्पण देना चाहिये। इसके पच जाने पर यूष-रस भात देना चाहिए।

नवीनज्वरमें उपवास, स्वेदन क्रिया—वफारा प्रभृति देकर निकालना, समय, यवागू और कड़वे रस—ये सब बिना पके दोषोंको निकालते हैं। इससे साफ जाहिर है कि, ज्वरमें करते हुए भी यवागू प्रभृति पथ्य देना उचित है।

जो ज्वर आमसंसृष्ट, कफजन्य और कफपित्तज हों, याने बुखार, कफ या कफपित्तसे पैदा हुए हों और आमसंसृष्ट हों, में लंघन कराने चाहियें।

ज्वरमें लंघन कराते समय भी रोगीका जल बन्द न चाहिये, क्योंकि जल बिना मनुष्य मर जाता है। हाँ, ऐसे मौके हैं, जहाँ जल कम पीना चाहिए; पर एकदम मनाही हालतमें भी नहीं है।

उपवास जितने जियादा दिनों का हो, उस पर, भोजनके भोजन उसी परिमाणसे हलका और कम देना चाहिए। उपव दुर्बल रोगीको भारी भोजन मार डालता है। हमारे यहाँ यवागू अथवा यूष वगैर: की आज्ञा है, वह उत्तम है। यवागू यूष बहुत हलके और ज्वरनाशक हैं। उपवास या लंघन दो शरीरसे निकालनेकी सर्व्वोत्तम क्रिया है, इसलिये उपवासकाल को बिगाड़ना न चाहिए। ज्वर और लंघनके कष्टोंसे घबरा चाहिये। ज्योंही दोष पच जायँ, शरीर हलका हो जाय, भूख लगे—अच्छा फल हुआ समझना चाहिए। दोष पच चुकनेपर, प उपवास न कराने चाहिएँ। इस बातको हमेशा याद रखना चा कि उपवासका आरम्भ भोजन त्यागनेसे और अन्त वास्तविक भ होता है। जबतक खूब भूख न लगे, खानेको न देना चा क्योंकि दोषोंका नाश हुए बिना भूख नहीं लगती। कहा है —

नहि दोषक्षये कश्चित् सहेत लघनादिकम्।

दोषके क्षय होने पर कोई लंघन आदिको नहीं सह सकता। इससे स्पष्ट है कि, भूखका लगना दोष-क्षय होनेकी निशानी है। जब तक भूख न लगे, हवा न खुले, दोषोंका जोर हो, तभी तक लंघन कराना उचित है। लंघनकी हालतमें भी, बलरक्षाके लिये यवागू प्रभृति देनेकी हमारे आयुर्वेदमें आज्ञा है।

ज्वरमें कमसे-कम पहले तीन दिन तो उपवास करना ही जरूरी है। उन तीन दिनोंमें किसी तरहके काढ़ेका जल या दवा हरगिज न देनी चाहिए। कहा है:—

ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लंघनं च दिनत्रयं।
न देयं क्वथितं वारि न च भैषज्यं दापयेत्॥

ज्वरके आरम्भमें ही कोई दवा देना ज्वरको बिगाड़ना है। रोगीके भूखा भूखा चिल्लाने पर ख्याल करना चाहिये, कि दोष पक तो नहीं गये। अनेक बार दोष अपने समयसे पहले भी पक जाते हैं। पित्तज्वरका दोष शीघ्र ही पक जाता है। कभी कभी वातकफज्वर भी समयसे पहले पक जाता है। हारीतने तो पित्तज्वरमें लंघन कराना भी मना किया है। मतलब यह है, कि भूख लगने पर रोगीको हलका भोजन देना चाहिये, क्योंकि भूख लगनेपर भोजन न मिलनेसे जठराग्नि-रोगीके शरीरकी धातुओंको जलावेगी, इससे रोगी कमजोर होकर मर जा सकता है।

इसीसे "धन्वन्तरिजी" कहते हैं—

ये गुणा लंघने प्रोक्तास्ते गुणा लघु भोजने।

जो गुण लंघनमें हैं, वेही गुण हलके भोजनमें हैं।

इसीसे "बङ्गसेन"में लिखा है:—

ज्वरितं ज्वरमुक्तं वा भोजयेल्लघु भोजनम्।
श्लेष्मक्षये प्रवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा।
वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम्॥

ज्वरितो हितमश्नीयाद्यप्यस्याऽरुचिर्भवेत्।
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा॥

जिसे ज्वर आता हो अथवा जिसका ज्वर छूट गया हो, उसे अवश्य हलका भोजन देना चाहिये, क्योंकि कफके क्षय होनेसे गरमी बढती है और जठराग्नि तेज हो जाती है। उस अवस्थामें दोष वेगको प्राप्त होकर ज्वरके वेगको बढाते हैं। इसवास्ते ज्वररोगीको यदि अरुचि भी हो, खानेकी इच्छा न हो, तोभी हितकारी पदार्थ खिलाने चाहियें, क्योंकि अन्नके समय, भोजन न करनेसे ज्वररोगी क्षीण होजाता है या मर जाता है और क्षीण रोगी असाध्य हो जाता है, इसलिए बलकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये।

और भी कहा है :—

सर्वज्वरेषु सप्ताहं मात्रावद् भोजनंहितम्।
अन्नकालेह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽथवा॥

सभी ज्वरोंमें सात दिन तक बहुत हल्का भोजन देना चाहिये, क्योंकि भूखके समय भोजन न मिलनेसे रोगी कमजोर हो जाता है या मर जाता है। इसलिये हलका पथ्य देनेमें हर्ज नहीं, क्योंकि हलका भोजन और लंघन दोनो बराबर हैं।

सबका मतलब यही है कि ज्वरके आरम्भमें लंघन अवश्य कराने चाहिये। कम और जियादा कराना दोषोंके पकनेपर मुनहसिर है। जरूरत होनेसे, समय देखकर, हलका भोजन अवश्य देना चाहिये, क्योंकि रोगीके बलकी रक्षा परमावश्यक है।

"हारीत-संहिता में तो साफ ही कहा है —

लंघिते चैव दोषे च यवागूपानमाचरेत।
शालिषष्ठिमुद्गस्च यूषं शस्तं वदन्ति हि॥

लंघन करता हुआ रोगी, दोषकी हालतमें भी, यवागू पीता रहे। शालि चाँवल, साँठी चाँवल और मूँगका यूष लंघनमें श्रेष्ठ है।

ज्वरमें जल ।

पहले लिख आये हैं कि, ज्वरके समय लंघनोंमें भी जल देना मना नहीं है, क्योंकि प्यासके मारे बेहोशी होती है और बेहोशीसे प्राणनाश हो जाते हैं। प्यास बडी भयङ्कर है, प्यासेका प्राणनाश करनेवाली है, इसलिये प्यासेको प्राणधारक जल अवश्य पिलाना चाहिये। ज्वररोगीको जल अवश्य पिलाना चाहिये, पर थोड़ा थोड़ा पिलाना चाहिये और जल्दी जल्दी बहुत-बहुतसा न पिलाना चाहिये। कहा है —

जीविना जीवनं जीवो जगत्सर्वं तु तन्मयम् ।
अतोऽत्यन्त निषेधेन न कचिद्वारि वारयेत् ॥

जल जीवोंका जीवन है, सब जगत् जलमय है, इसलिये किसी अवस्थामें भी जलकी अत्यन्त मनाही नहीं है। हाँ, अनेक अवस्थाओंमे जल थोडा-थोडा पीना चाहिये। अब यह सवाल उठता है कि, थोड़ा थोड़ा जल किन किन हालतोंमें पीना चाहिये ?

रोग जिनमें थोड़ा जल पीना चाहिये ।

"सुश्रुत"में कहा है, —

ज्वरे नेत्रामये कुष्ठे मन्देऽग्नावुदरे तथा ।
अरोचके प्रतिश्याये प्रसेके श्वयथौ क्षये ।
व्रणे च मधुमेहे च पानीयं मन्दमाचरेत् ॥

ज्वर, नेत्ररोग, कोढ, मन्दाग्नि, उदर रोग, अरुचि, प्रतिश्याय — जुकाम, प्रसेक (मुँहमें जल भर-भर आना) सूजन, क्षय, व्रण (घाव) और मधुमेह — इन रोगोंमें थोडा-थोडा जल पीना चाहिये।

हारीत कहते हैं,—"सूतिका नारी और रक्तस्राववालेको भी पा कम पीना चाहिये।" आप कहते हैं, —"परिश्रमसे थककर बहु पानी पीनेसे गुल्म और शूल रोग होता है। भोजन पचने पर पि हुआ पानी जठराग्नि नाश करता है। अजीर्णमें पानी पीना दवा है भोजनके बीचका और पीछेसे (कुछ देर बाद खूब प्यास लगने पर पिया हुआ पानी गुण करता है। रास्ता चलकर थका हुआ, भूख शोकग्रस्त, गुस्सेसे भरा हुआ, रोगसे पीड़ित और विषम आसन बैठा हुआ मनुष्य जल पीता है, तो रोग होता है। तबियत खु होने पर भी थोड़ा जल पीना चाहिये। भोजनके आदिमें पिया ज मन्दाग्नि करता है, भोजनके बीचमे पिया अमृत है और भोजन अन्तमें पिया जल कष्टसे पचाता है तथा मुटापा करता है और आम शयसे ऊपर कफ पैदा करता है।

ज्वर प्रभृतिमें अधिक जल पीनेसे हानि।



अतियोगेन सलिलं तृष्यतोऽपि प्रयोजितम्।
प्रयाति श्लेष्मपित्तत्वं ज्वरितस्य विशेषतः॥

प्यासा आदमी अगर जरूरतसे जियादा जल पीता है, तो व जल कफपित्त हो जाता है। अगर ज्वररोगी अधिक जल पीता है तो वह, विशेषकर, कफपित्त हो जाता है।

नवीन ज्वरमें शीतल जल निषेध।

नये ज्वरमें शीतल जलको मनाही इसी कारणसे है कि, नये ज्वरमें शीतल जल पीनेसे ज्वर बढ जाता है, इसलिये नवीन ज्वरमें कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये—औटाकर और शीतल करके पीना चाहिये। कच्चे शीतल जलसे ज्वर बढ़ता है, किन्तु गरम करके शीतल किये हुए जलसे ज्वर घटता है।

"चरक"में लिखा है,—ज्वर आमाशयसे पैदा होता है। पाचन, वमन, और लंघनादि कर्म आमाशयसे होनेवाले प्रायः सभी रोगों को शान्त करते हैं। ज्वर आमदोषसे होता है, इसीलिये आमके पचानेको गरम जल दिया जाता है। ज्वररोगी अगर गरम जल पीता है, तो वह गरम जल वायुको अनुलोम करता है, अग्निको दीपन करता है जल्दी पचता है, कफको सुखाता है और बड़ी खूबी यह है कि, थोड़ासा जल पीनेसे ही प्यास शान्त हो जाती है। परन्तु गरम जल, उत्तम होनेपर भी, कुछ रोगोंमें बड़ा नुकसान करता है, इसलिए जिन रोगोमे शीतल जल न पीना चाहिये, गरम पीना चाहिये, उनमे गरम जल ही पीना चाहिये। जिन रोगोंमें शीतल जलसे लाभ हो और गरमसे हानि हो, उनमे शीतल जल ही पीना चाहिये।

रोग जिनमें शीतल जल न पीना चाहिये।



(गरम जल पीने योग्य रोगी)

नवज्वरे प्रतिश्याये पार्श्वशूले गलग्रहे।
सद्य शुद्धौ तथाध्माने व्याधौ वातकफोद्भवे॥
अरुचि ग्रहणी गुल्म श्वास कासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपानेच शीतं वारि विवर्जयेत॥

नया बुखार, जुकाम पसलियोंका दर्द, गलेका पड़ जाना, तत्काल वमन विरेचन ले चुकते ही, अफारा, वात और कफके रोग, अरुचि संग्रहणी, वायुगोला, श्वास, खाँसी, विद्रधि और हिचकी,—इन रोगोंमें तथा स्नेहपान करनेवालेको कच्चा शीतल जल न पीना चाहिये। इन रोगोंमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये। हारीत अजीर्णमें भी शीतल जलको बुरा कहते हैं।

नोट—"चरक"में लिखा है,—"अत्यन्त पित्तकोपके दाह, भ्रम, प्रलाप, और अतिसारयुक्त ज्वरोंमें गरम जल न देना चाहिये। इनमें गरम

जल देनेसे दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसार-अत्यन्त बढ़ जाते हैं। इसके विपरीत शीतल कियासे शान्त होते हैं।" याद रखना चाहिये, प्रलाप दो तरहका होता है, —(१) वातकफका २) पित्तका। वातकफ के प्रलापमें रोगीको होश नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है; किन्तु पित्तके प्रलापमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। पित्तके प्रलापमे ही गरम जल मना है।

रोग जिनमें शीतल जल पीना चाहिये।



मूर्च्छापित्तोष्णदाहेषु विषेरक्ते मदात्यये।
भ्रमश्रमपरीतेषु तमकेऽवयथौ तथा॥
धूमोद्गारे विदग्धेऽन्ने शोषे च मुखकण्ठयो।
उर्द्ध्वगे रक्तपित्ते च शीतलाम्बु प्रशस्यते॥

"सुश्रुत"में लिखा है,—मूर्च्छा, पित्त, गरमी, दाह, विष,खूनके रोग मदात्यय रोग, भ्रम, श्रम, तमकश्वास, सूजन, धुएँकी डकार, भोजनकी विदग्ध अवस्था, मुखशोष, कण्ठशोष और उर्द्ध्वगत रक्तपित्त,—इनमें शीतल जल (बिना औटाया कचा) ही हितकारक है। हारीत रक्तप्रमेहमे भी गरम जलको बुरा कहते हैं।-चरक अत्यन्त पित्तकोप युक्त दाह, भ्रम, प्रलाप (पित्तका प्रलाप) और अतिसारयुक्त ज्वरमें गरम पानीको हानिकर कहते हैं।

नोट—ज्वर सहित दाहादिक रोगोंमें गरम करके शीतल किया हुआ जल पीना चाहिये, किन्तु ज्वर रहित—अकेले दाहादिक रोगोंमें बिना औटाया कच्चा जल ही पीना हितकर है।

रोग जिनमें औटाकर शीतल किया जल पीना चाहिये



दाहातिसारपित्तास्रमूर्च्छामद्य विषार्तिषु।
मूत्रकृच्छ्रे पाण्डुरोगे तृष्णाच्छर्दि श्रमेषुच॥
मद्यपान समुद्भूते रोगे पित्तोत्थिते तथा।
सन्निपातसमुत्थेषु शृतशीत प्रशस्यते॥

दाह, अतिसार, पित्त, रूधिर-विकार, मूर्च्छा, मद्यपानसे हुआ रोग, विषसे पैदा हुआ रोग, मूत्रकृच्छ, पीलिया, प्यासरोग, वमन, श्रम, शराब पीनेसे हुए रोग, पित्तसे हुए रोग, सन्निपातसे हुए रोग—इन रोगोंमें औटाया हुआ जल शीतल करके देना चाहिये।

जल औटानेकी विधि।



जो जल औटाते-औटाते धीरे धीरे झागरहित और निर्मल होजाय, उस को औटा हुआ जल कहते है। औटाते समय जलपर ढकना न देना चाहिये। औटाये हुए जलको फिर न औटाना चाहिये। औटाया हुआ जल फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है।

नोट—इसी तरह काढ़ा भी शीतल होनेपर, फिर औटानेसे विषके समान हो जाता है। कहा है —

शृतशीत पुनस्तप्त तोय विषसमं भवेत्।
निर्य्यूहोऽपि तथा शीत पुनस्तप्तो विषोपम ॥

औटाये हुए जलके गुण और पीनेकी विधि।



'सुश्रुत"में लिखा है,—"वातकफज्वरवाले मनुष्यको, प्यासके समय, औटाया हुआ जल अत्यन्त हितकारी है। ऐसा जल अग्निको दीपन करनेवाला, कफको छेदन करनेवाला, वातपित्तको अनुकूल करनेवाला, दोष और शरीरके स्रोतोंको नर्म करनेवाला है, शीतल जलमें इस के विपरीत गुण होते हैं।"

औटाकर शीतल किये जलके भेद।

जो जल औटानेके बाद ढक दिया जाय और अपने-आप शीतल होजाय, वह त्रिदोषनाशक, रूखा नहीं, सरदी न करनेवाला, हलका कृमि, प्यास और ज्वरनाशक है।

जो जल औटाकर धारा द्वारा शीतल किया जाता है, वह विष्टम्भ कारक होता है।

जो जल हवा करके शीतल किया जाता है अथवा जिसे खूब बाहरी हवा लग जाती है, वह बडी मुश्किलसे पचता है।

औटाया हुआ बासी जल ख़राब।



रातका औटाया हुआ जल दिनमें भारी हो जाता है और दिनका औटाया हुआ रातमें भारी हो जाता है इसलिये रोगीको ऐसा जल न देना चाहिये। ऐसा जल त्रिदोषकारक, भारी, खट्टा पाक करने वाला और विष्टम्भकारी होता है। बासी जल सभी रोगोंमें अपथ्य या खराब है।

रातमें गरम जल।

रातमें सेरका आध पाव, सेरका एक पाव,सेरका आध सेर अथवा यौंही औटाये हुए जलको "उष्णोदक" कहते हैं। रातमें गरम जल पीनेसे कफ, वात आम और मेद नष्ट होते हैं, अग्निदीपन होती है, वस्तिका शोधन होता है तथा श्वास, खाँसी और ज्वर नष्ट होते हैं।

जल पचनेकी अवधि।



कच्चा जल एक पहरमें पचता है, औटाकर शीतल किया हुआ जल चार घडी या डेढ घण्टे में पचता है और औटाया हुआ किसी कदर गरम जल दो घडी या पौन घण्टे में पचता है।

ऋतुभेदसे जल लेना।

हेमन्त और शिशिरमें तालाबका जल हितकारी है। वसन्त और गरमीमे कुएँ बावडी और झरनेका जल लेना चाहिये, वसन्त और गरमीमें नदीका जल न लेना चाहिये। वर्षामें जमीनके भीत

रसे निकला, कुएँका और मेहका जल लेना चाहिये। शरद् ऋतुमें नदीका जल या अंशूदक जल लेना चाहिए। जिस जल पर दिनमें सूरजकी और रातमें चन्द्रमाकी किरणें पड़ती हों, वही "अंशूदक" है। यह जल त्रिदोषनाशक, ताकतवर, निर्दोष, शीतल, रसायन, हलका और अमृतके समान है।

उष्णोदकके गुण।

जो जल औटाते-औटाते धीरे-धीरे झागरहित निर्मल—साफ हो जाय और आधा रहजाय, उसको "उष्णोदक" कहते हैं। यह उष्ण जल ज्वर, खाँसी, कफ, श्वास, वात पित्त, आम और मेदको नष्ट करता है। "उष्णोदक" पाचक और सदा पथ्य है।

आरोग्योदकके गुण।

जो जल औटाते औटाते सेरका पाव रह जाय, उसे "आरोग्योदक" कहते हैं। यह सदैव पथ्य है। यह कफ, श्वास और खाँसीको नाश करता है तथा मलरोधक, अग्निदीपक, पाचक, हलका, अफारा, पाण्डु, शूल, ववासीर, वायुगोला, सूजन और उदररोग नाशक है।

ऋतुभेदसे जल।

गरमी और शरद् ऋतुमें सेरका पाव जल पीना चाहिये। कोई आचार्य्य गरमीमें सेरका आध सेर और शरद्में सेरका तीन पाव जल पीनेकी सलाह देते हैं।

हेमन्त, शिशिर वर्षा और वसन्तमें सेरका आध सेर जल पीना चाहिये। कोई कहते हैं, वर्षामें सेरका आधा पात्र रखना चाहिये। कोई कहते हैं,—वर्षामें सेरका आठवाँ भाग रहा जल पीना चाहिये।

,,	शरदमें ,,	छठा	,,	,,
,	शिशिरमें,,	पाँचवाँ	,	,,
,	वसन्तमें ,,	तीसरा	,,	
,,	गरमीमें ,,	आधा	,,	

इस तरह गरम जलके सम्बन्धमें बहुत मतभेद हैं। दोषोंकी उग्रता और हीनताके अनुसार जलकी कल्पना करनी चाहिये।

गरम जल सेरका तीन पाव—पित्तनाशक है।
" " आध सेर—वातनाशक है।
" " एक पाव—कफनाशक, मलरोधक और दीपक है।

औषधियोंका पानी।

कुछ रोगोंमे औषधियोंके साथ पकाया हुआ अथवा पानीको गरम करके उसमें दवा डाल कर बनाया हुआ पानी बहुत हित होता है। इसलिये वैसी अवस्थामें वैसा ही पानी देना चाहिए।

मद्यविकार, पित्तदोष और विष पीडित मनुष्योंके लिए कडवे द्रव्यों—दवाओं के द्वारा जलको औटाकर और शीतल करके पिलाना चाहिए। ऐसे रोगियोको ऐसा ही पानी हितकर है।

तृषादिनाशक जल।

"सुश्रुत"में लिखा है,—"नागरमोथा, पित्तपापडा, सुगन्धवाला, धनिया खस और लालचन्दन,- इन छै दवाओंको एक जगह कच्चीही कूटकर, जलमें डालकर, ऋतुके अनुसार, पकाओ। पीछे शीतल करके, उपरोक्त मद्यविकार, पित्तविकार और विष विकार रोगियोंको दो। यह जल प्यास, दाह और ज्वरको शमन करता है। "चरक"में भी लिखा है,—"सब तरहके ज्वरोंमें, विशेषकर पित्त से और मद्यपानसे हुए ज्वरमें, प्यास और ज्वर शान्त करनेके लिये, नागरमोथा, पित्तपापडा, खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ,—इनको डालकर पकाया हुआ पानी देना चाहिये।

नोट—सुश्रुतमें धनिया लिखा है और चरकमें सोंठ लिखी है, इतनाही भेद है। सुश्रुतने अपने नुसखेको मद्यविकार, पित्तविकार और विषविकारवालोंके लिये अच्छा कहा है, किन्तु चरकने अपना

नुसख़ा सभी ज्वरोंमें, विशेष कर पैत्तिक और मद्यजनित ज्वरोंमें, देनेकी सलाह दी है।

इन नुसख़ोंको बनाना हो, तो ६४ तोले जलमें १ तोला ये छहों दवाएँ डालकर औटाना चाहिये। जब आधा जल रहजाय, उतार लेना चाहिये।

षड़ङ्ग पानीय।

बंगसेनका मत है कि उपरोक्त नागरमोथा, पित्तपापड़ा प्रभृति छहों दवाओंको कूट लो। पीछे ऋतुके कायदेसे पानी औटालो। पानीमें औटते समय दवा मत डालो। जब पानी औट जाय, उतारकर रख लो। जब शीतल हो जाय, उस जलमेंसे १३ छटांक जल निकाल लो। उस निकाले हुए जलमें कुटी हुई दवाओंको १ तोला लेकर, कच्ची ही डाल दो,—यही "षडङ्ग पानीय" है।

नोट—तृष्णादि नाशक जलकी दवाएँ औटायी जाती हैं, इसलिये यहाँ लालचन्दन लिया जाता है, किन्तु "षडङ्ग पानीय" काढ़ा नहीं है। इस लिये इसमें लालचन्दनके बजाय सफेद चन्दन लेना चाहिये। याद रखो, लालचन्दन प्रायः काढ़े और लेपमें लिया जाता है। षडङ्गपानीय की दवाओं को पीस कर, बारीक चूर्ण मत कर लेना, किन्तु जौकुट करना।

पित्तज्वरनाशक पान।

कुँभेरके फल, चन्दन, खस, महुएके फ़ल, फालसे, सारिवा और मिश्री—इन को ऊपर लिखी षडङ्गपानकी विधि से पका कर, आधा जल रहने पर, उतार कर, काममें लाओ। इस औटाये हुए पानी से पित्तज्वर नाश होता है।

और भी

मुलेठी और कमल अथवा कमल और सफेद चौंनी—

इन दोनों में से कोई सा एक पान बना कर देनेसे पित्तज्वर आदि रोग नाश होते हैं। बनाने की तरकीब वही है।

वंगसेन का षड़ङ्गपान।



वंगसेन ने लिखा है,—पित्तपापड़ा, नागरमोथा, खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ,—इनको जलमें औटाओ, जब औट-चुके, खूब शीतल करके छान लो। यह जल प्यास, दाह और ज्वर को शान्त करनेके लिये दो।

नोट—नये ज्वरमें कषाय या काढ़ा देने की मनाही है। उस पर वङ्गसेन महोदय कहते हैं, कि जब काढ़े की दवाएँ १६ गुने जलमें पकाकर, चौथाई जल रक्खा जाय तब उसे "कषाय" कहते हैं। वही कषाय नये ज्वरमें मना है। षडङ्गपान में तो जल चौथाई रखा नहीं जाता, इसलिये नवीन ज्वरमें षडङ्गपान का निषेध नही है। वङ्गसेनके और चरकके षडङ्गपानमें कोई भेद नहीं है। दोनोंके नुसखे एक ही हैं।

सूचना—वातकफ ज्वरमें अगर प्यास लगे, तो रोगी को गरम जल ही देना चाहिये। अगर पित्त का ज्वर हो या मद्य से ज्वर हो तो भूल कर भी गरम पानी न देना चाहिये। बहुतसे वैद्य रोगी को बकते-झकते देख, कर पित्त के प्रलाप में भी वायु का जोर समझ लेते हैं और रोगी को गरम जल दिये जाते हैं, इस से प्रलाप बढ़ता जाता है।"ज्यों ज्यों दवाकी मर्ज,बढ़ता गया" वाली कहावत चरितार्थ होती है। प्रलाप वातकफ से भी होता है और पित्त से भी। दोनों को पहचान कर जल या दवा की व्यवस्था करनी चाहिये। पित्त के प्रलाप में रोगी को होश रहता है, किन्तु वातकफ के प्रलाप में रोगी बेहोशीमें बकता है।

"चरक"ने लिखा है, गरम जल और तिक्त औषधियोंके योग से औटाये हुए जल—दोनों ही दीपन, पाचन, ज्वरनाशक, रुचिकारक,

बलकारक, पसीना लानेवाले और मंगलकारी हैं, पर पित्तज्वर मे कडवी दवाओं का जल देना चाहिये और वातकफात्मक ज्वर मे गरम जल देना चाहिये। गरम जल रोगी की देह, निदान, देश और काल की परीक्षा करके आम के पचाने को वैद्य लोग देते हैं।



ज्वर में निद्रा।

जिस तरह मनुष्यको खाने पीने की जरूरत है, उसी तरह नींद की भी जरूरत है। जिस तरह मनुष्य हवा, पानी और भोजन बिना मर जाते हैं, उसी तरह सुखनिद्रा न आने से भी मनुष्य मर जाते हैं। मनुष्यका सुख-दुःख, स्थूलता-कृशता, बलाबल, मर्दानगी-नामर्दी, ज्ञान और अज्ञान सब निद्रा के अधीन हैं।

निद्रा तमोगुणसे उत्पन्न होती है और तमोगुण कफसे उत्पन्न होता है। मानसिक और शारीरिक परिश्रम से भी नींद आती है। रात में नींद स्वभाव से ही आती है। किसी किसी रोग में बहुत नींद आती है और कितने ही रोगों में नींद आती रहती है। लोक में निद्रा को "भूतधात्री" कहते हैं। कोई कोई इस तमोमयी निद्रा को पाप-मूल भी कहते हैं। फालतू निद्रा रोगरूप समझी जाती है।

यद्यपि निद्रा देहयात्रा-निर्व्वाहार्थ आहार की तरह उपयोगी है—भूतधात्री है, तथापि कुसमयमें सोने, अधिक सोने अथवा निद्रा को सर्वथा त्याग देने से मनुष्य के सुख और आयु रात्रि के उषाकाल की तरह शेष हो जाते हैं अर्थात् नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह योगिजन सिद्धि लाभ करके योग की सत्यबुद्धि को प्राप्त होते हैं, उसी तरह युक्तिपूर्व्वक निद्रा सेवन करने से देह के सुख और दीर्घायु की प्राप्ति होती है। असमय मे सोने या बहुत सोने से मनुष्यों को नाना प्रकार के रोग हो जाते हैं, इसलिये किस स्थलमें निद्रा हितकर है और किस स्थल में अहितकर है, इस बात का विचार करके निद्रा सेवन करनी चाहिये।

असमय में सोने या बहुत सोने से रोग।

असमय में सोने या बहुत सोने से मनुष्यों के हलीमक, मस्तक-शूल, स्तैमित्य, शरीरका भारीपन, शरीर में दर्द अग्निका नाश, हृदय में कफका लिपा सा रहना, सूजन, अरुचि, उबकी, जुकाम, आधा-शीशी, कोढ, पिडका, खुजली, तन्द्रा, खाँसी, गले का रोग, स्मृति नाश, बुद्धिनाश, छेदों या स्रोतों का रुकना, ज्वर, इन्द्रियों की सामर्थ्य-हीनता और विष की वृद्धि—ये सब होते हैं।

दिनमें सोना निषेध।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—"दिन में सोने से जुकाम होता है, जुकाम से खाँसी होती है और खाँसी से पीनस होती है। पीनस से क्षय, क्षय से सूजन और सूजनसे मृत्यु होती है। दिन में सोने से कफकी वृद्धि होती है, इसलिये रोगी को और खासकर नवीन ज्वररोगी को दिन में न सोना चाहिये। यों तो खास-खास अव-स्थाओं को छोड़कर, दिन में सोना सभी को मना है, क्योंकि ऊपर लिख आये हैं कि, असमय में सोने से रोग होते हैं, इतने पर भी निम्नलिखित व्यक्तियों को तो दिन में कदापि न सोना चाहिये —

दिन में न सोने योग्य मनुष्य।

नवीन ज्वररोगी, मेदस्वी, स्नेह सेवन करनेवाला, कफप्रधान धातुवाला, कफरोगग्रस्त और दूषी विष से पीडित प्राणी—इन को दिन में हरगिज न सोना चाहिये। क्योंकि कहा है—"दिवास्वापं न कुर्वीत यतोऽसौ स्यात् कफावह" अर्थात् दिन में सोने से कफ बढ़ता है।

"चरक"में लिखा है —

ग्रीष्मवर्ज्येषु कालेषु दिवास्वप्नात् प्रकुप्यत ।
श्लेष्मपित्ते दिवास्वप्नस्तस्मादन्येषुनेष्यत ॥

गरमी के सिवा और मौसमों में दिन में सोने से कफ और पित्त कुपित होते हैं, इसलिये गरमी के सिवा और ऋतुओं में दिन में सोना मना है।

ग्रीष्म ऋतु में दिन में सोने की आज्ञा।

गरमी की ऋतु में प्राणियो के शरीर उत्तरायण काल के धर्म से रूखे हो जाते हैं तथा गरमी में वायु का संचय होता है और रात बहुत छोटी होती हैं, इसलिये गरमी के मौसम में दिन में सोने की आज्ञा है।

ग्रीष्मकालके सिवा और ऋतुओं में भी सोने योग्य मनुष्य।



"चरक"में लिखा है,—"जो गाने, पढने, स्त्री प्रसंग करने, काम करने, बोझा उठाने, रास्ता चलने और शराब पीने से थक गये हों, वे सदा दिन में सो सकते हैं। अजीर्ण रोगी, उर क्षत-रोगी, क्षीण रोगी, वृढा, बालक, दुर्बल, तृषा रोगी, अतिसार-रोगी, शूल-रोगी, श्वास रोगी, हिचकी-रोगी, कृश और गिरा हुआ, चोट लगा हुआ, बावला, सवारी करने से थका हुआ, रात के जागने से थका हुआ, क्रोधी, शोकार्त एव भयातुर और दिन में सोने के अभ्यासी—ये सब हर मौसम में दिन में सो सकते हैं। इन सब के दिन में भी सोने से, धातु सात्म्य होने के कारण, इन की बलवृद्धि होती है। दिन के सोने से पैदा हुआ कफ इन के अंगों की पुष्टि करता है। उस से इन की आयु दृढ होती है।"

"भावप्रकाश"में लिखा है,—"कसरत, मिहनत, स्त्रीसंग, बहुत राह चलने और हाथी घोड़े की सवारी करने से थका हुआ,

श्रमयुक्त, अतिसारवाला, शूल रोगी, श्वासवाला, वमनवाला, तृषा-रोगी, हिचकीवाला, वातरोगी, क्षीण, कफक्षीण रोगी, बालक, शराब वगैर किसी तरह की नशीली चीज सेवन करनेवाला, अजीर्ण-रोगी, रात में जागनेवाला और उपवास करनेवाला- ये सब, दिन में, इच्छानुसार सो सकते हैं।

नोट—रात में जागने से रूखापन होता है और दिन में सोने से चिकनापन होता है। इसी से रात के जागनेवाले को दिन में सोने की आज्ञा है। रात के जागने का रूखापन दिन के सोने से पैदा हुए चिकनेपन से मिट जाता है, क्योंकि दिन में सोने से कफ पैदा होता है। इसी तरह औरो में भी समझ लीजिये।

निद्रानाशके कारण।

कार्य, काल—बुढापा, रोग, अपनी प्रकृति और वायुकी प्रबलता ये सब निद्रानाशके हेतु हैं। कायविरेचन, शिरोविरेचन, वमन, भय, चिन्ता, क्रोध, धूम, परिश्रम, खून निकालना, उपवास, दुखदायी खाट, सत्वगुणको जय और तमोगुण का क्षय—इन सब कारणोंसे, आई हुई निद्रा भी नष्ट हो जाती है।

"भावप्रकाश" में लिखा है —

नावनं लघनं चिन्ता व्यायाम शोक भीरुप।
एभिरेव भवेन्निद्रानाश श्लेष्मातिसंक्षयात॥

नस्य, लंघन, चिन्ता, मिहनत, शोक, भय और क्रोधसे कफका अत्यन्त क्षय होता है और कफके क्षय होनेसे नींद नाश हो जाती है।

निद्रानाशकी चिकित्सा।

नींदका आना जरूरी है। नींद न आना बड़ा खराब है। नींद से अनेक रोग नाश होते हैं, नींदसे शरीरको पुष्टि होती है। जिस-तरह भोजन बिना नहीं सर सकता, उसी तरह नींद बिना भी गुजारा नहीं, इसलिये यदि किसी कारणसे नींद न आती हो अथवा वातज्वर धातुगत ज्वर प्रभृतिमें नींद न आती हो, तो उसका उपाय करना चाहिये।

नींद लानेके उपाय।

(१) अभ्यङ्ग, उबटन, स्नान, ग्राम्य और जल संचारी जीवोंका मांसरस, शालि अन्न, दही दूध, स्नेह, मद्य, दिल खुश करनेवाले काम, मनोहर गन्ध,मनोहर शब्द, शरीर दबवाना, नेत्र-सन्तर्पण, मस्तक और मुखका सन्तर्पण और लेपन, सुखदायी पलँग, घरका सुख और निद्राका समय—ये सब द्रव्य और उपाय निद्राको लौटा लानेवाले हैं।

(२) जिनको थोडी नींद आती हो वे,—दूध, शराब, मांसरस, दही, तेलकी मालिश, उबटन, स्नान, सिरमें तेल लगाना, कानोंमें तेल डालना, आँखोंमें तेल भरना—इनकी आदत डालें, सुन्दरीकी बाहुलताको आलिङ्गन करें, मनमें सन्तोष और शान्ति रक्खें; चिन्ता क्रोध और शोक को त्यागें, किसी तरहका भय न रखें, चित्तको प्रसन्न करनेवाले काम करें—इनसे विषम निद्रावालोंको बडा सुख होता है।

(३) भुनी हुई भाँगका चूर्ण, शहदमें मिलाकर, रातके समय, खानेसे नींद आ जाती है। इस उपायसे अतिसार, संग्रहणी और अग्निक्षीणता भी नाश हो जाती है।

(४) पीपलामूलका चूर्ण, गुडमें मिलाकर, खानेसे बहुत दिनोंकी गई हुई नींद भी लौट आती है। ८ माशे पीपलामूल गुडमें मिलाकर खानेसे निश्चय ही नींद आती है।

(५) काकजंघाकी जडको सिरमें रखने या बाँधनेसे नींद आ जाती है।

(६) मकोयकी जडको सिरमें बाँधने या सिर पर रखनेसे नींद आ जाती है। मकोयकी जडको सूतमें बाँधकर, निरन्तर, मस्तक पर रखने से नष्ट हुई निद्रा भी तत्काल आ जाती है। मकोयकी जड और छालका काढ़ा बनाकर और उसमें गुड मिलाकर पीनेसे भी नींद आ जाती है।

(७) मांसरसमें, सागमें, दालमें, घीमें, यूषमें और दूधमें "प्याज" मिला कर खानेसे तत्काल नींद आ जाती है।

(८) ईखके रससे बने हुए पदार्थ, पोईका साग, उड़द, शराब, मांस रस, दूध, गेहूँ, तिल और मछली—ये सब पदार्थ भी नींद लानेवाले हैं।

(९) बैंगनको, सन्ध्या समय, सिजोकर, उसमें शहद मिलाकर खानेसे गई हुई नींद भी आ जाती है।

(१०) थूहरकी जड़को, गुड़के साथ, खानेसे अवश्य नींद आती है।

(११) रोगीके पाँवोंपर तिलोंका तेल मलने अथवा काँजी या सौ बारका धोया घी प्रभृति मृदु पदार्थ मलनेसे नींद आ जाती है।

(१२) भाँगको बकरीके दूधमें पीसकर, पाँवों पर लेप करनेसे बहुत दिनोंकी गई हुई नींद अवश्य आ जाती है।

(१३) उत्तमोत्तम स्वरोंके सुनने, नाना प्रकारके संगीत और रागोंके सुननेसे नींद आ जाती है।

(१४) कालीमिर्च और कस्तूरीको, लारमें घिसकर, नेत्रोंमें आँजनेसे तीन दिनकी गई हुई निद्रा भी आजाती है।

(१५) नींद न आती हो तो थोड़ी देरतक पैरोंको गरम जलमें डुबाये रखो। सिर और पैरों पर गायका दूध मलो। अथवा अर-एडीका तेल और अलसीका तेल बराबर-बराबर लेकर काँसीकी थालीमें काँसी की कटोरीसे घोटकर आँखोंमें आँज दो, तत्काल नींद आवेगी। (परीक्षित है)

नोट—नींद वातज्वर, जीर्णज्वर, धातुगत ज्वर प्रभृति रोगोंमें भी नहीं आती। उपरोक्त नींद लानेके उपाय रोगी और अरोगी सबके लिये हैं। इसलिये ज्वरमें जो उपाय अहितकर हों, उनको छोड़कर और उपायोंसे काम लेना चाहिये। जैसे, नवीन ज्वरमें अभ्यङ्ग, उबटन, दही, दूध प्रभृति अपथ्य हैं। यद्यपि ये निद्रा लाते हैं, पर ज्वरमें तो आफत कर देंगे। इसलिये बुद्धिमान ज्वरमें अहितकर न हो, उसी उपायसे नींद लानेकी चेष्टा करे।

ज्वरोंके पकनेकी अवधि।



वात ज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमे और कफज्वर बारह दिनमें पचता है।

नोट—यदि रस आम—कच्चा रहे, तो इस अवधिके भीतर ज्वर नहीं पचता, इस अवधिके बाद भी रहता है। सुश्रुत कहता है, बहुत दोषयुक्त तथा मन्दाग्निवालेका ज्वर सात दिनके बाद भी बना रहता है। यदि उसके दोष लघन, गरम जल और यवागूसे न पचें, तो मुखकी विरसता, प्यास, अरुचि और ज्वर नाश करनेवाले पाचक और हृदयको हितकारी काथोसे चिकित्सा करनी चाहिये।

ज्वरकी अवस्थायें।

ज्वर सात दिनतक तरुण कहलाता है, १२ दिन तक मध्यम कहलाता है और १२ दिनके बाद जीर्ण कहलाता है। कहीं-कहीं लिखा है, ६ दिनके बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है। जातूकर्ण ऋषि कहते हैं,—ज्वर तेरहवे दिन जीर्ण हो जाता है। वगसेन कहते हैं,—जो ज्वर १५ दिनके बाद भी शान्त न हो, मन्दवेगसे बना रहे, वह जीर्ण हो जाता है, यानी १५ दिनके बाद जीर्णज्वर हो जाता है। ज्वर सात दिन तक तरुण रहता है, इसके बाद चौदह दिन तक मध्यम रहता है और इसके बाद पुराना हो जाता है। वैद्यविनोदकर्त्ता लिखते हैं,—जो ज्वर २१ दिनके बाद शरीरमें सूक्ष्म होकर रहे, तथा तिल्ली और मन्दाग्नि पैदा करे, वह जीर्ण ज्वर कहलाता है।

ज्वरमें औषधि देनेका समय।



वातज्वरमें ६ दिन तक लघन कराकर, सातवे दिन दवा देनी चाहिये। पित्तज्वरमें १० दिन तक लघन कराकर, ग्यारहवें दिन दवा देनी चाहिये और कफज्वरमें १२ दिनतक लंघन कराकर, तेरहवें दिन दवा देनी चाहिये।

पहले कह चुके हैं, अगर वातज्वर रोगी साम हो, तो वैद्य सातवे दिन दवा खिलावे, अगर निराम हो तो शमनकारक औषधियोंसे चिकित्सा करे।

"शार्ङ्गधर" भी कहते हैं, —अगर वातज्वरके सब लक्षण हों, तो गिलोय, पीपरामूल और सोंठ—इन तीनोंका पाचनरूपी क्वाथ रोगी को सातवे दिन दो।

"हारीत" कहते है,—६ दिनतक लघन आदि किया करो और सातवे दिन काढ़ेसे सिद्ध की हुई "पेया" पिलाओ।

"खरनाद" भी कहता है,—इस प्रकार नवीन ज्वरको नाश करने-वाली विधि ६ दिन तक कही है। पीछे पाचन और शमन क्रिया ज्वरमें हितकारी है।

"वाग्भट्ट" महोदय कहते हैं,—रोगीको सातवे दिन हलका अन्न खिलाकर, उसी दिनमे औषधि देनी चाहिये।

कोई कहता है—रोगीको दशवे दिन हलका अन्न खिलाकर, उसी दिनसे दवा देनी चाहिये। कोई कहता है, अगर आम लक्षण हो, तो दवा हरगिज न देनी चाहिये।

"चरक"मुनि कहते हैं —ज्वर रोगी यदि निराम हो,तो सातवे' दिन हलका अन्न खिलाकर, पीछे आठवे दिन काढ़ा पिलाना चाहिये।

"सुश्रुत" कहता है —सात दिन बीतने पर, आठवे दिन औषधि देनी चाहिये।

"चक्रदत्त" कहता है—सात धातुओंमें प्राप्त हुआ मल सात दिनमें पचता है इसलिये ज्वर विशेष करके आठवे दिन आमरहित होता है।

सबमें कुछ न कुछ मतभेद है इसलिये असल मतलब यह है कि, वैद्य सातवे' या आठवे दिनके भरोसे न रहे; किन्तु अवस्था, बल, अग्नि, दोष, देश और कालका विचार करके दवा दे दे। यानी दोष पहले ही पच जाय, तो अवधिसे पहले ही औषधि और अन्न

देदे और यदि दोष न पचे तो समय या अवधि आने पर भी न दे। सुश्रुतने कहा है,—थोड़े समयके पैदा हुए पित्तज्वरमें जब दोष पक जाय, तभी वैद्य दवा देदे, दश दिन बीतनेकी राह न देखे। इसी तरह थोड़े दिनके पैदा हुए वातज्वर और कफज्वर में भी सात और बारह दिनकी राह न देखनी चाहिये, जब ये दोनों दोष पक जायँ तभी दवा देनी चाहिये।

दोषोंके पकनेके लक्षण।

"सुश्रुत"में लिखा है, जब ज्वर हलका हो जाय, शरीर भी हलका हो जाय, वात, कफ, और मल ये अपने-अपने मार्गमें सचार करने लगें, तब समझो कि दोष पचकर आमरहित हो गये। अगर दोष पके हुए दीखें तो दवा दे दो।

कोई कोई कहते हैं, कि दुष्ट हुए वात, पित्त और कफ,—इनके ज्वर और ज्वरके उपद्रव पैदा करने का स्वभाव बदलजाय, तब समझ लो कि दोषोंका पाक होगया। भूख, शरीरका हलकापन, ज्वरकी सूक्ष्मता, दोषोंका अपने-अपने मार्गमें संचारण और उत्साह, इन लक्षणोंसे जान लो कि ज्वर आमरहित होगया।

नये ज्वरोंके इलाजमें आमज्वर—कच्चे ज्वर और पके ज्वरका खयाल जरूर कर लेना चाहिये। कच्चे बुखारमें दवा देना सोते साँपको उँगलीसे जगाना है। कच्चे ज्वरमें दवा देनेसे ज्वर बिगड़कर सन्निपात हो जाता है अथवा प्रचण्ड हो जाता है और शोधन शमन करनेसे विषमज्वर हो जाता है*। जब ज्वर हलका हो जाय; शरीर हलका होजाय हवा खुलने लगे, मलमूत्र होने लगें, तभी दोषोंके पाकके लक्षण देखकर दवा दे देनी चाहिये।

* इस बातको भी याद रखो कि, यदि दोष पक भी गया हो, परन्तु शरीरमें ही ठहर गया हो, उसे वैद्य यदि न निकाले तो वह भयानक हानि करता है; वह या तो विषम ज्वर करता है या बलनाश करता है।

"वङ्गसेन"में लिखा है :—

पाययेदातुर सामं पाचनं सप्तमेऽहनि।
शमनेनाथवा दृष्ट्वा निरामं समुपाचरेत्॥

आम ज्वरवालेको वैद्य सातवे * दिन दवा देदे, और यदि निराम हो तो तत्काल शमन औषधि दे दे।

जरूरत होनेसे ऊपरी उपचार करनेमें हर्ज नही। मसलन,— सिरमें दर्द हो तो लेप लगवा दो। किसी खास जगह दर्द हो तो कोई वातनाशक तेल लगवा दो। हिचकियाँ चलती हों, तो नस्य वगैर.से हिचकी बन्द कर दो, इसमें हर्ज नही।

दवा खानेके पाँच वक्त।

(औषधि भक्षणके पाँच काल)



मनुष्योंके औषधि खानेके लिये पाँच समय कहे हैं :—

पहला समय—सूरज निकलते ही दवा लेना। यह काढेका समय है।

दूसरा समय—दिनमें भोजनके समय दवा लेना।

तीसरा समय—साँझको भोजनके समय दवा लेना।

चौथा समय—बारम्बार दवा लेना।

पाँचवाँ समय—रातमें दवा लेना।

नोट—(१) पहला समय प्रात काल है। इस समय काढा या कषाय लेना चाहिये। पित्तको विरेचन द्वारा निकालने, कफको वमन

* 'हारीत" कहते हैं,—"आमज्वरकी अवस्था सात दिन रहती है। आम-ज्वरमें दवा न देनी चाहिये।"

द्वारा निकालने, उसी तरह दोषोंको पतला करनेके लिये प्रातः-समय दवा देनी चाहिये। जिस औषधिके पीनेका समय न कहा हो, उसे प्रातःकालमें पीना चाहिये।—

(२) दूसरा काल भोजनके समयका है। वह भी पाँच तरहका है। जैसे,—भोजनके पहले नमक और अदरख खाना, भोजनमें मिला कर "हिंग्वाष्टक" आदि चूर्ण खाना, भोजनके बीचमें जल प्रभृति पीना, भोजनके अन्तमें लौंग या हरड़ वगैरः खाना, भोजनके आदि अन्तमें दवा खाना। जैसे,—अम्लपित्त रोगमें "धात्री अवलेह" भोजनके आदि और अन्तमें दिया जाता है।

अपान वायुके कुपित होनेपर, भोजनसे जरा पहले दवा खानी चाहिये। अरुचि होनेपर अन्न अथवा और किसी रोचक चीजमें दवा मिलाकर देनी चाहिये। नाभिसे सम्बन्ध रखनेवाली समान वायुके कोप एवं अग्नि मन्द होनेपर अग्निदीपन करनेवाली दवा भोजनके बीचमे देनी चाहिये। सर्वदेहव्यापी व्यान वायुके कुपित होनेपर, भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिए। हिचकी, आक्षेपक वायु तथा कम्पवायु के कुपित होनेपर भोजनके पहले और अन्तमें दवा देनी चाहिये। यही दूसरा काल है।

(३) कंठ-सम्बन्धी उदान वायुके कुपित होनेसे, (कंठके बैठ जाने गूँगा हो जाने वगैर में) साँझके भोजन-समय, प्रत्येक ग्रास या कौरके साथ अथवा दो दो ग्रासोंके बीचमें दवा खिलानी चाहिये। हृदय में रहनेवाली प्राणवायुके कुपित होनेसे, बहुधा, सन्ध्या समय भोजनके अन्तमें दवा खिलानी चाहिये। यह तीसरा काल है।

(४) प्यास, वमन हिचकी, श्वास और विष-दोष होनेसे बारम्बार अन्न सहित औषधि खानी चाहिये। अनेक मौकोंपर तृषा प्रभृति रोगोमें अन्नरहित भी दवा देते हैं। यह चौथा समय है।

(५) अगर हँसलीके ऊपरके कर्णरोग, नेत्ररोग, मुखरोग अथवा नाकके रोगोंका इलाज करना हो, या बढ़े हुए वातादि दोषोंको घटाना हो,

या अति क्षीण हुए दोषोंको बढाना हो, तो रातके समय, पाचन शमन औषधि, बिना अन्नके, खिलानी चाहिये। कोई कोई सारी रात दवा देनेको कहते हैं, परन्तु आमतौरसे रातके पहले पहरमें ही दवा दी जाती है।

वैद्योंको ये पाँचों औषधिकाल खूब याद रखने चाहिएँ। रोगानुसार, रोगके समयपर, दवा देनी चाहिये। इस तरह करनेसे निश्चयही सिद्धि मिलती है। हारीत महोदयका कहना है कि, औषधि सवेरे और शामको देनी चाहिये।

सात प्रकारके क्वाथ।



पाचन, दीपन शोधन, शमन, तर्पण, क्लेदन और शोषण ये सात तरहके काढे या क्वाथ होते हैं। शृत, क्वाथ, कषाय और निर्य्यूह—ये क्वाथके चार नाम हैं।

पाचन—जिसमें औटाते-औटाते आधा जल रहे, उसे "पाचन" कहते हैं। पाचन काढा दोषोंको पकाता है। इसीलिये ज्वरमें पहले दोष पकानेके लिये पाचन क्वाथ देते हैं।

दीपन—जिसमें औटाते-औटाते सोलहवाँ भाग पानी रहे, उसे "दीपन" कहते हैं। दीपन क्वाथ जठराग्निको तेज करता है।

शोधन—जिसमें औटाते औटाते बारहवाँ भाग पानी रहे, उसे "शोधन" कहते हैं। शोधन क्वाथ मलको साफ करता है।

शमन—जिसमें औटाते औटाते आठवाँ भाग जल रहे वह "शमन" कहलाता है। शमन रोगोंको शान्त करता है। प्राय पाचन क्वाथसे दोष पकनेपर शमन क्वाथ देते हैं। पके हुए दोषोंको शमन

क्वाथ झट शान्त कर देता है। कच्चे दोषोंमें शमन क्वाथ देना उचित नही।

तर्पण—जिसमें जरा जोश दिया जाता है, उसे "तर्पण" कहते हैं। तर्पण धातुओंको तृप्त करता है।

क्लेदन—जिसमें औटाते औटाते चौथा भाग पानी रहे, उसे "क्लेदन" कहते हैं।

शोषण—जिसमें औटाते औटाते सोलहवाँ भाग पानी रहे,उसे"शोषण" कहते हैं। यह दोषोंको सुखाता है।

काढ़ा बनाने की विधि।



चार तोले दवाको ६४ तोले पानीमें डालकर हलकी आगसे औटाओ। औटाते समय काढ़ेके बर्तनको ढकना नही चाहिये, ढकनेसे काढा भारी हो जाता है। जब ८ तोले पानी शेष रहे,तब उतारकर छान लो। मतलब यह है, जितनी दवा हो, उससे १६ गुने जलमें काढा पकाओ। आधा, चौथाई अथवा आठवाँ भाग जैसा रखना हो,वैसा रक्खो। बनते हुए काढ़ेको बीचमें छोडना और चलाना नही चाहिये। अशुद्ध जगहमे काढा बनाना नही चाहिये और जमीन पर गिरे हुए को उठाना नही चाहिये। काढा सुहाता-सुहाता गरम पिलाओ और पिलाकर बासन औंधा रख दो। काढ़ेके पीनेके एक घण्टे बाद तक, प्यास लगनेपर भी, जल मत दो काला, नीला, कडा, लाल, झागदार जला हुआ, कच्ची या मुर्देकीसी गन्धवाला काढा विषके समान होता है और रोगको असाध्य कर देता है। दवाकी गन्धके माफिक, शुद्ध और सुन्दर कान्तिवाला काढा अमृतके समान होता है।

काढ़ेमें खाँड डालनी हो, तो वात रोगमे काढ़ेकी चौथाई, पित्त-रोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें सोलहवाँ भाग डालो। शहत

मिलाना हो तो पित्तरोगमें सोलहवाँ भाग, वातरोगमें आठवाँ भाग और कफरोगमें चौथा भाग डालो। अगर जीरा, गूगल, जवाखार, सेंधानोन शिलाजीत, हीग, त्रिकुटा (सोंठ मिर्च पिपर) ये डालने हों तो ३।४ मासे डालो। अगर दूध, घी, तेल, गुड, मूत्र या और कोई पतली चीज डालनी हो, तो तोले भर डालनी चाहिये।

वात, पित, कफ, रस, रक्तके सञ्चयसे हुआ बुखार,जब अच्छी तरह पक जाय तब काढा देना चाहिये। पाचन काढा रातको, शमन काढा दोपहर पहले, दीपन दोपहर बाद, सन्तर्पण और शोधन सवेरे ही प्रभात समय देने उचित हैं।

ज्वरमें संशोधन।



नवीन ज्वरमें संशोधनसे हानि।

अगर नवीन ज्वरवाला रोगी शोधन (वमन विरेचन आदि) औषधि पीता है तो वमन, मूर्च्छा मद, नशा, श्वास भ्रम, प्यास और विषमज्वर उत्पन्न होता है।

नवीन ज्वरकी विशेष अवस्थामें

संशोधनकी आज्ञा।

यद्यपि नवीन ज्वरमें संशोधन (वमन विरेचनादि) की मनाही है, तथापि अवस्था विशेषमें संशोधन कराना उचित है। रोगी दोषों की वृद्धिसे अत्यन्त दुखी हो और रोग शोधन (वमन विरेचनादि) से ही शान्त हो, बिना शोधनके शान्त न हो—ऐसी दशामें वैद्य वमन विरेचनकी हलकी दवा देकर दोषोंको उखाड डाले।

वमन कराने योग्य रोगी ।

"शार्ङ्गधर"में लिखा है—बलवान मनुष्य कफसे व्याकुल हो, जिसके मुखसे लार गिरती हो, धीरज धरनेवाला हो उसे वमन करानी चाहिये । विषदोष, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, श्लीपद अर्बुद, हृद्रोग, कोढ़, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, विदारिका—गण्डमालाका एक भेद, अपची, खाँसी, श्वास, पीनस, अण्डवृद्धि, अपस्मार—मृगी, ज्वर, उन्माद रक्तातिसार, नासापाक, तालुपाक होठका पकाव, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलशुण्डि, अतिसार, पित्तकफके रोग, मेदोरोग और अरुचि,—इन रोगोंमे वैद्यको वमन करानी चाहिये ।

वमन न कराने योग्य रोगी ।

तिमिर रोगी, गुल्म रोगी, उदररोगी अतिकृश, अतिवृद्ध, गर्भवती स्त्री, मोटा, उरक्षतवाला, बालक, रूखा, भूखा, निरूहण बस्ती करानेवाला, उदावर्तरोगी, ऊर्ध्वरक्तपित्तरोगी, वमनको बर्दाश्त न कर सकनेवाला, पीलियावाला, कृमिरोगी और जोरसे पढनेसे कण्ठ बैठ जानेवाला,—इनको वमन न करानी चाहिये ।

नाजुक-मिजाज, कमजोर, बालक और बूढा तथा डरपोक इन पाँचोंको वमन करानेवाली दवा विशेषकर न देनी चाहिये ।

नोट—अगर उपरोक्त तिमिर आदि रोगी अजीर्ण या कफसे *व्याप्त हों, तो मुलहटीका काढा या महुएकी छालका काढा पिला*कर वमन करा देनी चाहिये ।

नवीन ज्वरमें वमन निषेध ।

कफादि दोषोंके बहुतही ऊँचे आजानेसे अपने आप वमन हो जाय उससे नुकसान नहीं, किन्तु नवीन ज्वरमें कफ आदि अपने-आप ऊपर न आते हों, तो उपाय करके वमन न करानी चाहिये ।

उपाय द्वारा जबर्दस्ती वमन करानेसे (नवीन ज्वरमें) हृदयरोग, श्वास, अफारा और मोह—बेहोशी उत्पन्न होती है।

नवीन ज्वरमें वमन करानेकी आज्ञा।

नवीन ज्वरमें, अवस्था विशेषमें, वमन कराना मना नहीं है। जैसे :—

(१) तत्काल भोजन करनेपर तृप्तिसे ज्वर चढा हो, तो वमन करायी जा सकती है। तत्काल ज्वर चढनेपर वमन करानेमें हर्ज नहीं। "चरक"में लिखा है, रोगीके आमाशयमें ठहरे हुए, ज्वर उत्पन्न करनेवाले सब दोष कफप्रधान हों और वे वमनोन्मुख हों यानी निकलनेको उत्सुक हों और रोगी वमन कराने लायक हो, तो उन दोषोंको वमन कराकर निकाल दो। लेकिन अगर सब दोष उपस्थित न हों, तो नवीन ज्वरमें वमन कराना मुनासिब नहीं। अगर दोषके मौजूद न रहनेकी हालतमें वमन करा दी जाती है, तो हृद्रोग, श्वास और बेहोशी हो जाती है। नवीन ज्वर और आमदोषमें रुक्षस्वेद, लंघन और वमन खूब विचार करके कराने चाहियें। अगर ज्वर रोगी दोषोंसे अत्यन्त घिरा हो, तो वमन और विरेचन कराना ही चाहिये।

(२) रोगी—गर्भवती स्त्री अत्यन्त कृश और अत्यन्त बूढा न हो, तो लंघनके एवजमें वमन करायी जा सकती है।

नोट—जिसने वमन की हो, उसे लंघन करा सकते हो, किन्तु जिसने लंघन किये हो, उसे वमन नहीं करा सकते, क्योंकि वमन कष्टकर होनेके कारण, लंघनसे कमजोर हुए रोगी को मार डालती है। अगर रोगी बलवान हो और उसके कफज्वर हो, साथ ही वमन कराये बिना काम चलता न दीखे तो वमन करा देनी चाहिये।

वमन कराते समय खयाल रखने योग्य बातें।

(१) जिसे वमन करानी हो, उसे पेट भरकर यवागू या दूध प्रभृति पिला देने चाहिएँ। जो चीज बुरी लगती हो वह, अथवा कफकारी पदार्थ

खिलाकर दोषों को उत्क्लेशित करना चाहिये। इस तरह करनेसे वमन अच्छी तरह होती है। जिसने घृतपान किया हो यानी घी पिया हो, उसे एक दिन बीचमें देकर वमन करानी चाहिये।

(२) जितने वमनकारक प्रयोग या नुसखे हैं, उन सबमे सेंधानोन या शहदका मिला देना अच्छा है। वमन घी मिलाकर करानी चाहिये यानी वमन करानेवाली दवाओंमें घी मिला देना चाहिए। इसको 'बीभत्स" वमन कहते हैं, किन्तु जुलाबकी दवाओंमें घी न मिलाना चाहिए।

(३) कड़वी और तीक्ष्ण * दवाओंसे कफको, मधुर और शीतल दवाओंसे पित्तको तथा मीठी, खारी, खट्टी और गरम दवाओंसे वात कफको (वात मिले कफको) जीतना चाहिये।

(४) कफदोषमें पीपल, मैनफल और सेंधानमक—इनका चूर्ण करके गरम जलके साथ पिलानेसे कफ निकलता है।

पित्तदोषमे—पटोलपत्र, अडूसा, और कड़वे नीमके पत्तोंका चूर्ण करके, शीतल जलमें मिलाकर पिलानेसे पित्त निकलता है।

कफ और वायुके दोषमें—मैनफलका चूर्ण दूधमें डालकर पीना चाहिए।

अजीर्णकी दशामें—गरम जलमें सेंधानोन मिलाकर पीना चाहिये वमन होनेसे अजीर्ण दूर हो जाता है।

ज्वर शान्त करनेको पीपरके साथ या इन्द्रजौके साथ या मुलहटीके साथ मैनफल और गरम जलसे वमन करानी चाहिये। ज्वरमें शहद और जल, ईखका रस अथवा नमकका जल अथवा शराब अथवा तर्पण द्वारा वमन करानी चाहिये। इसी तरह वमनके लिये दाख और आमलेका काढा पीना चाहिये अथवा आमलेका काढा घीमें पकाकर पीना चाहिए। जहाँ जैसा उचित हो, वहाँ वैसा हो

* सोंठ, मिर्च, पीपल, राई आदि तीक्ष्ण दवा है और अनार, मुनक्का, मिश्री प्रभृति मधुर दवा है।

नुसखा देना चाहिये। इस बातको भी ध्यानमें रखना चाहिये, जिस तरह कच्चे फलसे स्वरस निकालनेसे फल नष्ट हो जाता है, उसी तरह सब देहमें व्याप्त धातुमें ठहरे हुए सारेही साम दोषको निकालना कष्टकी निशानी है।

(५) जिसे वमन करानी हो, उसे वमनकारक दवा देकर, ऊँचे आसन पर बिठाना चाहिये। अरण्डकी नालको मुखमें डालकर, हलके हाथसे कफको छूना चाहिए। इस प्रकार भीतर बाहरसे कण्ठको सिरा सिराकर वमन करानी चाहिये। साथ ही वमन करनेवालेके मस्तक और दोनों कूखों यानी पसलियोंको धीरे-धीरे हाथसे सिराना चाहिये।

(६) अगर बहुत कय होनेसे प्यास लगे, हिचकियाँ चलें, डकार आवें, अङ्ग जकड जायँ संज्ञा जाती रहे जीभ निकल आवे, नेत्र फटेसे होकर चञ्चल हो जायँ, भ्रम हो, ठोडी जकड जाय, पीडा हो, मुँहसे खून गिरे, बारबार थूक आवे, कण्ठमें दर्द हो, तो उसका उपाय शीघ्र करना चाहिये, घबराना उचित नहीं। बहुत कय होनेसे बहुधा ऐसा होता है। इसीलिये वमन विरेचन करानेके लिये होशियार चिकित्सक की जरूरत है।

अत्यन्त वमनके उपद्रव नाश करनेकी तरकीबें।



(१) हलका सा जुलाब दो।

(२) अगर जीभ बहुत घुसगई हो, तो मनको प्रसन्न करनेवाले खट्टे, तीक्ष्ण, मीठे, नमकीन पदार्थ भातके साथ खानेको दो। घी और दूध भातके साथ दो। उस रोगीके सामने दूसरे लोगों को नींबू या नारङ्गी चूस चूसकर खानेको कह दो। इस तरह करनेसे उसकी जीभ ठिकाने पर आ जायगी। खटाई देखकर, मुँह में पानी छूटेगा और काम बन जायगा।

(३) अगर जीभ बाहर निकल आई हो, तो तिल और दाखोंको पीस-कर, लुगदीसी बनाकर, उसको रोगीकी जीभपर लेप करो और जीभको भीतर घुसाओ।

(४) अगर आँखें फटीसी होगई हो, तो आँखोंमें घी लगाकर ठीक करो। यह काम हलके हाथसे करना उचित है, औरका काम नही है।

(५) वमन करते करते ठोडी रह गई हो, तो रोगीके अङ्गोंका पसीना निकालना चाहिये तथा कफवायु नाशक औषधि नाकमें डालनी चाहियें। इससे ठोडी का रहजाना ठीक होगा।

(६) बहुत वमन करनेसे अन्तमें खून गिरने लगे, तो रक्तपित्त रोगमें जो उपाय किये जाते हैं, उनसे खूनकी वमनकी शान्ति करनी चाहिये।

(७) अगर बहुत वमन होनेसे प्यास बढ जाय, तो आँवले, रसौत, नेत्रबाला, शालि चाँवलोंकी खील, लालचन्दन और खस ६ दवाओंको ४ तोले लेकर जौकुट कर लो, पीछे १६ तोले जल हाँडीमें डाल, उसीमें सब दवाएँ मिलाकर मथ डालो। मथनेके बाद नितारकर छान लो, इसीको "मंथ" कहते हैं। इस मन्थमें घी, शहद और मिश्री डाल कर पिलाओ। इस नुसखे द्वारा वमन से उत्पन्न हुए प्यास प्रभृति उपद्रव नाश हो जायँगे।

(८) अगर वमन अच्छी हो जाती है तो हृदय, कंठ और मुख साफ हो जाते हैं, अग्नि दीप्त होती है, शरीर हलका होता है तथा कफ और पित्तके दोष दूर हो जाते हैं। अगर वमन इसी तरह अच्छे ढंगसे होगई हों, उपद्रव न हुआ हो, तो तीसरे पहरके समय मूँग और साँठी चाँवलोका यूष अथवा हिरन वगैर.के मासका रस रोगीको दो। अच्छी तरह वमन होनेसे तन्द्रा, निद्रा, मुँहकी बदबू, खाज, संग्रहणी और विषदोष, ये उपद्रव कभी नही होते।

(९) जिस दिन रोगी वमनकारक दवा पीवे, उस दिन उसे चाहिये

कि, अजीर्ण करनेवाले, देरमें पचनेवाले, भारी पदार्थ, शीतल जल, दुष्ट कसरत, मैथुन, शरीरमें तेलकी मालिश और क्रोध—इनको त्याग दे अर्थात् इन सब अपथ्योंसे परहेज करे।

विरेचन या जुलाब देने योग्य रोगी।

जीर्णज्वर, विषविकार, वमन, वायुगोला, प्लीहा—तिल्ली, उदर-रोग, सूजन, मूत्राघात और कृमि रोग—इन रोगोंमें जुलाब दिया जा सकता है।

ज्वरके शान्त होनेपर भी शरीरमें थकान हो, शरीरका रङ्ग खराब हो और शरीर मलीन हो, तो विरेचन दे देना उचित है। यदि दोष बाकी रह जायगा, तो ज्वर फिर आने लगेगा, इसलिये शेष रहे दोषको निकाल देना ही अच्छा है।

नोट—वायुगोला और कृमिरोग (कीड़ोंका रोग और उदर रोग) प्रभृतिमें वमन कराना मना है।

जीर्णज्वरमें भी अगर रोगी कमजोर हो, तो विरेचन न देना चाहिये। विरेचन करानेके कायदे और विरेचन-सम्बन्धी अनेक उपयोगी विषय देखने हों, तो "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भागके अन्तमें देखिये।

नवीन ज्वरमें विरेचन निषेध।

नवीन ज्वरमें और ख़ासकर अपक्व दोषोंकी हालतमें, शोधन (जुलाब वगैर) और शमन औषधि मना है। कच्चे ज्वरमें जुलाब प्रभृति देनेसे ज्वर प्रचण्ड हो जाता है या विषम ज्वर होने लगता है।

नवीनज्वरमें विरेचनकी आज्ञा।

"सुश्रुत में लिखा है, अगर थोड़े दिनके ज्वरमें भी दोष पककर कोठेमें ठहर जाय, तो विरेचन दे देना चाहिये, क्योंकि पके हुए दोष को न निकालोगे, तो वह शरीरमें रहकर विषमज्वर आदि भयङ्कर

रोग पैदा करेगा तथा बलका नाश करेगा। इसलिये पके हुए दोषको वमन, विरेचन, निरूहवस्ती और शिरोविरेचन (सिरका जुलाब नस्य वगेर.) से निकाल देना चाहिये। और भी लिखा है,—अगर दोष चञ्चल हों, कोठा नरम हो, तो वैद्य शोधन औषधि देदे। ऐसी अवस्थामें दोषोंसे निगल हुए मनुष्यको शोधनसे वमन आदि विकार उत्पन्न नहीं होते, बल्कि शोधन न करनेसे और रोग हो जाते हैं। लङ्घन कराने, गरम जल पिलाने और पेया आदि पिलानेसे पका हुआ दोष अगर नीचेके रास्ते (गुदा) से दस्त द्वारा नहीं निकाला जाता है, तो वह शरीरमें रहकर महाकष्टसाध्य विषम ज्वर— चौथैया और बलक्षय करता है। कार्तिक वैद्य चौथैयाके स्थानमें महाकष्टसाध्य गम्भीर ज्वरका पैदा होना कहते हैं।

ज्वर रोगियोंको वमन विरेचन कराना हो, तो सदा बलाबल देख कर हलके नुसखे ही काममें लाना अच्छा है। "आरोग्यपचक" और "सारिवादि कल्क" देनेमें जरा भी खटका नहीं। इनके नुसखे आगे लिखे हैं।

अगर रोगी कमजोर हो, दस्त कराने लायक न हो, किन्तु उसके पेट पर अफारा हो, पेटमें दर्द हो, तो दारूहल्दी, बच, कूट, सौंफ, हीग और सेंधेनोन को काँजीमें महीन पीसकर पेटपर लेप करो। अगर हवा न खुलती हो, दस्त और पेशाब भ रुक रहे हों, तो दारूहल्दी आदि छहों दवाओंको पीसकर, कपड़ेकी बड़ी अँगुलीके समान मोटी बत्तीपर लेप करके, ऊपरसे घी लगा कर, गुदामें हाथसे घुसाओ। इसके साथ ही पीपर, पीपरामूल, अजवायन और चव्य, —इन चारोंके काढ़ेसे बनाई हुई यवागू पिलाओ। यह भी हवा खोलती और मल मूत्र उतारती है। अगर वमन विरेचन दोनों ओरके शोधनोंसे भी ज्वर शान्त न हो, दोष रह जाय, तो पुराने ज्वरमें, रोगीके रूखे होनेकी हालतमें, कोई उत्तम ज्वरनाशक घृत दो। इससे अवश्य लाभ होगा।

संशोधन और शमन औषधि निषेध ।

जिस मनुष्यने कड़वा—दवाओंका जल पिया हो, जो लंघन या उपवाससे कमजोर होगया हो, जिसने तत्काल खाना खाया हो, जो बूढा हो, जो प्याससे दुखी हो – उनको संशोधन या शमन औषधि नहीं पिलानी चाहिये ।

पाचन और शमन औषधि देनेका समय ।

अगर रोगी आम-सहित हो, तो सातवे दिन पाचन दे देना चाहिये । अगर रोगी आम-रहित हो, तो सातवें दिन शमन औषधि दे देनी चाहिये । इसी तरह कमजोर और थोड़े दोषवालेको भी शमन औषधि दी जा सकती है ।

प्र०—आमज्वरमे दवा देना मना है, क्योंकि आमज्वर मे दी हुई दवा ज्वरको बढाती है, फिर आम सहित ज्वरमें पाचनकी आज्ञा क्यों दी गई है ?

उ०—आमज्वर उपद्रव-रहित हो तो पाचन देना चाहिए। अगर आमज्वर उपद्रव-सहित हो, तो पाचन दवा न देनी चाहिये ।

वागभट्ट महाशय कहते है, सात दिन बाद ज्वर आम सहित भी हो, किन्तु उपद्रव न हो तो पाचन दे देना चाहिये । अगर सात दिन बाद ज्वर आम रहित हो, तो शमन औषधि देदेनी चाहिये । किन्तु यदि ज्वर आम और उपद्रव दोनोसे संयुक्त हो, तो दवा हरगिज न देनी चाहिये ।

ज्वररोगी को अन्न देने का समय ।



रस, दोष और मलों के पकने पर रोगी को भूख लगती है । जब रोगी को भूख लगे, तब भूख का समय हो या न हो, किन्तु उसी को अन्नकाल या खाने का समय कहते हैं ।

और भी कहा है—जब मनुष्यों का आम पच जाता है, तब खानेकी इच्छा होती है । चाहे वह समय खाने का हो या न हो,

उसी को अन्नकाल कहते हैं, यानी उस समय भोजन देना ही चाहिये। मतलब यह है, कि ज्वर पचने पर ही भूख लगती है, इसलिये भूख लगने पर खाने को देना चाहिये।

वातज्वर सात दिनमें, पित्तज्वर दस दिनमें और कफज्वर बारह दिनमे पकता है। जब ज्वरका पाक होता है तब रस और दोषों का भी पाक होता है। एक दूसरे का सम्बन्ध है। बिना दोषों का पाक हुए ज्वरका पाक नहीं होता और बिना रस का पाक हुए दोषों का पाक नही होता। ज्वरका पाक होने से रस और दोषों को पके हुए समझो। इसी तरह रस और दोषों का पाक होने से ज्वर को पका समझो। जब रस, दोष और ज्वर पक जायँगे, तब भूख लगेहीगी। भूखका लगना—ज्वर के पकने की निशानी है। उस समय रोगी को भोजन, किन्तु खूब हलका भोजन, देने में हानि नही है।

धन्वन्तरि महोदय कहते हैं—"वात ज्वरवाला रोगी वैद्य की आज्ञानुसार लंघन, गरम जल, वातरहित् स्थानके निवास और भारी और गरम कपड़ों के पहनने-ओढने प्रभृति नियमों का पालन करता है, तथा वात दोष के पच जाने पर—६ दिन बीत जाने पर, सातवे दिन अन्न और औषधि खाता है, तो वह जल्दी ही आराम हो जाता है।"

चरक महोदय कहते है,—"वातज्वरवाले को ६ दिन बाद, पित्तज्वरवाले को १० दिन बाद और कफज्वरवाले को १२ दिन बाद हलका अन्न खिला कर पाचन या शमन क्वाथ पिलाना चाहिये।'

वैद्यको चाहिये कि, रोगी को दोपहर से पहले अन्न दे दे, क्योंकि यह पित्त की प्रधानता का समय है। यों तो दिन का सारा मध्य भाग पित्त की प्रधानता का समय है, पर दस और बारह बजे के बीच में भोजन देना भला है। दिन के पहले प्रहरमें यानी दस बजे पहले खाना न देना चाहिये, क्योंकि दिन के पहले

पहर में कफ का समय होता है। रोगी को दोपहर तक भूखा भी न रखना चाहिये। दूसरे पहर में भोजन न करनेसे बलका नाश होता है। दिनके मध्य भाग में, पित्त के समयमें, कफ का क्षय होता है। कफ के क्षय होने से (कफ गीला है) जठराग्नि बलवान हो जाती है। जठराग्नि के तेज होने पर खाना देने से झट पच जाता है। दोपहर बाद, पित्त का समय निकल जाने पर, जठराग्नि फिर मन्द होने लगती है, उसका वह तेज नही रहता, इसलिये अग्नि की तेजी शान्त हो जाने पर जो खाना दिया जाता है, वह नहीं पचता और ज्वर के वेग को बढाता है। इसीलिये दोपहर पहले (दस और बारह बजे के दर्म्यान) भोजन देने की बात कही गयी है। भोजन सदा एकान्त मे कराना अच्छा है।

सब तरह के विषम ज्वरों में, ज्वर का वेग शान्त होने पर, सात दिन तक, मात्रा के अनुमान से हलका भोजन देना चाहिये। यदि ज्वर के वेग के बिना शान्त हुए ही, ज्वर के चढे रहने की हालत में, भोजन दिया जाता है, तो वह भोजन विषमज्वर के जोर को बढाता है, यानी बुखार का जोर हो जाता है।

सब तरह के ज्वररोगियों को बहुत ही हलका भोजन देना चाहिये। उनसे जरा भी मिहनत न करानी चाहिये। रोगी को चारपाई पर ही या नीचे, बिना अधिक चलाये फिराये खाना खिला देना चाहिये। पेशाब पाखाने की हाजत होने पर, वह भी कहीं पास ही करा देने चाहिये। ज्वररोगी के थोड़ा भी चलने फिरने या मिहनत करने से "प्रमेह" रोग हो जाता है।

नोट—पित्तज्वर दस दिन में पकता है और ग्यारहवे दिन भोजन दिया जाता है। कफज्वर बारह दिन में पचता है और तेरहवे दिन, भोजन दिया जाता है। वातज्वर सात दिनमें पचता है और सातवे दिन ही अन्न दिया जाता है। इसका कारण यह

है कि, कफ और पित्त पतले होते हैं, वे अधिक लंघन सह सकते हैं, परन्तु वायु तो आम पक जाने के बाद क्षण भर भी लंघन नहीं सह सकता। मतलब यह है, कि वायु के निराम होने पर, अगर भोजन न दिया जाय, तो वह शीघ्रकारी होने के कारण विकलता —घबराहट प्रभृति विकार पैदा कर देता है।

सामान्य ज्वर में पाचन कषाय।

नागरादि क्वाथ।

सोंठ, देवदारु, रोहिषतृण, कटेरी और बड़ी कटेरी—इनको बराबर-बराबर आधा-आधा तोला लेकर काढ़ा बनाओ। इसको "नागरादि क्वाथ" कहते हैं। सब तरह के ज्वरों में, ज्वरके पचानेके लिये, यह क्वाथ "सुश्रुत" और "शार्ङ्गधर" के मत से अच्छा समझा गया है।

नोट—यह पाचन काढ़ा है। यह दोषों को पकाता है। रोग को आराम करनेवाला संशमन काढ़ा—इस से दोष पक जाने पर देना चाहिये। पहले संशमन काढ़ा नहीं देना चाहिये। हाँ, दोष पके हुए हों, तो संशमन काढ़ा दे सकते हो।

अगर "रोहिषतृण" न मिले, तो उसके बदले में "खस" लेनी चाहिये। कोई-कोई उसके बदले में "धनिया" लिखते हैं।

नोट—काढ़ा पिलाते समय रोगीको उत्तर या पूरब तरफ मुँह करके बिठाओ। ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराकर काढ़ा पिलाओ। काढ़ा पिलाने पर काढ़के बर्तनको नीचा मुँह करके औंधा रखदो। रोगीसे कह दो, लेट रहो, पर सोना मत, काढ़ा पीकर एक घण्टे तक जल पीनेकी भी मनाही कर दो। यह काढ़ा पीनेकी उत्तम विधि है।

सूचना—अगर कभी पाचन काढ़ा पीनेसे ग्लानि और विकलता पैदा होजाय, तो वमन करानेवाली दवा देकर उसे निकाल दो और पथ्यमें शमन क्वाथ दो।

सब तरहके ज्वरों पर सामान्य संशमन औषधियाँ।



दूध पाक।

सफेद पुनर्नवा (साँठ), बेलका गूदा और लाल पुनर्नवा (गदह-पुनेरा) इन तीनों को चार तोले लेकर, ३२ तोले दूध और दूध से चौगुने १२८ तोले जल को लेकर, सबको एकमेक कर मिट्टी की हाँडी में पकाओ। जब पानी जल जाय, केवल दूध रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे शीतल होने पर रोगी को पिलाओ। महर्षि सुश्रुत कहते हैं, इस नुसखे को वैद्य सब तरह के ज्वरों में दे सकता है। इस से सब तरहके ज्वर नाश होते हैं।

नोट—"नागरादि क्वाथ' से दोष पका कर, यह नुसख़ा देना चाहिये। जो दोषों के अशाश को न जान सके, (यह वातज्वर है या पित्त ज्वर है, या वातकफ ज्वर है, ऐसा निर्णय न कर सके) उसके लिए सब तरह के ज्वरों में "नागरादि क्वाथ" और दोष पक जाने पर यह "दूध पाक" का नुसख़ा देना चाहिये। इन से ज्वर की किस्म न समझने पर भी, हानि नही, लाभ की ही संभावना है।

सर्वज्वरोंपर

दूसरा दूध पाक।

एक हिस्सा जल और दो हिस्सा दूध लेकर, उसमें शीशम का बुरादा और खस डाल कर पकाओ। जब पानी जल कर दूध-मात्र रह जाय, छान कर रोगीको पिलाओ। इसके पीने से सब तरह के ज्वर जाते हैं।

नोट—दूधपाक बनाना हो, तो ४ तोला दवा, ३२ तोला दूध, १२८ तोला पानी मिला कर औटाना और जब जल जल जाय, दूध मात्र रह जाय, छान कर और शीतल करके पिलाना। यह दूध पाक की विधि उत्तम है। दूध पाक इसी तरह किया जाता है। यह

दूसरी तरकीब है। इसमें जलसे दूध दूना लिया जाता है, और उस में दूधसे चौगुना जल लिया जाता है।

सब तरह के ज्वरों पर

गुडूच्यादि क्वाथ।

गिलोय, धनिया, नीम की छाल, पद्माख और लालचन्दन,—इन सब दवाओं को बराबर-बराबर आधा आधा तोला लेकर, काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़े से सब तरह के ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं। यह जगत्प्रसिद्ध क्वाथ ज्वरों को हरनेवाला, अग्नि दीपन करनेवाला, दाह, उबकाई, प्यास, वमन और अरुचि को नाश करनेवाला है।

नोट—यह काढ़ा हमारा आजमाया हुआ है। अगर इस का अर्क भभकेसे खींच लिया जाय, तो इसका स्वाद भी अच्छा हो जाता है। देखनेमें भी साफ रहता है। महीने दो महीने रक्खे रहनेसे बिगड़ता भी नहीं। समय पर तैयार रहता है। औटाने छानने की दिक्कत मिटती है। हम इसे सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देते थे। सदा लाभ होता था। हाँ, इतनी बात है कि, धीरे धीरे आराम करता है। अर्क जवान आदमी को २ तोले या २॥ तोले देना चाहिये।

अर्क खिंचवाना हो, तो पाँचों दवाएँ बराबर-बराबर लेनी चाहियें। कुल वजन पौने चार सेर होना चाहिये, यानी प्रत्येक दवा तीन तीन पाव लेनी चाहिये और मिट्टी या काठके बासनमें अथवा चीनीके या कलईके बरतनमें २४ घण्टे तक दस बारह सेर पानी डालकर भिजो देनी चाहिये। दूसरे दिन अर्क निकाल लेना चाहिये। पीछे साफ सफेद बोतलोंमें भरकर काग लगा देने चाहियें। इसे "अमृतादि या गुडूच्यादि अर्क" कहते हैं। यह अर्क सब तरहके ज्वरोंमें आँख बन्द करके देनेसे निश्चयही लाभ होता है, पर जल्दी न करनी चाहिये।

यह धीरे धीरे आराम करता है, पर पक्का आराम करता है। इससे गया हुआ बुखार बरसों नही आता।

नोट—जिस दवाका अर्क बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने पानीमें कलईदार या चीनीके या मिट्टीके हो बर्तनमें भिगो रखना चाहिये। पीछे भभकेसे अर्क निकालना चाहिये। जितनी दवा हो, उतनाही अर्क निकाला जाय, तो वह अर्क अव्वल दर्जेका होता है। ऐसे अर्कमें बड़ा गुण होता है।

सब तरहके ज्वरोंमें पेट साफ करनेको

आरोग्य पञ्चक।

अमलताशका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा कुटकी और जङ्गी हरड़,—इन पाँचोंका काढ़ा आम और शूलयुक्त कफ, वात और पित्तज्वरमें अत्यन्त हितकारी है। दीपन और पाचन है। "शार्ङ्गधर"में लिखा है, यह काढ़ा वातकफज्वर और आमके शूलको तत्काल नष्ट करता है। इससे मल साफ होकर दीपन पाचन होता है। इस को "आरग्वधादि क्वाथ" भी कहते हैं।

नोट—नये बुखारमें कषाय या काढ़ा देना मना है, क्योंकि नवीन ज्वरमें, आमकी हालतमें, कषैले रस और सम्पूर्ण कषाय देनेसे दोष रुक जाते हैं, पचते नहीं तथा विषमज्वर पैदा करते हैं, इसीसे नये बुखारमें जबतक दोष न पके, काढ़ा देना न चाहिये; पर इस "आरोग्य पञ्चक" या "आरग्वधादि क्वाथ'की नवीनज्वरमें मनाही नहीं है। क्योंकि यह आम पाचक, त्रिदोषनाशक, शूलनाशक और दीपक है। बड़ी उत्तम चीज है। पचकर दस्त होता है, और ज्वर में भी फायदा होता है। यह "वातकफज्वर" पर विशेष रूपसे चलता है।

दूसरा आरोग्य पञ्चक।

हरड़, अमलताशका गूदा, कुटकी, निशोथ और आमले,—इन

पाँचोंका काढा आमसहित जीर्णज्वरमें पाचन है। यह साफ दस्त लाता है।

सारिवादि कल्क।

अनन्तमूल, गोरोमाँच, सुगन्धवाला, नागरमोथा, सोंठ और कुटकी,—इन छहों दवाओंको बराबर-बराबर-कुल एक तोले लेकर, मन्दोष्ण (न बहुत गरम न शीतल) जलमें पीसकर, पीनेसे, थोडेही दिनोंमें सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। इस कल्क* से कोठा साफ होता और जठराग्नि दीपन होती है।

सर्वज्वरनाशक

सुदर्शन चूर्ण।

त्रिफला हल्दी, दारुहल्दी, कटेरी, कटाई, कचूर, त्रिकुटा, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धमासा, कुटकी, पित्तपापडा, नागर-मोथा, त्रायमाण, सुगन्धवाला, नीमकी छाल, पोहकरमूल, मुलेठी, कुडेकी छाल, अजवायन, इन्द्रजव, भारंगी, सहँजनेके बीज, सोरठकी मिट्टी, वच, दालचीनी, पदमाख, खस, चन्दन, अतीस, खिरेंटी, शालिपर्णी (सरिवन), पृश्निपर्णी (पिथिवन), बायबिडङ्ग तगर, चीता,

* गीली दवा चटनी या भाँगकी तरह खूब महीन पीसनी चाहिये। अगर दवा या दवाएँ सूखी हो, तो पानी डालकर पीसनी चाहियें। इसीको "कल्क" कहते है। कल्कके सेवन करनेकी मात्रा एक तोलेकी है। अगर कल्कमें शहद, घी या तेल डालना हो, तो कल्कसे दूना डालना चाहिये। अगर खाँड या गुड डालना हो तो कल्कके समान डालना चाहिये। दूध पानी वगैर पतले पदार्थ डालने हो, तो कल्कसे चौगुने डालने चाहिये।

पोहकरमूल न मिले तो कूट लेना, भारंगीके अभावमें कटेरीकी जड, सोरठकी मिट्टीके अभावमें फिटकरी, तगरके अभावमें कूट, तालीस पत्रके अभावमें स्वर्ण-तालीस या कटेरीकी जड। जीवक और ऋषभक न मिले तो दोनोंके बदलेमें दो भाग विदारीकन्द लेना और काकोली न मिले तो असगन्धकी जड या मुलहटी लेना। जब तक मिल सके असल दवा लेना, न मिलने पर अभावमें बदल लेनेकी शास्त्रमें आज्ञा है। बदल या प्रतिनिधियोंके लिये पहले भागके ३०३-३०७ पृष्ठ देखिये।

देवदारु, चव्य, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, बंसलोचन, पुण्डेरिया, सुगन्धद्रव्य, काकोली, तेजपात, तालीसपत्र और जावित्री—इन सब ५० दवाओंको बराबर बराबर लेकर, सबका आधा चिरायता लो। पीछे सबको मिलाकर हिमामदस्तेमें कूटकर, बारीक चलनीमें छान लो। इसका नाम "सुदर्शन चूर्ण" है।

नोट—इस सुदर्शण चूर्णमें ५० औषधियाँ हैं और इक्यावनवाँ "चिरायता" है। अगर ५०दवाओंको एकएक तोले लोगे तो सब वजन ५० तोले होगा। इस दशामें चिरायता २५ तोले लेना होगा, तब सब वजन ७५ तोले हो जायगा। सबको कुटवाकर बहुत बारीक तारोंकी चलनीमें छान लेना। पीछे एक मिट्टीकी हाँडी या अमृतबानमें भरकर रख देना। रोगीकी ताकत देखकर मात्रा देना। जवानको ३ माशेसे ६ माशे तक और बालकको १ माशेसे १॥ माशे तक देना चाहिये।

यह "सुदर्शन चूर्ण" तीनों दोषोंको हरता है और सब तरहके ज्वरोंको निस्सन्देह नष्ट करता है। इसके सेवनसे दोषज, आगन्तुज, धातुगत ज्वर, विषमज्वर, सन्निपातज्वर और मानसिक ज्वर निश्चयही आराम होते हैं। ज्वरोंमें होनेवाले शीतादि दोष, दाहादि दोष—जाड़ा लगना या गरमीसे जलन होना, प्रमेह, तन्द्रा, भ्रम, प्यास, खाँसी, श्वास, पीलिया, हृदयका रोग, कामला रोग, त्रिकस्थानका दर्द, पीठका दर्द, कमरका दर्द, जाँघोंका दर्द और पसलियोंका दर्द—ये सब इससे आराम होते हैं। जिस तरह विष्णुका सुदर्शन चक्र दैत्योंको नाश करता है, उसी तरह यह ज्वरोंका नाश करता है।

सेवन विधि—इस चूर्णको शीतल जलके साथ खाना चाहिये। अर्क हो, तो काँच या मिट्टीके बर्तनमें पीना चाहिये। पथ्य परहेज जैसा ज्वर हो वैसाही रखना चाहिये। ज्वरके पक जानेपर, अगर यह दिया जाता है, तो बड़ा चमत्कार दिखाता है। कच्चे ज्वरमें न देना चाहिये। यह हमारा आजमाया हुआ है। पहले हम चूर्ण देते

थे। पीछे अर्क खींचकर देने लगे, तब तो इसके देनेसे जो सफलता हुई, वह अकथनीय है।

अगर इस चूर्णकी दवाओंका गुडूच्यादि अर्ककी तरह अर्क खींच लिया जाय, तब तो कहनाही क्या है। अर्क बडा काम देता है। पीनेमें उतना बुरा नही लगता। उसी तरह अढाई सेर या पौने चार सेर सब दवायें लेकर, अर्क खिंचवाना चाहिये। मात्रा बलाबल देखकर २ तोले तक देनी चाहिये। बालक और स्त्रियोंको सदा हलकी मात्रा देनी चाहिये। पौने चार सेर दवाओंका १० बोतल अर्क अच्छा तेज होता है।

निम्बादि चूर्ण।

नीमके पत्ते १० भाग, हरड १ भाग, आमले १ भाग, बहेडा १ भाग, सोंठ १ भाग, मिर्च १ भाग, पीपल १ भाग, अजवायन ५ भाग, सेंधा नोन १ भाग, विरियासचर नमक १ भाग, कालानमक १ भाग और जवाखार २ भाग—इन सब को कूट छानकर रख लो। इसे सवेरेके समय खाना चाहिये।

इसके खानेसे रोज आनेवाला, दूसरे दिन आनेवाला, तीसरे दिन आनेवाला, चौथे दिन आनेवाला, दिन रातमें एक बार आनेवाला, दो बार आनेवाला, सात दिन, दस दिन या बारह दिन तक एकसा बना रहनेवाला, धातुगत ज्वर और तीनो दोषोंसे उत्पन्न हुआ ज्वर—ये सब ज्वर निश्चय ही आराम होते हैं।

नोट—हमारी जाँचमें यह निम्बादि चूर्ण विषमज्वरोंपर अच्छा साबित हुआ है। मात्रा सुदर्शन चूर्णके समान है।

शठ्यादि क्वाथ।

कचूर, हल्दी, दारूहल्दी, सोंठ, पोहकरमूल, इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापडा, जवाखार, काकडासिंगी, चिरायता, देवदारू और दशमूलकी दसों औषधियाँ—कुल २३ औषधियोंको बराबर

बराबर एक एक माशे लेकर काढ़ेकी तरकीबसे काढा बनाकर, पीछे उसमें ३ या ४ माशे पिसा हुआ सेंधानोन डालकर, सुहाता-सुहाता पी जाओ। इसके पीनेसे सब तरहके ज्वर निस्सन्देह आराम होते हैं।

नोट--यह काढा परीक्षित है। रोगी बलवान हो, तो प्रत्येक दवा दो दो माशे भी ले सकते हो।

गुडूच्यादि चूर्ण।

गिलोय, पीपरामूल, पीपल, हरड़ जंगी, लौंग, नीमकी छाल, सफेद चन्दन, सौंठ, कुटकी और चिरायता—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को गरम जलके साथ सेवन करने से सब तरहके ज्वर आराम होते हैं। यह चूर्ण हमारा परीक्षित है। मानो सुदर्शन चूर्णके समान समझनी चाहिये।

आमलक्यादि क्वाथ।

आँवला, चित्रक, छोटी हरड़ और पीपल—इन चारोंको मिलाकर २॥० तोले लेलो। पीछे काढा बनाकर पिलाओ। इस काढे से सब तरहके ज्वरोंमें लाभ होता है। अथवा उपरोक्त चारों चीजों का चूर्ण बनाकर और चूर्ण में सैंधानोन मिलाकर, रोगीको गरम जलके साथ पिलाओ। यह भी परीक्षित है।

नागरादि चूर्ण।

सोंठ, धमासा, रास, नागरमोथा और कुटकी—इनको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण करलो। इस चूर्णके गरम जलके साथ सेवन करनेसे सब तरहके ज्वरोंमें फायदा होता है। यह चूर्ण ज्वरनाशक और अग्निप्रदीपक है। परीक्षित है।

भारग्यादि चूर्ण।

भारंगीकी जड़ ८ तोला, काकड़ासिंगी ८ तोला, चव्य ८ तोला, तालीसपत्र ८ तोला, कालीमिर्च ८ तोला, पीपल १२ तोला, सोंठ २४ तोला, दालचीनी ४ तोला, इलायची ४ तोला, तेजपात ४ तोला, नागकेशर ४ तोला, खसकी जड़ ४ तोला

और सफेद खाँड ४ तोला—इन सबको कूट पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे आठों प्रकारके ज्वर नाश होते हैं। साथ ही खाँसी, श्वास, सूजन, पेटका अफारा वगैरः भी आराम होते हैं। यह चूर्ण त्रिदोष नाशक है। परीक्षित है।

हरीतक्यादि वटी।*

हरड़, निशोथ, त्रिधारा और विधारा—इन चारोंको आठ आठ तोले लो। पीपल, सोंठ गिलोय, गोखरू, शतावर, सहदेई और वायविडङ्ग चार चार तोले लो। कुल वजन ६० तोले होगा। इन सबको एक जगह महीन कूट पीसकर छान लो। पीछे शहद मिला कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे ज्वर, खाँसी, श्वास, दस्तकब्ज और अग्निमन्दता नाश होती है।

नोट—पहले पिसे छने हुए चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे शहद दे देकर खूब खरल करो। पीछे गोलियाँ बनाओ। यह नुसखा भी परीक्षित है।

---

* गुटिका वटी, मोदक, वटिका, पिण्डी, गुड़ और वत्ती,—ये सात गोलियोंके नाम हैं। गुड़, खाँड या गूगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहिएँ। अगर बिना पाक किये गोलियाँ बनानी हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर और चूर्णमें मिलाकर, घी से गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर जल, शहद, दूध आदि पतली चीजोंमें चूर्ण डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमें चूर्णको डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहिये।

अगर खाँड या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हो, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड या मिश्री मिलाकर गोलिया बनानी चाहियें।

अगर गुड़ डालकर गोलियाँ बनानी हो, तो चूर्णसे दूना गुड़ डालकर गोली बनानी चाहियें।

अगर गूगल और शहद दोनो डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इन दोनोको चूर्ण के बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहिये।

अगर दूध या पानी वगैर पतले पदार्थोंसे गोलियाँ बनानी हो, तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहिये।

उदकमंजरी रस।

शोधा हुआ पारा १ भाग, शोधी हुई गन्धक १ भाग, कालीमिर्च १ भाग, भुना हुआ सुहागा १ भाग, सफेद खाँड ४ भाग और मछलीका पित्ता ४ भाग—इन सबमेंसे पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करके कजली बना लो। पीछे शेष चारोंको खरलमें डालकर और साथ ही पारे और गंधककी कजली डालकर, तीन दिनतक, बराबर घोटो। यही "उदकमंजरी रस" है।

हर किसी तरहके नवीन ज्वरमें इस रसको १ या २ रत्ती बलाबल देखकर, अदरखके रसके साथ खिलाओ।

अगर गरमी बहुत मालूम हो शीतल जल पिलाओ और पंखेकी हवा करो। अगर जियादा गरमी लगे, पित्तकी तेजी हो, तो सिर पर शीतल जलकी धारा दो।

इस रसके खानेवालेको भूख लगे तो "माठा" भात और बैंगन दो। ये पथ्य हैं। इसके सेवन करनेसे तेज नया ज्वर एक ही दिनमें भाग जाता है।

नोट—पारा, गन्धक और सुहागा—इनको बिना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है।

ज्वरधूमकेतु रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध समन्दरफेन, शुद्ध सिगरफ और शुद्ध गन्धक—इन चारोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे अदरखका रस दे देकर खरल करो। एक पहर तक खरल होने पर, तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बनालो। रोगीका बलाबल देखकर, पूरी या आधी गोली अदरखके रसके साथ खिलाओ। एक दिनमें एक गोली खानेसे नवीन ज्वर अवश्य चला जायगा।

नोट—सिगरफ और समन्दरफेन प्रभृतिके शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है।

ज्वरघ्नी रस।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्ध सिंगरफ ३ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ भाग—पहले पारे और गन्धकको खरल करलो, पीछे उसी कजलीमें सिंगरफ और जमालगोटेके बीज डाल कर खरल करो। खरल करते समय दन्ती या जमालगोटेकी जडका रस डालते जाओ। खूब घुट जानेपर, चिरमिटीके बराबर गोलियाँ बना लो।

नवीनज्वरमें, सवेरे ही, एक गोली शीतल जल और सफेद चीनी के साथ सेवन करानेसे नया ज्वर एक ही दिनमें उड जाता है। आजमानेवाले सज्जनको ज्वार या सरसों के बराबर गोलियाँ बनानी ठीक होंगी।

सर्वज्वरहरी वटी।

शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग, शुद्धवत्सनाभ विष ३ भाग, सत्यानाशी कटेरीकी जड ४ भाग और शुद्ध जमालगोटेके बीज ५ भाग,—इन सबको एक जगह पीसकर, खरलमें डालकर, नीबू केरसके साथ खरल करो। खरल हो जाने पर, कालीमिर्चके बराबर गोलियाँ बनालो। प्रत्येक दिन १ गोली अदरखके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंके सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अजीर्णज्वर, सामज्वर, विषमज्वर तथा और सब ज्वर उस तरह भस्म होते हैं, जिस तरह दावाग्निसे वन भस्म होता है।

श्वासकुठार रस।

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध गन्धक ३ माशे, शुद्ध वत्सनामविष ३ माशे, शुद्ध सुहागा ३ माशे, शुद्धमैनसिल ३ माशे, कालीमिर्च २ तोला, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च पीपर) १॥ तोला—इन सबको खरल करके शीशीमें भरलो। यह रस सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है। हमारा आजमाया हुआ नहीं है।

हुताशन रस।

सोंठ १ तोला, शुद्ध सुहागा २ तोला, कालीमिर्च १॥ तोला, कौडी की भस्म १॥ तोला और शुद्ध विष ३ माशे,—इन सबको एकत्र महीन पीसकर शीशीमें भर लो। इसकी मात्रा १ रत्तीकी है। ज्वरमें हर दिन १ रत्ती खाना चाहिये। यह रस सब तरह के ज्वरोंको नाश करता है।

ज्वरघ्नी वटी।

शुद्ध पारा १ भाग, भूरिछरीला ४ भाग, पीपल ४ भाग, जङ्गीहरड ॥ भाग, अकरकरा ४ भाग, सरसोंके या कडवे तेलसे शोधी हुई गन्धक ४ भाग और इन्द्रायनके फल ४ भाग—इन सब को लेलो। पहले गन्धक और पारेको खरल करो। पीछे इस खरल की हुई कज्जलीमें और सबका पीसा हुआ चूर्ण मिला दो, ऊपरसे इन्द्रायन के फलोंका रस डाल डालकर खूब खरल करो। घुट जानेपर उडदके बराबर गोलियाँ बनालो।

इन गोलियोंको बलाबल देखकर, गिलोयके रसके साथ सेवन कराओ। इन गोलियोंसे नवीनज्वर नाश होता है। हमने यह नुसखा "भावप्रकाश' से लिया है। "भावप्रकाश' में भूरिछरीला जहाँ लिखा है "शार्ङ्गधर"में वहाँ 'पलुआ' लिखा है। असलमें यह नुसखा "शार्ङ्गधर" का ही है।

नवज्वरहरी वटी।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्धवत्सनाभ विष, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड, बहेडा आमला, शुद्ध किये हुए जमालगोटेके बीज—इन सबको बराबर बराबर लेलो। पारे और गन्धकको खरल करके उस कज्जलीमें शेष आठों दवाओंके चूर्णको मिला दो। पीछे खरलमें द्रोणपुष्पी या गूमा का रस इतना भर दो कि, सब चूर्ण डूबजाय, पीछे खरल करो। जब सूखकर गोली बनाने योग्य हो जाय, तब

उड़दके बराबर गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंसे नवीन ज्वर जाता है, यह बात "भावप्रकाश"में लिखी है।

ज्वरघ्न वटिका।

शुद्ध जमालगोटेके बीज ४ माशे, कुटकी ८ माशे और गेरू ४ माशे—इन तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रससे खरल करो और मटरके बराबर गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक गोली नित्य सेवन करनेसे जीर्णज्वर जाता है।

महाज्वरांकुश रस।

शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष ३ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ६ माशे, चोक ३६ माशे—इन सबको लेकर, पहले शोधे हुए गन्धक और पारेको खरल कर लो। पीछे उस कज्जलीमें शेष सबका चूर्ण मिलाकर खरल कर लो। यही "महाज्वरांकुश रस" है। यह रस जम्भीरी नीबूके रसमें अथवा अदरखके रसमें दो दो रत्तीकी मात्रासे रोगीको दो।

यह महाज्वरांकुश रस "शार्ङ्गधर"में लिखा है। इसके सेवन करनेसे त्रिदोषज्वर, नित्य आनेवाला ज्वर, दिन रातमें दो बार आनेवाला ज्वर, इकतरा, तिजारी और चौथैया—ये सब ज्वर नष्ट होते हैं। यह बात "शार्ङ्गधर"में लिखी है। "भावप्रकाश"के लेखक महाशयने यद्यपि इसे "शार्ङ्गधर"से लिया है, तथापि उन्होंने उपरोक्त ज्वरोंके सिवाय इससे नवीन ज्वर, जीर्ण ज्वर प्रभृति सब तरहके ज्वरोंका जाना भी लिखा है।

हमने इसे सैकड़ों बार आजमाया है, पर हम इससे शीतपूर्वक विषमज्वरों यानी जाड़ा लगकर आनेवाले ज्वरोंको ही आराम कर सके हैं। जाड़ा लगकर आनेवाले इकतरा, तिजारी और चौथैया प्रभृतिमें यह सचमुच ही अचूक रामबाण है। अच्छी-से अच्छी तेज अङ्गरेजी दवा इसकी बराबरी नहीं कर सकती।

हमारी परीक्षित विधि।

—(*)*(*)—

हम उपरोक्त सब दवाओंको घोटकर गोलियाँ बनाते हैं। अगर चूका सूखा होता है, तो जँभीरी नीबूका रस डाल कर घोटते हैं और पीछे सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लेते हैं। हम ताकतवरको दो और कमजोरको एक गोली ताजा पानीसे निगलवा देते हैं। हम चढे हुए ज्वरकी हालतमें कभी गोली नहीं खिलाते। यद्यपि विषम ज्वर सर्वथा शरीरके बाहर नहीं जाता, तथापि अपने समय पर एक तरहसे उतर ही जाता है। जब रोगीका बदन गरम नहीं रहता, रोगी कहता है अब ज्वर नहीं है। थर्मामीटरसे टेम्परेचर या ताप ९८, ९८॥ या ९९ डिग्री तक रहता है, तब हम रोगीको ज्वर आनेके समयसे १२ घण्टे या ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेपर, एक-एक गोली ताजा जलसे निगलवाते हैं। अगर गोली खिलाते-खिलाते ज्वर चढ आता है, तो गोली खिलाना बन्द कर देते हैं। ज्वर उतर जानेपर, बारीके दिन, अगर ज्वर नित्य आता हो तो, ६ या ८ घण्टे पहले फिर उसी तरह गोली खिलाते हैं। इस तरह करनेसे हठीसे हठी जाडा लगकर चढनेवाला बुखार अव्वल तो एक ही बारीमें—अगर १ में नहीं तो २ या ३ बारीमें तो अवश्य ही छूमन्तकी तरह उड जाता है। इन गोलियों से हमें बहुत कुछ यश मिला है। मान लो, किसी रोगी को दिन के २ बजे बुखार आनेवाला हो, तो आप रातके २ बजे २ गोली निगलवा दें, पीछे ४ बजे १ गोली, फिर सवेरेके ६ बजे, फिर ८ बजे, फिर १० बजे और फिर १२ बजे गोली निगलवा दें। अगर २ बजे भी ज्वर न चढे, तो २ बजे १ गोली और निगलवा दें। परमात्मा की दया से उसी दिन ज्वर विदा हो जायगा। अगर उस दिन समय टाल कर ज्वर ३ बजे, ४ बजे या ५।६ बजे आजाय, तो दूसरे दिन या दूसरी बारी को उपरोक्त विधि से जिस समय ज्वर चढे, उस

से १२ घण्टे पहले गोली खिलावें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो तीन तीन घण्टे पर एक एक गोली पिलावें।

जाड़ेके ज्वरों का यह फ़ायदा है, कि रोगी को एक दो हलके दस्त करा देने से फौरन ही भाग जाते हैं। अनेक बार तो बिना किसी दवा के केवल दस्त करा देने से ही चले जाते हैं। इसलिये "स्वास्थ्यरक्षा"के आरम्भ में ही लिखे "पंचसकार चूर्ण" की १ खूराक रोगी को, रात को सोते समय, गरम जलसे खिला देना अच्छा होगा। अगर यह न हो, तो "हरड़ का मुरब्बा" खिला कर (गुठली निकाल कर), ऊपर से पाव भर गरम दूध पिला देना चाहिये अथवा और कोई उत्तम हलकी दस्तावर दवा दे देनी चाहिये। इस तरह दस्त करा देने से एक या दो पारी में बाजी बद कर जाड़ा लग कर आनेवाला बुखार—चाहे वह तिजारी और चौथैया ही क्यों न हो—काफ़ूर हो जाता है।

"वैद्यविनोद"में लिखा है—

> विषमंतु निहत्यूर्ध्वमधोवा शोधनम्परम्।
> एकैका मधुनाहन्ति त्रिवृत्कृष्णा हरीतकी॥

वमन और विरेचन से विषमज्वर नाश हो जाता है। निशोथ, पीपल और हरड़—इन मे से किसी एक को शहत के साथ चाटने से भी विषमज्वर चला जाता है। दस्त कराने के लिये ज्वरमें और खास कर विषमज्वरमें, शहतके साथ निशोथ का ३।४ या ८।१० माशे चूर्ण चटाना बहुत अच्छा है। "चरक"में कहा है, दस्त कराने वाले पदार्थों में "निशोथ" सर्वोत्तम है।

सावधानी—ये गोलियाँ गरम हैं, इन में विष पड़ा हुआ है, इसलिये रोगी की ताकत देख कर कम या जियादा देनी चाहिये। जल्दी आराम करने के लिये, अधिक गोलियाँ न खिलानी चाहिये। बलवान को ६ गोली और निर्बल को ३ या २ गोली देनी चाहिये। रोग को १ दिन देर से आराम करना भला, पर जल्दी करके उपद्रव

मोल लेना अच्छा नही, १४।१५ साल के बालक को या तो यह गोली देनी ही नहीं, अगर देनी ही हो, तो बुख़ार आने से पहले आधी आधी गोली, दिनमें ३ बार, दो दो घण्टे में देना अच्छा है।

अगर रोगी को गरमी बहुत लगे—प्यास का जोर हो, तो मिश्री खिलानी चाहिये और ऊपर से शीतल जल पिलाना चाहिये। मिश्री के टुकड़े खाकर शीतल जल पीने से रोगीकी प्यास कम होती और बेचैनी मिटती है। अगर सिर में दर्द हो या उबकियाँ आती हों, तो ज्वरके उपद्रवों में लिखे हुए उपाय ऊपर से अलग करते रहना उचित है। अगर ज्वर न चढ़ा हो, गोली बहुत गरमी करे, तो १ बार चीनी या मिश्री का शर्बत पिलाना चाहिये।

पथ्य—इस दवा से ज्वर छोड़ जाने या उतर जाने पर दूध, भात और मिश्री खिलानी चाहिये। अगर रोगी को ज्वर ने छोड़ा न हो, तो दूधमें साबूदाना पका कर मिश्री मिलाकर देना चाहिये। ज्वर छोड़ जाने पर दूध, भात, मिश्री इन गोलियों की लाग है।

नोट—बहुत बार ऐसा होता है, कि एक दो रोज इन गोलियों के खिलाने से ही जाड़ा लगना बन्द हो जाता है। एक तरह से ज्वर चला जाता है, पर शरीरमें कुछ हरारत सी किसी-किसी को होने लगती है। *अगर ऐसा हो, तो गन्नेकी गँडेरी चुसाना या* "शर्करोदक" पिलाना ठीक होगा। अक्सर पित्त बाकी रह जाने से ऐसा हुआ करता है। गन्ने के चूसने और शर्करोदक के पीने से निश्चय ही यह हरारत जाती रहती है। (देखो पृष्ठ ७५।७६)।



चौथा अध्याय

वातज्वर की चिकित्सा।

—※—

वातकोपके कारण।

—※—

रूखे हलके और शीतल पदार्थों के सेवन करने, जियादा मिहनत करने, वमन विरेचनादि पंच कर्मों के अतियोग, मल मूत आदि वेगों के रोकने, उपवास या व्रत करने, शस्त्र लकड़ी वगैरः की चोट लगने, बेक़ायदे स्त्रीप्रसङ्ग करने, घबराने, शोक करने, अत्यन्त खून निकलने, रात में जागने, शरीर को टेढ़ा तिरछा करने प्रभृति कारणों से वायु कुपित होकर रोग उत्पन्न करता है।

वातज्वर कैसे होता है?

—※—

वातकारक आहार विहारों से वायु कुपित होती है। कुपित वायु आमाशयमें घुस कर, आहारके सारभूत रस को दूषित करता है। उस समय रस और पसीनों का बहना बन्द हो जाता है, अतएव पाचक अग्नि मन्द हो जाती और जठराग्नि की गर्मी बाहर निकल जाती है। उस समय वायु ही स्वतन्त्र मालिक बन बैठता और अपनी कारस्तानी करता हुआ वातज्वरकी उत्पत्ति करता है।

वातज्वरके पूर्व्वरूप।

—:★:※:★:—

जब वातज्वर होनेवाला होता है, उस से कुछ पहले—प्रथम तो बिना मिहनत किये थकान सी मालूम होती है, फिर शरीर का गिरना प्रभृति लक्षण होते हैं। इसके बाद जम्हाइयाँ आने लगती हैं।

वातज्वरके लक्षण।

वेपथुर्विषमो वेगः कण्ठोष्ठमुखशोषणम्।
निद्रानाशः क्षवः स्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च॥
शिरोहृद्गात्ररुग्वक्त्रवैरस्यं गाढविट्कता।
शूलाध्माने जृम्भणं च भवन्त्यनिलजे ज्वरे॥

शरीरका काँपना, ज्वरका कभी तेज होना और कभी मन्दा होना, कन्ठ, होठ, मुख या तालू का सूखना, नींद और छींकों का न आना, शरीरमें रूखापन होना, सिर हृदय और शरीरमें दर्द होना, मुँह का जायका बिगड़ जाना या कषैलासा हो जाना, पाख़ाना न होना और अगर होना तो सूखासा और थोड़ासा होना, जम्भाई आना, पेट में अफारा होना और मीठा-मीठा दर्द चलना—ये लक्षण वातज्वरमें विशेषरूप से होते हैं। ये लक्षण "सुश्रुत"में लिखे हैं।

"चरक"में लिखा है—ज्वर सदैव एकसा न रहे, कभी घटे और कभी बढ़े, नाख़ुन, नेत्र, चेहरा, मल, मूत्र और चमड़ा ये कठोर हो जायें और लाल लाल मालूम हों; शरीर में स्थिर और अनस्थिर दर्द हो, पैर सो जायँ, पैरों की पिंडलियाँ ऐंठें, घोंट्र और जोड़ अलग अलग से जान पड़ें, कमर, पसली पीठ, कन्धे और भुजाओं

तथा छाती में तोडने, दबाने, मथने उचेलने और सूई चुभाने की सी पीडा हो , ठोडी जकड जाय, कानो में आवाज हो, मुँह का स्वाद कसैला हो ; मुख, तालू और कण्ठ सूखें , प्यास लगे, सूखी ओकारियाँ आवें , छींक और डकार न आवें , अन्नरस मिला थूक आवे , खाने पर मन न हो, खाया पचे नहीं, दिल में दुःख हो, जँभाई आवें , शरीर नव जाय और काँपे , मिहनत बिना किये थकान मालूम हो , भौंर या चक्कर से आवें , रोगी बकवाद करे , नींद न आवे ; शरीर के रोयें खडे हो जायँ , गरमी की इच्छा हो, रूखी, हलकी और शीतल प्रभृति गुणवाली चीजों से ज्वर बढे और इनके विपरीत चिकनी, भारी और गरम प्रभृति गुणवाली चीजों से ज्वर घटे ।

वाग्भट्ट भी कहते हैं—वातज्वरमें रोएँ खडे हो जाते हैं, दाँत खट्टे हो जाते हैं, कँपकँपी आती है और छीक नही आती हैं इत्यादि ।

नोट—ये सब लक्षण हों या दो चार लक्षण कम हों,तो समझ लो कि, "वातज्वर" हुआ है। लक्षणों को कण्ठाग्र (वरजवान) रखिये और मौके पर ज्वरोंके पहचाननेमें काम लीजिये। जिन्हें रोगोंके लक्षण याद नहीं रहते, वे रोगोंको पहचान नही सकते ।

वातज्वरमें नाडी और नेत्र प्रभृति ।

वातज्वरमें नाडीकी चाल साँप और जोंक के समान होती है। गरमीमें, दोपहर या आधी रातको अगर वातज्वर होता है , तो नाडी धीमी-धीमी चलती है , किन्तु वर्षाकालमें, भोजन पचनेके बाद और पिछली रातको जब वायुके कोपका समय होता है, नाडी वातज्वरमें जल्दी जल्दी चलती है , पर वह टेढी, चपल और छूनेमें कुछ कम गरम होती है ।

वातज्वरमें दस्त सूखा और थोडा होता है। पेशाब स्याही माइल होता है। शरीर रूखा और गरम रहता है। आवाज घरघराती सी होती है। जीभ सख्त, फटीसी, रूखी, गाय की जीभ की तरह खरदरी और हरे रंग की होती है। जीभ से लार गिरती, मुखका स्वाद विरस और चेहरा रूखा रहता है। आँखें रूखी, धूमिल रंग की, टेढी और चचल होती हैं।

वातज्वरके बढने और पैदा होनेके समय।



भोजन पचने के बाद, सन्ध्या समय, गरमी के अन्त में, यानी "आषाढ" में वातज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

वातज्वरमें लघन।



वातज्वर में लघन कराना मना है। वातज्वरवाले का वायु आम-सहित हो, तो लघन कराने चाहिये, अगर वायु आम रहित हो तो लघन नहीं कराने चाहियें। कफ में, आम के पक जाने पर भी, लघन कराये जाते हैं। वात में, आमके पक जाने पर, लघन नही कराये जाते।

वातज्वरके पकने की अवधि।



वातज्वर सात दिन में पचता है और सातवे दिन ही अन्न दिया जाता है।

चिकित्सा।



वातज्वरमें पाचन।



(१) बेल, स्योनाक, कुम्भेर, पाढ और अरणी—इनको "बृहत्पञ्च मूल" कहते हैं। इन का काढा बना कर, दोष पचाने के लिये,

वातज्वर में देना चाहिये। सुश्रुत, वंगसेन और भावमिश्र सभीने वातज्वर में इस पाचन को अच्छा कहा है।

(२) वंगसेन में लिखा है,—पीपरामूल, गिलोय और सोंठ का पाचन क्राथ वातज्वर में देना चाहिये। भावमिश्र कहते हैं, इसके पीने से वातज्वर खड़ा नहीं रहता। इसका नाम "शुंठयादि क्राथ" है। शार्ङ्गधर कहते हैं, वात ज्वरके पूर्ण लक्षण होने पर, सातवें दिन के बाद इसे देना चाहिये।

नोट—यह पाचन परीक्षित है। सातवे दिनसे आरम्भ करके, सुबह शाम ३ दिन तक, इसे देना चाहिये।

(३) "हारीत संहिता" में लिखा है, —वच, अजवायन, धनिया और सोंठ का गरमागर्म काढ़ा रात में पीना चाहिये। यह पाचन वातज्वर और वात की पीड़ा मे सुखदायी है।

(४) धनिया, देवदारू, कटेरी और सोंठ—इन चारों का काढ़ा वातज्वर में उत्तम पाचन है। वैद्यविनोदकर्ता लिखते हैं, यह दीपन और पाचन है, निश्चय ही ज्वरको नाश करता है।

नोट—कटेरी दोनो लेनी चाहिये। ज्वरवाले को पहले यही पाचन-क्राथ देना चाहिये।

वातज्वर नाशक नुसखे।



(१) बेल, कुम्भेर, पाढल, सोनापाठा, अरणी, गोखरू, कटेरी, कटाई, पृश्निपर्णी, , शालिपर्णी, रायसन पीपल, पीपलामूल कूट, सोंठ, चिरायता, नगरमोथा, खिरेंटी गिलोय, सुगन्धवाला दाख, जवासा और शतावर—इन २३ औषधियोंको बराबर-बराबर लेकर, काढा बनानेकी विधिसे काढ़ा बनाकर पिलाओ। इस काढ़ेसे उपद्रवों सहित वातज्वर नष्ट होता है। भावमिश्र लिखते हैं—यह योग सब योगों—नुसखोंसे उत्तम है। इसका नाम "दशमूलादि क्राथ" है।

(२) चिरायता, गिलोय, सुगन्धवाला, कटाई, कटेरी, गोखरू, शालिपर्णी (सरवन), पृष्ठिपर्णी (पिथवन)—इन आठ दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है। इसका नाम "किरातादि क्वाथ" है।

(३) गिलोय, पीपरामूल और सोंठ—इनके साथ इन्द्रजौका काढ़ा बनाकर, वातज्वरमें सातवे दिन पीना चाहिये।

(४) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय सुगन्धवाला, कटेरी, कटाई, गोखरू, पृश्निपर्णी शालिपर्णी और सोंठ—इन दसों दवाओंका काढ़ा वातज्वरको नाश करता है।

(५ बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढल, अरणी, खिरेंटी, रायसन कुलथी और पोहकरमूल—इन ६ दवाओंके काढ़ेसे सन्धियों—जोड़ोंका दर्द, शिरका काँपना और वातज्वर नष्ट होता है। वङ्गसेन और भावमिश्र दोनोंने इसे अच्छा बताया है।

(६ शालिपर्णी, खिरेटी, रास्ना, गिलोय और सरिवन—इन पाँचों का काढ़ा सुहाता-सुहाता गर्म पीनेसे तेज वातज्वर नाश हो जाता है।

(७) पीपल, अनन्तमूल, दाख, खिरेटी और शालिपर्णी—वङ्गसेन कहते हैं—इन पाँचोंके काढ़ेसे अवश्य वातज्वर नाश होता है।

(८) दाख, गिलोय, कुम्भेर, त्रायमाण और अनन्त-मूल—इन पाँचोंका काढ़ा, गुड़ मिलाकर, वातज्वर, और कफज्वरमें पीना चाहिये।

(९) पीपल, लहसन, गिलोय, सोंठ, कटेरी, सेंधानमक, चिरायता, और नागरमोथा—इन आठों दवाओंका काढ़ा, पथ्य भोजन करनेवाले रोगियोंके वातज्वर, कफज्वर, मन्दाग्नि, कंठरोध (कण्ठ रुकना), हृदयका अवरोध, पसीना, रोमाञ्च, शीत और मोह (बेहोशी) सबको नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा नेत्रवाला, दोनों कटेरी, गिलोय, गोखरू, सोंठ, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी और पोहकरमूल—इन ग्यारह दवाओंका काढा वातज्वरवालेको पिलाना चाहिये। वैद्यविनोद कर्त्ताने इसका नाम "भूनिम्बादि क्वाथ" लिखा है। सचमुचही यह उत्तम है।

(११) जवासा, सोंठ, कुटकी, पाठा, कचूर, अड़ूसा और अरण्डकी जड़,—इन सातोंका काढा पीनेसे श्वास और खाँसी तथा शूल समेत वातज्वर नाश होता है।

(१२) सोंठ, नीमकी छाल, धमासा, पाढ, कचूर, अड़ूसा, अरण्डकी जड़ और पोहकरमूल—इन आठोंको जौकुट करके और काढा बनाकर पीनेसे वातज्वर नाश होता है।

(१३) खस, पृष्ठिपर्णी, सोंठ, चिरायता, मोथा, जवासा, दोनों कटेरी, गिलोय और बड़ा गोखरू—इन दसोंको तीन-तीन माशे लेकर जौकुट करलो, पीछे काढा बनाकर शीतल करलो। शीतल होने पर, ३ माशा शहद मिलाकर पिलाओ। अगर ज्वरके एक जानेपर यह काढा दिया जाय, तो ३।४ दिनमें ही वातज्वरको नाश कर देता है। इसको दोनों समय पिलाना चाहिये। यह परीक्षित नुसख़ा है।

(१४) धनिया, लालचन्दन, नीमकी छाल, गुरुच और पद्माख—इनको ६।६ माशे लेकर, डेढ पाव जलमें औटाओ। आधापावके करीब जल रहनेपर मल छानकर शीतल करलो। पीछे शहद मिलाकर दोनों समय पिलाओ। इसके दोनों वक्त पिलानेसे वातज्वर और पित्तज्वर दोनों नाश होते हैं। यह भी परीक्षित है।

(१५) कल्पतरु रस—शुद्धपारा १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, शुद्ध वत्सनाभविष १ तोला, शुद्ध मैनसिल १ तोला, शुद्ध सोनामक्खी

१ तोला, शुद्ध सुहागा १ तोला, सोंठ २ तोला पीपल २ तोला और कालीमिर्च १० तोला—इन ६ चीजोंको तैयार करलो। पहले पारे और गन्धकको छोडकर, वत्सनाभ प्रभृति सातों दवाओंको, सिलपर महीन पीसकर कपडछन करलो। इसके बाद इन सातोंके छने हुए चूर्णको तथा पारे और गन्धकको खरलमें डाल कर ६ घण्टेतक लगातार खरल करो। बस, यही "कल्पतरु रस" है।

"कल्पतरुरस" कल्पवृक्षके समान गुण रखता है। यह वात और कफके रोगोंको नाश करता है। इसकी मात्रा १ रत्ती तककी है। कमजोरोंको दो चाँवल भर देना चाहिये।

अदरखके रसके साथ खानेसे वातज्वर कफज्वर, श्वास, खाँसी, मुँहसे पानी गिरना, जाडा लगना, मन्दाग्नि और विशूचिका (हैजा) नष्ट होता है। इस रसकी नास देनेसे कफ सम्बन्धी और वातसम्बन्धी सिरकी वेदना आराम होती है तथा प्रलाप, मोह और छींक न आना ये सब भी आराम होते हैं।

(१६) त्रिपुर भैरव रस—शुद्ध वत्सनाभ विष १ भाग, सोंठ २ भाग, पीपल ३ भाग, मिर्च ४ भाग, ताँबेकी भस्म ५ भाग और शुद्ध शिङ्गरफ या हींगलू ६ भाग—इन छहोंको एकत्र करके, खरलमें डालकर, अदरख के रसमें खरल करनेसे "त्रिपुरभैरवरस" सिद्ध होता है। यह ज्वरको नाश करता है। इसकी मात्रा आधी रत्ती या ४ चाँवल की है।

नोट (१)—पारा, गन्धक, विष, मैनसिल, सोनामक्खी, सुहागा, हिंगलू ये सब विना शोधे कभी मत लेना। इन सबके शोधनेकी विधि आगे इसी पुस्तकके अन्तमें देखिये।

नोट (२)—प्रथम तो किसीको एकाएकी रस देना ही नहीं चाहिये, क्योंकि आजकलके लोग धातुक्षीणता और गरमी सोजाकके कारणसे

इनको वर्दाश्त नहीं कर सकते और यदि दिये बिना काम न चलता दीखे, तो मात्रा कमती देनी चाहिये। शास्त्रकारोंके समय और अबके समयमें बड़ा फर्क होगया है। जिसकी मात्रा रत्ती लिखी है, उसे २ चाँवलभर देना चाहिये। पीछे यदि रोगी सहजाय, लाभ दीखे तो धीरे-धीरे मात्रा बढ़ा सकते हो। इस तरह काम करनेसे दुःख खड़ा नहीं होता।

वातज्वरमें फुटकर इलाज।



वातज्वरमें अक्सर जाँघोंमे दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें पीड़ा, जुकाम, श्वास, मुँह सूखना, अरुचि, मुखका स्वाद खराब रहना, नींद न आना, पेटमें दर्द, पेट फूलना, कानोंमें आवाज होना और सूखी खाँसी—ये तकलीफें होती हैं। असल औषधि देते हुए इनका अलग-अलग उपाय करनेसे रोगीको बड़ा सुख होता है। इसलिये वैद्यको इनकी शान्तिकी चेष्टा करनी चाहिये।

बालुका स्वेद।



अगर जाँघोंमें दर्द, पसलियों और हड्डियोंमें वेदना, जुकाम, श्वास, बहरापन हो, तो ऐसे लक्षणों वाले वातज्वर अथवा कफज्वरमें वैद्य को स्वेद (पसीना) देना चाहिये, क्योंकि स्वेद—पसीना शरीरकी रस बहानेवाली नाड़ियोंको नरम करके, अग्निको आमाशयमें पहुँचा कर, कफ और वायुके बन्धनको तोड़कर ज्वरको नाश करता है।

बालूको ठीकरोंमें गरम करके, कपड़ेमे बाँधकर, उसकी पोटली बना लो। पीछे काँजीमें बुझाकर बारम्बार स्वेद दो। अथवा एक ठीकरेमें बालूको खूब तपाकर रोगीके पास रक्खो। रोगीको कपड़ा उढ़ाकर, तपी हुई बालू पर काँजीके छींटे मारो। इस तरह बारम्बार

करो । यह बालुका स्वेद वातकफके रोग, सिरका दर्द और शरीरका टूटना प्रभृतिमें बड़ा लाभदायक है। यह कम्प, सिर-दर्द, हृदयका दर्द, शरीरका दर्द जमाई, पाँव सोना, पिंडलियोंका फूटना, शरीरका जड़ हो जाना, ठोडीका जकड़ जाना और रोमोंका खड़ा हो जाना—इन सबको शान्त करता है ।

कवल ।

बिजौरे नीबूकी केशर, सेंधानोन और कालीमिर्च—इनको एकत्र पीसकर, इनका कवल मुँहमें रखनेसे वातसम्बन्धी और कफसम्बन्धी मुँहके रोग, मुँह का सूखना, जड़ता और अरुचि नाश होती है ।

नोट—मन्या, मस्तक कान, मुख और नेत्रोंके रोग, प्रसेक, कण्ठरोग, मुखरोग, हुल्लास, तन्द्रा अरुचि और पीनस—इन रोगोंमें कवल धारण करनेसे विशेष रूपसे लाभ होता है। कल्क आदिक पदार्थको मुखमें रख कर इधर उधर फिराने को "कवल" कहते हैं। कवल में १ तोला भर कल्क लेना चाहिये। पाँच सालकी उम्रके बाद गण्डूष (कुल्ले) और कवलका प्रयोग करना चाहिये ।

दूसरा कवल ।



मिश्री और अनारको पीसकर, उसकी गोली बनाकर, मुखमें रखने अथवा दाख और अनारका कल्क (लुगदी) मुँहमें रखनेसे मुखशोष और मुखकी विरसता दूर होती है ।

तीसरा कवल ।



दाख और आमलोंका कल्क बनाकर मुखमें रखने और उससे मुँह के भीतरका भाग घिसनेसे, लार गिरकर, तालू और गलेका शोष दूर होता है तथा मुखकी विरसता नाश होकर भोजनमें रुचि होती है ।

नोट—गीली या सूखी दवाको सिलपर भाँगकी तरह पीस लेना चाहिये। उस पिसी हुई लुगदी को ही "कल्क" कहते हैं। सूखी दवा बिना जल डाले नहीं पिस सकती, इस लिये जल डालकर पीसनेमें हर्ज नहीं। कल्कमें शहद, घी, तेल आदि डालने हो तो दूने डालने चाहिये अथवा १६ माशे डालने चाहिये। मिश्री और गुड़ बराबर डालने चाहिये तथा पतले पदार्थ चौगुने डालने चाहिये।

निद्रानाश का इलाज।



नींद न आती हो तो निम्नलिखित उपाय करने चाहियें—

(१) भुनी हुई भाँगके चूर्ण को शहतमें मिलाकर रातमें खाओ।

(१) आठ माशे पीपलामूलका चूर्ण गुडमें मिलाकर खाओ।

(३) काकजंघा (मसो) की जड सिरपर धारण करो।

(४) मकोयको जडको सूतमें बाँधकर निरन्तर मस्तक पर धारण करो।

(५) भाँगको बकरी के दूधमें पीसकर पाँवों पर लेप करो।

(६) सिर और पैरोंमें गायका दूध मलो अथवा थोडी देर तक गरम पानी में पैर डुबाये रखखो।

नोट नींद लानेके लिये ये सब उपाय परीक्षित हैं। नींद न आने के कारण, नींदसे लाभ-हानि और निद्रा आनेके जियादा उपाय पीछे पृष्ठ १२२-१२७ में लिख आये हैं।

पेटमें शूल और अफारा।

देवदारू, सफेद बच, कूट, शतावर, हींग और सेंधानमक—इन सबको नीबूके रसमें पीसकर, जरा गरम करके, पेटपर लेप करनेसे पेट का दर्द और अफारा आराम होता है।

कानमें आवाज होना।



पीपल, हींग, बच और लहसन—इन चारोंको कडवे तेलमें पका कर, उस तेलको कानमें डालनेसे, कानमें शब्द होनेकी तकलीफ मिट जाती है।

सूखी खाँसी ।

— (✱) —

पीपल, सुगन्धित वच, अजवायन और पान (ताम्बूल),— इनके साथ पीपलको मुँहमें रखनेसे सूखी खाँसी नष्ट होती है।

रोगनाशक पथ्य ।



(१) श्रम, उपवास और वायुसे पैदा हुए ज्वरमें रसौदन या मांसरस-युक्त भात हितकारी है। रसौदन आमको पचाता है।

(२) अगर वातज्वरमें मल सूख गया हो, कब्ज हो, तो मूँग और आमलोंका यूष देना चाहिये।

(३) अगर वातज्वरमें मूत्राशय, पसली और सिरमें दर्द हो, तो गोखरू और कटेरीके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी ज्वरनाशक पेया देनी चाहिये।

(४) अगर वातज्वरमें श्वास, खाँसी और हिचकी हों, तो लघु या वृहत् पञ्चमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई लाल शालि चाँवलोंकी पेया दो।

(५) जल औटाकर देना चाहिये, क्योंकि कच्चा शीतल जल ज्वरको बढ़ाता है। दिनमें सोना, हवा, मैथुन, मिहनत, भारी भोजन शीतल जल प्रभृति अपथ्योंसे रोगीको बचाना चाहिये।

(६) वातज्वरमें सेरका आधा सेर जल अच्छा होता है। सेरका आध सेर रहा हुआ जल वातनाशक होता है। ऋतुका भी खयाल करना जरूरी है। जलसम्बन्धी बातें पीछे पृष्ठ १२१ १३१ में लिख आये हैं।

काढ़ेकी मात्रा ।

वैद्यको दोष अग्नि, बल, अवस्था व्याधि औषधि और कोठेका विचार करके मात्रा नियत करनी चाहिये। फिर भी, हम, मामूली तौर से, मात्रा बतलाये देते हैं। काढ़ेकी सब दवायें ; अगर अलग

अलग वजन न लिखा हो, तो बराबर-बराबर लेनी चाहियें। सब का वजन मिलाकर जवान के लिये २ तोलेसे ४ तोले तक होना चाहिये, यानी जवानके लिये सब दवाएँ कम-से-कम २ तोला लेनी चाहियें (प्रत्येक दो दो तोला नहीं) और जियादा से जियादा ४ तोले लेनी चाहियें। बालकको ३ माशेसे १ तोले तक लेनी चाहिये। काढेकी दवाओंको जौकुट करके ३ घन्टे तक पानीमें भिगो देना चाहिये, पीछे जोश देना चाहिये। वातकफके रोग में काढा गरमागर्म और पित्त के रोग में शीतल करके पिलाना चाहिये। शहद हमेशा काढेके शीतल होने पर मिलाना चाहिये। काढेके सम्बन्ध की और बातें इसी भागके पृष्ठ १३२—१३५ में देखनी चाहिये। दवा खानेके कायदे और समय जानने के लिये १३१—१३३ पृष्ठ देखने चाहियें।

सूचना।

वातज्वरमें श्वास, खाँसी, हिचकी, दस्तकब्ज, अरुचि प्रभृति कोई उपद्रव हो और उस या उन उपद्रवोंके लिये किसी चलते हुए नुसख़ेकी ज़रूरत हो, तो आप पुस्तकके अन्तमें देखिये। वहाँ ज्वरके दसों उपद्रव और सिर-दर्द, पसलीका दर्द, निद्रानाश प्रभृतिमेंसे हरेक पर दर्जनों उत्तमोत्तम प्रयोग लिखे गये हैं। पेया और यूष वगैर बनानेकी विधि और दस्त लानेवाली फलवर्त्ती प्रभृति अनेक आवश्यक चीजें पीछे पृष्ठ ७१-८६ में लिखी हैं।



पाँचवा अध्याय

पित्तज्वरकी चिकित्सा ।



पित्तकोपके कारण ।

गरम, खट्टे नमकीन, खारी, चरपरे और बदहजमी करनेवाले पदार्थोंके जियादा खाने, तेज धूपमें या आगके सामने रहने अधिक मिहनत करने, क्रोध करने और कभी कम और कभी अधिक खानेसे पित्त कोप करता है। पित्तके कुपित होनेसे पित्तज्वर प्रभृति पित्त के रोग होते हैं ।

पित्तज्वर कैसे होता है ?



ऊपर लिखे कोपकारक आहार विहारोंसे दूषित हुआ पित्त, आमाशय में जाकर, आहारके सारभूत रसको दूषित करता है। उस समय रस और पसीनोंका प्रवाह रुक जाता है तथा पित्तके पतला होनेके कारण जठराग्नि मन्दी हो जाती है और उसकी गरमी बाहर निकलने लगती है, यानी पित्त गरमीको निकालकर, अकेला मालिक बनकर पित्तज्वर उत्पन्न करता* है।

---

* कहते हैं —

पित्त पंगु कफ पंगु पंगवो मलधातव ।
वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत् ॥

पित्त लूला है कफ लूला है, मल और धातु भी लूले हैं, इसलिये वायु उनको

पित्तज्वरके पूर्वरूप ।



पित्तज्वरके आनेसे कुछ पहले, पहले तो थकान सी जान पड़ती है और पीछे आँखोंमें जलन होती है।

पित्तज्वरके लक्षण ।

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः ।
कण्ठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥
प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्च्छादाहो मदस्तृषा ।
पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एव च ॥

ज्वर तेज हो, दस्त पतला हो, * नींद कम आवे, वमन या कय हो अथवा उबकाइयाँ आवें †, कण्ठ होठ और नाक मुँह पक जायँ, पसीना आवे, रोगी बकवाद करे, मुखका स्वाद कड़वा रहे बेहोशी हो, पेट या सारे शरीरमें जलन हो, नशासा जान पड़े, प्यास जियादा

जहाँ लेजाता है वहीं ये बादलोंकी तरह चले जाते हैं। जब यही बात है, तब सवाल पैदा होता है कि, लूला पित्त कोठेकी अग्निको बाहर कैसे ले जाता है?

बेशक पित्त लूला है, किन्तु वह वायुकी मददसे कोठेकी अग्निको बाहर लेजाता है, क्योंकि कोई भी रोग केवल एक दोषसे नहीं होता। कहा है —

द्रव्यमेकरसं नास्ति न रोगोऽप्येकदोषजः
, एकस्तु कुपितो दोषः इतरानपि कोपयेत्

संसारमें कोई चीज एक रसवाली नहीं है और रोग भी एक दोषसे नहीं होता। एक दोषके कुपित होनेसे दूसरे दोष भी कुपित हो जाते हैं।

* पित्तज्वरमें अतिसार नहीं होता, किन्तु पित्तके पतले होनेके कारण पतला दस्त होता है। अतिसार तो ज्वरका उपद्रव है। ज्वरमें दस्तोंको फौरन ही नहीं रोकना चाहिये। अगर कई दिन होनेसे भी बन्द न हो, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये, किन्तु ज्वर और अतिसार की दवाएँ मिलाकर न देनी चाहिये, क्योंकि ज्वरकी दवाएँ भेदक और अतिसारकी दवाएँ स्तम्भक होती हैं। ये परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं।

† जब पित्त कफके स्थानमें जाता है, तब वमन होती है।

लगे, पाखाना, पेशाब और नेत्र पीले हों तथा भौंर या घुमेर सी आती हो।

"चरक" में लिखा है—ज्वरका एक साथ चढ़ना और बढ़ना, शरीर में वात कफका प्रभाव (सरदी वगैर) न रहना मूँहका स्वाद कड़वा होना नाक मुख कण्ठ होठका पकना यानी इनका रङ्ग वैसाही हो जाना जैसा फोड़ा वगैर के पकने पर हो जाता है, प्यास, भ्रम, मोह, मूर्च्छा होना, पित्तकी हरी हरी वमन होना, अतिसार होना, भोजन में अरुचि होना पसीने आना, ज्ञानयुक्त प्रलाप—बकवाद * करना शरीरमें लाल लाल चकत्ते उठना, नख, नेत्र मुख, मूत्र, मल और चमड़ेका रङ्ग पीला हल्दीकासा या हरासा होना, अत्यन्त गरमी लगना, एकदमसे दाह या जलन होना और शीतल वस्तुओंकी इच्छा होना—ये लक्षण "पित्तज्वर"में होते हैं।

पित्तज्वरके कारणरूप गरम और नमकीन प्रभृति पदार्थों से ज्वर बढ़ता है और उनके विपरीत शीतल और मीठे प्रभृति पदार्थों से घटता है।

कन्टिन्यूड फीवर।

जिसको वैद्यकमे पित्तज्वर और यूनानी हिकमतमे सफरावी ताप कहते हैं, उसीको अँगरेजीमें कण्टिन्यूड फीवर (Continued Fever) कहते हैं। यह ज्वर दो तरहका माना गया है— (१) कॉमन कण्टि न्यूड (Common Continued) (२) आरडेन्ट कन्टिन्यूड (Ardent Continued) कॉमन कन्टिन्यूडमें जीभ खुष्क रहती है

* पित्तके कारणसे जो प्रलाप होता है, उसम रोगीको सब ज्ञान रहता है। वह समझता है कि, मै वृथा आनतान बकता हूँ, किन्तु वातकफके प्रलापमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता, वह बेहोशीमें बकता है। मूर्ख वैद्य पित्तके प्रलापको भी वात-कफका समझकर गरम दवाएँ देदेकर रोगीको मार डालते हैं। पहचान साफ है।

शरीर गर्म रहता है,—पेशाब कम उतरता है और पसीना नहीं आता तथा बिना शीत लगे ज्वर चढता है।

आरडेण्ट कन्टिन्यूडमें—चेहरा लाल हो जाता है, सिर घूमता है, दीपककी रोशनी और आवाज ये बुरे लगते हैं, शरीर बहुतही गरम होता है, नाडोकी चाल बहुत तेज होती है, हडफ़ूटन होती है, कयमे पित्त निकलता है, कभी दस्तकब्ज रहता है, कभी पित्तके दस्त आते हैं, पेशाब कम उतरता है और रङ्गतमें लाल या पीला होता है सिरमे दर्द होता है, जीभ पोली या लाल हो जाती है,—पर किनारों पर से मैली रहती है, कभी कभी भ्रम होता है। इसमें ऊपरवाले कॉमन कन्टिन्यूड फीवरसे गरमी बहुत अधिक रहती है।

ये दोनों तरहके ज्वर मौसम बदलने या जियादा गरमी होने या धूपमें फिरने, अधिक मिहनत करने, बहुत नशा करने, पाखाना पेशाब रोकने और रञ्ज शोक या फिक्र करनेसे होते हैं।

पित्तज्वरमें नाडी और नेत्र प्रभृति।



पित्तज्वरमें नाडी मेंडक और कव्वा प्रभृतिकी तरह फुदक फुदक कर बडी तेजीसे जल्दी जल्दी चलती है और कठिनाईके साथ जल्दी-जल्दी फडकती है। पित्तका समय न होनेसे कुछ धीमी हो जाती है, किन्तु शरद् ऋतु भोजन पचनेके समय, दोपहर और आधीरातको—पित्तके समयमें—इतनी तेजी से चलती है कि, बयान नहीं कर सकते। ऐसा जान पडता है, मानो नाडी मासको चीरकर बाहर निकल जायगी।

पित्तज्वरमें दस्त पतला और पीला होता है। पेशाब भी पीला होता है। आवाज साफ होती है। शरीर गरम और कुछ पीला होता है। जीभ लाल, कडवी, जली हुई सी, दाहयुक्त और काँटों से घिरी हुई होती हैं। मुखका स्वाद कडवा या चरपरा रहता

है। चेहरा लाल, पीला और गरम होता है। नेत्र पीले, नीले, लाल और गरम होते हैं तथा चिरागकी रोशनीको बर्दाश्त करनेमें असमर्थ होते हैं।

पित्तज्वरके पैदा होने और बढनेका समय।

—※★※—

पित्तज्वर भोजन पचनेके समय, दोपहरके समय, आधीरातको और शरद् ऋतुमें प्रकट होता और बढता है।

पित्तज्वरमें लंघन।

—※★※—

पित्तज्वर में रोगीका बलाबल देखकर लंघन कराने चाहिये। रोगीके बलके विरुद्ध लंघन कराना हानिकारक है। रोगी को २।३ लंघन कराकर हलका पथ्य देना चाहिये। ज्वरकी हालतमें भी रोगीको पथ्य, पर अत्यन्त हलका पथ्य,देनेकी सलाह सभी आचार्यों ने दी है। पित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया पानी रोगीको पिलाना चाहिये। लंघनमें जल देना मना नहीं है। पर हाँ, ज्वर में थोडा जल पिलाना हित है। बहुत जल कफ और पित्त हो जाता है। चतुर वैद्यको इसी भागके ८७—११० के पृष्ठ देख कर और बुद्धिसे विचार कर काम करना चाहिये।

पित्तज्वर पकनेकी अवधि।

—※★※—

पित्तज्वर दस दिनमें पकता है। ग्यारहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनेका नियम है। कच्चे ज्वरमें रोगनाशक औषधि न देनी चाहिये। कच्चे ज्वरमें औषधि देनेसे ज्वर प्रचण्ड रूप धारण करता है। ज्वरके आमसहित—कच्चा होनेपर भी, सातवें दिन पाचन देनेका नियम है। अगर ज्वर आमरहित यानी पका हो तो शमन औषधि देनेका विधान है। अगर रोगी कमजोर हो या थोड़े दोषवाला हो, तो पहले ही शमन औषधि देनेका विधान है।

चिकित्सा।

—:*:—

पित्तज्वरमें पाचन।

(१) कुटकी, नागरमोथा, इन्द्र जौ, पाढी और कायफल—इन पाँचोंको बराबर बराबर लेकर, काढ़ेकी विधिसे काढ़ा बनाना चाहिये। पक जानेपर मलछान, मिश्री या चीनी मिलाकर और शीतल करके पी जाना चाहिये। भावमिश्रजी लिखते हैं,—यह "तिक्तादि क्वाथ" पित्तज्वर पर अच्छा पाचन है।

नोट—शार्ङ्गधर महोदय लिखते हैं,—तेज पित्तज्वरके दस दिन बीतने पर, अगर यह पाचन दिया जाय, तो पित्तज्वर नाश हो जाय। वङ्गसेन भी इससे पित्तज्वरका दूर होना लिखते हैं।

यह पाचन परीक्षित है। दसवें दिन से आरम्भ करके ३ दिन तक देना चाहिये। इस से पित्तज्वर पच जाता है।

(२) हल्दी नीमकी छाल, गिलोय, धनिया और सोंठ—इन पाँचोंको समान समान लेकर, काढ़ा बनाकर और उसमें गुड़ मिलाकर पीनेसे पित्तज्वर में मनुष्यको सुख होता है।

पित्तज्वर नाशक नुसखे।

—:*:—

(१) पित्तपापड़ा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धनिया और फूलप्रियङ्गु,—इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, चीनी मिलाकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "पर्पटादि क्वाथ" है।

(२) दाख, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, अमलताश और पित्तपापड़ा— इन छहोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे, पित्तज्वर, मुँहका सूखना, आन तान बकना, पीड़ा, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और रक्तपित्त ये सब शान्त होते हैं। यह काढ़ा दस्तावर है। इसका नाम "द्राक्षादि क्वाथ" है।

नोट—यह नुसखा हमारा कितनी ही बारका आजमाया हुआ है, इसमें हम सुगन्धवाला और मिलाते हैं। इस तरह ये सात दवाएँ हो जाती हैं। अमलतासका गूदा, कुटकी और हरड़को तीन तीन माशे लो और शेष चार दवाओंको छै-छै माशे लो। कुल ٦॥ तोले दवाएँ लेकर, काढ़ा बनाकर, दोनों समय, पिलानेसे निश्चय ही लाभ होता है।

(३) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धनिया और महुआ—इन चारोंके काढ़ेमें शीतल होने पर, शहद डालकर पीनेसे—पित्तज्वर, दाह और घोर प्यास नष्ट हो जाती है। इस काढ़ेका नाम "पटोलादि क्वाथ" है।

(४) गिलोय, आमले और पित्तपापड़ा— इन तीनोंको समान-समान लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे दाह, शोष—मुँह सूखना—और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। यह "गुड्च्यादि क्वाथ" है।

(५) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें, पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे पित्तज्वर शान्त होता है।

(६) पित्तपापड़ा, लालचन्दन, खस और सोंठ—इन चारोंका काढ़ा भी पित्तज्वरको नाश करता है। परमोत्तम नुसखा है।

नोट—शार्ङ्गधरने "खस"के स्थानमें "नेत्रबाला" लेना लिखा है।

(७) केवल पित्तपापड़ेका काढ़ा पीनेसे दाह, शोष और भ्रम सहित पित्तज्वर नाश होता है। अगर पित्तपापड़ेके साथ लालचन्दन, खस और सुगन्धवाला भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या है?

(८) सुगन्धबाला, लालचन्दन, खस, नागरमोथा और पित्तपापड़ा— इनका पकाया हुआ जल अत्यन्त शीतल करके पिलानेसे प्यास,

वमन, दाह और ज्वर शीघ्र ही नाश होते हैं। इसका नाम "ह्रीबेरादि क्वाथ" है।

नोट—यह काढ़ा भी आजमाया हुआ है। अगर दाह बहुत हो, तो इसे अवश्य दो। इन पाँचों दवाओंको ६।६ माशे लेकर १ पाव जलमें भिगो दो। पीछे काढ़ेकी रीतिसे औटाओ। आधा रहने पर उतारकर और खूब शीतल करके १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाओ। अगर दो तीन दिनमें इससे लाभ न हो, तो काढ़ा मत बनाओ। रातको इन्हीं पाँचों दवाइयोंको भिगो दो। सवेरे मलछानकर और १ तोला मिश्री मिलाकर पिला दो। आगे नं० १५, १६ और १७ में ऐसे ही "हिम" लिखे हैं। जब औटाये हुए काढ़े से लाभ न हो, दाहका जोर हो "हिम" देना चाहिए।

(९) चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रजौ, गिलोय, सुगन्धवाला, धनिया और बेलगिरी—इनका काढ़ा बना, मलछान शीतल कर, शहद मिलाकर पिये, तो मलभेद, श्वास, खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश हो। इसका नाम "भूनिम्बादि क्वाथ" है।

(१०) दाख, लालचन्दन, कमल, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, आमले, सुगन्धवाला, खस, लोध, इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, फालसे, फूलप्रियगू, जवासा, अडूसा, मुलेठी, बेर, चिरायता, और धनिया—इन २० औषधियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, प्रलाप, आनतान बकना, रक्तपित्त, भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, वमन, शूल, मुख शोष, अरुचि, खाँसी, श्वास और उबकाई—ये सब नाश होते है। इस काढ़ेका नाम "महाद्राक्षादि क्वाथ" है।

(११) रातके समय "धनिया" भिगो दो। सवेरे काढ़ा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इससे थोड़े ही समय में भीतरके दाह समेत पित्तज्वर नष्ट होता है। इसे 'धान्याक क्वाथ" कहते हैं।

(१२) गिलोय, चिरायता, सुगन्धवाला, खस, मोथा, निसोथ, आमले, दाख, अडूसा और पित्तपापड़ा—इन दसोंका काढ़ा बनाकर, शहद

के साथ, प्रात:कालमें, पीनेसे उपद्रव सहित घोर पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१३) जवासा, अड़ूसा, कुटकी, पित्तपापड़ा, फूलप्रियगू और चिरायता—इन छहोंके काढ़ेमें मिश्री या खाँड डालकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्त सहित पित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "दुरालभादि क्वाथ" है।

नोट—यह नुसखा आजमाया हुआ है। इन सब दवाओंमेंसे पाँच-पाँच माशे लेकर काढ़ा बनाकर, १ तोले मिश्री डालकर पिलाओ।

(१४) गिलोयका सत ६ माशे बूरेके साथ खानेसे पित्तज्वर नाश होता है।

(१५) गिलोयको जौकुट करके, छैगुने जलमें, रातके समय, मिट्टीकी कोरी हाँडीमें भिगो दो, सवेरे उस जलको छानकर मिश्री मिलाकर पीजाओ। इसे "हिम" या "शीत कषाय" अथवा "ठंढा काढ़ा" कहते हैं। इससे पित्तज्वर नष्ट होता है।

(१६) अड़ूसेको रातके समय ६ गुने जलमें, मिट्टीकी कोरी हाँडीमें भिगो दो। सवेरे मल छानकर, उसमें मिश्री या चीनी मिलाकर पिलाओ। इससे खाँसी, रक्तपित्त और पित्तज्वर नाश होता है। इसे "वासाहिम" कहते हैं।

(१७) आमले और गिलोय—इन दोनों को, रातके समय, कोरी हाँडीमें, दवासे ६ गुना जल डाल कर भिगो दो। सवेरे छान कर, उस पानीमें खाँड या शहत डाल कर पिला दो। इस उपायसे पित्तज्वर, प्यास, दाह, भ्रम और मूर्च्छा प्रभृति उपद्रव शान्त होते हैं।

(१८) सफेद कमलकी पखड़ी, मुलहटी और मिश्री का काढ़ा पित्तज्वरको नाश करता है।

(१९) धनिया, अड़ूसा, आमला, काले मुनक्के और पित्तपापड़ा

—इन पाँचों को अढाई तोले लेकर, मिट्टीकी हाडीमें, पाव भर-जलमें रातको भिगो दो। सवेरे इसका जल छान कर रोगीको पिलाओ, इससे पित्तज्वर का दाह और प्यास दोनो आराम होते हैं।

(२०) धनिया रातके समय जलमें भिगो दो। सवेरे जलको छान कर, उसमें १ तोला मिश्री डालकर पिलाओ। इससे दाह नाश होता है।

(२१) हरड को पीस कर, शहदमे मिलाकर रोगीको चटाओ। इस उपायसे दाह, खाँसी, ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प श्वास, और वमनमें निश्चयही लाभ होता है।

(२२) सफेद कमलकी पाँखडी, मुलहटी और मिश्री का काढा शीतल करके पीनेसे पित्तज्वर आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—जब ११२ दिन पित्तज्वरनाशक औटाये हुए काढे देने से लाभ न हो, दाह और प्यास का जोर बना रहे, तब नं० ८ को 'हिम' की रीति से बिना औटाये पिलाओ अथवा नं० १५।१६। १७।१८ प्रभृतिके हिम पलाओ।

काढा बनाने की विधि।



काढा बनाने और पिलाने कि विधि और काढे मे शहद या खाँड वगैर मिलाने का नियम जानना चाहो, तो इसी भाग के पृष्ठ १३१-१३३ तथा पृष्ठ १७३-७४ मे "काढे की मात्रा" शीर्षक नोट देखो।

दाहनाशक ऊपरी उपाय।



"सुश्रुत उत्तरतन्त्र" अध्याय ३९ में लिखा है —

दाहाभिभूते तु विधिं कुर्याद्दाहविनाशनम्।

हर तरहके बुखारमें, दाह होने पर अवश्य दाहनाशक उपाय करना चाहिये।

(१) दाहवालेको अगर बहुत कष्ट हो, तो नीमके पत्तोंका जल पिला कर वमन करा दो। इस उपायसे बड़ी जल्दी लाभ होता है। अगर रोगी ताकतवर हो, वमन सह सकता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते बलाबल अनुसार एक या दो तोले लेकर महीन पीस लो। पीछे पाव डेढ पाव शीतल जलमें भाँगकी तरह छान लो। उस पानीको रोगीको पिला कर, अँगुली डाल कर, वमन करा दो। अगर जरूरत समझो, तो ६ माशे शहद और २ तोला शक्कर भी मिला दो। इससे वमन होते ही लाभ होगा। परीक्षित उपाय है। अगर रोगी वमनके योग्य न हो, वमनसे बहुतही घबराता हो, तो ऊपर न० २१ में लिखा हरड और शहदका प्रयोग करो। हरड का चूर्ण चार या छै माशे लेकर शहदके साथ २।३ बार चटाओ।

(२) नीमके पत्तोंका रस निकाल कर और उसमे झाग उठा कर, दाहवालेके शरीर पर मलो, अवश्य दाह नाश होगा। परीक्षित है।

(३) ढाकके नम-नर्म पत्तोंको नीबूके रसमें पीस कर, दाहवालेके शरीर पर या जहाँ जहाँ दाह हो लेप कर दो।

(४) बेरके पत्तोंको नीबूके रसमें पीस कर लेप करो।

(५) नीमके पत्तों को भी नीबूके रसमें पीस कर लगाने से लाभ होता है। नीमके नर्म-नर्म पत्तोंके झागोंके लगानेसे हमने कई बार अपूर्व चमत्कार देखा है।

(६) सौ बार का धोया हुआ घी शरीरमें मलनेसे दाहमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(७) बेरके पत्तों को पीस कर, एक बाल्टी जलमें घोल दो। पीछे मथ मथ कर झाग उठाओ, इन झागोंको दाहवालेके शरीर पर लगाओ।

(८) उत्तम मनोहर निर्मल आकाशकी समान साफ़, चन्द्रमा की किरणोंसे शीतल जिसमें चन्दन और खस वगेरः के जलका छिडकाव हो रहा हो, फव्वारे चल रहे हों—ऐसे घरमें पित्तज्वरके दाहवालेको सुलाओ ।

(६) जिनके स्तनों पर कपूर चन्दनादिका लेप हो रहा हो, नीले रेशमी कपडे पहने हो, गलेमें फूलोके हार पडे हो हीरा पन्ना प्रभृति रत्नोंके गहने जिन्होंने पहन रखे हो, जो मन्द-मन्द हँस रही हो—ऐसी स्त्रियोको शरीरसे लिपटानेसे भयङ्कर दाह शान्त होता है , पर रोगीके मनमें मैथुनकी इच्छा होतेही, स्त्री या स्त्रियोको फौरन अलग कर दो ।

(१०) पित्तज्वर रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसी या ताम्बे का एक गहरा वासन रक्खो । उसमें खूब शीतल जलकी धारा ऊपरसे इस तरह ढालो कि, पानी बर्तन में ही पडे । इस उपायसे तत्काल दाह और ज्वर शान्त हो जाता है ।

(११) काँजीमें कपडा भिगो कर, रोगीको उढाओ अथवा गायके माठेमें कपडा उकाल कर और शीतल करके रोगीको उढाओ । इन उपायोसे भी दाह शान्त होता है ।

(१२) भौंरोंकी कतार, बालकोकी मीठी-मीठी तोतली बोली, तोता मैनाका मधुर स्वर, फूलोसे लदे हुए वृक्ष, बागकी हरियाली, यौवनके मदसे मतवाली हँसती हुई स्त्रियाँ—ये सब दाहको निश्चय ही नाश करते हैं ।

(१४ विदारीकन्द, लोध, कैथ, बिजौरा और अनार—इनमेंसे सब या जो समय पर मिले , उनको पीसकर तालूपर लेप करो । हारीत कहते हैं,—इस लेपसे दाह, बेहोशी और प्यास नाश होती है ।

कवल।

पित्तज्वरमें दाख और आमलोंके कल्कका कवल हितकारी है। पके अनारके कल्कका कवल अथवा केवल धनियाके कल्कका कवल भी हितकारी है।

अगर जीभ, तालू, गला, मुख, कण्ठ, प्यासका स्थान और मस्तक में शोष हो—ये सूखे जाते हों, तो बिजौरे नीबूकी केशरको शहद और सेंधे नमकमें मिलाकर सेवन करो या मुखमें रक्खो। हारीत ऋषि कहते हैं—बिजौरे नीबूकी केशर, शहद और सेंधेनोन को एकत्र पीसकर, तालूपर लेप करनेसे जीभ, तालू, गला, मुख, कण्ठ प्रभृतिका सूखना मिटता है और शीघ्रही पित्तज्वर शान्त होता है।

नोट—कवलके सम्बन्धमें पीछे १७१ पृष्ठ में लिखा हुआ नोट देखिये।

गण्डूष या कुल्ले।

हरड़, फूलप्रियंगू, पीपल, लोध, दारूहल्दी, हल्दी और तेजबल— इनको जलमें भिगोकर, शहद मिलाकर, बारम्बार कुल्ले करनेसे मुखका कड़वापन नाश होता है, मुँहके सारे रोग नाश होते हैं, मुँहमें निर्मलता और अन्नमें रुचि होती है।

नोट—काढ़े वगैर पतले पदार्थोंको मुँहमें भरकर जैसाका तैसा रहने दो और पीछे मुखसे गिरा दो। इसीको "गण्डूष या कुल्ला" कहते हैं। अगर गण्डूषके काढ़ेमें चूर्ण मिलाना हो, तो ८ माशे मिलाना चाहिये। स्वस्थचित्त बैठकर, तीन पाँच या सात कुल्ले करने चाहियें अथवा जब तक मुँहमें कफ भर-भर आवे, नाक आँखसे पानी वगैर निकले या कपाल, गले तथा मुँहमें जरा जरा पसीने आने तक कुल्ले करने चाहिये। मुखरोग नाश करनेमें गण्डूष परमोत्तम उपाय है।

तर्पण।

दाह और कम्पसे पीड़ित, दुर्बल और निराहार तथा प्यासे ज्वर

रोगीको खीलेके सत्तूमें मिश्री और शहद डालकर पिलाओ। खीलों के सत्तूको शीतल जलमें घोलकर ऊपरसे अन्दाजका शहत और मिश्री मिलाकर, पिलानेसे वमन, अतिसार, प्यास, दाह, विष, बेहोशी और ज्वरका नाश होता है। (देखो पृष्ठ ८५।)

पित्तज्वरमें चीनी मिलाकर मूँगके यूपके साथ भात खिलाना चाहिये अथवा पीछे ८३ वें सफेमें लिखी पित्तज्वर नाशक पेया देनी चाहिये।

नोट—पित्तज्वरमें देने योग्य यूष, भात और औषधियोंके पानी प्रभृति पीछे लिखे है, वहाँ देख लो और जो समय पर उचित जँचे वही दो।

पानी।

पित्तज्वरमें भी गरम किया हुआ जल शीतल करके दो। जलको औटाकर रख दो, आपही शीतल हो जाय तब दो, अपनी किसी चेष्टासे शीतल मत करो। गरम करनेसे पानीके सब दोष नाश हो जाते हैं। गरम किया हुआ जल जल्दी पचता है और ज्वर को नाश करता है। पित्तज्वरमें ऋतुके अनुसार औटाकर जल दो। साधारणतया पित्तज्वरमें सेरका तीन पाव जल अच्छा होता है। ऐसा औटा हुआ जल पित्तनाशक है।

सूचना।

(१) ज्वरोंमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह प्रभृति दस उपद्रव होते हैं तथा सिरमें दर्द होता है। इनके उपाय पुस्तकान्तमें लिखे हैं। जरूरत पड़नेसे देख लेना।

(२) पित्तज्वरके आराम होनेपर भी अगर कुछ पित्त बाकी रहजाय, तो उसको अवश्य शान्त कर देना चाहिये, क्योंकि जरासा रहा हुआ पित्त फिर ज्वर पैदा कर देता है। पित्तके शेष रह जानेसे अक्सर विषम ज्वर हो जाते हैं। "सुश्रुत" उत्तरतन्त्रमें, ऐसे मौके पर,

ईखका रस या शीतल शर्बतका पिलाना हितकर लिखा है। शास्त्रोक्त शर्करोदक बनानेकी विधि पृष्ठ ७६ में लिख आये हैं, गन्ना चूसने और शर्करोदक पीनेसे बाकी रहा हुआ पित्त निश्चयही शान्त हो जाता है। कफ और वायुका शेष अंश पसीने दिलाने और मालिश करानेसे आराम हो जाता है।

डाक्टरी मतसे

कन्टिन्यूड फीवर या पित्तज्वरकी चिकित्सा।

(१) कामन कन्टिन्यूड फीवरमें हलका जुलाब देकर "फीवर मिक्सचर" देना चाहिये।

(२) आरडेन्ट कन्टिन्यूडमें रोगीके पास दीपक वगैर की रोशनी न रखनी चाहिये और न ज़ोरसे बोलना, चीखना-चिल्लाना चाहिये। केलोमेलसे कड़ा जुलाब देकर "टारटा एमेटिक मिक्सचर" देना चाहिये। पानीमें सिरका मिलाकर, उसमें कपड़ा भिगोकर, उस कपड़ेसे कभी कभी शरीर पोंछना चाहिये।

हिकमतके मतसे

पित्तज्वर या सफरावी तपका इलाज।

(१) शाहतरा (पित्तपापड़ा), लालचन्दन, नेत्रबाला और सोंठ—इन सब को चार चार माशे लेकर इनका काढ़ा ३।४ दिन पिलानेसे ताप भाग जाता है।

(२) शरबत बजूरी या शर्बत नीलोफर पानीमें मिलाकर पिलानेसे भी लाभ होता है। शर्बत बजूरी पित्तज्वरकी गरमी शान्त करनेमें बहुतही उत्तम है।

(३) गिलोय शाहतरा, धनिया, मुलहटी, काकड़ासिंगी, खस लाल-चन्दन, नीमके पत्ते और परवलकी मींगी—सबको सवा चार चार माशे लेकर, आधासेर पानीमें औटाओ। आधा पाव पानी रहनेपर, मल-छानकर पिला दो। इस तरह दोनों समय पिलाओ। यह जुशांदा गरमी या पित्तके नये और पुराने दोनों ज्वरोंको आराम करता है।

(४) खमीरा खसके चाटनेसे भी पित्तज्वर और प्यासमें लाभ होता है। अगर तपेदिक़में देना हो, तो दो दिन तक इसमें ४ रत्ती कपूर मिलाकर दो। अगर अतिसारमें देना हो या मलको नर्म करनेको देना हो, तो इसमें ६ माशे वंशलोचन मिला दो। यह खमीरा परमोत्तम चीज है। (५) शर्बत बनफशा देनेसे दाह, ज्वर, प्यास और खाँसी आराम होती है। शर्बत इमली दाह, प्यास और पित्तको शान्त करनेमें एकही है। शर्बत आलू बुखारा कफको नाश करता है, दाह और प्यास शान्त करता है तथा पित्तको नीचेकी राहसे निकालता है। नारङ्गीका शर्बत प्यास और गरमीके सिरदर्दमें फायदा करता है। मीठे अनारका शर्बत ज्वर और प्यासको शान्त करता है। शर्बत हरड ज्वरको शान्त करता है और दस्त लाता है। शर्बत गुलाब पित्तको दस्तसे निकालता है। शर्बत गावजवाँ दिलके लिये मुफीद है और वातपित्त प्रकृतिवालोंको अच्छा है। जवारश जरश्क मेदे में ताकत लाती है, आँतों और कलेजेको मजबूत करती है, गरमी और प्यासको शान्त करती है तथा खूनकी गरमीको शान्त करती है। सिकञ्जबीन बजूरी सर्द कलेजेके रोगोंको हित है। सिकञ्जबीन बजूरी मुअतदिल है, तिल्ली, मसाने और कलेजेके रोगोंको मुफीद है। कमोनी मुसहल मामूली दस्त लाती और पित्तको नाश करती है।। सिकञ्जबीन सादा प्यासको नाश करती है। ये सब चीजें पित्तज्वरमें लाभदायक हैं। जैसी जरूरत हो, विचारके साथ देनेसे पित्तज्वरकी सब तकलीफें रफा होती हैं। ये सब चीजें अत्तारों की दूकानों पर तैयार मिलती हैं।

(६) बबूलका गोंद, भुनाहुआ वंसलोचन, जाविती, मुलेठीका सत्त और कहरुबा—ये सब ६।६ माशे, ईसबगोल १तोले, भुनाजीरा १तोले भुना धाकला १ तोले—इन आठोंको कूटपीस और छानकर रख लो। ४।४ माशे चूर्ण सवेरे शाम खानेसे खून और पित्तके दस्त निश्चयही आराम हो जाते हैं।

नोट—मुलहटी छिली हुई लेनी चाहिये और ईसबगोलको कूटना न चाहिये। इसका लुआब काम में लाना चाहिये अथवा योंही बिना कूटे काममें लाना चाहिये। काढ़े में दवा २ से ४ तोले तक लेनी चाहियें। काढा १६ गुने जलमें औटाना चाहिये। आधा जल रहने पर उतार लेना चाहिये। छान कर और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये।

(७) पपरिया कत्था ४ तोले, कपूर १ तोले - इन दोनोंको पीसकर, गोंद का पानी डालकर बेरके बराबर गोलियाँ बनालो। एक गोली रोज खानेसे पित्तकी खाँसी शान्त होती है।

नोट—कासमर्दन बटी चूसनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती हैं। (देखो "स्वास्थ्यरक्षा" पृष्ठ ३३१)

छठा अध्याय

कफज्वरकी चिकित्सा ।



कफ कुपित होनेके कारण ।



चिकने, मीठे, भारी, शीतल, लिबलिबे, खट्टे और नमकीन पदार्थोंके सेवन करने, दिनमें सोने और परिश्रम न करने प्रभृति कारणोंसे कफ कुपित होकर कफज्वर आदि रोग उत्पन्न करता है ।



कफज्वर कैसे होता है ?



कफकारी आहार विहारोंसे कुपित होकर, कफ आमाशयमें आकर, रसको दूषित करके और कोठेकी अग्निको बाहर निकालकर, आप स्वतन्त्र हो कर, कफज्वर करता हैं ।



कफज्वरके पूर्वरूप ।



जब कफज्वर होनेवाला होता है, उससे कुछ पहले थकान प्रभृति मालूम होती हैं । उसके बाद अन्नमें अरुचि हो जाती हैं ।

कफज्वरके लक्षण।

—※—

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्य मधुरास्यता।
शुक्लमूत्रपुरीषत्वम्स्तम्भस्तृप्तिरथापि च॥
गौरव शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता।
प्रतिश्यायोरुचि कास कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता॥

शरीर गीले कपडेसे ढकासा जान पड़े, मन्दा-मन्दा ज्वर हो, आलस्य हो, मुँहका स्वाद मीठा हो, मलमूत्र सफेद हो, सारा बदन जकड रहा हो, पेट भरासा मालूम हो, खानेकी इच्छा न हो, शरीर भारी हो, जाडासा लगे, जी सा मिचलावे, रोएँ खडे हो जायँ, नींद बहुत आवे, जुकाम हो, भोजनमे अरुचि हो, खाँसी आती हो और नेत्र सफेद हों—ये लक्षण कफज्वरमें होते हैं। इनके सिवाय, देहमें वेदना, मुँहसे पानी गिरना, सफेद फुन्सी होना, वमन होना, तन्द्रा होना, जाड़ा लगना, गरमी अच्छी मालूम होना, मन्दाग्नि होना और हृदय या छातीका कफसे लिहसासा मालूम होना प्रभृति लक्षण औरभी होते हैं।

"चरक"में लिखा है,—शरीरमें वातपित्तका प्रभाव न रहे, ज्वर एक दमसे आवे और बढे, देह भारी हो, अरुचि हो, कफ गिरे, मुँहका स्वाद मीठा हो, नींद बहुत आवे, तन्द्रा और श्वास हो खाँसी और जुकाम हो, नेत्र, नाखून, मुँह, मल, मूत्र और चमडेका रङ्ग अत्यन्त सफेद हो, देहमें सफेद फुन्सियाँ हों और उनमे खुजली चले और गरमीकी इच्छा हो इत्यादि लक्षण कफज्वरमें होते हैं। चिकने, मीठे, शीतल प्रभृति गुणवाले पदार्थों से रोग बढता है और रूखे कडवे गरम प्रभृति गुणवाले पदार्थों से घटता है।

हारीतने पसीने आना, कानोंके छेदोंका रुक जाना, आँखोंका आधा पीला और आधा सफेद मिलासा रग होजाना, बँधा दस्त आना प्रभृति लक्षण कफज्वरके लिखे हैं।

हिकमतसे कफज्वरके लक्षण।

इसे हिकमतमें बलग़मी ताप कहते हैं। इसमें ताप, सिरदर्द, शरीर भारी और जबान सफेद होती है। किसी-किसीके मुँहसे पानी भी आता है। इस बुखारमें पेशाब बहुत होता है।

कफज्वरमें नाड़ी और मूत्र प्रभृति।



कफ ज्वरमें नाड़ी हंस या हाथी या गजगामिनी स्त्री की तरह धीरे धीरे झूमती हुई चलती है। कफके समय यानी वसन्त, प्रातःकाल, सन्ध्याके बाद, भोजन करते-करते—कफकी नाड़ी उसी तरह हंसकीसी चालसे चलती है। छूनेमें ऐसी मालूम होती है, जैसी गरम जलमें भीगी हुई रस्सी शीतल जान पड़ती है अथवा तन्तुओंके समान सूक्ष्म, मन्दी चालवाली और शीतल जान पड़ती है। उसी तरह मल या अजीर्णमें भी बहुत नहीं फड़कती।

कफज्वरमें दस्त सफेद और मिकदारमें जियादा होता है। पेशाब जियादा कुछ सफेद, गाढ़ा और चिकना होता है। आवाज भारी होती है। शरीर हलका, गरम, चिपचिपा, चिकना और पानीसे भीगा सा होता है तथा रंगत सफेद होती है। जीभ मोटी, भारी, कफसे लिहसी हुई और खारी होती है। मुखका स्वाद मीठा होता है। चेहरा भारी और सूजा सा जान पड़ता है। आँखोंकी ज्योति मन्दी होजाती है, रङ्ग सफेद होता है और उनमें जल भर-भर आता है।

कफज्वरका समय।



भोजन करतेही, सवेरेके पहले पहरमें रातके पहले पहरमें तथा वसन्त ऋतुमें कफज्वरकी उत्पत्ति और वृद्धि होती है।

कफज्वरमें लघन।



इस ज्वरमें पहले लिखे हुए नियमोंके अनुसार, ज्वर न पकने तक लघन कराने चाहियें। गरम जल पिलाना चाहिये। खानेको दोषानुसार पेया प्रभृति देनी चाहिये। तेरहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनी चाहिये। यह साधारण नियम है। जियादा लंघन कराना, कम कराना, जल्दी या देरसे शमन औषधि देना—इसमें चिकित्सकके विचार बुद्धिकी भी जरूरत है। लंघन सम्बन्धी नियम पीछे पृष्ठ ८६-११० में लिख आये हैं।

कफज्वरके पकनेकी अवधि।



कफज्वर बारह दिनमें पचता है। तेरहवें दिन अन्न और शमन औषधि देनेका नियम है। आमज्वरमें शमन औषधि न देनी चाहिये। ये सब पहले लिख आये हैं। "सुश्रुत"में लिखा है,—कफज्वरमें १२ दिन बीतने पर दवा देनी चाहिये।

चिकित्सा।



कफज्वरमें पाचन क्वाथ।

(१) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपर, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़ी, इन्द्रजौ, जीरा, बकायन, मूर्वा (चुरनहार), अतीस, कुटकी और बायबिडङ्ग —इन २१ दवाओंको मिलाकर "पिप्पल्यादिगण" कहते हैं। यह पिप्पल्यादिगणका समुदाय कफ और वातको नाश करता है;

गोला, शूल और ज्वरको हरता है, अग्निको दीप्त करता और आ
को पचाता है। वङ्गसेन और भावमिश्र प्रभृतिने पिप्पल्यादिगणक
काढा कफज्वरमें अच्छा पाचन बताया है। मतलब यह है, इन २
दवाओंको बराबर-बराबर माशे-माशे, डेढ डेढ माशे या जियाद
जैसा वैद्य उचित समझे, लाकर, इनका काढा बनाकर, कफज्व
पचानेके लिये देना चाहिये। यह काढा कफज्वरको पका देग
और अग्निको दीप्त करेगा।

(२) बिजौरे नीबूकी जड, सोंठ, गिलोय और पीपरामूल—इन पाँचोंके
काढे में "जवाखार" डालकर पीनेसे भी कफज्वरका पाचन होता है

(३) कटेली, वासा, लोध, कूट और परवल—इनका कल्क हारीतने
कफज्वरमें हितकारी कहा है।

कफज्वर नाशक नुसखे।



(१) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, शतावर, कचूर, चिरायता,
पोहकरमूल, पीपल, और कटाई—इन ६ औषधियोंको तीन तीन माशेके
हिसाबसे २। तोले लेकर, काढा बनाकर, पिलानेसे कफज्वर नष्ट
होता है।

नोट—शतावरके स्थानमें देवदारु डालने और काढा औट जानेपर ४माशा शहद
मिलाकर देनेसे भी अच्छा फल होता है। यह नुसखा आजमाया हुआ है।

(२) नीमकी छाल, सोंठ, गिलोय, कटेरी, पोहकरमूल, कुटकी,
कचूर, अडसा, कायफल, पीपल और शतावर—इन ग्यारह औषधि
योंका काढा भी कफज्वरको नाश करता है। परीक्षित योग है।

(३) कायफल, पीपल, काकडासिंगी और पोहकरमूल—इन चारोंको
बराबर बराबर लाकर, कूट-पीसकर छान लो। शीशीमें भरकर रख
लो। दो दो माशेकी ६ मात्रा बना लो। सवेरे, दोपहर और शाम
को और इसी तरह रातको, चार चार घण्टेपर, एक-एक मात्रा शहदके

साथ चटाओ। इस नुसखेसे श्वास, खाँसी, ज्वर और कफका नाश होता है। यह नुसखा कफज्वरमें श्वास, खाँसीको निश्चयही दबाता है, पर गरम है। अगर रोगीको गरमी मालूम हो, तो मात्रा कम कर देनी चाहिये।

नोट—यह नुसखा कफज्वर पर प्रधान नहीं है, इसलिये सबेरे शाम नं० १ या नं० २ देना चाहिये। इन नुसखोंके १ या २ घण्टे बाद इसको देना चाहिये। ये दोनों साथ-साथ चलते हैं। ये तीनों नुसखे, अगर कफज्वर ठीक पहचाना गया हो, तो रामबाणका काम करते हैं। अगर येही नुसखे पित्तज्वरमें दे दिये जायँ, तो रोगी मर जाय। इसलिये ज्वरको खूब पहचानकर दवा देनी चाहिये। पित्तज्वर शीतल चिकित्सा चाहता है और कफज्वर गरम।

(४) अगर, कफज्वरमें आँखोंका बल क्षीण हो जाय और कानोंसे सुनाई न दे, तो निर्गुण्डी या सम्हालूके पत्तोंका काढा, पीपरका चूर्ण डालकर, पिलाना चाहिये। इससे निश्चय ही लाभ होता है। नं० १ की तरह २ तोले पत्तोंका काढा बनाकर, ३ माशे पीपरका चूर्ण मिलाकर पिला देना चाहिये। यह भी परीक्षित है।

(५) शहतमें पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी, ज्वर, तिल्ली, अफारा और हिचकी,—ये आराम होते हैं। परीक्षित है। बालकोंके लिये तो रामबाण ही है।

(६) पीपल, हरड, बहेडा और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। कफज्वर रोगीको यह नुसखा शहतके साथ चटानेसे श्वास और खाँसीमें निश्चय ही लाभ होता है।

(७) कायफल, पोहकरमूल, काकडासिंगी, अजवायन, कलोंजी, सोंठ, मिर्च और पीपल—इन सबको बराबर बराबर लेकर, कूट पीस और छानकर शीशीमें भर लो। इसमेंसे तीन तीन माशे चूर्ण अदरखके रस या शहतमें मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी, अरुचि वमन, हिचकी, कफ और वात—ये सब नाश होते हैं। उत्तम नुसखा है। इसका नाम "अष्टाङ्ग अवलेह" है।

(८) अजवायन, पीपल, अडूसा और पोस्तका डोडा—इनको बराबर बराबर ६।६ माशे लेकर, काढा बनाकर, पिलानेसे श्वास, खाँसी और कफज्वर आराम होता है। इसका नाम "यवान्यादि क्वाथ" है।

(९) अडूसा, करेटी और गिलोय—इन तीनोंको बराबर बराबर आठ आठ माशे लेकर, काढा बनाकर पिलानेसे ज्वर और खाँसी आराम होते हैं।

(१०) कालीमिर्च, पीपरामूल, सोंठ, कलौंजी, पीपल, चीता, कायफल, कूट, सुगन्धित वच, हरड, करेटीकी जड, काकड़ासिंगी, अजवायन और नीमकी छाल—इनको बराबर बराबर दो दो माशे लेकर, काढा बनाकर पिलानेसे, उपद्रव सहित, कफज्वर नाश होता है।

(११) त्रिफला, निशोथ, नागरमोथा त्रिकुटा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र, अमलतासका गूदा, कुटकी और चीता—इन ९ दवाओंको बराबर बराबर ३।३ माशे लेकर, काढा बनाकर, शीतल होनेपर शहद डाल कर पिलानेसे कफज्वर, खाँसी और गलेका रोग आराम होता है। यह नुसखा दस्तावर है।

(१२) त्रिफला, पटोलपत्र, अडूसा, गिलोय, कुटकी और वच—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, काढा बनाकर, शीतल होनेपर शहद डालकर पिलानेसे कफज्वर नाश होता है।

(१३) दशमूल और अडूसेके काढेमें—शहत मिलाकर देनेसे कफज्वर नाश होता है।

(१४) कुटकी, नीम, अतीस, त्रिकुटा और इन्द्रजौ—इनका काढा पीनेसे खाँसी सहित घोर कफज्वर आराम होता है।

(१५) आमला हरड, पीपल, वच, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, दालचीनी, इलायची, और तेजपात—इन तेरह औषधियोंका काढा मलको पतला करता, कफको हरता, ज्वरको नाश करता और अग्निको जगाता है।

नोट—किसी किसी चीजका नाम दो दो बार देखकर वहम न करना चाहिये ।

(१६) नागरमोथा, महुएके बीज, त्रिफला, कुटकी और फालसेकी छाल—इनका काढ़ा कफज्वरको नष्ट करता है ।

(१७) वातज्वरमें जो "कल्पतरुरस" लिख आये हैं, वह वातकफ नाशक है । इसलिये वह कफज्वरमें भी इस्तेमाल किया जा सकता है ।

कवल ।

सैंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल और राई—इन पाँचोंको अदरख के रसमें पीसकर, इनका कवल मुखमें रखना चाहिये । यह कफ-ज्वरमें हितकारी है ।

दूसरा कवल ।

जीरा, खाँड़ और अनारका स्वरस—इनमें शहद मिलाकर, मुख में कवल धारण करना चाहिये । यह कवल रुचि करनेवाला है ।

पानी ।

कफज्वरमें सेरका पावभर रहता हुआ पानी देना चाहिये । अथवा ऋतु अनुसार औटाकर देना चाहिये । बिना औटाया कच्चा पानी हरगिज न देना चाहिये । (देखो पृष्ठ ११७ १२१) ।

पथ्य ।

कफज्वरमें मूँगके यूषके साथ पुराने चाँवलोंका भात देना चाहिये अथवा ८३ वे सफेमें लिखी कफज्वरनाशक पेया देनी चाहिये । और कोई पथ्य देना हो तो पीछे देख लेना चाहिये ।

ज्वरके उपद्रव।

प्रथम तो हमने यहो खाँसी श्वास, हिचको प्रभृतिके परीक्षि नुसखे लिख दिये हैं। अगर किसी और उपद्रव या इन्हीं उ द्रवोंके लिए और किसी नुसखेकी जरूरत हो, तो पुस्तकके अन देखना चाहिये। वहाँ हिचकी, वमन, मूर्च्छा, कोष्ठबद्ध प्रभृति द उपद्रव और शिरशूल, पसलीका दर्द वगैर० के भी एकसे एक बढ़ आजमदा नुसखे लिखे हुए हैं।

हिकमतसे

कफज्वरका इलाज।

(१) अनीसूँ, मस्तगी, गुलकन्द—इन तीनोंको चार-चार माशे लेक दिनमें दो बार खिलानेसे ज्वर जाता रहता है।

नोट—अगर कफका कोप अधिक हो, तो वमन करानी चाहिये। अगर रोगी भीतर बुखार हो तो जुलाब देना चाहिये।

(२) निर्गुण्डीका काढा, और वनपीपरका चूर्ण मिलाकर पीनेसे कफ ज्वर आराम होजाता है।

(३) अजवायन, पीपल, वासा, खशखाशका वक्कल—इनका काढ़ पीनेसे श्वास, खाँसी और ज्वर नाश हो जाते हैं।

(४) त्रिफला और पीपर—बराबर-बराबर लेकर, पीस छानकर, शहद में मिलाकर चाटनेसे खाँसी नाश हो जाती है।

रोग परीक्षामें सावधानी।



बहुतसे वैद्य केवल नाड़ी पकड़कर दवा तजवीज कर देते हैं, रोगी से उसके दुःख सुखका पूरा हाल भी नहीं सुनते। नाड़ी देखना बड़ कठिन काम है। यह अभ्यास चाहता है। जो वैद्य नाड़ी ही देखकर

दवा तजवीज नहीं कर देना, उसे आजकलके लोग भोंदू वैद्य समझते हैं, इसलिये अनेक अपरिणामदर्शी वैद्य, अपनी प्रतिष्ठा भग होनेके खयालसे, नाडीही पर निर्भर रहते हैं। ऐसोंके हाथोंसे बहुतसे रोगी विना मौत मरते हैं। प्राचीन शास्त्रोंमें कहीं नाडीका जिक्र नहीं है। पहले लोग लक्षण देखकर ही चिकित्सा करते थे। उसमें भूल कम होती थी। अगर नाडी देखना आता हो, तो नाडी देखकर रोगका हाल जानना बुरा नहीं, पर केवल नाडीके ही भरोसे रहना अच्छा नहीं।

शास्त्रमें लिखा है —

अति पित्त भवे व्याधौ बुद्धयतिक्रमतो यदि।
वातकोपवशादेवमादौ ज्ञात्वा धरागतिम्॥
प्रदद्यादुष्णज लघुष्वा तद्वायविनिवृत्तये।
तदानूनं भवेन्मृत्यु पित्तकोपेन भूयसा॥

मान लो, किसी रोगीको पित्तका रोग हो और वैद्य, बुद्धिके भ्रमसे, वातकोपकी नाडीको अगले भागमें समझकर, उस रोगीके दोष दूर करनेके लिये, उसको कोई गरम दवा देदे, तो वह रोगी निश्चय ही मर जायगा, क्योंकि अव्वल तो पित्तकी गरमी और उसके ऊपर दवाकी गरमी - दोनों गरमियोंसे रोगीका परम कल्याण ही होगा। इसी तरह रोगीको वायुका रोग हो, वैद्य नाडीका ज्ञान ठीक न होनेके कारण, उसे पित्त का रोग समझकर शीतल उपचार करे, तो रोगी मरेगा या बचेगा? इसलिये नाडीके स्थानपर ध्यान न देकर, उसकी चाल पर ध्यान देना चाहिये।

जिस तरह साँप और जोंक टेढे तिरछे होकर चलते हैं अथवा जिस तरह बिच्छू चलता है, उस तरह वातकी नाडी चलती है।

जिस तरह कव्वा, मेंडक, लवा, कुलिङ्ग और चिडा फुदक फुदक कर चलते हैं, उसी तरह पित्तकी नाडी फुदक-फुदक कर चलती है।

जिस तरह बतख, मोर, कबूतर, पिड्डुकिया, मुर्गा, गज और गरुड़

गामिनी नारी धीरे धीरे झूमते हुए चलते हैं, उसी तरह कफकी नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती है। बस, इन तीनो चालोंपर नजर रखनी चाहिये। इस चालकी पहचानका अभ्यास होनेसे बेशक सफलता होगी।

जब मनुष्यको ज्वर चढ आता है, तब उसकी नाडी गरम और वेगवती होजाती है। बिना पित्तके गरमी नहीं होती और बिना गरमीके ज्वर नहीं होता, इसलिये ज्वरके वेगमें नाडी भी गरम और वेगवती हो जाती है।

इस तरह इन बातोंको ध्यानमें धर कर अभ्यास कीजिये। जब तक पूर्ण अभ्यास न हो जाय, तब तक नाडी देखकर भी, अधिक विश्वास लक्षणों पर ही कीजिये। कफज्वरका इलाज करते समय, कफज्वरकी दवा तब तक तजवीज न करो, जब तक आपको पूरी खातिरी न होजाय कि, ये कफज्वर है। सब लक्षण अच्छी तरह मिला लीजिये। पहले लिख आये हैं, कफज्वरमे पित्तज्वरकी दवाएँ देनेसे और पित्तज्वरमें कफज्वर की दवाएँ देनेसे रोगी अवश्य मर जायगा। कफज्वरके रोगीको हर तरह गरम रखना होता है, गरमही दवा दी जाती है, गरम ही जल दिया जाता है, हवासे बचानेको कपडेसे ढके रखना पडता है और शीतल पदार्थ खानेको नहीं दिये जाते। शीतल आहार विहारोंसे रोगी को हर तरह बचाना होता है। क्योंकि लिख आये हैं कि, शीतल और मीठे पदार्थों से कफ कुपित होता है और गरम तथा कडवे पदार्थों से शान्त होता है। पित्तज्वर गरम पदार्थों से बढता है और शीतल पदार्थों से घटता है। नाडोके सम्बन्धमें अधिक देखना हो, तो हमारा "चिकित्साचन्द्रोदय" प्रथम भाग पृष्ठ २०६ २२६ तक देखिये।

किसी भी रोगकी परीक्षा करते समय आप नाड़ी, मूत्र, मल, शब्द, स्पर्श, वर्ण, जीभ, मुख, चेहरा और नेत्र—इनकी परीक्षा अवश्य किया करें, फिर आपको धोखा न होगा।

जब वैद्यको अभ्यास होजाता है, तब वह कोई १०।१५ मिनटमें इन सबकी परीक्षा कर लेता है। जो इनकी परीक्षा बिना किये, रोगियोंका

इलाज हाथमें लेते हैं, हम तो उन्हें महापापी समझते हैं। मनुष्य-चोला बडी कठिनाईसे मिलता है। रुपया लेना और अपना १५।२० मिनिट समय भी न देना—घोर अन्याय है। आशा है, प्यारे पाठक हमारे इस लेखसे शिक्षा ग्रहण करेंगे और परीक्षामें जल्दबाजी न करेंगे, क्योंकि मुख्य काम "रोगपरीक्षा" ही है। निशाना बाँध लेने पर, गोली मारनेसे गोली ठीक निशानेपर लगती है और सिपाहीके नामके आगे गुलज़री (Bull's eye) लिखी जाती है। आठों प्रकारकी रोग परीक्षा करनेकी विधि खूब अच्छी तरह समझाकर, हमने इसी पुस्तक के प्रथम भागमें—२०६—२४० पृष्ठोंमें—लिखी है।



सूचना—हमने अपने यहाँ के छपे "वैराग्यशतक"की तारीफ उधर पृष्ठ १६१ में लिखी है। जिन्हें हमारी की हुई प्रशंसापर विश्वास न हो, वे एक नामी ग्रामी विद्वान् की सम्मति पर ध्यान दें।

बिहारके प्रमुख नेता श्रीमान् बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी एम० ए०, एम० एल० सी० अपने "देश"में लिखते हैं —

'सांसारिक दुःखमें डूबे हुए भारतको अपने प्राचीन गौरवपूर्ण स्थानपर पहुँचाने के लिये, अपने आदर्शों पर संसार को ले चलनेके लिये और दुनियादारी के दुःख-दर्द से संसार का उद्धार करनेके लिये, जरूरत है कि प्रत्येक भारतवासी इस पुस्तक की एक-एक कापी अपने घरमें उसी तरह रख कर इसका अध्ययन मनन करे, जिस तरह वह वेदों उपनिषदों या गीताकी पुस्तकें रखता और उनका अध्ययन और मनन करता है। भावपूर्ण श्लोकों पर दिये हुए भावमय चित्र, कट्टर से कट्टर विषयी और संसारी मनुष्यों को भी धर्मपथ पर खींच लाते हैं। विषयोंमें आगे जले हुए मनुष्यों के जख्मी दिलोंपर "वैराग्य शतक" के उपदेश अच्छी मरहम का, धन के मदसे उन्मत्त मनुष्यों के लिये चोटीली मारका और ईश्वर विमुख मनुष्योंके लिये धर्मोपदेश का काम देंगे।"



द्विदोषज और सन्निपात ज्वरोंके कारण।

विषम भोजन करने यानी कभी कम और कभी जियादा खाने, व्रत-उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगडने, बदबूदार पदार्थों के सूँघने, विषैला जल पीने, जहरीले पदार्थ सेवन करने, पहाड प्रभृतिके पास रहने, वमन विरेचनादिके ठीक न होने, स्त्रियों के असमय में बालक जनने, समयपर जननेसे कुपथ्य सेवन करने अथवा पहले लिखे हुए वातज्वर, पित्तज्वर और कफज्वरके कारणोंके मिल जानेसे दो दोषोंवाले और तीन दोषोंवाले ज्वर दो और तीन दोषोंके, एकही समयमें, कुपित होनेसे होते हैं। जो ज्वर दो दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हें "द्वन्द्वज" और जो तीन दोषोंके कोपसे होते हैं, उन्हे "त्रिदोषज" या "सन्निपातज" कहते हैं।

वातपित्तज्वरकी चिकित्सा।



वातपित्तज्वर कैसे होता है ?



वात और पित्तको कुपित करनेवाले आहार विहारोसे कुपित होकर, वात और पित्त आमाशयमें जाकर रसको दूषित करके, कोठे की अग्निको बाहर निकालकर, वातपित्तज्वर उत्पन्न करते हैं।

वातपित्तज्वरके पूर्व्वरूप ।

—***—

जँभाइयाँ आती हैं और आँखोंमे जलन होती है। इस ज्वरमें वातज्वर और पित्तज्वर दोनोंके पूर्वरूप होते हैं।

वातपित्तज्वरके लक्षण ।

—*★*—

तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाह स्वप्ननाश शिरोरजा ।
कण्ठास्यशोषो वमथू रोमहर्षोऽरुचिस्तम
पर्वभेदश्च जृम्भा च वातपित्तज्वराकृति ॥

प्यास,मूर्च्छा—बेहोशी, भ्रम, दाह, नींद न आना, सिरदर्द, कंठ और मुँह सूखना, वमन, रोएँ खड़े होना, अरुचि, आँखोंके आगे अँधेरा आना, जोड़ या सन्धियोंमें पीड़ा होना और जँभाइयाँ आना,—ये "वातपित्तज्वर"के लक्षण हैं।

नोट—"चरक" में लिखा है, वातपित्तज्वरवाला शीतल पदार्थोंकी इच्छा करता है, क्योंकि वायु योगवाही है, जिसके साथ मिलता है उसीके से काम करता है। पित्तके साथ मिलनेसे वह पित्तकेसे काम करता है। इसीसे वातपित्तज्वरवालेको गरमी बुरी लगती है और सर्दी अच्छी लगती है। वायु जब कफके साथ मिलता है, तब कफकेसे काम करता है, उस समय रोगीको गरमी अच्छी लगती है। "चरक" में ज्ञानपूर्वक या अज्ञानपूर्वक प्रलाप या आनतान बकनेका लक्षण अधिक लिखा है। हारीतमे मुँहका कड़वा होना, शरीरका रूखा होना और नेत्रोंका लाल होना,—ये लक्षण जियादा लिखे हैं।

वातपित्तज्वरमें नाड़ी ।

—*★*—

वातपित्तकी नाड़ी चञ्चल, तरल, स्थूल और कठोर होती है और झूम झूमकर चलती सी मालूम होती है। वातपित्तके कोपसे मल बँधा, हुआ कभी विसरासा या पीला-कालासा होता है। इस ज्वरमें नाड़ी बारम्बार साँपकी चालसे टेढ़ी और मेंढककी चालसे फुदक-फुदककर चलती है।

वातपित्तज्वरमें लंघन।

पीछे (पृष्ठ ८७-११० में) लिखी हुई विधिसे लंघन कराने चाहियें। कच्चे ज्वरमें औषधि न देनी चाहिये। ज्वर कच्चा हो, तो दोष पकानेका यत्न करना चाहिये। दोषपाकके लक्षण दीखते ही, संशमन क्वाथ आदि जो जचे सो देना चाहिये।

वातपित्तज्वरमें औषधि देनेका समय।

वातपित्तज्वरमें पाँचवें दिन औषधि देनी चाहिये।

वातपित्तज्वरमें पाचन।

हरड़, बहेड़ा, आमला, सेमलकी छाल, रास्ना और चिरायता— इनका काढ़ा वातपित्तज्वरमें पाचन है और इसका नाम "त्रिफलादि क्वाथ' है।

वातपित्तज्वर नाशक नुसखे।

(१) चिरायता, गिलोय, दाख, आमले और कचूर—इन पाँचोंके काढ़े में, पुराना गुड़ मिलाकर पीनेसे, वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम "किरातादि काथ" है।

(२) चिरायता, आमला, कचूर, दाख, कालीमिर्च, सोंठ और गिलोय,- इन सातोंके काढ़ेमें, गुड़ मिलाकर देनेसे वातपित्तज्वर नाश होता है। इसका नाम भी "किराताादि क्वाथ" है।

(३) गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चिरायता और सोंठ—इन पाँचोंका काढ़ा वातपित्तज्वरमे सर्वोत्तम है। इनका नाम "पञ्च भद्र क्वाथ" है।

नोट—यह काढ़ा सचमुच ही बड़ा अच्छा है। हमारा अनेक बारका परीक्षित है।

(४) हडर, बहेड़ा, आमला, सेमलकी छाल, रायसन, अमलताशका गूदा और अडूसा—इन सातोंका काढा वातपित्तज्वरको नाश करता है। इसका नाम भी "त्रिफलादि काथ" है।

(५) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता तथा पञ्चमूलका पाँचों औषधियाँ—इन नौ औषधियोंका काढा पीनेसे शीघ्रही वात पित्तज्वर दूर होता है।

(६) खिरेंटी, भारङ्गी, गिलोय, अरण्डकीजड, लालचन्दन, खस, पित्तपापडा, पीपल, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इनका काढा सन्धियोंकी पीड़ा—जोडोंका दर्द, सिरका काँपना और वात पित्तज्वरको नाश करता है।

(७) नील कमल, खस, खिरेंटी, पद्माख, कुम्भेर, मुलेठी, दाख, महुआ और फालसे—इनका काढा, शीतल करके, पीनेसे वातपित्तज्वर नाश होता है तथा प्रलाप और मोहयुक्त पित्तज्वर भी नाश होता है, यानी जिस पित्तज्वरमें रोगी आनतान बकता और बेहोश रहता है, वह पित्तज्वर भी नाश हो जाता है।

(८) अमलताशका गूदा, नागरमोथा, मुलेठी, खस हरड, हल्दी, दारुहल्दी, पटोलपत्र, नीमकी छाल और कुटकी—इन दसोंका काढा वातपित्तज्वरमें हितकारी है।

(९) नेत्रवाला, गिलोय, अरण्डकी जड, सुगन्धवाला, नागरमोथा, पद्मकाष्ट, भारङ्गी, पीपल, खस और चन्दन—इन दसोंका काढा पीनेसे वातपित्तज्वरका नाश होकर अग्निकी वृद्धि होती है।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इन सब दवाओंको तीन तीन माशे या कुल २॥) तोले लेकर, काढेकी तरह औटाओ और सवेरे शाम पिलाओ, अवश्य फायदा करेगा। न० ३ "पञ्चभद्र काथ" भी परीक्षित है। आजकलके मनुष्योंके लिये प्राय दो तोला या अढाई तोला काढेकी सब दवायें मिलाकर लेना हमारी परीक्षा में निरापद और

लाभदायक साबित हुआ है। इसीसे हमने दो चार जगह काढ़ेकी मात्रा लिख दी है। इसी तरह और जगह भी समझना चाहिये। फिर भी, रोगीका बलाबल, प्रकृति और काल प्रभृतिका विचार करके, मात्राका घटाना और बढ़ाना चिकित्सकका काम है।

(१०) मुलेठी, सारिवा (गौरीसर-अनन्तमूल) दाख, महुआ, चन्दन, कमल, कुम्भेरका फल, लोध, त्रिफला कमलकी केशर, फालसे और कमलकी नाल—इन बारह दवाओंको बराबर बराबर लेकर, कोरी हाँडीमें डालकर, ऊपरसे साफ पानी डालकर, रातके समय भिगो दो। सवेरे बिना औटाये ही मलछान कर, उसी बासी जलमें,—मिश्री, शहद और खीलोंका सत्तू मिलाकर रोगीको पिलाओ। "भावप्रकाश"में लिखा है, इस हिमके पीनेसे दाह, प्यास, मूर्च्छा, अरुचि, भ्रम और वातपित्तज्वर इस तरह भागते हैं, जिस तरह हवासे बादल भागते हैं। वङ्गसेनने भी ऐसी ही तारीफ की है। "भावप्रकाश"में लिखा है, इन सब दवाओंको ८ तोले लेकर २४ तोले जलमें भिगोदो। सवेरे मिश्री और शहद तथा खीलोंका सत्तू मिलाकर पिला दो। इसका नाम "मधुकादि हिम" है।

नोट—पहले लिख आये हैं, कि "हिम" शीत कषाय या शीतल काढ़ेको कहते हैं। हिमका यही कायदा है कि, उसकी दवाएँ काढ़ेकी तरह औटाई नहीं जातीं। रातको भिगोकर, सवेरे मलछानकर जल निकाल लिया जाता है और वह बासी जल शहद मिश्री प्रभृति डालकर रोगीको पिलाया जाता है। हिमकी तासीर शीतल है। पित्तके कारणसे हुए तृषा और दाह वगैर में यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है। जिसे गरम औटाये हुए काढ़ेसे लाभ न होता हो, मिजाज गर्म हो, उसे हिम देनेसे अवश्य लाभ होता है।

पानी।

—०—

वातपित्तज्वरमें औटाकर शीतल किया हुआ जल पिलाना चाहिये।

पथ्य।

—*—

वातपित्तज्वरमे मूंग और आमलोका यूप अथवा अनार, आमले और मूँगका यूप देना हितकारी है। अगर वातपित्तज्वरमें दाहका बहुत जोर हो, तो चनेका यूप देना चाहिये।

अपथ्य।

वातपित्तज्वरमे मूँग और करेला प्रभृति कफवातनाशक पदार्थ न देने चाहिये। इनके देनेसे ज्वर, शूल (दर्द), कब्ज और अफारा होता है।

काढा बनाने और पीनेकी विधि।



इसके लिये आप इसी भागके १३१—१३५ तक के पृष्ठ और काढेकी मात्राके लिये १६३—१७३ पृष्ठ देखिये।

आठवाँ अध्याय

वातकफज्वरकी चिकित्सा।

वातकफज्वर कैसे होता है?



वात और कफकारक आहार विहारों से वात और कफ कुपित होकर, आमाशय में जाकर, रसको दूषित करके और कोठे की अग्निको बाहर निकाल कर, "वातकफज्वर" करते हैं।

वातकफज्वरके पूर्वरूप।



वातकफज्वरमें वातज्वर और कफज्वर दोनों के पूर्वरूप—जँभाई आना और अन्न से अरुचि होना—ये होते हैं।

वातकफज्वरके लक्षण।



स्तैमित्य पर्वणांभेदो निद्रागौरवमेव च।
शिरोग्रह प्रतिश्याय कास स्वेदाप्रवर्त्तनम्॥
सतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृति॥

शरीर गीले कपड़े से ढका हुआ मालूम हो, जोड़ों में दर्द हो, नींद आवे, देह भारी हो, सिर में दर्द और जुकाम हो, खाँसी हो,

पसीने आवें *, सन्ताप हो और मन्दा-मन्दा ज्वर हो—ये "वातकफ ज्वर"के लक्षण हैं। हारीतने लिखा है;—"वातकफज्वरमें जाडा लगता है, शरीर काँपता है, शरीरके जोड टूटते हैं, शरीर लकडी सा हो जाता है, शूल, अरुचि, मन्दाग्नि, बन्धन, कठोरता, खाँसी ये उपद्रव होते हैं, तन्द्रा होती है, कूजन होता है, शरीर में चंचलता होती है, शरीर गीलासा हो जाता है, जँभाइयाँ आती हैं, पसीना आता है और मल मूत्र रुक जाते हैं।"

नोट—इस बुखार में सारे शरीर में बहुत पसीने आते हैं। उन पसीनों को ऊपरी उपायोंसे बन्द करना जरूरी है। भुनी हुई कुलथी या चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीस कर मलना अच्छा है।

वातकफज्वरमें नाडी आदि।



वातकफज्वर में नाडी मन्दी-मन्दी चलती है और किसी कदर गर्म रहती है। अगर इस ज्वरमें कफ का अंश कम और वायु का अंश अधिक रहता है, तो नाडी रूखी और बराबर तेज़ चलती है। ये नाडी कभी सर्प की चाल से और कभी हंस या हाथी की सी चालसे चलती है। जिस की नाडीमें वायुका अत्यन्त कोप होता है, उसकी नाडी पित्तके समान अत्यन्त टेढी और अत्यन्त स्थूल होती है।

वातकफज्वरमें अन्न और दवा देने का समय।



वातकफज्वर में, सातवे दिन वृहत्पञ्चमूल के काढे में पकाया हुआ अन्न देना चाहिये। वातकफज्वर मे नवे दिन दवा देनी चाहिये।

---

* पसीनों का आना तो पित्तज्वर मे लिखा है फिर वातकफज्वर मे पसीने कैसे आते हैं? विकृति समवाय के अनुसार संयोग होनेसे विकार को प्राप्त हुए वात और कफ इन दोनों में—स्वभाव न मिलने से—जियादा पसीने आते हैं। जैसे, हल्दी और चूने के मिलने से लाल रंग पैदा होता है।

वातकफज्वर में पाचन।

—✱✱✱—

अमलताशका गूदा, कुटकी, हरड पीपलामूल, नागरमोथा,—इन पाँचों का काढ़ा बनाकर, पिलाने से वातकफज्वर और आमशूल तत्काल नाश होता है। इस से दस्त साफ होता है। यह दीपन और पाचन है। इस का नाम "आरग्वधादि क्वाथ" है।

नोट—निस्सन्देह यह काढ़ा बहुत उत्तम है। हरड़ बड़ी लेनी चाहियें। सब दवाओं को पाँच-पाँच या छै-छै माशे ले कर, औटा कर और छान कर पिलाना चाहिये।

वातकफज्वर नाशक नुसखे।

(१) कटेरी सोंठ, गिलोय और अरण्ड की जड़—इन चार दवाओं को छः छः माशे लेकर, काढ़ा बना कर, पिलानेसे वातकफज्वर नाश होता है। खासकर जिस ज्वर में कफ और वायु का बहुत जोर हो, उस में अधिक लाभदायक है। इस से खाँसी भी मिटती है। श्वास, खाँसी, अरुचि और पीठ का दर्द—इन उपद्रवों सहित त्रिदोषज्वर को भी यह नाश करता है।

(२) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचों को "पञ्चकोल" कहते हैं। यह अग्नि को दीपन करता और वातकफज्वर को नाश करता है। यह उत्तम पाचन है, दीपक है, गरम है कफदाह नाशक है गोला तिल्ली उदर रोग, अफारा और शूल को नाश करनेवाला है, तीक्ष्ण और गरम है। इसलिये पित्त को कुपित करनेवाला है। ये पाँचों चीजें एक एक कोल (तोला) लेने से "पञ्च कोल" कहलाता है।

नोट—इन पाँचो के काढ़े को 'आरोग्य पचक" भी कहते हैं इनका काढ़ा दीपन और कफवात नाशक है।

(३) चिरायता, सोंठ, गिलोय, कटेरी, कटाई, पीपलामूल, लहसन और सम्हालू—इन आठों का काढ़ा वातकफज्वर को नाश करता है।

(४) कटेरी, गिलोय, सोंठ और पोहकरमूल—इन चारों का काढ़ा खाँसी, अरुचि, श्वास, अफारा और शूल समेत वातकफज्वर को नाश करता है। इसका नाम *"क्षुद्रादि काथ"* है।

नोट—राजवृक्षादि काथ (आरग्वधादि क्वाथ) और ऊपर का क्षुद्रादि क्वाथ, इस ज्वरमें बहुत अच्छे हैं। क्षुद्रादि क्वाथ श्वास, खाँसी, अरुचि, पसलियों का दर्द और त्रिदोष के ज्वर को भी नाश करता है। अगर क्षुद्रादि काथकी दवाओं में "चिरायता" और मिला दिया जाय, तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय। कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंके काढ़े से वातकफज्वर तो निश्चय ही आराम होता है। इसके सिवाय और सब ज्वर भी नाश हो जाते हैं।

(५) पीपल, पीपलामूल, कालीमिर्च, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारङ्गी, पाढ़, इन्द्रजौ, जीरा, बकायन, मूर्वा, अतीस, कुटकी और वायबिडङ्ग—इन २१ दवाओं को *"पिपपल्यादि गण"* कहते हैं। इन का काढ़ा वातकफज्वर में सर्वश्रेष्ठ दवा है। इसके समान वातकफज्वर-नाशक और दवा नहीं है। इसका नाम "पिपपल्यादि क्वाथ" है।

(६) पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, वच, अतीस, जीरा, पाढ़ो, इन्द्रजौ, रेणुका, चिरायता, मूर्वा, सरसों, कालीमिर्च, कायफल, पोहकरमूल, भारङ्गी, वायबिडङ्ग, काकड़ासिंगी, आक की जड़, बड़ी कटेरी, रास्ना, धमासा, अजवायन, अजमोद, श्योनाक और हींग—इन २८ दवाओं को बराबर बराबर लेकर काढ़ा बना कर पीने से, वातकफज्वर, वात शीत (सर्दी) पसीना, अत्यन्त कँपकँपी, प्रलाप, तानतान

बकना, अत्यन्त नींद आना रोएँ खड़े होना, अरुचि, अपतंत नामक महावायु और सारे शरीर की शून्यता—ये सब नाश हो जाते हैं। यह "पिप्पल्यादि महा क्वाथ" सब तरह के ज्वरों में पूजा जाता है।

(७) दशमूल के काढ़े में पीपल का चूर्ण मिलकर पीने से मुखपाक, अतिनिद्रा, अजीर्ण पसलियों का दर्द, श्वास और खाँसी समेत वातकफज्वर नाश होता है।

नोट—शालिपर्णी पृष्ठपर्णी, कटेरी, कटाई, गोखरू, बेलगिरी, अरणी, स्योनाक कुम्भेर और पाढल—इन दशों को "दशमूल" कहते हैं। यह नुसखा वातकफज्वर में रामबाण है। इसके सेवन से सन्निपातज्वर, प्रसूतिका रोग, श्रम और पसीने प्रभृति भी अवश्य नाश हो जाते हैं।

(८) केवल पीपलों का काढ़ा पीनेसे वातकफज्वर नाश होता है। यह अनभिष्यन्दि, अग्निदीपक और तिल्ली को नाश करने वाला है।

(९) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, सोंठ, गिलोय और धमासा—इन पाँचों का काढ़ा वातकफ, अरुचि, वमन, दाह, शोष और ज्वर को नाश करता है।

(१०) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारों को "चातुर्भद्रक" कहते हैं। यह वातकफ नाशक हैं। इन का काढ़ा भी वातकफज्वर को नाश करता है।

(११) नीम की छाल, गिलोय, सोंठ, देवदारू, कायफल, कुटकी और वच—इन का काढ़ा वातकफज्वर नाशक तथा सन्धियों की पीड़ा, सिरका दर्द, खाँसी और और अरुचि को नाश करता है।

(१२), देवदारू, पित्तपापड़ा, भारङ्गी, नागरमोथा, वच, धनिया, कायफल, हरड़, सोंठ और पूतिकरञ्ज—इनके काढ़ेमें हींग और शहद डालकर पीनेसे कफवातज्वर, हिचकी, मुँह या गला सूखना, गलग्रह, श्वास, खाँसी और प्रमेह नाश होते हैं।

नोट—यह नुसखा छत्रुतमें भी है। वहां "पूतीक"के स्थानमें "भूतीक" लिखा है। पूतीक "पूतिकरंज" को कहते हैं और भूतीक 'चिरायते' को कहते हैं। डल्हन-मिश्र 'भूतीक"का अर्थ "रोहिषतृण" कहते हैं।

इस नुसखेमें शहद ६ माशे और हींग २ रत्ती मिलानी चाहिये। अगर काढे-की मात्रा दो अढाई तोलेसे जियादा हो, तो शहद और हींग भी जियादा डाले जा सकते हैं। यह नुसखा कण्ठकी सूजन, हृदय और पसलीके दर्द तथा कफके अधिक जोरमें देनेसे भी लाभ दिखाता है।

(१३) पटोलपत्र, सोंठ, इन्द्रजौ और पीपल—इन चारोंका काढा दीपन और पाचन है। अगर कफवातके रोगमें प्यास, शूल, श्वास, खाँसी, अरुचि और दस्तकी कब्जियत हो, तो यह नुसखा देना चाहिये।

(१४) शुद्ध पारा, भुना हुआ सुहागा और शुद्ध गन्धक,—ये तीनों बराबर-बराबर लो। शुद्ध तुषरहित जमालगोटेके बीज पारेसे दूने लो। संधानोन, कालीमिर्च, इमलीका खार और खाँड़—ये सब पारेकी बराबर लो। पीछे सबको एकत्र खरलमें डालकर जँभीरी नीबूके रसमें एक दिन भर खरल करो। यही "सूर्येश्वर" रस है। इसको २ रत्ती प्रमाण गरम जलके साथ सेवन करनेसे वातकफज्वर और शीतज्वर नाश होते हैं।

नोट—पारा, गन्धक, सुहागा, जमालगोटेके बीज कभी बिना शोधे मत लेना। शोधनेकी विधि पुस्तकके अन्तमें लिखी है। प्रथम तो रस किसीको देनाही नहीं। जब ऊपर लिखे १३ नुसखोंमें से किसी से भी रोग काबूमें आता न दीखे, तब इसको जरूर देना चाहिये। मात्रा २ रत्ती न देकर, कम देना अच्छा होगा। औषधिकी मात्राका कोई नियम नहीं हो सकता। वैद्यको दोष, अग्नि, बल, अवस्था, व्याधि, औषधि और कोठेका विचार करके मात्रा नियत करनी चाहिये।

पसीने बन्द करनेके उपाय।

—***—

वातकफज्वर और सन्निपात ज्वरोंमें प्रायः पसीने बहुत आते हैं। उनको शीघ्रही बन्द करना जरूरी है। इस तरह आये हुए पसीनोंमें पिच्छिलता बहुत होती है। इसलिये शीत आने से रोगी झट मर

जाता है। नीचे लिखे उपायों से पसीनोंका आना निश्चय ही बन्द हो जाता है।

(१) कुलथीको भुनवाकर और पीसकर, पसीने आते हों जहाँ, मालिश करो।

(२) चूल्हेकी जली हुई मिट्टी पीसकर मालिश करो।

(३) गायका पुराना गोबर और नमक रखनेका मिट्टीका बासन,—इन दोनोंको मिलाकर पीस डालो और शरीर पर मलो।

(४) चिरायता, कालीजीरी, कुटकी, वच और कायफल—इन पाँचोंको बराबर बराबर लेकर, महीन पीसकर और कपडछन करके शरीर पर मलो। लगातार बहता हुआ पसीना बन्द हो जावेगा।

(५) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, हरड, लोध, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी, कूट, कचूर, शिवलिङ्गी और कपूरकचरी,—इन बारह दवाओंको बराबर बराबर लेकर खूब महीन पीसकर, शरीर पर मलनेसे, नदीके प्रवाहकी तरह बहता हुआ पसीना भी बन्द हो जाता है।

(६) वच, अजवायन और सोंठ,—इन तीनोंको बराबर बराबर लेकर और सूखे ही पीसकर, शरीर पर मलने से ज्वर और पसीना शान्त हो जाता है।

(७) पीपल, देवदारु सोंठ, कुटकी और अजवायन—इनको बराबर बराबर लेकर,महीन पीसकर, शरीर पर मलने से पसीने दूर होते हैं और शरीर शीतल होता है।

नोट—आयुर्वेदमें पसीना बन्द करनेकी क्रियाको "उद्धूलन" कहते हैं।

वालुका स्वेद।

पीनस, श्वास, बहरापन, जाँघ पसली और हड्डीके दर्द सहित वातकफज्वरमें "वालुका स्वेद" करना चाहिये। "वालुका स्वेद" शरीर

के स्रोतोंको नरम करता है, यानी साफ करता है, अगन्याशयको उसके स्थानमें स्थापित करता है, वातकफके स्तम्भको नाश करता है तथा ज्वरको हरता है।

तरकीव—एक ठीकरेमें बालू भरकर उसको खूब गरम करो और उसे रोगीके पास रक्खो। पीछे रोगीको कपड़ा उढ़ा दो और आगसे लाल हुई बालूपर काँजीके छींटे मारो। इस तरह बारम्बार करो। इससे रोगीके शरीरसे पसीने निकलेंगे और वातकफके रोग, सिरका दर्द और सारे शरीरकी पीड़ा शान्त हो जायगी।

नोट—बालूको ठीकरेमें खूब लाल करके पीछे उसे गरमही पोटलीमें बाँधकर, उस पोटलीको काँजीमें भिगोकर स्वेद देना चाहिये। इसको भी "बालुका स्वेद" कहते हैं। इसके सम्बन्धमें वातज्वरमें लिख आये हैं, क्योंकि वातज्वरमें भी बालुका स्वेदका काम पड़ता है। बालुका स्वेदका अर्थ बालूको तपाकर और उस पर काँजीके छींटे मार कर पसीने निकालना है। यह भी एक तरहका बफारा ही है। साधारणतया, तवे को लाल करके, उस पर पानीके छींटे मारते हैं और रोगीको उढ़ा देते हैं। तवेकी भाफ से रोगीके शरीरसे पसीने निकालते हैं। इसी तरह "बालुका स्वेद" भी पसीने निकालनेका एक उपाय है।

कवल।



बिजौरे नीबू की केशर, सेंधानमक और कालीमिर्च—इन तीनों को एकत्र पीसकर, मुखमें रखनेसे वातकफसे हुआ मुखशोष (मुँह (सूखना), मुखकी जड़ता, निरसता और अरुचि ये सब नाश होते हैं।

पानी।

औटाकर शीतल किया हुआ जल देना चाहिये। (देखो पृष्ठ १११—१२१)।

पथ्य।

वातकफज्वरमें सातवे दिन, वृहत्पञ्चमूलके क्काथमें पकाया हुआ अन्न, विशेषकर पेया देनी चाहिये।



पित्तकफज्वरकी चिकित्सा ।

—★★★—

पित्तकफज्वर कैसे होता है ?

—★✲★—

पित्तकारक और कफकारक आहार विहारोंके कारणसे कुपित हुए पित्त और कफ आमशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकालकर, पित्तकफज्वर करते हैं ।

पित्तकफज्वरके पूर्वरूप ।

—✲★✲—

पित्तकफज्वरमें पित्तज्वर और कफज्वर दोनोंके पूर्वरूप—नेत्रोंमें जलन और अन्नपर अरुचि—ये होते हैं ।

पित्तकफज्वरके लक्षण ।

—✲★✲—

लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोह कासोऽरुचिस्तृषा ।
मुहुर्दाहो मुहु शीत श्लेष्मपित्तज्वराकृति ॥

पित्तकी वजहसे मुँह कड़वा हो और कफके कारण कफसे लिहसा हो, तन्द्रा, मोह—बेहोशी खाँसी, अरुचि और प्यास,—ये हों तथा बारम्बार गरमी लगे और बारम्बार सरदी लगे—ये पित्त कफज्वरके लक्षण हैं ।

"हारीत"ने कहा है,—"नींद बहुत आवे, सन्धियों और सिरमें दर्द हो, जोड़ टूटें, आवाज बीचकी हो, आँखोंमें सन्ताप हो, श्वास हो, सुननेमें रुचि हो, कण्ठ सूखता हो, तन्द्रा हो, मोह हो, अरुचि हो और भ्रम हो—ये सब लक्षण हों, तो पित्तकफज्वर समझना चाहिये।"

"चरक"में लिखा है—"पित्तकफज्वर में बारम्बार दाह हो, बारम्बार जाड़ा लगे, बारम्बार पसीने आवें, स्तम्भ, मोह, खाँसी, अरुचि, प्यास ये हों तथा कफ और पित्त गिरे, मुख कफसे लिहसा हुआ और कड़वा रहे तथा तन्द्रा हो।

नोट—द्वन्द्वज ज्वरोंको डाक्टरीमें रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) कहते हैं। वातपित्त रेमिटेण्ट ज्वर सवेरे और शामको कुछ विश्राम लेता है, वातकफका दोपहर और आधीरातको विश्राम लेता है। पित्तकफज्वर दिनके तीसरे पहरमें और रातके शेषमें विश्राम लेता है। मतलब यह कि, इन-इन समयोंमें ये तीनों ज्वर कुछ हलके होते हैं।

पित्तकफज्वरमें नाड़ी प्रभृति।



पित्तकफज्वरमें नाड़ी नर्म चलती है। कभी जियादा शीतल और कभी कम शीतल और पतली रहती है। पित्तकफज्वरमें नाड़ी सूक्ष्म, शीतल और मन्द वेगसे चलती है। कफपित्तके कोपसे पाखाना पीला, काला, कुछ नीला और चीकट सा होता है।

पित्तकफज्वरमें लंघन।

—❀❀—

इस ज्वरमें पीछे पृष्ठ ८७ ११० में लिखी हुई विधिसे लङ्घन कराने चाहियें। कच्चे या आमज्वरमें औषधि न देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें औषधिका समय।



"भावप्रकाश"में लिखा है,—"पित्त श्लेष्मज्वरे देयमौषधं दशमेऽहनि" यानी पित्तकफज्वरमें दसवें दिन दवा देनी चाहिये। किन्तु वृन्दसेन लिखते हैं—"पित्तश्लेष्मज्वरे देयमौषधं सप्तमेऽहनि", अर्थात् पित्त श्लेष्मज्वरमें सातवें दिन दवा देनी चाहिये।

पित्तकफज्वरमें पाचन काढा।

गिलोय, नीमकी छाल, धनिया, लालचन्दन और कुटकी—इन पाँचोंका काढा पाचन, अग्निदीपक, प्यास, दाह, अरुचि, वमन और पित्तकफज्वरको नाश करनेवाला है। इसका नाम "गुडूच्यादि क्वाथ" है।

पित्तकफज्वर नाशक नुसखे।

(१) गिलोय, नीमकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, पटोल-पत्र और लालचन्दन—इन आठ दवाओंका काढा करके और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है तथा वमन, अरुचि, प्यास, उबाकी आना और दाह,—ये उपद्रव भी नाश हो जाते हैं। इसका नाम "अमृताष्टक" है। वङ्गसेन, शार्ङ्गधर और भावमिश्र ने इसकी खासी तारीफ की है। यह है भी इसी लायक। परीक्षित है।

(२) पटोल, चन्दन, मूर्वा, कुटकी, पाढ और गिलोय—इन ६ दवाओं का काढा पीनेसे पित्तकफज्वर, वमन, दाह, खुजली और विष बाधा—ये सब नाश होते हैं। यह "पटोलादि क्वाथ" है।

(३) परवल, मोथा, नेत्रवाला, लालचन्दन, कुटकी, पित्तपापडा, सोंठ, खस और अडूसा—इनका काढा करके पीनेसे प्यास सहित कफपित्तज्वर नाश होता है। यह भी "पटोलादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(४) कटेरी, गिलोय, भारङ्गी, सोंठ, इन्द्रजौ, अडूसा, चिरायता, लाल चन्दन, नागरमोथा, पटोलपत्र और कुटकी,—इन ग्यारह औषधियोंका काढ़ा पीनेसे पित्तकफज्वर दाह, तृषा, अरुचि

वमन, खाँसी और शूल, दर्द) नाश होता है। इसको "कण्ट कार्यादि क्वाथ" कहते हैं,।

(५) सोंठ, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, धनिया, मोचरस और सुगन्धवाला—इन ७ दवाओंका काढा भी पित्तकफज्वरको नाश करता है। यह मलरोधक है, यानी दस्तको बाँधता है। जिस पित्त कफज्वर रोगीको दस्त होते हों, उसे यह देना चाहिये। इसका नाम "नागरादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(६) एक तोले भर कुटकी और खाँड दोनोंको पीसकर फंक बना लो और गरम जलके साथ पी जाओ। इसके पीनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है। इसका नाम "कुटकी फंक" है।

नोट—चरकने लिखा है—१ तोला कुटकी और ४ माशे खाँड लेनी चाहिये, पर वैद्य लोग तो दोनोंको बराबर-बराबर ६।६ माशे लेकर १ तोला करते हैं।

(७) अडूसेके पत्ते और फूल दोनों लेकर रस निकाल लो। पीछे उस रसमें शहद और मिश्री मिलाकर सेवन करो। इससे अम्लपित्त और कामला सहित पित्तकफज्वर नाश होता है। इसका नाम "वासारस" है।

नोट—अडूसेका रस २ तोला और मिश्री ४ माशे तथा शहद ३ माशे लकर, तीनोंको मिलाकर पीजाना चाहिये। "वासारस" से कफ, पित्तज्वर, रक्तपित्त और पित्तकफ, ये सब नाश होते हैं। अगर इसमें चीनी या खाँड न मिलाई जाय, केवल शहद मिलाया जाय,तो इस 'वासारस" से श्वास और खाँसी भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) अदरख और पटोलपत्रका काढा बनाकर पीनेसे, पित्तकफज्वर, वमन, दाह, और खुजली नाश होती है। इसका नाम "शृङ्गवेरादि क्वाथ" है।

(९) कटेरी, गिलोय, सोंठ, पोहकरमूल और चिरायता—इन पाँचोंका काढा आठों प्रकारके ज्वरोंको नष्ट करता है। इसका नाम 'पञ्चतिक्तक्वाथ" है। परीक्षित है।

(१०) इन्द्रजौ, पित्तपापड़ा, धनिया, पटोलपत्र, और नीमकी

छाल—इन पाँचोंके काढ़ेमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे पित्तकफज्वर नष्ट होता है।

(११) भारङ्गी, पोहकरमूल, नागरमोथा, कटेरी, गोखरू, कटाई, शालपर्णी, पृश्निपर्णी और सोंठ—इनको "भारङ्ग्यादिगण" कहते हैं। ये पित्तकफज्वर नाशक तथा उबकाई, अरुचि, वमन, प्यास, दाह और विबन्ध नाशक हैं।

(१२) कुड़ेकी छाल, पद्माख, सोंठ, लालचन्दन, गिलोय पटोलपत्र, और धनिया—इन सातोंके काढ़ेमें शहद डालकर पीनेसे कफ पित्तज्वर, शूल और हाथ पैरोंकी जलन आराम होती है।

पानी।



पीछे पृष्ठ १११-२१ में लिखी हुई विधिसे औटाकर शीतल किया हुआ जल देना चाहिये।

पथ्य।

पटोलपत्र और धनिये के यूष से सिद्ध किया हुआ अन्न पित्त कफज्वर नाशक है। वङ्गसेन ने लिखा है,—धनिया और पटोलपत्र का यूष कफपित्तज्वर नाशक है। नीमकी छाल और पटोलपत्रका यूष भी पित्तकफज्वरमें हितकारी है। (देखो पृष्ठ ७७—८६)

काढ़ा बनाने और पीनेकी विधि।



काढ़ा बनाने और पीनेकी तरकीब के लिये पृष्ठ १३१—१३५ तक देखिये और काढ़ेकी मात्राके लिये पृष्ठ १७३—१७४ देखिये।



दसवाँ अध्याय।

सन्निपात ज्वरकी चिकित्सा।

—✶✶✶—

सन्निपात ज्वरके कारण।

—✶✶✶—

समय विरुद्ध, संयोग-विरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश विरुद्ध अन्न-पानके सेवन करने, , अजीर्णमें भोजन करने, भोजन पर भोजन करने, बिना समय के खाने और अनेक प्रकारके मिश्रित पदार्थों के सेवन करनेसे सन्निपात कुपित होता है। और भी लिखा है,—कभी कम और कभी जियादा खाने, उपवास करने, ऋतुओंके पलटने, ऋतुओंके बिगडने, विषैले पदार्थ सेवन करने, दुर्गन्धित पदार्थों के सूँघने, वमन विरेचनादि ठीक तौर से न होने, स्त्रियोंके बे समय बालक जनने या ठीक समय पर जनकर अपथ्य सेवन करने प्रभृति कारणोंसे त्रिदोष कुपित होते हैं।

अम्लस्निग्धोष्णतीक्ष्णैः कटुमधुरसुरातापसेवाकषायैः।
कामक्रोधातिरूक्षैर्गुरुतरपिशिताहारनीहारशीतैः॥

शोकव्यायामचिन्ताग्रहगणवनितात्यन्तसंगप्रसंगै ।
प्राय कुप्यन्ति पुसा मधुममयवरद्वर्षणेसन्निपाता ॥

और भी लिखा है,—खट्टे, चिकने, गरम, तीखे, कडवे और मीठे रसके सेवन, शराव, सूरज की धूप या आगके सेवन, कषैले पदार्थों के सेवन, रूखे और भारी पदार्थों के सेवन, काम, क्रोध, सरदी, शोक, कसरत, मिहनत, चिन्ता—इन सबके बे-कायदे या अति सेवन करनेसे, भूतपिशाचको बाधा से और बहुत ही स्त्री प्रसंग करने से—चैत, वैशाख, कार, कातिक और सावन, भादोंमें, अक्सर, त्रिदोष कुपित होकर "सन्निपात ज्वर" होता है। यह ज्वर कष्ट साध्य * होता है। अगर एक दोष को शान्त करते हैं, तो दूसरा कुपित हो जाता है।

सन्निपातज्वर कैसे होता है ?

—*\#*—

त्रिदोषकारक आहार विहारोंके कारण से (जो ऊपर लिखे हैं), वात, पित्त और कफ आमाशयमें जाकर, रसको दूषित करके, कोठे की अग्नि की गरमी को बाहर निकाल कर, ज्वर करते हैं।

आहारके दोष से—अपथ्य सेवन करने से—पहलेका इकट्ठा हुआ आमरस—कच्चा रस—शरीर की अग्नि को शान्त कर देता है। इसके बाद यानी अग्निके शान्त होनेके बाद—मनुष्य जो खाता है, वह सब कफ हो जाता है। उस कफ को वायु दूषित करता है, तब वह कफ वायु या हवाके बहनेवाली नसोंमें जाकर उनको बन्द कर देता है, तब वायु—हवा पित्तको कुपित करती है। इस तरह वात, पित्त और कफ—तीनो दोष—एक दूसरे से कुपित होकर, प्रबल सन्निपात रोग करते हैं।

* "चरक"में लिखा है,—दोषोंके बढ़ जाने, जठराग्निके नष्ट होने और सारे लक्षणोंके पूरे हो जाने से सन्निपातज्वर असाध्य हो जाता है। अगर दोष और जठराग्नि सर्वथा नष्ट न हुए हों, तो कष्टसाध्य समझना चाहिये।

सन्निपात ज्वरके पूर्व्वरूप।

सन्निपातज्वरमें वातज्वर, कफज्वर और पित्तज्वर तीनोंके पूर्व्व-रूप—जँभाई आना, अन्नमें अरुचि होना और नेत्रोंमें जलन होना,—ये होते हैं।

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसन्धिशिरोरुजा।
सास्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने॥
सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कण्ठः शूकैरिवावृतः।
तन्द्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः॥
परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्ताङ्गता परम्।
ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च॥
शिरसो लोठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा।
स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः॥
कृशत्वं नातिगात्राणां सततं कण्ठकूजनम्।
कोठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनम्॥
मूकत्वं स्रोतसां पाको गुरुत्वमुदरस्य च।
चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः॥

जरासी देरमें गरमी लगने लगे और जरासी देरमें सर्दी लगने लगे, हड्डियों, जोड़ों और सिरमें दर्द हो; आंखोंसे आंसू गिरें, आँखें काली, लाल, फटीसी अथवा भीतर को खड्डोंमें घुसी हुई अथवा टेढ़ी सी मालूम हों; कानोंमें दर्द हो या उनमें शब्द हो, गले में काँटे पड़ जायें; तन्द्रा * हो यानी आधी आँखें खुली हों और आधी बन्द हों, बेहोशी हो, रोगी प्रलाप करे यानी आनतान बके, खांसी हो; श्वास हो, खानेकी इच्छा न हो, शरीर घूमे,

* सन्निपातज्वरमें "तन्द्रा" सबसे बुरा उपद्रव है। वैद्यको इसका पहले ख़याल रखना चाहिये। ज्वरोंमें सन्निपात बुरा है और सन्निपातज्वरके उपद्रवोंमें "तन्द्रा" बुरी है।

जीभ आग से जले हुए के समान हो अथवा गायकी जीभ की तरह खरदरी हो, सारा शरीर ढीलासा हो जाय, थूक में सुर्खी आवे या कफ मिला हुआ रक्तपित्त थूकमें निकले, सिरमें इतने जोरका दर्द हो कि, रोगी सिरको इधरसे उधर और उधरसे इधर हिलावे अथवा माथेको धर धर पटके, प्यासका ज़ोर हो, नींद न आवे, हृदय या छातीमें दर्द हो, पसीना बहुत कम आवे, पाख़ाना पेशाब देर देर में हों और थोड़े-थोड़े हों, शरीर बहुत दुबला न हो *, कण्ठ में बराबर आवाज हो, पीले लाल और गोल गोल चकत्ते शरीरमें हो जायँ अथवा सारे शरीर में फुन्सियाँ निकल आवें, रोगी कम बोले—धीरे बोले या बोले ही नहीं, कान नाक आदि शरीर के छेद पक जायँ, पेट फूलासा रहे तथा वातादिक दोषोंकी उत्तम चिकित्सा होने पर भी देर में पाक हो अर्थात् ये बहुत समय में पके —ये लक्षण सन्निपात ज्वरके हैं।

वाग्भट्टने लिखा है,—दिनमें घोर नींद आती है, रातमें नींद आती ही नहीं, अथवा दिन-रात में कभी नींद नहीं आती, पसीने जोर से आते हैं अथवा आते ही नहीं, रोगी नाचता, हँसता और गाता है और रोगी की सारी चेष्टायें बदल जाती हैं इत्यादि।

हारीत ने लिखा है,—रोगी रात में जागता है, दिनमे तन्द्रा रहती है, बारम्बार थूकता है और नेत्र काले हो जाते हैं इत्यादि।

सन्निपातोंके भेद।

सुश्रुत और वाग्भटके मतसे सन्निपात एक ही प्रकारका होता है, किन्तु महर्षि चरकने कमजोर दिमागवालोंके सुभीतेके लिये, उल्वण आदि भेदों से तेरह प्रकारके सन्निपात लिखे हैं। कोई सज्जन सन्निपात को १३ प्रकारका, कोई ३ प्रकारका और कोई

* सन्निपातज्वरमे शरीर अत्यन्त दुबला क्यों नहीं होता?
उत्तर—यह व्याधिका प्रभाव है।

५२ प्रकारका मानते हैं। उन सबके लिखने से ग्रन्थ बढ़ जानेका भय है और साधारण लोगों को वे आफत से मालूम होंगे, इसलिये हम तेरह सुप्रसिद्ध सन्निपात ज्वरोंके नाम और लक्षण लिखते हैं। इनसे चिकित्साकर्ममें सारा काम निकल सकता है।

संधिकश्चान्तकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रम।
शीतागतन्द्रिक प्रोक्त कंठकुब्जश्चकर्णक॥
विख्यातोभुग्ननेत्रश्चरक्तष्ठीवी प्रलापक।
जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश॥

सन्निपातज्वर की किस्में।



१ सन्धिक।	२ अन्तक।	३ रुग्दाह।
४ चित्तविभ्रम।	५ शीताङ्ग।	६ तन्द्रिक।
७ कंठकुब्ज।	८ कर्णक।	९ भुग्ननेत्र।
१० रक्तष्ठीवी।	११ प्रलापक।	१२ जिह्वक।
	१३ अभिन्यास।	

सन्धिक सन्निपातके लक्षण।



पूर्वरूपकृतशूलसम्भवं शोफवातरुजवेदनान्वितम्।
श्लेष्मतापबलहानिजागरसन्निपातमितिसन्धिकंवदेत्॥

जिस ज्वर के पूर्वरूप में ही शूल हो, शोथ हो, सन्धियों या जोड़ों में बादी का दर्द हो, कफ गिरना, बल-हानि—कमजोरी, सन्ताप और रात में जागना—ये लक्षण हों, उसे "सन्धिक" सन्निपात कहते हैं।

नोट —सन्धिक सन्निपात के पूर्व्वरूप में ही वात पीडा का जोर होता है। जोड़ों में दर्द होना ही इसकी खास पहचान है। किसी किसी ने सन्धियों में सूजन और अत्यन्त पीडा तथा खाँसी वगैर. का होना भी लिखा है। इस सन्निपात की परमायु ७ दिन की है, यानी इसका जोर ७ दिन तक रहता है।

सन्धिक सन्निपात में न तो गर्म चिकित्सा करनी चाहिये न शीतल ही, यानी मातदिल इलाज करना चाहिये। इस में हलके लघन कराना, पसीने न आते हों, तो पसीने निकाल कर शरीर हलका करना, यवागू का पथ्य देना और उत्तम परीक्षित दवा देना उचित है। किसीने इस सन्निपात को साध्य और किसीने कष्टसाध्य कहा है। सच तो यह है कि, कोई भी सन्निपात सुखसाध्य नहीं है। जो साध्य समझा जाता है, वह भी कष्टसाध्य है। अच्छा इलाज और ईश्वर की दया होने से "सन्धिक" सन्निपातवाला बच सकता है।

अन्तक सन्निपात के लक्षण ।



दाहंकरोतिपरितापनमातनोति
मोहददातिविदधाति शिर प्रकम्पम् ।
हिक्का करोति कसन च समा जुहोतिजानी
हित विबुधवर्जितमंतकाख्यम् ॥

बहुत दाह हो, सन्ताप हो, शरीर आग को तरह जले, बेहोशी हो, सिर में दर्द हो, कँपकँपी आवे, हिचकियाँ चलें, खाँसी का जोर हो,—ये लक्षण हों तो "अन्तक" सन्निपात समझना चाहिये। बुद्धिमान् इस को त्याज्य या असाध्य कहते हैं।

नोट—यह सन्निपात अपने नाम के माफिक काम करता है। जिसे होता है, उसका अन्त ही कर देता है। इसीसे चतुर लोग इस सन्निपातवाले का इलाज हाथ में नहीं लेते। यह सन्निपात साक्षात् मृत्यु है। जिस ज्वरमें हिचकी और श्वास हों, उसे मौतका वारण्ट ही समझना चाहिये। इसकी अवधि दस दिनकी है। ईश्वर की दया होने से कोई-कोई रोगी बच भी जाता है। इसलिये रोगी के घरवालों से कह सुन कर इलाज करना चाहिये। पर, सच्ची दवा तो सदाशिव का ध्यान है। इस में "रोटिका बन्धन" अच्छा काम देता है।

किसी किसी ने लिखा है,—अन्तक सन्निपातवाला निरन्तर सिर को हिलाया करता है। सारे शरीर में भयानक वेदना होती है। इसमें हिचकी, श्वास, खाँसी, दाह, बेहोशी, अत्यन्त सन्ताप, घबराहट और वृथा बकवाद—ये लक्षण होते हैं। इस में शरीर का आग की तरह जलना खास लक्षण है।

रुग्दाह सन्निपातके लक्षण।



प्रलापपरितापनप्रबलमोहमान्द्य—श्रम
परिभ्रमणवेदनाव्यथितकण्ठमन्याहनु।
निरन्तरतृषाकर श्वसनकासहिक्काकुल-
सकृच्छ्रसाधनोभवतिहन्तरुग्दाहक॥

रुग्दाह सन्निपातवाला अनर्थ भाषण करता है, यानी आनतान बकता है, बुखार का जोर होता है, बेहोशी बहुत होती है, निरन्तर प्यास लगती है, मन्दता, अनायास थकान, पीड़ा, मन्या नाड़ी—गर्दन और ठोढी में दर्द, खाँसी, श्वास और हिचकी,—ये लक्षण होते हैं।

नोट—इसकी अवधि २० दिन की है। यह सन्निपात कष्टसाध्य अच्छा इलाज होने से रोगी बच सकता है। रुग्दाह का इल पित्तज्वर के समान होता है। भीतरी दाह के नाश करने "षडङ्गपानीय" अच्छा काम करता है। शरीरके ऊपर लेप क के लिये नीम के झाग अच्छे हैं। बेरके पत्ते दही में पीस लगाने से भी अच्छा चमत्कार नजर आता है। मिश्री शहत मिला कर धान की खीलों का रस या गाय के दूध में मि मिला साबूदाना अच्छा पथ्य है। इस ज्वर में रोगी बहुत बकना खास लक्षण है।

चित्तभ्रम सन्निपातके लक्षण।



यदिकथमपिपुंसाजायतेकायपीडा
भ्रममदपरितापोमोहवैकल्यभाव।
विकलनयनहासोगीतनृत्यप्रलापी
भिषगिदमतिअसाध्यकेपिचित्तभ्रमाख्यम्॥

जिस के शरीर में किसी तरह की पीड़ा हो, भ्रम (धतूरा खाने की सी हालत), सन्ताप, मोह—बेहोशी, विकलता—घबराहट, आँखों में बेकली, हँसना, गाना, नाचना, बकना—ये लक्षण हों, उसे कोई असाध्य "चित्तभ्रम" सन्निपात कहते हैं।

नोट—किसी किसी ने लिखा है,—इस सन्निपातवाला नाचता, गाता हँसता और वृथा बकता है, बुरी तरह से देखता है, बेहोश हो जाता है तथा दाह—जलन, तकलीफ और भय के मारे दुखी रहता है। इस ज्वर में रोगी को होश नहीं रहता, उसके चित्त में भ्रम हो जाता है और बुखार के जोरके मारे मतवालासा हो जाता है।

इसे कोई-कोई असाध्य कहते हैं, पर अच्छा इलाज होने से रोगी आराम हो जाता है। इसमें रोगी को तसल्ली देना, उस के दिलको शान्त रखना जरूरी है। इसकी अवधि २४ दिनकी हैं। इसमें पहले साधारण उपायों से बेहोशी नष्ट करनी चाहिये। नस्य, अञ्जन और धूप से काम लेना और काढ़ा पिलाना चाहिये। इस में रोगी का मतवालासा हो जाना ख़ास लक्षण है।

शीतांग सन्निपातके लक्षण।



हिममदृशशरीरोवेपथुः श्वासहिक्का
शिथिलितसकलाङ्गःखिन्ननादोग्रताप।
क्लमथुदवथु—कासच्छर्द्यतीसारयुक्त—
स्त्वरितमरणहेतुः शीतगात्रप्रभावात्॥

शरीर बर्फके समान शीतल हो, शरीर काँपे, श्वास और हिचकी हों, सारे अङ्ग ढीले हों, आवाज धीमी हो, शरीर के भीतर उग्र सन्ताप हो, अनायास थकान हो, मन में सन्ताप हो, खाँसी, वमन और अतिसार— पतले दस्त —हों,—ये लक्षण "शीताङ्ग" सन्निपात के हैं।

नोट—किसीने लिखाहै,—इस शीताङ्ग सन्निपात में शरीर बर्फ के समान शीतल हो जाता है, श्वास, खाँसी, हिचकी, मोह—बेहोशी प्रलाप—आनतान बकना और ग्लानि—ये लक्षण होते हैं, कफ बहुत गिरता है, वायु का कोप अधिक होता है, दाह होता है, क्रय होती हैं, सारे शरीरमें दर्द होता है और आवाज बैठ जाती है।

शरीर का बर्फ की तरह ठण्डा हो जाना, इस सन्निपात का ख़ास लक्षण है। अगर शरीर में जल्दी गरमी न पहुँचाई जाय,

भीतर दाह और प्यास का जोर हो ; तो रोगी का बचना ना मुमकिन है, क्योंकि भीतर दाह होना और ऊपर सरदी लगना,—मौत की निशानी है। जब शरीर के भीतर पित्त और बाहर वायु और कफ होते हैं, तब शरीर के भीतर दाह और शोष होता है तथा बाहर पसीने और शीतलता होती है। जब भीतर वात कफ और बाहर पित्त का दौरदौरा होता है तब शरीर गरम रहता है और हाथ पैर शीतल रहते हैं। इसकी अवधि १५ दिन की है, पर यह अवधि कहने भर की है। शरीर में गरमी न पहुँचे तो रोगी निश्चय ही मर जाय। इसलिये इस सन्निपात में जैसे भी हो, खून में गरमी पहुँचानी चाहिये। अगर भीतर दाह और प्यास हो, तथा बाहर सरदी हो, तो इलाज हाथ में लेकर बदनामी का ठीकरा लेना है।

तन्द्रिक सन्निपातके लक्षण।



प्रभूततद्रार्त्तिज्वरकफ——पिपासाकुलतरो
भवेच्छयामाजिह्वापृथुलकठिनाकेंटकावृता।
अतीसार श्वास क्लमथुपरिताप -श्रुति—
रुजोभृगकण्ठेजाड्य -शयनमनिशतन्द्रिकादे॥

तन्द्रा बहुत हो, शूल, ज्वर कफ और प्यास से रोगी घबरा रहा हो, जीभ काली हो गई हो तथा मोटी, कठोर और काँटों से युक्त हो, अतिसार हो, ग्लानि हो, सन्ताप हो, कानोंमें दर्द हो, कंठ में जड़ता हो और रात-दिन नींद आती हो—अगर ये लक्षण हों, तो "तन्द्रिक" सन्निपात ज्वर समझना चाहिये।

नोट—किसीने इस सन्निपात में श्वास की अधिकता, खाँसी, गले में सूजन, खुजली और बहरापन प्रभृति लक्षण लिखे हैं। तन्द्रिक की

अवधि २१ दिन की है। अगर सद्वैद्य चिकित्सा करे, तो रोगी बच सकता है। इस सन्निपात में खास बात यह होती है कि, रोगी टकटकी लगा कर एक तरफ देखा करता है, उसकी आधी पलकें ढकी रहती हैं या आँखों के सामने अँधेरा रहता है। बारम्बार गले में कफ भर-भर आता है। गले में इतनी खुश्की रहती है कि, बोला नहीं जाता। इस में तन्द्रा का बड़ा जोर रहता है, क्योंकि इसका नाम ही "तन्द्रिक" है। "तन्द्रा" सन्निपात में सबसे बुरा उपद्रव है। नस्य देने और अञ्जन लगाने से तन्द्रा नाश होती है। पीने को काढ़ा देना चाहिये।

कंठकुब्ज सन्निपातके लक्षण।



शिरोर्तिकण्ठग्रहदाहमोहकम्पज्वरारक्तसमीरणार्त्ति ।
हनुग्रहस्तापविलापमूर्च्छास्यात्कण्ठकुब्ज खलुकष्टसाध्य ॥

सिर में दर्द, गले में दर्द, दाह, मोह, कम्प (कँपकपी आना), वातरक्त की पीड़ा, ठोडी जकड़ जाना, सन्ताप, प्रलाप आनतान बकना और मूर्च्छा—ये लक्षण "कंठकुब्ज" सन्निपात ज्वर में होते हैं। यह निश्चय ही कष्टसाध्य है।

नोट—इस सन्निपात मे सैकड़ों धान के छिलकों की तरह कंठ में काँटे पड़ जाते हैं। इस में गले की तकलीफ बड़े जोर से होती है। पहले ही गला रुक आता है, इसलिये पानी पीते समय भयानक पीड़ा होती है। एक घूँट जल पीने में छुरियाँ सी लगती हैं—दम सा निकलता है। इस में श्वास का जोर बहुत रहता है। रोगी बकता भी बहुत है। सिर में घोर वेदना, मूर्च्छा और गला रुकना, इस के खास लक्षण हैं। इस को अवधि १३ दिन की है, पर यह बड़ी कठिनाई से आराम होता है। सब

से पहले गला खोलने की तजवीज करनी चाहिये दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये और ताकत कम न हो, इसलिये ताकत लानेवाला कोई यूष देना चाहिये।

कर्णक सन्निपातके लक्षण।



प्रलापश्च तिहास कण्ठग्रहाग व्यथ श्वासकासप्रसेकप्रभावम्।
ज्वर तापकर्णांतयोर्गलपीडाम्बुधा कर्णांककष्टसाध्यवदन्ति॥

अनताप बकना, बहरा हो जाना, गले में दर्द होना, अङ्गों में पीड़ा होना, श्वास, खाँसी, पसीना, लार गिरना ज्वर, सन्ताप, कान और गाल में दर्द,—ये लक्षण जिस मे हों, वह "कर्णक" सन्निपात रोगी है। बुद्धिमान लोग इस ज्वर को कष्टसाध्य कहते हैं।

नोट—इस में रोगी का बहरा हो जाना, कानों और गालों में दर्द होना और लार बहना—खास लक्षण हैं। एक जगह लिखा है, दोषोंके अत्यन्त कुपित होनेसे कानकी जड़में अत्यन्त सूजन और दर्द होता है, मल रुक जाता है तथा बहरापन, प्यास और बेहोशी प्रभृति लक्षण होते हैं। इस ज्वरमें "कर्णमूल" अवश्य होता है।

सन्निपात ज्वरके अन्तमें कानकी जड़में एक प्रकारकी भयानक सूजन होती है, उसे ही "कर्णमूल" कहते हैं*। अगर वह न पकी हो, तो लेप करना चाहिये। [illegible] गई हो, तो जोंक लगाकर नीमके पत्ते

* वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषों से "त्रिदोष ज्वर" होता है। जब यह ज्वर रक्त मे मिल जाता है, तब उसी को "सन्निपातज्वर" कहते हैं। जब तक ज्वर का और खून का मेल न हो, सन्निपातज्वर नहीं समझना चाहिये। "त्रिदोषज्वर" और "सन्निपातज्वर" मे यही भेद है। क्वाथ और पाचन से यद्यपि तीनों दोष शान्त हो जाते हैं पर रक्त या खून शान्त नहीं होता, इसी से कान की जड़ में भयंकर सूजन—कर्णमूल—होती है।

बाँधने चाहिये' अथवा नश्तर द्वारा ख़राब खून निकलवाकर, घावकी तरह इलाज करना चाहिये। तत्काल खून निकलवा देनेकी सभीने राय दी है। ख़राब खून रहकर रोगीको मार डालता है। 'पचतिक्त घृत" प्रभृति कफपित्तनाशक घी पिलाना, कफपित्तनाशक लेप करना, सन्निपातक नाशक नस्य देना और मुखमें कवल रखाना,—ये सब उस सूजनके नाश करनेमें हितकारी हैं। ऐसे मौक़े पर, "दशमूलकी औषधियोंका लेप" अथवा स्वेद अथवा "प्याजका स्वेद" दर्द को जल्दी आराम करता है। दोनों समय काढ़ा पिलाना चाहिये। इस सन्निपातकी अवधि ९० दिन या ३ मासकी है।

भुग्ननेत्र सन्निपात के लक्षण।

ज्वरबलापचय स्मृतिशून्यताश्वसनभुग्नविलोचनमोहित।
प्रलपनभ्रमकम्पनशोफवान्त्यजतिजीवितमाशुसभुग्नदृक्॥

ज्वर, बलनाश—कमजोरी, स्मृतिनाश—याद न रहना, श्वास, टेढ़ी दृष्टि, बेहोशी, आनतान बकना, भ्रम शरीर घूमना, कँपकँपी और सूजन—ये लक्षण 'भुग्ननेत्र" सन्निपातके हैं। यह रोगी जल्दी मरता है।

नोट—किसीने लिखा है,—इस सन्निपातज्वरमें नेत्र अत्यन्त टेढ़े हो जाते हैं, श्वास, खाँसी, अत्यन्त प्रलाप—बकना, मद—नशासा रहना, शरीर काँपना और कानोंमें बहरापन तथा बेहोशी ये होते हैं।

इस सन्निपातकी अवधि ८ दिनकी है। नेत्रोंका टेढ़ा होजाना अथवा नजरका तिरछा होजाना और स्मरण-शक्तिका नाश होजाना,—इसके खास लक्षण हैं। इसकी अवधि आठ दिनकी है, पर रोगी चट पट ही ख़तम होता है। अञ्जन और नस्य द्वारा दृष्टि ठीक करनी चाहिये। दोनों समय काढ़ा पिलाकर, स्मरणशक्ति वगैरः दुरुस्त करनी चाहिये।

रक्तष्ठीवी सन्निपात के लक्षण ।



रक्तष्ठीवीज्वरवमितृषामोहशूलातिसारा
हिक्काध्मानभ्रमणदवथुश्वाससंज्ञाप्रणाशा ।
श्यामारक्ताधिकतररसनामण्डलोत्था-
नरूपारक्तष्ठीवीनिगदितइहप्राणहन्ताप्रसिद्ध ॥

खूनकी कय होना, ज्वर, वमन, प्यास, मूर्च्छा - बेहोशी', शूल— दर्द, अतिसार—पतले दस्त, हिचकी, पेटपर अफारा, भौंर आना, सन्ताप, श्वास, सज्ञानाश, जीभ काली और लाल हो जाना, शरीरमें खूनके विकारसे चकत्ते होना—ये सब लक्षण "रक्तष्ठीवी" सन्निपात ज्वरके हैं। यह प्रसिद्ध प्राणनाशक सन्निपात ज्वर है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमें रोगी खून थूकता है, शरीरमें खूनकेसे चकत्ते हो जाते हैं, नेत्र लाल हो जाते हैं, रोगी अचेत होजाता है, बारम्बार गिर पडता है और होश नही रहता है इत्यादि।

इस सन्निपातमें जीभका काला और लाल हो जाना तथा उससे खून बहना और उस पर चकत्ते हो जाना खास लक्षण हैं। बहुत करके थूकके साथ खून आता है और वमन भी होती हैं। काढे वगैर.से खून बन्द करना चाहिये और नस्य देनी चाहिये। इस सन्निपातमें बहुत गरम इलाज करना खराब है। यह सन्निपात असाध्य है। इसकी अवधि १० दिनकी है।

प्रलापक सन्निपात के लक्षण।



कम्पप्रलापपरितापनशीर्षपीडा प्रौढ़प्रभावपवमानपरोऽन्यचिन्ता ।
प्रज्ञाप्रणाशविकलप्रचुरप्रवाद क्षिप्र प्रयातिपितृपालपदप्रलापी ॥

प्रलापकमें—कम्प, बडबडाहट, सन्ताप और सिरदर्दका अधिक जोर होता है। रोगी पवित्रतामें आसक्त रहता है, दूसरोंकी चिन्ता करता है, बुद्धिका नाश हो जाता है, निकलता और बकवादकी अधिकता रहती है। "प्रलापक" सन्निपातवाला शीघ्रही यमराजके यहाँ जाता है।

नोट—इस सन्निपातज्वरमें अत्यन्त सिरदर्द, बकना और बुद्धिका नाश होना—मुख्य लक्षण हैं। सभी दोषोंका अत्यन्त कोप होनेसे रोगी बहुत बकता है, उठ-उठकर भागता है और गिर गिर पडता है। दाह और अत्यन्त बेहोशी होती है। रोगी का दिन रात बकना, अपनी तारीफ करना और पराई चिन्ता करना विशेष लक्षण हैं। इसकी अवधि १४ दिनकी है, पर रोगी हर घडी यमालयकी राह देखता है। इस सन्निपातज्वरको ओरज देने, अञ्जन लगाने, तेज नस्य देने और अन्धकार सेवनसे जीतना चाहिये।

जिह्वक सन्निपात के लक्षण।

—※※※—

श्वसनकासपरितापविह्वल कठिनकण्टकपरीतजिह्वक।
बधिरमूकबलहानिलक्षणोभवति कष्टतरसाध्यजिह्वक॥

श्वास, खाँसी, सन्ताप, विह्वलता, कठोर और काँटोंसे व्याप्त जीभ, बहरापन, गूँगापन और बलहानि—कमजोरी—ये "जिह्वक" सन्निपातज्वरके लक्षण हैं। यह कष्टसाध्य है।

नोट—जीभमें काँटे पडजाना, रोगीका गूँगा और बहरा हो जाना, भयानक सन्ताप होना—इसके ख़ास लक्षण हैं। इसकी मर्यादा १६ दिन की है। इसमें जीभको ऊपरी इलाज से नर्म करना चाहिये। इस ज्वरका इलाज रक्तष्ठीवीसे मिलता जुलता है।

अभिन्यास सन्निपातके लक्षण ।



दोषत्रयस्निग्धमुखत्वनिद्रा वैकल्यनिश्चेष्टनकष्टवाग्मी ।
बलप्रमाण श्वसनादिनिग्रहोऽभिन्यासउक्तोननुमृत्युकल्प ॥

त्रिदोषके कोपके समान मुँहपर चिकनाई, नींद, बेकली, चेष्टा हीनता, तकलीफ से बोलना बलनाश—कमजोरी, श्वास प्रभृतिका रुकना—ये सब चिह्न "अभिन्यास सन्निपात" के हैं। यह सन्निपात महा असाध्य और मृत्युतुल्य है।

नोट—किसीने लिखा है, इस ज्वरमे सभी दोष अति बलवान और तेज होते हैं। अत्यन्त बेहोशी, गूँगापन अधिक और मुँहपर चिकनाई होती है। रोगी बहुतही बेचैन रहता है, दाह भी होता है, अग्नि मन्दी हो जाती है। जरा भी चेष्टा नही रहती और श्वासका जोर रहता है।

अभिन्यास सन्निपात ज्वरमें मुखपर चिकनाई होना, श्वासका रुक रुककर आना और बोला न जाना खास लक्षण हैं।

नोट—सुश्रुत से सन्निपात के विशेष लक्षण—चूँकि जगत् अग्नि और सोमात्मक है, इसलिये सन्निपात के दो भेद माने हैं,—(१) अभिन्यासात्मक, (२) हतौजस। जिस रोगीके कफ का अंश अधिक बढ जाता है, उसे "अभिन्यासात्मक" सन्निपात होता है और जिसके वायु और पित्त अधिक बढ जाते हैं और कफ के भाग—सौम्य धातु को नष्ट कर देते है, उस को "हतौजस" सन्निपात होता है। जिस सन्निपात मे रोगी को नींद या तन्द्रा बहुत होती है, उसे "अभिन्यास" कहते हैं और जिस मे क्षीणता जियादा होती है, उसे "हतौजस" कहते है। जिस मे शरीर काठकी तरह पड़ा रहता है, उसे "सन्यास" कहते हैं। जिस मे सारे लक्षण होते हैं, वह असाध्य होता है और जिस मे कम लक्षण और कम उपद्रव होते है, वह कष्टसाध्य होता है।

शरीर न बहुत गरम हो और न अति शीतल हो, संज्ञा कम हो जाय, रोगी भ्रम मे पड़ा हुआ सा देखे, स्वर—आवाज नाश हो जाय, जीभ खरदरी हो जाय, कण्ठ सूखे, पसीना और मल मूत्र बन्द हो जायँ, भोजन से बैर हो कान्ति नाश हो जाय, रोगी श्वास लेता हुआ जिधर गिर पड़े उधर ही बेहोश पड़ा रहे और बेहोश

पड़ा हुआ ही आनतान बके,—ये लक्षण "अभिन्यास" सन्निपात के हैं। जिसके पित्त और वायु उल्वण होते हैं, उसका 'ओज' नष्ट हो जाता है। वह अचेतन की तरह पड़ा रहता है; जागता या सोता हुआ बकता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, शरीर शिथिल हो जाता है और सन्ताप और वेदना कम होती है उसे चतुर वैद्य "हतौजस" कहते हैं, यानी उस में ओज का निरोध समझते हैं।

उक्त सन्निपातोंमें साध्यासाध्य-विचार।

—※※—

सन्धिगस्तन्द्रिकश्चैव कर्णाकः कण्ठकुब्जकः।
जिह्वकश्चित्तविभ्रंश षट्साध्या सप्त मारकाः॥

सन्धिगक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्ज, जिह्वक, चित्तभ्रम } ये छै सन्निपात साध्य हैं।

अन्तक, रुग्दाह, शीताङ्ग, भुग्ननेत्र, रक्तष्ठीवी, प्रलापक और अभिन्यास } ये सात सन्निपात मारक हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है —

सन्धिगस्तेषु साध्यः स्यात्तन्द्रिकश्चित्तविभ्रमः।
कर्णको जिह्वकः कण्ठकुब्जः पचापि कष्टकाः॥
रक्तष्ठीवी भुग्ननेत्रः शीतगात्रः प्रलापकः।
अभिन्यासोऽन्तकश्चैते षडसाध्याः प्रकीर्तिताः॥

इन तेरह सन्निपातोंमें एक "सन्धिक" साध्य है। तन्द्रिक चित्त-विभ्रम, कर्णक, जिह्वक, कण्ठकुब्ज और रुग्दाह कष्टसाध्य हैं। रक्तष्ठीवी, भुग्ननेत्र, शीताङ्ग, प्रलापक, अभिन्यास और अन्तक असाध्य हैं।

नोट—सन्निपात ज्वरोंकी साध्यासाध्यताके सम्बन्धमें बड़ा मतभेद है। किसी-किसीने सन्धिगक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्ज, जिह्वक और चित्तविभ्रमको साध्य कहा है, पर ये कष्टसाध्य हैं। रुग्दाहको किसीने कष्टसाध्य, किसीने अति कष्टसाध्य और किसीने

मारक कहा है। शेष अन्तक आदिको सभीने मारक कहा है, पर ईश्वरकी दया हो, भाग्य अच्छा हो, अच्छा वैद्य मिल जाय, रोगीकी टूटी न हो, तो असाध्य भी साध्य हो जाता है।

असाध्य कृच्छ्रसाध्यके लक्षण ।

"सुश्रुत" उत्तरतन्त्रमें लिखा है :—

दोषेविवृद्धे नष्टेऽग्नौ सर्व सम्पूर्णलक्षणः ।
सन्निपातज्वरोऽसाध्य कृच्छ्रसाध्यस्ततोऽन्यथा ॥

कितनेही वैद्य कष्टसाध्य सन्निपातको भी असाध्य कहते हैं, अगर वातादि दोषोंकी वृद्धि हो, जठराग्नि नष्ट होगई हो और दाह शीत प्रभृति सारे लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको असाध्य समझना चाहिये। अगर दोष पक गये हों, अग्निदीपन हो और थोड़े थोड़े लक्षण हों, तो सन्निपातज्वरको कष्टसाध्य समझना चाहिये।

सन्निपात ज्वरोंकी अवधि ।

सन्निपातज्वरोंकी अवधि इस भाँति है :—

सन्धिक की ७ दिनकी, अन्तककी १० दिनकी, रुग्दाहकी २० दिनकी, चित्तविभ्रमकी २४ दिनकी, शीताङ्गकी १५ दिनकी, तन्द्रिक की २५ दिनकी, कण्ठकुब्जकी १३ दिनकी, कर्णकको ६० दिनकी, भुग्ननेत्रकी ८ दिनकी, रक्तष्ठीवीकी १० दिनकी, प्रलापककी १४ दिनकी, जिह्वककी १६ दिनकी और अभिन्यासकी १६ दिनकी अवधि होती है। अर्थात् ये सन्निपातज्वरोंकी परमायुके दिन हैं, परन्तु रोगी शीघ्र भी मर जाता है।

भी कहा है :—

सप्तत्रिपंचसप्ताहाद्दशाहाद्द्वादशादपि।
एकविंशद्दिने शुद्ध सन्निपातीऽजीवति॥

सन्निपात होने पर तत्काल तीन, पाँच, सात, दश और बारह दिन से २१ दिन तक सन्निपातज्वर रोगी शुद्ध होकर जीता है।

और भी कहा है —

सप्तमी द्विगुणा यावन्नवम्येकादशी तथा।
एषा त्रिदोषमर्यादा मोक्षाय च वधायच॥

सन्निपातज्वर अपने आनेके दिन से चौदहवीं, बीसवीं अथवा चौबीसवीं रातमें शान्त हो जाता है या मार देता है। यह सन्निपात ज्वरकी परम मर्य्यादा है, परन्तु रोगी जल्दी भी मर जाता है, यानी इस अवधिसे पहले या तत्काल भी मर जाता है।

"सुश्रुत"मे लिखा है —

सप्तमे दिवसे प्राप्ते दशमे द्वादशेऽपि वा
पुनर्घोरतरो भूत्वा प्रशमं याति हन्ति वा

वात प्रधान सन्निपात सातवे दिन पित्तप्रधान दसवे दिन और कफप्रधान बारहवे दिन, फिर घोरतर होकर शान्त हो जाता है अथवा मनुष्यको मार देता है। मतलब यह है कि "मलपाक" होता है, तो शान्त हो जाता है और "धातुपाक" होता है, तो मार देता है। पित्तकी, कफकी और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्वक १० दिन, १२ दिन और ७दिनमें जो धातु पक जाते हैं तो सन्निपात रोगीको मार डालता है और अगर मल पक जाता है, तो शान्त हो जाता है।

नोट—शुभ कर्मोका उदय होनेसे "मलपाक" होता है और अशुभ कर्मोका उदय होनेसे "धातुपाक" होता है। धातुओंका पाक रसने लगाकर वीर्य होता है। सन्निपात रोगीके जीवन-मरणमें "मलपाक" और "धातुपाक" कारण है।

धातुपाकके लक्षण ।



निद्रानाशो हृदि स्तंभो विष्टम्भो गौरवारुची ।
अरतिर्बलहानिश्च धातुना पाकलक्षणम् ॥
नाभेरूर्द्ध हृदोऽधस्तात्पीडित चेद्रुग्यथा भवेत् ।
धातो पाक विजानीयादन्यथा तु मलस्य च ॥

नींदका न आना, हृदयका जकड़ जाना, मलका रुकना, शरीरका भारी रहना, अरुचि, बेचैनी और बलका नाश—ये धातुपाकके लक्षण हैं। नाभिके ऊपर और हृदयके नीचे दबाने या छूनेसे दर्द हो, तो धातुओंका पाक हुआ समझो, यदि दर्द न हो, तो मलपाक हुआ समझो। और भी कहा है,—ज्वरसे पीडित मनुष्यके हृदयमें, नाभिके ऊपर, पाकके कारण, दुखते हुए अङ्गोंमें अङ्गुलियोंसे दबानेसे पीडा हो, तो धातुपाक हुआ समझो। इसीलिये अच्छे जानकार वैद्य और डाकृर, नाभिके ऊपर उँगलियोंसे दबा-दबाकर धातुपाक और मलपाकको मालूम कर लेते हैं, क्योंकि सन्निपात रोगीका मरण जीवन विशेषकर इसी उपायसे मालूम होता है।

मलपाकके लक्षण ।



दोषप्रकृतिवैकृत्यंलघुताज्वरदेहयो ।
इन्द्रियाणाचवैमल्यं दोषाणापाकलक्षणम् ॥

दोषोंका स्वभाव बदल गया हो यानी वातादिक दोषोंके कारणसे होनेवाले दाह, तन्द्रा, प्यास, आदि उपद्रव न हों या उनका जोर घट गया हो ; ज्वर और शरीर हलके हों तथा इन्द्रियोंमें निर्मलता हो, तो

मलपाक समझो। और भी कहा है,—पाँचों इन्द्रियाँ निरन्तर अपना काम करती हों, जठराग्नि दीप्त हो, प्यास वगैरः शान्त हों, ज्वर हलका हो, तो दोषोंका पाक हुआ समझो। अगर हृदय और नाभिमें घोर पीडा हो, अधिकतर पतला दस्त हो, ज्वर जोरसे हो, प्यास, मद, श्वासका बढाव हो, बेचैनी और अरुचि हो, तो धातुपाक हुआ समझो। मलपाक ईश्वरकी कृपा और पुण्यफलसे होता है। जिसकी मृत्यु निश्चित होती है, उसेही धातुपाक होता है।

सन्निपातज्वरका भयंकर उपद्रव।

सन्निपातज्वरस्यातेकर्णमूलेसुदारुणः ।
शोथ संजायतेतेनकश्चिदेवप्रमुच्यते ॥
ज्वरस्यपूर्वं ज्वरमध्यतोवाज्वरान्ततोवाश्रु तिमूलशोथ ।
क्रमादसाध्य खलुकष्टसाध्य सुखेनसाध्योमुनिभि प्रदिष्ट' ॥

सन्निपात होनेके पीछे कानकी जडमें भयानक सूजन होती है, उस सूजनसे कोई ही रोगी बचता है। ज्वरके पहले, ज्वरके बीचमें और ज्वरके अन्तमें कानकी जडमें शोथ (सूजन) होता है, वह क्रमसे असाध्य, कष्टसाध्य और सुखसाध्य होता है।

ज्वरके अन्तमें सूजन होती है, पर ज्वरके आरम्भ और बीचमें भी होना लिखा है। ज्वरके आदिकी सूजन असाध्य, बीचकी कष्ट-साध्य और अन्तकी सुखसाध्य होती है। इस सूजनको रोगीकी मृत्युही समझना चाहिये। असलमें, यह सूजन रोगीके प्राणनाश करनेके लिये ही पैदा होती है। जब सन्निपातज्वरोंमें वातपित्तकी गरमी बहुत बढ जाती है और वह उचित चिकित्सा न होनेसे शान्त नहीं होती, तब वही गरमी मस्तिष्कमें पहुँचकर, वहाँके खूनको एक-दम से गरम करके पतला कर देती है, फिर वही खून वहाँसे चलकर कानके नीचेकी नस में आकर जम जाता है, क्योंकि गाढा

होने के कारण खून का बहना बन्द हो जाता है, उससे जो सूजन पैदा हो जाती है, उसेही "कर्णमूल" कहते हैं।

इस सूजनका खून अवश्य निकलवा देना चाहिये। जौंक लगवा कर अथवा सींगी या तूम्बी लगवाकर या नश्तर लगवाकर खून निकलवाना चाहिये। वङ्गसेनने लिखा है—रुधिरस्राव—खून निकाल कर, दागकर, घृतपान कराकर, कफपित्त नाशक वमन और कवल वगैरः देकर उसे जीतना चाहिये। "चरक"में लिखा है,—सन्निपात ज्वरके अन्तमें, कर्णमूलमें दारुण सूजन पैदा होती है। इसके होनेसे कोई ही रोगी बचता है। तत्काल खून निकलवाना, कफपित्तनाशक लेप करना और कवल धारण कराना—इस सूजनके नाशके उपाय हैं। जोंकों द्वारा खून निकलवाया जाय, तो एक दिन नीमके पत्ते बाँधकर फिर कोई लेप करना चाहिये। यही इसकी सर्वोत्तम चिकित्सा है।

सामान्य सन्निपातोंके तेरह भेद।

वातोल्वण

१ विस्फारक सन्निपात।

श्वास, खाँसी, भ्रान्ति, मूर्च्छा, प्रलाप, कम्प, बेहोशी, पसलियोंमें दर्द, जँभाई आना और मुखमें कसेलापन—ये वातोल्वण सन्निपात ज्वरके लक्षण हैं। इस दारुण सन्निपातको "विस्फारक" कहते हैं।

पित्तोल्वण

२ आशुकारी सन्निपात।

पतले दस्त, भ्रान्ति, मूर्च्छा, मुँह पकना, शरीरमें लाल लाल बिन्दुओंका होना और अत्यन्त दाह—ये पित्तोल्वण सन्निपातके लक्षण हैं। इसको "आशुकारी" कहते हैं।

कफोल्बण

३ कपन सन्निपात।

जड़ता, गद्गद बोली, रातमें नींदका भी आना, नेत्रोंमें स्तब्धता, और मुखमें मधुरता—ये कफोल्बण सन्निपातके लक्षण हैं। इसे ऋषि लोग "कम्पन" कहते हैं।

वातपित्तोल्बण

४ बभ्र सन्निपात।



ज्वर, मद, प्यास, मुंह सूखना, आँखोंका मिचीसी मालूम होना, अफारा, अरुचि, तंद्रा, खाँसी, श्वास, भ्रम, श्रम—थकान—ये सब लक्षण वातपित्तोल्बण या वात और पित्तकी अधिकतावाले "बभ्र" या "बभ्रु" सन्निपात के हैं।

वातकफोल्बण

५ शीघ्रकारी सन्निपात।



शीतज्वर, मूर्च्छा, भूख, प्यास, पसलियोंमें दर्द, शूल, पसीनोंका न आना, तंद्रा और श्वास—ये सब लक्षण वातकफोल्बण या वात कफाधिक सन्निपात के हैं। यह सन्निपात असाध्य है। इसका नाम "शीघ्रकारी" है। इस सन्निपातवाला एक दिन भी नहीं जीता।

पित्तकफोल्बण

६ मल्लु सन्निपात।



शरीरके भीतर दाह और ऊपरसे सरदी, प्यासका बढ़ाव, दाहनी पसलीमें दर्द, हृदय, मस्तक और कंठमें वेदना, कफ और पित्त अत्यन्त कठिनतासे थूका जाय शरीरमें चकत्ते हो जायें, दस्त आने लगे, श्वास, हिचकी और आँखोंका मिंचासा जाना—ये लक्षण पित्त-कफोल्बण या पित्तकफाधिक सन्निपातके हैं। इसको मल्लु या फल्गु सन्निपात कहते हैं।

वातपित्तकफोल्बण
७ कूटपाकल सन्निपात।

जब त्रिदोषोल्बण या तीनों दोषोंकी अधिकतासे सन्निपात कुपित होता है, तब उसमें तीनों दोषोंके लक्षण दिखाई देते हैं। यह सन्निपात सब बीमारियोंसे बढ़कर वज्र और शस्त्रकी समान भयङ्कर है। इसमें रोगी केवल ऊँचा श्वास लेता है। सारा शरीर जकड़ जाता है, नेत्र पत्थरके समान हो जाते हैं। यह सन्निपात ३ दिनमें मनुष्योंके प्राण हर लेता है। इसको मूर्ख लोग राक्षस और भूतादि की बाधा समझते हैं। वैद्य इसे "कूटपाकल" कहते हैं।

अधिकवात, मध्यपित्त, हीनकफ
८ संमोहक सन्निपात।

अधिक वात, मध्यकफ और हीनकफ के कोपसे जो सन्निपात होता है, उसमें इन्हीं दोषोंके अनुसार क्रमसे अधिक, मध्य और हीन रोग होते हैं। यथा—दर्द, कम्प, निद्राका न आना और कब्ज आदि ये वात-सम्बन्धी रोग होते हैं, दाह, प्यास, गरमी और पसीना आदि पित्त-सम्बन्धी रोग होते हैं। भारीपन, अग्निकी मन्दता, खाँसी और नाक तथा मुखसे पानी गिरना आदि कफ संबन्धी रोग होते हैं। इस सन्निपातमें प्रलाप, परिश्रम, बेहोशी, कम्प, मन न लगना, भ्रम और पक्षाघात यानी एक तरफके शरीरका रह जाना—ये विशेष लक्षण होते हैं।

नोट—जो लोग इन सन्निपातोंको आसानीसे समझा चाहे,—उन्हें वायु पित और कफकी वृद्धि क्षय और कोपके लक्षण कण्ठाग्र रखने चाहिये। जो दोषोंके इन लक्षणोंको अच्छी तरह याद नहीं रखते, उनको चिकित्सामें सफलता नहीं हो सकती। उनका काम अन्धे की तरह है। देखो, पहला भाग पृष्ठ १२७ १३६। उनके याद करने में जो कष्ट होगा, उससे बहुतसे कष्टोंसे बचोगे। यह अमल कुञ्जी है।

दोष क्षीण होनेपर भी बीमारी करते हैं। वायुके क्षय होनेसे चेष्टा अल्प हो जाती है, आवाज मन्दी हो जाती है और संज्ञाका नाश हो जाता है।

पित्तके क्षय होनेसे कफ जियादा बढ जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है और कान्ति नष्ट होजाती है।

कफके क्षय होनेसे सन्धियाँ (जोड) शिथिल होजाती हैं, बेहोशी, रूखापन और दाह उत्पन्न होता है। याद रक्खो दोष बढ कर भी रोग करते हैं और घटकर भी। दोषोंके समान रहनेसे ही सुख, बल और पुष्टि होती है।

मध्यवात अधिकपित्त हीनकफ

९ पाकल सन्निपात।



इन दोषोंके बल अनुसार कम्प, दाह, भारीपन आदि लक्षण होते हैं तथा मोह, प्रलाप, मूर्च्छा, गर्दनका जकड जाना, सिरमें दर्द, खाँसी, श्वास श्रम तन्द्रा, संज्ञानाश, हृदयमें व्यथा, इन्द्रियोंके सूराखोंसे खून गिरना, आँखोंमें सुर्खी और उनका जड होजाना—ये लक्षण विशेष कर होते हैं। इस सन्निपातमें रोगी ३ दिनके भीतर मर जाता है। इसका नाम 'पाकल' है।

हीनवात, अधिकपित्त, मध्यकफ

१० याम्य सन्निपात।



इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि सब लक्षण होते हैं, तोभी हृदयमें दाह होता है, यकृत—कलेजा, तिल्ली, आँते और फेफडे पक जाते हैं, मुख और गुदासे खून और राध निकलते हैं, दाँत गिर जाते हैं और मरण होता है। ये लक्षण विशेष होते हैं। इसका नाम "याम्य' है।

अधिकवात, हीनपित्त, मध्यकफ

११ क्रकच सन्निपात।

इन दोषोंके बलानुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं, तोभी बकवाद, परिश्रम, मोह, कम्प, मूर्च्छा, बेचैनी, भ्रम, मन्यानाड़ी (गर्दन)के जकड़ जानेसे मृत्यु—ये लक्षण विशेष होते हैं, इसको "क्रकच" कहते हैं।

मध्यवात, हीनपित्त, अधिककफ

१२ कर्कटक सन्निपात।

—✳✳✳—

इन दोषोंके बल-अनुसार कम्प, दाह और भारीपन आदि लक्षण होते हैं, तोभी शरीरके भीतर दाह-जलन हो, बोला न जाय, चेहरा आलसे रँगे हुएकी तरह लाल होजाय, पित्तसे खिंचा हुआ कफ छातीके बाहर न आवे, पसलियोंमें तीर छेदनेका सा दर्द हो, हृदय में खोदनेकीसी पीड़ा हो, आँखे मिचीसी हो जायँ, श्वास और हिचकी हर रोज बढ़ें, जीभ जलीसी काली और खरदरी हो जाय, कंठमें धानके तूरकी तरह काँटे पड़ जायँ, बेहोशीमें पाखाना पेशाब निकल जाय, कबूतरकी तरह गलेमें कूजन हो, कंठ कफसे भरा रहे, मुख होठ और तालू सूख जाय, तन्द्रा और निद्रा अधिक हो, आवाज भारी हो जाय, कान्ति नाश होजाय, किसी तरह कहीं चैन न पड़े, विपरीत पदार्थोंकी चाहना हो, बारम्बार खाँसनेसे थोड़ा थोड़ा खून थूकमें आवे—ये लक्षण विशेष होते हैं। इस अत्यन्त घोर सन्निपात को "कर्कटक" कहते हैं।

हीनवात, मध्यपित्त, अधिककफ

१३ वैदारिक सन्निपात।

—✳✳✳—

इन्हीं दोषोंके बलानुसार कंप, दह और भारीपन आदि होते हैं तथा अल्प शूल, कमरमें तोड़नेकासा दर्द, छातीमें दाह, जलन और

दर्द भ्रान्ति, अत्यन्त ग्लानि, सिर, मूत्राशय, गर्दन, हृदय और बोलनेमें दर्द हो, आँखे मिची जायँ, श्वास, खाँसी, हिचकी, जडता और अत्यन्त बेहोशी ये लक्षण होते हैं। इस सन्निपातके पैदा होतेही यदि इलाज किया जाय, तो शायद आराम होजाय। देर होनेसे आराम होनेकी आशा नही। इस सन्निपातके शान्त होनेपर कानकी जडमें बहुत बडी फुडिया होती है। इसके निकलनेपर कोई ही बचता है, इस घोर सन्निपातको "वैदारिक' कहते हैं। इसके उत्पन्न होनेपर ३ रात बीत जायँ, तो औषधिकी कल्पना करना वृथा है।

सन्निपातज्वरोंकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।



(१) बढे हुए दोषको घटाकर और घटे हुएको बढाकर तथा कफके स्थानसे आरम्भ करके, सन्निपातकी चिकित्सा करनी चाहिये। हीन को बढाकर, बढे हुएको घटाकर अथवा अत्यन्त बढे हुए को हीन करके और हीनको बढाकर सन्निपातोंमें दोषोंकी विवेचना करनी चाहिये।

(२) सन्निपातमें पहले आम और कफकी चिकित्सा करनी चाहिये। हारीतने कहा है,—"सन्निपातज्वरमें पहले वात कफको नाश करने वाली क्रिया करनी चाहिये। जब कफ क्षय हो जाता है या सूख जाता है, तब वात और पित्त आपही शान्त हो जाते हैं। त्रिदोषज्वर प्राणनाशक होता है, इसलिये यशकामी वैद्यको पहले कफके सुखाने की तदबीर करनी चाहिये—पित्तको शान्त न करना चाहिये, क्योंकि कफ और वातकी अधिकतावाले रोगी को ज्वर मार देता है। जब कफ सूखजाय, तब वातको निवारण करना चाहिये, पित्तके

कोपको समझकर पित्तको भी शान्त करना चाहिये। वात और कफको सुखाना परमावश्यक है; पर पित्तको नष्ट करना उचित नहीं है।

तात्पर्य्य यह है, सन्निपातज्वरमें पहले कफनाशक औषधि देनी चाहिये। उसके बाद पित्तकी शान्तिके लिये, देवदारु, कायफल, त्रिफला, लालचन्दन फालसे, कुटकी, पद्माख और खसका काढा देना चाहिये। यह काढा त्रिदोष, दाह और प्यासको शान्त करता तथा बहुत दिनोंके ज्वरमें अमृत-समान है।

(३) सन्निपातज्वरमें पहला काम कायदेसे लघन कराना है। ज्वरमें सात दिन तक लंघन करानेका मामूली कायदा है, किन्तु सन्निपातमें खास नियम है। वह यह कि, जबतक आरोग्यके लक्षण न दीखें, तीन रात, पाँच रात या दस रात तक लघन कराने चाहिये। वायु शीघ्र गतिवाला है, पित्त मध्य गतिवाला है और कफ मन्द गतिवाला है। वायु जल्दी पचता है, पित्त उससे देरमें और कफ उससे भी देरमें पचता है। इसलिये इन तीनों दोषोंकी उल्वणता या प्रधानताका खयाल करके ३, ५ या १० लंघन कराने चाहियें, अर्थात् वातोल्बण सन्निपातमें ३ रात, पित्तोल्वणमें ७ रात और कफोल्वणमें १० रात तक लघन कराने चाहियें। तीन रातकी अवधि ही पर न जम जाना चाहिये, जबतक आरोग्यके लक्षण न दीखें, लघन कराने चाहिये।

"सुश्रुत"में लिखा है,—"सातवें, दसवे अथवा बारहवें दिन तक सन्निपात ज्वर स्वाभाविक रीतिसे अत्यन्त घोर होकर शान्त हो जाता है या मार डालता है, पित्त, कफ और वायुकी वृद्धिसे क्रमपूर्व्वक दस बारह या सात दिनमें धातुपाक होनेसे मार डालता है और मल-पाक होनेसे शान्त हो जाता है। धातुपाक और मलपाकमें पूर्व्व जन्म के शुभाशुभ कर्मही कारण हैं। धातुपाक और मालपाकके लक्षण पीछे २४२ वे पृष्ठमे लिख आये हैं।

कुपथ्यके कारण, ज्वर बिगडनेसे सन्निपातज्वर हुआ हो, तो लघन

न कराने चाहिये', बल्कि हल्का पथ्य देना चाहिये और बढे हुए दोषोंको मृदु चिकित्सासे शान्त करना चाहिये। अगर आरम्भसेही सन्निपातज्वर हुआ हो, तो तीन, पाँच या दस दिन तक पहले लघन कराने चाहिये। मतलब यह है, दस दिनके अन्दर फायदा दीखे, तो पथ्य दे देना चाहिये, क्योंकि लघनोंसे कमजोरी और बेहोशी होती है और बेहोशीसे मनुष्य मर जाता है। ज्वरके आदिमें बलकी रक्षा करनी चाहिये। बल विरोधी लघन हरगिज़ न कराने चाहिये। यद्यपि त्रिदोषज्वरमें लघन हितकर हैं, तोभी रोगी और रोगके बलाबलको विचारकर लघन कराने चाहिये। बङ्गसेनने कहा है,—"तीन, पाँच, सात या दस रात तक लघन कराने चाहिये'। कफ और पित्त पतले होनेके कारण बहुत लघन सह सकते हैं, आमके क्षय होनेपर केवल वात रहजाता है, वह एक क्षण भी लघन नहीं सह सकता।"

सन्निपातज्वरमें जो वैद्य कफसे भरे हुए रोगीको पथ्य देता है, वह रोगीका शत्रु है। इसलिये कफके सूखे विना पथ्य और औषधि न देनी चाहिये, किन्तु लघन कराने चाहिये।

(४) सन्निपात ज्वरमें उत्तम लघन करनेवाले रोगीको पहले कवल देना चाहिये।

(५) जो नराधम सन्निपात रोगीको भूखके समय मांस और भात खानेको देता है वह वैद्य नहीं है। जो सन्निपातमें बकते हुए रोगीको घी पिलाता है या भोजनमें घी देता है, वह रोगीको मार डालता है।

(६) सन्निपात-रोगीके दोषोंके शान्त करनेके लिये, बल और जठराग्नि को बढानेवाला जवासा, गोखरू और कटेरीके काढेसे सिद्ध किया हुआ आहार देना चाहिये।

कोई-कोई वैद्य कहते हैं, सन्निपातज्वरवालेको खीलोंका सत्तू

था नमक डालकर देना चाहिये । अगर सत्तू निर्विघ्न पचजाय, समझना चाहिये कि, रोगी जीवेगा, परन्तु खीलोंका सत्तू कफपित्त, प्यास और दाहज्वरमें हितकारी होनेकी वजहसे शीतल है र शीतल पदार्थ सन्निपातमें हानिकारक हैं, इसलिये सन्निपात रमें सत्तू न देना चाहिये ।

सन्निपातज्वरमे दशमूल आदि औषधियोंके द्वारा बनाया हुआ ँड देना चाहिये, क्योंकि यह माँड गरम है, दीपन और पाचन है था पसीने लानेवाला है ।

पञ्चमुष्टिक यूषमें गोखरू डालकर वही त्रिदोष शमन करनेको देना ाहिये । (देखो पृष्ठ ८४) । अथवा सप्तमुष्टिक यूष देना चाहिये । ह यूष वातकफनाशक है तथा सन्निपात ज्वर, कफ, वात और आम पको नष्ट करता एव कण्ठ, हृदय और मुखको शोधता है ।

नोट—जौ, बेर, कुलथी, मूँग, आमले, धनिया और मोठ,—इन सातोंके यूषको सप्तमुष्टिक यूष" कहते है ।

७) सेंधानोन, सोंठ, गोलमिर्च और पीपल—इन चारोंके चूर्णको दरखके रसमें मिलाकर मुखमे रखना चाहिये और जो कफ आवे, से बारम्बार थूकना चाहिये । इस उपायसे हृदय, गर्दन, पसली, र और गलेमें चिहटा हुआ कफ बाहर निकल आता है । इससे सन्धि- ोंका दर्द, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गलरोग, मुँह और आँखोंका ारीपन, शरीरकी जड़ता और उबकाई ये सब आराम हो जाते हैं । ोषोंका बलाबल विचारकर ३।३ या ४ बार ऐसा करना चाहिये । न्निपातज्वर रोगियोंके लिये यह परमोत्तम परीक्षित उपाय है ।

बडे नीबूका रस, अदरखका रस, सेंधानोन, कालानोन और चरनोन—इन सबको मिलाकर बारम्बार नस्य लेनेसे भी कफ पतला होकर निकल आता है ।

८) शहद, घी और दाख—इन तीनोंको एकत्र पीसकर, जीभपर लेप करना चाहिये । इस उपायसे जीभ नर्म और ठीक हो जाती है ।

जीभकी कठोरता नाश करनेके लिये यह उपाय परीक्षित है। जब वात और कफ कम होजाते हैं तब खुश्की होती है। उस समय जीभ खरदरी और फटीसी हो जाती है, उसी समय यह उपाय करना चाहिये। अगर जीभ जड होजाय, तो सैंधानोन और त्रिकुटेके चूर्ण को अमृतेद मिलाकर जीभ पर घिसना चाहिये।

(९) सन्निपातज्वर रोगीको बिना औटाया कच्चा जल हरगिज न देना चाहिये। सन्निपात रोगीको प्यास लगने, तालू सूखने और पसलीके दर्द होनेकी हालतमें जो कच्चा—बिना औटाया जल देता है, वह तो रोगीको मारना चाहता है।

(१०) सन्निपात ज्वरवालेको दाहसे पीडित देखकर, जो उस पर शीतल जल सींचता या सिरपर बर्फ रखता है, वह रोगीको मारता है। ज्वरमें गरमी प्रधान होती है। उस गरमीसे और मस्तिष्कसे सम्बन्ध है। उस गरमीको शीतल जल या बर्फसे शान्त करना भूल है।

नोट—रुग्दाह सन्निपातमें शीतल जलसे सींचनेकी मनाही नहीं है।

(११) सन्निपात रोगीके होशहवास दुरुस्त हों, तो थोडी-थोडी देरमें उसका भीतरी हाल पूछ लेना चाहिये। अगर रोगी बेहोशीके मारे या गला बन्द होनेके कारण न बोल सकता हो, तो पहले बेहोशी और गलेका इलाज करना चाहिये। गला खुलनेसे रोगी अपना हाल कह सकेगा और हाल मालूम होनेसे वैद्य ठीक इलाज कर सकेगा। ×

(१२) ध्यान रखना चाहिये, सिरमें जियादा गरमी पहुँचनेसे ही रोगी बेहोश होता है और उसका गला रुकता है। पहले मामूली उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। आरम्भमें ही रसोंसे काम न लेना चाहिये। रोगी बकता हो, बेहोश हो काँपता हो तो पहले "पुराने घी"की मालिश कराना अथवा बलादि, लाक्षादि या गुडूच्यादि तेलकी मालिश कराना और अग्नि अनुसार बटेर, लवो, खरगोश, चिडा

तिका मास देना हितकर है। लाभ न दीखे तो साधारण अञ्जन नस्यसे रोगीको होश कराना चाहिये। जब साधारण अञ्जन या रसे काम न हो, तब "उन्मत्त रस" या "सूचिकाभिरण रस" प्रभृति का प्रयोग करना चाहिये। गर्मी, सोजाक, बवासीर, प्रमेह, उन्माद गरम मिजाजवालोंको इन रसोंसे उपकारके बदले अपकार होता- जब नर्म और मातदिल उपायोंसे काम न हो, तब निराशता की में इन रसोंको काममें लाना जरूरी है। बाज बाज वक्त ये रस हुपको भी होशमें ले आते हैं।

कायफल पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, ासा और अजमोदका चूर्ण—शहदमें मिलाकर चटानेसे भयंकर ंनिपात हिचकी, श्वास, खाँसी और कण्ठरोग मिटता है।

समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजनेसे बड़ा उपकार होता है।

चिरायता, कुटकी, कूट, अजवाइन, इन्द्रजौ और कचूर—इनका शरीरपर मलने और खासकर जोड़ोंपर मलनेसे, कफ के कारण रुका हुआ गला खुल जाता है।

मैनसिल और बचको लहसनके रसमे पीसकर आँजनेसे होश जाता है।

(१३) सन्निपातज्वर-रोगीको साफ हवादार मकानमे रखना हिये। रोगीके पास भीड न रहनी चाहिये। बाहरी हवासे बचनेको लगा देने चाहियें। बिस्तरे साफ होने चाहियें। गन्दी हवाके कलने और ताजा हवाके आनेको राह अवश्य रखनी चाहिये।

(१४) कह चुके हैं कि, सन्निपातमें पहले कफको जीतना चाहिये। दोषज्वरमें दो दोषोंकी उल्बणता रहती है। जो दोष बलवान , पहले उसीको जीतना चाहिये। अगर वैद्य दोषोंके अंशांशको जान सके, तो साधारण चिकित्सा करनी चाहिये। सन्निपातज्वर पहले लंघन, वालुकास्वेद, नस्य, ष्ठीवन, अवलेह, और अञ्जनसे म लेना चाहिये।

(क) लघनोंके सम्बन्धमें पहले लिख आये हैं।

(ख) कालीमिर्च, मुलहठी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम जलमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है। यही "नस्य" है।

(ग) त्रिजौरे नीबूकी केसर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपल—इनको मिलाकर मुखमें रखने और इसीसे दाँत, जीभ, मुख और तालूको घिसने और बारम्बार थूकनेसे कण्ठ और जीभ साफ होते तथा कफ दूर होकर श्वास और खाँसी नाश होते हैं। यही "निष्ठीवन" है।

(घ) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिङ्गी, सोंठ, मिर्च, पीपलामूल, जवासा और कलौंजी—इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास और कण्ठरोग आराम होते हैं। यही "अवलेह" है।

(ङ) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, बच, सोनापाठाके बीज और सेंधानोन—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे सारे दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। यही "अञ्जन" है।

(च) वालुका स्वेदके लिये पृष्ठ १७० और २१६ देखिये।

(१५) वात और कफकी अधिकतावाले ज्वरमें रूखे पदार्थोंका स्वेद देना चाहिये। वातज्वरके सिवा और सभी ज्वरोंमें चिकने पदार्थोंका स्वेद देना चाहिये।

(१६) एक समयमें ही एकसी दो क्रियाएँ न करनी चाहियें, किन्तु अलग-अलग करनेमें हर्ज नहीं। एक समयमें जो एकसी दो क्रियाएँ की जाती हैं, उसे "सकर क्रिया" कहते हैं।

(१७) दृढ सन्निपातज्वरमें, आमाशयमें कफके सञ्चित होनेसे, सन्निपातके शान्त होने पर, तन्द्रा उत्पन्न होती है। तन्द्रावालेकी

आँखे आधी बन्द और टेढीसी मालूम होती हैं, तारे इधर उधर फिरते हैं, पलक स्थिर हो जाते हैं, नेत्र गिरे हुएसे मालूम होते हैं, होठ ऊपरको सिमट आते हैं और दाँत वाहरको दीखते हैं, रोगी वारवार सोधा सोता है, गाढे-गाढे कफके अण्ठे मुँहमें लाता है। उस कफसे रोगीका गला रुक जाता है। इस तरहके अनेक विकार होते हैं। यह तन्द्रा तीन दिन तक साध्य समझी जाती है और इसके वाद असाध्य।

पतले रस और और दूध प्रभृति पतले पदार्थोंके सेवन तथा, दिनमें सोनेसे दुर्वल और अल्पायु मनुष्योंका कफ कुपित हो कर, वायुकी राहोंको रोककर धमनियोंमें घुसकर, घोर तन्द्रा उत्पन्न करता है। सेंधानोन, सहँजनेके वोज सरसों और कूट—इनको एकत्र पीसकर नाश लेनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१८) सन्निपातज्वर में पसीना वहुत आता हो, तो उसे शीघ्रही वन्द करना चाहिये। ऐसे पसीनेमें पिच्छिलता वहुत होती है, इसलिए शीत आनेका भय रहता है और शीत आनेसे रोगी झट मर जाता है।

भुनी हुई कुल्थीका चूर्ण पीसकर शरीर पर मलनेसे पसीना आना वन्द होजाता है। और उपाय पृष्ठ २१५-१६ में देखिये।

(१९) सन्निपातज्वरके अन्तमें कानकी जडमें सूजन उठती है। इस सूजनसे कोई ही भाग्यवान वचता है। उस पर लेप लगाकर उसे वैठाना चाहिये अथवा पकाकर फोडना और घाव भरना चाहिये। अलसीकी पुल्टिशमें घी डालकर, दिनमें ५।६ दफा गरम-गरम वाँधनेसे सूजन पक जाती है। पीछे पकनेपर या तो किसी तेज दवासे फोड देना चाहिये या चीरा देकर मवाद निकाल देना चाहिये। सर्व्वोत्तम उपाय "जोंक" लग वाकर खून निकलवाना है। जोंक लगवाकर, पहले नीमके पत्ते वाँधने चाहियें; पीछे कोई लेप लगाना चाहिये।

(२०) जिस तरह अथाह जलमें गिरे हुए बर्तनको तलीमें पहुँचनेसे पहले ही पकड़ लेना चाहिये, उसी तरह "अभिन्यास सन्निपातरोगी" का यत्न भी शीघ्रही करना चाहिये। इसमें नींद आने पर रोगी तत्काल हतवीर्य्य हो जाता है। इस सन्निपातमें सात, दस या बारह दिनमें धातुपाक होनेसे रोगी मर जाता है और दोष पाक होनेसे बच जाता है। कोई कोई कहते हैं,—धातु, दोष और धातुओंके भेदसे १४, ९ या ११ दिनमें सन्निपात रोगीको मार देता है। अभिन्यास सन्निपातमें फँसकर कोई ही रोगी बचता है।

(२१) ज्वरनाशक काढ़े द्वारा पुराने लाल शालि चाँवलोंका भात या यूष आदि बनाकर रोगीको देना चाहिये। अगर ये निर्विघ्न पच जायँ, तो रोगी निश्चय ही बच जाय।

(२२) अगर अञ्जन और नस्य आदिसे बेहोशी नाश न हो, तो लोहे की सलाईको आगमें तपाकर, रोगीके दोनों पाँवों और ललाट में दाग देना चाहिये।

(२३) अगर शरीर शीतल और हाथ पैर गरम हों, तो पीपलका चूर्ण मिलाकर "रास्नादि क्वाथ" पिलाना चाहिये। जिसका शरीर गरम और हाथ पैर शीतल हों, उसे गुड़ मिलाकर "द्राक्षादि क्वाथ" देना चाहिये। अगर भीतर दाह हो और बाहर पसीना तथा शीतलता हो, तो गिलोयके काढ़े में शहद और पीपल मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा अतीस, नेत्रबाला, सोंठ, नागर-मोथा और पित्तपापड़ेका क्वाथ पिलाना चाहिये। इस काढ़े से भीतरका दाह शान्त हो जाता है। अगर आधा ऊपरका शरीर शीतल हो और आधा नीचेका गरम हो, तो गरमागरम "रास्नादि क्वाथ" पिलाना चाहिये। अगर ऊपरका शरीर गरम और नीचेका शीतल हो, तो "शुण्ठ्यादि क्वाथ" पिलाना चाहिये।

(२४) जिसके सिरपर शीतल पसीना आता हो, सारा शरीर शीतल हो, रोगी शीतसे घबरा रहा हो, कफका जोर हो, कण्ठ तक पसीना आता हो, पर छातीपर पसीना न आता हो, वह रोगी निश्चयही मर जाता है ।

सन्निपात ज्वरनाशक नुसखे ।



सर्व सन्निपातज्वरनाशक ।



(१ दशमूल क्वाथ* । बेल, श्योनाक, कुम्भेर (खँभारी), पाढल, अरणी, शालिपर्णी, प्रश्निपर्णी, बड़ी कटेरी, कटेरी और गोखरू, —इन दसों को "दशमूल" कहते हैं । यह दशमूल का काढा सन्निपातज्वरों पर परमोत्तम औषधि है ।

(१) *दशमूलके काढेमे "पीपरका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे* हृदय और कण्ठका अवरोध (गला रुकना), तन्द्रा, वातकफके रोग, श्वास, पसलियोंका दर्द और खाँसी समेत सन्निपातज्वर आराम होता है । यह नुसखा तन्द्रा

---

* बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढल और अरणी (अगेथ)—इन पाँचोको "वृहत् पचमूल" कहते हैं । ये पित्तनाशक और वातकफको हरनवाली है ।

शालिपर्णी, प्रश्निपर्णी बड़ी कटेरी, कटेरी और गोखरू,—इन पाँचोको 'लघु पंचमूल' कहते है । ये वात और पित्तनाशक है ।

वृहत्पचमूलकी ५ और लघु पचमूलकी ५—दसो दवाओंको 'दशमूल' कहते है दश-मूलकी औषधियोंमें जिनकी बडी जडें होती है यानी जो छालसे लिपटी हु रहती है, उनकी 'जडकी छाल' लेनी चाहिये और जिनकी छोटी जड़ें होती ये सारीही लेनी चाहिये ।

और मोह सहित सन्निपातज्वर नाश करनेमें निश्चयही रामबाण है।

(२) दशमूलके काढेमें "पोहकरमूल और पीपरका चूर्ण डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी और प्यास समेत सन्निपातज्वर आराम होता है। इन्हो १२ दवाओंको "द्वादशाङ्ग क्वाथ" कहते हैं।

(३) दशमूलका काढा करके, उसमें उतनाही अदरखका रस और कायफल पोहरकमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपर, जवासा और अजवायनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे मृत्यु-तुल्य सन्निपात ज्वर भी नाश होता है।

(४) दशमूलके काढेमें "गिलोय" मिलाकर पीनेसे तेरहों प्रकारके सन्निपात आराम हो जाते हैं।

नोट—ये चारों नुसख्ने सब तरहके सन्निपातोंको नाश करते हैं। परीक्षित है।

(२) चतुर्दशाङ्ग क्वाथ। दशमूलकी दसों औषधियाँ, तथा चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ*—इन १४ दवाओंके काढेको "चतुर्दशाङ्ग क्वाथ" कहते हैं। इस काढेसे पुराना ज्वर, वात कफोल्वणज्वर अथवा त्रिदोषज ज्वर आराम होता है। अगर दस्त करानेकी इच्छा हो, तो इसमें "निशोथका चूर्ण" मिला देना चाहिये।

(३) अष्टादशाङ्गक्वाथ। दशमूलकी दसों औषधियाँ तथा कचूर, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, धमासा, भारङ्गी कुड़ेके बीज, पटोलपत्र और कुटकी—इन १८ दवाओंको "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं। इन अठारह दवाओंके काढेसे सन्निपातज्वर नाश

---

* चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इन चारोंको "किराततिक्तादि गण" कहते हैं और "चातुभद्रक" भी कहते हैं।

हो जाता है तथा साथही खाँसी, हृदयका रुकना, पसलियोंका दर्द, श्वास, हिचकी और वमन—ये भी नाश हो जाते हैं ।

(४) दूसरा अष्टादशाङ्ग क्वाथ—दशमूलकी दशों औषधियां, चिरायता, देवदारू, सोंठ, नागरमोथा कुटकी, इन्द्रजौ, धनिया और गज-पीपल—इन १८को भी "अष्टादशाङ्ग" कहते हैं । यह अष्टादशाङ्ग क्वाथ तन्द्रा, प्रलाप, खाँसी, अरुचि, दाह, मोह, श्वास और त्रिदोषज्वरको नाश करता है । वंगसेनने कहा है, यह काढ़ा मृत्यु-समान ज्वरको भी हरता है ।

नोट—यह काढ़ा भी परीक्षित है ।

(५) ग्रन्थ्यादिक्वाथ । पीपलामूल, इन्द्रजौ, देवदारू, वायविडङ्ग, भारङ्गी, भाँगरा, चित्रक, सोंठ, मिर्च, पीपल, कायफल, पोहकर मूल, हरड़ जङ्गी, चिरायता, बड़ी कटेरी, जटामासी, रास्ना, वच, चव्य, अजवायन, पहाड़मूल (पाठा) और गूगल—इन २३ दवाओंका काढ़ा सब तरहके सन्निपात, भ्रम, श्वास, शीत, प्रलाप, अफारा, शूल, प्रसूतिका रोग, अनेक प्रकारके विद्रधि, गोला, सूजन तथा कफवातके रोग नाश करता है ।

महाकवि लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं,—इन २३ दवाओंका काढ़ा उन सन्निपातोंको नाश करता है, जिनमें मोह, पसीना, शीत, प्रलाप—बकना, शूल, अफारा, विद्रधि (हृदयका फोड़ा) और कफ वात हों । इसी तरह यह काढ़ा वातव्याधि और प्रसूतिके रोगको भी नाश करता है ।

नोट—यह काढ़ा सन्निपातज्वर नाश करनेमें रामबाण है । कितनी ही बार सफलता हुई है ।

(६) आककी जड़, जवासा, चिरायता, देवदारू, रास्ना, सम्हालू, वच, अरणी, सहँजना, पोपरामूल, पीपल, चव्य, चीता, सोंठ अतीस, और भाँगरा—इन १६ औषधियोंका काढ़ा पेसे भयङ्कर सन्निपा

तको आराम करता है, जिसमें देह धनुषकी तरह नव जाती है, दाँती भिच जाती है, तथा शीत, श्वास और खाँसीका जोर होता है। यह काढ़ा प्रसूती स्त्रियोंकी वातव्याधिको भी आराम करता है। यह नुसखा वैद्यवर लोलिम्बराजने लिखा है।

नोट—परीक्षित है।

(७) कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, कचूर, रास्ना (जैतके बीज), पीपल, पोहकरमूल, त्रायमाण, भटकटैया, देवदारु, सोंठ, हरड़, जवासा और भारङ्गी—इन पन्द्रह औषधियोंका काढ़ा दिनमें सोना, रातको जागना, प्यास, मुँह सूखना, शरीरका दाह खाँसी और पाँचों प्रकारके श्वासोंको नष्ट करता है।

नोट—जिस सन्निपात ज्वरमें दिनमें सोना, रातको जागना, श्वास, खाँसी प्रभृति उपद्रव हों, उसको यह काढ़ा आराम करता है। यह भी महाकवि लोलिम्बराजने कहा है।

(८) बेल, श्योनाक, कुम्भेर, पाढल और अरणी—इन पाँचोंको "बृहत्पञ्चमूल" कहते हैं। पित्ताधिक सन्निपातमें इसके काढ़ेको "शहत"के साथ पीना चाहिये। कफाधिक्यमें "पीपल"के साथ पीना चाहिये। वातोल्बण या वाताधिक्य सन्निपातमें इसे बहुत गरम या थोड़ा गरम, दोषोंका बलाबल विचारकर, पीना चाहिये।

(९) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी—इन औषधियोंको "बृहत्यादि गण" कहते हैं। ये सन्निपातज्वरनाशक हैं तथा श्वास आदि सब उपद्रव सहित त्रिदोषज्वरमें हितकारी हैं।

नोट—यह काढ़ा "चिरायता" मिलानेसे खाँसी आदि उपद्रव सहित सन्निपात ज्वर, शूल और तन्द्राके नाशमें श्रेष्ठ है। कफाधिक सन्निपातमें यह काढ़ा बहुत उत्तम है।

(१०) कचूर, पोहकरमूल, कटेरी, काकड़ासिंगी, धमासा, गिलोय सोंठ, पाढ, चिरायता और कुटकी—इन सब औषधियोंके समूहको

अरोचक, गलराग और सब तरहकी खाँसीको दूर करता है। इसका नाम "त्रिकादि काथ" है।

(२२) भारङ्गी, रास्ना, पटोलपत्र, देवदारू, हलदी, सोंठ, मिर्च, पीपल, अडूसा, इन्द्रवारुणी, ब्राह्मी, चिरायता, नीम नेत्रवाला, कुटकी, बच, पाठा, सोनापाठा, दारूहलदी, कटेरी, गिलोय निशोथ, हपुषा पोहकरमूल, त्रायमाण, नागरमोथा, जवासा इन्द्रजौ त्रिफला और कचूर—इन ३२ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर, काढा बनाकर पीनेसे खाँसी, गलरोग, श्वास, सन्धिकी हड्डियोंमें दर्द, हिचकी और अफारा आदि उपद्रवों समेत सब तरहके सन्निपात आराम होते हैं।

नोट—यह बत्तीसा काढा प्रसिद्ध है। अनेक बारका आजमाया हुआ है।

(२३) आक, सोठ, मिर्च पीपल, चीता, चव्य, देवदारू पीला सहँजना, कुटकी भाँगरा अनोस, रास्ना जवासा, निर्गुण्डी, बच, और अरणी—इन १७ दवाओंका काढा पीनेसे सब तरहके सन्निपात, शीत श्वास, सूतिका रोग और वातरोग सब निश्चय ही नाश होते हैं। इस काढेका नाम "अर्कादि काथ" है। परीक्षित है।

पित्ताधिक्य सन्निपात नाशक काथ।

—※※※—

(२४) कचूर, पोहकरमूल गिलोय, सोठ, गोखरू त्रायमाण, पीपल, धमासा कटेरी, पित्तपापड़ा रायसन हरड़ कुटकी देवदारू बच और भारङ्गी—इन १६ औषधियोंके समुदायको "बृहच्छट्यादि वर्ग" कहते हैं। यह वर्ग सन्निपात ज्वर, खाँसी, श्वास, दिनमें सोना, रातमें जागना, मुखशोष, प्यास, दाह और त्रिदोष को नष्ट करता है।

नोट—पित्ताधिक्य सन्निपातमें यह काढा परीक्षित है।

कफाधिक्य सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

—※※※—

(२५) बड़ी कटेरी, कटेरी, पोहकरमूल, भारङ्गी, कचूर, काकड़ासिंगी,

धमासा, इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी—तथा दशमूल की दश औषधियाँ—तथा फालसे, त्रिफला, देवदारू और कायफल—इन २४ औषधियोंका काढा कफाधिक्य सन्निपातमें देना चाहिये। यह श्वासादि उपद्रव सहित सन्निपातका नाश करता है।

पित्ताधिक्य सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

—**—

(२६) नागरमोथा, पित्तपापडा, खस देवदारु, सोंठ, हरड, बहेडा, आमला, धमासा, नीली, कबीला निशोथ, चिरायता, पाढ, खिरेटी, कुटकी मुलेठी और पीपरामूल—इन १८ औषधियों के समूहको "मुस्तादिगण" कहते हैं। इनका काढा सन्निपात-ज्वरको नाश करता है। विशेषकर यह पित्तोल्वण या पित्ता-धिक्य सन्निपातमें हितकारी है तथा मन्यास्तम्भ ऊरुघात, हनु-स्तम्भ और शिरोरोगमे अत्यन्त हितकारी है।

पित्तोल्वण सन्निपात नाशक क्वाथ।

—**—

(२७) फालसे, हरड, बहेडे आमले, देवदारू कायफल लालचन्दन, पद्माख, कुटकी और पृष्ठपर्णी (पिथवन),—इन दसोंका काढा बनाकर बासी करके शीतल होनेपर पीनेसे पित्तोल्वण सन्नि-पात नष्ट हो जाता है।

(२८) चिरायता नागरमोथा, गिलोय सोंठ सुगन्धबाला और कमल की नाल—इन ७ दवाओंका काढा पीनेसे पित्तोल्वण सन्निपात नाश होता है।

वातपित्तोल्वण सन्निपात नाशक क्वाथ।

—**—

(२९) चिरायता, नागरमोथा, गिलोय और सोंठ—इनको "चातुर्भद्रक" कहते हैं। इन चारोंका काढा "वातपित्तोल्वण" सन्निपातमें हितकारी है।

पित्तकफोल्वण सन्निपातज्वर नाशक क्वाथ।

—**—

(३०) पित्तपापडा, कायफल, कूट, खस, लालचन्दन सुगन्धबाला,

सोंठ, नागरमोथा, काकडासिंगी और पीपल—इन दसोंका काढा पित्तकफोल्वण सन्निपातमें हितकारी है। यह प्यास, दाह और मन्दाग्निको नष्ट करता है। इसको "पर्पटादिक्वाथ" कहते हैं।

नोट—यहा वातकफोल्वण सन्निपातज्वरकी चिकित्सा इसवास्ते नही लिखी कि, वह शीघ्रही असाध्य हो जाता है।

पञ्चवक्र रस।

—*★*—

(३१) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा शुद्ध सुहागा, कालीमिर्च और शुद्ध वत्सनाग विष—इन पाँचोंको बराबर बराबर लेकर, धतूरेके रसमें एक दिनभर खरल करके सुखा लो। यही "पञ्चवक्र रस" है। इस रसको १ रत्तीकी मात्रा, अदरखके रसमें, देनेसे, घोर सन्निपात ज्वर भी नष्ट हो जाता है।

नोट—कोई कोई इस मे पीपल भी मिलाते है और धतूरे के बीजो के रस मे खरल करते है। यह शहद में मिलाकर भी दिया जाता है। परीक्षित है। इस पर पथ्य दही और भात है।

अमृत वटी।

—**—

(३२) शुद्ध मीठा विष २ भाग, कौडीकी भस्म पाँच भाग और काली मिर्च ६ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके, मूँगकी बराबर गोलियाँ बनालो। यह "अमृतवटी" कफ, त्रिदोष और मन्दाग्निको नाश करती है।

सन्निपात ज्वरोंकी
चिकित्सामें क्या क्या करना चाहिये ?

—★★★—

सन्निपाते त्विद सर्व कुर्यादामकफापहम्।
अवलेहोऽञ्जनं नस्य गण्डूष चायसक्रिया ॥

पादयोर्हस्तयोर्मूले कण्ठकूपे च यस्य तु ।
स्वेदो भृष्टकुलत्थाना कणाना चूर्णवर्षणम् ॥

सन्निपातज्वरमें—तरुणज्वरमें कही हुई सब क्रियाएँ करनी चाहिये' तथा आम और कफको नाश करनेवाली क्रिया करनी चाहिये एव अवलेह अञ्जन, नस्य गण्डूष—कुल्ले और दागनेका काम करना चाहिये। हाथ पाँवोंकी जड, कण्ठकूप और कनपटोमें पसीना आता हो, तो भुनी हुई कुलथीके चूर्णको मालिश करनी चाहिये।

सच तो यह है यह श्लोक सन्निपात-चिकित्साकी कुञ्जी है। सन्निपातज्वरोंके इलाजमें अवलेह, नस्य, अञ्जन, दागना गण्डूष, कुल्ले कराना, कवल धारण कराना, निष्ठीवन कर्म कराना, उद्धूलन कर्म करना, दागना और एकदम नाउम्मेदीकी हालतमें कालसर्पसे कटाना—इन उपायोंको चतुराईके साथ करनेसे खासी कामयावी होती है। जो वैद्य सन्निपातोंको ठीक पहचानकर आगे लिखी रीतिसे काम करेंगे, उन्हें जगदीशकी दयासे अवश्य सफलता होगी।

सन्निपातज्वर नाशक नस्य ।



(१) बच, महुएके पेडका सार सेंधानमक, मिर्च और पीपल—इनको पानीमें महीन पीसकर नस्य देनेसे होश होता है तथा तन्द्रा नाश होकर सज्ञा आजाती है। इसका नाम "मधूकसारादि नस्य" है।

(२) पारा और गन्धक समान समान लेकर, धतूरेके फलके रसमें, एक दिन खरल करने और इस कजलीके वजनके बराबर सोंठ, मिर्च और पीपलका चूर्ण मिलानेसे "उन्मत्त रस" तैयार होता है। इसकी नस्य देनेसे त्रिदोष दूर हो जाता है। परीक्षित है।

(३) काली मिर्च, मुलहटी, सेंधानोन, खस कायफल और पीपल —इनको गरम पानीमें पीसकर मृदु नस्य देनेसे त्रिदोष नाश होता है।

(४) सेंधानमक, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नाश देनेसे तन्द्रा नष्ट हो जाती है।

(५) बिजौरे नीबू और अदरखके रसको जरा गरम करके, उसमें सेंधानोन, त्रिरिया सचरनोन और कचिया नमक—तीनों नमक मिलाकर, जरा गरम करके, नास देनेसे कफ फटकर और पतला होकर मुख और नाकके द्वारा बाहर निकल जाता है तथा मस्तक, हृदय, कंठ, मुख और पसलियोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(६) कल्पतरुरसकी नास देनेसे कफसम्बन्धी रोग, वातसम्बन्धी सिरका दर्द, प्रलाप, मोह, छींकोंका रुकना—ये सब आराम होते हैं। मोहरूपी रोगसे मनुष्यको जगानेके लिये जैसा "कल्पतरु रस" उत्तम है, वैसी और कोई दवा नहीं है। देखो पृष्ठ १६८-१६९।

(७) मिर्च, सुगन्धवाला, दारूहल्दी, वच, कूट, वायविडङ्ग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(९) असगन्ध, सेंधानोन, वच, महुएका सार कालीमिर्च, पीपल, सोंठ और लहसन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे "भुग्ननेत्र" सन्निपात नाश होता है।

(१०) गुड़ सोंठ औप पीपल—इन तीनोंके चूर्णको अगस्तियाके कल्कके रसमें मिलाकर, नास देनेसे "चित्तविभ्रम' सन्निपात नाश होता है।

(११) मिर्च, पीपल, जीरा और सेंधानोन—इनको गरम जलमें पीसकर तत्काल नस्य देनेसे "कर्णक" की पीड़ा शान्त होती है।

(१२) दूबके रसकी नास देनेसे खून आना बन्द हो जाता है। अनारके

फूलके रसको नास देनेसे खून आना बन्द होजाता है। तिफलेका काढा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे खून बन्द हो जाता है। रक्तष्ठीवी सन्निपातमें जो मुँहसे खून गिराता है, उसमें इन तीनों नस्योंमेंसे किसी न किसी नस्यसे अवश्य लाभ होता है।

(१३) महुएका सार, सोंठ, वच, मिर्च और सेंधानोन—इनको गोमूत्र या गरम पनीमें पीसकर, नाकमें चढानेसे बेहोश मनुष्य जाग उठता है।

(१४) सहँजनेकी जडके रसमें काली मिर्चोंका चूर्ण मिलाकर, नाकमें चढानेसे सज्ञारहित मनुष्यको शीघ्र ही ज्ञान हो जाता है।

(१५) रोगी बेहोश हो तो पीपलामूल, सेंधानोन, पीपल और महुएके फूल—इन चारोंको ६।६ माशे लेकर पीस लो। पीछे उस पिसे चूर्णमे २ तोला कालीमिर्चका चूर्ण मिला लो। इस चूर्ण में से जरासा चूर्ण गरम जलमें मिलाकर नास दो। इससे रोगीको होश हो जायगा।

(१६) मालकाँगनीका तेल और पिडारकी जड,—दोनोंको एकत्र पीसकर, नस्य देनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१७) सैंधानोन, सँहजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको एकत्र बकरेके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे तन्द्रा दूर होती है।

नोट—कोई-कोई सहँजनेके बीजोंकी जगह सफेद मिर्च लेते हैं।

(१८) चमेलीके फूल, मूँगा, कालीमिर्च, कुटकी, वच और सेंधानोन—इन सबको एकत्र बकरेके मूत्रमे पीसकर, नास देनेसे तन्द्रा नाश होती है।

(१९) कालीमिर्चको अदरखके रसमें पीसकर सूँघनेसे होश हो जाता है।

बूँद नाकके दोनो छेदोंमें टपकाते हैं। इसे "अवपीडन नस्य" कहते हैं। अवपीडन नस्य गलेके रोग सन्निपात, अत्यन्त नींद, विषमज्वर, मनके विकार और कृमिरोगमें देनी चाहिये। दूसरी प्रधमन नस्यका यह कायदा है कि एक ६ अङ्गुल लम्बी नली ऐसी बनानी चाहिये जिसके दो मुँह हों। उस नलीमें सोंठ मिर्च आदि जिस दवाकी नस्य देनी हो भरलो और उसका एक सिरा रोगीकी नाकमें लगाकर दूसरा अपनी ओर रखकर फूंक मारो। आजकल कागजकी नलीही बना लेते हैं और उससे काम निकल जाता है। बहुत ही उत्कट दोषोंमें यह प्रधमन नस्य देनी चाहिये। बेहोशी, मूर्च्छा, सञ्ज्ञानाश तथा मृगी वगैरःमें ऐसी नस्य देते हैं।

सन्निपातज्वरोंमे इन्हीं नस्योंसे काम पड़ता है। धातु बढानेवाली नस्य—मस्तक-रोग, नाकके रोग, नेत्ररोग, आधाशीशी, मुखशोष, कर्णनाद, पलितरोग (असमयमें बाल पकना) प्रभृति रोगोंमें देते हैं। इनमे घी वगैर चिकने और खाँड वगैर मीठे पदार्थो से नस्य देते हैं, जैसे, घीमें केशर मिलाकर नस्य देनेसे अथवा दूधमे खाँड डालकर नस्य देनेसे वातरक्तकी पीडा शान्त होती है। षडविन्दु तेल से सिरका दर्द और समलवायु शान्त होती है। नारायणतेल या माषादितेल वगैर को नस्य देनेसे भौं कनपटी मस्तक और आँख प्रभृतिके रोग नाश होते हैं।

सन्निपातनाशक अञ्जन ।



(१) लोहका चूर्ण, सफेद लोध, अञ्जन, कालीमिर्च और गोरोचन—इन सबको एकत्र पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा दूर होती है।

(२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन—इन सबको

एकत्र गोमूत्रमें पीसकर अञ्जन बना लो। इस अञ्जनके आँखोंमें आँजनेसे चैतन्यता होती है।

नोट—कोई सेंधानोन लेते हैं। कोई बीजों की जगह सिरसकी छाल लेते हैं।

(३) लहसुन, मैनसिल और वचको महीन पीसकर छान लो। इसका अञ्जन नेत्रोंमें लगानेसे होश होता है। अथवा मैनसिल और घोड़ावचको लहसनके रसमें घिसकर आँजना चाहिये। ये उपाय परीक्षित हैं।

(४) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनोंको बकरेके पेशाबमें पीसकर आँखोंमें आँजनेसे संज्ञा उत्पन्न होती है।

(५) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सेंधा नमक—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँजनेसे समस्त दुष्ट सन्निपात भाग जाते हैं। परीक्षित है।

(६) पीपल, मिर्च, वच सेंधानोन, करञ्जके बीज हल्दी, आमले, हरड, बहेडा, सरसों हींग और सोंठ—इन सबको बकरेके मूत्र में पीसकर गोली बना लो और छायामें सुखा लो। इस गोली के जलमें घोटकर आँखोंमें आँजनेसे चेतना उत्पन्न होती है, इसी से इसको "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तभ्रम स्मृति नाश—याद न रहना, भूतबाधा सरदीका सिर दर्द आँखका दर्द और भ्रम नाश होता है। यह गोली "चित्तभ्रम" सन्नि पातमें अच्छा काम देती है। परीक्षित है।

(७) सेंधानमक, कपूर, मैनशिल और छोटी पीपर—इन चारोंको घोडेकी लार और शहदमें महीन घोटकर नेत्रोंमें आँजनसे तन्द्रिक सन्निपातका नाश होता है। परीक्षित है।

(८) सोंठ, मिर्च, पीपल, करञ्जके बीज, हरड, बहेडा, आमला, देव-दारु, सेंधानोन और तुलसी—इनको पानीमें पीसकर बत्ती सी बना लो। इस बत्तीको आँखोंमे आँजनेसे तन्द्रा नाश होता है।

(९) सेंधानोन और छोटी पीपर पानीमें खूब महीन पीसकर आँजने से "भुग्ननेत्र" सन्निपातमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) शहत, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र पीसकर आँखोंमें आँजनेसे अत्यन्त बेहोशी नाश होजाती है। यह अञ्जन दण्डपाणिने कहा है।

(११) गन्धक और बिड लवणके चूर्णको शहतमें मिलाकर, काँसीके बर्तनमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रोगीको होश हो जाता है और तन्द्रा नाश होजाती है।

(१२) समन्दरफल पानीमें घिसकर आँजने से सन्निपात में लाभ होता है।

(१३) शुद्ध जमालगोटे की मींगी ४० माशे, कालीमिर्च ४ माशे और पीपलामूल ४माशे—इन सब को पीसकर, पीछे खरल में डाल कर, जँभीरी नीबू के रस की भावना सात दिन तक देकर गोलियाँ बना लो। इस रस के आँखों में आँजने से सन्निपात नाश हो जाता है। इस को "दन्तबीजादि अञ्जन" कहते हैं। परीक्षित है।

सन्निपातनाशक अवलेह।



(१) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, मिर्च, पीपल, जवासा और कलौंजी—इन सबको बराबर बराबर लेकर महीन पीस लो। पीछे शहतमें मिलाकर चाटो। इसका नाम "अष्टाङ्ग अवलेह" है। इस अवलेहसे महादारुण सन्निपात, हिचकी, श्वास, खासी और कंठरोग आराम होते हैं।

नोट—(१) अगर कफ की उल्वणता हो यानी कफ का जोर जियादा हो, तो इन दवाओं के चूर्ण को अदरखके रस में चाटना चाहिये। ग्रन्थों में लिखा है,—इस अष्टाङ्ग चूर्ण को शहद या अदरख के साथ चाटने से तन्द्रा और खाँसी सहित दारुण मोह नाश हो जाता है। अष्टाग अवलेह कठ के ऊपर के रोगो को नाश करता है, इसलिये इसे सन्ध्या के समय सेवन कराना चाहिये। जो अवलेह कठ से नीचे के रोग नाश करनेवाला हो, उसे भोजन के पहले सेवन कराना चाहिये।

नोट—(२) कितने ही वैद्य "जवासे" के स्थान में "अजवायन" डालते हैं। वङ्गसेन में "काकडासिंगी" की जगह "भारंगी" लिखी है।

(२) उसीजे हुए आमले को पीसकर उन में दाख और सोंठ का चूर्ण मिला कर शहद के साथ चाटने से श्वास, खाँसी, मूर्च्छा और अरुचि नष्ट हो जाती है।

(३) बेल की जड, कूट, शहद और शष्पाहुली (कौडिल्ला)—इन के साथ ब्राह्मी का सेवन करने से जीभ शुद्ध होती है। इस का नाम "शालूरपर्ण्यादि अवलेह" है। "जिह्वक सन्निपात"में इसे देते हैं।

(४) तेल के साथ या घी के साथ अथवा शहद के साथ हरड़ को चाटने से दाह नाश होता है। इसका नाम "पथ्यावलेह" है "दाहाढ्य"का दाह नाश करनेको इसे अक्सर देते हैं।

(५) तुलसी का स्वरस, शहद, शाल, त्रिकुटा और सेंधानोन—इन सब को एकत्र मिला कर चाटने से बढा हुआ कफ नष्ट हो जाता है और चैतन्यता होती है।

सन्निपात पर कवल।



(१) अदरखके रस में सेंधानमक और त्रिकुटे का चूर्ण मिलाकर मुख में रखने से चैतन्यता होती है। इनकी गोली बना कर मुखमें रखनेसे भी यही लाभ होता है। इस गोली से कण्ठमें रुका

हुआ कफ बाहर निकल कर शरीर को हलका कर देता है तथा ज्वर, मूर्च्छा, श्वास, गलरोग और मुँहसे जल गिरना,—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) चिरायता, अकरकरा, कुलीजन, कचूर, पीपल और सरसों का तेल—इनको एकत्र पीसकर कवल बनावे और इसमें बिजौरे नीबू का रस डाल कर मुख में रखे, तो "जिह्वक सन्निपात" के दोष इस कवलके धारण करनेसे उसी तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह स्तुति करनेसे जन्मजन्मान्तर के दोषों को दशरथनन्दन रामचन्द्रजी दूर कर देते हैं।

(३) बिजौरे नीबूकी केसर सेंधानोन् और कालीमिर्च—इन को मिलाकर मुँह मे रखनेसे जड़ता, मुँह सूखना और अरुचि नाश हो जाती है।

सन्निपातनाशक

उद्धूलन।

(१) त्रिकुटा, हरड़, लोध, पोहकरमूल, चिरायता, कुटकी कूट, अजवायन और कायफल—इनको बराबर बराबर लेकर, महीन पीस कर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको शरीर में मलनेसे अधिक पसीना का आना, कण्ठरोध—गला रुकना और सन्धियों की पीड़ा शान्त होती है।

(२) भुनी हुई कुलथी को महीन पीसकर शरीरमें मलनेसे बहुत पसीनेका आना बन्द हो जाता है।

(३) कायफल कालाजीरा, लोध, पुराने आरने उपले, कुटकी, हरड, निमक और अञ्जन - इन सब को महीन पीस कर शरीर में मलने से बहुत पसीना आना बन्द हो जाता है।

(४) चिरायता, कालाजीरा, कुटकी, वच और कायफल,—इन सब को बारीक पीस कर, शरीर में उद्धूलन करने यानी मलने से त्रिदोषज्वर और अभिष्यन्दिज्वर में हित होता है।

(५) ककोड़े (खेखसा) की जड़ का चूर्ण, कुलथी, पीपल, वच, कायफल, कालाजीरा, चिरायता, चीता, कायफल का पानी और हरड़—इनको पीस कर शरीर में मलने से "शीताग सन्निपात" दूर होता है।

(६) पारा १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, कालीमिर्च ४ भाग और धतूरे के फलों की भस्म ८ भाग—सब को एकत्र कर के, देह में मलने से, अत्यन्त जोर से पसीना निकलता और शीत का वेग दूर हो जाता है।

(७) पीपल, कायफल, काकड़ासिंगी, वच, कूट, अजवायन, पोहकरमूल सोंठ, कुटकी पीपलामूल, देवदारू, मूँगका आटा, उड़द का आटा, पुरानी गच का चूना, पुरानी ईंटका कुकुआ (ईंट का घिसा हुआ चूर्ण), तूम्बेका चूर्ण, वच्छनाग विष और सिरस की राख, इन १८ चीजों को बराबर-बराबर एक एक तोले लेकर खूब महीन कर लो। पीछे एक गाढ़े कपड़े में तीन चार दफा छानो और शीशी में रख लो। इस चूर्ण के शरीर पर मलने से शीताग सन्निपात दूर हो जाता है। यह उद्धूलन बड़ा अच्छा है।

नोट—मकान के फर्श में जो चूना लगा रहता है, उसी को गच का चूना कहते हैं ऐसे फर्श का चूना लेना चाहिये, जो जियादा से जियादा सालों का बना हुआ हो। ईंट को पत्थर पर घिसने से जो लाल-लाल सफूफ—चूर्ण तय्यार होता है, उसे ही कुकुआ कहते हैं। ईंट भी पुरानीसे पुरानी खोज कर लेनी चाहिये।

(८) चिरायता, अजमोद कुटकी पीपल, कायफल और वच—इन को पीस छान कर चूर्ण बना लो। इस उद्धूलन या धुरे से

उस सन्निपात में काम लेना चाहिये, जिस में बहुत ही पसीने आते हों। परीक्षित है।

सन्निपातनाशक

निष्ठीवन।

(१) दाखको शहत में पीस कर, घी में मिलाकर, जीभ पर मलने से जीभ रसीली और नरम हो जाती है। जब जीभ, तालू, गला, और प्यास लगने का स्थान वात और पित्त से दूषित हो जाते हैं, तब शोष और जीभ में विरसता होती है तथा जीभ फटने लगती है। उसी विरसता और जीभ का फटना दूर करने के लिये इस दाख के निष्ठीवन से काम लेते हैं। परीक्षित है।

(२) अदरख के रस में सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपल को मिला कर, मुँह में कंठ तक भर लो और बारबार थूको। इस से मुख, तालू, कोठा, कन्धे, गर्दन, पसली, मस्तक और गला—इन में से छिपा हुआ भी कफ निकल कर चला आता है, शरीर हलका हो जाता है तथ सन्धियों का टूटना, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास, गले की पीडा, मुख और नेत्रों का भारीपन, जडता और कफ का उत्क्लेश ये सब दूर हो जाते हैं। दोषों का बला-बल विचार कर, इस को एक बार, दो बार, तीन और चार बार भी करना चाहिये। विद्वान् कहते हैं,—सन्निपात रोगियों के लिये यह परमोत्तम औषधि है।

(३) बिजौरे की केसर, अदरख, सेंधानोन, सोंठ, मिर्च और पीपल—को मिलाकर मुख में रखने से तथा जरा देर बाद दांत, जीभ, मुख और तालू को घिसने और बारम्बार थूकते जाने से कंठ

और जीभ साफ होते हैं और कफ दूर होता है तथा रुचि होती है एव खाँसी और श्वास शान्त होते हैं।

(४) सोंठ, मिर्च, पीपल, चव्य, हरड और सेंधानमक—इन के चूर्ण से दाँत, जीभ और तालू को घिसने से गला साफ होता है, रुचि होती है कफ नाश होता है, थुकथुकी दूर होती है और मुँह का स्वाद सुन्दर होता है।

सन्निपात पर दागना।



शङ्खयोश्च भ्रुवोर्मध्ये दशमद्वार एव च।
ग्रीवाया दम्भयेच्छीघ्र प्रलापे सन्निपातके॥
धनुर्वाते मृगीवाते ऽन्तके चित्तविभ्रमे।
अभिन्यासे च उन्मादे निश्चैतन्येतथावमौ॥
…तया चैव रोगाणा तप्तलोहशलाकया।
भ्रुवौ शङ्खौ च पादौ च कृकाटी मूलरध्रयो॥

प्रलापक सन्निपात में कनपटियों, भौंओं, दशम द्वार—ब्रह्मरन्ध्र और गर्दनमें कहीं दाग देना चाहिये, धनुर्वात, मृगी, अन्तक, चित्तभ्रम, अभिन्यास, उन्माद बेहोशी और वमन में—लोहेकी शलाकासे—भौं, कनपटी, पैर, ठोडी और गुदा—इनमें से कहीं दाग देना चाहिये। एक जगह लिखा है।—

एवं विधेऽस्मिन् विहिते विधाने न याति संज्ञा यदियश्चजन्तु।
तपादमूले भृकुटी ललाटे शलाकया लोहजया दहेत्तु॥

अञ्जन और नस्यादि से भी अगर सन्निपात ज्वरवालेको होश न हो, तो उसकी पगथली, भौं या ललाटको लोहेको गरम को

हुई शलाकासे दाग देना चाहिये। यह बात सभी सन्निपातों के लिये कही गई है।

ज्वरों में औषधियों के जल।



(१) **कटफलादि पान**—कायफल, हरड, बहेडा, आमला, देवदारू, चन्दन, फालसे, कुटकी, पद्माख और खस—इन दसों को १ तोला लेकर ६४ तोले जल में पकाओ। आधा जल रह जाने पर उतार लो। यह जल त्रिदोष, दाह और प्यास को नाश करता है। यह पान सब पानों में उत्तम है और बहुत दिनोंके ज्वरोंवाले के लिये अमृत है।

(२) **षडङ्गपान**—खस, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, दाख, आमले और पित्तपापडा—इन छहोंको १ तोला लेकर, ६४ तोले जलमें पका कर, आधा जल रहने पर उतार लो। शीतल कर के इस के पिलाने से दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इस को "षडङ्गपान" कहते हैं। इस को "रुग्दाह" सन्निपात में देने से बडा लाभ होता है।

(३) **षडङ्गपान**—नागरमोथा, पित्तपापडा, सुगन्धवाला, सोंठ,खस और लाल चन्दन—इन छहों को १ तोला लेकर ६४ तोले जल में औटाओ। आधा जल रहने पर, उतार कर खूब शीतल कर लो। इसजल से दाह, प्यास और ज्वर शान्त होता है। इस को भी "षडङ्गपान" कहते हैं। पित्तदोष, मद्य विकार और विष से पीडितों के लिये, यह जल औटा कर और खूब शीतल करके देने से बडा हित होता है।

(४) कुम्भेर के फल, चन्दन, खस, महुए के फूल, फालसे, सारिवा और मिश्री,—इन से बनाया हुआ पान पित्तज्वर को नष्ट करता है।

सन्निपात नाशक लेप प्रभृति।



मूर्च्छानाशक लेप।



(१) पारा वत्सनाम, कालीमिर्च नीलथोथा और नौसादर—इन पाँचों को एकत्र धतूरे के रस में और लहसन के रस में खरल करो। पीछे सिरके बीचके भाग के बाल सफाचट करा कर, वहाँ इस का लेप करो। इस से सन्निपातज्वर की बेहोशी नाश होती है। अगर कहीं हड्डी में दर्द हो, तो वहाँ भी इसका इसी तरह लेप करना चाहिये।

लघुसूचिकाभरण रस।



(२) बच्छनाग विष ४ तोले और शुद्ध पारा ॥ माशे—इन दोनों को मिलाकर खरल कर लो। पीछे रेह से पुते हुए दो मिट्टी के शकोरे लेकर, एकमें इस खरल किये चूर्ण को रख दो और ऊपर से दूसरा शकोरा ढक दो। इसके बाद उनका मुँह मिला कर, कपड़मिट्टी कर दो। कपड़मिट्टी की पाँच छः तह करो, ताकि साँस न रहे। पीछे उनको धूप मे सुखा कर, किसी ऐसे स्थान में जहाँ हवा न हो, चूल्हे पर चढ़ा कर, मन्दी मन्दी आग ६ घण्टे तक बराबर लगाओ, पीछे उनको नीचे उतार लो और मुँह खोल लो। यह काम बहुत ही आहिस्ते और हलके हाथ से करना चाहिये। ऊपर के शकोरे में जो पारा लगा हो, उसे अचक-अचक उतार कर शीशी में रख लो और फौरन कागसे मुँह बन्द कर दो, हवा न लगने पावे। यही "सूचिकाभरण रस" है।

नोट—आजकल सौदागरो की दूकानो पर कांच की ग्कावियाँ मिलती हैं उनमें भी यह रस तैयार किया जाता है।

अगर सन्निपात रोगी बेहोश हो, पुराने घी की मालिश कराने अथवा और और उपाय करनेसे होशमे न आता हो, तो आप सन्निपात रोगीके सिर के वाल, तालुए के स्थान पर, उस्तरे से मुँडवा दो और किसी तेज पैनी चीज से या वारीक नश्तर से उस जगह को खाल छील कर घाव कर दो। जब खून निकलने लगे, तब आप उस शीशी में से सूई के अग्र भाग में जितना रस लगे, उतना रस निकालकर उस घावमें भर दो और अँगुलीसे तब तक मलते रहो, जबतक कि वह रस खूनमे न मिल जाय। जब वह रस खून में मिल जायगा तब जमे हुए खून और कफ को दुरुस्त कर देगा और उसी समय बेहोश रोगी की मूर्च्छा नाश हो जायगी। इसी तरकीब से सांप के काटने से बेहोश हुआ आदमी भी होश में आजाता है। शेष में मस्तक को जरा से दूध से धो डालना चाहिये। इस रस से बेहोश तो होश में आजाता है, पर दाह पैदा हो जाता है, इसलिये उस समय गुलकन्द या दाख प्रभृति मीठे पदार्थ उसे देने चाहियें।

रोटिका बन्धन।

—※★—

लहसन, राई और सहँजना—इन तीनोंको गोमूत्रमें पीसकर रोटी बना लो। तवेपर रोटी सेकनेसे पहले, जरासा घी तवे पर लगा देनेसे रोटी आसानीसे सिक जायगी। रोटी सिक जाने पर, ब्रह्मरन्ध्र या मस्तकके तालुएको चाकू वगेर: से खुरच कर, सींगिया विष मलो और उसके वाद वह सिकी हुई रोटी गरम गरम रोगी के सिरपर बांध दो। उस रोटीको सिर पर उस समय तक रक्खो, जबतक रोगीको होश न हो जाय। अगर एकवार रोटी रखनेसे २।३ घण्टों

म चेत न हो, रोटी सूख जाय, तो दूसरी रोटी वैसीही बनाकर बाँध दो। इस रोटीसे भी होश न हो, तो समझ लो कि, रोगी मौतके पञ्जेमें है। होश हो जानेपर, अगर रोगी रोटीको न सह सके, तो फौरन रोटीको खोल लो

भयानक सन्निपातमें जब किसी तरह होश नहीं होता, तब साँप और बिच्छुओंसे रोगीको कटाते हैं। कहा है—"दंशनैर्म्रियते सर्व्वैः सन्निपाते सुदारुणे इत्यादि।"

सन्धिक सन्निपातज्वरकी चिकित्सा।

क्वाथ।

(१) कचूर, देवदारु, दरड बहेडा, आमला, विधारा रास्ना, सोंठ, गिलोय और शतावर—इन दसों दवाओंको बराबर बराबर लेकर, मन्दी-मन्दी आगसे काढा बनाकर, और "गूगल" डालकर पिलानेसे सन्धिक "सन्निपात"की पीडा दूर हो जाती है। शीतल पदार्थो को सेवन न करना चाहिये।

(२) बच, पित्तपापडा, जवासा, कटसरैया, गिलोय, अतीस, देवदारु नागर मोथा, सोंठ, विधारा, रास्ना, गूगल, बृहद्दन्ती (अभावमें दन्ती) और शतावर—इन १४ दवाओंका काढा सन्धिक सन्निपातकी पीडा, जोंडोंकी जडता, ग्लानि, भ्रमण और पक्षाघात (एक तरफका अङ्ग मारा जाना) को नष्ट करता है।

नोट—थोडा बच, धमासा, गिलोय भारगी की जड, कटसरैया, देवदारु, नागरमोथा, सोंठ विधारा रासना, गुगल, असगन्ध, अरड की जड और शतावर—इसका काढा सन्धिक सन्निपात, जडता, ग्लानि, भ्रम और पक्षाघात को नाश करता है। परीक्षित है। इस में और ऊपर के नुसखे में ३।४ दवाओं का भेद है। हमने इस तरह कई दफा आजमाया है।

पातमें—ज्वरमें लंघन आदि नियमोंको, ज्वरनाशक काथोंको और रोगनाशक यूष आदिको छोडकर, ज्वरको हरनेवाले और प्राणोंके रक्षक मृत्युञ्जय सदाशिवका ध्यान करना चाहिये। कहा है:—

भिषग्भिरिति निर्णीतं सन्निपातेऽन्तकाभिधे।
भेषजं जाह्नवीनीरं वैद्योगोविन्द एवहि॥

अन्तक सन्निपातमें गङ्गाजल तो दवा है और विष्णु भगवान् ही वैद्य हैं, ऐसा वैद्योंने निश्चय किया है।

वैद्योंने इस सन्निपातज्वर रोगीकी चिकित्सा न करनेकी राय दी है, क्योंकि इस सन्निपातवाला रोगी बचता नहीं।

रुग्दाह सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

(१) नागरमोथा, पित्तपापडा, सुगन्धवाला, सोंठ, खस और लाल चन्दन—इन छै ओषधियोंको चार चार माशे लेकर काढेकी रीतिसे औटाओ, किन्तु आधा जल रहनेपर उतार लो। शीतल होनेपर, मलछानकर, ३ माशे मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इसी तरह सवेरे शाम दोनों समय पिलानेसे यह काढा "रुग्दाह सन्निपात" को नाश करता है। इसके पीनेसे पित्तज्वर, दाह, प्यास और वमन ये सब नाश होते हैं। यह नुसखा पित्तज्वर और रुग्दाह दोनोंमें लाभदायक है। परीक्षित है।

नोट—ये षडङ्गपानीयकी औषधियाँ हैं। इसमें कोई सोंठ लेते हैं और कोई धनिया लेते हैं। यहां सोंठ लेना ही ठीक है। "चरक" चिकित्सास्थान में लिखा है,— सब तरहके ज्वरों मे, विशेषकर पैत्तिक और मद्यपानजन्य ज्वरोंमे, प्यास और

ज्वर शान्त करनेके लिये—नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस लालचन्दन, सुगन्धवाला और सोंठ इनके साथ सिद्ध किया हुआ जल शीतल करके पीनेको देना चाहिये। जिस तरह वातकफात्मक ज्वरमें रोगीको तृषा लगनेपर गरम जल देना चाहिये, उसी तरह पैत्तिक और मद्यपानजनित ज्वरमें तिक्त औषधियोंके साथ सिद्ध किया हुआ जल देना चाहिये। गरम जल और यह षडङ्गपानीय दोनो ही जल ज्वरनाशक, स्रोतोंको शोधनेवाले, बलकारी, रुचिकरनेवाले, पसीना लानेवाले और मंगल करनेवाले हैं। जब यह षडङ्गपानीय जलकी तरह पीनेको देना हो, तब एक तोला सब दवायें लेकर ६४ तोला जलमें औटानी चाहिये और आधा जल रहनेपर उतार लेनी चाहिये। अगर रोगीके भीतर दाह जियादा हो, तो नीचेका नुसखा पिलाना चाहिये।

(२) खस, लालचन्दन, सुगन्धवाला, दाख (बीज निकालकर), सूखे आमले और पित्तपापड़ा—इन छहों दवाओंको २ तोला लेकर काढ़ा बनाओ। खूब शीतल होजानेपर, ३ माशे मिश्री मिलाकर पिलाओ। इस काढ़ेके दोनो समय पिलानेसे—दाह, प्यास और रुग्दाहका ज्वर शान्त हो जाता है।

नोट—इस नुसखेकी दवा १ तोला लेकर ६४ तोला जलमें पकाकर, आधा जल रहनेपर उतार लो और इस जलको पिलाओ। इस षडङ्गपानीयसे दाह, तृषा और ज्वर शान्त होते हैं।

(३) धनियेके चाँवलोंको, रातके समय, कोरी हाँडीमें भिगोदो। सवेरे जलको छानकर मिश्री मिलाकर पीनेसे भीतरका दाह और पित्तज्वर थोड़ेही समयमें शान्त हो जाता है। धनिया भिगोकर, सवेरे चीनी मिलाकर पीनेसे पित्तज्वरका पुराना दाह भी आराम हो जाता है।

(४) हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, देवदारु, अमलतास, दाख और नागरमोथा—इन सातोंको बराबर-बराबर चार चार माशे लेकर काढ़ा बनाकर, सवेरे शाम पिलानेसे रुग्दाहका महाज्वर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) नागरमोथा, कुटकी, घोड़ावच, अमलतासका गूदा, त्रिफला, कड़वा नीम, कड़वी तोरई, दशमूल और चिरायता—इनका

काढा सब तरहकी वातव्याधि और रुग्दाह सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

दाहनाशक उपाय।



पथ्यावलेह।



दाहके नष्ट करनेके लिये घी या शहदके साथ "हरड"को चाटना चाहिये। इससे दाह, ज्वर, खाँसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास और वमन, ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

लेप।

बेरके पत्तोंको दहीमें पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी जलन या दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कपूर, सफेदचन्दन और नीमके पत्ते दहीमें पीसकर लेप करनेसे दाह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सारे शरीरमें दाह न हो, हाथ पैरोंमें ही दाह हो, तो जहाँ दाह हो वहीं लेप करना चाहिये।

जलधारा।



रुग्दाह सन्निपातज्वर रोगीको सीधा सुलाकर, उसकी नाभिपर एक ताम्बे या काँसीका गहरा बासन रखो। पीछे उसमें अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोडो। इस उपायसे तत्काल दाह शान्त हो जायगा।

अवगुन्ठन।



कपडेको काँजीमें भिगोकर, रोगीके शरीरपर डालनेसे दाह नाश हो जाता है।

तर्पण।

दाह और वमनसे पीडित, दुबले, निराहार रहनेवाले प्यासे मनुष्यको मिश्री और शहद मिलाकर खीलोंका सत्तू खिलाओ।

दाहनाशक और उपाय।



चन्दन आदिका लेप किये हुए, मोतियोंकी माला पहने हुए, जवान स्त्रीको रोगीकी छातीसे लगाओ, पर मैथुन न करने दो। फव्वारेवाले मकान या बागमें रोगीको रखो। और दाहनाशक उपाय पृष्ठ १८४ १८६ में देखिये।

धूप।

काली अगर, कपूर, कुंदरका वृक्ष, नागद्रव्य, तगर, खस, सफेद चन्दन और राल,—इन सबकी धूप देनेसे रुद्दाह सन्निपात नाश होता है। परीक्षित है।

चित्तभ्रमकी चिकित्सा।

क्वाथ।

(१) दाख, देवदारु कुटकी, नागरमोथा, आमले, हरड़, अमलतास, चिरायता, पित्तपापड़ा और पटोलपत्र—इन दसों दवाओंको बराबर बराबर अढ़ाई अढ़ाई माशे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय, पिलानेसे,—"चित्तभ्रम सन्निपात" आराम होता है। यह नुसख़ा "भावप्रकाश"का है; पर हमारा परीक्षित है।

नोट—कभी-कभी 'कुटकी" के स्थानमें 'गिलोय" भी लेते हैं।

(२) ब्राह्मी, पाढ, पटोलपत्र, सुगन्धबाला, हरड, पित्तपापडा, अमलताश, कुटकी और शंखाहुली—इन ६ दवाओंको उसी तरह बराबर-बराबर तीन-तीन माशे लेकर, काढा बनाकर पीनेसे चित्तभ्रम सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—अगर रोगीको दस्त होते हों, तो हरड और अमलताशका गूदा निकाल लेना चाहिये।

(३) ब्राह्मी, बच, शतावरी, हरड बहेडा, आमला, कुटकी, नागबला, आरग्वध, चिरायता, नीम, नागरमोथा, कोशातकी, दाख और दशमूल—इन २४ दवाओंको एक एक माशे लेकर, काढा बनाकर पीनेसे चित्तभ्रम और रुग्दाह दोनों सन्निपात ज्वर आराम होते हैं।

(४) हरड, पित्तपापडा, कुटकी, दाख, दारुहल्दी, नागरमोथा, चिरायता, ब्राह्मी और पटोलपत्र—इन ६ दवाओंका काढा भी चित्त-विभ्रम सन्निपातको आराम करता है। परीक्षित है।

अञ्जन।

—*—

(५) पीपल, घोडा बच, कालीमिर्च, सैंधानमक, करञ्जके बीज, हल्दी, आमले, हरड, बहेडा, सरसों, हींग और सोंठ-इन १२ दवाओंको बकरेके मूत्रमें पीसकर, गोली बनाकर और छायामें सुखाकर, नेत्रोंमें आंजनेसे चेतना उत्पन्न होती है, इसीसे इस गोलीको "प्रचेतना" कहते हैं। इस गोलीसे चित्तका भ्रम, स्मरण न रहना, भूतबाधा, सिरका दर्द, आंखका दर्द और भ्रम नाश होता है। परीक्षित है।

नस्य।

—*—

(६) गुड, सोंठ और पीपल—इनको पीसकर, अगस्तियाके रसमें मिलाकर नास देनेसे चित्तभ्रम दूर होता है। परीक्षित है।

धूप।

—※—

(७) कपूरकचरी, सुगन्धवाला, नागरमोथा, महुआ, चन्दन, देवदारू, शहत, गूगल और नखद्रव्य—इन ६ दवाओंका चूर्ण तथा अगर लामज्जक (अभावमें खस) और इलायची—मिलाकर इन १२ की धूप बनाकर देनेसे "चित्तभ्रम" नाश होता है, ग्रहदोष दूर होता है, लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। परीक्षित है।

शीताङ्ग सन्निपातकी चिकित्सा।

—※—

काथ।

—※—

(१) आककी जड़, जीरा, काली मिर्च, पीपल, भारङ्गी, कटेरी, सूना सोंठ और पोहकरमूल—इनको गोमूत्रमें पकाकर सेवन करने से तत्काल ही शीताङ्ग सन्निपातकी पीडा, मे‸—बेहोशी, श्वास, कफकी अधिकता और खाँसी नाश हो जाती है।

नोट—इस नुसखेमें "काकड़ासिंगी" भी कोई-कोई मिलाते हैं, और अवश्य मिलानी चाहिये। इनका प्रत्येक दवा तीन-तीन मासे लेकर, काढ़ेकी रीतिसे काढ़ा बनाकर, दोनों समय पिलानेसे शीताङ्ग सन्निपात आराम होता है। आककी और भारङ्गीकी जड़की छाल लेनी चाहिये तथा कटेरी का पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। परीक्षित है।

उद्धूलन।

—※—

(२) कमोड़ा (खेखसा) की जड़का चूर्ण, कुलथी, पीपल, बच, कायफल, काला जीरा, चिरायता, चीता, कायफलका पानी और हरड़—इन दसोंको एकत्र पीसकर मलनेसे शीताग सन्निपात दूर होता है।

कडवी तूँबीके बीज, कुलथी, चीता, चिरायता, हरड, पीपल, घोडावच, कायफल, काला जीरा और पित्तपापड़ा—इन दसों को बराबर बराबर लेकर पीस कूटकर, कपडेमें छानकर शरीरमें मलनेसे शीताग सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

पारा १ भाग, वत्सनाभ विष १ भाग, काली मिर्च ४ भाग और धतूरेके फलकी भस्म ८ भाग—इन सबको एकत्र खरल करके देहमें मलनेसे, अत्यन्त पसीना आना और शीतका वेग दूर हो जाता है।

नोट—और उद्धूलन पृष्ट २१५-२१६ में लिखे है।

(३) मस्तकमें टोप बाँधना - कलौंजी, पोहकरमूल, कूट, असगन्ध, वच, एलुआ और खुरासानी अजवायन—इन सातोंको महीन पीस, गेहूँ की रोटीमें रखकर और गरम करके, मस्तक पर बाँध नेसे शीत नाश हो जाता है। जब जी घबराय, शीत नाश हो जाय, रोटीको खोल लेना चाहिये।

तन्द्रिक सन्निपातकी चिकित्सा।



काढे।



(१) कटेरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ और हरड—इन पाँचोंका काढा बनाकर पीनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

(२) भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, भटकटैयाका पञ्चाङ्ग, हरड, पोहकरमूल और सोंठ—इन सातोंका काढा पीनेसे, ३ दिनमें, घोर तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। परीक्षित है।

(३) नीमकी ताजा गिलोय १ तोला, परवलके डाल पत्ते ६ माशे और रूसेकी पत्ती ३ माशे—इन तीनोंका काढा पिलानेसे भी

तन्द्रिक सन्निपात आराम होता है। यह नुसखा उस दशामें देना चाहिये, जब कि न० १ और न० २ के नुसखोंसे रोगीको जियादा गरमी मालूम हो।

नोट—कभी-कभी ज़रूरत होनेसे इस में त्रिकुटा भी मिला लेते हैं।

नस्य।

(४) कालीमिर्च, सुगन्धवाला, दारूहल्दी, बच, कूट, वायविडङ्ग, सोंठ, हल्दी और इन्द्रायन—इन सबको बकरेके मूत्रमें पीसकर, नास देनेसे तन्द्रिक सन्निपात दूर हो जाता है।

अञ्जन।

—※—

सेंधानोन, कपूर, मैनसिल और पीपल—इन चारोंको घोड़ेकी लार और शहद में पीसकर, आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रिक सन्निपात नाश हो जाता है।

नोट—ये सब नुसखे परीक्षित हैं। अगर और भी नस्य या अञ्जनकी ज़रूरत हो, तो पीछे पृष्ठ२७७-२७४ में देखिये।

कंठकुब्ज सन्निपातकी चिकित्सा।



काथ।

(१) हरड़, बहेड़ा, सोंठ आमला, मिर्च, पीपर नागरमोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, अड़ूसा और हल्दी—इन ११ दवाओंका काढ़ा कण्ठकुब्जको इस तरह नाश करता है, जिस तरह सिंह हाथीको नाश करता है।

नोट—त्रिकुटा, त्रिफला, कुटकी, इन्द्रजौ, हल्दी और दारुहल्दी—इनका काढ़ा भी कण्ठकुब्ज को नाश करता है। यह और ऊपरवाला काढ़ा दोनोंही परीक्षित हैं।

(२) चिरायता, कुटकी, पीपल, इन्द्रजौ, करेरी, कचूर, बहेड़ा, हरड, देवदारू, मिर्च, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आमला, पोहकरमूल, चीता, काकड़ासिंगी, अडूसा और सोंठ—इन १६ दवाओंका काढा कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(३) काकड़ासिंगी चीता, हरड, अडूसा, कचूर, चिरायता, भारङ्गी हलदी, बड़ी करेरी, पोहकरमूल, मोथा, इन्द्रजौ, कुटकी और कालीमिर्च—इन १४ दवाओंका काढा दाह, मोह, अरुचि, श्वास गलग्रह, (गला रुकना), अग्निमांद्य, अफारा, अभिन्यास सन्निपात और खाँसी—इनसे युक्त कण्ठकुब्ज सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—नुसखोंमें अडूसेकी पत्ती, हरडका बकल और करेरीका पञ्चाङ्ग लेना चाहिये। रोगीको ताकतवर यूष देते रहना चाहिये, जिससे ताकत न घटे, और गला न सूखे।

नस्य ।

—*—

(४) चिरचिरेका बिना जल डाले निकाला हुआ रस और पीपरका चूर्ण—इन दोनोंको एकत्र करके, इसकी नास देनेसे कण्ठकुब्ज सन्निपातमें खूब फायदा होता है। और नस्यों के लिये पृष्ठ २६७-२७२ देखिये।

कर्णक सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।



(१) भारङ्गी, अरणी, पोहकरमूल, करेरी, सोंठ, मिर्च, पीपल, बच, नागरमोथा, गिलोय, काकड़ासिंगी, कुटकी, और रास्ना—इन १३ दवाओंका काढा पीनेसे अन्तक की पीड़ा शान्त होती है।

(२) दशमूल, कुटकी, पीपल, हरड, बहेड़ा, आमला, सोंठ, चिरायता,

और मिर्च—इन ६ दवाओंका काढा पीनेसे कर्णक सन्निपात की तकलीफ जबर्दस्ती दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(३) रास्ना, असगन्ध, नागरमोथा, कटेरी, भारङ्गी, बच, पोहकरमूल, कुटकी, काकडासिंगी और हरड़—इन दसोंका काढा पीनेसे कर्णक सन्निपात निस्सन्देह आराम हो जाता है। यह नुसख़ा भी परीक्षित है।

लेप।

(४) अगर सूजन हलकी या भारी हो, पर यह न पकी हो तो उसको नीचे लिखे हुए लेपों से नष्ट करो। अगर पक गई हो, तो नश्तर से चिरवाकर उसकी राध निकलवा दो। पीछे घावका इलाज घावकी तरह करो।

हल्दी, इन्द्रायण, कूट सेंधानोन, देवदारू और हिंगोटकी जड इन छहोंको आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे कर्णक नाश हो जाता है। इन सब दवाओं या इनमेंसे कम दवाओंके लेप से भी कर्णक नष्ट हो जाता है।

कुलथी, कायफल, सोंठ और कालोजीरी—इन सबको समान भाग लेकर, जलमें पीसकर, सुहाता सुहाता गरम करके, बार-म्बार कान की जडमें लेप करनेसे कर्णक नष्ट हो जाता है।

गेरु, खडिया, सोंठ, कायफल और अमलताश—इन सबको काँजीमें पीसकर, गरम करके, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है।

सहँजना और राई—इनको जलमें पीसकर, कानकी जडमें लेप करनेसे कानकी जडकी सूजन शान्त हो जाती है।

बिजौरेकी जड और अरनी—इन दोनोंको जलमें पीसकर लेप करनेसे कर्णमूल नाश हो जाता है।

गेरु, धूल, सोंठ, बच और कायफल—इन सबको एकत्र काँजीमें

पीसकर और गरम करके कानकी जड़में लगानेसे कर्णशोथ—कानकी सूजन आराम हो जाती है।

हल्दी, गोंदी, सेंधानोन, देवदारू, कूट, दारूहल्दी और इन्द्रवारूणी—इन सातोंको आकके दूधमें पीसकर, कानकी जड़की सूजन पर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है, पर जोंक लगवाना सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

गेरू, पागानोन, सोंठ, वच और राई—बराबर-बराबर लेकर, काँजीमें पीसकर, लेप करनेसे कर्णमूलकी सूजन नाश हो जाती है।

लोलिम्बराज महाशय कहते हैं :—

> य सोफ श्रुतिमूलज सुकठिन शांते त्रिदोषज्वरे
> रक्त तत्र जलौकया परिहरेत्सर्पि पिबेदातुर ॥
> रास्नानागरलुगहुतभुग्दार्व्यग्निमन्थै समैर्लेप
> स्यादरविन्ददलनयने शोथव्यथाध्वसन ॥ ४६ ॥

सन्निपात ज्वरके नाश होने पर, कान की जड़ में जो कड़ी सूजन होती है, जोंक लगवा कर उसका खून निकलवा देना चाहिये और रोगी को घी पिलाना चाहिये। हे कमल को भी लज्जित करनेवाले नेत्रोंवाली! रास्ना, सोंठ,, बिजौरे की जड़, चीतेकी जड़, दारूहल्दी और अरणी—इन सबको समान समान ले कर और जलमें पीसकर, लेप करने से कान की जड़ की सूजन नाश हो जाती है।

नस्य।

(५) गोलमिर्च, पीपल जीरा और सेंधानोन—इनको गरम जलमें पीसकर, तत्काल, नस्य देनेसे कर्णककी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

सेंधानोन और छोटी पीपर गरम पानीमें पीसकर सुँघानेसे भी लाभ होता है।

स्वेद।

(६) दशमूलका लेप करने या स्वेद देनेसे अथवा प्याजका स्वेद या बफारा देनेसे तत्काल पीडा शान्त हो जाती है।

जौंक लगवाना।

(७) अगर २।३ लेप करनेसे फायदा न दीखे, तो जौंक लगवाकर तत्काल खून निकालवा देना सर्वश्रेष्ठ उपाय है। जौंक लगवानेके बाद एक दिन नीमके पत्ते बाँधकर हारीत मुनिका कहा हुआ प्रसिद्ध लेप लगाना चाहिये। वह लेप यह है,—घर का धूआँ, हल्दी, सोंठ, पीली सरसों सेंधानोन और बच—इन छहों को दूधमें पीसकर लेप करनेसे खूनका विकार, सूजन और घाव शान्त हो जाते हैं। गलेमें सूजन हो, तो वह भी इस लेप से आराम हो जाती है।

पकाना और चीरना।

(८) अगर किसी कारणवश सूजन पकानी हो, तो दिनमें ५।६ बार बदल बदल कर "अलसी"के आटेकी पुल्टिश* "घी" मिलाकर बाँधनी चाहिये। अगर पुल्टिशसे ही फोडना हो, तो पुल्टिशमें जंगली कबूतरकी बीट मिलानी चाहिये। गिद्ध, कबूतर और सफेद

* अलसीकी पुल्टिश शीतल जलमें अच्छी नहीं बनती। अलसीके आटेमें खूब उबलता हुआ पानी डालकर हिलानेसे अच्छी पुल्टिश बनती है। अथवा अलसीके आटेमें गरम दूध या पानी डालकर और जरासी हल्दी मिलाकर अच्छी तरह पकानेसे उमदा पुल्टिश बन जाती है। यह सुहाती-सुहाती गरम बाँधनी चाहिये।

चोलकी चिप्पायें इस कामके लिये प्रसिद्ध हैं। सज्जीखार और जवाखारका लेप करनेसे भी फोडा फूट जाता है। चीरनेका प्रबन्ध हो, तो सबसे अच्छा, रोगीको जल्दी चैन मिलता है। चीरने या दवासे फूटनेके बाद—घाव भरनेवाली कोई औषधि लगानी चाहिये।

घाव भरनेके उपाय।

अगर सूजन पक गई हो, तो धवकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कदमकी छाल—इन तीनोंको पीसकर लेप करनेसे घाव भर जाता है।

अथवा

नीमकी छाल, अमलतासकी छाल और हल्दी—इन तीनोंका लेप, राध और दुर्गन्धको नाश करके, घावपर अङ्कुर ले आता है।

अथवा

नीमके पत्ते, तिल और मुलहटीको पीसकर, शहद और घीमें मिलाक लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाता और भर जाता है। मवाद निकल जानेके बाद लगानेसे, यह लेप बड़ा फायदा करता है।

अथवा

मवाद निकल जानेके बाद हमारी "स्वास्थ्यरक्षा"के पृष्ठ ३२३में लिखो "क्षतारि मरहम" लगाने से घाव बहुत ही जल्दी भर जाता है। यह मल्हम घाव भरने के लिये रामबाण है। कम से कम हजार बार आजमाई गई है। उस से हर तरह के घाव आराम हो जाते हैं। हम उस मल्हम को काम में लाने की जोर से सिफारिश करते हैं। उसके बनाने की तरकीब यह है :—

सफेद कत्था २ तोला, कपूर १ तोला, सिन्दूर आधा तोला और गाय का घी १०० बार धुला हुआ आधा पाव। ये सब चीज़ें तैयार कर लो। पहले कत्था और कपूर को अलग-अलग पीस कर महीन-कपड़े में छान लो। पीछे घी को १०० बार काँसी की थाली में धो लो। फिर उसी घी में कत्था, कपूर और सिन्दूर मिला कर खूब फेंट लो, जिस से दवा और घी एक दिल हो जायँ। बस, यही तरकीब है। इस मलहम से और भी कितने ही रोग आराम होते हैं। उनके लिये "स्वास्थ्यरक्षा" मँगाकर खिये। मूल्य ३॥)।

अपथ्य।

कर्णमूलवालेको दिनमें सोना, बहुत जल पीना, शीतल जल सेवन करना, रातमें जागना, मिहनत करना, चिन्ता करना, उड़द, जौ, गेहूँ, तिल, मसूर, मटर और तेल खाना, स्त्री प्रसङ्ग करना—ये सब अपथ्य हैं। कर्णमूलवालेको १ मास तक मैथुन न करना चाहिये और १५ दिन तक जियादा न खाना चाहिये।

भुग्ननेत्र सन्निपातकी चिकित्सा।



काथ।



(१) दारुहल्दी, परवल नागरमोथा, कटेरी, कुटकी, हल्दी, नीम और त्रिफला—इन आठों दवाओंका काढ़ा प्रबल भुग्ननेत्रमें चैतन्यता करानेके लिये देना चाहिये। परीक्षित है।

(२) पीपल, कड़वे परवल, नागरमोथा, कुटकी, कटेरीका पञ्चाङ्ग, नीम और देवदारूका काढ़ा पित्तज्वर और उग्र सन्निपातज्वर को नाश करता है।

अवलेह।

(३) चिरायता, शहत, वच, पीपल, मिर्च, लहसन, और राई—इन सातोंका बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस और छानकर रखलो। भुग्ननेत्रवालेको, दिनमें ३।४ दफा, छै-छै रत्ती इस चूर्णको शहत में मिलाकर चटाओ। इससे बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

नस्य।

(४) असगन्ध, सेंधानमक, वच, महुएका सार, मिर्च, पीपल, सोंठ, और लहसन—इन आठोंको बकरेके पेशाबमें पीसकर, नास देनेसे भुग्ननेत्र शान्त होता है।

वच, मिर्च, हींग और मुलेठी—इन चारोंको मीठे अनारके रसमें महीन घोटकर, नास देनेसे भुग्ननेत्रमें बड़ा लाभ होता है।

अंजन।

(५) सेंधानोन और छोटी पीपल, इनको पानीमें खूब महीन पीसकर अंजनकी तरह कर लो और रोगीकी आँखोंमें आँजो, इनसे दृष्टिमें बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

रक्तष्ठीवी सन्निपातकी चिकित्सा।



क्वाथ।

---

(१) रोहिषतृण (घास), धमासा, अडूसा, पित्तपापड़ा, फूलप्रियंगू और कुटकी—इन ६ दवाओंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे—रक्तष्ठीवी सन्निपात नष्ट हो जाता है।

(२) रोहित घास, पित्तपापड़ा और जवासा—इन तीनोंके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी रक्तष्ठीवी आराम होजाता है, पर

इससे ऊपरका नुसखा उत्तम है। यह भी परीक्षित है और वह भी।

(३) पद्माख, लालचन्दन, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, चमेलीकी पत्ती, जीवक, सफेदचन्दन सुगन्धवाला, मुलेठी और नीमकी छाल—इन दसों दवाओंका काढ़ा करके पीनेसे रक्तष्ठीवीका खून आना बन्द हो जाता है।

(४) नागरमोथा, पद्माख, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, मुलहटी, नेत्रबाला, शतावर, मलयचन्दन, मालतीके पत्ते और कमल—इन दसोंके काढ़े में "शहद" मिलाकर पीनेसे—रक्तष्ठीवीमें मुँह खून गिरना बन्द हो जाता है।

(५) मुलहटी, महुआ, फालसेकी छाल, सुगन्धवाला, लालचन्दन, तेजपात, देवदारु और कुम्मेरके फल—इन आठों दवाओंका काढ़ा बनाकर, अत्यन्त शीतल करके, मिश्री मिलाकर पीनेसे,—रक्तष्ठीवी में मुँहसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—नं० १, २, ३ और ४ में काढ़ोंकी दवाओंका वजन २ तोला होना मामूली बात है। नं० ३ के काढ़ेको पकाकर खूब शीतलकर लेना, पीछे २ माशे शहद मिलाकर पिला देना। नं० ४ की भी यही विधि है। जब नं० ३ या ४ से भी लाभ न दीखे, खून आना बन्द न हो तब नं ५ का नुसखा देना चाहिये। इसके बनानेकी विधिमें जरा फर्क है। जो विधि ऊपर लिखी है वह ठीक है। हमने जिस विधिसे आजमाया है, वह भी लिखे देते हैं। मुलहठी महुआ आदि आठों दवाओंको ६।६ माशेके हिसाबसे चार तोले लेना। चार तोले दवाको आध सेर जलमें पकाना। जब डेढ़पाव जल रह जाय, सिर्फ आध पाव जले, उतार लेना। पीछे मलछान कर दो तोला मिश्री मिलाकर, पत्थर या काठके ढक्कनदार बर्तनमें रख लेना और एक एक छटाँक जल अन्दाज से दो दो घण्टेमें उसी बरतनसे निकाल-निकाल कर रोगीको पिलाना। इन सभी नुसखोंमें अधिक जल मत जलाना और सभी को शीतल करके पिलाना। पाँचों नुसखे आजमाये हुए हैं। रक्तष्ठीवी सन्निपात पर ये कभी फेल नहीं होते। हाँ, कभी-कभी एक नुसखा काम नहीं देता, तो दूसरा अवश्य देता है।

नस्य।

—※—

(६) रोगीको दूबका रस निकालकर नास देनी चाहिये। इससे मुखसे खून आना बन्द हो जाता है।
अनारके फूलोंके रसको नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता है।
त्रिफलेका काढ़ा और दूबका रस मिलाकर नास देनेसे भी खून बन्द हो जाता है। खाली त्रिफलेके काढ़ेकी नस्यसे भी फायदा होता है।

शीतलचीनीके चूर्णकी नास देनेसे भी इस सन्निपातमें बड़ा लाभ होता है।

नोट—ये सब नस्य परीक्षित हैं।

प्रलापक सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

—※—

(१) तगर, पित्तपापड़ा, अमलतास, नागरमोथा, कुटकी, लामजक (न मिलनेपर "खस") असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, लालचन्दन, दशमूल और शखाहुली (कौडिल्ला)—इन २२ दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे बहुत जल्दी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाते हैं।

(२) नागरमोथा, नेत्रवाला, दशमूल, सोंठ, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, धवकी छाल और अडूसा—इन १७ दवाओंका काढ़ा पीनेसे प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, नेत्रवाला, पित्तपापड़ा, लालचन्दन और धवकी छाल,—इन पाँचोंके काढ़ेसे भी प्रलापक सन्निपात आराम हो जाता है।

नोट—तीनों नुसखे परीक्षित हैं। दोषोंको विचारकर जो उचित समझो वही देना। प्रत्येक नुसखा दोनों समय पिलाना चाहिये और रोगीको धीरज, अञ्जन, तेज नस्यसे तथा अन्धकार सेवन कराकर आरोग्य करना चाहिये। नस्य और अञ्जन पीछे पृष्ठ २६७—२७४ में लिख आये हैं। इस सन्निपातमें किसी तरह आराम न दीखनेपर दागते भी हैं। देखो पृष्ठ १६६—६७

जिह्वक सन्निपातकी चिकित्सा।

काढे।

(१) कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, गिलोय, ब्राह्मी, वच, गन्धपलाशी, भारङ्गी, अड़ूसा जवासा, सुगन्धवाला और तुलसी—इन १२ दवाओंका काढा "जिह्वक" सन्निपातको नाश करता है।

(२) सोंठ, पित्तपापडा, हल्दी, दारुहल्दी, हरड, बहेडा, आमला, गिलोय, नागरमोथा, कटेरी, नीम, पटोलपत्र, पोहकरमूल बाल छड, कूट और देवदारू,—इन १६ दवाओं का काढा जिह्वकको नाश करता है।

(३) वच, कटेरी, जवासा, रास्ना, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, कुटकी, काकडासिंगी, पोहकरमूल, ब्राह्मी, भारङ्गी, चिरायता, अड़ूसा और कचूर—इनका काढा जिह्वक सन्निपातको नाश करता है। परीक्षित है।

(४) कटेरी सोंठ, पोहकरमूल, कुटकी, रासना, गिलोय, भारङ्गीकी जड, काकडासिंगी, कचूर, धमासा, वासा, नागरमोथा, ब्राह्मी, घोडा वच और चिरायता—इन १५ दवाओंका काढा "जिह्वक सन्निपात"का अवश्य आराम करता है। परीक्षित है।

नोट—इस जिह्वक की चिकित्सा प्राय रक्तष्ठीवीके समान की जाती है। ऊपरी इलाजोंसे जीभको नरम करना परमावश्यक है।

अवलेह ।

(५) बेलकी जड़, कूट, शहत और शङ्खाहुली (कौडिल्ला),—इन चारके साथ ब्राह्मीको चाटनेसे वाणीकी शुद्धि होती है, यानी जीभ नर्म हो जाती है। शहद, घी और दाखको पीसकर जीभपर लेप करनेसे भी जीभ नर्म हो जाती है। परीक्षित है।

कवल

(६) चिरायता, अकरकरा, कुलीञ्जन, कचूर, पीपर और सरसोंका तेल—इनको एक जगह पीसकर कवल बनाओ। पीछे बिजौरे आदिका रस मिलाकर मुँहमें रखो। इस कवलसे जिह्वक सन्निपातके दोष उसी तरह नाश होते हैं, जिस तरह रामचन्द्रजी की स्तुतिसे जन्मजन्मान्तरके पाप नाश होते हैं। इसका नाम "किराताादि कवल" है।

अभिन्यास सन्निपातकी चिकित्सा।

काथ।

(१) काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़, जीरा, पीपल, चिरायता, पित्तपापड़ा, देवदारु, घोड़ावच, कूट जवासा, कायफल, सोंठ, नागरमोथा, धनिया, कुटकी, इन्द्रजौ, पाढ, रेणुका, गजपीपल, चिरचिरा, पीपलामूल, चीता, कड़वी इन्द्रायन, अमलतास, नीम, कचूर, बावचीके बीज, वायविडङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, अजवायन और अजमोद—इन ३३ दवाओंका काढ़ा बनाकर उसमें हींग और अदरखका रस मिलाकर पीनेसे तत्काल भयङ्कर अभिन्यास सन्निपात ज्वर

तन्द्रा, प्रमेह, कानकी पीडा, तेरह प्रकारके सन्निपात, हिचकी, श्वास, खाँसी और सब तरहके उपद्रव नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२) कटेरी, धमासा, भारंगीकी जड, कचूर, काकडासिंगी और पोहकरमूलका काढा अभिन्यास सन्निपातमें लाभदायक है। इससे कफ और पेटका दर्द भी मिटता है।

(३) त्रिफला, कुटकी और अमलताशके गूदेका काढा "जवाखार" मिलाकर पिलानेसे बडा लाभ होता है। यह अभिन्यास प्रभृति सब ज्वरोंका नाशक और रोचक है। परीक्षित है।

नोट—अभिन्यास सन्निपात मृत्युतुल्य है। इस सन्निपात पर यह नुसखा परमोत्तम है। ३२ दवाइयोंवाला भारङ्ग्यादि काथ भी इस पर उत्तम योग है। देखो इसी भाग का पृष्ठ—२६४ नं० ??

तेरहों सन्निपातों पर कुछ हिदायतें।



पथ्य।



धमासा, गोखरू और कटेरीके काढेसे सिद्ध किया आहार सब तरहके सन्निपातोंमें दिया जा सकता है। इससे दोषोंकी शान्ति होकर बल और अग्निकी वृद्धि होती है। देखो पृष्ठ ८४ और ७७—८६ तक।

जल।



मामूली तौरसे औटाया हुआ जल शीतल करके पिलाना चाहिये, कच्चा जल न पिलाना चाहिये। दोष और ऋतुका ध्यान रखकर जल औटाना अच्छा है। देखो पृष्ठ ११२—१२१ तक।

लंघन



लघन किस सन्निपात ज्वर रोगीको कराने और कितने कराने, कब दवा देनी और कब पथ्य देना—ये सब जाननेके लिये पृष्ठ ८७-११० तक देखिये ।

नस्य ।

-★-

नस्य किस तरह देनी, कब देनी, कब न देनी—इन बातोंके जाननेके लिये पृष्ठ २७१-२७२ देखिये ।

काढा बनाने और पीनेकी विधि ।



काढेके सम्बन्धमें अगर जानना हो, तो पृष्ठ १३१-१३५ तथा १७३-१७३ देखिये ।

सूचना ।

-★-

अगर इन तेरहों सन्निपातोंमें लिखे हुए अञ्जन, नस्य और निष्ठीवन या कवल वगैर, से काम न चले (यद्यपि प्राय सभी परीक्षित योग लिखे हैं), तो पीछेके पृष्ठ २६७ से २८३ तक देखिये । अगर हिचकी श्वास आदि उपद्रवोंके नाशके लिए और नुसखे देखने हों, तो पुस्तकके अन्त में देखिये । अगर सन्निपातकी किस्म समझमें न आवे, तो ऐसा काढा दीजिये, जो तेरहों प्रकारके सन्निपातो पर मुफीद हो । देखो पृष्ठ २५८-२६२





आगन्तुक ज्वरोंके लक्षण और चिकित्सा।



अभिघाताभिचाराभ्यामभिषङ्गाभिशापतः ।
आगन्तुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतंविभावयेत् ॥

शस्त्र, मुक्का, घूँसा, लाठी आदि अथवा तलवार, तीर आदिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होते हैं, उन्हें "अभिघातज" कहते हैं। विपरीत मन्त्र जपने या मूठ वगैरः चलानेसे जो ज्वर होते हैं उन्हें "अभिचारज" कहते हैं। काम, शोक, भय, क्रोध और भूतादिकोंके आवेशसे होनेवाले ज्वरोंको "अभिषंगज" कहते हैं। वृद्ध, गुरु, सिद्ध, महात्मा प्रभृतिके शापसे हुए ज्वरको "अभिशापज" ज्वर कहते हैं। इस तरह चार प्रकारके आगन्तु ज्वर होते हैं।

नोट (१) कोई-कोई लिखते हैं—विषैले वृक्षकी पवन लगनेसे अथवा किसी और विषैली वस्तुके सूँघने भी अभिषंग ज्वर होता है। जैसे—शीतलाज्वर और मलरिया ज्वर। ऐसे स्थल में विषनाशक चिकित्सासे लाभ होता है।

नोट (२) दोष आगन्तु ज्वरको उत्पन्न नहीं करते, किन्तु आगन्तुक ज्वरके पैदा हो जानेके बाद उसके सहायक हो जाते हैं। आगन्तु ज्वर पहले व्यथासे उत्पन्न होता है, पीछे अपने-अपने दोषोंसे उसका सम्बन्ध हो जाता है। ज्वर होनेसे पहले किसी दोषका प्रकाश नहीं होता। जैसे,—काम शोक और भयसे वायु कुपित होता है। साफ तौरसे यह मतलब है कि आगन्तु ज्वर स्वयं पैदा होता है। इसके बाद उसमें वात पित्त और कफका मेल होता है। जो ज्वर चोट लगनेसे होता है, उसमें वायु—दूषित रक्तका आश्रय करके मिल जाता है, यानी

चोट लगते ही पहले ज्वर होता है, पीछे वात और रुधिर दूषित हो जाते हैं। काम, शोक, भय और क्रोध आदिसे होनेवाले अभिषगज ज्वरोंमें वात पित्त की सहायता होती है। अभिचारज और अभिशापज ज्वरोंमें वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंका अनुबन्ध रहता है अर्थात ये सन्निपातमे होते हैं।

विषज्वर ।

स्थावर जंगम विष खानेसे जो ज्वर होता है, उससे मुख श्याम-वर्ण हो जाता है, दाह होता है, दस्त होते हैं, अन्नमें अरुचि हो जाती है, प्यास लगती है, सूई चुभाने कीसी पीडा और मूर्च्छा—ये लक्षण होते हैं।

औषधिगन्ध ज्वर ।

तेज दवाके सूंघनेसे जो ज्वर होता है, उसमें मूर्च्छा, सिरदर्द, वमन और छीक—ये लक्षण होते हैं। किसी किसीने छीकके बजाय हिचकीका चलना लिखा है। असलमें यह ज्वर दुर्गन्धित पदार्थों की गन्धसे होता है। इसके लक्षण अँगरेजीके टाइफोइड (Typhoid fever) फीवरसे मिलते हैं। क्योंकि उसकी और इसकी उत्पत्ति बद-बूदार पदार्थों की गन्धसे है। डाक्टरीमें लिखा है,—टाइफोइड ज्वर जानवरोंकी सड़ाँदसे पैदा हुए जहरसे होता है, जो नाक या श्वास द्वारा हवामें मिलकर शरीरमे पहुँचता है। उसके लक्षण डाक्टरीमें इस प्रकार लिखे हैं—टाइफोइड ज्वर शुरूमें बहुधा सरदी लगकर चढता है। चेहरा फीका और सुकडासा हो जाता है। रातको गरमी, घबराहट और प्यास बढ जाती है। नाडीको चाल ६० से १२० तक हो जाती है। तिल्ली और यकृत बढ जाते हैं। कभी कभी लाल चकत्ते हो जाते हैं। रोगी बकवाद करता है। कभी कभी वमन हिचकी और खूनके दस्त भी होते हैं। इस ज्वर में २०से ३० दिन तक भय रहता है। डाक्टरीमें पहले "रेडीके तेल"का जुलाब देते

हैं। वैद्यकके मतसे "सर्वगन्धका काढ़ा" पिलाना और "अष्टगन्धकी धूनी" देना लाभदायक है ।

कामज्वर ।

किसी सुन्दरीके देखनेसे मनुष्यके मनमें घोर कामकी बाधा हो, उससे हुए ज्वरमें ये लक्षण होते हैं—चित्तकी अस्थिरता, तन्द्रा, आलस्य, अरुचि, हृदयमें दर्द और शरीर सूखना। "चरक"में लिखा है, —"इस ज्वरमें जिस चीजपर ध्यान लग जाय, उसीपर लगा रहे और श्वास अधिक चले ।"

भयज्वर ।



इस ज्वरमें डर बहुत लगता है और रोगी आनतान बकता है ।

क्रोधज्वर ।



क्रोधज्वरमें क्रोध बहुत आता है और शरीर काँपता है ।

भूतज्वर ।



इस ज्वरमें मनुष्य अमानुषी कर्म करता है, यानी ऐसे काम करता है जिनको मनुष्य नहीं कर सकता। चित्तमें उद्वेग, रोदन और कम्पन ये लक्षण होते हैं। कोई लिखते हैं,—भूतज्वरमें भूत लगनेके से लक्षण होते हैं। चित्तका उचाट हँसना, रोना और काँपना प्रभृति लक्षण होते हैं ।

अभिचार और अभिघातज्वर ।



उल्टे मन्त्र जपने, मूठ चलाने या लकड़ी तलवार प्रभृतिकी चोट लगनेसे जो ज्वर होता है, उसमें बेहोशी और प्यास—ये लक्षण होते हैं। "चरक"में लिखा है—चोट लगनेसे उत्पन्न हुई वायु—रक्तको दूषित करके—सूजन, विवर्णता और वेदनायुक्त ज्वर पैदा करती है।

चिकित्सा-विधि ।



"सुश्रुत"में लिखा है,—श्रम, क्लम तथा अभिघात—चोटसे हुए ज्वरोंमें, उनकी मूल व्याधिका यत्न करो। जैसे,—श्रमज्वरमें श्रम निवारक, क्षतमें क्षतनाशक और चोट लगनेसे हुए ज्वरमें चोटका उपाय करो। असमयमें बच्चा जननेवाली स्त्रीके ज्वरमें अथवा स्तनोंमें दूध भर जाने और बालकके न पीनेके कारणसे हुए ज्वरमें* दोषोंके अनुसार शमन यत्न करो। भूतज्वर को भूतविद्या या ताडना प्रभृतिसे शान्त करो। मानसज्वरको नसीहत और उपदेशोंसे शान्त करो। थकानसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराओ और मांसरस तथा भात खिलाओ। अभिशापज और अभिचारज ज्वरोंको हवन और जप आदिसे शान्त करो। उत्पात और ग्रह पीडाके ज्वरको दान, स्वस्तिवाचन और आतिथ्यसे जीतो। घावसे हुए ज्वरमें घाव का इलाज करो। चोटसे हुए ज्वरमें चोटके स्थानपर सेंक आदि करो तथा दोषानुसार कसैली, मधुर और चिकनी क्रिया करो। विषैले गन्ध या विषसे हुए ज्वरमें विषशामक और पित्तशामक क्रियायें करो।

काम, शोक और भयसे उत्पन्न हुए ज्वरमें वायु कुपित होती है। क्रोधसे हुए ज्वरमें पित्त कुपित होता है। भूतज्वरमें तीनों दोष कुपित होते हैं। क्रोधज्वरमें पित्त कुपित होता है। विदेह कहते हैं,—"क्रोध और शोकसे वात पित्त और रुधिर कोप करते हैं।"

क्रोधज्वरमें पित्तशामक क्रिया करनी चाहिये। कामज्वरमें सुगन्ध वाला, कमल, चन्दन, खस, दालचीनी और बालछड़का काढ़ा

* प्रसूति ज्वर और दूध ज्वरके कारण और लक्षण तथा चिकित्सा इसी भाग में आगे लिखी है।

पिलाना चाहिये। कामसे क्रोधज्वरका नाश होता है और क्रोधसे कामज्वर का नाश होता है। काम और क्रोध दोनोंको मनमें रोकनेसे कामज्वर और क्रोधज्वर दोनोंका नाश होता है।

भूतज्वरको भूतविद्या और ताडना आदिसे जीतना चाहिये। सहदेई की जडको विधिपूर्वक कण्ठमें बाँधनेसे एक, दो तीन या ४ दिनमें भूतज्वर नाश हो जाता है। हुरहुलकी जड कानमें रखनेसे भी भूतज्वर नाश हो जाता है। पुष्य सक्रान्तिमें सफेद काकमाचीकी जड लाकर, लाल डोरेमें लपेटकर, बाजूपर बाँधनेसे अथवा गले या सिरमें बाँधनेसे भूतज्वर भाग जाता है। भाँगके पेडको रात में न्यौत कर, सवेरे उसकी जड लाकर सिर मे बाँधने से भी भूतज्वर दूर हो जाता है। तुलसी की आठ पत्तियाँ ले कर, उस के रस में सोंठ, कालीमिर्च और पीपर का चूर्ण मिला कर नाक में सुँघाने से भी भूतज्वर भाग जाता है। शोधी हुई गन्धक और आमले का चूर्ण "घी" में मिलाकर देनेसे भी भूतज्वर नाश होजाता है। औषधिकी गन्ध या विषसे हुए ज्वरमे विष और पित्तको शमन करनेवाला नीचे लिखा "सर्वगन्ध का काढा" पिलाना चाहिये—तज, तेलपात, बडी इलायची, नागकेसर, कपूर, शीतलचीनी, अगर, केसर और लौंग —६ सर्वगन्ध हैं। इनका काढा पिलानेसे औषधिकी गन्ध और विषसे हुआ ज्वर नाश हो जाता है। औषधिगन्धज्वरमें बेहोशी होती है। बेहोशीके लिये हित पदार्थ सेवन कराने चाहिये।

नोट—औषधिगन्ध ज्वरके लक्षण और कारण अँगरेजी टाइफॉइड ज्वरसे मिलते हैं। इसमें अष्टगन्धकी धूनी देना हित है। टाइफोइड ज्वरके लक्षण आगे विस्तारसे लिखे हैं।

मार्ग चलनेसे हुए ज्वरमें तेलकी मालिश कराना और दिनमें सुलाना अच्छा है। शोरवा या दूध पीनेको देना चाहिये।

मारने, बाँधने, बहुत मिहनत करने और पेडसे गिरनेसे हुए ज्वरमें भी शोरवा और दूध हित है। साथ ही मूल व्याधिका उपाय करना

भी जरूरी है। चोटसे हुए ज्वरमें गरमी रहित क्रिया करनी चाहिये। कषेले, मीठे और चिकने पदार्थ देने चाहिये तथा दोषानुसार क्रिया करनी चाहिये। घी पिलाने, घी मलने, खून निकालने और मांसरस तथा भात पिलानेसे चोटका ज्वर नाश होता है।

आगन्तु ज्वरोंमें लंघन नहीं कराने चाहियें। वाग्भट्टने लिखा है,—"शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, आगन्तुज्वर और जीर्णज्वरमें लंघन नहीं कराने चाहियें।" और भी लिखा है,—कामसे, शोकसे, भयसे, चिन्ता से, चोटसे, भूतावेशसे, श्रमसे, क्रोधसे और लंघनोंसे उत्पन्न हुए ज्वरोंमें उपवास नहीं कराने चाहियें।

आगन्तु ज्वर, शुद्ध वातज्वर, क्षयज्वर, जीर्णज्वर, कामज्वर, शोकज्वर, क्रोधज्वर और भयज्वर प्रभृतिमें मांसोदन (मांसरस और भात) देना हित है।





विषमज्वरोंकी चिकित्सा ।

—※—

विषमज्वर कैसे होता है ?

—※—

> दोषोऽल्पोऽहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः ।
> धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥

ज्वरमुक्त मनुष्यके बाकी रहे हुए थोड़ेसे दोष भी, अहितकारक आहार विहार करनेसे, सम्पूर्ण होकर, रसरक्त आदि किसी धातुको दूषित करके, पीछेसे, विषमज्वर पैदा करते हैं ।

खुलासा—मानलो, किसीको पहले वातज्वर या पित्तज्वर आदि ऐसे कोई ज्वर आया । उसने औषधि सेवन की । ऐसा करनेसे जाहिरा बुखार चला गया, परन्तु कुपथ्य करनेसे अथवा समूल नाश हुए बिन दवा छोड़ देनेसे कुछ दोष रह गये । रोगीको ऊपरसे मालूम हुआ, ज्वर चला गया । रोगीने अपने तईं ज्वरमुक्त समझ कर, इच्छानुसार अहितकारी आहार विहार सेवन करना आरम्भ

कर दिया। कुपथ्य के कारणसे थोड़ेसे दोष या दोषोंने अपना पूरा रूप धारण कर लिया, यानी वे बलवान होगये। उन्होंने रस रक्त आदि किसी धातुको दूषित करके ज्वर कर दिया, यानी फिर ज्वर चढ़ आया। ऐसे ज्वरको "विषमज्वर" कहते हैं।

ऐसे ज्वरोंमें पहले ज्वर छूटा हुआ जान पड़ता है, पर वास्तव में थोड़े बहुत दोष रह जाते हैं। उनसे शरीरमें ज़रा-ज़रा हरारत रहती है। मनुष्य उस हरारतका ख़याल नहीं रखता, मनमें आता है सो खाता पीता है। उन बाकी रहे हुए दोषोंको जब कुपितकारक आहार विहार मिल जाते हैं तब वह हल्की हल्की हरारत तेज हो जाती है, यानी जोरसे बुख़ार चढ़ने लगता है, किन्तु इस लौटकर आये हुए ज्वरका रूप विषम होता है। कभी बुख़ार किसी समय चढ़ता है और कभी किसी समय, कोई नियम नहीं रहता। इसमें सरदी और गरमी दोनों रहती हैं। बुख़ार कभी तेज हो जाता है और कभी कम, इसीलिये इसे "विषमज्वर" कहते हैं।

किसीने लिखा है कि,—मनुष्यको पहले किसी तरहका ज्वर आवे और वह दवासे छूट जाय। इसके बाद २१ दिन बीतने पर या जीर्ण अवस्था होनेपर, अपथ्य सेवन करनेसे, वातादिक दोष फिर कुपित होकर, रसरक्त आदि धातुओंमेंसे किसीमें प्राप्त होकर और उनको दूषित करके ज्वर उत्पन्न कर दे, यानी इकतरा तिजारी और चौथैया प्रभृति पैदा कर दें, तो उसे "विषमज्वर" कहते हैं। अगर दोष कमजोर होते हैं, तो कालान्तरमें ज्वर करते हैं और अगर दोष जोरावर होते हैं, तो रोज ज्वर करते हैं।

"भालुकी आचार्य लिखते हैं—"अनियत समयमें—यानी कभी किसी समय और कभी किसी समय, सरदी गरमी लगकर, कम और ज़ियादा ज़ोरके साथ जो ज्वर आता है, उसे "विषमज्वर" कहते हैं। कोई कहते हैं,—जो ज्वर चला जाय और फिर लौटकर आजाय, उसे "विषमज्वर कहते हैं।

नोट—किसीने लिखा है, विषम ज्वर आरम्भसे भी होता है, यानी बिना किसी ज्वरके हुए पहलेसे ही विषमज्वर होता है। जो विषमज्वर आरम्भसे ही होता है, वह मनुष्यको मार डालता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—मनुष्यको जब ज्वर छोड़ देता है, तब वह शीघ्र ही मिथ्या आहार विहार करता है, तब कमजोर आदमीका जरासा भी रहा हुआ दोष बढ़कर और वायुसे प्रेरित होकर, कफके पाँचों स्थानों—आमाशय, हृदय, कंठ, सिर और सन्धियों—में घुसकर सतत, अन्येद्यु, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक नामके विषमज्वर पैदा कर देता है, यानी आमाशयमें जाकर सततज्वर, हृदयमें, जाकर अन्येद्युः, कंठमें जाकर तृतीयक, सिरमें जाकर चातुर्थिक और सन्धियोंमें जाकर प्रलेपक ज्वर करता है। जब दोष अपने स्थानों—सिर कंठ आदिसे आमाशयमें पहुँचते हैं, तब ज्वर जोरसे चढ़ता है। आमाशयसे दोष जितनी दूर होता है, उतने ही समयका अन्तर ज्वरके चढ़नेमें पड़ता है। दोष जोरदार होता है, तो ज्वर जोरसे चढ़ता है, दोष कमजोर होता है, तो ज्वर भी हलका चढ़ता है।

आमाशयमें रहनेवाले दोषको अधिक राह तय नहीं करनी होती, इसलिये वह दो बार जोर करता है, इसीसे दिन रातमें दो बार चढ़नेवाला "सततज्वर" होता है। हृदयमें ठहरा हुआ दोष चलकर एक दिनमें आमाशय तक पहुँचता है, इसीसे रोज आनेवाला "अन्येद्यु" ज्वर होता है। कंठवाला दोष दो दिनमें आमाशयमें पहुँचता है, इसीसे तीसरे दिन चढ़नेवाला "तृतीयक" ज्वर या तिजारी होता है। सिरमें गया हुआ दोष तीन दिनमें आमाशय तक पहुँचता है इसीसे चौथे दिन आनेवाला "चातुर्थिक" या "चौथैया" ज्वर होता है। सारे शरीरकी सन्धियोंमें प्राप्त हुआ दोष, सदा, धीरे धीरे आमाशयकी ओर जाता रहता है, इसीसे मन्दा-मन्दा बना रहनेवाला "प्रलेपकज्वर" होता है। जब दूषित दोषके परमाणु आमाशयमें पहुँचते हैं, तब वहाँ वे गरम भाफके रूपमें बदलकर, रस और पसीना

बहानेवाली शिराओं द्वारा, चमडेकी ओर चलते हैं, उस समय ज्वर चढता है। जब तक दूषित दोषके परमाणु आमाशयमें नही पहुँचने, अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको अपने स्थानमें जमा करते रहते हैं, तब तक ज्वर नही होता।

इन्हीं ऊपर कहे हुए कफ स्थानोंमें बीजरूपसे रहा हुआ दोष उपरोक्त ज्वरोंके "विपर्य्यय ज्वर" भी उत्पन्न करता है। जब कफस्थानो में दूषित दोष का बीज कम होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणुओंको कम जमा करता है, इसलिये थोडी देर ठहरनेवाले सतत, अन्येद्यु, तृतीयक प्रभृति ज्वर करता है, किन्तु जब कफ स्थानोंमें दूषित दोषका बीज जियादा और जोरावर होता है, तब वह अपने सजातीय दूषित परमाणु जियादा इकट्ठे करता हे और बहुत समय तक रहनेवाले और थोडी देरको पीछा छोडनेवाले विपर्य्यय विषमज्वर पैदा करता है। मामूली चौथैया चौथे दिन आता है, तीन दिन रोगी आराम करता है। किन्तु उसका विपर्य्यय—उल्टा केवल चौथा दिन छोडकर तीन दिन बना रहता है, केवल एक दिन रोगी आराम पाता है। तृतीयक या तिजारीका विपर्य्यय—उल्टा तीसरे दिन थोडी देरको उतर जाता है। अन्येद्यु का विपर्य्यय जरा सी देर छोडकर हर समय बना रहता है। सततका विपर्य्यय, दिन रातमें दो बार जरा-जरा देरको छोडकर हर समय बना रहता है। किसीने लिखा है,—चौथैयाका विपर्य्यय—उल्टा—विषम ज्वर वह है, जो पहला और अन्तका दिन छोडकर, बीचके दो दिन आवे। तिजारीका उल्टा वह है, जो बीचके एक दिन ज्वर आवे, आदि अन्तके दिन न आवे। इकतराका उल्टा वह है, जो एक समय छोडकर रातदिन बना रहे। इन ज्वरोंके सम्बन्धमें बहुत मत भेद है।

कफके स्थान विभागके अनुसार, दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः, तृतीयक, चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं। दोष एक दिन

रातमें एक स्थानसे दूसरे स्थानमें पहुँचता है, तो अपने अनुक्रमसे, आमाशयमें पहुँचकर, विषमज्वर करता है। आमाशय हृदय, कंठ, मस्तक और सन्धि—ये पाँच कफके स्थान हैं। इनमें ठहरे हुए दोष अनुक्रमसे सतत, अन्येद्युः तृतीयक चातुर्थिक और प्रलेपक ज्वर करते हैं।

आमाशयमें रहनेवाला दोष सतत ज्वर करता है,क्योंकि एक दिन-रातमें उस दोषका दो बार कोप होता है। हृदयमें रहनेवाला दोष आमाशयमें प्राप्त होकर अन्येद्युः करता है। कंठमें ठहरा हुआ दोष एक दिन रातमें हृदयमें पहुँचता है वहाँसे दूसरे दिन-रातमें आमाशय में पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समयमें ही तृतीयक ज्वर करता है। इसी तरह मस्तकमें रहनेवाला दोष एक दिनरातमें मस्तकसे कंठ तक आता है, दूसरे दिन-रातमें कंठसे हृदयतक पहुँचता है और तीसरे दिन रातमें हृदयसे आमाशयतक पहुँचता है। वहाँ पहुँचकर, अपने कोपके समय चातुर्थिक ज्वर करता है। ये दोष यद्यपि आमाशयमें १ दिन रात रहते हैं, तथापि अपने कोपके समयोंमें दो बार ज्वर नहीं करते—एकही बार करते हैं, यह उनका स्वभाव है। एक बात और भी है कि, दोषोंको मस्तकसे आमाशय तक आनेमें ३ दिन, कंठसे आमाशय तक आनेमें २ दिन और हृदयसे आमाशयतक आनेमे एक दिन लगता है, किन्तु अपने स्थान तक वापिस जानेमें इतना समय नहीं लगता। वजह यह है कि, ज्वर चढनेके दिन दोषोंमें बड़ा जोर रहता है, इसलिये उस दिन वे शीघ्र ही अपने स्थानपर पहुँच जाते हैं। अगर ऐसा न होता, तो चौथैया ज्वर होनेके बाद, ३ दिनमें दोष मस्तकमें पहुँचता और तीन ही दिनमें आता तो ६ दिन लग जाते। ६ दिन बीचमें देकर चौथैया ज्वर चढता। प्रलेपकके सम्बन्धमें लिख आये हैं कि, सन्धियोंमें ठहरा हुआ दोष प्रलेपक ज्वर करता है। सन्धियाँ आमाशयमें हैं इसलिये उनमें ठहरे हुए दोष सदा "प्रलेपक ज्वर" करते हैं।

विषमज्वरके सामान्य लक्षण।

—(*)*(*)—

जो ज्वर अनियमित समयमें यानी बेसमय होता है, जो सरदी लगकर या गरमी लगकर चढ़ता है और जिसका वेग भी विषम होता है, यानी कभी जियादा जोरसे चढ़ता है और कभी कम जोरसे चढ़ता है, उसे "विषम ज्वर" कहते हैं।

जिस तरह वातज्वर ७ दिन तक पित्तज्वर १०दिन तक और कफ ज्वर १२ दिन तक रहता है और अगर दोषोंका जोर जियादा होता है, तो वातज्वर १४ दिन तक, पित्तज्वर २० दिन तक रहता है और कफज्वर २४ दिन रहता है, उस तरह विषमज्वर नियमित काल तक नहीं रहता। इस ज्वरमें गरमी और सरदी भी नियमित समय तक नहीं रहती और इस ज्वरका वेग भी विषम होता है—कभी बहुत तेज और कभी शान्त होता है। हारीतने कहा है,—"देहकी धातुओं में ज्वर घर करले, तो विषमज्वर समझना चाहिये।"

विषमज्वरोंका धातुओंसे सम्बन्ध।

—*(*)—

जब कुपित हुए दोष मनुष्योंकी रस धातुमें प्राप्त होते हैं, तब "सन्तत" ज्वर करते हैं, जब रक्तमें स्थित होते हैं, तब "सतत" ज्वर करते हैं, जब मांसमें स्थित होते हैं "अन्येद्युः" ज्वर करते हैं, जब मेदमें स्थित होते हैं "तृतीयक' ज्वर करते हैं, जब हड्डी और मज्जामें स्थित होते हैं, तब घोर कालके समान प्राणनाशक रोगोंके समूह "चातुर्थिक" ज्वरको करते हैं।

नोट—सुश्रुतमें लिखा है—रस और रक्तमें ठहरा हुआ दोष "सतत" ज्वर करता है।

विषम ज्वरोंके भेद।

—*—

विषम ज्वरोंके पाँच भेद हैं —

१ सन्तत ज्वर।

२ सतत ज्वर ।

३ अन्येद्युः ज्वर ।

४ तृतीयक ज्वर ।

५ चातुर्थिक ज्वर ।

सन्तत ज्वरके लक्षण ।



जो ज्वर सात दिन, दस दिन अथवा बारह दिन, निरन्तर एकसा बना रहता है—उतरता नहीं उसे "सन्ततज्वर" कहते हैं। यह ज्वर त्रिदोषसे होता है। वातप्रधान सन्तत ज्वर सात दिन पित्त प्रधान सन्तत ज्वर दस दिन और कफप्रधान सन्तत ज्वर बारह दिन तक रहता है। इस ज्वरमे बारह चीजोंका साथ होता है —३ दोष+७ धातु+१ मल+१ मूत्र=१२, यानी वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष—रस रक्त मास, मेद अस्थि मज्जा और शुक्र इन सात धातुओं तथा मल और मूत्र को प्रसकर "सन्तत ज्वर" करते हैं।

कोई कोई कहते हैं —विषमज्वर तो वह होता है, जो चढकर उतर जाता है और फिर चढ आता है, किन्तु यह ज्वर तो हर समय बनाही रहता है, इसलिये यह विषमज्वर नहीं है। खरनाद पाँच विषम ज्वरोंमेंसे संततको छोडकर, शेष चारको विषमज्वर मानते हैं। सुश्रुतने भी सन्तत ज्वरको विषम ज्वरोंसे अलग लिखा है। क्योंकि भावमिश्रने लिखा है,—"जो ज्वर छोड-छोडकर नियत समयपर आवे, उसे विषमज्वर कहते हैं।" चरक ऋषि कहते हैं,—"सन्तत ज्वर बारहवे दिन अच्छी तरहसे उतरकर फिर चढ आता है और बहुत समय तक रहता है, इसलिये इसे विषमज्वर कह सकते हैं।"

नोट—इस ज्वरको अङ्गरेजीमे रेमिटेण्ट फीवर कहते हैं। चरकने इसके सम्बन्धमें लिखा है, कि यह ज्वर १२,१० या ७ दिनतक रहता है। या तो यह शीघ्र ही उतर जाता है या रोगीको मार डालता है। अष्टाङ्गहृदय—वाग्भटने निदान-स्थानमें लिखा है।—

वातपित्तकफै सप्तदश द्वादश वासरान्।
प्रायऽनुयाति मर्यादां मोक्षाय च वधाय च ॥
इत्यग्निवेशस्य मतं हारीतस्य पुनः स्मृतिः ॥
द्विगुणा सप्तमी यावन्नवम्येकादशी तथा।
एषा त्रिदोष मर्यादा मोक्षाय च वधाय च।

वातपित्त और कफके कारणसे सन्ततज्वर ७।१० या १२ दिन तक रहता है। इस अवधिमें रोगीको छोड जाता है या मार डालता है। यह अग्निवेश का मत है। हारीत मुनिको ऐसी याद है कि सन्ततज्वर १४।१८ या २२ दिनों तक रहता है। इस बीचमें छोड जाता है या मार डालता है। यही त्रिदोषकी मर्यादा है।

यह दुःसह ज्वर है। बडी बडी तकलीफें देता है—शीघ्रकारी होनेकी वजहसे शीघ्र उतर जाता है या मार डालता है। धातुओं और मलोंकी शुद्धि होनेसे यह सात दिनमें नष्ट हो जाता है और अशुद्धि रहनेसे मार डालता है। कोई कोई सन्ततज्वर बारह दिन बराबर रहकर गुप्तरूपसे बहुत समय तक बना रहता है। यह ज्वर कष्टसाध्य है। चिकित्सक इन बातोंको विचारकर इसकी चिकित्सा करें। प्रायः लंघन द्वारा इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। यह ज्वर त्रिदोपज होता है, पर जिस दोषकी प्रधानता होती है, उसी दोषका उल्लेख होता है।

डाक्टरीसे सन्तज्वरके लक्षण।



इस ज्वरके लक्षण अङ्गरेजाके रेमिटेण्ट फीवरसे मिलते हैं। रेमिटेण्ट फीवर उसे कहते हैं, जो उतरता नहीं। यह बुखार जब चढता है, तब जरासी सरसरीसी लगती है, रोएँ खडे हो जाते हैं। इसमें जियादा गरमी या सरदी नहीं लगती। यह कई दिनों तक बराबर बना रहता है। इसमे जीभ मैली हो जाती है, कभी दस्त लग जाते हैं, कभी कय होती हैं, बेहोशी हो जाती है, कभी-कभी हाथ पाँव एंठने और शरीर अकडने लगता है और कभी कभी रोगी बकवाद करने लगता है।

इसमें भी मलेरिया होता है और बारीसे आनेवाले ज्वरोंकी अपेक्षा अधिक होता है। इसीसे यह बुखार बहुत दिनों तक

शरीरमें रहता है और कठिनाईसे आराम होता है। इसके इलाजमें अनुभवी डाक्टर या वैद्य हकीमकी जरूरत है।

हिकमतसे सन्ततज्वरके लक्षण।

इस बुखारको दायमी तप कहते हैं। जब यह आता है, तब थोड़ी थोड़ी सरदी लगती है, जी मिचलाता है, कयमें पित्त निकलता है, सिर और कमरमें दर्द होता है, जीभ सफेद हो जाती है, चमड़ा गर्म और खुश्क हो जाता है। इसमें १०८ डिग्री तक ताप हो जाता है। ६ घण्टे जोर करके ज्वर धीमा हो जाता है और पसीने आकर फिर चढ़ने लगता है। यह दस बारह दिन तक रहता है। मस्तिष्क और हृदयमें कभी कभी वरम या सूजन हो जाती है। किसी किसीको मूर्च्छा भी होती है। इसमें सन्निपात होनेका भय रहता है और किसी किसी को हो भी जाता है।

सततज्वरके लक्षण।

जो ज्वर दिन रातमें दो बार आता है, उसे "सततज्वर" कहते हैं। मतलब यह कि, सतत ज्वर दिन रातमें दो बार चढ़ता और दो बार उतरता है। ईशान देव कहते हैं, यह ज्वर दिनमें दो बार या रातमें दो बार अथवा दिनमें एक बार और रातको एक बार आता है। अमुक समय ज्वर आवेगा, यह नियम नहीं है।

नोट—यह ज्वर भी प्राय त्रिदोषज होता है। अङ्गरेजीमे इसे 'डबल क्यूटी-डेन" कहते हैं। दिन रातमे प्रत्येक दोषके कोप करने का समय होता है, इसीलिये यह दिनरातमे दो बार आता है। वाग्भटने लिखा है,—"दिनके अन्तमे वायु मध्यमे पित्त और आदिमे कफ प्रबल होता है, इसी तरह रातके अन्तमे वायु मध्यमे पित्त और आदिमे कफ प्रबल होता है।" "चरक मे लिखा है,—'दोष प्राय रक्त धातुके आश्रय से सततज्वर करते है। यह सतत ज्वर काल, प्रकृति और दूष्यके बलमें दिनरातमे दो बार आता है।

अन्येद्युः ज्वर।

यह ज्वर दिन रातमें एक बार रोज आता है। मांसमें ठहरा हुआ दोष इसे पैदा करता है। दोष दोषवहा नाडियोंको रोककर इसे उत्पन्न करता है। यह आता रोज है, किन्तु अपने चढनेके पहले समयको छोडकर दूसरे समयमें आता है। क्योंकि पहले समयमें दोषकी स्थिति हृदयमें होती है।

नोट—चरकने सभी विषमज्वरोंमें प्रायः त्रिदोषका होना लिखा है, किन्तु सुश्रुतने अन्येद्युः और सतत ज्वरका होना "पित्त" से लिखा है। हारीतने लिखा है—जिसमें पहले जाडा लगे और पीछे गरमी आवे, वह साध्य होता है—वह झट आराम हो जाता है। जो भयंकर रूपसे होता है और जिसमें पीछे दाह होता है, वह शीघ्र नहीं जाता—वह धातुओं को क्षय करता है।

तृतीयक ज्वर।

अगर तृतीयक ज्वरमें कफ-पित्तका जोर होता है, तो वह त्रिक-स्थान—कमरमें दर्द करके चढता है। अगर वात-कफका जोर होता है, तो वह पीठमें दर्द करके चढता है। अगर वातपित्तका जोर होता है, तो वह सिरमें पीडा करके चढता है। इसको इस तरह भी समझिये,—अगर कमरके पीछे जहाँ तीन हड्डी हैं वहाँ दर्द होकर यह बुखार चढे, तो इसे कफ-पित्तसे समझो अथवा कफपित्तोल्बण समझो। अगर पीठमें दर्द या जकडन होकर चढे, तो इसे वात कफसे समझो अथवा वातकफोल्बण समझो। अगर सिरमें दर्द होकर बुखार फैल जाय, तो इसे वातपित्तसे समझो अथवा वात पित्तोल्बण समझो। जब तिजारीमें वातपित्त प्रधान होते हैं, तब पहले माथेमें दर्द होता है, और पीछे ज्वर चढ आता है। इसी तरह जब वातकफ प्रधान होते हैं, तब पहले पीठमें दर्द होता है या पीठ जकड

जाती है, इसके बाद ज्वर चढ आता है। इसी तरह जब कफपित्त प्रधान होते हैं, तब त्रिकस्थान—जहाँ तीन हाड पीठके नीचे मिले हैं—में दर्द या जकडनसी होती है और ज्वर चढ आता है। इस तरह, एक तृतीयक ज्वर तीन तरहका होता है। उसमें किन-किन दोषोंकी प्रधानता है यह जान लेनेसे इलाजमें सुभीता होता है।

त्रिक वातका स्थान है। कफपित्त पराये स्थानमें यानी वादीके स्थानमें जानेसे कमजोर हो जाते हैं, इसलिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं। अगर कफ पित्त अपने स्थानमें रहते हैं, तो सन्तत ज्वर करते हैं। इसी तरह मस्तक कफका स्थान है और पीठ पित्तका स्थान है। वातपित्त कफके स्थान—मस्तक—में पहुँचकर और वात-कफ पित्तके स्थान—पीठमें—पहुँचकर कमजोर हो जाते हैं और इसी लिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं।

शङ्का—त्रिक वातका स्थान है, वहाँ कफ पित्त कैसे जा सकते हैं?
समाधान—यह स्थानका नियम प्रकृतिस्थ दोषोंका है, कुपित दोषोंका नहीं। कुपित दोष चाहे जहाँ जा सकते हैं।

चातुर्थिक ज्वर।

चौथैया ज्वर चौथे दिन आता है, यानी बीचके दो दिन छोडकर आता है। दोष अस्थि या मज्जामें स्थित होकर इस ज्वरको करता है। चौथैया दो तरहका होता है,—(१) कफाधिक्य (२) वाताधिक्य। कफप्रधान चौथैया दोनों जाँघों (पिण्डरियोंमें)में पीडा करके चढता है और वातप्रधान चौथैया सिरमें दर्द करके चढता है। अथवा यों समझिये,—जिसमें कफकी अधिकता होती है, वह पहले जाँघोंमें व्याप्त होकर, पीछे सारी देहमें व्याप्त होता है और जिसमें वातकी अधिकता

अन्येद्युः ज्वर ।

यह ज्वर दिन रातमें एक बार रोज आता है। मासमें ठहरा हुआ, दोष इसे पैदा करता है। दोष दोषवहा नाडियोंको रोककर इसे उत्पन्न करता है। यह आता रोज है, किन्तु अपने चढनेके पहले समयको छोडकर दूसरे समयमें आता है। क्योंकि पहले समयमें दोषकी स्थिति हृदयमें होती है।

नोट—चरकने सभी विषमज्वरोमे प्राय त्रिदोषका होना लिखा है, किन्तु सुश्रुतने अन्येद्युः और सतत ज्वरका होना 'पित्त' से लिखा है। हारीतने लिखा है —जिसमे पहले जाडा लगे और पीछे गरमी आवे, वह साध्य होता है—वह झट आराम हो जाता है। जो भयकर रूपसे होता है और जिसमे पीछे दाह होता है, वह शीघ्र नहीं जाता—वह धातुओं को क्षय करता है।

तृतीयक ज्वर ।

अगर तृतीयक ज्वरमें कफ-पित्तका जोर होता है, तो वह त्रिक-स्थान—कमरमें दर्द करके चढता है। अगर वात-कफका जोर होता है, तो वह पीठमें दर्द करके चढता है। अगर वातपित्तका जोर होता है, तो वह सिरमें पीडा करके चढता है। इसको इस तरह भी समझिये,—अगर कमरके पीछे जहाँ तीन हड्डी हैं वहाँ दर्द होकर यह बुखार चढे, तो इसे कफ-पित्तसे समझो अथवा कफपित्तोल्वण समझो। अगर पीठमें दर्द या जकडन होकर चढे, तो इसे वात कफसे समझो अथवा वातकफोल्वण समझो। अगर सिरमें दर्द होकर बुखार फैल जाय, तो इसे वातपित्तसे समझो अथवा वात पित्तोल्वण समझो। जब तिजारीमें वातपित्त प्रधान होते हैं, तब पहले माथेमें दर्द होता है, और पीछे ज्वर चढ आता है। इसी तरह जब वातकफ प्रधान होते हैं, तब पहले पीठमें दर्द होता है या पीठ जकड

जाती है, इसके बाद ज्वर चढ आता है। इसी तरह जब कफपित्त प्रधान होते हैं, तब त्रिकस्थान—जहाँ तीन हाड पीठके नीचे मिले हैं—में दर्द या जकडनसी होती है और ज्वर चढ आता है। इस तरह, एक तृतीयक ज्वर तीन तरहका होता है। उसमें किन-किन दोषोंकी प्रधानता है यह जान लेनेसे इलाजमें सुभीता होता है।

त्रिक वातका स्थान है। कफपित्त पराये स्थानमें यानी बादीके स्थानमें जानेसे कमजोर हो जाते हैं, इसलिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं। अगर कफ पित्त अपने स्थानमें रहते हैं, तो सन्तत ज्वर करते हैं। इसी तरह मस्तक कफका स्थान है और पीठ पित्तका स्थान है। वातपित्त कफके स्थान—मस्तक—में पहुँचकर और वात-कफ पित्तके स्थान—पीठमें—पहुँचकर कमजोर हो जाते हैं और इसी लिये तीसरे दिन ज्वर करते हैं।

शङ्का—त्रिक वातका स्थान है, वहाँ कफ पित्त कैसे जा सकते हैं?
समाधान—यह स्थानका नियम प्रकृतिस्थ दोषोंका है, कुपित दोषोंका नहीं। कुपित दोष चाहे जहाँ जा सकते हैं।

चातुर्थिक ज्वर।

चौथैया ज्वर चौथे दिन आता है, यानी बीचके दो दिन छोडकर आता है। दोष अस्थि या मज्जामें स्थित होकर इस ज्वरको करता है। चौथैया दो तरहका होता है,—(१) कफाधिक्य (२) वाताधिक्य। कफप्रधान चौथैया दोनों जाँघों (पिण्डलियों)में पीडा करके चढता है और वातप्रधान चौथैया सिरमें दर्द करके चढता है। अथवा यों समझिये,—जिसमें कफकी अधिकता होती है, वह पहले जाँघोंमें व्याप्त होकर, पीछे सारी देहमें व्याप्त होता है और जिसमें वातकी अधिकता

होती है, वह पहले मस्तकमें व्याप्त होकर सारी देहमें व्याप्त होता है।

नोट—चरकके मतसे पाँचों विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं। "हारीत" कहते हैं,—"चौथैया ज्वरमें पित्तप्रधान होता है।" "सुश्रुत"में कहा है, कोई-कोई वैद्य कहते हैं, कि तिजारी और चौथैया वायुकी प्रधानतासे होते हैं।

प्रलेपक ज्वर।

तथा प्रलेपको ज्ञेय शोषिणा प्राणनाशन।
दुश्चिकित्स्यतमो मन्द सकृष्टो धातुशोषकृत्॥

प्रलेपक ज्वर मन्दा मन्दा बना ही रहता है। यह कष्टसाध्य और कठिनतासे चिकित्सा योग्य है। यह सब धातुओंको सुखाता है और जिनकी धातुएँ सूख जाती हैं, उनके प्राण नाश करता है। "माधवनिदान"में लिखा है,—"जिस ज्वरमें पसीनोंसे और सूरजकी धूप से अथवा शरीरके भारीपनसे शरीरकी चमडी लिपसी मालूम हो, इसी कारणसे मन्दा-मन्दा ज्वर हो, जाडा लगे, वह ज्वर "प्रलेपक" है। यह ज्वर कफपित्तसे होता है। कोई-कोई इसे त्रिदोषजनित कहते हैं। यह ज्वर राजयक्ष्मा रोगमें होता है। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है,—"प्रलेपक और वातबलासक ज्वर कफ की प्रधानता से होते हैं।"

नोट—यद्यपि सभी विषमज्वर शोषवाले मनुष्योंको अत्यन्त दुःख देते हैं, किन्तु प्रलेपक तो उनके प्राणनाश ही कर डालता है, इसीसे सुश्रुतने प्रलेपकको विषम-ज्वर माना है।

नोट—जिसको यूनानी हकीम तपेदिक कहते हैं, उससे इसके लक्षण मिलते हैं। तपेदिक में थोडीसी सरदी लगकर ज्वर चढता है, हथेली और तलवे जियादा गरम रहते हैं, ज्वर धीमा-धीमा बना रहता है, भूख बहुत कम लगती है, जीभ मैली रहती है। दिनमें कभी पसीने बहुत आते हैं, कभी दस्त बहुत लग जाते हैं।

जब किसी अङ्गमे पीप पैदा होती है, तब तपेदिक होता है, पर कहते हैं कि कभी-कभी बिना पीप पैदा हुए भी दिक हो जाती है। जहाँ पीप होती है, वहाँ कुलमुलाहटसी होती है तथा थकान और दर्द भी रहता है। कमजोरी, क्षीणता, क्षयी, धातुक्षीणता, प्रमेह, मन्दाग्नि और अधिक मैथुन आदि इसके कारण हैं।

डाक्टरीमतसे धीरे-धीरे बल बढ़ाना और ताकतवर दवा जैसे,—कुनैन या कारबोनेट आव आयर्न देना अच्छा समझते हैं। दूध देना भी अच्छा समझा जाता है। वैद्यकमें ऐसे ज्वर में "वर्द्धमानपिप्पली",या "सितोपलादि चूर्ण" देना हितकर है। दूधकी मनाही वैद्यकमें भी नहीं है, क्योंकि यह पुराना हो जाता है और पुराने ज्वरमें दूध देना परम हितकर है।

वातबलासकज्वरके लक्षण।

नित्य मदज्वरो रूक्ष शून कृच्छ्रेण सिद्ध्यति।
स्तब्धाङ्ग श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी॥

रोज मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, शरीर रूखा (सफेद) हो जाय, सूजन आ जाय, शरीर रुका हुआसा रहे और कफकी अधिकता हो—ये लक्षण "वातबलासक" ज्वरके हैं। यह कष्टसाध्य है।

नरसिंहज्वर या अर्द्धनारीश्वर।

आहारसे उत्पन्न हुआ रस दुष्ट होता है, तब शरीरमें कफ और पित दुष्ट होकर रहते हैं। इस कारण आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है, यानी जिस तरह अर्द्धनारीश्वरके शरीरका एक भाग स्त्रीका और एक भाग पुरुषका होताहै, उसी तरह इस रस ज्वरवालेका आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है। इसलिये इस ज्वरको "अर्द्धनारीश्वर" कहते हैं। जिस तरह नरसिंहके शरीर का एक भाग मनुष्यका और एक भाग सिंहका होता है; उसी

होती है, यह पहले मस्तकमें व्याप्त होकर सारी देहमें व्याप्त होता है।

नोट—चरकके मतसे पाँचों विषमज्वर सन्निपातसे होते हैं। "हारीत" कहते हैं,—"चौथैया ज्वरमें पित्तप्रधान होता है।" "सुश्रुत"में कहा है, कोई-कोई वैद्य कहते हैं, कि तिजारी और चौथैया वायुकी प्रधानतासे होते हैं।

प्रलेपक ज्वर।

तथा प्रलेपको ज्ञेय शोषिणा प्राणनाशन ।
दुश्चिकित्स्यतमो मन्द सकष्टो धातुशोषकृत् ॥

प्रलेपक ज्वर मन्दा मन्दा बना ही रहता है। यह कष्टसाध्य और कठिनतासे चिकित्सा योग्य है। यह सब धातुओंको सुखाता है और जिनकी धातुएँ सूख जाती हैं, उनके प्राण नाश करता है। "माधवनिदान"में लिखा है,—"जिस ज्वरमें पसीनोंसे और सूरजकी धूप से अथवा शरीरके भारीपनसे शरीरकी चमडी लिपसी मालूम हो, इसी कारणसे मन्दा-मन्दा ज्वर हो, जाडा लगे, वह ज्वर "प्रलेपक" है। यह ज्वर कफपित्तसे होता है। कोई-कोई इसे त्रिदोषजनित कहते हैं। यह ज्वर राजयक्ष्मा रोगमें होता है। "सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है,—"प्रलेपक और वातबलासक ज्वर कफ की प्रधानता से होते हैं।"

नोट—यद्यपि सभी विषमज्वर शोषवाले मनुष्योंको अत्यन्त दुःख देते हैं, किन्तु प्रलेपक तो उनके प्राणनाश ही कर डालता है, इसीसे सुश्रुतने प्रलेपकको विषम ज्वर माना है।

नोट—जिसको यूनानी हकीम तपेदिक कहते हैं, उससे इसके लक्षण मिलते हैं। तपेदिक में थोडीसी सरदी लगकर ज्वर चढता है, हथेली और तलवे जियादा गरम रहते हैं, ज्वर धीमा-धीमा बना रहता है, भूख बहुत कम लगती है, जीभ मैली रहती है। दिनमें कभी पसीने बहुत आते हैं, कभी दस्त बहुत लग जाते हैं।

जब किसी अङ्गमें पीप पैदा होती है, तब तपेदिक होता है, पर कहते हैं कि कभी-कभी बिना पीप पैदा हुए भी दिक हो जाती है। जहाँ पीप होती है, वहाँ कुलमुलाहटसी होती है तथा थकान और दर्द भी रहता है। कमजोरी, क्षीणता, क्षयी, धातुक्षीणता, प्रमेह, मन्दाग्नि और अधिक मैथुन आदि इसके कारण हैं।

डाक्टरीमतसे धीरे-धीरे बल बढ़ाना और ताकतवर दवा जैसे,—कुनैन या कार्बोनेट आव् आयर्न देना अच्छा समझते हैं। दूध देना भी अच्छा समझा जाता है। वैद्यकमें ऐसे ज्वर में "वर्द्धमानपिप्पली", या "सितोपलादि चूर्ण" देना हितकर है। दूधकी मनाही वैद्यकमें भी नहीं है, क्योंकि यह पुराना हो जाता है और पुराने ज्वरमें दूध देना परम हितकर है।

वातबलासकज्वरके लक्षण।

नित्य मंदज्वरो रूक्ष शून कृच्छ्रेण सिद्ध्यति।
स्तब्धाग श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी॥

रोज मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, शरीर रूखा (सफेद) हो जाय, सूजन आ जाय, शरीर रुका हुआसा रहे और कफकी अधिकता हो—ये लक्षण "वातबलासक" ज्वरके हैं। यह कष्टसाध्य है।

नरसिंहज्वर या अर्द्धनारीश्वर।

आहारसे उत्पन्न हुआ रस दुष्ट होता है, तब शरीरमें कफ और पित्त दुष्ट होकर रहते हैं। इस कारण आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है, यानी जिस तरह अर्द्धनारीश्वरके शरीरका एक भाग स्त्रीका और एक भाग पुरुषका होताहै, उसी तरह इस रस ज्वरवालेका आधा शरीर शीतल और आधा गरम रहता है। इसलिये इस ज्वरको "अर्द्धनारीश्वर" कहते हैं। जिस तरह नरसिंहके शरीरका एक भाग मनुष्यका और एक भाग सिंहका होता है, उसी

तरह इस ज्वरवालेका एक भाग शीतल और एक भाग गरम रहता है, इसीसे इसे "नरसिंह ज्वर" भी कहते हैं।

जब दूषित पित्त कोठेमें रहता है और दूषित कफ हाथ पैरोंमें रहता है, तब शरीर गरम रहता है और हाथ पाँव शीतल रहते हैं। जब दूषित कफ कोठेमें रहता है और दूषित पित्त हाथ पाँवों में रहता है, तब शरीर शीतल और हाथ पाँव गरम रहते हैं।

रात्रिज्वर के लक्षण।

—*★*—

जिस मनुष्यके वात और कफ समान होते हैं तथा पित्त क्षीण होता है उसको विशेष करके रातमें ज्वर होता है, जिसके वात पित्त समान होते हैं और कफ क्षीण होता है, उसको विशेषकर दिन में ज्वर होता है।

विषम ज्वरोंमें सरदी और गरमीका कारण।



"सुश्रुत"में लिखा है,—जब चमडेमें कफ और वायु स्थित होते हैं, तब ज्वरके आरम्भमें जाडा लगता है, यानी जाडा लगकर बुख़ार चढ़ता है, लेकिन जब कफ और वायुका वेग शान्त हो जाता है, तब पित्त बलवान होकर दाह—गरमी—पैदा करता है। इस तरह बुखारमें पहले ठण्ड लगती है और पीछे गरमी लगती है। उसी तरह चमडे में रहनेवाला पित्त पहले अत्यन्त दाह—गरमी करता है, पीछे जब पित्तका वेग शान्त हो जाता है, तब वात और कफ बलवान होकर हाथ पाँव आदिमें शीत करते हैं।

खुलासा यह है कि, जब वायु कफके साथ मिलकर रगोंमें बहती है, तब ज्वरके आदिमें जाडा लगता है। जब पीछे वायु कफसे अलग हो जाती है, तब कफ शान्त हो जाता है, उस समय वायु पित्त

के साथ रगोंमें बहने लगती है , तब पित्तके कारणसे दाह पैदा हो जाता है , इसीसे जाड़ेके बुखारके अन्तमें प्यास बहुत लगती है। इसी तरह जब वायु पित्तके साथ रगोंमें बहती है, तब ज्वरके आदिमें दाह होता है , और पीछे पित्तके शान्त होनेपर, वायु कफके साथ नसों में बहने लगती है, तब कफ अपने स्वभावज गुणसे शीत पैदा करता है ।

शीतपूर्वक और दाहपूर्वक दोनों प्रकारके ज्वर संसर्गज होते हैं यानी त्रिदोष या सन्निपात से होते हैं। कफ वायु या पित्त का जैसा संसर्ग होता है, वैसे ही होते हैं। जिस ज्वरके आदिमें दाह होता है, वह कष्टसाध्य होता है और जिसके आदिमें जाड़ा लगता है, वह सुखसाध्य होता है ।

जिस तरह वायुके झकोरोंसे समुद्रमें झालें उठती हैं और फैल जाती हैं, उसी तरह वायुके कारणसे दोष ज्वरकी करते हैं। जिस तरह समुद्रके उथलपुथल होनेसे जल किनारोंके ऊपर तक छा जाता है और उभारके उतर जाने पर वह जल उसीमें फिर लीन हो जाता है , उसी तरह दोषोंके वेगके समय ज्वर प्रचण्ड हो जाता है और दोषोंके शान्त होतेही ज्वर भी शान्त हो जाता है । ज्वर आदि सब रोगोंका असल कारण "वायु" ही है ; यानी वायुसे ही ज्वर आदि सब रोग होते हैं ।

विषमज्वर शरीरमें हर समय रहते हैं ।



न चापि विषमो देहं न कदाचिद्विमुञ्चति ।
ग्लानिगौरवकार्श्येभ्यः स यस्मान्न प्रमुच्यते ॥
वेगे तु समतिक्रान्ते गतोऽयमिति लक्ष्यते ।

धात्वन्तरस्थो लीनत्वान्न सौक्ष्म्यादुपलभ्यते ।
अल्पदोषेन्धनः क्षीणः क्षीणेन्धन इवानल

मामूली तौरपर देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि, ज्वर उतर गया, अब अपने समय पर आवेगा, पर असलमे विषमज्वर शरीर को नही छोडता। जब हम उसे शरीरसे गया हुआ समझते हैं, तब भी वह शरीरमें होता है। "सुश्रुत"में लिखा है,विषम ज्वर कभी शरीर को नहीं छोडता कुछ न कुछ शरीरमे बना ही रहता है, क्योंकि विषमज्वरवाला ग्लानि, भारीपन और कृशता से शून्य नही रहता। हाँ, ज्वरका वेग शान्त हो जानेपर ज्वर चला गया, ऐसा मालूम होता है, परन्तु वह जाता नही। वह और धातुओंमे गुप्तरूपसे छिपकर रह जाता है। अत्यन्त सूक्ष्म होनेकी वजहसे मालूम नहीं होता। मालूम भले ही न हो, पर उसके अंशाश शरीरमे बनेही रहते हैं। थोडे दोषोंके कारण ज्वर उसी तरह दबा रहता है, जिस तरह ईंधनके कम होनेसे आग मन्दी हो जाती है, उसकी वह तेजी नहीं रहती, राखसे ढकी हुई मालूम तक नही होती। अथवा जिस तरह बीज जमीनमें पडा रहता है, समय पर उगता है, उसी तरह दोष धातुओंमें बने रहते हैं और समय पर जोर करते हैं।

चातुर्थिक विपर्य्यय आदिके कारण।

दोषोंका स्वभाव ही कारण रूप होनेसे, कफस्थानोंके विभागकी अपेक्षा रक्खे बिना भी, चातुर्थिक विपर्य्यय आदि अन्य विषमज्वर अपने अपने समयमे प्रकट होते हैं। जिस तरह बीज पृथ्वीमें पडे रहते हैं और अपने नियत समयके आनेपर उगते है, उसी तरह दोष धातुओंमें रहते है और अपना ठीक समय आनेपर ही कुपित होते है। "सुश्रुत"में लिखा है.—

परो हेतु स्वभावो वा विषमे कैश्चिदीरित ।
आगन्तुश्चानुबन्धो हि प्रायशो विषमज्वरे ॥

कोई आचार्य विषमज्वरका हेतु स्वभाव ही कहते हैं, यानी वे अपने स्वभावसे ही नियत समयपर आ जाते हैं। कोई इसमें प्राय. आगन्तुक को कारण मानते हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह बात चातुर्थिक विपर्यय आदि अन्य ज्वरोंके सम्बन्धमें कही है।



विषमज्वरों की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) वङ्गसेनने कहा है—सभी विषमज्वर सन्निपातसे उत्पन्न होते हैं, उनमें जो दोष अधिक हों, उन्ही दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(२) वाताधिक्य विषमज्वरको घृतपान और अनुवासन वस्ति तथा स्निग्ध और उष्ण अनुपानोंसे शान्त करना चाहिये, यानी वात प्रधान विषम ज्वरको घी पिला कर, अनुवासन वस्ति करके तथा चिकने और गरम पदार्थ सेवन कराकर जय करना चाहिये।

(३) पित्ताधिक्य विषमज्वरमें गरम दूध घी मिलाकर विरेचन—दस्त करानेके लिये देना चाहिये तथा तिक्त और शीतल पदार्थों से उसे नष्ट करना चाहिये।

(४) कफाधिक्य विषमज्वरमें वमन, पाचन, रूखे अन्न पान, लंघन और गरम दवाओंके काढ़े—ये सब हितकारी हैं।

(५) वातोल्बण विषमज्वरको नष्ट करनेके लिये, काढ़ेमें "मधु" सोलहवाँ भाग डालना चाहिये, पित्तोल्बण विषमज्वरके नष्ट करनेके

लिये काढ़ेमें "शहद" आठवाँ भाग डालना चाहिये। कफोल्वण विषम ज्वरको नष्ट करने के लिये "शहद" चार भाग डालना चाहिये और मिश्री इससे विपरीत डालनी चाहिये।

(६) वमन और विरेचन द्वारा शुद्ध करनेसे विषमज्वर दूर होता है। निशोथ, पीपल या हरड़—इनमेंसे किसी एकको शहतके साथ चाटनेसे विषमज्वर दूर होते हैं। सब तरहके विषमज्वरोंमें वमन या विरेचन कराना चाहिये। निशोथके चूर्णमें शहत मिलाकर चाटनेसे विषमज्वर निश्चयही नाश हो जाते हैं। लोलिम्बराज महाशय अपनी स्त्रीसे कहते हैं,—

यो भजेत्समधुश्यामा हे हेमकलशस्तनि ॥
विषमेषु व्यथास्तस्य न भवति कदाचन ॥

हे सोनेके घड़ोंके समान स्तनोंवाली। जो शहदके साथ निशोथ या पीपलके चूर्णको चाटता है अथवा जो कामी पुरुष शराब और सोलह वर्षकी स्त्रीका सेवन करता है, उसे विषम ज्वरकी तकलीफ कभी नहीं होती।

(७) विषमज्वरमें रोगीके पीनेको सुरा (शराब) और माँड देना चाहिये। भोजनके लिये मुर्गा, तीतर और मोरका मांस देना चाहिये। ये पदार्थ हित हैं। छाछके साथ मांस, दूधके साथ मांस, दहीके साथ मांस अथवा उड़दके साथ मांस खानेसे विषमज्वर नष्ट हो जाता है।

(८) क्षीण मनुष्यके बहुत दिनोंका सतत या विषमज्वर बढ़ जाय, तो उसको ज्वरनाशक पथ्य या भोजनसे जीतना चाहिये। रूखे मनुष्यका ज्वर अगर वमन, लंघन और हलके पदार्थोंसे शान्त न हो, तो उसे घी (दवाओंका बना घी) पिलाकर जीतना चाहिये। जैसे चन्दनादि घृत, कल्याणघृत, महाकल्याणघृत, षट्पलघृत और अमृतषट्पलघृत इत्यादि।

(९) अगर रोगीको शीतके कारण तकलीफ हो, तो शीतनाशक चिकित्सा करनी चाहिये। यदि दाहसे पीडा हो, तो दाहनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) प्रलेपक ज्वरोंमें सब क्रियायें कफनाशक करनी चाहिये।

(११) शीतज्वरों, मलेरिया ज्वरों, इकतरा और तिजारी चौथैया प्रभृति पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें जो दवाएँ बिना ज्वरकी हालतमें दी जाती हैं, उन्हें ज्वर चढनेकी हालतमें न देना चाहिये। इन ज्वरोंमें अक्सर दवाएँ ज्वर रोकनेके लिये ज्वर चढनेसे पहले ही दी जाती हैं और ज्वर चढ आने पर बन्द कर दी जाती हैं। फिर दूसरे दिन या पारीके दिन, ज्वर चढनेसे पहले फिर दी जाती हैं। हाँ, लोबान या आककी छाल प्रभृतिके चूर्ण ज्वर उतारनेके लिये दिये जा सकते हैं।

(१२) बहुत दिनोंके सततज्वर और विषमज्वरोंमें हितकारक भोजन देना चाहिये। सतत और विपर्य्यय आदि ज्वरोंका इलाज भी सतत और सन्तत आदि ज्वरोंकी तरहही करना चाहिये।

(१३) तिजारी और चौथैया ज्वरमें वमन विरेचन साधारण कर्म करके चिकित्सा करनेसे जल्दी सिद्धि होती है।

(१४) तिजारी और चौथैयामें साधारण चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि विषम ज्वरोंमें प्राय ही आगन्तुकका अनुबन्ध होता है, अत ये ज्वर बलि, हवन, टोने, टोटके जन्त्र-मन्त्र और दवा दोनोंमें आराम होते हैं। इनकी चिकित्सा उन्माद रोगकी चिकित्सासे बहुत मिलती है। विषमज्वरोंमें उन्माद और मृगीकी तरह धूप, धूनी और अञ्जन तथा नस्यका प्रयोग करना अच्छा है।

(१५) अगर विषमज्वर रोगी बहुत दुबला हो तो वाताधिक्य विषम ज्वर अनुमान करना चाहिये। ऐसी दशामें घृत और आस्थापन अथा अनुवासनसे इलाज करना चाहिये।

अगर रोगीकी आँखें, नाखुन प्रभृति हलदीकी तरह पीले होगये हों, तो पित्त प्रधान ज्वर समझना चाहिये। ऐसी हालतमें विरेचन—जुल्लाब, दूध, दवाओंके बने घी तथा कड़वे और शीतल नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

अगर कफप्रधान विषमज्वर हो, तो वमन, पाचन रुक्ष अनुपान—विशेष करके लंघन (हलके भोजन) तथा काढे और गरम योगों—नुसख़ोंसे इलाज करना चाहिये।

(१६) विषमज्वरमें घी की प्रधान मात्रा देकर या ख़ूब खिला-पिलाकर वमन करा देनी चाहिये।

(१७) रसस्थ ज्वरमें यानी उस ज्वरमें जो खानेके बाद आता हो, वमन और लंघन हितकारी हैं

विषमज्वरों की सामान्य चिकित्सा।



पाचन क्वाथ।



(१) सोनामक्खी, छोटी हरड़, काले दाख और जीरा—इनका पाचन काढ़ा विषमज्वरोंमें देना चाहिये। परीक्षित है।

विषमज्वरनाशक नुसखे।



(१) इन्द्रजौ, पटोलपत्र और कुटकी (१) पटोलपत्र सारिवा (गौरीसर), नागरमोथा, पाढ और कुटकी (२) नीम, पटोलपत्र, त्रिफला, दाख, नागरमोथा और इन्द्रजौ (३) चिरायता, गिलोय, लाल चन्दन और सोंठ (४) गिलोय, आमले और नागरमोथा (५)—ये पाँचों प्रकारके काढेपाँचों प्रकारके वि ... तत्काल शान्त करते हैं।

लोलिम्बराज महोदय कहते हैं

अबले कमलातनुरक्तकले चलदृक्कमले धृतकामकले।
अमृताब्दशिवं मधुमद्विषमे विषमे विषमेषु विलासरते॥

हे अबले! हे लक्ष्मीके समान शरीरकी कलावाली! हे कमलके समान चञ्चल दृष्टिवाली! कामदेवकी इच्छासे मधुर ध्वनिवाली! कामकलामें प्रवीणा! गिलोय, नागरमोथा और आँवलेका काढ़ा शीतल करके और शहद मिला कर पीनेसे विषम ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—गिलोय गीली लेनी चाहिये, पर सूखी न लेनी चाहिये।

(२) कचीकी जड़ और सोंठका काढ़ा बनाकर सेवन करनेसे शीत, कम्प और दाहयुक्त विषमज्वर मात्र दो तीन दिनमें नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) नागरमोथा, आमले, गिलोय, सोंठ और कटेरी—इनके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं —

वाङमाधुर्यजितामृतेऽमृतलता लक्ष्मीगिरीशाभे गिरा
विश्व विश्ववरे घनो घनकुचे सिंही च सिंहोदरि॥
एभि पंचभिरौषधैमधुकणामिश्र कषाय कृत पीत-
श्चेद्विषमज्वर किमु तदा तन्वंगि न क्षीयते॥ ६० ॥

हे अपनी मीठी बोलीसे अमृतको जीतनेवाली! हे लक्ष्मी और पार्वतीके समान कान्तिवाली! हे सारी स्त्रियोंमें श्रेष्ठ! हे मोटे कुचोंवाली और सिंहके समान उदरवाली! गिलोय, आमला, सोंठ, नागरमोथा और कटेहली—इन पाँचोंके काढ़ेमें शहद और पीपलका

चूर्ण मिलाकर पीनेसे, हे नाजुक बदन। क्या विषमज्वर नष्ट नहीं होता ? अवश्य होता है।

(४) लहसनके कल्कको* तिलके तेल और नमकके साथ मिलाकर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे विषमज्वर और वात सम्बन्धी सब रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—यद्यपि भावमिश्रने इस योगको सामान्यतया विषमज्वरनाशक लिखा है, पर इससे वायु और वायुसे उत्पन्न घोर विषमज्वर निश्चयही नाश होता है। वग-सेनने लिखा है,—"इसके सेवनसे बहुत दिनका पुराना घोर विषमज्वर और वात-रोग नाश होता है।" सुश्रुतने सवेरेके समय घी और लहसनके सेवन करनेसे विषमज्वरका जाना लिखा है।"

लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं —

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि परन्तु कान्ते न रसोनकल्कात्।
तैलेन युक्तादपर प्रयोगो महासमीरे विषमज्वरेऽपि॥ ६७॥

हे सर्व्वाङ्गसुन्दरी! क्या और सब दवाएँ मान करने योग्य नहीं हैं ? अवश्य ही मान करने योग्य हैं। परन्तु महान वातरोग और विषमज्वरमें तेल मिले हुए लहसनके कल्कसे बढ़कर दूसरा नुसख़ा नहीं है।

वाग्भट महोदयने भी कहा है—"प्रातः सतैलं लशुनं प्राग्भक्तम् वा तथा घृतम् विषमज्वर जित्परम्।" सवेरे के समय तेलके साथ लहसन या पुराना घी सेवन करनेसे विषम ज्वर नाश हो जाता है। लहसन के कल्ककी सभी शास्त्रकारोंने भरपूर तारीफ की है।

(५) एक तोले कलौंजीको आगमें भूनकर, पीछे उसमें तोला भर गुड़ मिलाकर खानेसे विषमज्वर नाश होता है।

(६) तुलसीके पत्तोंके रसमें कालीमिर्च का चूर्ण डालकर पीनेसे विषम ज्वर नाश हो जाता है।

---

* कल्क की परिभाषा पृष्ठ १५० के फुटनोट मे देखिये।

(७) द्रोणपुष्पी (गूमा) के रसमें कालीमिर्चोंका चूर्ण मिलाकर पीने से विषमज्वर नाश हो जाता है।

(८) कालाजीरा और गुड़ समान भाग लेकर, उसमें जरासा कालीमिर्चका चूर्ण मिलाकर खानेसे विषमज्वर अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—जीरेको गुड़में मिलाकर खानेसे विषमज्वर, वातरोग और मन्दाग्नि,—ये नाश हो जाते हैं। गुड़, घी, शहद, वायविडङ्ग और चाँवल सदा पुराने लेने चाहिये।

(९) सोंठ, जीरा और गुड़—इनको एक जगह पीसकर, गरम जलके साथ पीनेसे अथवा पुरानी शराबके साथ पीनेसे अथवा माठेके साथ पीनेसे तत्काल शीतज्वर नाश होता है।

(१०) परवल, हरड़, नागरमोथा, कुटकी, चिरायता, मुलेठी और गिलोय,—इन सातोंका काढ़ा सम्पूर्ण विषमज्वरोंपर उत्तम है। इससे खाँसी और अरुचिका भी नाश होता है।

(११) द्रोणपुष्पीके रसमें मिश्री और जीरा मिलाकर, चार तोले रस पीनेसे प्रबल विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) चिरायता, हरड़, नागरमोथा, कटेरी, त्रायमाण, सोंठ, जवासा, कुटकी, वाट्याल (चिकणा), बला, कचूर, पीपल, परवल, कटेरी, नेत्रबाला, पीपलामूल और पित्तपापड़ा—इन सबको कूट पीसकर चूर्ण करले। इसका नाम "षोडशाङ्ग चूर्ण" है। यह सब तरह के विषम ज्वरोंको नाश करता है। परीक्षित है।

(१३) चिरायता, कुटकी, निशोथ, नेत्रबाला, पीपल, वायविडङ्ग सोंठ, कड़वी तूम्बी और हरड़—इनका काढ़ा सब तरहके ज्वरोंको नाश करता है और जठराग्निको बढ़ाता है। परीक्षित है।

(१४) कचूर, सोंठ पित्तपापड़ा, देवदारू, जवासा, भटकटैया, मोथा, कुटकी और चिरायता—इन ९ दवाओंके काढ़ेको, शहद और

पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सन्निपात, विषमज्वर और जीर्ण ज्वर भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) चौलाईकी जड सिरमें बाँधनेसे विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

> क्षणमपि चलता जहीहि मुग्धे शृणु वचनं मम तन्वि सावधाना ॥
> वसति शिरसि मेघनादमूले व्रजन्तितरा विषमो विलासदृष्टे ॥ ६६ ॥

हे यौवनावस्थामें कदम रखनेवाली नाजनी। उछल कूद छोड कर मेरी बात ध्यान लगाकर सुन। चौलाईकी जड सिरमें बाँधने से विषमज्वर शीघ्र ही भाग जाता है।

(१६) उत्तम गिलोयका कपडेमें छना हुआ चूर्ण १०० तोले, गुड १६ तोले, शहद १६ तोले, घी १६ तोले—इन सबको एक जगह मिलाकर लड्डू बना लो। अपनी अग्निके बलाबलका विचार करके इसको खाओ। हितकारी और हलका तथा परिमित भोजन करो। इसके सेवन करनेवाले को कोई रोग नहीं होता, न बुढापा आता है, न बाल सफेद होते हैं। इसके खानेवालेको विषमज्वर, मोह, वातरक्त और नेत्ररोग कभी नहीं होते। यह परमोत्तम रसायन, मेधाजनक और त्रिदोषनाशक है। इसके सेवन करनेवाला सौ बरससे अधिक जीता है और देवके समान बली रहता है। इसका नाम "गुडूची मोदक" है। इसके सेवन करनेसे पाँचों प्रकारके विषमज्वर नाश होते हैं।

नोट—हमारी रायमें घी २० तोले लेना अच्छा होगा। इसको "अमृत रस" भी कहते हैं। यह नुसखा परमोत्तम है। इसके सेवनसे विषमज्वर, प्रमेह, वात रक्त और नेत्ररोगमें निश्चयही लाभ होता है। वास्तवमें यह अमृत ही है।

(१७) गिलोय, कुटकी, नीमकी छाल, धनिया, पटोलपत्र, पित्तपापडा, सनाय और बडी हरड—इन सब दवाओंको चार चार मासे लेकर, सबको एकत्र कूटकर, आधा सेर जलमें पकाओ।

जब आधापाव जल रह जाय, उतार कर छानलो। इस काढे को निवाया-निवाया, दो दो घण्टेमें, ३ वार, सेवन करनेसे सब तरहके विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर पित्तका जोर जियादा हो, तो इस काढे मे ४ माशे लालचन्दन मिला देना। अगर खाँसी हो, तो ४ माशे कटेरी मिला देना। अगर कब्ज हो, तो हरड औरभी बढा देना। छोटे बालकोंको अवस्थानुसार कम मात्रा देना। यह नुसखा एक वैद्यराजने परीक्षा करके लिखा है।

(१८) पीपल, मिश्री, शहद, औटा हुआ दूध और नौनी घी—इन सब को कलछीसे मिलाकर पीनेसे विषमज्वर नाश हो जाता है।

नोट—दूधके शीतल होने पर शहद मिलाना चाहिये, गरममे न मिलाना चाहिये तथा घी और शहद बराबर न लेना चाहिये।

(१९) घी, दूध, मिश्री, पीपल और शहद—इनको एकमें मिलाकर सेवन करनेसे विषमज्वर दूर हो जाता है। इस नुसखेका नाम "पञ्चसार" है। इससे क्षतक्षीण, क्षय, खाँसी और हृदय-रोगमें बहुत लाभ होता है। पुराने ज्वरमें यह अच्छा काम करता है। परीक्षित है।

नोट—शहद १ भाग, घी दो भाग, पीपल ४ भाग, मिश्री ८ भाग और दूध ३२ भाग—इस हिसाब से इन दोनों (नं १८ और १९) नुसखों में ये सब पदार्थ लेने चाहिये। जिनको कच्चा दूध माफिक न हो, उन्हे दूध औटा लेना चाहिये, परन्तु औटते या गरम दूध मे शहद न मिलाना चाहिये। कच्चा दूध सदा 'धारोष्ण' यानी थनों से निकलते ही, तत्काल, बिना हवा लगे पीना चाहिये। धारोष्ण दूध बलकारक, हलका, शीतल, अमृत के समान, अग्नि-दीपक और त्रिदोषनाशक है। अगर दूध दुहने के बाद शीतल हो गया हो, तो उसे आग पर गरम करके काम मे लाना चाहिये। गाय का दूध धारोष्ण और भैंस का दूध दुहकर शीतल हो जाय, तब काम में लाना चाहिये। गाय और भैंस के दूधके सिवाय और सब दूध कच्चे नुकसानमन्द होते हैं। गरम किया हुआ दूध कफ तथा वातनाशक होता है और गरम करके शीतल किया हुआ पित्तनाशक होता है। दूध में आधा जल डाल कर औटाया हुआ और पानी पानी जल जाने पर शेष रहा दूध कच्चे दूध से भी अधिक हलका होता है।

(२०) "सुश्रुत"में लिखा है,—घी, दूध, मिश्री और शहतके साथ, यथा — बल, पीपल सेवन करनेसे विषमज्वर जाते हैं। अथवा दश मूलके काढ़ेमें पीपल मिलाकर पीनेसे भी विषमज्वर नाश होते हैं। मुर्गेके मासके साथ उत्तम मदिरा (शराब) पीनेसे भी विषम ज्वर जाते हैं। वर्द्धमान पीपलोंका सेवन करने और दूध शोरवा खानेसे भी विषमज्वर जाते हैं।

लोलिम्बराज महाशय कहते हैं :—

भवति विषमहन्त्री चेतकी क्षौद्रयुक्ता
भवति विषमहन्त्री पिप्पलीवर्द्धमाना ॥
विषमरजमजाजी हन्ति युक्ता गुडेन
प्रशमयति तथोग्रा सेव्यमाना गुडेन ॥

शहतमें "हरड़का चूर्ण" मिलाकर चाटनेसे अथवा "वर्द्धमान पिप्पली" सेवन करनेसे अथवा हरड़, जीरा और अजवायनका चूर्ण सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—हमने वर्द्धमान पीपलको जीर्णज्वर पर रामबाणके समान फलदायी देखा है। वर्द्धमान पीपल सेवन करनेकी विधि हमने आगे जीर्णज्वर की चिकित्सामें लिखी है, वहीं देख लेनी चाहिये।

(२१) धनियाँ, लौंग, निशोथ और सोंठ—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे अग्निमान्द्य, श्वास, अजीर्ण और विषमज्वर नाश हो जाते हैं। उत्तम नुसखा है।

(२२) हरी चाय, सोंठ और मिश्रीका काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग जल रहनेपर उतार लो। मलछान कर पीजाओ और ओढ़कर सोजाओ। इसके पीनेसे पसीने आकर सरदी निकल जाती है और शरीरमें फुरती आ जाती है। यह काढ़ा गरम है। अगर मातदिल करना हो, तो इसमें दूध मिला देना चाहिये।

(२३) छुहारेकी गुठली और औंगेकी जडको शीतल जलमें चन्दनकी तरह घिस लो। पीछे खानेके पानमें—इसमेंसे ४ रत्ती लगाकर ऊपरसे लौंग, सुपारी इलायची और कत्था वगैर॰ रखकर ऐसे ही तीन पान तैयार करो। ज्वर आनेके टाइमसे डेढ घण्टे पहले—आधे आधे घण्टेके अन्तरसे—एक एक करके तीनों पान खा जाओ। इस तरह ३ दिन तक, हर रोज तीन तीन पान खानेसे इकतरा आदि शीतज्वर भाग जाते हैं।

(२४) कडवे नीमके पत्ते ४० तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, हरड, ४ तोले, बहेडा ४ तोले, आमले ४ तोले सेंधानोन ४ तोले, विरिया नोन ४ तोले, बिडनोन ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जीखार ४ तोले और अजवाइन २॰ तोले —इनका चूर्ण बनाकर, रोज सवेरे सेवन करनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं।

नोट—सफेद कनेरकी जड रविवारको कानपर बाँधनेसे सभी विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२५) पटोलपत्र, इन्द्रजौ, देवदारु, त्रिफला, नागरमोथा, दाख, मुलेठी, गिलोय और वासा – इनका काढा बनाकर और शीतल होनेपर शहद मिलाकर पीनेसे नवीन ज्वर विषमज्वर प्रभृति सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह काढा सभी तरहके ज्वरोंको आराम करता है, विशेषकर सब तरहके विषम ज्वरों पर तो रामबाण ही है। परीक्षित है।

विषमज्वर नाशक
धूप, नस्य, यन्त्रमन्त्र और टोटके प्रभृति।

---

(१) सेंधानोन, पीपलके चाँवल और मैनसिल—इनको एकत्र तेलमें पीसकर आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(२) नीमके पत्ते, वच, कूट, हरड, सफेद सरसों और गूगल—इन सबको एकत्र पीसकर, घीमें मिलाकर धूप देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(३) बिलावकी विष्ठाकी धूनी देनेसे विषमज्वरमें काँपना दूर हो जाता है।

(४) सहदेई, वच, अपराजिता और नाई—इनकी शरीरमें धूप देनेसे अथवा इनका उबटन करनेसे सब तरहके ज्वर शान्त हो जाते हैं।

(५) मोरकी पूँछके चँदोवेकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर और ग्रह बाधा दूर होती है।

(६) गूगल, वच, कूट, नीमके पत्ते, जौ, घी, हरड और सफेद सरसों—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं।

(७) गूगल, रोहिषतृण, वच, राल, नीमके पत्ते, आकके पत्ते, अगर और देवदारू—इनकी धूप देनेसे सब तरहके ज्वर आराम होते हैं। इसका नाम "अपराजिता" धूप है।

(८) इन्द्रजटा, गायका सींग, बिलावकी विष्ठा, साँपकी काँचली, मैनसिल, भूतकेशी, बाँसकी छाल, शिव्का निर्माल्य, घी, जौ, मोरकीचाँद, बकरेके रोम, सरसों,वच हींग, गोरोचन और काली मिर्च—इनको बराबर बराबर लेकर, बकरेके मूतमें पीस कर, विधि सहित धूप देनेसे सब तरहके ज्वर, डाकिनी, पिशाच, प्रेत आदि बाधा दूर होती हैं। इसको "महेश्वर धूप" कहते हैं।

(९) नीमके पत्ते आँवला, वच, इन्द्रजौ, घी और लाख—इनकी धूप ज्वर को हरती है।

अयि कुशाग्रसमानमते मते मतिमतामतिमन्मथमंथरे॥
ज्वरहरं रगरिष्टशिवाचचायवदविर्जतुसर्षपधूपनम्॥ ७२॥

हे कुशाग्र बुद्धिवाली! हे पण्डितोंसे मान पाने योग्य! हे काम देवके जोरके मारे धीरे-धीरे चलनेवाली! कड़वे नीमके पत्ते, आँवला, वच, इन्द्रजौ, घी, लाख और सफेद सरसों—इन सबको एकत्र करके, इनकी धूप देनेसे ज्वर भाग जाते हैं।

(१०) वच, हरड़ और घी,—इन तीनोंको आगपर डालकर, धूआँ देनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(११) "सुश्रुत"में लिखा है,—बकरी और भेड़का चमड़ा और उनके रोएँ वच, कूट, लाख या गूगल तथा नीमके पत्ते—इनमें शहद मिलाकर रोगीको धूनी देनेसे विषमज्वर और जीर्णज्वर नाश हो जाते हैं। अगर कम्प भी हो, तो बिलावकी विष्ठाकी धूनी देनी चाहिये।

(१२) पीपल, सेंधानोन, तेल और मैनसिल—इनको घिसकर आँखोंमें आँजनेसे विषमज्वर नाश हो जाते हैं।

(१३) जिस समय ज्वर चढ़नेवाला हो, उस समय रोगीको विषरहित साँपोंसे या पालतू हाथियोंसे या बनावटी तस्करोंसे डराना चाहिये और उस दिन खानेको न देना चाहिये।—सुश्रुत।

किन्तु घोर सन्निपातमें, जब किसी तरह आराम होनेकी उम्मीद न रहे, रोगीको साँपसे कटवानेकी विधि है। कहा है —

कालीयकं गदद्वयान्ययोश्च प्रकोष्टयो।
गूहस्थाने च तयोश्च सन्निपात निवृत्तये॥

सन्निपातकी निवृत्तिके लिये साँपसे कटाना चाहिये तथा कलाई, कनपटी और बीच मस्तकमें दाग देना चाहिये।

(१४) हीरा, पन्ना आदि रत्न, मंगलीक द्रव्य, सींगिया विष प्रभृति धारण करनेसे भी विषमज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(१५) एक मकड़ी, आधी कालीमिर्च और जरासी हींग—इन तीनोंको

पानीमे पीसकर आँखमें आँज दो, जूडीज्वर भाग जायगा। जादू है।

(१६) उल्लूका पंख और गूगल, काले कपडेमें लपेटकर यानी बत्तीसी बनाकर, घीमें तर करलो और उसे जलाकर काजल पाड लो। इस काजलके आँखोंमें लगानेसे चौथैया ज्वर भाग जाता है। इसका अजीब असर होता है। सच पूछो तो जादू है।

(१७) सफेद धतूरा, रविवारको उखाडकर, दाहिने हाथमें बाँधो। एकही दिनमें पारीका शीतज्वर भाग जायगा।

(१८) करंजुवेकी गिरी पानीमें पीसकर, नाकमें टपकानेसे जुडीज्वरसे छुटकारा हो जाता है। करंजुवेकी ३ कोंपल और २ काली मिर्च जलमें पीसकर पिलानेसे भी लाभ होता है।

(१९) आककी जड २ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इनको बकरी के दूधमें पीसकर, चने-बराबर गोलियाँ बनालो। ज्वरकी पारीसे पहले १ गोली खिलाओ। इससे भी जाडेका ज्वर काफूर हो जाता है।

(२०) आकके पीले पीले पत्ते लाकर, उनको कोयलोंकी आगपर रखकर, उनकी राख करलो। उस राखमेंसे ४ रत्ती राख शहतमें मिलाकर सवेरे चाटो। इस उपायसे भी जाडेका ज्वर चला जाता है।

विषमज्वरनाशक मंत्र।

(२०) ओं ह्रां ह्रीं क्रीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्यपुत्रायामिततेजसे एकाहिक द्व्याहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृति ज्वराणां दह दह पच पच भञ्ज भञ्ज वानरराज ज्वराणां बन्धबन्ध ह्रां ह्रीं हूं फट् स्वाहा। नास्तिज्वर॰। ज्वरापगमनसमर्थज्वरस्त्रास्यते॥ इस मन्त्रसे विषमज्वर दूर होता है ——हारीत।

खड़ियासे बन्दरकी शकल बनाकर, गन्ध, पुष्प और चाँवलों से वैद्यवर पूजा करते हैं। सुग्रीव नामक बन्दरोंके राजाका दिव्य मुख देखनेसे घोर एकाहिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

(२१) पार्वती, नन्दी आदि गण और मातृगण सहित श्रीसदाशिव की पूजन करनेसे विषमज्वर नाश होते हैं। महाभारतके तेरहवें—अनुशासन पर्व्वमें कही—विष्णुभगवान्‌की स्तोत्रसे स्तुति करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट होते हैं। माता पिता गुरु आदि के पूजन, महात्माओंके दर्शन, तप, सत्य, जप, होमदान और ब्रह्मचर्य्यव्रत पालन आदिसे भी विषमज्वर चले जाते हैं।

(२२) निर्गुण्डी यानी सम्हालूके पत्तोंमें ज्वर नाश करनेकी अपूर्व शक्ति है। निर्गुण्डीके ६ माशे हरे पत्ते लेकर, हाथसे खूब मलकर, एक मलमलके कपड़ेमें बाँधकर, पोटलीसी बना लो। ज्वर चढ़नेसे चार पाँच घण्टे पहले इसको बारम्बार सूँघो और इसके रसकी ३।४ बूँद नाकमें टपकाकर, नस्यकी तरह ऊपर चढ़ाओ। इस उपायसे आश्चर्यजनक फल होता है। इसका मलेरिया या विषमज्वर पर कुनैनके समान फल होता है। वैद्यराज पं० नाथूरामजी शर्म्मा "वैद्य" मुरादाबादमें लिखते हैं — यह हमारा बीसों बारका आजमाया हुआ है।

एक और वैद्य महाशय भी लिखते हैं —"सम्हालूके पत्तोंका स्वरस, कपड़ेमें निचोड़ कर, उसकी नस्य लेनेसे ज्वरका वेग रुकता है।"

(२३) ज्वरके चढ़नेसे तीन चार घण्टे पहले, तुलसीके पत्तोंका रस सूँघनेसे और उसे हाथ पैरके नाखूनों पर लगानेसे ज्वरका रुकता है।

(२४) ज्वरके चढ़नेके समय, ज्वरकी याद करनेसे जिसका ज्वर है, उसको [illegible] पदार्थों से या अद्भुत बातोंसे भुलाकर देना चाहिये। रोगीका ध्यान बटाने, ज्वर आनेकी

देनेसे—याद आनेसे चढनेवाला ज्वर, निश्चयही, नाश हो जाता है। हमने कितनीही वार परीक्षा की है। "चरक"में लिखा है,—हम को अमुक समय ज्वर आवेगा, इसी जगह हमारे ज्वर आनेका समय हो गया इत्यादि प्रकारसे ज्वरका समय और स्थानकी चिन्ता करनेसे जिसको ज्वर आ जाता हो, उसके चित्त-को अभीष्ट चित्र विचित्र विषयों—क़िस्से-कहानियो में भुलावा देकर, वक्त को निकाल देनेसे ज्वर नही आता।

सन्तत ज्वरनाशक नुसख़े ।



(हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वरके लिये)

(१) त्रायमाण सारिवा, जवासा और कुटकी—इनका काढा सन्तत ज्वरमें वातादि दोषोंकी निवृत्तिके लिये हित है। परीक्षित है।

(२) त्रायमाण, कुटकी, अनन्तमूल और गौरीसर (सारिवा)—इनका काढा पीनेसे सन्तत-सततादि ज्वर और वातादि रोग दूर होते हैं।

(३) पटोलपत्र, नागरमोथा, वृहद्दन्ती (अभावमे दन्ती या जमाल गोटेकी जड), कुटकी और सारिवा—इनका काढा पीनेसे सन्तत ज्वर नाश होता है।

(४) कडवे परवलके पत्तोंका रस निकालकर, कलेजे पर और सारे शरीरपर मलनेसे सन्ततज्वर और शीतज्वरमे लाभ होता है। इसी तरह, कडवे करौंदेकी जड पानीमें घिसकर शरीरपर लगा नेसे भी विषमज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह ज्वर बहुत जहरीला होता है। इसमे आरम्भमें लंघन कराने चाहियें, दवा या अन्न न देना चाहिये। इसमें सन्निपात

होनेका बहुत डर रहता है, इसलिये दवा और पथ्य खूब सोच समझ कर देना चाहिये। पुराना पड़नेपर हलका जुलाब देना हित है। मुनक्केके साथ सत गिलोय देना अच्छा उपाय है। मुनक्के सेककर और कालीमिर्च नमक लगाकर देना भी अच्छा है। भूखमें मूँगका यूष देना चाहिये।

हिकमतसे

सन्ततज्वर या दायमी तापका इलाज।

—*—

(१) मुनक्का और सत्त गिलोय मिलाकर दो।

(२) गुलकन्द और सौंफ मिलाकर सवेरे शाम दो।

(३) गुलकन्द अनीसूँ, मस्तगी—तीनों ६।६ माशे मिलाकर रोगीको खिलाओ। उत्तम दवा है।

(४) शर्बत गावजवान भी इस ज्वरमें अच्छा है।

सततज्वरनाशक नुसखे।

—*—

(दिनरातमें दो बार चढ़नेवाले ज्वरके लिये)

(१) परवल, हरड़, नीम, इन्द्रजौ, गिलोय और जवासा—इनका काढ़ा खाँसी प्रभृति युक्त सततज्वरको नाश करता है। परीक्षित है।

(२) परवल (पटोलपत्र), इन्द्रजौ, अनन्तमूल, हरड़ नीम, गिलोय और सुगन्धवाला—इनका काढ़ा पीनेसे सततज्वर नष्ट होता है।

(३) कुटकी खस खिरेंटी, धनिया, पित्तपापड़ा और नागरमोथा—इन औषधियोंका काढ़ा उस ज्वरको शीघ्र नष्ट करता है, जो एक दिनमें दो बार आता है। परीक्षित है।

(४) ज्वर उतर आनेकी हालतमें, ज्वर आनेसे पहले दो दो घण्टोंपर "महाज्वरांकुश बटी" ताजा जलसे निगलवा देनेसे, एकही पारीमें या २।३ पारीमें, यह ज्वर तथा एकाहिक, अन्येद्युः, तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर निश्चयही चले जाते हैं। देखो पृष्ठ १५८ १६१।

अन्येद्युः ज्वरनाशक नुसखे।



(रोज रोज आनेवाले ज्वरके लिये)

(१) दाख, परवल, नीमकी छाल, नागरमोथा, इन्द्रजौ और त्रिफला,—इनका काढा, शीतल करके, सवेरेही पीनेसे, अन्येद्यु ज्वर (दिनरातमें एकबार चढनेवाला) आराम होता है। इस ज्वरके लिये यह काढ़ा परमोत्तम है। परीक्षित है।

(२) पटोलपत्र, नीमकी छाल, दाख, अमलताश, त्रिफला और अडूसा, इनके काढेमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है। परीक्षित है।

(३) पीपल, आमले, हींग, दारूहल्दी, वच, राई और लहसन—इनको एकत्र बकरीके दूधमें पीसकर, नस्य लेनेसे एकाहिक ज्वर नाश होता है। परीक्षित है।

(४) सरस्वती नदीके तीर पर जो पुत्रहीन तपस्वी मरा, उसके लिये तिलाञ्जलि देनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है। अथवा "योऽसौ सरस्वती तीरे" इत्यादि इस मन्त्रसे हाथमें पीपलका पत्ता लेकर तर्पण करना चाहिये।

(५) मकडीके जालेको जलाकर, काजल बनाकर आँजनेसे द्व्याहिक ज्वर दूर हो जाता है।

(६) काकजंघा (चकसेनी या मसी), नरियारा, काली तुलसी, अपामार्ग या चिरचिरा, पिठवन (पृष्टिपर्णी) और भाँगरा—इनमेंसे किसी

पक्र को, पुष्यनक्षत्रमे, पवित्र होकर उखाड लाओ। इनकी जडको लाल धागेमें लपेट कर हाथ या गलेमे बाँध दो। इस उपायसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(७) उल्लूके दाहनो तरफके परको सफेद सूतमें बाधकर, कानमें बाँधनेसे एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

(८) केंकडेके बिलकी मिट्टीका तिलक करनेसे भी एकाहिक ज्वर भाग जाता है।

तृतीयक और चातुर्थिक ज्वर नाशक नुसखे।



नियम – तिजारी और चौथैयामें वैद्यको पहले वमन और विरेचन साधारण कर्म कराकर, पीछे विशेष चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) खस, लालचन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनिया और सोंठ,— इनके काढेमें मिश्री और शहद डालकर पीनेसे प्यास और दाहयुक्त तृतीयक ज्वर (तिजारी) नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—लोलिम्बराज महोदय "गिलोय" के स्थानमें 'पीपल' लिखते हैं।

(२) रविवारके दिन, चिरचिरेकी जडको सात लाल धागोंमें लपेट कर, कमरमें बाँधनेसे तृतीयक ज्वर (तिजारी) नष्ट हो जाता है।

(३) शालिपर्णी आमला, देवदारू, हरड, अडूसा और सोंठ—इनका काढा बनाकर और उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे चौथैया ज्वर नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(४) अगस्तके पत्तोंके स्वरसकी नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है। परीक्षित है*।

नोट—इस रसके नाकमें डालनेसे आधाशीशीका दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सिरसके फूल, हल्दी और दारुहल्दी—इनके कल्कमें घी मिला कर नास देनेसे घोर चौथैया ज्वर नाश होता है।

(६) हींगको पुराने घीमें पीसकर नास देनेसे चौथैया नाश हो जाता है*। परीक्षित है।

(७) बेलका गूदा और मधुमाधवीके चूर्णको, सफेद और तरुण बछडेवाली गायके दूधके साथ, रविवारके दिन अथवा पारीके दिन, पीनेसे बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(८) सहदेवीकी जड़को विधिपूर्व्वक कण्ठमें बाँधनेसे, एकाहिक, द्वाहिक, त्राहिक और चातुर्थिक ज्वर दूर हो जाते हैं।

नोट—रविवारको हाथ या गलेमें बाधनेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(६) सफेद चिरचिरेकी जड़को, दूधके साथ, पीनेसे अथवा पानमें रखकर खानेसे बहुत दिनोंका चौथैया नष्ट हो जाता है।

(१०) अश्मन्तक वृक्षके एक हजार पत्तोंको, घीमें चुपड़कर, जलमें पीसकर पीनेसे चौथैया और तिजारी नाश हो जाते हैं।

लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं —

अखण्डित शरत्काल कलानिधि समानने।
चातुर्थिकहर नस्य मुनिद्रुमदलाम्बुना॥

हे शरत्कालके पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली! अगस्त वृक्षके पत्तोंका स्वाभाविक (बिना जल मिलाया) रस सूँघनेसे चौथैया नाश हो जाता है।

* चातुर्थिको नश्यति रामठस्य घृतेन जीर्णेन युतस्य नस्यात्।
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकनादिव साधुभाव॥

पुराने घीमें मिली हुई हींगके सूँघनेसे चौथैया इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह क्रीडा करनेवाली नवयौवना स्त्रियोंके मुख देखनेसे साधुजनोंकी सज्जनता नष्ट हो जाती है। (एक वर्ष का घी पुराना होता है)।

(११) कुमारीके काते हुए सूतसे, रविवारके दिन, चिरचिरेकी जड रोगीके हाथमें बाँधनेसे चौथैया नहो आता। परीक्षित है।

(१२) रविवारको चिरचिरेकी पत्ती लाकर और पीसकर गुडमें मिला कर गोली बनालो। ज्वर चढनेसे पहले १ गोली खाओ। इस उपायसे एक या दो पारीमें चौथैया भाग जायगा। परीक्षित है।

(१३) बराही बेलकी टहनी या जड, पचरङ्गे सूतसे भुजामें या गलेमें बाँधनेसे तिजारी चला आता है।

(१४) गिलोय, आमले और नागरमोथेका काढा पीनेसे चौथैया चला जाता है।

नोट—लगातार कुछ दिन पीनेसे जाता है, जल्दबाजीमे नहीं जाता। परीक्षित है।

(१५) कानका मैल निकालकर, रूईमें लपेट कर, बत्ती बनालो। एक मिट्टीके दीपकमें काले तिलोका तेल भरकर, उसमें उस बत्ती को रखकर, दीपकको जला लो और काजल पार लो। उस काजलके आँखोंमें आँजनेसे तिजारी भाग जाता है। परीक्षित है।

(१६) नौसादर ३ रत्ती और कालीमिर्च २ दाने—कूटपीसकर, पारीके दिन खिलानेसे चौथैया चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—नौसादर को कालीमिर्चके साथ सेवन करनेसे ज्वर अवश्य रुक जाता है। यह पसीना और पेशाब लानेवाली है। दो दो रत्ती नौसादर दिनमें दो तीन बार खानेसे तिल्ली गल जाती है। यकृतकी सूजन और दर्दमें भी यह बडी उत्तम है। दस्त भी खुलासा लाती है। बवासीरकी भयंकर पीडा इसके खानेसे मिट जाती है। शीतल जलमें मिलाकर, इसका लेप करनेसे जमा हुआ खून पिघलकर सूजन नाश होजाती है। स्त्रियोंके स्तनोंकी सूजन और बालकके फोते बडे हो जाने, लाल होजाने और पीडा होनेपर, इसको शीतल जलमें घोलकर लेप करनेसे अवश्य लाभ होता है। इसकी मात्रा १०।१५ रत्ती तक है।

(१७) कलौंजी ४ माशे महीन करके, शहदमें मिलाकर खिलानेसे चौथैया चला जाता है। जिस दिन पारी हो, उस दिनसे ४ दिन तक बराबर खिलानी चाहिये।

(१८ कुछ धतूरेके पत्ते, पानके पत्ते और २॥ कालीमिर्च—इनको पीसकर कालीमिर्चकी बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक एक गोली गरम जलके साथ खिलानेसे चौथैया चला जाता है।

(१६) समन्दरफलकी गिरी, कालीमिर्च और तुलसीके सूखे पत्ते—इनको बराबर बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णकी मात्रा आध माशेसे दो माशे तक है। रोगीके मिजाज और उम्रका ख़याल करके मात्रा देनी चाहिये। चौथैया आनेके समयसे आध घण्टे पहले, एक ख़ूराक चूर्ण जलके साथ खिलादो।

(२०) कञ्जेके फलोंकी मींगी और कालीमिर्च—दोनों बराबर बराबर लेकर, महीन कूट पीसकर चूर्ण बना लो। १ माशेसे दो माशे तक इसकी मात्रा है। इसके खिलानेसे पारीसे आनेवाले तिजारी चौथैया आराम हो जाते है। ज्वर छूट जानेपर, ताकत लानेके लिये, ३ रत्तीसे ६ रत्ती तक खिलाना चाहिये। गर्भवती स्त्रियोंको यह दवा न देनी चाहिये। बड़ी अच्छी दवा है। परीक्षित है।

नोट—नीबूके रसमें इस चूर्णकी गोलियाँ बनाकर खिलानेसे भी तिजारी चौथैया आराम हो जाते हैं। पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहलेही, चूर्ण या गोली देना।

(२१) अतीसकी जड़को महीन पीसकर चूर्ण कर लो। १॥-१॥ माशे या दो दो माशे यही चूर्ण, जिस दिन ज्वर आनेकी बारी न हो उस दिन, ४ बार तीन-तीन घण्टे पर खिलानेसे तिजारी चौथैया आदि बारीके ज्वर रुक जाते हैं। ज्वर आराम हो

जानेपर, ताक़त लानेके लिये तीन या चार रत्ती यही चूर्ण रोज़ खिलाना चाहिये। गर्भवतीको यह चूर्ण भी न देना चाहिये।

कोई कोई लिखते हैं,—और ज्वरनाशक दवाएँ गर्भवतीको गरमी करती हैं, पर "अतीस" बुखारको नाशकर देता है। इससे गर्भवतीका ज्वर, अतिसार और मन्दाग्नि आदि आराम होजाते हैं। बालकोंकी तो यह दवाही है, इसोसे इसे "शिशुभैषज्य" कहते हैं। अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंघी और पोपलका चूर्ण शहदमें चाटनेसे बालकोंके ज्वर, अतिसार, खाँसी और वमन अवश्य आराम हो जाते हैं। ज्वर चढ़नेके तीन चार घण्टे पहले, डेढ़ या दो माशे अतीस सेवन करनेसे ज्वर रुक जाता है। यह चढ़े ज्वरमें देदेने से भी कुनैनकी तरह हानि नहीं करता।

(२) पोस्त खशखाश जितनेकी ज़रूरत हो उतना ले लो। इसमें दस कालीमिच मिलाकर और काढ़ा बनाकर पिलानेसे कई दिनमें चौथैया चला जाता है।

(२३) काबुली हरड़का बकल ३ तोले, कसौतके बीज १०॥ माशे, कासनीके बीज १०॥ माशे, आलूबुखारा २० दाना, उन्नाब विलायती २० दाना, सौंफकी जड़की छाल ७ माशे और शाहतरा २ तोले—इन सबका काढ़ा बनाओ और चौथाई जल रहनेपर उतारकर छान लो। पीछे इस काढ़ेमें अमलताशका गूदा ४ तोले ४॥ माशे और माजून जर्द ४ तोले ४॥ माशे मिलाकर, फिर मलकर छान लो। इस काढ़ेके कई दिन तक पीनेसे चौथैया चला जाता है। अमीरी नुसखा है।

(२४) फिटकरीको भूनकर और उसके बराबर मिश्री मिलाकर, आधे माशेसे दो माशे तक खिलानेसे तिजारी ज्वर चला जाता है।

यह नुसख़ा परीक्षित है। जिसे खाँसी हो, उसे न देना चाहिये ।

(२५) अफीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और बबूलका कोयला ६ माशे—इन सबको महीन पीसकर, एक माशे या कम जियादा चूर्ण, ज्वर आनेसे डेढ दो घण्टे पहले, खिलानेसे तिजारी ज्वर भाग जाता है। खानेको दवा खानेसे ६।७ घण्टे बाद देना चाहिये। यह नुसख़ा परीक्षित है ।

(२६) गिलोय धनिया, लालचन्दन, कमलगट्टेकी मींगी (हरी पत्ती निकाल फेंकना) प्रत्येक पाँच पाँच माशे लेकर, तीन पाव जल में काढा करो। जब आधा पाव जल बाकी रहे मल छान कर, उसमें २ तोला शर्बत नीलोफर मिलाकर पिला दो। इस यूनानी नुसखेके कई दिन पिलानेसे, सुखसे तिजारी ज्वर चला जाता है। परीक्षित है।

(२७) नीलोफर १ तोला और खूबकला ६ माशे—डेढपाव जलमें औटा कर काढा बनाओ। जब आधापाव पानी शेष रहे, तब मल छानकर और मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसखे से भी तिजारी चला जाता है। परीक्षित है।

(२८) पुराने बोरेका राख शहतमे या घीमें मिलाकर चटानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया तथा दिनमें दो बार आनेवाले ज्वर भाग जाते हैं। परीक्षित हैं ।

(२९) सफेद चम्पेकी कली डण्ठल समेत पानमें रखकर, ज्वर आनेसे पहले, आध आध घण्टेमें ३ बार खानेसे इकतरा, तिजारी और चौथैया ज्वर नाश हो जाते हैं ।

(३०) भाँग और गुडकी बेरके बराबर गोली बनाकर, ज्वर चढनेसे दो घण्टे पहले खानेसे चौथैया नष्ट हो जाता है ।

शीतज्वर नाशक नुसखे ।

—*:*:*—

(१) इन्द्रजौ, पँवारके बीज, अडूसा, गिलोय, सम्हालू, भृङ्गराज, सोंठ, भटकटैया और अजवायन—इन ९ औषधियोंका काढ़ा शीतज्वर रूपी वनके लिये अग्निके तुल्य है, यानी यह शीतज्वरको नष्ट करता है।

(२) हरताल और सीपका चूर्ण नौ नौ भाग और नीलाथोथा १ भाग लेकर, तीनोंको खरलमें डालकर, घीग्वारके रसमें खरल करो। जब सूख जाय, तब आरने उपलोंके गजपुटमें रखकर पकाओ। पकनेके बाद जब खूब शीतल हो जाय, पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णका नाम "भूतभैरव चूर्ण" है। इसमें से आधी रत्ती चूर्ण सफेद खाँडके साथ मिलाकर, सवेरेके समय, सेवन करनेसे शीतज्वर नाश हो जाता है। इस रसके खानेसे किसी मनुष्यको वमन होती है और किसीको नहीं भी होती है। यह रस एक दिनमें ही शीतज्वरको अवश्य नष्ट करता है। इसके ऊपर दोपहरके समय शिखरन और भातका पथ्य देना चाहिये।

नोट—इसीको 'शीतभञ्जीरस' भी कहते हैं। हरताल प्रभृति को शोध लेना।

(३) शुद्धपारा ३ माशे, शुद्ध आमलासार गंधक ३ माशे, शुद्ध विष ३ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ६ माशे और चूक ३६ माशे—सबको महीन घोटकर, मोटी सरसोंके बराबर गोलियाँ बना लो। अगर चूक सूखा हो, तो जँभीरी नीबूके रसमें गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंका नाम "महाज्वराङ्कुश वटी" है। ज्वर आनेके समयसे ६ घण्टे पहले, या १२ घण्टे पहले, दो दो घण्टेपर एक एक गोली शीतल जलके साथ निगलनेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया प्रभृति सब तरहके जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर निश्चय ही आराम हो जाते हैं। चढ़े बुखारमें तथा जिन बुखारोंमें जाड़ा न

लगता हो, उनमें ये गोलियाँ न देनी चाहियें । शीतपूर्व्वक ज्वरोंके लिये ये गोलियाँ काल हैं । इनके सम्बन्धमें हमने अनेक बातें पीछे पृष्ठ १५८—१६१ मे लिखी हैं । यह हमारा सैकडो बार का परीक्षित नुसखा है , कभी फेल नही होता । पारीके दिन, ज्वर आनेसे पहले, ६ गोलियाँ पेटमें पहुँच जानेसे निश्चय ही एकही पारीमें शीतज्वर भाग जाता है । अगर ज्वरमें जहर जियादा होता है, तो दो पारीमे तो ज्वर उडही जाता है ।

(४) पाढकी जडका काढा कालीमिर्च मिलाकर पिलानेसे शीतज्वर नाश हो जाता है ।

(५) शतावर और जीरा—इन दोनोंको ६।६ माशे लेकर, पीसकर चूर्ण कर लो । इस चूर्णको छटाँक भर जलमें घोलकर पीनेसे जाड़ेका बुखार चला जाता है ।

(६) तीन माशे खुरासानी अजवायन और ६ माशे मुलहटीका काढा पिलानेसे पारीका ज्वर चला जाता है ।

(७) शोधा हुआ कुचला ३ भाग और लौंग १ भाग—इनको अदरखके रसमें घोटकर रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो । हर बार एक गोली शहतमें मिलाकर देनेसे शीतज्वर, आम मरोडी और संग्रहणीमें लाभ होता है । परीक्षित है ।

नोट—ज्वर चढनेसे पहले १।१ गोली तीन-तीन घण्टे पर देनेसे अच्छा फल होगा । १ दिनमें दो गोलीसे जियादा न देनी चाहिये ।

(८) कुचलेके शोधे हुए बीजोंका चूर्ण १ रत्ती या २ रत्ती, शहतमें मिला कर चटानेसे शीतज्वर और प्रसूतिका रोगमें लाभ होता है । परीक्षित है ।

(९) अफीम १ रत्ती और नीमके पत्ते अढाई—इन दोनोंको खूब पीस कर, गुडमें मिलाकर, चने बराबर गोलयाँ बना लो । जूडी आने से ३ घडी या सवा घण्टे पहले १ गोली निगलवा दीजिये ।

ज्वर शुरू होनेको हो, उससे जरा पहले १ गोली फिर निगलवा दें। परमात्मा चाहेगा, तो तीसरी गोलीकी जरूरत ही न होगी और जूड़ी आराम हो जायगी।

(१०) हुलहुलके पत्ते, दाहिने हाथकी कलाईके जोड़पर, बाहरकी ओर रखकर, उसपर जरासी फिटकरीकी डली रखकर मजबूत बाँध दो। वहाँ एक फफोला पैदा होगा और बारीके दिन जूड़ी ज्वर न आवेगा।

(११) भुनी फिटकरी और मिश्री दोनों पीसकर रोगीको खिला दो। इससे जाड़ेका ज्वर आराम होता है। इसकी मात्रा ४ रत्तीसे २ माशे तक है। रोगीका बलाबल विचार कर मात्रा नियत करना। यह नुसखा जाड़ेका बुखार आराम करनेमें अच्छा है, पर छातीमें घाव या खाँसी हो, उसे न देना चाहिये।

(१२) तुलसीके पत्ते ६ माशे, कालीमिर्च ४ दाने और पीपल १ दाना —इन सबको पीसकर और एक तोला मिश्री मिलाकर पीनेसे जाड़ेका ज्वर बन्द हो जाता है। ४।५ दिन पीना चाहिये।

(१३) अफीम १ माशे, कालीमिर्च २ माशे और कीकरकी लकड़ीका कोयला ३ माशे—सबको पीसकर एक-दिल कर लो। रोगीके बलाबल और मिजाजको देखकर, एक माशे या कम जियादा ज्वर आनेके समयसे दो घण्टे पहले खिला दो। किन्तु निहार मुँह इस दवाको न देना, यानी कुछ हलकासा खाना खिला कर देना। अगर कोरे कलेजे दोगे तो कय हो जायगी। दवा खानेके ६।७ घण्टे बाद या जियादा देर बाद खानेको देना, इससे पहले न देना। परमात्मा चाहेगा, तो एकही मात्रामें काम हो जायगा, दूसरी खुराक न खिलानी पड़ेगी और ज्वर न आवेगा।

(१४) कुछ धतूरेके बीज एक कुल्हडे में भरकर, उसके मुँहपर एक मिट्टीका ढकना देकर बन्द कर दो। पीछे उस पर कपडा चढा चढाकर मुलतानी मिट्टी लगा दो—ऐसा बन्द करदो कि साँस न रहे। इसके बाद, उस कुल्हडेको तन्दूर या तेज भाडमें रख दो। कुछ देर बाद, कुल्हडेके लाल हो जानेपर निकाल लो। शीतल हो जानेपर उसे खोल डालो। भीतर जो राखसी निकले, उसमेंसे चार माशे या २ माशे राख पूरे जवानको खिला दो। बालकको २ या ४ रत्ती देना। इस उपाय से जाडेका ज्वर चला जाता है।

(१५) मकडीका एक सफेद जाला साफ करके, गुडमें लपेटकर, बारीसे पहले निगल जानेसे जाडा नही चढता और ज्वर दूर हो जाता है, पर ३ दिन तक खाना चाहिये।

(१६) आककी कली, जो खिली न हो, गुडमें लपेटकर और गोली बनाकर निगल जानेसे तीन दिनमें जूडी ज्वर चला जाता है।

(१७) धतूरा ४ तोले, रेवन्दचीनी २ तोले ८ माशे, सोंठ १६ माशे और बबूलका गोंद १६ माशे—इन सबको कूट छानकर चने-बराबर गोलियाँ बनालो। जाडा बुखार चढनेके पहले, बलाबल अनुसार १ या २ गोली खिलानेसे शीतज्वर जाता रहता है।

(१८) ज्वरोंकी बारी रोकनेके लिये जिस तरह करंजेका चूर्ण उत्तम है, उसी तरह रसौत भी उत्तम है। ज्वरकी बारी रोकनेके लिये २ माशे रसौत जलमें घोलकर, जिस दिन ज्वरकी बारी न हो उस दिन पिलाओ। इसी तरह दो दो माशे रसौत घोल घोलकर दिन में तीन चार बार पिलानी चाहिये। इस तरह २।३ दिन पिलानेसे ज्वर नाश हो जाता है। इसके पीनेसे आमाशयमें गरमी मालूम होती है, भूख बढती है और अजीर्ण नाश हो जाता है। यह नुसखा उत्तम है।

(१६) खस, लालचन्दन, धनिया, नरकचूर, सोंठ और गिलोय हरी —ये सब बीस बीस माशे लो। सबको अधकचरा करके ३ पुड़िया बनालो। एक पुड़ियाको आधसेर जलमें औटाओ, जब डेढ़ छटाँक जल रहजाय, मलछानकर पिला दो। इस काढ़ेसे जाड़ेका ज्वर आराम हो जाता है।

(२०) ककड़ी खाकर ऊपरसे खट्टी छाछ पीने और बिछौना बिछा कर धूपमें जा बैठनेसे या सेक करनेसे या बफारा लेनेसे शरीर से पसीना निकलेगा और शीतज्वर भाग जायगा। जब धूप न हो, तब सेक करनेकी जरूरत है, नहीं तो धूपमें बैठनेसेही काम हो जायगा।

(२१) करेलेके पत्तोंके रसमें जीरा मिलाकर देनेसे, शीतपूर्वक कफ पित्तज्वर आराम हो जाता है।

ज्वरहर वटी।

आयुर्वेदमें अनेक रामबाण औषधियाँ वर्णित हैं, उनमें यह 'ज्वरहर वटी' भी एक तत्काल फलप्रद महौषध है। पुराने ढँगके वैद्य इसको अधिकतासे व्यवहार करते हैं। इसमें ज्वर नाशक शक्ति तीव्र है विशेषकर पालीके ज्वर और शीतज्वरोंमें यह अक्सीरका काम करती है। यद्यपि यह विषाक्त—जहरीली औषधि है, परन्तु कुनैनके समान उतनी हानिकारक नहीं है। इसके प्रस्तुत करनेकी विधि इस प्रकार है —

शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, शुद्ध गोदन्ती हरताल और सोमल खार (संखिया), —इन चारों औषधियोंको समान भाग लेकर, पहले पारे और गन्धक दोनोंको एकत्र खरल करके कज्जली बनाले, फिर उसमें गोदन्ती हरताल और सोमल डालकर एक पहर तक खरल करके धूपमें सुखादे। फिर दूसरे दिन इसी प्रकार अदरखके रसमें खरल

करके धूपमें सुखा दे। इस प्रकार सात दिन तक बराबर अदरख के रसमें खरल करे और धूपमें सुखावे। फिर उसकी सरसोंके समान गोलियाँ बनाले।

यह ज्वरकी उत्कृष्ट औषध है। नवीन ज्वर और साम ज्वर एवं निराम ज्वरमें यह बहुत अच्छा फल करती है। कुनैनके समान इसमें इमली आदि खट्टे पदार्थोंको सेवन करनेसे किसी प्रकारकी हानि नहीं होती। इसके द्वारा ज्वर के बन्द होनेपर रोगी यथेच्छ आहार कर सकता है, किन्तु कुनैन को सेवन करने पर रोगी यथारुचि भोजन नहीं कर सकता।

इस औषधिकी मात्रा रोगीके बल और अवस्थानुसार १ से ४ गोली तक है, किन्तु यह अत्यन्त उग्र है, इस कारण छोटे-छोटे बालकोंको, पित्तकी प्रकृतिवाले और अति दुर्बल मनुष्योंको एवं गर्भवती स्त्रियों को यह नही देनी चाहिए। एक माशे या दो माशे मिश्रीके साथ यह औषधि पीसकर, थोडे शीतल जलके साथ सेवन करनी चाहिए। कोई-कोई वैद्य इसको अदरखके रसके साथ सेवन कराते हैं, किन्तु अदरखके रसके साथ इसके और भी तीक्ष्ण और गरम हो जानेकी सम्भावना है, यदि ज्वरमें कफकी अधिकता हो, तो दूसरी बात है। परन्तु तोभी खूब सावधानीके साथही इसे व्यवहार करना चाहिए।

औषधि सेवनके अन्तमें, रोगीके शिर पर बढिया चमेलीका तेल या मगजकद्दूका तेल मलना चाहिए और रोगीको खानेके लिये अनार, अँगूर, शन्तरा, ईखका रस, नारङ्गीका शर्बत आदि पदार्थ देने चाहिये। जो ज्वर बराबर एकसाही चढा रहता है, कभी विच्छेद नही होता यानी कभी नही उतरता, उसमे यह औषधि नहीं देनी चाहिये। किन्तु सविराम (जो घटता बढता है) नवीन मलेरियादि ज्वरोंमें दो तीन दिनमें ही यह अपना विलक्षण गुण दिखाती है। एक दिन में यह दो बार सेवन करानी चाहिये।

यदि भूलसे यह औषधि अधिक मात्रामें सेवन की जाय, तो नीचे लिखे लक्षण होते हैं :—जैसे नाडीकी गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है, शरीरमें रोमाच हो आते हैं, बार बार जम्हाई आती हैं और बारम्बार वमन होने लगती है। और भी बहुतसे हानिकारक लक्षण होते हैं। इसलिये इसको उपयुक्त मात्रासे ही व्यवहार कराना चाहिए। इसको अधिक मात्रासे सेवन करानेपर, रोगीके शरीरपर शीतल उपचार करने चाहिएँ। रोगीके शिर पर माखन या कच्चा दूध मलना चाहिए और उसको बरफ मिलाकर दूध या मलाईकी बरफ, अनार, शन्तरा आदि पदार्थ खानेको देने चाहिएँ। इस औषधिमें सोमल – सखिया अत्यन्त तीक्ष्ण विष है। यह बहुत थोडी ही मात्रासे मनुष्योंको मार देता है। उसी प्रकार गोदन्ती हरताल भी एक तीक्ष्ण पदार्थ है, किन्तु यह दोनों पदार्थ पारे और गन्धककी कज्जलीके साथ मिलकर और अदरखके रसके साथ खरल होनेसे—रासायनिक प्रक्रिया द्वारा—एक औरही नवीन प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उस प्रभाव या उस शक्तिके द्वारा औषधि शीघ्रही अनेक उपद्रवों सहित नवीन ज्वरको दूर कर देता है। कृष्णलाल वैद्य

शीतनाशक उपाय

(जाडेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीतसे पीडित ज्वररोगीको भारी कम्बल उढाओ और तोशक लिहाफ, गरम ऊनी कपडोंसे जाडा दूर करो। पुष्ट जाँघोंवाली और बडे बडे नितम्बोंवाली तथा कठोर कुचोंवाली स्त्रीसे आलिगन कराओ। इन उपायोंसे जाडा नाश हो जाता है। आलिगन

* यह नुसखा हमने मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिकपत्रसे लोकोपकारार्थ लिया है। "वैद्य" प्रत्येक आयुर्वेदप्रेमीके देखने लायक पत्र है। इसमें वैद्यक-सम्बन्धी अनेक उत्तमोत्तम लेख और अनुभूत योग छपते हैं। मँगानेका पता,—
—मैनेजर "वैद्य" मुरादाबाद, यू-पी०।

करनेसे जब जाडा लगना बन्द हो जाय और रोगीका कामदेव चैतन्य हो, तब स्त्रीको रोगीके पाससे हटालो । पीछे ; जब दाह पैदा हो, तब दाहनाशक उपाय करो ।

(२) हरड, नाई, कुटकी, गिलोय, गूगल, भटेऊ (अभावमें गठिवन), सहदेई, बच और कूट—इन सब दवाओंकी धूप बनाकर देनेसे अथवा इन सबको पीसकर, इनका शरीर पर लेप करनेसे शीतका नाश होता है। अथवा हरड आदि नौ दवाओंको पीसकर,—उनमे लवण, जवाखार और नीबूका रस मिलाकर तेल पकानेसे और उस तेलकी मालिश करनेसे भी शीत (जाडा लगना) नाश हो जाता है। इस लेपका नाम "कायस्थादि लेप" धूपका नाम कायस्थादि धूप और तेलका नाम कायस्थादि तेल है। (तेल पकाने की विधि पुस्तकके अन्तमे देखिये) ।

"सुश्रुत"में भी लिखा है, कफवातजनित ज्वरमें शीत-पीडित मनुष्यको उष्णवर्गों को औषधियों (जैसे कटफलादि) के लेपसे या और गरम उपाय करनेसे शीत शान्त हो जाता है। "आरग्वधादि-गण"का काढा करके पिलानेसे भी लाभ होता है।

(३) लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं,—शीतज्वरसे दुखी मनुष्य को अगर अधिक जाडा लगे, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहिये :—

(१) सोंठ मिर्च और पीपल मिलाकर माठा या छाछ पिलाओ ।

(२) शराब पीनेसे परहेज न हो, तो शराब पिलाओ ।

(३) जिसमें धूआँ न हो, ऐसी आगको भरी अँगीठी से रोगी को तपाओ ।

(४) कम्बल या नेपाली कम्बल अथवा रूईकी सौड उढाओ ।

(५) जिस मृगनयनी की देहमें यौवनके मद्का आलस्य हो और जिसकी बडी-बडी कुचोंपर केशर और अगरका लेप हो रहाहो, उसका खूब आलिंगन कराओ ।

(४) वङ्गसेनने लिखा है,—शीतपूर्व्वक ज्वरवाले रोगीकी वातनाशक चिकित्सा करो। उसे सुखोष्ण (निवाये) जलमें डुबाकर स्नान कराओ और रेशमी तथा ऊनी गरम कपड़े पहनाओ-उढ़ाओ और हवा न हो, ऐसे स्थानमें बैठाकर "काली अगर" की धूप दो अथवा पीछे लिखी हुई "कायस्थादि धूप" दो।

(५) तुलसी, वनतुलसी और सहँजनेके पत्तोंको दहीके तोड़ और गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे भी शीतज्वर नाश हो जाता है।

दाहनाशक उपाय।

—* * *—

(जाड़ेके ज्वरोंके लिये)

(१) शीत मिटते ही जब दाह होने लगे, तब अरण्डके शीतल पत्ते धारण करनेसे दाह शान्त हो जाता है। लिपी हुई जमीन पर अरण्डके पत्तोंको बिछा दो। पीछे दाहज्वरवालेके शरीर पर, उन पत्तोंको धारण करो, तो दाह और ज्वर दोनों शान्त हो जायँगे।

(२) मृगनयनी कठोर कुचों और मोटे मोटे नितम्बोंवाली, यौवनके मदसे माती युवतीके स्तनोंपर चन्दन, कपूर और केसर लगाकर दाहवालेसे आलिंगन कराओ। जब दाह शान्त होजाय और रोगीकी इच्छा मैथुन करनेकी हो, स्त्रीको हटालो।

(३) नीमके पत्तोंके काढ़ेमें शहद और राब मिलाकर, दाहवालेको कंठ तक पिलादो और पीछे उँगली डालकर वमन कराओ। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(४) दाहवालेको चित्त सुलाकर, उसकी नाभिपर काँसे या ताम्बेका औंडा बासन रखकर, उसमें ऊपरसे अत्यन्त शीतल जलकी धारा छोड़ो। इस उपायसे दाह अवश्य नाश हो जाता है।

(५) जिन बागों या मकानोंमें फव्वारे लग रहे हों, उनमें रोगीको रख

नेसे, स्त्रियोंका आलिंगन करानेसे और खसके पङ्खेकी हवा करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(६) नीचे लिखे उपायोंमेंसे कोईसा उपाय करनेसे दाह अवश्य नाश हो जाता है :—

(१) सौ बार या हजार बार धुले घीकी मालिश कराओ *।

(२) जौके सत्तूको जलमें सानकर लेप करो।

(३) बेर और आमलोंके पत्तोंको काँजी या दहीमें पीस कर लेपकरो।

(४) बेरके पत्तोंको पीसकर और झाग बनाकर लेप करो।

(५) नीमके पत्तोंके झागोंका लेप करो *।

(६) अनारकी छाल, बेरकी छाल, लोध, कैथ और बिजौरा,— इनको जलमें पीसकर और घीमें मिलाकर, सिर पर लेप करो। इससे प्यास और दाह दोनों शान्त हो जायँगे।

(७) कलम्भक, बेरोंकी छाल, अनन्तमूल, मुलैठी और चन्दन— इनको काँजीमें पीसकर, घीमें मिलाकर, सिरपर लेप करनेसे प्यास और दाह शान्त हो जाते हैं।

(८) बिजौरे नीबूके स्वरसको, शहद और घीमें मिलाकर सेवन करने

---

* लोलिम्बराज महोदय अपनी स्त्रीसे कहते हैं :—

सहस्रधौतेन घृतेन कर्तुम्भ्यंगमोप कृशता बिभर्ति।
अन्यागनासग सादरस्य स्त्रीयेषु दारेषु यथाभिलाष॥

हजार बार धोये हुए घीसे दाह इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह परायी स्त्रीको चाहनेवाले पुरुषकी अभिलाषा अपनी स्त्रीमें नष्ट हो जाती है।

* लोलिम्बराज महोदय कहते हैं—

तृड्दाहमोहा प्रशमं प्रयान्ति निम्बप्रवालोत्थितफेन लेपात्।
यथा नराणां धनिनां धनानि समागमाद्वारविलासिनीनाम्॥

नीमके पत्तोंके झागोंके लगानेसे प्यास, दाह और मोह इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह वेश्याओंके सङ्गसे धनवानोंके धन नाश होजाते हैं।

से तालुशोष (तालवा सूखना) दूर होता है। अगर सिरमें दाह हो, तो इन्ही चीजोंमें सेंधानोन और मिलाकर सिर पर लेप करो।

(९) प्याससे व्याकुल मनुष्यको, शीतल जलमें शहत मिलाकर कंठ तक पिलाओ और फिर वमन करा दो। इस तरह कई बार कंठ तक पिलाकर वमन करानेसे प्यास शान्त हो जाती है।

पट्‌तकतैल।

(१०) पटतक तेल भी दाह सहित ज्वरको नाश करता है, यह परीक्षित है।

सज्जी, सोंठ, कूट, मूर्वा लाख हल्दी, सफेदचन्दन और मँजीठ, इन सबको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर लुगदी बना लो अथवा काढा बनाकर, इनके बराबर तेल और तेलसे छः गुनी म्हाछमें तेल पकालो। यही "पटतकतेल" है।

बनानेकी विधि—सज्जी आदि आठों दवाओंको आध-आध पाव ले लो। पीछे इनको जौकुट करलो। रातके समय इन दवाओंको १६ सेर जलमें भिगोदो। सवेरे काढा पकाओ। जब चार सेर जल रह जाय, उतार कर मल छान लो। पीछे इस काढेको तथा १ सेर काले तिलोंके तेलको तथा ६ सेर गायके माठेको मिलाकर, कलईदार कडाहीमें आगपर चढा दो और मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। तेलमात्र रहनेपर उतार लो, पर तेल जरा भी जलने न पावे। पाव आधपाव पानी रह जाय, तो हर्ज नहीं। शीतल होनेपर तेलको निताकर बोतलमें भरलो। इस तेलसे दाह और शीत दोनोंमें लाभ होता है। विषमज्वरो और जीर्णज्वरोंके दाह नाश करनेमें यह तेल अकसीर है। परीक्षित है।

महापटतक तैल।

(११) रायसन, सोंठ, कूट, चन्दन, हल्दी मुलेठी पीपल, खिरेटी लाख, सेंधानमक, सारिवा, मूर्वा, देवदारु, बहेडा, खस, सम-

न्दरफेन, सुगन्धित तृण और सुगन्धवाला—इन औषधियोंके साथ ६ गुने तक्र यानी माठेमें सिद्ध किया हुआ तेल, दाहपूर्व्वक और शीतपूर्व्वक घोर ज्वर को नष्ट करता है। यह "महाषट्तक्र तेल" है।

नोट—इन १८ दवाओंको एक-एक छटाक लेकर, रातको १८ सेर जलमें भिगोदो, सवेरे काढ़ा बना लो और ४॥ सेर पानी रहनेपर उतार लो। पीछे काले तिलोंके १ सेर तेल, ६ सेर माठा और इस काढ़ेको कलईदार कड़ाहीमें पकाकर तेल बना लो।

लाक्षादि तेल ।

(१२) लाक्षादि तेल ज्वर नाश करनेमें मशहूर है। इस तेलसे विषम ज्वर और जीर्णज्वरमें बहुत लाभ होता है।

(क) लाखका रस ४ सेर, साफ काले तिलोंका तेल १ सेर और माठा ४ सेर—इन तीनोंको अलग-अलग तैयार रक्खो।

(ख) शतावरी, हल्दी, मुलेठी, रास्ना, असगन्ध, कुटकी, मरोड़फली, रेणुकाबीज, चन्दन, नागरमोथा, देवदारू और कूट—इन बारह दवाओंको एक-एक तोला लेकर, पानीमें सिलपर भाँगकी तरह पीसकर लुगदी बनालो।

(ग) चूल्हेके नीचे मन्दी मन्दी आग जलाओ। ऊपर कलईदार कड़ाही चढ़ाकर उसमें लुगदी, रखा हुआ १ सेर तेल, लाखका रस ४ सेर और माठा ४ सेर सबको डाल दो और धीरे धीरे पकाओ। जब तेलमात्र रहजाय, माठा और लाखका रस जल जाय, उतार लो। शीतल होनेपर, छानकर बोतलोंमें भर लो।

यह "लाक्षादि तेल" सब तरहके विषमज्वरोंको, जीर्णज्वरको तथा पीठ, लिङ्गस्थान और देहकी हड़फूटन तथा पीड़ाको शान्त करता है। इनके सिवाय दुर्गन्ध, खुजली, श्रम तथा वातरोगोंको नाश करता है।

लाखका रस बनानेकी विधि ।

पहले लाखका रस तैयार कर लेना चाहिये, तब तेल पकानेकी तैयारी करनी चाहिये।

जितनी लाख लो, उसका दसवाँ भाग लोध्र लो और लोधका दसवाँ भाग सज्जी लो तथा थोडी सी बेरकी पत्तियाँ लो। पहले लाखको धोकर साफ करलो। रातके समय लाखको उसके वजनसे १६ गुने जलमें भिगोदो। सवेरे उसे कडाहीमें चढाकर ऊपरसे लोध, सज्जी और बेरकी पत्तियाँ डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब ४ सेर जल रह जाय, उतार लो। बस, यही "लाखका रस" है। इसे तेल बनाते समय काममें लाओ।

नोट—वजन इस तरह रखना ठीक होगा। लाख १ सेर लो, लोध ८ तोले लो, सज्जी १० माशे लो और बेरकी पत्तियाँ आध पाव लेलो। १ सेर लाखको १६ सेर जलमें भिगो दो। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो। आपको ४ सेर लाखका रस चाहिये और इस हिसाबसे उतना ही रह जायगा।



प्रलेपक ज्वरकी चिकित्सा।

(१) इस ज्वरमें "स्वर्ण मालिनी वसन्त" १ रत्ती, गिलोयका सत्त २ माशे छोटी पीपर २ रत्ती और छोटी इलायची १ रत्ती—इन सबको शहदमें मिलाकर चटानेसे इस ज्वरमें लाभ होता है। यह नुसखा ताकत भी बढाता है और जीर्णज्वरको भी नाश करता है। मात्रा कम या जियादा रोग और रोगीका बलाबल विचार कर देनी चाहिये।

(२) "सितोपलादि चूर्ण के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश हो जाता है। इस चूर्णसे मेद घटता है और जीर्णज्वर तथा क्षय आदि नाश होते हैं। इसे शहदमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(३) "वर्द्धमान पिप्पली"के सेवन करनेसे भी यह ज्वर नाश हो जाता है। यह जीर्णज्वर और विषमज्वर पर अमृत है।

नोट—इन तीनों नुसख़ोंके बनाने और सेवन करनेकी विधि, आगे जीर्णज्वरकी चिकित्सामें लिखी है।

(४) पाव भर गायके दूधमें ६ माशे शहद ८ माशे घी, १५।२० कालीमिर्च और तोले भर मिश्री मिलाकर पिलानेसे खून बढ़ता है। आरम्भमें इतनाही देना चाहिये, पच जानेपर इसी निस्बतसे बढ़ाकर देना चाहिये।

निरोग गायका दूध जल मिलाकर औटाना चाहिये। औटते समयही मिश्री और घी मिला देना चाहिये। दूध मात्र रह जानेपर उतार कर शीतल कर लेना चाहिये। शीतल होनेपर, शहद और कालीमिर्च मिलाकर पी जाना चाहिये।

नोट—ये चारों नुसख़े परीक्षित हैं। और उपाय जीर्णज्वरमें लिखे हैं। ध्यान रखना चाहिये, यह ज्वर प्राय राजयक्ष्मामें ही होता है।

मलेरिया ज्वर।

(विषम शीतज्वर)।

सब तरह के पुराने ज्वरों मे मलेरिया ज्वर प्रधान है। इसको आयुर्वेद में "विषमशीतज्वर" कहते हैं। इसे डाक्टरी में इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermittent fever), मार्श फीवर (Marsh fever) अथवा एग्यु (Ague) कहते हैं। यूनानी हिकमत में इस को "तपे नौबती" कहते हैं। उर्दू पढ़े-लिखे लोग इसे "तपे लर्ज़ा" कहते हैं। साधारण लोग जूडी ज्वर या जाड़े का ज्वर कहते हैं। मारवाड़ी इसे "सिया ताप" कहते हैं। इसका कारण मलेरिया यानी जेहरीली हवा है, जो वृक्षों की पत्तियों वगैर' के सड़ने से पैदा होती है। पोखरों

या झरोकरों में पानी रह जाता है, पीछे उस में पत्तियाँ और घास-फूस पड कर सडती हैं, उस से विष पैदा होता है और वही विष हवा और पानी में मिल कर "मलेरिया ज्वर" पैदा करता है। मलेरिया इन ज्वरों का प्राकृत कारण है और सरदी लगना, अधिक मिहनत, खराब जल पीना, दूषित या भारी भोजन करना आदि निमित्त कारण हैं। यों तो यह ज्वर सब अवस्थाओं में आता है, पर जवानी में विशेषकर आता है। जिस साल गरमी अधिक पडती है, उस साल वर्षाकाल के बाद मलेरिया बहुत फैलता है। यों तो आजकल मलेरिया सारे भारत में रहता है, पर बङ्गाल और आसाम इस के मुख्य निवास स्थान हैं।

इन्टरमिटेन्ट फीवरके भेद।

इन्टरमिटेन्ट फीवर का असल मतलब बारी का ताप या ज्वर है। इसे यूनानी में "हुम्मा जिलती" भी कहते हैं। इस में पहले जाडा लग कर बुखार चढता है। इसके तीन भेद हैं —

(१) कोटीडियन फीवर। इसे वैद्यक में अन्येद्युष्क-ज्वर, नित्य शीतज्वर या एकाहिक ज्वर कहते हैं। यह २४ घन्टे बाद आता है।

(२) टरशियन फीवर। इसे वैद्यक में तृतीयक ज्वर कहते हैं। बोल चाल में तिजारी कहते हैं। यूनानी में "हुम्मा गिब खालस" कहते हैं। यह ४८ घन्टे बाद चढता है। इसे "तप्या' भी कहते हैं।

(३) कारटन फीवर। इसे वैद्यक में चातुर्थिक ज्वर और बोलचाल में चौथैया कहते हैं। यह ७२ घन्टे बाद चढता है।

नोट—२४ घण्टे बाद चढ़नेवाले ज्वर में मलेरिया-विष बहुत होता है। ४८ घण्टे बाद चढ़नेवाले में उस से कुछ कम, और ७२ घण्टे बाद चढनेवाले में उस से भी कम मलेरिया-विष होता है।

इन्टरमिटेन्ट फीवरकी तीन अवस्थायें।

—❀—

इसकी तीन अवस्थायें होती हैं—(१) शीत की अवस्था।



(२) गरमी की अवस्था, (३) पसीनों की अवस्था। पहली अवस्था में रोगी को जाडा लगता है, रोगी शीत के मारे थरथर काँपने लगता है, दाँत से दाँत बजने लगते हैं, घरके सारे कपडे उढाने पर भी शीत नहीं दबता। जाडे की कँपकँपी के मारे खाट हिलने लगती है। यह हालत ५ मिनट से ३ घण्टे तक रहती है। किसी को ५ मिनट तक ही जाडा लगता है, किसी को ३० मिनट और किसी को दो या तीन घण्टे तक। ३ घण्टे से अधिक देर तक जाडा किसी को नहीं लगता। दूसरी अवस्थाके आरम्भ होते ही जाडा लगना बन्द हो जाता है और गरमी का जोर होता है। इस अवस्था में प्यास बढ जाती है। रोगी को शुरु शुरु में तो जाडेके बाद गरमी बडी प्यारी लगती है, परन्तु थोडी देर बाद ही वह गरमी से बेचैन हो जाता है—दाह से विकल हो जाता है। यह अवस्था १५ मिनट से १ घण्टे तक रहती है। इस के बाद पसीने आने लगते हैं। यही तीसरी और अन्तिम अवस्था है। पहले ललाट—पेशानी और चेहरे पर पसीना आता है और थोडी ही देर में सारे शरीर में पसीना आने लगता है। इस हालतमें बाहरी हवा लगना बहुत बुरा है। पसीना आने से ज्वर उतर जाता है और रोगी उठ बैठता है। बहुत से बलवान रोगी तो अपना काम करने लगते हैं, पर यह पहली हालत में ही होता है। जब ज्वर पुराना हो जाता है, रोगी निर्बल हो जाता है, तब वह उठकर काम करने लायक नहीं रहता।

नोट—बहुधा यह ज्वर पसीने आकर ही उतरता है, पर किसी-किसी का ज्वर बिना पसीने आये भी उतर जाता है।

कोटीडिएन फीवर।



(नित्य शीतज्वर)

कोटीडिएन ज्वर रोज आता है। इसे ही अन्येद्युः ज्वर कहते हैं। यह ज्वर अक्सर बहुत दिनों तक आया करता है। यह बहुधा सवेरे

मालूम होता है। सावन, भादों और क्वार इस के आने के समय हैं। यह रोज-रोज आता है, लेकिन कभी कभी तीसरे और चौथे दिन भी आने लगता है। रोज रोज आने से तीसरे चौथे दिन आना शीघ्र आराम होने की निशानी है, पर एक दिन में दो बार चढना; यानी वैद्यकका सतत ज्वर हो जाना ख़राबी की निशानी है। जो ज्वर दिन रात में दो बार आता है, उसे वैद्यक में सतत ज्वर और अँगरेजी में "डबल कोटीडियन" कहते हैं, जब यह रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) यानी हर समय चढ़े रहनेवाले ज्वर का रूप धारण कर लेता है, यानी "सन्तत ज्वर" हो जाता है, तब और भी ख़राबीकी अलामत है।

इस ज्वर की पहली अवस्था में,—पहले पीठ पर ठण्ड लगती है और जरा देर बाद सारे शरीरमें ठण्ड लगने लगती है। कभी-कभी एकदम से शीत चढ़ आता है रोगी काँपने लगता है, दाँत कड़ कड़ बजने लगते हैं। उस समय जीभ तर, साफ, ठण्डी और फीकी रहती है, भूख नाश हो जाती है, प्यास लगती है, जी मिचलाता है, सिर में दर्द होता है, तशन्नुज या बाँइटे आने लगते हैं, पेशाब बारबार होता है। खून की चाल मन्दी होने से नाड़ी की गति भी मन्दी रहती है। रोएँ खड़े हो जाते हैं, कान, होठ और गालों तथा उँगलियों के पोरुओं में खून अच्छी तरह नहीं पहुँचता इससे ये नीले से दीखने लगते हैं। खून शरीर के भीतर इकट्ठा हो जाता है। अगर सिर में खून इकट्ठा हो जाता है, तो बोझासा जान पड़ता है, तन्द्रा और मूर्च्छा—बेहोशी होने लगती है। अगर खून आमाशय में जमा हो जाता है, तो जी मिचलाने लगता है और कय होती हैं। आँतों में खून के इकट्ठा होने से दस्त लग जाते हैं, पर जियादातर अजीर्ण रहता है। जाड़ा लगने से शरीर का ताप कम नहीं हो जाता। अनेक बार देखने में आया है, इस हालत में टेम्परेचर १०५ या १०६ डिग्री तक रहता है। शरीर में खून जमा हो जाने से चार और पाँच घन्टे तक

जाडा लगता रहता है। ज्यों ज्यों यह ज्वर पुराना होता जाता है, जाडा लगने का समय भी घटता चला जाता है। कितनी ही वार ज्वर आ लेने पर, पाँच सात मिनट जाडा लगने पर ही गरमी आ जाती है।

दूसरी अवस्थामें जाडा धीरे धीरे कम होता जाता है और गरमी बढती जाती है। गरमी बढनेसे खूनकी चाल तेज हो जाती है और नाडी भी शीघ्रगामिनी हो जाती है, चेहरा तमतमा आता है, कनपटीकी नसे फडकने लगती हैं, सिरमें दर्द बढ जाता है, रोगी प्रलाप या बक वाद करने लगता है। चमडा रूखा, लाल और गरम हो जाता है। प्यासकी डाफी लग जाती है। रोगी क्षण क्षण में जल माँगता है। गिलासको होठोंसे अलग करना नही चाहता। इस समय ओकियाँ आती हैं, वमन होती हैं, घबराहट बढ जाता है। सरदीकी हालतमें पेशाव हलका और जियादा होता है, किन्तु इस समय लाल, भारी और कम होने लगता है।

तीसरी अवस्थामें, पहले ललाट और चेहरेपर पसीने आने लगते हैं और फिर सारे शरीरमें पसीने आते हैं। पसीने ज्यों ज्यों आते हैं, बुखार त्यों त्यों कम होता जाता है। बुखार वडी जल्दी-जल्दी उतरने लगता है। बहुधा १५ मिनटमें २ दरजे ज्वर घट जाता है। जब रोगी आराम होनेवाला होता है, तब किसीको जाडा लगता है, पर गरमी नहीं लगती अथवा पसीना नही आता—विना पसीना आये ही ज्वर उतर जाता है।

टरशियन फीवर।



(तिजारी)

यह ज्वर तीसरे दिन ४८ घन्टेके अन्तरसे आता है। यूनानीमें इसे "हुम्मा गिब स्वालस" कहते हैं और वैद्यकमें "तृतीयक ज्वर" कहते हैं।

बोलचालकी भाषामें इसे तिजारी और तप्या कहते हैं। इस ज्वरमें गरमी जियादा रहती है। इसका जोर ४ घण्टे तक रहता है। अङ्गरेजी मतानुसार यह २३ घण्टों तक चढा रहता है।

इसका दौरा प्राय दोपहरके समय, शीतकालमें होता है। जिनकी तिल्ली बढ जाती है, उनको भी यह ज्वर दोपहरके समय जाडेके मौसममें सताता है। यह ज्वर भी रूप बदलता रहता है। अगर नित्य आने लगजाय, तो रोगकी वृद्धि समझनी चाहिये और अगर चौथे दिन आने लगजाय, तो रोगकी घटती समझनी चाहिये। कभी-कभी इसकी बारी एक दिनमें दो बार आने लगती है। एक बार सवेरे ज्वर चढता है, दूसरी बार शामको चढता है। दूसरे दिन ज्वर बिलकुल नहीं आता। फिर तीसरे दिन उसी तरह दिनमें दो बार चढता है। इस हालतमें इसको डुप्लाकेटेड टरशिअन फीवर (Duplicated Tertian fever) कहते हैं।

क्वारटन फीवर।

(चातुर्थिक ज्वर)

इस ज्वरको वैद्यकमें चातुर्थिक ज्वर, बोलचालकी भाषामें चौथैया और अङ्गरेजीमें "कारटन फीवर" कहते हैं। यह बुखार एक दिन आकर दो दिन बीचमें नहीं आता; यानी चौथे दिन आता है। यह ७२ घण्टेके विरामके बाद आता है और तीसरे पहरके समय, यानी कोई दो तीन बजेके समय चढा करता है। कभी कभी इसकी दो बारी बराबर आती हैं। तीसरे दिन ज्वर नहीं आता, चौथे पाँचवें दिन फिर आता है। इसको डबल कारटन फीवर कहते हैं। कभी-कभी हर चौथे दिन यह दिन भरमें दो बार चढता है, बीचके दो दिन ज्वर नहीं आता। उस दशामें इसे डबल कारटन फीवर (Double Quartan fever) कहते हैं। इस ज्वरमें जाडा बहुत देर तक रहता है और

गरमी थोडी देर रहती है। यह ज्वर पाँच घण्टे तक जोर करता है। यह वडा ख़राव ज्वर है। कभी-कभी बरसों तक पीछा नही छोडता और वडी मुश्किलसे आराम होता है।

रोगकी घटती-वढतीकी पहचान

—※—

अगर ये ज्वर अपने आनेके समयको वदलने लगे, अपने समयको छोडकर दूसरे समय आने लगें, तव रोग की कमी समझनी चाहिये। अगर बुखार अपने समयसे पहले चढने लगे, तो रोगको वढती समझनी चाहिये। जव दवासे फायदा होने लगता है, तव यह पहले समय बदलता है और पीछे एकदम वन्द हो जाता है।

ख़राबीके लक्षण।

—※—

अगर इन ज्वरोंका सम्बन्ध रस रक्त मांस मेद आदि धातुओंसे हो जाय, यानी ज्वरका प्रवेश धातुओंमें हो जाय, तो खराबी समझनी चाहिये। ऐसा ज्वर धातुसे अलग करनेसे ही जाता है। जब तक यह प्रबन्ध नहीं किया जाता, गरम सर्द अनेक तरहकी उत्तमोत्तम औषधियोंसे कोई लाभ नहीं होता।

नोट—हमारे यहाँ सन्तत ज्वरको विषमज्वरोंमें माना है, पर असल में उसके लक्षण विषमज्वरसे मिलते नही। इसलिये हमारे यहाँ भी कितने ही आचार्य्य सन्ततज्वरको विषमज्वर नहो मानते। डाक्टर लोग इसको रेमिटेण्ट फीवर (Remittent fever) कहते हैं। यूनानीवाले इसे दायमी ताप कहते हैं। यह ज्वर बराबर चढा रहता है। सात, दश या बारह दिनमें उतरता है। जब यह आता है, तब जरा सरदी लगती है, जी मिचलाता है और किसी-किसीको पित्तकी कयहोती है। इसमें टेम्परेचर १०६ डिग्री तक होता है। यह बुखार ६ घण्टेतक जोर करके हलका हो जाता है। पीछे पसीने आने बाद फिर चढने लगता है। यह ज्वर बिना १२ दिन पीछा नहीं छोडता। इसमें

मस्तिष्क और दिलमें सूजन आजाती है, तब बेहोशी होने लगती है। इस ज्वरमें सन्निपातका बड़ा डर रहता है। चिकित्सामें गड़बड़ होनेसे किसी-किसीको सन्निपात हो भी जाता है।

चिकित्सा विधि।

इन शीतज्वरोंमें दो तरहसे चिकित्सा होती है —(१) जिस दिन ज्वरकी बारी होती है ; यानी ज्वरकी हालतमें (२) जिस दिन ज्वर नहीं चढ़ता —रोगी ज्वरसे खाली रहता है।

ज्वर होनेकी हालतमें।

अगर खाना खानेके बाद बुखार आजाय और जी मिचलाता हो, तो किसी वमनकारक औषधिको पिलाकर वमन करा देनी चाहिये। पीछे शीतके समय गरम कपड़े उढ़ा देने चाहिये, शीतनाशक लेप करना चाहिये, गरम गरम चाय पिलानी चाहिये, गरम पानी बोतलमें भरकर उसपर कपड़ा लपेटकर सेक करना चाहिये और बफारा देना चाहिये।

जब जाड़ा लगना बन्द होजाय, तब प्यासका और दाहका इलाज करना चाहिये। प्यास और दाहनाशक उपाय हमने, ज्वरके उपद्रवोंमें, पुस्तकके अन्तमें लिखे हैं। समयपर जो मुनासिब जँचे, वही उपाय करना चाहिये। पसीने निकालने या दस्त करानेकी चेष्टा करनी चाहिये। इस अवस्था में अरण्डीका तेल पिलाना या काले दानेकी १।२ मात्रा देना हितकर है।

पसीना आने लगे, तब किसी प्रकारके इलाजकी जरूरत नहीं। इस समय रोगीको हवासे बचाना चाहिये। बाहरी हवाके पसीनोंमें लगनेसे रोगीके प्राणान्तकी सम्भावना है।

पसीना लानेकी विधि।

गरम गरम चाय पिलाने या गरम गरम (निवाया) जल पिलानेसे पसीना आने लगता है। बफारा देनेसे भी पसीना आता है। मन्दी

फेवरिनकी दो एक खुराक देनेसे या लोबान अथवा आककी जडकी छालका चूर्ण गुडमे मिलाकर (आगे लिखी हुई विधिसे) २।३ वार देनेसे भी पसीना आकर ज्वर उतर जाता है ।

दस्त करानेका उपाय ।

इस अवस्थामें अरण्डीका तेल (काष्टर आयल Castor oil) दो तीन तोले पिलानेसे दस्त साफ हो जाता है। अरण्डीका तेल योंही या पाव डेढपाव गरम दूधमें या त्रिफलेके काढेमें मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा ६ या ६ माशे काला दाना (हब्बुलनील) घीमें भूँजकर ४ या ६ माशे सोंठ का सफूफ या चूर्ण मिलाकर, रोगी को फँका देनेसे और ऊपरसे थोडा गरम जल पिलानेसे ४।५ दस्त साफ आ जाते हैं। इस जुलावसे बहुत जल्दी दस्त आते हैं। यह कालेदानेका जुलाव जैलप या जमालगोटेसे कम नही है। इतनी विशेषता है, कि इसमें जमालगोटेके अवगुण नही हैं। अगर कोठा नर्म हो और दस्त कम कराने हों, तो ६ माशे कालादाना घीमे भूँज और पीसकर फँका देना चाहिये और ऊपरसे गरम जल पिलाना चाहिये, पर सोंठ न मिलानी चाहिये। मात्रा कम और जियादा करना वैद्य का काम है, रोगीकी ताकत देखकर मात्रा देनी चाहिये। ६ या ८ अथवा दश माशे काली निसोत शहतमें मिलाकर चटानेसे भी बडा उपकार होता है, दस्त हो जाते हैं, वलिक इस उपायसे ज्वरही चला जाता है।

इन ज्वरोंमें निसोत और शहत चटाना सर्वोत्तम और सुखदायी उपाय है। इसी तरह काष्टर आइल या रेण्डीके तेलका जुलाव भी नरम है, गर्भवतीको देनेसे भी हानि या खतरा नही है। ताकतवर रोगीको काले दानेका ६ माशे तक जुलाव देना चाहिये। इस तरह जुलाव देनेसे कोठा साफ होकर ज्वर टूट जाता है। ये जुलावकी बात हम शीतज्वरोंके लिये ही लिख रहे हैं। जुलाब कमजोर रोगीको न देना चाहिये। अगर सख्त जरूरत हो, तो हलका देना चाहिये।

प्यास रोकनेके उपाय।

—*—

ज्वरकी अवस्थामें प्यास रोकनेके नुसखे ज्वरके उपद्रवोंमें आगे लिखेंगे, वहाँ देखकर जो जँचे सो करना चाहिये। अङ्गरेजी कायदेसे सोडावाटर पिलाते हैं और बर्फ के छोटे-छोटे टुकड़े मुँहमें रखाते हैं। हकीमलोग मुखमें अकरकरा या आलूबुखारा रखाते हैं।

ज्वर उतरजानेकी हालतमें।

इन ज्वरोंमें जियादातर दवाएँ, ज्वर उतर जानेकी हालतमें, ज्वरकी वारी रोकनेको देते हैं। डाक्टरीमें वारी रोकनेकी सबसे अच्छी दवा कुनैन (Quinine) या सिनकोना फेब्रीफ्यूज (Cinconा febrifuge) है। दस्त हो जानके बाद, टेम्परेचर ९८॥ या ९९ डिग्री होने पर, सलफेट आव कुनैन १ या २ रत्तीकी मात्रासे, तीन तीन घन्टेमें, दूसरी वारी आने तक देना चाहिये। १५।२० ग्रेन या १० रत्ती कुनैन ज्वर चढ़नेसे पहले पेटमें पहुँच जानेसे अच्छा असर होता है। जवानोंको इसकी २ या अढ़ाई रत्तीकी मात्रा है, कमजोरोंको १ रत्ती देनी चाहिये। कभी जल्दी आराम करनेकी इच्छासे अधिक कुनैन न खिलानी चाहिये। जियादा कुनैन खानेसे बड़ी गड़बड़ होती है। सबसे अच्छी रीति यही है कि, ज्वर के समयसे पहले ३।४ खूराक कुनैन, तीन तीन घण्टे में खिलाकर, जल की घूँट पिला देनी चाहिये और एक खूराक ज्वर आनेके समयसे १ या १॥ घण्टे पहले अवश्य देनी चाहिये। अगर शीत बहुत लगता हो, तो कुनैन की मात्रा या कुनैनकी गोली केवल ताजा जलमें खिलानी चाहिये। अगर सरदी कम लगती हो, तो कुनैनकी गोली खिलाकर ऊपरसे थोड़ासा शर्बत बनफशा अथवा मिश्रीका शर्बत पिला देना चाहिये।

अगर ज्वर आनेके समयका पता न हो, तो सवेरेसे दो-दो घन्टों पर कई मात्रा या गोलियाँ खिला देनी चाहिये। अगर कुनैन देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो कुनैन देना बन्द कर देना चाहिये। ज्वर उतर जाने

पर, फिर ऊपरकी विधिसे कुनैनका सफ़ूफ या गोलियाँ देनी चाहियें। जिस दिन ज्वरकी बारी न हो, उस दिन भी २ या १ माता कुनैनकी देनी चाहिये। २४ घण्टेके अन्दर १०।१२ ग्रेन या ५।६ रत्ती कुनैन देनी चाहिये। अगर ज्वर पुराना हो, तो कुनैनकी माता अधिक देनी चाहिये। चौथैया बुखारमें भी अधिक कुनैन देनी चाहिये, किन्तु अँधाधुन्ध न देनी चाहिये। कमजोर रोगीको जियादा कुनैन देनेसे शीत आ जाता है। पहले कुनैन की अधिक माता देनी चाहिये, पीछे रोग का बल ज्यों-ज्यों घटता जाय, कुनैनकी माता भी कमती करनी चाहिये। एकही बारीमें कुनैन से ज्वर चला जाता है। अगर विषकी अधिकतासे १ बारीमें नहीं भी जाता, तो उसका बल तो घटही जाता है। २।३ बारीमें तो प्रायः ज्वर छूटही जाता है। कुनैन निहार मुँह देनेसे अच्छा लाभ करती है।

कुनैनसे हानि।

—*—

कुनैन बारीके ज्वरोंमें परमोत्तम दवा है। तिल्लीके बढ़ जानेकी दशामें भी इससे बड़ा उपकार होता है, यह ताकत भी लाती है, मगर जियादा कुनैन सेवन करनेसे सिरमें दर्द होने लगता है, सिर घूमने लगता है, चक्कर आते हैं, आँखोंके आगे पतंगेसे उड़ते हैं, कानोंमें सनसनाहट होती है, ओकारियाँ आती हैं, जी घबराता है। अगर कुनैन देते-देते ऐसे लक्षण नजर आवें तो कुनैनका देना बन्द कर देना चाहिये।

कुनैनके अभावमें

"सिनकोना" देना चाहिये। इसमें भी कुनैनके समानही गुण हैं। यह भी ज्वरोंका नाश करता है। इसकी गोलियाँ शहद या गुडमें मिलाकर दी जाती हैं। इसकी माता भी १ या २ रत्तीकी है।

सिनकोनेकी गोलियाँ।

-*-

सिनकोनाफेब्रीफ्यूज ६० ग्रेन, नीबूका रस १ फ्ल्यूड ड्राम—दोनोंको मिलाकर रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इनको भी कुनैनकी तरह दो दो या तीन तीन घन्टेमें देना चाहिये।

कुनैनकी गोलियाँ।

-*-

सलफेट आफ कुनैन २ ग्रेन एक्सट्रैक्ट आफ कलमिया १ ग्रेन—दोनोंको मिलाकर १ गोली बनानी चाहिये। इसी तरह चाहे जितनी गोलियाँ बना ली जा सकती हैं। सलफेट आफ कुनैन६० ग्रेन(३०रत्ती) और एक्सट्रैक्ट आफ कलमिया ३० ग्रेन (१५ रत्ती)—इन दोनोंको मिलानेसे ३० गोलियाँ तैयार होंगी। बलाबल देखकर पूरी या आधी गोली देनी चाहिये। कुनैनकी गोली देनेकी विधि ऊपर लिख आये हैं। कुनैनकी गोलियोंपर चाँदीके वरक चढा देनेसे रोगी कुनैन समझकर घृणा नहीं कर सकता।

कुनैन मिक्सचर।

—*—

सलफेट आफ कुनैन ४ ग्रेन, डिल्यूटेड सलफ्यूरिक एसिड १० बूँद सीरप आफ आरेंज १ ड्राम—पानी १ औन्स,—इन सबको मिलाकर रोगीको पिलाना चाहिये। यह १ खूराक है। इस तरह तीन तीन घन्टेके अन्तरसे, ज्वर न होनेके हालतमें इस मिक्सचरके देनेसे ज्वरमें लाभ होता है। ज्वरकी बारी रुक जाती है।

नोट—कुनैन सलफ्यूरिक एसिड यानी गन्धकके तेजाबके साथ अच्छा फायदा करती है। पर यह तेजाब १० बूँदसे जियादा न देना चाहिये सीरप आफ आरेंज—नारङ्गीका शर्बत मिला देनेसे स्वाद अच्छा हो जाता है। अगर यह नहीं होता, तो सीरप आफ लेमन—

नीबूका शर्बत भी मिलाकर देते हैं। हमने ऊपर १ खुराक कुनैन मिक्स्चरका नुसखा लिखा है। अगर ३ खुराक दरकार हों, तो सब चीजोंको तिगुना कर लेना चाहिये। अगर चार खूराक दरकार हों, तो चौगुना कर लेना चाहिये। कमजोर या बालकोंको मात्रा कम करके देना।

कुनैन और सिनकोनाके अभावमें

आगे लिखी रीतिसे भुनी फिटकरी ४।५ रत्ती मिश्री मिलाकर देनी चाहिये। इससे भी ज्वरकी बारी रुक जाती है। खाँसीवालोंको फिटकरी न देनी चाहिये। जिन्हें फिटकरी न देनी हो, उन्हें तुलसी के पत्ते और कालीमिर्चोंकी गोलियाँ बनाकर खिलानी चाहियें। ये गोलियाँ कुनैनसे कम नहीं हैं। इन गोलियोंसे फौरन बारी रुक जाती है। अगर गरमीका जोर जियादा हो, तो कुनैन न देकर गिलोयका सत्त २ माशे देना चाहिये, अथवा शीतज्वरनाशक अनेक नुसखे लिखे हैं, उनमेंसे कोई नुसखा विचारपूर्वक देना चाहिये।

मलेरियाज्वर नाशक नुसखे।

(१) पित्तपापड़ा, करञ्जके पत्ते, गिलोय, कुड़ेकी छाल, घीग्वारकी जड़, काली मिर्च, सनाय, नीम की निंबोली, तुलसी के पत्ते, चिरायता, हरड़, पीपल, शुद्ध सिंगरफ,—इन १३ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। पीछे ३ दिन तक नीबूके रसमें खरल करो। खरल हो जानेपर, जब गोलियाँ बनाने लायक होजाय, माशे माशे-भरकी गोलियाँ बनालो। बुखार चढ़नेसे पहले, दो-दो घण्टेपर, एक-एक गोली सेवन करो। एक दिनमें ३ गोली

सेवन करो। इन गोलियोंसे सब तरहके मौसमी या मलेरिया ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट—चढ़े बुखारमें मत लेना। यह नुसखा प० यशोधरजी, आयुर्वेद विशारद, बलेटो प्रागपुर ज़िला कांगड़ाने परीक्षा करके मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिक-पत्रमें लिखा था।

(२) निरगुण्डीके पत्ते ४ तोले, द्रोणपुष्पी या गूमाके पत्ते ४ तोले, गिलोय ४ तोले और अड़ूसा ४तोले—इनको मिट्टीके बासनमें डाल कर, ऊपरसे १ सेर जल मिलाकर, आगपर पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और साफ कपड़ेमें छान लो। पीछे इस पानीको फिर हाँडीमें डालकर, इसमें हरड़का चूर्ण ४ तोला, पीपलोंका चूर्ण २ तोला और मिला दो और फिर मन्दी-मन्दी आगपर पकाओ। जब खूब गाढ़ा हो जाय, यानी खोये सा हो जाय, तब उसको उतारकर तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। तीन तीन घण्टेमें एक एक गोली शहतके साथ पीसकर खिलाओ। इस दवासे सब तरहका मलेरिया ज्वर, यकृत और प्लीहा ज्वर, पुराना ज्वर, बार बार आनेवाला मन्दज्वर, खाँसी, श्वास आदि निश्चयही आराम हो जाते हैं।

नोट—यह नुसखा भी किसी वैद्य सज्जनका आज़माया हुआ है। हमने "वैद्य" मुरादाबादसे ही लिया है।

(३) पहुरकी भस्म, नौसादर और पीपल—इनको बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीसकर रखलो। इस चूर्णको ४ रत्ती सवेरे और ४ रत्ती शामको, गरम जलके साथ खानेसे यकृत सहित मलेरिया ज्वर चला जाता है।

(४) जवाखार ३ रत्ती और पीपलका चूर्ण ३ रत्ती—दोनोंको ६ माशे पुराने गुड़में मिलाकर, दिनमें दो बार रोज खानेसे यकृत और प्लीहा सहित मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—मलेरिया ज्वरमें, यकृतकी सूजन या यकृतमें दर्द होनेपर, अलसीकी पुलटिस बना कर गरमागरम बाँधो। जब पहली पुलटिस शीतल हो जाय, तब दूसरी पुलटिश बनाकर गरमागर्म बाँधो। इस तरह दिनमें २।३ बार करना चाहिये।

तिल या सरसोंकी खलीको पानीमें पीसकर, उसकी पोटली बना कर और उसे गरम करके, उससे बारम्बार यकृतको सेंको। इससे भी लाभ बहुत होता है।

अगर पेटमें कब्ज हो और यकृतमें भारीपन हो, तो "त्रिफलेके काढ़ेमें पुराना गुड़ मिलाकर पिलाओ। इससे लाभ होगा।

अगर मलेरिया ज्वरमें प्लीहा या तिल्ली हो, तो यकृत की तरह तिल्ली पर भी वही अलसीकी पुलटिस बांधो अथवा खलकी पोटलीको गरम करके सेक करो। याद रखो, यकृत दाहिनी ओर होता है और तिल्ली बाई तरफ होती है।

(५) सोडा और सफेदा काशगरीको एकत्र पीसकर, चार चार-रत्ती की मात्रासे, बताशेमें रखकर, बुखार चढ़नेसे पहले, दो-दो घण्टेमें ३ बार एक दिनमें खिलाओ। इससे इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब तरहके पारीसे आनेवाले ज्वर नाश हो जाते हैं।

(६) दूध ३ तोले, दही ३ तोले, शहत १ तोले, तुलसीके पत्तोंका रस ४ माशे और कालीमिर्चका चूर्ण २ रत्ती—सबको मिलाकर ज्वर चढ़नेसे पहले, दो बार चटानेसे शीतज्वरका दौरा रुक जाता है, यानी जाड़ा लगकर आनेवाला ज्वर नहीं आता।

(७) करंजवेकी मींगी ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे और सम्हालूके हरे पत्ते ३ माशे,—इन सबको एकत्र पीसकर ८।१० गोलियाँ बनालो। ज्वरके चढ़नेसे आठ दश घण्टे पहले, एक एक घण्टेमें एक एक गोली ताजा पानी के साथ निगलवाओ। बालकको चार या पाँच गोलियाँ दो। पूरी उम्रवालेको ८।१० गोली दो। इनसे मलेरिया ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर पेटमें दर्द हो, तो यह गोली न देनी चाहिये।

(८) नीमकी छाल, करंजुएके पत्ते नारङ्गीका छिलका, प्रत्येक औष-

घि छै छै माशे लेकर, पाव भर जलमें पकाओ। जब १ छटाँक या चौथाई जल रह जाय, उतारकर मल छान लो और १ तोला मिश्री मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसखेको ज्वर चढ़ने से पहले, चार-चार घण्टेपर, दिनमें दो बार पिलाओ। इससे मलेरिया ज्वर आराम हो जाता है।

(६) गिलोय, नीमकी छाल, पित्तपापड़ा, कुटकी नागरमोथा धनिया, पत्र निर्गुण्डी और चिरायता—इन ८ दवाओंको समान भाग लेकर, भभकेमें अर्क खिचवा लो। इस अर्ककी मात्रा जवानके लिये ५ तोलेकी है। १ मात्रामें १ तोला शहद मिलाकर ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, दो दो घण्टेमें ३ मात्रा पिलाओ। इस नुसखेसे सब तरहके पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथैया वगैर ज्वर आराम हो जाते हैं।

नोट—ये नं० ७, ८, और ६ के नुसखे प० नाथूरामजी वैद्यने आजमाकर मुरादाबादके "वैद्य" नामक मासिकपत्रमें लिखे हैं।

(१०) अभ्रक भस्म १ माशे, लोह भस्म १ माशे, शुद्ध वत्सनाभ विष १ माशे, पीपल २ माशे और करंजुवकी मींगी २ माशे—इन सबको एकत्र नीबूके रसमें खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक एक गोली गरम जलके साथ खिलाओ। इन गोलियोंसे सब तरहके विषमज्वर इकतरा, तिजारी और चौथैया नाश हो जाते हैं।

(११) वंसलोचन ४ माशे, छोटी इलायचीके दाने ४ माशे, गिलोयका सत्त ४ माशे, पीपल ४ माशे और अभ्रक भस्म ४ माशे—इन पाँचोंको अर्क गुलाबमें खरल करो और तीन तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वरके चढ़नेसे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक-एक गोली शहदमें मिलाकर खिलाओ। इन गोलियोंसे

मलेरिया, विषम ज्वर, विशेषकर पित्तप्रधान विषमज्वर शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१२) कुनैन १ तोला, वंसलोचन १ तोला, छोटी इलायची १ तोला, मूँगेकी भस्म १ तोला और टारटरिक एसिड (इमलीका सत्त) १ तोला—इन पाँचोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे गुलाबका अर्क दे देकर खूब खरल करो। पीछे दो दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। ज्वर चढ़नेसे ३ घण्टे पहले, एक एक घण्टेमें एक एक गोली अर्क गावजवाँ या जलके साथ खिलाओ। अगर गोली देते-देते ज्वर चढ़ आवे, तो गोली देना बन्द करो। दूसरी पारी के दिन ज्वर न होनेकी हालतमें, फिर इसी तरह गोली दो। वैद्यराज प० रघुनाथजी शर्म्मा, जम्बू काश्मीरसे मुरादाबाद के "वैद्य"में लिखते हैं, इन गोलियोंसे फसली ज्वर आना बन्द हो जाता है।

नोट—यद्यपि हमने इस नुसखेको आजमाया नहीं है, तथापि हम कह सकते हैं कि, यह नुसखा शीतज्वर या पारीसे आनेवाले ज्वरोंमें अच्छा होगा। इसी तरह हमने भी एक कुनैनका नुसखा आजमाया है, उसे नीचे लिखते हैं —

(१३) कुनाइन २ रत्ती, इमलीका सत्त या टार्टरिक एसिड १० रत्ती और मिश्री आधी छटाँक—इन तीनोंको डेढ़ छटाँक जल में घोलकर, ज्वर चढ़नेसे ६ घण्टे पहले, हर दो-दो घण्टेमें ३ वार पिलानेसे, हर तरहका शीतज्वर, फसली बुखार, मलेरिया बुख़ार, पारीसे आनेवाले इकतरा, तिजारी, चौथिया वगैर नाश हो जाते हैं। पहले मिश्रीको सिलपर पीसकर पानीमें घोल लो। जब मिश्री और जल एक-दिल हो जायँ, तब उस शर्बतमें कुनैन २ रत्ती और इमलीका सत्त १० रत्ती मिला दो और पिलादो। अगर दवा पिलाते पिलाते ज्वर चढ़ आवे, तो फिर दूसरी पारीके दिन इसी तरह दो वार और जियादा-से-जियादा तीन वार इसे पिलाओ। ज्वर चढ़ आनेकी हालतमें यह दवा

हरगिज न देना। अगर रोगीका जी घबरावे या प्यास लगे, तो मिश्री खिलाकर जल पिलाना या मीठा नीबू चूसनेको देना। ज्वरका समय टल जाने पर, साबूदाना और मिश्री दूधमें या जलमें पकाकर खिलाना। महाज्वरांकुश वटियों और इस नुसखेसे हमने शीतज्वर (जाड़ा लगकर चढ़नेवाले ज्वर) के अनेक रोगी शर्तिया आराम किये हैं।

(१४) नीमकी छाल, चिरायता, पटोलपत्र, हरड़, नागरमोथा, करञ्ज के पत्ते, लालचन्दन और कुटकी—इन आठ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर अठगुने जलमें रातके समय भिगोदो, सवेरे भभकेसे अर्क निकाल लो। ज्वर चढ़नेसे पहले, दो दो तोला अर्क, तीन तीन घण्टेके बाद, तीन बार रोगीको पिलाओ। इस अर्कसे एकही पारीमें फसली बुखार आराम हो जाता है। यह मलेरियाके नाश करनेमें कुनैनसे विशेष गुणदायक है। चढ़े हुए ज्वरमें देनेसे ज्वरका वेग तत्काल कम होजाता है। अगर ज्वरका वेग अत्यन्त तीव्र हो और दिमागकी तरफ ज्वर की गरमी जियादा बढ़ गई हो तो लोबानको बारीक पीस कर, दो दो रत्ती की मात्रासे, २।३ बार जलके साथ खिलाओ। इससे चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है। ज्वरकी गरमी तत्काल कम होजाती है और रोगीको चैन आजाता है। लेकिन जब बुखार ९९ या ९८॥ डिग्री रहजाय, तब यह लोबानकी मात्रा भूलकर भी मत देना। इस दवामें यह विशेष गुण है कि, यह एन्टीफेबरिनकी तरह शीत नहीं लाती और रोगीको कमजोर नहीं करती।

नोट—यह नुसखा लाला-घनश्यामलाल वैश्यने "वैद्य" में आजमाकर लिखा है। लाला बांकेलाल अग्रवाल, निसौली वाले चढ़े ज्वरको उतारनेका एक और उपाय लिखते हैं। आपका कहना है,—पहले १ छटाक सौंफको लेकर घीके साथ कढ़ाईमें भूनलो। पीछे दूनी चीनी मिलाकर, किसी मोटे कपड़ेमें बांधकर, ऊपरसे

मिट्टीका लेप करके और धूपमें सुखाकर, भाडकी गरम बालूमें दाब दो। दो घण्टे बाद निकालकर और खोलकर, बारीक पीस लो। इसमेंसे तोले-तोले भर चूर्ण गरम जलके साथ एक-एक घण्टेमें २।३ बार देनेसे चढा हुआ ज्वर तत्काल कम हो जाता है।

आककी छालको सुखाकर, पीस कूटकर चूर्ण करलेने और दो-दो रत्ती चूर्ण गुडके साथ खानेसे भी चढा हुआ ज्वर उतर जाता है, परन्तु ऐसे उपाय, हमारी समझमें मलेरिया ज्वरोंमें जो जाडा लग कर चढते हैं करने चाहियें। जो ज्वर स्वभावसे अपनी अवधि तक बने रहते हैं, उनको जबरदस्ती इस तरह उतारना ठीक नहीं है। प्रथम तो वे इन दवाओंका असर मिटतेही फिर उसी तरह चढ आते हैं, दूसरे औरभी खतरोंकी सम्भावना रहती है। पर जाडेके ज्वरोंमें, जो आपही अपने समय पर उतरते हैं, समयसे पहले उतारने मे हानि नही। इस तरह ज्वर उतारनेसे रोगीको सुख होता है। हमने इस तरह सैकडी बार ज्वर उतारे हैं और पीछे रोकनेकी दवाएँ देकर ज्वर आराम कर दिये हैं। इस तरह पर उतारा हुआ ज्वर फिर अपने समय पर आता है, इन दवाओं से रुकता नही। रुकता है—रोकने की दवासे। ऐसी दवाओंसे यही फायदा है, कि रोगीको पीडा कम होजाती है, उसे विशेष कष्ट नही भोगना होता। यही हाल एण्टीफेब्ररिनका है।

(१५) शुद्ध वत्सनाभ विष ५ माशे, रससिन्दूर २ माशे करञ्जवेकी गिरी ६ माशे और सत्तगिलोय १ तोला—इन सबको एकत्र खरल में डाल कर, नीबूके रस मे घोट कर, दो दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो। ज्वर चढनेसे ६ घण्टे पहले, हर दो दो घण्टेमें, एक एक गोली शहदमें पीसकर खानेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब प्रकारके पुराने ज्वर दूर हो जाते

हैं। यह नुसखा लाला शालिग्राम वैश्यका आजमाया हुआ है। हमने "वैद्य" मुरादाबादसे लिया है।

(१६) घीग्वारका कन्द १० माशे, जरा गरम जलमें पीसकर पिलाने से वमन होकर कफ सूख जाता है और विषमज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) नीमकी छालके काढ़ेमें, धनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वर या मलेरिया ज्वरमे कुनैनसे अधिक लाभ होता है। परीक्षित है।

(१८) काली तुलसीके ४ पत्ते, बबूलके ४ पत्ते और अजवयान १ माशे—इन सबको जलमें पका और शीतल करके, ज्वर चढ़नेसे पहले बालकको पिलानेसे बालकोंका मलेरिया ज्वर चला जाता है।

(१९) कालाजीरा, एलुआ, सोंठ, कालीमिर्च, बकायनकी निबौली और करञ्जवेकी मींगी—इन सबको जलमें पीसकर चने बराबर गोलियाँ बनालो। तीन तीन घण्टेके अन्तरसे दिन भरमें ३ गोली खानेसे आनेवाला ज्वर रुकता है और चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है।

नोट—यह नुसखा परीक्षित है। इसे केवल मलेरिया ज्वरोंमेंही इस्तमाल करना चाहिये।

(२०) गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, पद्मकाष्ठ और लालचन्दन—इनका काढ़ा पीनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होकर ज्वर नाश होता है, दाह, मुँहसे लार गिरना, प्यास, वमन और अरुचि ये सब विकार इस से नाश होते हैं। इसको "अमृतादि क्वाथ" कहते हैं। यह सब तरहके बुखारोंको नाश करता है। परीक्षित है। अगर इसका भमकेसे अर्क खींच लिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? हमने अर्क से बहुत लाभ उठाया है।

(२१) छिली मुलहटी ६ माशे और खुरासानी अजवायन ३ माशे— इनका काढा, ज्वरकी पारी आनेसे पहले, पीनेसे पारीका ज्वर निश्चयही आराम हो जाता है।

(२२) शतावर ६ माशे और जीरा ६ माशे – इनका चूर्ण १ छटाँक जलमें घोलकर पीनेसे, कई दिनमें, जाडेका ज्वर जरूर चला जाता है। उत्तम नुसखा है।

प्लीहानाशक नुसखे।



बुखार के बहुत दिन शरीरमें रहने से, मलेरिया के बुखार मे या मलेरिया की जगह में रहने से अथवा मीठे और चिकने प्रभृति पदार्थों से खून बढ़ कर प्लीहा होती है। पेट में बायी तरफ ऊपर की ओर प्लीहा या तिल्ली होती है। जब उस में कुछ विकार नही होता, तब वह हाथ से मालूम नही होती; पर बडी होने से कोख के बायी ओर हाथ लगाते ही मालूम होती है। इस रोग में सदा मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है या रोज किसी न किसी समय ज्वर आया करता है। बहुधा शीत ज्वर होता है। उस समय तिल्ली की जगह में दर्द होता है, दस्त साफ नही होता, शरीर दुर्बल हो जाता है, प्यास लगती है, वमन होती है, मुँह का जायका खराब हो जाता है, आँखों के सामने अँधेरी आती है, आँख और उँगलियाँ पीली-पीली सी हो जाती हैं, पेशाब कम और लाल होता है, भूख मारी जाती है, बढ जाने पर बेहोशी प्रभृतिके भी लक्षण होते हैं। इस में ज्वर और तिल्ली को दवा मिलाकर देनी चाहिये। अगर ज्वर का जोर हो, तो तिल्ली की दवा बन्द करके ज्वर का इलाज करना चाहिये। पीछे ज्वर जाने पर तिल्ली का इलाज करना चाहिये।

(१) नागफनीके पत्तोंको चाकूसे अच्छी तरह छीलकर, छोटे छोटे टुकड़े कर लो। एक तोला टुकड़ा सवेरे और एक तोला शामको नमकके साथ खाओ। इस उपायसे प्लीहा शीघ्रही कम हो जाती है। एक परमहंस बाबा कहते हैं कि, आसाममें मलेरियाके सबबसे हमारी तिल्ली बढ़ गई, अनेक उपाय किये, पर लाभ न हुआ। इस उपायसे ५।७ दिनमें हमें बिल्कुल आराम होगया।

(२) आकके पत्तोंमें नमक मिलाकर राख करलो। पीछे उस राख को बलाबल अनुसार शहदके साथ सेवन करो। इससे घोर तिल्ली भी घटकर ठीक हो जाती है।

(३) शहदमें पीपरका चूर्ण मिलाकर कुछ दिन लगातार खानेसे ताप-तिल्ली, हिचकी, श्वास, खाँसी और ज्वर निश्चयही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) अगर गरमी या रक्तकोपसे तिल्ली हो, तो "इस्लीम" नामकी नसका बाईं ओरसे खून निकलवा दो, आराम हो जायगा।

(५) दो तोला अञ्जीर सिरकेमें डुबोकर सवेरे-शाम लगातार कुछ दिन खानेसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है।

(६) हमारा "अकबरी चूर्ण" ७।१४ या २१ दिन खानेसे तिल्ली निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) दो रत्ती नौसादर रोज-रोज खानेसे तिल्ली गल जाती है। परीक्षित है।

(८) जामुनका सिरका पिलानेसे भी तिल्ली नष्ट हो जाती है।

(९) अगर तिल्लीवाले रोगीके बदनमें खून बहुत ही कम हो, तो पावभर गायका दूध औटाकर, नीचे उतारकर, उसमें ६ माशे घी, १० माशे शहद, २ तोले मिश्री, १ रत्ती पीपर और ७ कालीमिर्च —सबको मिलाकर पिलानेसे खून भी बढ़ेगा और तिल्ली भी आराम होगी। परीक्षित है।



धातुगत ज्वरों के लक्षण* ।

— ★ ★ ★ —

रसगत ज्वरके लक्षण ।

गुरुता हृदयोत्क्लेश सदनच्छर्द्यरोचकौ ।
रसस्थे तु ज्वरो लिङ्गं दैन्यं चास्योपजायते ॥

शरीरमें भारीपन, हृदय में रहनेवाले दोष के बढने से जी मिचलाना, ग्लानि, ओकारी, अरुचि और दीनता—ये रसगत ज्वर के लक्षण हैं। "चरक"में—शीत, उद्वेग, शरीर का रहजाना, अँगडाई और जम्भाई आदि लक्षण लिखे हैं।

नोट—इस धातु मे ज्वर हो तो लघन कराना हित है।—सुश्रुत।

रक्तगत ज्वरके लक्षण ।

रक्तनिष्ठीवन दाहोमोहश्छर्दनविभ्रमौ ।
प्रलाप पिडिका तृष्णारक्तप्राप्तेज्वरे नृणाम् ॥

खून थूकना, दाह होना, बेहोशी, वमन, भ्रम, प्रलाप, शरीर में फुन्सी वगैर. होना और प्यास जियादा लगना – ये रक्तगत ज्वर के

---

* "भावप्रकाश" मे लिखा है—यद्यपि रस नामक धातुमे रहनेवाला ज्वर पहले कहा हुआ सन्तत ज्वर ही है और इसी तरह अन्य धातुओ मे रहनेवाले ज्वर भी विषम ज्वरों मे कहे गये हैं, तथापि उन धातुओं मे रहनेवाले ज्वरों के लक्षण और चिकित्साको अनुक्रम से कहने के लिये यहाँ लिखते हैं।

लक्षण हैं। "चरक" में वारम्बार फुन्सियों का होना और देह का रंग लाल होना अधिक लिखा है।

नोट—रक्तगतज्वर में सेचन, शमन, लेपन तथा मूत्र निकलवाना हित है। सुश्रुत। "चरक" में लिखा है, ज्वर रक्तस्थ होनेसे (रक्तपित्तज्वरमें) शीतल परिषेक लेप और संशमन औषधि हितकर हैं।

मांसगत ज्वरके लक्षण ।

पिण्डिकोद्वेष्टन तृष्णाछर्दमूत्रपुरीषता ।
ऊष्मांतर्दाहविक्षेपौग्लानि स्यान्मांसगेज्वरः ॥

पिंडलियों में दण्डे वगैर लगने की सी पीड़ा होना, प्यास लगना, मल मूत्र जियादा उतरना, शरीर के भीतर गरमी और दाह का होना, हाथ पाँव इधर उधर फेंकना और ग्लानि,—ये मांसगत ज्वर के लक्षण हैं। "चरक" में अत्यन्त अन्तर्दाह, मलकी रुकावट और दुर्गन्ध मारना ये लक्षण अधिक लिखे हैं।

नोट—सुश्रुतने मांसगत ज्वर में तीक्ष्ण विरेचन—तेज जुलाब देनेकी राय दी है। चरक ने लिखा है,—ज्वर मांसस्थ हो और मेदस्थ हो (पिडिका जनित ज्वर हो) तो विरेचन देना और उपवास कराना चाहिये।

मेदोगतज्वरके लक्षण ।

भृशं स्वेदस्तृषामूर्च्छाप्रलापश्छर्दिरेवच ।
दौर्गन्ध्यारोचकौग्लानिर्मेदःस्थेचासहिष्णुता ॥

अत्यन्त पसीने आना, अधिक प्यास लगना, मूर्च्छा, प्रलाप, वमन, देह में बदबू आना, ग्लानि, अन्न में अरुचि, सहन शक्ति का अभाव,—ये लक्षण मेदोगत ज्वरके हैं।

नोट—मेदोगत ज्वर मे पसीने इसलिये जियादा आते हैं कि पसीना मेदका मेल है। दुर्गन्ध ऐसी खराब आती है जो स्वयं अपने तई बुरी मालूम होती है। सुश्रुतमें कहा है,—इसमें मेदनाशक यानी शोषण उपाय हितकर हैं।

अस्थिगतज्वरके लक्षण ।



भेदोऽस्थ्नाकूजनंश्वासोविरेकश्छर्दीरवच ।
विक्षेपणंचगात्राणामेतदस्थिगतेज्वरे ॥

हड्डियों में भेदने की सी पीडा, कण्ठ में गरमी, पेट बोलना, श्वास, दस्त, वमन, हाथ पैर इधर उधर पटकना—ये लक्षण अस्थिगत ज्वर के हैं।

नोट—सुश्रुतने कहा है,—अस्थिगत ज्वरों में वातनाशक विधि, तेल की मालिश पसीने दिलाना और मर्दन वगैर करना चाहिये। चरकने कहा है,—अस्थि और मज्जागत ज्वरो मे (धनुस्तंभ पक्षाघात प्रभृति वातसृष्ट ज्वरो मे) निरूह और अनुवासन वस्ति का प्रयोग करना चाहिये।

मज्जागतज्वरके लक्षण ।



तम प्रवेशनहिक्काकास शैत्यवमिस्तथा ।
अन्तर्दाहोमहाश्वासोमर्मच्छेदश्चमज्जगे ॥

अँधेरी आना, हिचकी, खाँसी, जाडा लगना, वमन, भीतर दाह का होना, महाश्वास और मर्मस्थानों में फोडने की सी पीडा—ये लक्षण मज्जागत ज्वरों के हैं।

नोट—यह ज्वर असाध्य या अचिकित्स्य—लाइलाज है। इस मे बाहर शीत और भीतर दाह रहता है। इस रोगवाला रोगी नहीं बचता। अगर किसी तरह बच भी जाता है, तो शेष मे पक्षाघात रोग से मर जाता है। सुश्रुतने कहा है,—मज्जा और शुक्रगत ज्वरवाले का इलाज न करना चाहिये।

शुक्रगतज्वरके लक्षण ।



मरणं प्राप्नुयात्तत्रशुक्रस्थानगतेज्वरे ।
शेफस स्तब्धतामोक्ष शुक्रस्यचविशेषत ॥

रसादि धातुगत ज्वर के शुक्र-स्थान में पहुँचने से रोगी की मृत्यु होती है*। इस ज्वर में लिंग जकड़ जाता है या जड़ हो जाता है और वीर्य अधिकतासे बहता है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है,—रक्त आदि पदार्थोंका थोड़ा-थोड़ा स्राव होता है।

साध्यासाध्यता।



"चरक"में लिखा है,—ज्वर—रस और रक्त के आश्रय होने से साध्य होता है। मेद, मांस, अस्थि और मज्जागत होने से कृच्छ्र-साध्य होता है। शुक्र में होने से असाध्य होता है।

चिकित्सकके ध्यान देने योग्य विषय।



"चरक"में लिखा है—शीतल, उष्ण, स्निग्ध और रूक्ष आदि क्रिया करने से अगर ज्वर न छूटे, तो जानना चाहिये कि, यह ज्वर केवल दोषाश्रित ही नहीं है, शाखाश्रित भी है, अर्थात् इसका सम्बन्ध रक्त आदि धातुओं से भी है। इस प्रकारका ज्वर फस्त खुलाने से जाता है।

जब आप गरम और सर्द चिकना और रूखा प्रभृति सब तरह का इलाज कर हारे, पर ज्वर न जाय, तब तो कम से कम आपको इस बात पर नजर दौड़ानी चाहिये कि, कहीं ज्वर का सम्बन्ध धातुओं से तो नहीं हो गया है, क्योंकि किसी धातु से पूरा सम्बन्ध किये बिना ज्वर बहुत दिनों तक नहीं रह सकता। जिस धातु में ज्वर हो, उस धातु से उसका सम्बन्ध अलग करने से ही वह भाग जायगा।

* वीर्यके स्थान में ज्वर के जाने से मृत्यु होती है, यह बात ठीक नहीं है, क्योंकि वीर्य तो सारे शरीर में रहता है। वीर्यके रहने के मुख्य स्थानों में जो वीर्य है, उसमें ज्वरके जाने से मृत्यु होती है, यह मतलब है।

चिकित्सा ।

—(*)*:*:—

सप्त धातुगत ज्वरनाशक नुसखे ।

—(*)*(*)—

(१) आमला, जीरा, पीपल, चीतेकी जड, कौंच के बीज और हरड—इन सबको एक-एक तोले लेकर कूट पीस कर छान लो। पीछे इस चूर्ण मे गिलोय का सत्त १ तोले मिला कर, शीशी में रख दो। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाने और ऊपर से गायका दूध पिलाने से सब तरह के धातुगत ज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—एक सालके पुराने गुड मे चूर्ण मिलाकर गोलियाँ बना लेने और गोली खिलाकर, ऊपर से गाय का दूध पिलानेसे भी लाभ होता है।

(२) शहद ३ माशे, घी ६ माशे, पीपल १ तोले, चीनी २ तोले और दूध ८ तोले, दालचीनी ६ रत्ती, तेजपात ६ रत्ती, छोटी इलायची ६ रत्ती और नागकेशर ६ रत्ती—इन में से शहद को अलग रख कर, बाकी सब को मिला और पका कर खोआसा कर लो। खोआ हो जाने पर उतार कर, उस में शहद मिला कर लड्डू बना लो। अपने बलके अनुसार हर दिन एक लड्डू खाने से वीर्यगत ज्वर, दमा, खाँसी, पीलिया, वीर्यक्षय और अग्नि की मन्दता—ये आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—वीर्यगत ज्वर आराम नहीं होता, पर इस नुसखे के कुछ दिन पच जाने से कई रोगी आराम होते देखे गये हैं।





जीर्ण ज्वरके लक्षण ।



"भावप्रकाश" में लिखा है—

यो द्वादशभ्यो दिवसेभ्यो उर्द्ध दोषत्रयभ्यो द्विगुणेभ्य उर्द्धम् ।
नृणां तनौ तिष्ठति मन्दवेगो भिषग्भिरुक्तो ज्वर एष जीर्णः ॥

जो ज्वर बारह दिन के बाद और तीनों दोषों की अवधि के दूने दिनों के उपरान्त मनुष्यों के शरीर में मन्दा मन्दा रहता है, उसे वैद्य "जीर्ण ज्वर" कहते हैं ।

खुलासा यह है, जो ज्वर बारह दिन के उपरान्त रहे, वात-ज्वर चौदह दिन के बाद रहे, पित्त ज्वर २० दिन के बाद रहे और कफज्वर २८ दिन के बाद रहे और ज्वरका वेग मन्दा हो, तो वह "जीर्ण ज्वर" है ।

"वङ्गसेन" में लिखा है,—

न शाम्यति ज्वरा यस्य पक्षादूर्ध्वं शरीरिणाम् ।
मन्दवेगानुचारी च स ज्ञेयो जीर्णतां गतः ॥

जो ज्वर पन्द्रह दिन के पीछे भी शान्त नहीं होता और मन्द वेग से बना रहता है, वह पुराना हो जाता है, यानी पन्द्रह दिन के बाद ज्वर जीर्ण हो जाता है ।

"वैद्यविनोद"में लिखा है,—

मलत्रय दिनादूर्ध्वं तनुता प्राप्य तिष्ठति ।
प्लीहाग्निमान्द्य तनुते स जीर्णज्वर उच्यते ॥

जो ज्वर २१ दिन के बाद सूक्ष्म होकर शरीर में रहता है और प्लीहा तथा मन्दाग्नि को बढ़ाता है, वह "जीर्ण ज्वर" कहलाता है।

जो ज्वर रोज मन्दा मन्दा बना रहता है, जिस में रूखापन, सूजन, शरीर की जकड़न और अत्यन्त कफ होता है, उसे "वातबलासक जीर्णज्वर" कहते हैं। यह ज्वर कष्टसाध्य होता है।

नोट—जीर्णज्वर रोगीको कभी भी लघन न कराने चाहिये, क्योंकि लघन या उपवास से रोगी कमजोर हो जाता है और ज्वर बलवान् हो जाता है। हाँ, अगर जीर्णज्वर में कुपथ्य सेवन करने से दोष फिर कुपित हो जायँ, तो पहले लघन कराकर, फिर पूर्वोक्त ज्वरकी चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसे मौके पर भी जियादा लघन न कराने चाहिये। कहा है—

जीर्णज्वरी नर कुर्यान्नोपवासं कदाचन ।
ज्वरक्षीणस्य नहितं वमनं न विरेचनं ॥
कामंतु पायसतस्य निरूहैर्वाहरेन्मलान् ॥

जीर्णज्वर-रोगीको उपवास न कराना चाहिये। ज्वर से क्षीण हुए रोगीको वमन और विरेचन भी हितकारी नहीं है। उसे इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये और निरूह वस्ति (पिचकारी या एनीमा) से मल को निकाल देना चाहिये।

धातुगत और जीर्णज्वरकी चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें।

—※※※—

(१) रसगत ज्वरमें वमन और लघन कराने चाहिये। रक्तगत ज्वरमें जलसे सींचना, शमन औषधि, लेप और रक्तमोक्षण

यानी फस्द आदिसे खून निकलवाना हित है। मांसगत ज्वरमें तीक्ष्ण विरेचन कराना चाहिये। मेदगत ज्वरमें मेद-नाशक चिकित्सा करानी चाहिये। अस्थिगत ज्वरमें वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये तथा वस्तिकर्म, अभ्यङ्ग—तैल मर्दनादि एवं उद्वर्तन—ये सब करने चाहियें। मज्जा और शुक्रगत ज्वररोगियोंकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये। ये रोगी मर जाते हैं। रस, रक्त मांस और मेदगत ज्वर साध्य हैं, अस्थिगत और मज्जागत कष्टसाध्य हैं, शुक्रगत ज्वर असाध्य है। जब शुक्रके स्थान में ज्वर पहुँच जाता है, तब प्राय, रोगी मरही जाता है।

(२) जीर्णज्वरमें शिरोविरेचन करने यानी नास देनेसे सिरका भारीपन और सिरका दर्द नाश हो जाता है, इन्द्रियोंमें चैतन्यता और रुचि होती है, इसलिये जीर्णज्वरमें शहद या तेलके द्वारा नस्य अवश्य देनी चाहिये। जैसे :—हींग और सेंधेनोनको पुराने घीमें मिलाकर नास लेनेसे जीर्णज्वरीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(३) नस्य, लंघन, चिन्ता, मैथुन, भय, शोक और क्रोध प्रभृति कारणों से तथा कफके अत्यन्त क्षय हो जानेसे निद्रानाश हो जाती है। जीर्णज्वरमें रोगी का कफक्षय हो जाता है, रूखेपनके मारे वायु कुपित रहता है इसलिये रोगीकी नींद मारी जाती है। उस दशामें रोगीको नींद लानेके लिये ऊपरी उपायोंसे काम लेना चाहिये। नींद लानेवाले अनेक परीक्षित उपाय हम पहले पृष्ठ १२५—१२६ में लिख आये हैं।

(४) क्षीणकफवाले, जीर्णज्वरवाले, अन्नद्वेषवाले, प्यास और दाहसे पीड़ितको दूध पिलाना अत्यन्त हितकारी है परन्तु यही दूध नवीनज्वरमें विष है। जीर्णज्वरमें ज्वरकी गरमी और शरीरके

रूक्षपनके कारण वायु कुपित हो जाता है, उसके शान्त करनेके लिये उसी तरह घृत पिलाना चाहिये , जिस तरह जलते हुए घरको आग बुझानेको जल सींचते हैं ।

(५) ज्वरसे क्षीण मनुष्यको न वमन हित है न विरेचन हित है। ऐसे रोगी को इच्छानुसार दूध पिलाना चाहिये अथवा निरूह वस्ति द्वारा मल निकालना चाहिये । ज्वरके शान्त हो जानेपर भी यदि अरुचि, अङ्गग्लानि और विवर्णता हो तथा अङ्गमें मलादिक जम गये हों , तो अनुबन्धके भयसे वमन विरेचन द्वारा सफाई कर देनी चाहिये ।

(६) सब तरहके जीर्णज्वरोंमें जब वातादि दोष पक्वाशयमें प्राप्त हो जायँ, तब स्नेहवस्तिका प्रयोग करना चाहिये ।

(७) चन्दनादि तैल, नारायणतेल और लाक्षादितेल ये तीनों तेल जीर्णज्वरमें अच्छे हैं। इनकी मालिशसे बहुत फायदा होता है। "चन्दनादितेल" शोषमें बड़ा लाभदायक है। "नारायणतेल" बादी के रोग नाश करनेमें रामबाण है। "लाक्षादितेल" विषमज्वरोंपर अच्छा है। हमने लाक्षादि तेलको जीर्णज्वर रोगियोंके मलवा कर बहुत लाभ उठाया है। जीर्णज्वरी रोगीके इनमेंसे, विचार कर, किसी तेलकी मालिश अवश्य करानी चाहिये।

(८) आप पहले जो क्रिया करें उससे लाभ न होवे, तो सिरपर हाथ रख कर न बैठे रहें, दूसरी क्रिया करें , परन्तु जब पहली क्रियाका वेग शान्त हो जाय तब दूसरी क्रिया करें , क्योंकि सङ्कर या मिली हुई क्रिया रोगीके हक़में हानिकारक होती है।

(९) जीर्णज्वरमें कुपथ्य सेवन करनेसे अगर वातादिक दोष फिर बढ़ जावें , तो पहले लंघन कराकर ज्वरका इलाज करना चाहिये , पर जीर्णज्वरसे क्षीण हुए रोगीके बलका ध्यान अवश्य रखना चाहिये ।

(१०) अगर रोगी बलवान हो, दोष थोड़े हों और उपद्रव न हों, तो ज्वर को साध्य समझकर इलाज करना चाहिये। ऐसा रोगी बिना कष्टके आराम हो जाता है।

शरीरके बाहर अत्यन्त सन्ताप हो और प्यास वगैर उपद्रव कम हों, तो बहिर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहियें, यह ज्वर सुखसाध्य है।

अगर शरीरके भीतर दाह हो, प्यास बहुत ही हो, रोगी व्यर्थ बकता हो, श्वास हो, भ्रम हो, सन्धियों और हड्डियोंमें दर्द हो, पसीने न आते हों, वायु अच्छी तरह न सरती हो और मल न उतरता हो, तो अन्तर्वेग ज्वरके लक्षण समझने चाहिये।

(११) जिस तरह कालके कारणसे दोषोंकी प्रवृत्ति और वृद्धि होती है, उसी तरह उपशय और अनुपशय को भी समझना चाहिये। जिन आहार विहारादिसे दोष नष्ट हो, वह उपशय है और जिन आहार विहारादिसे दोष बढ़े वह अनुपशय है। उपशय और अनुपशय का ख़याल रखनेसे चिकित्सककी बड़ा भारी सुभीता होता है। रोगीको किस वस्तुसे लाभ होता है, किससे हानि होती है, इसपर नजर रखनेसे रोगनाशकी चाबी मिल जाती है,—भूल-सुधार हो जाता है।

(१२) ज्वरमें ऋतुके अनुसार दूष्यता और प्रमेहमें दोषोंके समान दूष्यता और रक्तगुल्ममें पुरानापन—ये सुखसाध्यता के चिह्न हैं।

(१३) जीर्णज्वरवालेको दाह हो, तो "षट्कतैल"की मालिश करानी चाहिये, इससे दाह और शीत दोनों नाश हो जाते हैं। "प्रह्लादन तेल" भी दाह नाश करनेमें उत्तम है। ये दोनों तेल दाहपर आजमाये हुए हैं। सिरमें दर्द हो, तो नस्य या लेप करना चाहिये। अगर दस्त होते हों तो ज्वरातिसारके नुसख़ोंसे काम लेना चाहिये, न कि अतिसार नाशकसे। हिचकी, खाँसी प्यास

प्रभृति उपद्रव हों, तो उनका यथोचित उपाय करना चाहिये। ज्वरके दशों उपद्रवोंके नाश करनेके उपाय हम पुस्तकके अन्तमें लिखेंगे। अपनी बुद्धिसे विचारकर, जहाँ जो उचित हो वहाँ वही नुसखा काममें लाना चाहिये। हमने जीर्णज्वरके छोटे-बड़े जितने नुसखे लिखे हैं, प्राय, सभी परीक्षित हैं , पर किस रोगी को कौनसा नुसखा देना चाहिये, यहाँ थोड़ी अक्लकी जरूरत है।

(१४) जो जीर्णज्वरी रोगी काढ़े तथा वमन विरेचनसे आराम न हो, उसे औषधियोंके बने घी पिलाकर आराम करना चाहिये और "लाक्षादि तेल"की मालिश करानी चाहिये। अगर जीर्णज्वर वाला दाह से दुखी हो, हाथ पैरके तलवे जले जाते हों, तो उसके बदनमें या जहाँ जहाँ दाह हो "षट्शतक" तेलकी मालिश करानी चाहिये। "षट्शतकतेल"में तेलसे तक छैगुना गिरता है, इसी से उसे "षट्शतक तेल" कहते हैं , षट्शतक तेल जीर्णज्वर वालेके दाह और शीत दोनोंको आराम करता है। उसके बनानेकी विधि पीछे लिख आये हैं।

(१५) ज्वर किसी धातुमें अपना पूरा सम्बन्ध किये बिना बहुत दिनों तक नही रह सकता है। इसलिये जब देखो कि, गरम सर्द उत्तमोत्तम औषधियाँ देनेसे भी ज्वर नही जाता, तब पता लगाओ कि, ज्वरका सम्बन्ध रस, रक्त माँस, मेद आदि किस धातुसे है। पता लगनेपर ऐसी चिकित्सा करो, जिससे ज्वर का सम्बन्ध धातुसे छूट जाय। धातुसे सम्बन्ध छुटतेही ज्वर आराम हो जायगा।

जीर्णज्वरकी चिकित्सा।



वर्द्धमानपिप्पली।



(१) पहली विधि—गायके दूधमें पाँच पीपल डालकर, कलईदार बर्तनमें पकाओ, जब दूध औटजाय, तब पीपल खाकर ऊपर से दूध पीजाओ अथवा पीपल न खाकर खाली दूध पीजाओ। दूसरे दिन ३ पीपल बढाओ यानी ८ पीपल डालकर दूध औटाओ और दूधको पीजाओ। तीसरे दिन ११ पीपल, चौथे दिन१४पीपल, पाँचवें दिन १७ पीपल, छठे दिन २० और सातवें दिन २३ पीपल औटाकर पीओ। पीछे आठवें दिनसे तीन तीन पीपर घटाकर दूधमें डालो, यानी पहले दिन २० पीपर, दूसरे दिन १७ तीसरे दिन १४, चौथे दिन ११, पाँचवें दिन ८, छठे दिन ५ और सातवे दिन ३ पर आजाओ। सात दिन ५ से आरम्भ करके, तीन तीन पीपल रोज बढाकर दूधमें डालो और २३ तक पहुँचनेपर फिर तीन तीन पीपर रोज घटाकर दूधमें डालो। यही "वर्द्धमान पिप्पली है। इसके सेवनसे जीर्णज्वर, खाँसी, पीलिया, गुल्म, बवासीर, प्रमेह, अग्निमांद्य और वातरोग—ये रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

दूसरी विधि—पहले दिन १० पीपल दूधमें औटाकर दूध पीओ। दूसरे दिन २०, तीसरे दिन ३०, चौथे दिन ४०, पाँचवे दिन ५०, छठे दिन ६०, सातवें दिन ७०, आठवें ८०, नवें दिन ९०, और दसवें दिन १०० पीपल औटाओ। इसके बाद घटा घटाकर पीओ। पहले दिन ९०, दूसरे दिन ८०, तीसरे दिन ७०, चौथे दिन ६०, पाँचवें दिन ५०, छठे दिन ४०, सातवे दिन ३०,

आठवें दिन २० और नवें दिन १०, पीपल डालकर दूध औटाकर पीओ। यह प्रयोग सबसे उत्तम है। ६।६ पीपल बढाना मध्यम है और तीन-तीन बढाना कनिष्ट है, पर आजकल के लोगों को तीन-तीन का योग ही जियादा हितकर है।

नोट—वर्द्धमान पीपलका योग पाण्डु रोग पर है, पर यह जीर्ण ज्वरको, जिसमें कफ-प्रधान हो अवश्य आराम करता है। अगर रोगीका मिजाज गरम हो, तो एक-एक पीपर रोज बढाकर भी दे सकते हो, पर तीन तीन बढाना साधारण तौरसे अच्छा है। यह बात रोगीके मिजाज और ताकत पर मुनहसिर है। अगर रोगीको इस नुसखेसे गरमी या जलन मालूम होने लगे तो बन्द कर देना चाहिये।

तीसरी विधि—गायका दूध ४ तोला, जल १६ तोला और पीपल तीन तोला—सबको कलईदार बर्तनमे डालकर औटाओ। जब सब पानी जलकर दूधमात्र रहजाय उतार लो। पीपल चबाकर खा जाओ और ऊपरसे दूध पी जाओ।

पञ्चमूली क्षीरपाक।

(२) सरवन, पिथवन, छोटी कटरी, बडी कटेरी और बडा गोखरू—इन पाँचोंकी जडोंको २॥ तोला लेकर, जरा कुचल लो। पीछे एक मिट्टीके बर्तनमें अठगुना दूध और दूधसे चौगुना पानी डालकर, मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और रोगीको पिला दो। यह दूध सब तरहके जीर्णज्वरों पर उत्तम है। इससे श्वास, खाँसी सिरका दर्द, पसलीकी पीडा और जुकाम—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

सितादि क्षीर।

—*—

(३) चीनी, घी, सोंठ, छुहारे और काली दाख—इन सबको अढाई तोला लेकर पाव भर दूध और एक सेर जलमें मिलाकर औटा

ओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रहजाय, उतारकर मल छान लो और शीतल करके, ३।४ माशे शहद डालकर, रोगीको पिलाओ। इस नुसखेसे प्यास, दाह और जीर्णज्वर शान्त होता है और इससे दस्त भी साफ हो जाता है। परीक्षित है।

वासादि घृत।

(४) (क) अड़ूसेके पत्ते, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण और धमासा—इन पाँचोंको पाँच-पाँच तोले लेकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें डालकर, ऊपरसे ५ सेर जल डालकर भिगो दो। सवेरे आगपर रखकर पकाओ, जब सेर सवा सेर जल रहजाय, उतारकर रखलो। शीतल होने पर मल छानकर इस काढ़ेको १ साफ मिट्टीके बर्तनमें पास रख लो।

(ख) पीपल, नागरमोथा, मुनक्का-दाख, लालचन्दन, कमलगट्टेकी गिरी और सोंठ—इन छहोंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदी सी बनालो।

(ग) गायका दूध २॥ सेर और घी १। सेर तैयार रखो।

(घ) कलईदार कड़ाहीमें, दूध, घी, काढ़ा और लुगदी चारोंको चढ़ा कर मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल जाय, केवल घी रह जाय, उतारकर शीतल करलो। पीछे घीको किसी अच्छे मिट्टीके या चीनीके बर्तन में निकालकर रख दो। यही "वासादि घृत" है।

"वङ्गसेन"में लिखा है, इस घृतसे जीर्णज्वर नाश होता है। जिस जीर्णज्वर रोगीको ज्वरके साथ खाँसी हो और शरीर दिन-दिन क्षीण होता जाता हो, उसे यह घृत पिलानेसे अवश्य फायदा होता है।

इस घीकी मात्रा बलाबल पर निर्भर है। फिर भी कमजोर रोगीके लिये कम से कम ८।६ माशे घी मिलाकर देखना चाहिये। अगर पच

जाय, तो धीरे-धीरे बढ़ाकर आधी छटाँक तक ले जाना चाहिये। अगर घी पीनेसे जो खराब होने लगे, तो पान इलायची खिलाना चाहिये। घी पिलाकर, जल कभी न पिलाना चाहिये, अन्यथा खाँसी बढ़ जायगी। आधा घण्टा बाद जल पिलाने में हर्ज नहीं है।

नोट—इसके साथ-साथ खाँसीकी गोलियाँ भी चूसनेको दी जायें तो अच्छा हो। यदि घी पीनेसे जरा खाँसी बढ़ने भी लगे, तो घबराना मत। गोलियाँ चूसनेको देते रहना। कुछ दिन बाद खाँसी बिल्कुल जाती रहेगी। यह नुसखा भी परीक्षित है।

पिप्पल्यादि घृत।



(५) (क) पीपल, लालचन्दन नागरमोथा, खस, कुटकी, इन्द्रजौ, आमले, सारिवा, अतीस, शालिपर्णी, दाख, इमलीके बीज, त्रायमाण और कटेरी—इन १४ दवाओंको दो-दो तोले लेकर कुचलकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें पाँच सेर जलमें भिगोदो और सवेरे काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर रख लो।

(ख) इन्हीं १४ दवाओंको और लेकर पानीमें पीसकर लुगदी बना लो।

(ग) गायका दूध १२॥ सेर और गायका घी ऽ१ सेर लेकर रखलो।

(घ) काढ़ा, लुगदी और दूध तथा घी को कलईदार कड़ाहीमें चढ़ा कर मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल कर घृत मात्र रहजाय, उतारकर शीतल कर लो। पीछे घीको निकालकर अमृतवान या चीनीके बर्तनमें रखलो।

वङ्गसेनने लिखा है,—यह घृत तत्कालही जीर्णज्वरको नाश करता है। इसको भी ४ या ६ अथवा ८ माशे रोगीको प्रतिदिन सवेरे पिलाना चाहिये और ऊपरसे जल न पिलाना चाहिये। यह भी परीक्षित है। जीर्णज्वर और पुरानी खाँसीमें अवश्य लाभ दायक है।

नोट—परन्तु बहुतही कमजोर रोगियोंको, जिनमें जरा भी दम न हो, घी दूध आदि

न पिलाने चाहिये। जिन्हें कुछ भी न पचता हो, उन्हें "दुग्धफेन" खिलाने चाहिये। जीर्णज्वर और अतिसारमें दुग्धफेन बहुत फायदेमन्द है।

दुग्धफेन।

—(*)—

(६) गायका या बकरीका दूध दुहाकर तत्काल दो लोटोंमें लेकर, ऊँचेसे एक दूसरेमें उडेलो। इस तरह जो झाग आते जायँ, उन्हें निकाल निकालकर रखते जाओ। जब झाग आने बन्द हो जायँ, तब दूधको अलग रख दो। उन झागोंमें जरासी मिश्री मिलाकर रोगीको सवेरे-शाम खिलाओ। इन झागोंको अग्निमांद्य, जीर्ण ज्वर और अतिसारमें अवश्य खिलाना चाहिये।

(७) ६६ तोले गायका दूध मीठी आगसे अधऔटा करो। शीतल होनेपर उसमें चीनी और शहद दो-दो तोले, घी १॥ तोले और पीपलका चूर्ण एक तोले मिलाकर पीनेसे हृद्रोग, जीर्णज्वर, खाँसी और क्षय ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) शहद, घी, दूध, पीपल और चीनी—इन पाँचोंको एकत्र मथकर पिलानेसे विषमज्वर, हृद्रोग, खाँसी, दमा और क्षय नाश हो जाते हैं। इसे "पचसार" कहते हैं। परीक्षित है।

(६) घीग्वारका लुआब हर दिन ४ माशेसे १ तोले तक निकाल कर, उसमें ४ रत्ती जीरा और कालीमिर्च पीसकर मिला लो और खाओ। इससे शरीरमें छिपी हुई गरमी, प्रमेह और जीर्णज्वर, आराम हो जाते हैं। इस नुसखेके सेवन करनेसे कच्ची धातु भी निकल जाती है। परीक्षित है।

(१०) गिलोयके काढ़ेमें चौथाई शहद या ३ माशे पीपलका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जीर्णज्वर चला जाता है। अथवा गिलोयको रातके समय कुचलकर जलमें भिगो दो और सवेरे छानकर पी लेनेसे जीर्णज्वर आराम हो जाता है।

जाय, तो धीरे-धीरे बढ़ाकर आधी छटाँक तक ले जाना चाहिये। अगर घी पीनेसे जो खराब होने लगे, तो पान इलायची खिलाना चाहिये। घी पिलाकर, जल कभी न पिलाना चाहिये, अन्यथा खाँसी बढ़ जायगी। आधा घण्टा बाद जल पिलाने में हर्ज नहीं है।

नोट—इसके साथ-साथ खाँसीकी गोलियाँ भी चूसनेको दी जायँ तो अच्छा हो। यदि घी पीनेसे जरा खाँसी बढ़ने भी लगे, तो घबराना मत। गोलियाँ चूसनेको देते रहना। कुछ दिन बाद खाँसी बिल्कुल जाती रहेगी। यह नुसखा भी परीक्षित है।

पिप्पल्यादि घृत।



(५) (क) पीपल, लालचन्दन नागरमोथा, खस, कुटकी, इन्द्रजौ, आमले, सारिवा, अतीस, शालिपर्णी, दाख, इमलीके बीज, त्रायमाण और कटेरी—इन १४ दवाओंको दो-दो तोले लेकर कुचलकर, रातको मिट्टीके बर्तनमें पाँच सेर जलमें भिगोदो और सवेरे काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहनेपर मल-छानकर रख लो।

(ख) इन्ही १४ दवाओंको और लेकर पानीमें पीसकर लुगदी बना लो।

(ग) गायका दूध १२॥ सेर और गायका घी ऽ१ सेर लेकर रखलो।

(घ) काढा, लुगदी और दूध तथा घी को कलईदार कडाहीमें चढा कर मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध और काढा जल कर घृत मात्र रहजाय, उतारकर शीतल कर लो। पीछे घीको निकालकर अमृतवान या चीनीके बर्तनमें रखलो।

बङ्गसेनने लिखा है,—यह घृत तत्कालही जीर्णज्वरको नाश करता है। इसको भी ४ या ६ अथवा ८ माशे रोगीको प्रतिदिन सवेरे पिलाना चाहिये और ऊपरसे जल न पिलाना चाहिये। यह भी परीक्षित है। जीर्णज्वर और पुरानी खाँसीमें अवश्य लाभ दायक है।

नोट—परन्तु बहुतही कमजोर रोगियोको, जिनमे जरा भी दम न हो, घी दूध आदि

न पिलाने चाहिये। जिन्हें कुछ भी न पचता हो, उन्हें "दुग्धफेन" खिलाने चाहिये। जीर्णज्वर और अतिसारमें दुग्धफेन बहुत फायदेमन्द है।

दुग्धफेन।

—❀—

(६) गायका या बकरीका दूध दुहाकर तत्काल दो लोटोंमें लेकर, ऊँचेसे एक दूसरेमें उडेलो। इस तरह जो झाग आते जायँ, उन्हें निकाल-निकालकर रखते जाओ। जब झाग आने बन्द हो जायँ, तब दूधको अलग रख दो। उन झागोंमें जरासी मिश्री मिला कर रोगीको सवेरे-शाम खिलाओ। इन झागोंको अग्निमांद्य, जीर्णज्वर और अतिसारमें अवश्य खिलाना चाहिये।

(७) १६ तोले गायका दूध मीठी आगसे अधऔटा करो। शीतल होनेपर उसमें चीनी और शहद दो दो तोले, घी १॥ तोले और पीपलका चूर्ण एक तोले मिलाकर पीनेसे हृद्रोग, जीर्णज्वर, खाँसी और क्षय ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) शहद, घी, दूध, पीपल और चीनी—इन पाँचोंको एकत्र मथकर पिलानेसे विषमज्वर, हृद्रोग, खाँसी, दमा और क्षय नाश हो जाते हैं। इसे "पञ्चसार" कहते हैं। परीक्षित है।

(९) घीग्वारका लुआब हर दिन ४ माशेसे १ तोले तक निकाल कर, उसमें ४ रत्ती जीरा और कालीमिर्च पीसकर मिला लो और खाओ। इससे शरीरमें छिपी हुई गरमी, प्रमेह और जीर्णज्वर, आराम हो जाते हैं। इस नुसख़ेके सेवन करनेसे कच्ची धातु भी निकल जाती है। परीक्षित है।

(१०) गिलोयके काढ़ेमें चौथाई शहद या ३ माशे पीपलका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जीर्णज्वर चला जाता है। अथवा गिलोयको रातके समय कुचलकर जलमें भिगो देने और सवेरे पी लेनेसे जीर्णज्वर आराम हो जाता है।

(११) कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा और गिलोय—इन पाँचोंका काढ़ा, विश्वास रखकर, लगातार सेवन करनेसे असाध्य जीर्ण ज्वर भी आराम होजाता है। परीक्षित है।

नोट—जीर्णज्वरके सिवाय अन्य ज्वरोंमें भी यह नुसख़ा अनेक बार अच्छा साबित हुआ है।

(१२) नागरमोथा, कुटकी, कचूर, कायफल, काकड़ासिंगी, पोहकर-मूल और कूट—इनका चूर्ण बनाकर, अदरखके रसमें या शहदमें सेवन करनेसे जीर्णज्वर, खाँसी, दमा, अरुचि, शूल, कफ होना, क्षय और वायु—ये सब अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—जिस जीर्ण ज्वरीको ज्वरके साथ श्वास और खाँसी वग़ैर उपरोक्त शिकायतें हों, उसे यह चूर्ण अवश्य सेवन करना चाहिये।

(१३) तालीसपत्र १ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपल ४ तोले, बंशलोचन पाँच तोले, इलायचीके बीज ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, बंग भस्म ८ तोले, ताम्बेकी भस्म ८ तोले और मिश्री ३२ तोले—पहलेकी दवाओंको कूटपीस और छानकर चूर्ण बना लेना चाहिये। पीछे, वङ्गभस्म और ताम्रभस्म तथा मिश्री मिलानी चाहिये। इसका नाम "तालीस चूर्ण" है। यह चूर्ण रोचक और पाचक है। इससे श्वास, खाँसी, जीर्णज्वर, वमन, अतिसार, शोथ, अफारा, तिल्ली, संग्रहणी और पीलिया ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

इस चूर्णकी मात्रा जियादा-से जियादा एक माशेकी समझनी चाहिये। एक माशेमें प्राय २ रत्ती वङ्गभस्म और ताम्बेकी भस्म आजाती हैं, इसलिये जियादा मात्रा न देनी चाहिये। बनाते समय यही ज़रूरी नहीं है कि, इतनी ही चीज़ें ली जायँ, कमकी ज़रूरत हो तो कम बनाना चाहिये। अगर आठवाँ भाग बनाना हो, तो सबकाही आठवाँ भाग कर लेना चाहिये। जैसे,—तालीसपत्र १॥ माशे, सोंठ ४॥ माशे, पीपल ६ माशे,

वंशलोचन ७॥ माशे, इलायची ६ रत्ती, दालचीनी ६ रत्ती, वंगभस्म १ तोले, ताम्रभस्म १ तोले और मिश्री ४ तोले।

(१४) गिलोयके रस (स्वरस)में पीपर और शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, कफ, तिल्ली, खाँसी और अरुचि ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे पावभर गायके दूधमें पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है, घी और मिश्रीके साथ लेनेसे जीर्णज्वर जाता रहता है, शहद और पीपरके साथ अथवा गुड़ और कालेजीरेके साथ लेनेसे भी जीर्णज्वर नाश होता है, जीरे और मिश्रीके साथ लेनेसे दाह नाश होता है। परीक्षित है।

(१६) पीपरके चूर्णमें दूना गुड़ मिलाकर देनेसे अरुचि हृद्रोग, दमा, खाँसी, क्षय, अग्निमान्द्य, पीलिया, कृमिरोग, मिरगी और जीर्णज्वर ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) पीपलका चूर्ण शहदमें मिलाकर देनेसे मेद, कफ, श्वास, खाँसी हिचकी, जीर्णज्वर, पीलिया, उदररोग, तिल्ली और नवीनज्वर ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) गिलोयके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर और कफ नाश होता है। परीक्षित है।

(१९) पञ्चमूलके काढ़ेमें पीपलका चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है।

(२०) गिलोयके काढ़ेको शीतल करके, उसमें चौथाई भाग शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर जाता है। परीक्षित है।

(२१) आमले, चीता, हरड़, पीपल और सेंधानमक—इन सबका चूर्ण करके सेवन करनेसे सब तरहके ज्वर नष्ट हो जाते हैं। यह नुसख़ा दस्तावर, रुचिकारक, कफनाशक और दीपन तथा

पाचन है। यह नुसखा जीर्णज्वर और विषमज्वर पर बहुत उत्तम है।

(२२) दाख, गिलोय, कचूर, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, लालचन्दन, सोंठ, कुटकी, पाढ, चिरायता, धमासा, खस, धनिया, कमल, सुगन्धबाला, कटेरी, पोहकरमूल और नीमकी छाल—इन सब दवाओंको समान भाग लेकर काढा बनाकर सेवन करनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, खाँसी और सूजन ये नाश हो जाते हैं। इसका नाम "द्राक्षादि क्वाथ" है।

(२३) पीपल मुलेठी, दाख, खिरेटी, चन्दन और सारिवा—इनके काढेमें दूध मिलाकर पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है।

(२४) सफेद जैतीकी जडको चोटीमें बाँधनेसे जीर्णज्वर उस तरह नाश होता है, जिसतरह दुर्जन अपने आत्माको नष्ट करता है।

(२५) कुटकी, पित्तपापडा, चिरायता, नागरमोथा और गिलोय—इनका काढा नित्य पीनेसे असाध्य जीर्णज्वरी भी आराम हो जाता है।

(२६) जीरेका चूर्ण पुराने गुडमें मिलाकर देनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(२७) जीर्णज्वरमें—दूधमें ५।७ पीपल डालकर और औटाकर लगातार पीनेसे जीर्णज्वर नाश हो जाता है। जीर्णज्वरमें पीपल डालकर औटाया हुआ दूध पीना अमृत है।

(२८) तुलसीका रस, कालीमिर्च और शहद—इन तीनोंको मिलाकर पीनेसे—जीर्णज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) दाख, गिलोय और सोंठ—इनके काढेमें पीपलका चूर्ण डाल कर पीनेसे जीर्णज्वर, श्वास, शूल और प्यास तथा अग्निकी मन्दता—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(३०) कटेरी, गिलोय और सोंठ—इनके काढेमें पीपलका चूर्ण डालकर पीनेसे जीर्ण ज्वर, अरुचि, खाँसी, शूल, श्वास, मन्दाग्नि, अर्दित और पीनस रोग नष्ट होते हैं। अगर उर्ध्वगत रोगोंको नष्ट करना हो, तो इसे सन्ध्या समय पीना चाहिये।

नोट—यह नुसखा परीक्षित और उत्तम है। यह काढा बहुधा कण्ठके ऊपरके रोगोंको हरता है। इसलिये शामके समयही पिलाना ठीक है। अगर रातको ज्वर आता हो, तो काढा शामको न पिलाकर, सवेरे पिलाना चाहिये। अगर ज्वरमें पित्तका जोर हो, तो पीपलका चूर्ण मत मिलाना, उसके बदलेमें शहत मिलाना।

(३१) अनन्तमूल, नागरमोथा, सुगन्धवाला, सोंठ और कुटकी—इनका काढा बनाकर जरा गरम-गरम पीनेसे सब तरहके ज्वर नाश हो जाते हैं तथा अग्नि दीपन होती है।

(३२) कचूर, पित्तपापडा, सोंठ, देवदारु, रास्ना नागरमोथा, कुटकी, कटेरी और चिरायता - इनके काढेमें पीपल और शहद डालकर पीनेसे जीर्णज्वर और विषमज्वर आराम हो जाते हैं।

(३३) एक भाग भुने हुए जीरेका चूर्ण और दो भाग पुराना गुड—इनको बलानुसार सेवन करनेसे विषमज्वर, मन्दाग्नि और वात रोग ये नाश हो जाते हैं। पुरानेज्वरमें परीक्षित है।

(३४) पुनर्नवेके तेलकी मालिशसे कामला, पीलिया हलीमक, श्वास, तिल्ली, जीर्णज्वर और मलरोग आदि आराम होते हैं। यह तेल परीक्षित है। बनानेकी तरकीब—पहला काम यह है कि, पुनर्नवे को ५ सेर जड लाकर, उसे २५ सेर साढे नौ छटाँक जलमें औटाओ। चौथाई जल रहनेपर उतारकर रख लो। दूसरा काम यह है कि सोंठ, मिर्च पीपर, त्रिफला, काकडासिंगी, धनिया, कायफल, कचूर, देवदारु, प्रियंगू, रेणुका, कूट, पित्तपापडा, अजवायन, कालाजीरा, इलायची, दालचीनी पद्माख, तमालपत्र और नागकेशर—इन २०

एक एक तोले लाकर पानीमें पीसकर लुगदी करलो। तीसरा काम यह है कि, कलईदार कडाहीमें लुगदी रखकर, तेल एक सेर डाल दो और काढेको जो कि बना हुआ तैयार रखा है मिला दो। पीछे चूल्हेपर चढाकर मन्दी-मन्दी आग से तेल पका लो। जल छीज़ जानेपर, तेलको उतार कर नीचे रख लो और शीतल हो जाने पर नितारकर बोतलमें भर लो।

(२५) कौरैयाको जडकी छाल और गिलोय—इनके काढेसे जीर्णज्वर आराम होता है।

(२६) ३ माशे चिरायता, २ तोले जलमें रातको भिगोदो। सवेरे उसे मल छानकर, उसमें २ रत्ती कपूर और २ रत्ती शुद्ध शिला जीत और ६ माशे शहद मिलाकर ७ दिन पीओ। इससे जीर्ण ज्वरमें अवश्य लाभ होता है। यह नुसखा नहीं चूकता। इससे रोग नाश होकर ताकत भी आती है। यह नुसखा आजमूदा है।

(२७) छुहारा, दाख, सोंठ, मिश्री और घी—इनको दूधमें डालकर और औटाकर पीनेसे जीर्णज्वरमें लाभ होता है। बलाबल देखकर मात्रा देनी चाहिये।

स्वर्णमालती वसन्त।



(२८) सोनेके वरक १ माशे, अबीध मोती (चूका) २माशे, शुद्ध सिंगरफ (हिंगलू) ३ माशे, साफ कालीमिर्चें ४ माशे, शोधा हुआ सूरती खपरिया ८ माशे और चाँदीके वरक ८ माशे—इन सबको तैयार रखो। पहले सबको महीन पीस लो, पीछे पिसी हुई दवाओंको खरलमें डालकर, ऊपरसे इतना मक्खन डालो, जो दवाओंमें रमजाय। (प्राय १ तोला मक्खन काफी होगा)। इसके बाद ३।४ घण्टे तक खरल करो।

जब मक्खन बराय नाम रहजाय, तब नीबूका रस डाल-डाल कर खरल करो। जब मक्खनकी चिकनाई बिल्कुल न रहे, तब खरल करना बन्द कर दो और एक एक रत्ती की गोलियाँ बनालो। इसको "वसन्तमालती रस" या "स्वर्ण मालती वसन्त" कहते हैं। कम से कम इसकी मात्रा १ रत्ती की है। अगर रोगी बलवान हो, तो २ या ३ रत्ती भी दे सकते हो। इसके खानेसे ताकत आती है तथा विषम ज्वर और जीर्ण ज्वर निश्चयही आराम हो जाते हैं।

सेवन विधि—२ माशे गिलोयका सत्त, २ रत्ती छोटी पीपर तथा २ रत्ती छोटी इलायचीका चूर्ण और १ रत्ती वसन्त-मालती—इन सबको मिलाकर ४ माशे शहदमें चटानेसे जीर्ण ज्वर निश्चयही आराम हो जाता है। सवेरे शाम दोनों समय चटाना चाहिये। परीक्षित है।

दूसरी सेवन विधि—१ रत्ती वसन्तमालती, २ पीपरका चूर्ण और ३ माशे शहदको मिलाकर चटानेसे भी लाभ होता है।

नोट—खपरियाको गोमूत्रमें दोलायन्त्रसे शोध लेना चाहिये। सिंगरफ मकसुदाबादी शोधकर काममें लाना चाहिये। खपरिया सुरती लेना चाहिये।

सितोपलादिचूर्ण।

(३६) मिश्री १६ तोले, बंसलोचन ८ तोले, पीपल ४ तोले, छोटी इलायचीके दाने २ तोले और तज १ तोले—इन सबको कूट पीस और छानकर १ शीशीमें रख लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे श्वास, खाँसी, हाथपाँवोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीर्णज्वर, जीभ का सूखना, पसलीका दर्द, अरुचि, पित्तविकार आदि रोग अवश्य आराम होते हैं। जीर्णज्वर और उसके साथ मन्दाग्नि खाँसी और दाह पर यह चूर्ण अनेक बार परीक्षा किया हुआ है।

नोट—बंसलोचन वह लेना जो भीतरसे नीला-नीला हो। पीपरोंको २४ घण्टे तक गायके दूधमें भिगो रखना, पीछे दूधसे निकालकर छायामे सुखा लेना। सूखने पर सब दवाओंके साथ कूटकर चूर्ण बना लेना।

सेवन-विधि—इस चूर्णकी मात्रा जवानके लिये ३ माशेकी है। सवेरे शाम एक एक मात्रा चूर्ण शहदमें मिलाकर चटाना और ऊपरसे आधा पाव धारोष्ण दूध पिलाना। इस तरह करनेसे धीरे धीरे जीर्णज्वर अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगीको पतले दस्त लगते हों, तो इस चूर्णको शर्बत अनारके साथ चटाना और ऊपरसे दूध मत पिलाना। साथही "लाक्षादि" तेलकी मालिश कराना। अगर खाँसी हो, तो "स्वास्थ्यरक्षा"के पृष्ठ ३३१में लिखी "कासमर्द्दन वटी" चुसाना। अगर ये तीनों काम लगातार कुछ दिनों तक पथ्यके साथ कीजियेगा, तो जीर्णज्वर या तपेदिक रोगी अवश्य आराम हो जायगा। अगर रोगी को पतले दस्त लगते हों, तो वृद्ध या लघु "गङ्गाधर चूर्ण" बीच-बीच में देते रहना, दस्तोंके बन्द न करने से रोगी मर जायगा। अगर कब्ज रहता हो, तो हलकी सी दस्तावर दवा दे-दे कर बीच-बीच मे दस्त करा देना अथवा एनीमा* से संचित मल निकाल देना। यह जीर्णज्वर की परीक्षित चिकित्सा है।

* एनीमा—एक तरह की विलायती पिचकारी होती है। इस के द्वारा गुदा से मल निकाला जाता है।





दुर्जल जनित ज्वरकी चिकित्सा ।



(१) छोटी हरड़, नीमके पत्ते, सोंठ सेंधानोन और चीता—इनका चूर्ण बनाकर, चार चार या छे-छे माशे चूर्ण, सवेरे-शाम दोनों समय, रोज खानेसे खराब जलके कारण से हुआ ज्वर नाश हो जाता है।

नोट—कोई कोई सोंठके स्थानमें पीपल लेते हैं। परीक्षित है।

(२) सोंठके ४ तोले काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे अरुचि, मन्दाग्नि, पीनस, श्वास, बवासीर, पेटके रोग और जलसे होनेवाले सब विकार नाश हो जाते हैं। शरीरमें कान्ति होती है तथा चित्त और आँखोंको सुख होता है। परीक्षित है।

(३) शुद्ध वत्सनाभ विष २ भाग, कौड़ी की भस्म ५ भाग, कालीमिर्च ५ भाग और सोंठ ५ भाग—इन सबको एकत्र पीसकर और अद-रखके रसमें खरल करके मूँगके बराबर गोलियाँ बनालो। सवेरे-शाम एक एक गोली जलके साथ खानेसे आमज्वर, दूषित जलसे हुआ ज्वर, अजीर्ण, अफारा मलबन्ध, शूल, श्वास, और खाँसी ये सब आराम होते हैं। इन रोगोंमें यह "दुर्जलजेता रस" अवश्य देना चाहिये।

(४) पोदीनेके पत्ते, तुलसी और काली तुलसी—इनको विना जल मिलाये पीसकर, कपड़ेमें रस निकाल लेना चाहिये और उस रसको मिश्री मिलाकर पीना चाहिये। परीक्षित है।

(५) अजमोदको पीसकर और शहदमें मिलाकर चाटनेसे मोतीज्वरा नाश होता है।

(६) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे मोतीज्वरा नाश होता है। परीक्षित है।

(७) मुनक्का, दाख, वासा और हरड़के काढ़ेमें शहद और मिश्री डालकर पीनेसे रक्तपित्त ज्वर, दमा, खाँसी और मोतीज्वरा—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(८) गलेमें मोतियोंकी माला पहननेसे मोतीज्वरे में होनेवाली गलेकी और छातीकी फुन्सियोंमें बड़ा लाभ होता है।

सत्रहवाँ अध्याय

गर्भिणीके ज्वर की चिकित्सा।





र्भकी हालतमें औरतोंको ज्वर, सूजन, अतिसार, वमन, सिर घूमना, खून गिरना, गर्भकी पीडा प्रभृति अनेक प्रकारके रोग होते हैं। और सब रोगियोंकी तरह गर्भवतीकी चिकित्सा करनेसे लाभ नहीं होता, बल्कि अनेक स्थलोंमें हानि की सम्भावना रहती है। गर्भवतीको कष्ट होनेसे गर्भगत शिशुको भी कष्ट हो सकता है। यहाँ हम गर्भवतीके ज्वर नाश करनेवाले चन्द उपाय लिखेंगे, जिससे कोई अज्ञानतावश गर्भिणीके ज्वरमें सब रोगियोंको दी जानेवाली दवाएँ न दे दे।

गर्भिणीके ज्वरको नाश करनेवाले नुसखे।



(१) "भावप्रकाश"में लिखा है,—मुलेठी, लालचन्दन, खसकी जड, सारिवा (अनन्तमूल) और कमलके पत्ते—इन पाँचोंका काढ़ा बनाकर, शीतल होनेपर, शहत और खाँड मिलाकर, पिलानेसे गर्भिणीका ज्वर आराम होजाता है।

(२) लालचन्दन, सारिवा (अनन्तमूल), लोध और दाख—इन चारों के काढेमें मिश्री मिलाकर देनेसे ज्वर निश्चयही शान्त होता है।

(३) अरण्डकी जड़, गिलोय, मँजीठ, लालचन्दन, देवदारू और पद्माख,—इन छहोंका काढ़ा गर्भवतीके ज्वरको नाश करता है।

नोट—ये तीनों नुसख़े गर्भवतीके ज्वरमें परमोत्तम हैं। न० २ और ३ तो कितनीही बारके परीक्षित हैं। पहलेवाला भी परीक्षित ही है।

(४) बकरीके दूधके साथ सोंठ पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंका विषमज्वर आराम हो जाता है।

(५) धनिया, नागरमोथा, खस, सुगन्धवाला, श्योनाक, गिलोय, अतीस, बरियारा, पित्तपापड़ा, जवासा और लालचन्दन—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा गर्भिणी और प्रसूताके रुधिर-विकार, रक्तातिसार (ख़ूनके दस्त) आमातिसार (आँव और मरोड़ीके दस्त) और ज्वर इन सबको आराम करता है। इस नुसख़ेकी उत्तमता के लिये लोलिम्बराज महोदय का नाम ही काफी है।

गर्भिणीके अतिसार आदि को नाशकरनेवाले नुसख़े।



(६) सोंठ और बेलगिरीके काढ़ेमें जौका सत्तू मिलाकर पिलानेसे, वमन और अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसख़ा गर्भिणीके दस्तोंपर उत्तम पाया गया है।

(७) सुगन्धवाला, अतीस, नागरमोथा, मोचरस और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा पीनेसे गर्भिणीका गिरता हुआ गर्भ, अतिसार, प्रदर और पेटका दर्द ये सब शान्त हो जाते हैं।

(८) पिठवन, बरियारा और अडूसेका काढ़ा रक्तपित्तको आराम करता है और साथ ही गर्भिणीके कामला (पीलियेका भेद) सूजन, श्वास और ज्वरको आराम करता है।

(९) आम और जामुनकी छालके काढ़ेमें खीलोंका सत्तू मिलाकर खानेसे गर्भिणीका ग्रहणी रोग तत्काल शान्त होता है।

(९) सुगन्धवाला, अरलू, लालचन्दन, खिरेंटी, धनिया, गिलोय, खस, नागरमोथा, जवासा, पित्तपापडा और अतीस—इनका काढा पीनेसे गर्भिणी स्त्रियोंके अनेक रोग पीडा, अतिसार, रुधिरस्राव और गर्भस्रावकी पीडा भी दूर होती है।

नोट—मैथुन करने, राह चलने, मिहनत करने, ज्वर चढने, उपवास करने, कूदने, गिरने, दौडने, विषम आसन पर बैठने और डरने प्रभृति कारणोंसे गर्भ-स्राव या गर्भपात होता है। जब गर्भस्राव या गर्भपात होनेवाला होता है, तब शूल या दर्द होता है और खून निकलता है। चौथे मास तक जो गर्भ गिरता है, उसे गर्भस्राव कहते हैं, इसके बाद गर्भपात कहते हैं। गर्भपात वगैर का इलाज हम चौथे भागमें लिखेंगे।

गर्भिणीकी वमन श्वास और खांसी नाशक नुसखे।



(१०) चाँवलके धोवनमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे गर्भिणीकी वमन बन्द हो जाती है। धनियाका चूर्ण खाकर मिश्री मिला हुआ चाँवलोंका पानी पीनेसे निश्चय ही गर्भवतीकी कय बन्द हो जाती है।

(११ भारङ्गी, सोंठ और पीपल—इनका चूर्ण गुडके साथ खिलानेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१२) सोंठ का काढा शीतल करके पिलानेसे गर्भिणीका वात रोग आराम हो जाता है।

(१३) शालिधानोंकी जड, डाभकी जड, काँसकी जड और सरपतेकी जड—इन सबकी जडें बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ पीस-कर लुगदीसी बनालो। पीछे उस लुगदीको दूधमें डालकर दूध को औटाओ और उस दूध को गर्भवती को पिलाओ। उस दूध से रुका हुआ पेशाब खुल जाता है तथा प्यास, दाह और रक्त-पित्त भी आराम होता है। गर्भवतीका पेशाब रुकजाय, तो यह नुसखा देना चाहिये।

अठारहवाँ अध्याय

प्रसूत ज्वरका वर्णन।

धन्वन्तरिके मतमे बालक जननेके डेढ मास बाद या रजोदर्शन होनेके बाद, स्त्रीका "प्रसूता" नाम नही रहता। इसके पहले, बच्चा जननेके बाद, उसे "प्रसूता" कहते हैं।

ज्वर, खाँसी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार ये रोग विशेष करके प्रसूता को होते हैं। जब ये प्रसूताको होते हैं, तब इन्हें "प्रसूति रोग" कहते हैं। अत्यन्त वातकारक स्थान, अयोग्य आचरण विषम भोजन और अजीर्ण प्रभृति,—ये प्रसूति रोगोंके कारण हैं।

"वङ्गसेन"में लिखा है :—प्रसूति रोगमें ज्वर, अतिसार, सूजन, शूल, अफारा, बलनाश, तन्द्रा, अरुचि, मुँहसे जल गिरना प्रभृति कफ और वातसे पैदा होनेवाले अनेक रोग होते हैं। ये सब मास और बलकी क्षीणतासे होते हैं। इन सबको "सूतिका रोग" कहते हैं। इनमेंसे कोई एक रोग मुख्य होता है, शेष सब उसके उपद्रव कहलाते हैं।

सूतिका रोग नाश करनेके लिये वातनाशक क्वाथ देने चाहियें और सभी काम वातनाशक करने चाहिये। वातनाशक स्नेह उपानह, मालिश और अवगाहन (स्नान) इसमे हितकारी हैं।

प्रसूतिज्वर के लक्षण।

—※※—

बालक पैदा होनेके प्राय दूसरे तीसरे दिन यह ज्वर चढता है। इस ज्वरमें ताप या टेम्परेचर १०२ डिग्रीसे १०६ डिग्री तक हो जाता है। गर्भाशयमें कम या जियादा पीडा होती है। पीछे वह वेदना सारे शरीरमें फैल जाती है। रोगिणी प्रलाप करती है, आँखें भीतर घुस जाती हैं, भ्रम होता है पतले दस्त लगते हैं, कमजोरी आजाती है कय होती हैं, जीभ मैली रहती है, छातियोंका दूध नष्ट हो जाता है। अच्छा इलाज न होनेसे रोगिणी शीत आकर मर जाती है। मरनेके समय जीभ रूखी और काली हो जाती है।

इस ज्वरमें गर्भाशयमें सूजन आ जाती है। वह सुकड जाता है या उसकी दीवार ढीली हो जाती है। अगर बालकके बाहर आते समय योनि बालकके सिरसे छिल जाती है, तो वहाँ पीप पैदा हो जाती है। अच्छा इलाज न होनेसे १५ दिन बाद जगह-जगह पीप पड जाती है, बार बार जाडा लगता है, जोडोंमें सूजन आकर उनमें भी पीप पैदा हो जाती है, यहाँतक कि आँखोंमें भी पीप पैदा हो जाती है। ऐसा होनेसे प्रसूता अन्धी हो जाती है।

असल बात यह है कि, बालक पैदा होते समय अगर बालकके सिरसे कोई रसौली छिल जाती है, या जेर नाल भीतर रह जाता है अथवा मैला खून या और कोई पदार्थ, जिसका गर्भाशयसे निकलना जरूरी है, गर्भाशयमें रह जाता है, तो गर्भाशय में एक तरहका विष पैदा हो जाता है और समय पर इलाज न होने या ठीक इलाज न होनेसे वह जहर सारे शरीरमें फैलकर ज्वर आदि भयानक रोग करता है। इस रोगमें गर्भाशय, फेफडे और जिगर प्रभृति कई स्थानों में सूजन पैदा हो जाती है।

डाक्टरीमें इस ज्वरको "प्योर पर्ल फीवर" कहते हैं। डाक्टर लोग इसका उपाय गन्दे या मैले गूलको सुखाना करते हैं। वे लोग

प्रसूताको गरम कपड़े पहनाना-उढ़ाना, ज्वरनाशक दवा देना और शरीर पर गरम जलकी बोतल फेरकर पसीने निकालना अच्छा समझते हैं। वैद्य लोग भी गर्भाशयका मल सुखानेके लिये "दशमूलका काढ़ा" देते हैं और रोगिणीको गरम रखनेकी सलाह देते हैं। इसीसे भारतमें जच्चा-घरके द्वारों पर और शीत कालमें भीतर भी आगकी अङ्गीठियाँ रखते हैं और हवाकी राहे बन्द करा देते हैं। इसमें हिन्दुस्तानी बड़ी भूल भी करते हैं। हवाको इतना रोक देते हैं कि, प्रसूताके घरमें बदबू मारने लगती है और उसका साँस घुटने लगता है। कभी-कभी इस बेहूदगीकी वजहसे भी प्रसूतायें बेमौत मर जाती हैं।

प्रसूतज्वर नाशक नुसखे।



(१) दशमूलके गरमागर्म काढ़ेमें घी मिलाकर पिलानेसे ज्वर प्रभृति सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

(२) दशमूल की दसों दवाओंको दूधमें पकाकर और मिश्री मिला कर पिलानेसे प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं।

(३) दशमूलके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पिलानेसे सूतिका ज्वर और सूजन तथा वातरोग नाश हो जाते हैं। अगर खाँसी भी हो, तो ३ रत्ती पीपलोंका चूर्ण मिला देना चाहिये। अगर श्वास हो, तो १ माशे बहेड़ेका चूर्ण और ६ माशे शहद मिलाकर काढ़ा पिलाना चाहिये।

(४) देवदारु, बच, कूट, पीपल, सोंठ, चिरायता, कायफल, कुटकी, धनिया, हरड़, गजपीपल, कटेरी, गोखरू, जवासा, कटाई, अतीस गिलोय, काकड़ासिंगी और कालाजीरा—इन १९ दवाओं को बराबर बराबर डेढ़ डेढ़ माशे लेकर, काढ़ा बनाओ, जब

आठवाँ भाग पानी रहजाय, उतारकर छान लो। पीछे उसमें भुनी हींग और सेंधानोन मिलाकर प्रसूताको पिलाओ। इस काढ़ेसे ज्वर, खाँसी, शूल—दर्द, बेहोशी, कँपकँपी, सिरदर्द आन-तान बकना, प्यास, दाह—जलन, तन्द्रा, पतले दस्त, कय वगैरः वात और कफसे हुए प्रसूताके सब रोग नाश हो जाते हैं। यह "दार्वादि" काथ प्रसूताके लिये परीक्षित दवा है।

(५) गिलोय, सोंठ, पियावाँसा, गन्धप्रसारिणी, पञ्चमूल की पाँचों दवाएँ, नागरमोथा और सुगन्धवाला—इन ११ दवाओंका काढ़ा भी प्रसूताके ज्वर आदि रोगोंको अवश्य नाश करता है।

(६) पियावाँसा, कुलथी, पोहकरमूल, कटेरी, देवदारु और बेंत—इनके काढ़ेमें भुनी हींग और सेंधानोन डालकर पीनेसे सूतिका का शूल और ज्वर नाश हो जाता है।

(७) पियावाँसा, नागरमोथा, गिलोय, गन्धप्रसारिणी, सोंठ और सुगन्धवाला—इनके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहत डालकर पीनेसे प्रसूताका ज्वर तत्काल नाश होता है।

(८) तपाया हुआ लोहा मूँगके यूषमें बुझाकर, वही पिलानेसे सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(९) गिलोय, सोंठ, सहचर, आककी जड़, बृहत्पञ्चमूल और नागरमोथा—इन दसोंके काढ़ेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पीनेसे सूतिका रोगकी शान्ति होती है।

पसीना निकालनेकी विधि।



नीमकी अन्तरछाल लाकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। पीछे उन्हें तीन हाँडियोंमें डालकर, ऊपरसे पानी भरकर, उन्हें अलग अलग तीन चूल्होंपर चढ़ा दो। ऊपरसे ढकना भी लगा दो। जब पानी खूब खौल जाय, पहिले एक घड़ेको चूल्हेसे उतार लो।

प्रसूताको एक खरहरी (बिना बिस्तरकी) खाटपर लिटा दो। उस आगसे उतारे हुए घड़ेको ढकना खोलकर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो, ताकि भाफ सिर वगैर: को लगे और पसीना निकले। जब उस घडेकी भाफ कम हो जाय, तब उसे कमरके नीचे सरका दो और दूसरा घडा चूल्हेसे उतारकर, ढकना उतारकर, फिर प्रसूताके सिरके नीचे रख दो। जब इस दूसरे घडेकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेके घडेको पैरोंके नीचे सरका दो और तीसरे घडेको चूल्हेसे उतारकर सिरके नीचे रख दो। जब इसकी भी भाफ कम हो जाय, तब इसे कमरके नीचे सरका दो और कमरके नीचेवाले को पैरोंके नीचे सरका दो। शेषमें आखिरी घडेको सरकाते हुए पैरों तक ले जाओ।

इस तरह ३ दिन तक करनेसे प्रसूताके शरीरका सारा रोग पसीनों द्वारा निकलकर नाश हो जाता है, पर यह काम ऐसी जगहमें करना चाहिये, जहाँ हवा न आती हो। उस समय हवा लगना हानिकर है। इस बफारेका काम हो जानेपर, पसीने पोंछ डालने चाहिये। पसीनोंके सूख जानेपर, मन्दी-मन्दी पंखेकी हवा लगे तो हर्ज नहीं। यह परीक्षित उपाय है। जरूरतके समय काम लेना चाहिये।

पथ्यापथ्य ।

—※—

कम-से-कम एक मास तक, खराब खून निकल चुकने पर, प्रसूता को चिकना, अग्निदीपक, वातकफनाशक, हितकारी और हलका भोजन करना चाहिये। जैसे, पुराने चाँवल का भात, परवल, कच्चा केला, मसूर, बैंगन और अनार प्रभृति, नित्य पसीना लेना चाहिये, तेलकी मालिश करानी चाहिये, दश दिन तक वातकफनाशक दवाओंके साथ औटाया दूध पीना चाहिये, दस दिन माँसरसके साथ भात खाना चाहिये और सिरसकी लकड़ी

से दाँतुन करनी चाहिये। यह तो मामूली हालतके पथ्यापथ्य हैं। ज्वरकी हालतमें या अन्यरोगकी हालतमे जैसा रोग हो वैसा ही पथ्य देना चाहिये और अग्नि, मिहनत, शीतल आहार और मैथुन प्रभृति से परहेज करना चाहिये।

नोट—"पंचजीरक पाक" और "सौभाग्यशुंठीपाक" प्रसूताओंके लिये अमृत है। उन्हें हम तीसरे भागमे लिखेंगे।

दूधज्वर के लक्षण।



अक्सर नाजुक-बदन औरतोंको, बालक जननेके कुछ दिन बाद, सरदी लग जाने, अपथ्य आहार विहार करने, चूचियोंमें दूध रुक जाने अथवा घरके लड़ाई झगडोंके कारण चिन्ता-फिक्र और रंज करने अथवा कच्ची अवस्थामें ही जच्चाके चलने फिरने और परिश्रम करने वगैरः कारणोंसे यह ज्वर होता है। पर असल कारण इसका दूध का छातियोंमें रुकना है। पहले पहल बालक जनने वाली स्त्रीके स्तनोंमें दूध देरसे आता है। अगर बिना दूध आये ही बच्चा स्तनोंसे लगा दिया जाता है, तो दूध आनेके सूराख बन्द हो जाते हैं। बहुतसी औरतोंके इतना दूध आया करता है कि, कभी-कभी अपने-आप धाराएँ छूट पड़ती हैं। बालक अगर इतना दूध नहीं पी सकता, तो स्तन भारी हो जाते हैं। स्तनोंके भारी होनेसे औरतोंको बड़ी तकलीफ होती है। अनेक औरते तो अपने हाथोंसे बीठनी भींच भींचकर दूध निकाल फेंकती हैं। जो ऐसा नहीं कर सकतीं, वे बड़ी पीड़ा भोगती हैं। बाज बाज स्त्रियोंके स्तन बहुत ही कठोर और बीठनियाँ मोटी होती हैं; कमजोर बालक उन बीठनियोंको मुखमें दबाकर दूध नहीं पी सकता। उस हालतमें दूध स्तनोंमें भर जाता है। दूध रुकनेके कारणोंसे अथवा और किसी वजहसे या सरदी गरमीसे खूनका बहना बन्द हो जानेसे स्तनोंपर सूजन आ

जाती है, उससे स्त्रियोंको कंपकँपी लगकर जाडेका बुखार आ जाता है। इस ज्वरको बोलचालमें दूधका ज्वर और अङ्गरेजीमें मिल्क फीवर (milk fever) कहते हैं।

इस ज्वरवाली स्त्री उदास हो जाती है, हाथ पाँव सिर और पीठ में वेदना होती है, स्तनोंमें भी पीडा होती है, वे पके फोडेकी तरह दुखते हैं और तनकर लाल हो जाते हैं। जाडेके बुखारोंकी तरह इस ज्वरमें पहले जाडा लगता है,पीछे गरमी आती है, प्यासकी अधिकता होती है, शेषमें पसीने आकर ज्वर उतर जाता है। इसमें औरतें प्रलाप भी करती हैं। बदहजमी और जी मिचलना आदि लक्षण भी देखे जाते हैं।

स्तनपीडानाशक नुसखे।



(१) अगर गरमी-सरदीसे खूनकी चाल बन्द हो जानेके कारण छातियों पर सूजन आगई हो, उनमें मीठा-मीठा दर्द होता हो, तो गीदड दाखके पत्ते दो तोले और बाकला दो तोले,—इनको खूब महीन पीसकर और सिकंजबीनमें मिलाकर, छातियोंपर लेप करनेसे पीडा शान्त होगी। जबतक वरम—सूजन न उतर जाय, तीन चार बार लेप करना चाहिये।

(२) अगर बालकके दूध पीते-पीते माथेकी चोट मारनेसे सूजन आगई हो, तो स्त्रीको चाहिये कि कंगीको ऊपरसे नीचे-धीरे धीरे स्तन पर फेरती जाय और ऊपरसे दूसरे औरत सुहाता सुहाता गरम जल स्तनपर ढालती जाय। कंगी नीचेसे ऊपर न लानी चाहिये, बार-बार ऊपरसे नीचेको फेरनी चाहिये और ऊपरसे गरम जल पडना चाहिये। ३ दिनमें निश्चयही आराम हो जायगा।

(३) अगर खुश्की और गरमीके कारण स्तनोंमें दूध जम गया हो, तो

मूँग और साँठी चाँवल दोनोंको पीसकर कुछ गरम जलमें लगाना चाहिये।

(४) अगर कुचों पर सूजन हो, तो मकोय, गुलखैरू, गोखरु, निरविसी, अफीम और गेरू—इन छहोंको एक-एक माशे लेकर, जलमें पीस लो और कुछ गरम करके सुहाता-सुहाता लेप कर दो।

(५) शीशमकी पत्तियोंको एक हाँडीमें डालकर, ऊपरसे गरम जल भरकर औटाओ। जब पौन या आधा पानी रह जाय, उतारकर उस पानीसे स्तनोंकी सूजनको धोओ।

(६) इन्द्रायणकी जड़का लेप करनेसे स्तन-रोग नष्ट हो जाता है।

(७) हल्दी और धतूरेके पत्ते—इनका लेप करनेसे स्तनकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(८) तपाये हुए लोहेको जलमें बुझाकर, वह पानी पिलानेसे स्तनरोग नाश हो जाता है।

(६) बाँझ ककोड़ेकी जड़का लेप करनेसे भी स्तन पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१०) मुलेठी, नीम, हल्दी, सम्हालू और धायके फूल—इन सबको महीन पीस छानकर, स्तनके घावोंपर बुरकनेसे घाव भर-जाते हैं।

(११) प्रसूति अवस्थामें अक्सर पहले-पहल दूध आते समय दर्द होने लगता है तथा सूजन आ जाती है। उस समय ८ माशे नौसादरको आधी छटाँक जलमें घोलकर एक-दिल कर लेना चाहिये और उसे स्तनोंपर लगा देना चाहिये। इसके लेपसे स्तनोंमें पड़ी हुई गाँठ शीघ्र ही नर्म हो जाती है। गाँठके पिघलाने और सूजन नाश करनेमें यह लेप बड़ा ही उपकारी है। अगर पैरमें मुरड़ आजाय या बादीसे सूजन आजाय, तो

यही लेप करनेसे अवश्य फायदा होता है। स्तनोंकी पीड़ा और सूजन मिटानेमें यह उपाय सबसे उत्तम है।

नोट—अगर स्तन पक जायँ, तो नशतर लगा कर या किसी दवा से पीप वगैर मवाद निकाल कर, घाव भरने के लिये मरहम प्रभृति से काम लेना चाहिये।

(१२) अगर दूध स्तनोंमें बहुतही आता हो और बालक उतना न पी सकता हो और इस वजहसे स्त्रीको कष्ट रहता हो, तो काहूके बीज, मसूर और जीरा—इनको सिरकेमें पीसकर स्तनोंपर लेप करो, दूध कम हो जायगा।

नोट—(१) अगर दूध सूख गया हो, तो वच, मोथा, अतीस, देवदारू, सोंठ, शतावर और अनन्तमूल—इन सब का काढ़ा पिलाना चाहिये।

नोट—(२) 'भावप्रकाश'मे लिखा है,—स्तनरोगोंमें पित्तनाशक शीतल पदार्थोंका प्रयोग करना चाहिये। जोंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये, किन्तु स्तनोंपर सेंक वगैर करके पसीना कभी न निकालना चाहिये। स्तनकी पीड़ा मिटतेही ज्वर नाश हो जाता है। अगर जरूरत हो, तो ज्वरनाशक दवा देनी चाहिये। अगर प्रसूतावस्था हो, तो वैसा ही नुसखा देना चाहिये और सूतिका रोगका ही पथ्यापथ्य प्रतिपालन करना चाहिये। अगर प्रसूतावस्था न हो, तो वैसा ज्वरनाशक नुसखा देना चाहिये। पर मुख्य उपाय कारणको मिटाना है, जिससे कि ज्वर हुआ हो।

चिकित्सा।

स्तन पीड़ा के शान्त होने से ही दूध-ज्वर या स्तन पीड़ा से हुआ ज्वर आराम हो जायगा। अगर जरूरत हो, तो ज्वरनाशक औषधि भी दी जा सकती है।



उन्नीसवाँ अध्याय

शीतला ज्वरका वर्णन।

—※※※—

मसूरिका।

—※—

वैद्यकके मतसे शीतला या चेचक मसूरिकाका भेद है। माधवाचार्यने माता, शीतला, ओरी आदिका मसूरिकाके नामसे अलगही निदान किया है। वाग्भट प्रभृति प्राचीन आचार्यों ने इसका विस्फोटक रोगके अन्तर्गत समावेश किया है। विस्फोटकका कारण वाहरकी विषैली हवा है, इसलिये विस्फोटक नाम लिखा है। इसमें ज्वर होनेके कारण, अङ्गरेज डाक्टरोंने मसूरिका (चेचक) की गणना सक्रामक ज्वरोंमें की है।

यूनानी हकीमोंने भी इसे ज्वरोंमें लिखा है और इसका नाम "हुम्माजदरी" लिखा है। हमारे यहाँ यह रोग ज्वरसे अलग लिखा है, तथापि हम इसे ज्वरके साथ ही लिखना मुनासिब समझते हैं; इसलिये इसके निदान, लक्षण और चिकित्सा यहो लिखते हैं।

मसूरिकाके पूर्वरूप।

—※—

माता निकलनेके पहले ज्वर होता है, खुजली चलती है, देहमें फूटनी होती है, भूख बन्द हो जाती है, चमडेमें सूजन होती है, शरीरका रग बदल जाता है और आँखें लाल हो जाती हैं।

वातज मसूरिकाके लक्षण ।



वादीकी मसूरिका (माता) के फोडे काले, लाल और सूखे तथा कडे होते हैं और उनमें तीव्र वेदना होती है। ये जल्दी नहीं पकते। उनके कारणसे जोडों, हड्डियों और पोरुओंमें फोडनेकी सी पीडा होती है, खाँसी आती है, शरीरमे कँपकपी आती है, चित्त स्थिर नहीं रहता, बिना मिहनत थकान मालूम होती है, तालू होठ और जीभमें खुश्की होती है एव प्यास और अरुचि होती है।

पित्तज मसूरिकाके लक्षण ।



पित्तकी मसूरिकाका मुख लाल, पीला और सफेद होता है। उसमें दाह और पीडा बहुत होती है, परन्तु यह माता जल्दी पकती है। इस चेचकमें दस्त पतला होता है, शरीर टूटता है, दाह और प्यासका जोर होता है। अरुचि नेत्रपाक और मुखपाक ये लक्षण भी होते हैं तथा ज्वर बहुत तेज होता है।

रक्तज मसूरिकाके लक्षण ।



इसके सब लक्षण पित्तज मसूरिकाके से होते हैं।

कफज मसूरिकाके लक्षण ।



इसमें मुँहसे कफ निकलता है, शरीर गीलासा और भारी रहता है, सिरमें दर्द होता है, वमन सी आती है, अरुचि, निद्रा, तन्द्रा, आलस्य, ये लक्षण होते हैं। इसके फोडे, सफेद, चिकने और बहुत मोटे होते हैं। उनमें खुजली बहुत चलती है, पीडा मन्दी मन्दी होती है और वे देरमें पकते हैं।

त्रिदोष मसूरिकाके लक्षण।

इनके फोडे नीले, चपटे और बीचमेंसे दबे हुएसे होते हैं। उनमे दर्द बहुत होता है और वे बहुत दिनोंमें पकते हैं। उनसे बदबूदार चेप निकलता है। त्रिदोषके फोडे बहुत होते हैं।

चर्मपिडिका के लक्षण।

इसके फोडोंके होनेसे कंठ रुक जाता है, अरुचि तन्द्रा, प्रलाप और चैन न पडना ये लक्षण होते हैं। इनकी चिकित्सा नहीं हो सकती।

रोमान्तिका के लक्षण।

पित्तसे बालोंके छेदोंके समान बारीक और लाल मसूरिकायें होती हैं। खांसी और अरुचि होती है। सबसे पहले ज्वर होता है। इनको "रोमान्तिका" या "कसुमी माता" कहते हैं।

धातुगत मसूरिकाके लक्षण।

१ रसगत मसूरिका पानीके बुल्बुलेके समान होती हैं। इनके फूटने से पानीसा बहता है। यह चमडेमे होती हैं, क्योंकि इनमें स्वल्प दोष होता है। इसको लोकमें "दुलारी माता" कहते हैं।

२ रक्तगत मसूरिका ताम्बेके रंगकी होती हैं। ये जल्दी पकती हैं। इनके ऊपरकी चमडी पतली होती है। इनके फूटनेसे इनमेंसे खून निकलता है। यह अत्यन्त दूषित होनेसे साध्य नही होती।

३ मांसगत मसूरिका कडी और चिकनी होती हैं। ये बहुत

दिनोंमें पकती हैं। इनकी चमडी पतली होती है। शरीरमें दर्द और बेचैनी होती है, खाज चलती है, मूर्च्छा, दाह—जलन और प्यास ये लक्षण होते हैं।

४ मेदोगत मसूरिका गोल, नरम, जरा ऊँची ऊँची, मोटी और काली होती हैं। इनके होनेपर भयङ्कर ज्वर, पीड़ा, इन्द्रियों और मनको मोह, चित्तकी चचलता और सन्ताप ये लक्षण होते हैं। यह कृच्छ्रसाध्य हैं। इनसे कोई ही भाग्यवान् बचता है।

५।६ अस्थिमज्जागत मसूरिका बहुत छोटी, रूखी, चपटी और जरा ऊँची होती हैं। इनके होनेसे अत्यन्त चित्तभ्रम, वेदना और बेचैनी होती है। यह मर्म्मस्थानोंको भेदकर शीघ्र प्राण हरण करती हैं। सारी हड्डियोंमें भौंराके काटनेकीसी पीडा होती है।

७ शुक्रगत मसूरिका पके हुएके समान चिकनी और अलग अलग होती हैं। इनमें अत्यन्त पीडा होती है। गोलापन, बेचैनी, मोह, दाह, उन्माद ये उपद्रव साथ होते हैं। यह असाध्य होती हैं। कोई नहीं बचता।

साध्य मसूरिका ।

रसगत, रक्तगत, पित्तज और कफज और पित्तकफज मसूरिकायें साध्य होती हैं। ये बिना किसी दवाके आराम हो जाती हैं

कष्टसाध्य मसूरिका ।

वातज, वातपित्तज, वातकफज मसूरिकायें कष्टसाध्य होती हैं। इनकी चिकित्सा चतुराईसे करनी चाहिये।

असाध्य मसूरिका ।

सन्निपातज मसूरिका असाध्य होती है। कोई मूँगेके समान लाल होती हैं, कोई जामुनके समान, कोई लोहजालके समान और

कोई अलसीके दानेके जैसी होती हैं। दोषोंके भेदसे ये अनेक रङ्गकी होती हैं।

सब मसूरिकाओंके अवस्था विशेषके लक्षण।



खाँसी, हिचकी, बेहोशी, तेज ज्वर, बकवाद, असन्तोष, मोह, प्यास, दाह, नेत्रोंका टेढा तिरछा और बाँकापन तथा फटेसे होजाना ये लक्षण होते हैं। मुँह, नाक और आँखोंसे खून गिरता है, कंठमें घुरघुर शब्द होता है, रोगी भयङ्कर श्वास लेता है। जो मसूरिका-रोगी केवल नाकसे श्वास लेता है, वह वायु और प्याससे तत्काल मर जाता है।

मसूरिका के अन्तमें कठिनाई।



मसूरिका—शीतलाके अन्तमें कोहनी, पहुँचे और कन्धोंमें सूजन होती है। इसका इलाज कठिनाईसे होता है।

मसूरिकाके कारण।



चरपरे, खट्टे, खारी और परस्पर विरुद्ध पदार्थोंके खाने, अधिक खाने, लोबिया, उडद, तथा खट्टे सागोंके खाने, विषैले फूलोंके संसर्ग से दूषित हुई हवा और जलके योगसे, देशमें राहु तथा शनैश्चर आदि क्रूर ग्रहोंकी दृष्टि पडनेसे वातादि दोष कुपित होकर, रुधिरके साथ मिलकर, मसूरके समान फुन्सियाँ उत्पन्न करते हैं, उनको "मसूरिका" कहते हैं।

मसूरिकाका भेद

शीतला।



"भावप्रकाश"में लिखा है,—जो मसूरिकामें ही शीतला देवीका

आवेश हो जाय, तो उसे "शीतला" कहते हैं। जिस प्रकार भौतिक विषम ज्वर होता है, उसी तरह इस शीतलामे ज्वर होता है।

शीतलाके सात भेद।

बडी माता।

—*—

अगर ज्वर आनेके बाद, शरीरमें बडी बडी फुन्सियाँ पैदा हो जायँ, तो उसे बडी शीतला कहते हैं। वह शीतला पहले सप्ताहमें निकलती है, दूसरे सप्ताह (सातदिन) में भर जाती है और तीसरे सप्ताहमें सूख जाती है। इस तरह २१ दिनमें बडी शीतला शान्त हो जाती है।

एक जगह लिखा है :—

अग्निदग्धानिभास्फोटा' सज्वरारक्त पित्तजा।
क्वचित सर्व्वत्र वा देहे विस्फोटा इति ते स्मृता॥

रक्त और पित्तके दोषसे ज्वर होता है और एक स्थानमें अथवा सारी देहमें जो आगसे जले हुए फफोलेकी तरह बहुतसे फफोले हो जाते हैं, उसे "बडी माता" कहते हैं।

वाताधिक्यमें सिरमें दर्द, कालापन, ज्वर, प्यास और जोडोंमें वेदना होती है। पित्ताधिक्यमें ज्वर, दाह, शरीरमें पीडा और प्यास, ये लक्षण होते हैं। फफोले जल्दी ही पककर बहने लगते हैं और रगमें पीले या लाल होते हैं। कफाधिक्यमें वमन, अरुचि और फफोलोंमें खुजली चलती है। फफोलोंका रग पीला होता है। उनमें दर्द नही होता, पर वे बहुत दिनोंमें पकते हैं।

दूसरा भेद।

कोद्रवा माता।

—०—

वात और कफसे जो शीतला निकलती है और कोदोंके समान होती हैं, उसे "कोद्रवा" कहते हैं। अनजान मनुष्य इसको पकने

थाली कहते हैं, पर वास्तवमें यह पकती नहीं, पर बिना पके पकीसी मालूम होती है। यह शीतला, विशेष करके जलके शूक नामक कीडेकी तरह अङ्गोंको बींधती है। यह सातसे लगाकर बारह दिन के भीतर, बिना किसी दवा दारूके, आपही शान्त हो जाती है।

नोट—अगर किसी वजहसे इस कोद्रवा शीतलाम दवा देनेकी जरूरत हो जाय, तो "खदिराष्टक" क्वाथ देना चाहिये।

तीसरा भेद।

पाणिसहा माता।

जो शीतला गरमीके कारणसे राईके दानों जैसी निकले, जिसमें खाज चले, जिसपर हाथ फेरना अच्छा मालूम हो, उसे "पाणि-सहा" कहते हैं। यह शीतला सात दिनमें अपने-आप सूख जाती है।

नोट—कदाचित यही पानीज्वरा हो। उसमें भी छोटी-छोटी फलाइयां होतीं और ज्वर होता है और इसमें भी ज्वर और फलाई सी होती है।

चौथा भेद।

सर्षपिका माता या खसरा।

जो शीतला सरसोंके दानोंके आकारकी हो और उसका रङ्ग भी पीली सरसों जैसा हो, उसे "सर्षपिका" कहते हैं। इस शीतलामें अभ्यङ्ग-तेलकी मालिश आदि न करनी चाहिये। साधारण लोग इसे "खसरा" कहते हैं।

पाँचवाँ भेद।

दुष्कोद्रवा माता।

जो शीतला गरमीकी वजहसे बालकोंके मुँहपर राईके समान निकलती है, उसे लोकमे "दुष्कोद्रवा" कहते हैं। यह भी अपने आप सूख जाती है।

छठा भेद ।

हाम माता ।



पहले ज्वर आता है, पीछे उर्दकी तरह लाल और ऊँचे मंडल वाली शीतला निकलती है, यानी लाल उभरे हुए चकत्तेसे हो जाते हैं और उनमे पीड़ा होती है। उसे विहार या मगध में "हाम" कहते हैं। इस शीतलाका ज्वर ३ दिन तक रहता है।

सातवाँ भेद ।

चमरगोटी माता ।



इसमें बहुतसी फुन्सियाँ एकमें मिली रहती हैं, यानी छत्तासा हो जाता है और यह रंगमें काली होती हैं। इसे चमेंजा या चमरगोटी कहते हैं।

शीतलाकी साध्यासाध्यता ।



कितनी ही शीतलायें तो विना इलाजके सहजमें मिट जाती हैं। कितनी ही अत्यन्त कष्टसाध्य होती हैं, कितनी ही समय पर आराम होती हैं, कितनीही समय पर भी आराम नहीं होती और कितनी ही अच्छेसे अच्छे उपाय करनेपर भी आराम नही होतीं।

यूनानी मतसे माताके सम्बन्धमें
दो चार बातें ।



माताकी बीमारी बालकोंको तो होती ही है, पर जवानोंको भी होती है। इस बीमारीमें शरीरपर छोटी छोटी फुन्सियाँ निकल आती हैं। इसमें बुखार होता है, खाँसी होती है तथा गला बैठ जाता है। अगर माताके दाने सब्ज़ रङ्गके और काले रङ्गके हों, तो

रोगीके बचनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये। अगर दाने गोल हों, उनमें शीघ्र ही पानी भर जाय और वे फैलजायँ, तो आराम हो जानेकी सूरत समझनी चाहिये।

माता या चेचक कई तरहकी होती हैं। एक छोटी चेचक होती है, उसे "खसरा" कहते हैं। यूनानीमें उसे "हुसबाह" कहते हैं। इस रोगमें बारीक-बारीक दाने सारे शरीरमें निकलते हैं, बुखार रहता है, सिरमें दर्द और पीठमें वेदना होती है। अगर हरे काले या पीले रगके दाने हों, तो रोगीके हकमें बुराई समझनी चाहिये। अगर इसमें बेहोशी और दस्तोंका फितूर हो, तो रोगीके बचनेकी कम उम्मीद रखनी चाहिये। हां, अगर गोल गोल और लाल रगके दाने निकले तथा बेहोशी और दस्त न होते हों, तो कोई बुराई नही, रोगी आराम हो जायगा। मातामें दस्तोंका होना खराब समझा जाता है। अगर दाने बड़े बड़े और अच्छे हों, तो उसे "मोतिया" कहते हैं।

डाक्टरी से शीतलाका वर्णन।



म्यरेला (खसरा)



इसमे भी जुकाम होकर ज्वर चढता है। छोटे छोटे दाने निकलते हैं आँखें दुखती हैं, नाक बहती है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, प्यास बहुत लगती है, कय होती हैं, और रोगी बहुत सुस्त हो जाता है। इसमें भीतरका गुब्बार कम निकलता है, इससे दाने कम निकलते हैं और गरमीका जोर रहता है। इसकी उत्पत्तिका कारण एक प्रकारका विष है।

चिकन पाक्स।

(दूसरा खसरा)



इसमें भी पहले बुखार चढता है और पीछे छोटी छोटी मरोड़ी

जैसी फुन्सियाँ पीठपर निकलती हैं। ये चौथे पाँचवें दिन आपही मुरझा जाती हैं। इनकी उत्पत्तिका कारण भी वही जहर है।

स्मालपाक्स ।

(मसूरिका—शीतला)

—*—

पहले बुखार चढता है, पीछे सारे शरीरमें मसूर जैसी फुन्सियाँ निकलती हैं। कभी फुन्सियाँ छोटी-छोटी होती हैं और कभी बडी बडी होती हैं। दूर दूर पर और सफेद रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी होती हैं, लेकिन गहरी, चपटी, काली, लाल या ऊदे रङ्गकी फुन्सियाँ अच्छी नहीं होती।

इसकी पैदायश एक किस्मके जहरसे होती है, जो माइमें होता है। इसके सिवाय यह रोग छुतहा भी है। एकसे दूसरेके उडकर लगता है। इसीलिये औरतें अपने बालकोंको चेचकवाले बालकोंसे अलग रखती हैं।

चिकित्सा ।

—*—

डाक्टरी मतानुसार इस रोगका उत्तम इलाज टीका लगवाना है। इसीसे आजकल अङ्गरेज सरकारने गाँव-गाँवमे वैक्सीनेटर (टीका लगानेवाले) मुकर्रर कर दिये हैं। लोगोंको अपने बालकोंके जबर्दस्ती टीका लगवाना होता है। कहते हैं, टीका लगानेसे चेचक नहीं निकलती , अगर निकलती है, तो बहुत हलकी। पर आजकल अमेरिका आदि देशोंके डाक्टर टीकेको हानिकारक बताते हैं। पर मालूम जाने कौनसी बात ठीक है। इतना तो हमने भी देखा है, कि टीका लगानेपर भी चेचक निकलती ही है।

———

मसूरिका और शीतलाकी चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें।



(१) कुष्ट रोगमें जो लेप आदि चिकित्सा की जाती है, वही मसूरिकामें भी हित है।

(२) अगर मसूरिका पहले बाहर निकलकर, पीछे भीतर समा जाय। तो कचनारकी छालका काढ़ा बनाकर उसमें सोनामक्खी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा और किसी उपायसे उसे बाहर निकलना चाहिये।

(३) अगर आँखोंमें मसूरिकाकी पीडा हो, तो लिसोढ़ेकी छालको पीसकर, उसका लेप आँखों पर करना चाहिये अथवा और कोई लेप करना चाहिये अथवा दवाओंके काढ़ेसे आँखोंको धोना चाहिये।

(४) माताके रोगमें रूक्ष क्रिया या शीतल क्रियाका अधिक प्रयोग हानिकर है। अधिक रूखी क्रिया करनेसे माता अच्छी तरह नहीं निकलती और कष्ट बढ़ जाता है, इसी तरह अधिक शीतल चिकित्सासे भी खाँसी वगैर रोग होते हैं, तो वे औरभी बढ़ जाते हैं। माता निकल आने पर गरम और शीतल चीजें देना यूनानी हिकमत से भी मना है।

(५) अगर माता पकती न हो, तो माताके उपर्युक्त उपायोंसे माताको पकाना चाहिये। अगर दाह बहुत हो, तो उसका उपाय करना चाहिये। अगर पीब बहता हो, तो उस पर कोई दवा का सफ़ूफ वगैर लगाकर उसे सुखाना चाहिये। पकी माताके जल्दी सूखनेसे ज्वर भी जल्दी उतर जाता है।

(६) मातामें अगर कीड़े पड़ जाय, तो आगे लिखी हुई धूप देनी चाहिये।

(७) रोगीके रहनेका कमरा साफ, लम्बा-चौड़ा और बिस्तरे साफ सुथरे रखने चाहियें। अच्छा हो, अगर रोज चादर बदलकर धोबीको दे दी जाया करे। रोगीको साफ और मोटा कपड़ा पहनाना चाहिये।

(८) रोगीको तेलकी मालिश, मछली, मांस, गरम पदार्थ, भारी पदार्थ और हवासे बचाना चाहिये, रोगीके कमरेमे भीड़भाड़ न रखनी चाहिये। रोगीका पिया जल या बर्तन या कपड़ा दूसरेको काममें न लाना चाहिये। रोगीसे भरसक दूर रहना चाहिये, कम-से-कम अन्य बच्चोंको रोगीके पास न आने देना चाहिये, क्योंकि यह रोग एकसे उड़कर दूसरेको लगता है।

(६) अगर रोगीकी सेवा-शुश्रूषा करनेवाला, इस रोगके हमलेसे बेखौफ रहना चाहे, तो हरड़के बीजको हाथमें बाँधले। पुरुष दाहिने हाथमें बाँधे और स्त्री बायें हाथमें बाँधे। इसके सिवाय आगे लिखे हुए उपायोंसे भी अपनी रक्षा करे।

(१०) भारतमें बहुधा चैतमें माताका कोप होता है। उस समय वैद्य को दूध पीनेवाले बच्चेकी माँको पहलेसेही खून साफ करनेवाली दवाएँ पिलानी चाहिये। जौंक लगवाकर खून निकलवाना चाहिये, चिकनाई, मांस और मिठाईके त्याग देनेकी सलाह देनी चाहिये।

(११) अगर चेचक निकलनेका सन्देह हो और बच्चा दूध पीनेवाला हो, तो ऐसा उपाय करना चाहिये कि, चेचक जोर न करे; क्योंकि छोटे बालक तड़फड़ा जाते हैं। अगर जोर कम करना हो; तो बालककी माँको चार तोले खोपरा रोज खिलाना चाहिये। अगर बालक दो सालका हो, तो दो तोले रोज खिलाना चाहिये

और अगर तीन सालका हो, तो तीन तोले रोज खिलाना चाहिये। अगर चार सालका हो, तो चार तोले रोज खिलाना चाहिये। परमात्माकी दयासे चेचक बिलकुल जोर न करेगी। बड़ा बालक हो, तो उसे भी कोई ऐसी दवा देना चाहिये, कि जिसके सेवनसे उस पर चेचक का जोर न हो। ये काम उस मौसममें करने चाहियें, जब कि चेचकका दौरदौरा हो।

(१२) चेचक निकल चुकने और सूख जानेके बाद—रोगीको ऐसी कोई दवा लगाने या मुँह धोनेको देनी चाहिये, जिससे उसका रङ्ग निखर आवे और बेचारेकी खूबसूरती न मारी जाय। ऐसे ऐसे उपाय बताना वैद्यका काम है। गृहस्थ बेचारे, जिन्होंने चिकित्साशास्त्र नहीं देखा क्या जानें।

(१३) वैद्यको चाहिये कि, रोगीसे माताकी हालतमें शोच फिक या रञ्ज करने अथवा स्त्री प्रसङ्ग करनेकी मनाही कर दे। बहुतसे मूर्ख इन बातोंको नहीं समझते।

(१४) मातावालेको सबसे अलग रखना चाहिये। उसके पास स्त्रियों तथा नीच मनुष्योंको न आने देना चाहिये। मकान शीतल रखना चाहिये। दर्द होनेसे मालिश या तैल-मर्दन हरगिज न करना चाहिये और पसीने भी न निकालने चाहियें।

(१५) अगर रोगीका मुँह आ जाय, छाले हो जायँ अथवा गलेमें घाव हो जायँ, तो कुल्लोंकी दवासे कुल्ले कराकर उन्हें आराम करना चाहिये। अगर प्यास और अतिसार आदि उपद्रव हों, तो उन्हें भी शान्त करना चाहिये।

(१६) मातावालेके घरमें जगह-जगह नीमके ताजा पत्ते मँगाकर रख देने चाहियें। हर दरवाजे पर नीमकी ताजा पत्तियोंकी घनी बन्दनवार सी बाँध देनी चाहिये। रोगीको अगर नीमके पत्तोंका ...

नये पत्ते मँगाकर पुराने फेंक देने चाहियें। रोगी और रोगीके परिचारकको नीमकी टहनी हाथमें लेकर उसीसे मक्खियाँ भगानी चाहियें। नीमकी पत्तियोंकी हवासे मातामें बहुत कुछ शान्ति होगी।

(१३) जिस घरमे मातावाला हो, उस घरमें जूठे पदार्थ वगैर: न ले जाने चाहियें। शीतला में, ज्वर होने पर भी, शीतल जल देना चाहिये। गरम किया हुआ जल ज्वरोंमें हितकर है, पर शीतलाके ज्वरमें अहित यानी नुकसानमन्द है। शीतलावालेका कमरा एकान्त, शान्त और रमणीक होना चाहिये—शोर-गुल और बहुत आदमियोंकी भीड़भाड़का होना खराब है। रजस्वला स्त्री अथवा और अपवित्र मनुष्य जैसे कोढ़ी, उपदंश-रोगी अथवा खून-फिसादवालोंको रोगीके पास न जाने देना चाहिये।

(१८) हमारे यहाँ शीतलामें जो कुछ क्रियाएँ की जाती हैं, वे गरम ही की जाती हैं। निकलनेके समय और भरनेके समय गुड़ प्रभृति गरम पदार्थ दिये जाते हैं, क्योंकि शीतल पदार्थों से उसके ठिठरा जानेका खतरा रहता है, परन्तु "भावप्रकाश"में लिखा है।

> शीतलासु क्रिया कार्या शीतला रक्षयासह ।
> बध्नीयात् निम्बपत्राणि परतो भवनान्तरे ॥

शीतलाके रोगमें सम्पूर्ण शीतल क्रिया करनी चाहियें। मन्त्र वगैर से भूतादिको दूर करके, रोगीकी रक्षा करनी चाहिये। चारों ओर नीमके पत्ते बाँधने चाहियें।

एक यूनानी हकीम महाशय लिखते हैं—"हिन्दूस्थानमें जब बालकोंके चेचक निकलती है, तब लोग उनको गरम चीजें देते हैं। भोजनके लिये गुड़ और चने देते हैं। परमात्मा

ऐसे उपायोंसे रक्षा करे। चेचकमें केवल खिचड़ी या मूँगकी दाल खिलानी चाहिये। मसूरकी दाल भी गुणकारी है।"

हमारी समझमें गरम और अधिक शीतल दोनोंही क्रियाएँ हानिकारक हैं। ऊपरी कामोंके शीतल होनेमें ज़रा भी हानि नहीं। जैसे घरको हर तरह शीतल रखना, माता की फुन्सियोंके भर जानेपर,—उनमें पानी भर जानेपर, लाल चन्दन या सफेद चन्दन पीस-पीसकर लगाना और नीमकी भर-मार रखना वगैर, वगैर। बहुत लोग डरते हैं, पर हमने माताकी भरी हुई फुन्सियों पर चन्दनका लेप कराकर बड़ा फायदा उठाया है। बालककी तकलीफ एकदम मिट जाती है, शान्ति आ जाती है और फुन्सियाँ बहुत ही जल्दी बैठ जाती हैं, पर चन्दन भूलकर भी निकलती मातापर न लगाना चाहिये। जब वे भरकर मोतीसी हो जायें, तभी लगाना चाहिये।

(१९) "भावप्रकाश"में लिखा है,—मातावालेको नमकीन और चरपरे पदार्थ न देने चाहिये। अगर नमक दिये बिना न सरे, तो सेंधानोन देना चाहिये और वह भी कम। अगर पेटमें दर्द या अफारा हो अथवा वायुका कोप हो, तो जङ्गली जानवरोंका मांसरस—शोरबा जरासा सेंधानोन मिलाकर देनेकी सलाह वङ्गसेन भी देते हैं।

(१६) माताकी तीन अवस्थायें होती हैं—(१) निकलनेकी (२) भरनेकी (३) ढलनेकी। कभी माता तीन दिनमें निकल आती है, तीन दिनमें भर जाती है और तीन ही दिनमें ढल जाती है। कभी ये तीनों काम पाँच पाँच या सात सात दिनोंमें होते हैं, पर अक्सर २१ दिनसे जियादा नहीं लगते। पहली और दूसरी अवस्था में घी तेल आदि कभी न देने चाहिये।

(२०) शीतलाकी शान्तिके लिये शीतला-स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। "शीतला स्तोत्र"में आठ श्लोक हैं। आजकल लोग पाठ तो प्रायः नहीं कराते, पर औरतोंने अपने गानेमें स्तोत्र बना लिये हैं। वे माताके दिनोंमें रोगीके पास बैठ कर गाया करती हैं। जप, होम, दान-पुण्य, गौ ब्राह्मण और महादेव पार्वती का पूजन करना चाहिये। विषनाशक कोई औषधि और हीरा पन्ना आदि रत्नोंमेंसे जो रत्न इसमें शान्तिकारक हो, रोगी को धारण करना चाहिये।

(२१) वङ्गसेनने लिखा है, मसूरिकामें यदि दुष्ट व्रण हो जायँ, तो जोंक लगवाकर खराब खून निकलवा देना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो इस कामको शेषमें करना चाहिये।

अगर खून-फिसाद हो, तो शरद् और वसन्तकालमें अवश्य खून निकलवा देना चाहिये। जौंक, सींगी, तूम्बी, फस्त और नश्तर इनसे खून निकाला जाता है। जौंक हाथभरका खून खींचती है, फस्त सारे शरीरका खून निकालती है, सींगी दश अङ्गुल का और तूम्बी बारह अङ्गुलका खून निकालती है।

फोड़ा फुन्सी, गाँठ, किसी खास स्थानकी सूजन, दाह, शरीरका कहीं से लाल हो जाना अथवा पके फोड़ेकी तरह हो जाना, वातरक्त, कोढ़, सिरदर्द, तिल्ली, उपदंश, रक्तपित्त और स्तनरोग वगैर में खून निकलवानेसे बहुत जल्दी फायदा होता है। दुष्ट वात भी जब काबूमें नहीं आता, खून निकालकर आराम करते हैं। हिकमत में फस्द खोलनेकी चाल बहुत है। कमजोर, गर्भवती, प्रसूता, नपुंसक, बालक, बूढ़े, अति मैथुन करनेवाले और डरपोक प्रभृति मनुष्योंका खून फस्द द्वारा न निकलवाना चाहिये। अगर सख़्त ज़रूरत हो, तो जौंक लगवाकर खून निकलवा देना चाहिये।

जौंक लगवानेमें खतरा नहो रहता, पर जहरी जौंक न होनी चाहिये।

अगर फस्त वगैर.से खून इतना बहने लगे, जो बन्द न हो, तो जौका आटा, गेहूँ का आटा, साँपकी काँचली, रेशमी कपडेकी राख, इनको पीसकर जखम या फोडेके मुंहपर दवा देने और बाँध देनेसे खून बन्द हो जाता है। पीछे चन्दन वगैर. का शीतल लेप करना चाहिये। इन उपायोंसे खून बन्द हो जाता है। अगर इन उपायोंसे खून बन्द न हो, तो व्रणके मुखपर सुहागे आदि खारोका लेप करना चाहिये अथवा वहाँ दाग देना चाहिये।

(२२) आजकल माता रोगमें चिकित्सा का नाम लेना ही बुरा समझा जाता है। मूर्ख लोग समझते हैं, कि अगर इसमें दवा कराई तो रोगी नहो बचनेका, क्योंकि माता कुपित हो जायगी। यह उनकी भूल है। बेशक ऐसी कई माता होती हैं, जिनमें जरा भी दवाकी दरकार नहो, वे विना किसो दवाके अपने आप शान्त हो जाती हैं, पर कितनी हो अवस्थाओंमें विना इलाजके रोगी विना मौत मर जाता है। मूर्खो का शीतलाष्टकके इस मन्त्रपर विश्वास जमा हुआ है—

न मन्त्रो नौषधं किंचित पाप रोगस्य विद्यते।
त्वमेका शीतले धात्री नान्या पश्यामि देवताम्॥

हे शीतले। इस पापरोग (मसूरिका-चेचक) की न कोई दवा है और न कोई मन्त्र है, इससे बचानेवाली तूही एक है, इससे बचानेवाला और कोई देवता मेरी नजरमें नहीं आता।

यह मूर्खोंका ख्याल है और उन्होंने इसे भारतके घर-घरमें फैला दिया है, जिससे लाखों जानें वृथा जाती हैं।

आयुर्वेदके रचनेवाले महर्षियोंने शीतलाके प्रत्येक उपद्रवकी शान्तिके उपाय लिखे हैं। जान खोनेकी अपेक्षा उनसे काम लेनेमें ही भलाई है। बंगालमें इस रोगके इलाज करनेवाले, जिन्हें बसन्त चिकित्सक कहते हैं, बहुतायतसे हैं। उनको इसी चिकित्साके करते रहनेसे अच्छा अनुभव रहता है। लोग यदि इलाज नहीं भी कराते हैं, तो उनको बुलाकर रोगीको दिखाते और उनसे सलाह लिया करते हैं। माताके ढल जानेके बाद, कितने ही रोगी तो एकदम चंगे हो जाते हैं और कितनोंही को भयङ्कर ज्वर, श्वास, खाँसी और तृषा तथा अतिसार रोग पीड़ित करते हैं। अगर उस दशामें इलाज नहीं कराया जाता है, तो रोगी कलेजेमें सूजन आकर निश्चय ही मर जाता है। अगर माताके मौसममें पहले ही कोई दवा दे दी जाय, तो माता नहीं निकलती और निकलती है तो जरा भी कष्ट नहीं होता। इसलिये जहाँ तक हो, पहले रोकनेका उपाय करना चाहिये। कहा है,—"Prevention is better than cure" अर्थात् इलाज करनेसे पहले ही रोकना भला है। अगर पहले रोक न की जाय, तो समय पर तो जीवनरक्षा और रोगनाशका उपाय करना ही चाहिये। अगर मातामें कोई उपद्रव न हो, तो इलाज की ज़रूरत नहीं।

(२३) माताके ज्वरमें ज्वरकी तरह ही रोगीको अपथ्योंसे बचाना चाहिये। इसमें भी शीतल हवा, परिश्रम, तेलकी मालिश, चन्दनादि का लेप, स्नान, चिकनाई खाना पीना, क्रोध करना, भारी भोजन करना, मैथुन करना, चिन्ता-फिक्र करना, वमन, विरेचन आदि सब अपथ्य हैं। इनसे रोगीको बचाना चाहिये।

नोट—हमने जो चन्दनके लेपकी बात पहले लिखी है, वह माताके भर जाने

बाद, ढलते समयकी लिखी है। चन्दनका लेप सारे शरीरमें न कराना चाहिये। जो फुन्सियाँ पककर भयानक रूप धारण करलें, उनमें अँगुलीमें चन्दन भरकर टिपकियाँ लगा देनी चाहियें। ज्वरमें शीतल जल मना है, पर माताके ज्वरमें शीतल जल हितकर है। वमन विरेचन भी जरूरत होनेसे अवस्था विशेषमें कराया जाता है और उससे माता जल्दी सूख जाती हैं, पर सभी अवस्थाओंमें नहीं।

(२४) अगर बालकके शरीरमें माताके समय खुजली चल जाय, तो उसके हाथोंमें कपड़ा लपेट देना चाहिये और पोस्तके डोडोंको रातको भिगोकर और सवेरे मल-छानकर (औटाना मत) उसमें मिश्री मिलाकर दोनों समय पिलाना चाहिये अथवा और उपाय करना चाहिये। हम अनेक परीक्षित उपाय आगे लिखेंगे। अगर हाथ पैरोंके तलवोंमें माताके वनोंके मारे दाह यानी जलन होती हो, तो चाँवलोंको भिगोकर और उनका पानी नितार या छानकर उसे हाथ पैरोंके तलवोंपर डालना चाहिये, इससे जलन कम हो जाती है। इसी तरह आबदस्तके लिये दवाका जल बना देना चाहिये। आँखोंको भी कोई जल बना देना चाहिये, जिससे आँखोंके नष्ट होनेका भय मिट जाय; क्योंकि माता शरीरके हर हिस्सेमें निकलती है। इसमें अनेक आदमी लँगड़े लूले अन्धे या बहरे हो जाते हैं। हम उधर लिख आये हैं, कि जिस मातामें उपद्रव न हों, उसमें भूलकर भी दवा दारू न करनी चाहिये, क्योंकि वैसी माता स्वयं, बिना किसी प्रकारके कष्टके ढल जाती है। ये सब उपाय उपद्रवयुक्त मातामें करने चाहियें।

(२४) "वैद्यविनोद" में लिखा है, - सातवें दिन गोबरकी रज सिरपर डाल कर, हल्दी और चाँवलोंके चूर्णका लेप करना चाहिये। षष्ठी स्कन्दकी प्रतिमा बनाकर और पूजकर, पाँवमें कौड़ी बाँध देनी चाहिये। ऐसा करनेसे रोगीका मंगल होता है। म. शान्त होनेपर भी यदि दाह, ताप और ज्वर की शान्ति न हो,

गिलोय, धनिया, पद्माख, नीम, नेत्रवाला आदि कफपित्त-नाशक औषधियोंका शीघ्र प्रयोग करना चाहिये। मसूरिका के आरम्भमें केवल मांसरस न पिलाना चाहिये। व्रणकी सूजन दूर करनेवाले और वातरोग नाशक उपचार करने चाहियें। अगर घाव दूषित हो जायँ, तो जोंक लगाकर खून निकलवा देना चाहिये।

शीतला की चिकित्सा ।



शीतलाके रोकने या उसका जोर
कम करनेवाले उपाय ।



(१) चैतके महीनेमें दूध पीनेवाले बच्चोंकी माताओंको और दाँतवाले बालकोंको खून साफ करनेवाली औषधियाँ पिलानी चाहियें। पहलेसे ही ऐसी औषधियोंका सेवन करनेसे माता जोर नहीं करती। शाहतरे का अर्क, सरफोंकेका अर्क, खूबकला और सादे उन्नावोंका शर्बत, काहूके बीजोंका हलवा—ये सब चीजें इस कामके लिये उत्तम हैं। शाहतरे या पित्तपापडेका अर्क ही बडी उत्तम चीज है। इसका या सरफोंकेका अर्क भभकेसे खिंचवा लेना चाहिये। तेल घी मांस मिठाईसे परहेज रखना चाहिये।

रसो निम्बस्य मज्ज्या पीतश्चैत्रे हितावह ।
हन्ति रक्तविकाराश्च वातपित्त कफ तथा ॥

चैत मासमें नीमकी नरम-नरम कोपलें पानीमें घोट-छानकर पीनेसे रक्त-विकार (खून फिसाद) तथा वात, पित्त और कफके रोग नाश हो जाते हैं। इस नुसखेकी सचाईमें जरा भी सन्देह नहीं। नीम हमारे देशमें सच्चा अमृत है। इससे अनन्त रोग नाश होते हैं। हम इसके चन्द परीक्षित प्रयोग पाठकोंके उपकारार्थ लिखते हैं—(१) नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर सात दिन पीनेसे भयंकर गरमी भी

न्त हो जाती है। (२) नीमके पत्तोंका रस ३ मास तक लगातार पीनेसे, नीमके
तकी छायामें सोनेसे और नीमके पत्ते डालकर औटाये हुए जलसे रोज स्नान
रनेसे भयकर रक्तपित्त और कोढ़ रोग नाश हो जाता है। परहेजसे रहना शर्त है।
३) नीमके पत्तोंके झाग दाह-स्थानपर मलनेसे दाह—जलन नाश हो जाती है।
४) नीमकी छालके काढ़े मे धनिया और सोंठका चूर्ण मिलाकर पिलानेसे जाड़ेके
वरोंमें कुनैनसे जियादा फायदा होता है (५) पचनिम्बके चूर्णसे कोढ़ तो नाश
ो ही जाता है, पर औरभी अनेक रोग नष्ट हो जाते हैं। (६) जो शख्स सदा
सवेरेकी सवेरे कड़वे नीमके पत्ते खाता रहता है, उसका सर्प कुछ नहीं कर सकता।
(७) कड़वे नीमके पत्ते पीसकर और उसमें शहद मिलाकर लगानेसे, भयकर बहता
हुआ घाव आराम हो जाता है। (८) पुराने नीमकी लकड़ी घिस-घिसकर लगा-
नेसे खुजली नाश हो जाती है। छालको घिस-घिसकर लगानेसे पकी हुई या भरी
हुई फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं और जलन मिट जाती है। (९) गरमी के
मौसममें दस्त होते हों, तो नीमके पत्तोंके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे दस्त बन्द
हो जाते हैं और जलन मिटकर शान्ति हो जाती है। नीमके सैकड़ों प्रयोग हैं।
हम उन्हें किसी अगले खण्डमें लिखेंगे। उपरोक्त सभी प्रयोग परीक्षित हैं।

(२) अगर बालक दूध पीता हो और चेचकका मौसम हो तथा चेचक निकलनेका शुबह हो, तो बालककी माँको हर रोज चार तोले खोपरा—नारियलकी गिरी खानेकी सलाह दो। इस उपाय से माता या तो निकलेगी ही नहीं, अगर निकलेगी तो जोर नहीं करेगी। परमात्माकी दयासे यह उपाय अच्छा काम देता है।

(३) चेचकके मौसममें बालकोंको घोड़ीका दूध पिलाना, ३४ सेमल के बीज निगलवा देना अथवा छिली हुई मुलहटी ६ माशे और अनारदाने ६ माशे दोनोंको औटाकर और मल छानकर पिला-ना और ऊपरसे शाहतरेका एक तोले अर्क पिलाना—बहुत मुफीद है। इनमें से कोई न कोई उपाय अवश्य करना चाहिये। मुलेठी आदिका काढ़ा शाहतरेके अर्कके साथ पिलाना सबसे अच्छा परीक्षित उपाय है।

(४) नीमके बीज, बहेड़ेके बीज और हल्दीको बराबर-बराबर लेकर, शीतल जलमें पीस छानकर, कुछ दिन पीनेवालेको शीतलाका

भय नहीं रहता। रोटी खानेवाले बालकोंको इस नुसखे को हर मौसममें महीने दो महीने या जितने दिन हो सके अवश्य पिलाना चाहिये। बहुतही उत्तम नुसखा है। इसके पीनेसे या तो माता नहीं निकलती या कम निकलती है इसमें जरा भी सन्देह नहीं, पर और भी शिकायतें नहीं होतीं।

(५) स्त्रीके बायें और पुरुषके दाहने हाथमें हरड़का बीज बाँध देनेसे माताका भय बहुत कम रहता है।

(६) शीतलाका जोर कम करनेके लिये, बनकेलेके बीज भैंसके दूधमें पीस छानकर पिलाने चाहियें।

शीतलाके पूर्वरूपकी चिकित्सा।

(१) शीतलाके पूर्वरूपमें ज्वर आवे, तो अडूसेके रसके साथ शहद पिलानेसे शीतलाका विकार नष्ट हो जाता है।

(२) मसूरिकाके आरम्भमें हुलहुलके रसमें सफेद चन्दनका कल्क डालकर पीनेसे या केवल नीमका रस पीनेसे मसूरिका या माता का डर जाता रहता है। मसूरिकाके निकलतेही, केवल हुलहुल का स्वरस पीनेसे भी बड़ा लाभ होता है।

(३) बाँसकी छाल, तुलसी, लाख, बिनौले, मसूर, जौका आटा, अतीस, घी, बच और ब्राह्मी—इन सबको या इनमें से जो जो मिलें उनकी धूप बनाकर, मसूरिकाके आरम्भमें, धूप देनेसे मसूरिका (माता) शीघ्रही नष्ट हो जाती है।

शीतलाकी शान्तिके उपाय।

(१) लघुपचमूल, वृहत्पञ्चमूल, रास्ना, आमले, खस धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा—इनको जलमें पीसकर पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२) पटोलपत्र, सारिवा, नागरमोथा, पाढ, कुटकी खैर नीम,

खिरेंटी, आमले और कटाई —इनका काढा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(३) दशमूल, रायसन, आमले, खस, धमासा, गिलोय, धनिया और नागरमोथा,—इनका काढा पीनेसे वातज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(४) गिलोय, मुलेठी, रास्ना, लघुपञ्चमूल, लालचन्दन, कुंमेरके फल, खिरेंटी की जड और कटाई—इनका काढा, वातजनित मसूरिकामें, पकने या भरनेके समय, पीना अच्छा है।

(५) पित्तकी मसूरिकामें पहले नीम, पटोलपत्र, पित्तपापडा, चन्दन, लालचन्दन, अडूसा, धमासा, आमले त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर) और कुटकी—इनके काढेको, शीतल करके, उसमें मिश्री शहत मिलाकर पीना लाभप्रद है।

(५) पित्तकी मसूरिकामें दाह, ज्वर, विसर्प, व्रण और पित्तकी अधिकता हो, तो दाख, कुम्मेरके फल, खजूर, पटोलपत्र, नीम, अडूसा, खीले, आमले और धमासा—इनके काढेमें मिश्री डालकर पीना हित है।

(६) अनन्तमूल, पित्तपापडा, नीमकी छाल, चन्दन, लालचन्दन, मूली, आमले, कुटकी, अडूसा खस और जवासा—इनका काढा पीनेसे पित्तकी मसूरिका, दाह समेत, नष्ट हो जाती है।

(७) क्षीरमोरट और कुमेरके फल—इनका काढा बनाकर, शीतल करके, मिश्री और खीलोंका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(८) धमासा, पित्तपापडा, पटोलपत्र और कुटकीका काढा—कफज और पित्तज मसूरिकामें पीना चाहिये।

(६) पित्तकी मसूरिकामें, पहले पटोलकी जड़का काढा अथवा

लपतका काढा, ईखकी जड़के स्वरसके साथ पीना हितकारी है।

(१०) नीम पित्तपापड़ा, पाढ, परवल, सफेदचन्दन, लालचन्दन, खस, कुटकी, आमले, अडूसा और धमासा—इनको एकत्र पीसकर, खाँड मिलाकर, इस शीतल पनेको पीनेसे पित्तकी मसूरिका नष्ट हो जाती है। इसके सिवा दाह, पित्तज्वर, पित्तव्रण और पित्तविसर्प पर यह पानक हितकारी है।

नोट—वास्तवमें यह पानक इन रोगोंपर परम हितकर है।

(११) अडूसा, नागरमोथा, चिरायता, हरड़, बहेड़ा, आमला, इन्द्रजौ, जवासा, कड़वे परवल और नीम—इनका काढ़ा पीनेसे कफकी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१२) अडूसेके स्वरसमें शहद मिलाकर पीनेसे कफज मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(१३) नीम पित्तपापड़ा, पाढ, कड़वे परवल, कुटकी, सफेदचन्दन, लालचन्दन खस आमले, अडूसा और लाल धमासा—इनका काढ़ा बनाकर और खाँड या मिश्री मिलाकर पीनेसे सब दोषोंसे पैदा हुई तथा ज्वर और विसर्पवाली मसूरिका भी नष्ट हो जाती है।

(१४) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा—इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे अपक (बिना पकी) मसूरिका नष्ट हो जाती है और पकी मसूरिका शुद्ध होती है। इससे अच्छी दवा विस्फोटक ज्वरको शान्त करनेवाली और नहीं है।

(१५) पटोलपत्र, नागरमोथा, श्योनाक और चौलाई—इनके काढ़ेमें हल्दी और आमलोंका कल्क डालकर पीनेसे मसूरिका, विस-

फोटक, विसर्प, रोमान्तिका, वमन और ज्वर—ये सब नाश हो जाते हैं।

(१६) करेलेके पत्तोंके स्वरसमें, हल्दीका चूर्ण डालकर पीनेसे रोमान्तिका, ज्वर, विसर्प और मसूरिका रोग नाश होते हैं।

(१७) चिरायता, नागरमोथा, अडूसा, त्रिफला, इन्द्रजो, जवासा, नीमकी छाल और परोलपत्र—इनका काढा बनाकर और शहत डालकर पीनेसे मसूरिका रोग शमन होता है।

(१८) धमासा, पित्तपापडा, परोलपत्र और कुटकी—इनका काढा कफ-पैत्तिक मसूरिकामें पीना चाहिये।

(१६) दुर्गन्ध करञ्जके रस और आमलोंके रसमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे सूजन और कफपैत्तिक मसूरिका नाश हो जाती है।

(२०) अमृतादि काथ पीनेसे पित्तकफजनित मसूरिका नाश हो जाती है।

नोट—रक्तज मसूरिका रक्तमोक्षण—खून निकलवानेसे शान्त होती है।



मसूरिका नाशक लेप।

—*—

(२१) मँजीठकी छाल, वडकी छाल, पिलखनकी छाल, सिरसकी छाल और गूलरकी छाल—इनको एकत्र पीसकर, चारों ओर लेप करनेसे वातज मसूरिका नष्ट होती है।

(२२) सिरसकी छाल, गूलरकी छाल, खैरके पत्ते और नीमके पत्ते,—इनका लेप करनेसे कफ-सम्बन्धी और पित्त सम्बन्धी मसूरिका नष्ट हो जाती है।

(२३) सिरसकी छाल, पीपरके पेडकी छाल, लसौढेके पेडकी छाल और गूलरके पेड की छाल—इनको कूट पीस और छानकर,

हो, तो ऊपरके नं० ३४ जल से भी आवदस्तका काम लिया जा सकता है।

(३६) पैरोंकी फुन्सियोंमें बहुत दाह हुआ करता है, इसके लिये चाँवलोंका पानी तैयार करके, उसी पानीसे पाँवोंकी फुन्सियों को बारम्बार सींचना चाहिये। आधा पाव चाँवल, पानीमें भिगो दिया करो। सवेरे उस जलको छान कर काम में लाया करो। २।३ घण्टे चाँवल भीगनेसे भी चाँवलोंका जल तैयार हो जाता है।

(३७) चमेलीके पत्ते, मँजीठ, दारुहल्दी, सुपारी, आमले, मुलेठी और छौंकरेकी छाल (शमी),—इन सबको समान भाग लेकर, सोलह गुने जलमें डालकर औटा लो। पीछे मल-छानकर, इस काढ़ेमें शीतल होने पर शहत मिलाकर, इसके कुल्ले कराओ। इससे मुँहके छाले और गलेकी तकलीफ रफा हो जाती है। आमले और मुलेठीके काढ़ेके कुल्ले करानेसे भी गलेके घावोंमें फायदा होता है। काढेमें शहद अवश्य मिला लेना चाहिये।

(३८) अगर माताके स्राव (चेप या पीज) को धोनेकी जरुरत हो, तो नीम, बबूल, अशोक, कन्दूरी और बेंतकी छाल—इनको समान-समान लेकर, काढा बना और शीतल करके, इसीसे जख्म् और चेप आदि को धोओ।

निकली हुई माता रुक जाय

उसके निकालनेके उपाय।



(१) चना भूनकर खिलानेसे या तुम्बरोंका जल ओटाकर पिलानेसे माता बाहर निकल पडती है और मद तथा ज्वर आदि शान्त हो जाते हैं।

(२) तुलसीके पत्तोंके रसके साथ अजवायन पीसकर लगानेसे भी माता निकल आती है।

(३) नोम, पित्तपापड़ा, पटोलपत्र, कुटकी, अडूसा, धमासा, आमले, खस, चन्दन और लालचन्दन—इनका काढा बनाकर और उसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे सब शरीरगत मसूरिका रोग, ज्वर और विसर्प आराम हो जाते हैं तथा निकलकर भीतर चली गई हुई मसूरिका बाहर निकल आती है। इसका नाम निम्बादि क्वाथ है। यह बड़ा उत्तम काढा है।

(४) जरा-जरासी जावित्री कई दफा खिलानेसे भी माता निकल आती है।

(५) अगर मसूरिका (शीतला) बाहर निकलकर फिर भीतर समा-जाय, तो कचनारकी छालका काढा बनाकर और उसमें सोना-मक्खीका चूर्ण डालकर पिलाओ, माता फिर बाहर निकल आवेगी।



मसूरिका (माता) के पकानेके उपाय।

(१) बेरोंका चूर्ण गुडके साथ खानेसे वात, पित्त और कफ सब तरह की मसूरिका पक जाती हैं। यह नुसखा परीक्षित है। तत्काल माता पकती है।

(२) बादामके दो दाने पानीमें भिजोकर और छीलकर, पीछे पीसकर और जलमें घोलकर पिलानेसे अथवा योंही एक बादाम खिलानेसे माता भर आती है।

(३) पटोलपत्र, गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, धनिया, जवासा, चिरायता, नीम, कुटकी और पित्तपापड़ा,—इनका काढा पिला-

नेसे माता अवश्य पक जाती है। यह नुसखा इस कामके लिये निश्चयही उत्तम है। इससे पकी हुई माता भी शीघ्रही सूख जाती है।

(४) गिलोय, मुलैठी, मुनक्का, ईखकी जड और मीठे अनारका छिलका—इनको एकत्र पीसकर और गुड डालकर पीनेसे, वायुका कोप नहीं होता और माता पक जाती है। यह परीक्षित उपाय है।

नोट—इन सबमेंसे ईखकी जड छोडकर शेष सबको दूधमें डालकर औटाने और पीछे उस दूधमें ज़रासी नमककी डली डालकर फाड लेनेसे, जो पानी-सा रह जाता है, उस पानीके पिलानेसे भी माता जल्दी पकती है। पर यह सब पकते समय ही देने चाहिये।

(५) गिलोय, मुलैठी रासना, लघुपञ्चमूल, लालचन्दन, कुँभेर के फल, खिरैटी की जड और कटाई,—इन का काढा भी वातज मसूरिकामें, पाक कालमें (पकनेके समय) सेवन करना चाहिये।

(६) वङ्गसेनमें लिखा है, कफजनित और और विशेषकर कठिन मसूरिकाओंमें दही और सत्तूको मिलाकर लेप करना चाहिये।

नोट—पकने के समय सब तरह की माताओंको वायु सुखा देता है, इसलिये पाककाल में (पकते समय) बृंहण—पुष्टिकर पथ्य देना चाहिये, शोषण—सुखानेवाला पथ्य न देना चाहिये।

माताको सुखाने के उपाय।



(१) आरने कंडों की राख या गोबरका महीन चूर्ण पीप निवारण करनेके लिये बुरकना चाहिये। अथवा पञ्चवल्कल का चूर्ण बुरकना चाहिये अथवा दशांग चूर्ण बुरकना चाहिये। देखो पृष्ठ ४५६ के नं० २६।२७ प्रभृति।

माताका दाह नाश करनेके उपाय।



(१) पीछे पृष्ठ ४५५ में लिखा न० २३ सिरस, पीपल, लिसौढे आदिका लेप करना चाहिये। यह लेप बडा अच्छा है। नं० २४ का लेप भी अच्छा है।

(२) पाँवोंके तलवोंकी फुन्सियोंमें जलन हो, तो चाँवलोंका पानी बना कर उनपर सींचना चाहिये।

नोट—आँखोंमें सींचनेके जल, लेप तथा शौचकर्मके लिये जल अथवा माताके उपद्रवोंके उपाय हम पीछे लिख आये हैं।

माता रोगीको पथ्य।



मातावालेको अरुचि हो, तो अनार और अम्लरससे युक्त यूप बनाकर देना चाहिये। यूप बनानेकी विधि—पहले लिख आये हैं। इस यूपसे अरुचि नाश हो जाती है।

आजकल दूधका साबूदाना, पानीका साबूदाना या दूध बारली, चाँवलोंकी खील और कूटूकी खीलें भी दी जाती हैं। बेदाना, अनार, किशमिश और परवल तथा कच्चे केलेकी तरकारी देना भी पथ्य है।

जल शीतलही पिलाना चाहिये। अगर खैर और विजयसारके साथ औटाया जल शीतल करके दिया जाय, तो सर्वोत्तम हो।

माताके बाद।



कहते हैं, फौजकी अगाडी और माताकी पिछाडी भारी होती है। इसलिये माता ढल जानेपर भी, रोगीके पथ्यापथ्यका खयाल

रखना चाहिये। ज्वर शान्त हुए बिना स्नान न करना चाहिये। जो ज्वरकी चिकित्सामें विधि कही गई है, उसी तरह इस रोगमें भी करना चाहिये।

अगर शीतलाका ज्वर रह जाय और माता ढलजाय (ऐसा बहुत कम होता है) तो लालचन्दन, अडूसा, गिलोय, नागरमोथा और दाखका काढा पिलाना चाहिये। इससे माताका ज्वर नष्ट हो जाता है।

माताके बिल्कुल शान्त हो जानेपर,—आमाहल्दी, सरकण्डेकी जड और जलाई हुई कौडी—इन तीनोंको कूट-छानकर, भैंसके दूधमें मिलाकर, रातको चेहरेपर लगाकर सो जाना चाहिये। भूसी पानीमें भिगो देनी चाहिये और सवेरे उसी से मुख धोना चाहिये। इससे चेहरेके दाग मिट जाते हैं।

छिले मसूर और खरबूजेकी गिरी—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर इनका उबटन करना चाहिये तथा नागरमोथेको औटाकर उसके जलसे मुख धोना चाहिये। यह नुसखा सुन्दर बनानेमें बहुत अच्छा है।

अगर शरीरमें शीतलाकी गरमी हो, तो उसके निकालनेके लिये, धनिया और जीरा बराबर-बराबर लेकर, रातको चौगुने पानीमें भिगो देना चाहिये और सवेरे पीस छान मिश्री मिलाकर रोगीको देना चाहिये। परन्तु जब तक माता अच्छी तरह न निकल जाय, रोगी खाने पीने न लगे, स्नान वगैर न कर ले, तब तक यह नुसखा कभी न देना चाहिये। अगर माताके कुछ भी अंश रहनेकी हालत में दिया जायगा, तो भयानक उपद्रव खडे कर देगा। अगर माता अच्छी हो जानेके कुछ दिन बाद दिया जायगा, तो गरमीके निकालनेमें अमृत का काम करेगा। यह नुसखा परीक्षित है।

बीसवाँ अध्याय

बालरोग चिकित्सा ।

—★★★—

बालकोंकी किस्में ।

—★—

बालक तीन तरहके होते हैं —(१) दूध पीनेवाले ।

(२) दूध और अन्न दोनों खानेवाले

(३) अन्न खानेवाले ।

बालकोंके रोग होनेके कारण ।

दूध और अन्नके दूषित न होनेसे बालक निरोग रहते हैं और इनके दूषित होनेसे बालक रोगी हो जाते हैं।

भारी विषम तथा दोषोंको बढ़ानेवाले भोजनोंसे माताके शरीरमें दोष कुपित होते हैं। उन दोषोंसे दूध खराब हो जाता है और दूषित दूधके पीनेसे बालक बीमार हो जाते हैं।

वातसे दूषित दूध पीनेसे बालकको वात-सम्बन्धी रोग हो जाते हैं, स्वर क्षीण हो जाता है—आवाज बैठ जाती है, शरीर दुबला हो जाता है, मल मूत्र और वायु रुक जाते हैं। अगर बालकको यह रोग हों, तो जान लेना चाहिये कि, दूध वायुसे दूषित है।

पित्तसे दूषित दूध पीनेसे बालकके शरीरमें पसीने आते हैं,

पतले दस्त लगते हैं, कामला रोग होता है, प्यास लगती है, सारे शरीरमें गरमी लगती है तथा पित्तकी औरभी तकलीफें होती हैं।

कफसे दूषित दूध पीनेसे बालकके मुँहसे लार जियादा गिरती है, नींद बहुत आती है, शरीर भारी रहता है, सूजन होती है, नेत्र टेढ़े होते हैं और वह वमन करता है।

क्या बालकोंको भी बड़ोंकी तरहके रोग होते हैं?

ज्वर वगैर जो रोग बड़ोंको होते हैं, वही बालकोंको भी होते हैं, किन्तु चन्द रोग ऐसे हैं, जो बालकोंको ही होते हैं और बड़ोंको नहीं होते।

बालकोंके रोगोंके नाम

(१) तालुकण्टक (२) महापद्मक, (३) कुकूण (४) तुण्डी (५) गुदपाक (६) अहिपूतन (७) अजगल्ली (८) पारिगर्भिक (९) दन्तोद्भेदक,—ये रोग बालकोंको अधिक होते हैं। इनके सिवाय ज्वर, खाँसी आदि रोग जो बड़ोंको होते हैं, सो बालकोंको भी होते हैं।

तालुकण्टकके लक्षण

कुपित हुआ कफ तालूके मांसमें तालुकंटक रोग पैदा करता है। इस रोगमें तालुआ नीचेको लटक जाता है। इस कारण बालक माँका दूध नहीं पी सकता, अगर पीता है, तो ज़रा-ज़रा पीता है, दस्त पतले होते हैं, प्यास लगती है, आँखोंमें, गलेमें और मुंहमें पीड़ा होती है, बच्चा गर्दनको गिरा देता है और वमन करता है।

नोट—इस रोगमें ज्वर आता है कानकी जड़ और नाक नरम तथा ढीली हो जाती है, मलद्वारसे बारम्बार पानी गिरता और प्यास बहुत लगती है।

महापद्मकके लक्षण ।



बालकके मस्तक और मूत्राशयमें, तीनों दोषोंके कोपसे, लाल रङ्गका प्राणनाशक विसर्प राग होता है। इसको "महापद्मक" कहते हैं। मस्तकमें पैदा हुआ विसर्प कनपटियोंमें होकर हृदयमें जाता है और हृदयसे गुदामें जाता है, उसी तरह मूत्राशयमें उत्पन्न हुआ विसर्प गुदामें जाता है, गुदासे हृदयमें और हृदयसे मस्तकमें जाता है।

नोट—विसर्परोग रक्तमांस और चमड़े प्रभृतिके दूषित होनेसे आठ तरहका होता है। किसीमें लाल-लाल लम्बी मोटी और खरदरी गाँठोंकी कतार पैदा होती है, किसीमें जहाँ यह होता है वहाँ शरीर नीला, लाल या बुझे हुए अङ्गारसा हो जाता है। आगसे फूँकनेके समान फफोले हो जाते हैं। यह जल्दी फैलता है। इसमें रोगीकी संज्ञा नाश हो जाती है, उसे कहीं चैन नहीं पड़ता। किसीमें पीली-पीली लाल और सफेद फुन्सियाँ और सूजन होती है; किसीमें कुल्थीके दानों जैसी फुन्सियाँ और सूजन वगैरः होती है। इसके साथ ज्वर, अतिसार, वमन, चमड़ेका फटना, मांस का फटना, पकना, ग्लानि और अरुचि आदि उपद्रव होते हैं।

कुकूणकके लक्षण ।



दूधके दोषसे, बालकोंकी आँखोंके पलकोंमें, कुकूणक रोग होता है, जिससे नेत्रोंमें व्यथा—पीड़ा, खुजली और अत्यन्त जल स्राव होता है। इस रोगके कारण बालक अपने मस्तक, आँखोंके हिस्सों तथा नाकको रगड़ता है, सूर्यकी रोशनीको देख नहीं सकता और आँखोंको बन्द रखता है।

तुंडीके लक्षण ।



वायुसे नाभि फूल जाती है। उसमें व्यथा—पीड़ा होती है। इसी को "तुण्डी" कहते हैं।

गुदपाकके लक्षण ।



पित्तसे बालककी गुदा पक जाती है । इसीको "गुदपाक" कहते हैं ।

अहिपूतनके लक्षण ।



मलमूत्र से लिहसी हुई गुदाके न धोनेसे अथवा पसीनोंके न पोंछनेसे वे वहाँ जम जाते हैं, फिर खून और कफके कोपसे खुजली पैदा होती है। खुजानेसे तत्काल फोडे होते हैं और उनसे मवाद बहने लगता है। इस तरह घोर व्रण हो जाता है, उसीको "अहिपूतन" कहते हैं।

अजगल्लीके लक्षण ।



बालकके शरीरमे, कफ और वायुके कोपसे, चिकनी-चिकनी, शरीरके रङ्गकी, गुँथीसी, पीडा रहित मूँगके समान फुन्सी होती है, उसको "अजगल्लिका" कहते हैं ।

पारिगर्भिकके लक्षण ।



बालक गर्भवती माता या धायका दूध अधिक पीता है, तो उसके विशेष करके खाँसी, मन्दाग्नि, वमन, तन्द्रा, दुर्बलता, अरुचि, भ्रम और पेटका बढ़ना—ये होते हैं। इसीको "परिगर्भिक" और "परिभव" कहते हैं। इस रोगमें अग्निको दीपन करनेवाले उपाय करने चाहिये।

दन्तोद्भेदक के लक्षण ।

बालकके दाँत निकलते समय सब रोग आ मौजूद होते हैं, यानी दाँत निकलनेके कारण अनेक रोग हो जाते हैं। इस समय

विशेषकर ज्वर, दस्त होना, खाँसी, वमन, सिर दर्द, आँख दुखना, पोथकी रोग (पलकोंका एक रोग) और विसर्प ये रोग होते हैं।

दूध डालना।



बालक दूध पीकर उल्टी कर देते हैं, पर जब वे बहुत ही दूध डालते हैं, तब यह दूध डालनेका रोग समझा जाता है। पहले-पहल तो फटा हुआ दूध या दही सा निकला करता है, उसमें खट्टी खट्टी बदबू आया करती है। पीछे कुछ दिनों बाद पानीकी तरह पतली-पतली वमन होती है। बालक जो खाता या पीता है, वही निकल जाता है, पेट फूल जाता है और उसमें गोंगों आवाज होती है। कभी दस्त कब्जसे होता है, कभी जियादा दस्त लगता है, शरीर कमजोर और उसका रङ्ग पीला हो जाता है, चमड़ा रूखा और शीतल रहता है और बालक जिद्दी स्वभावका हो जाता है।

बालकोंकी चिकित्सा-विधि।



बड़े आदमियोंके लिये ज्वर आदि रोगोंमें जो दवाएँ दी जाती हैं, वही बालकोंको देनी चाहियें, परन्तु दागना क्षार कर्म करना, वमन, विरेचन और फस्त खोलना प्रभृति काम न करने चाहियें। अगर बालकको सख़्त तकलीफ हो, तो वमन विरेचन आदि भी कराना उचित है, क्योंकि सुश्रुत महाशय कहते हैं कि, प्राणनाशक संकट उत्पन्न हुए बिना, बालकोंको वमन विरेचन और बस्ति,—ये नहीं कराने चाहिये।

बालकोंके लिये मात्रा।



बालकोंको दोष और दूष्य तथा ज्वर वगेरः रोग बड़े आदमियों के समान ही होते हैं, इसलिये जिस रोगमें बड़ोंके लिये जो दवायें

लिखी हैं, वही बालकोंको दी जा सकती हैं, पर मात्रा थोड़ी होनी चाहिये।

विश्वामित्र कहते हैं,—बालकको उसके जन्मदिनसे १ महीने तक वायविडंगके दाने-बराबर दवा देनी चाहिये। फिर आगे दूसरे महीने में २ दाने वायविडंगके बराबर और तीसरे महीनेमें ३ दाने वायविडङ्गके बराबर देनी चाहिये। इसी तरह हर महीने दवा बढ़ानी चाहिये। पहले महीनेमें १ वायविडंगके दानेके बराबर दवा लेकर, उसका चूर्ण बनाकर अथवा कल्क या अवलेह बनाकर देना चाहिये।

वङ्गसेन कहते हैं,—१ वर्ष तक तो वायविडंगके दानोंके हिसाब से मात्रा देनी चाहिये, किन्तु १ साल बाद झाड़ीबेर (छोटा लाल बेर) की गुठलीके समान मात्रा देनी चाहिये। जब तक बच्चा दूध पीवे, तब तक यही मात्रा रखनी चाहिये। जब बच्चा दूध भी पीवे और अन्न भी खाय, तब झाडी बेरके समान मात्रा देनी चाहिये। जब दूधको छोडकर, केवल अन्न खाने लगे, तब बेरके समान मात्रा कर देनी चाहिये।

और जगह लिखा है,—बालकको पहले महीनेमें एक रत्ती दवा देनी चाहिये और वह शहत या माँके दूध या घीमें मिलाकर चटनी की तरह चटानी चाहिये। फिर दूसरे महीनेमें दो रत्ती देनी चाहिये और तीसरे महीनेमें ३ रत्ती देनी चाहिये। इसी तरह १२ महीनों तक एक एक रत्ती बढानी चाहिये। पहला वर्ष पूरा होने पर, सोलह सालकी उम्रतक, हर साल पाँच-पाँच रत्ती बढ़ानी चाहिये। सोलह से सत्तर साल तक एक मात्रा स्थिर हो जाती है। सत्तर साल के बाद, बालकोंकी तरह मात्रा धीरे-धीरे घटानी चाहिये।

एक रत्तीकी मात्रा चूर्ण, कल्क और अवलेहकी कही गई है, यानी चूर्ण देना हो या कोई दवा पीसकर लुगदीकी तरह बनाकर देनी हो या शहत वगैर में चटानी हो, तो उसे पहले मासमें १ रत्ती,

दूसरे मासमें २ रत्ती, तीसरेमें ३ रत्ती और १२ वें महीनेमें १२ रत्ती देनी चाहिये। काढ़ा देना हो, तो इन मात्राओंसे चौगुना देना चाहिये। जिस बालकको पहले मासमें १ रत्ती चूर्ण दिया जाय, उसे काढ़ा चार रत्ती देनी चाहिये।

जो बालक माँका दूध पीता हो, उसे माँके दूध या घीमें मिलाकर दवा देनी चाहिये। अगर माँको दवा खिलानी हो, तो दूध और घीमें मिलाकर नहीं देनी चाहिये, जिस विधिसे देनेको कहा हो, उसी विधिसे देनी चाहिये। जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसको भी दूध या घीमें दवा मिलाकर देनी चाहिये।

सुश्रुत महाराज और ही तरकीब बताते हैं,—वे कहते हैं, जो दवा जिस रोगमें देनी हो, उसका कल्क बनाकर उसे माँके स्तनोंके लगा देना चाहिये, यानी जो दवा बालकको देनी हो, उसे गीली पीसकर, उसकी माँके स्तनोंमे उसका लेप कर देना चाहिये। बच्चा दूध पियेगा, तब वह दवा उसके पेटमें चली जायगी।

वङ्गसेन कहते हैं,—दूध पीनेवाले बच्चोंकी धायको दवा देनी चाहिये, किन्तु बालकको न देनी चाहिये, जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, उसकी धायको दवा देनी चाहिये और उस बच्चेको भी दवा देनी चाहिये। जो बालक केवल अन्न खाता हो, धायका दूध न पीता हो, अगर उसे रोग हो जाय, तो उसे ही दवा देनी चाहिये, उसकी दूध पिलानेवाली धाय या माको दवा देनेकी ज़रूरत नहीं।

अगर बालकको लंघन करानेकी ज़रूरत हो, तो उसकी धायको लंघन कराने चाहिये —हलका, जल्दी पचनेवाला थोड़ा, पथ्य भोजन देना चाहिये—साफ़ निराहार न रखना चाहिये। बालकको कभी भी लङ्घन न कराने चाहिये। बालककी सारी चीजें बन्द करदे, पर उसका दूध हरगिज़ न बन्द करना चाहिये। अगर माके दूध

न आता हो या लड्डूनोंकी वजहसे न आवे, तो बालकको बकरीका दूध पिलाना चाहिये, क्योंकि बकरीका दूध परमोत्तम होता है। हाँ, अगर बकरीका दूध न मिले, तो बकरीकेसे गुणवाली गायका दूध देना चाहिये।

मुँह से कहकर न बता सकनेवाले छोटे बालको के भीतरी रोगो के पहचानने की तरकीबे।



(१) अगर बालक के किसी अङ्ग प्रत्यङ्ग में वेदना होती है, तो वह अपने हाथ से उस जगह को वारम्वार छूता है। अगर कोई दूसरा आदमी वहाँ हाथ लगाता है, तो बालक रोने लगता है।

(२) अगर बालक के सिर में दर्द होता है, तो बालक अपनी आँखे बन्द रखता है। इसके सिवा वह अपने मस्तक को खडा नही रखता, गर्दन को गिराये रखता है तथा सिरको धुनता और टकराता भी है। सिरमें दर्द होने से सिरका चमडा सिकुड जाता है। बालक वारम्वार सिर में हाथ लगाता और कान खींचता है।

(३) अगर बालक के मूत्राशय में पीडा होती है, तो बालक पेशाब रुकने से दुखी रहता है और खाता-पीता नहीं।

(४) अगर बालक के मल और मूत्र दोनो रुक गये हों, विह्वलता और पेट पर अफारा हो आँते बोलती हों, तो समझना चाहिये कि, बालक के पेट में रोग है।

(५) अगर बालक हर समय रोता हो रोता हो, तो उसके सब शरीरमें रोग समझना चाहिये।

(७) बालक के कम या जियादा रोने से तकलीफ की कमी और जियादती समझनी चाहिये। अगर बालक कम रोवे या धीरे

धीरे रोवे, तो कम तकलीफ समझनी चाहिये। अगर जियादा रोवे और जोर-जोर से चिल्ला कर रोवे, तो अधिक पीडा समझनी चाहिये।

(८) अगर बालक अपने होठ और जीभ को डसे तथा मुट्ठियोंको भींचे, तो उसके हृदय में पीडा समझनी चाहिये।

(९) अगर बालक का पाख़ाना पेशाव बन्द हो तथा वह उद्वेग से दिशाओं को देखे, तो उसकी वस्ति (पेडू) और गुदा में पीडा समझनी चाहिये।

(१०) अगर बालक को पेशाव न हो, प्यास अधिक लगे और मूर्च्छा हो, तो बालकके पेडू में पीडा समझनी चाहिये।

(११) अगर तन्दुरुस्त बालक रह-रहकर बार बार रो उठे, तो उसके पेट में दर्द समझना चाहिये।

(१२) अगर दूध पीनेवाले बालक को प्यास लगती है, तो वह अपनी जीभ बाहर निकालता है।

(१३) अगर बालक को ज़ुकाम हो जाता है, उसकी नाक बन्द हो जाती है, तो वह मुँह से साँस लेने के लिये, बारम्बार स्तनको छोड देता है और साँस लेकर फिर दूध पीने लगता है।

(१४) अगर साँस लेते समय बालक की नाक का छेद बडा हो जाय और नाक हिले, तो समझना चाहिये कि, बालक को साँस लेने में बडा कष्ट होता है और उसको खाँसी से बडी तकलीफ है।

(१५) अगर बालक के ज्वर की परीक्षा करनी हो, तो थर्मामीटर लगाना चाहिये। बालक की नाडी स्वभाव से ही बहुत तेज चला करती है, इसलिये धोखा होने का डर रहता है। जो अनुभवी वैद्य होते हैं, वे तो धोखा नहीं खाते, पर

नौसिखिये धोखा खा सकते हैं। थर्मामीटर से किसी तरह का धोखा नहीं हो सकता।

(१६) बालकों का पेट स्वभाव से ही कुछ बड़ा होता है। अगर हद से जियादा मोटा हो, तो समझना चाहिये कि यकृत या प्लीहा का विकार है अथवा अजीर्ण है। जो हो, उसका निश्चय करके चिकित्सा करनी चाहिये।

बाल-चिकित्सा।

ज्वरनाशक नुसख़े।

(१) भद्रमोथा, हरड़, नीम, कड़वे परवल और मुलहटी—इन पाँचों का काढ़ा पीने से सब तरह के ज्वर आराम हो जाते हैं। परन्तु यह काढ़ा सुहाता सुहाता पिलाना चाहिये। इसको "भद्रमुस्तादि-क्वाथ" कहते हैं। यह नुसखा परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, पीपल, अतीस* और काकड़ासिंगी—इन चारोंको महीन कूट पीस और छान कर रखलो। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाने से बालकों का ज्वरातिसार, खाँसी, वमन और श्वास ये सब आराम होते हैं। असल में यह "चतुर्भद्रिका चूर्ण" ज्वरातिसार (ज्वर और अतिसार) नाश करनेवाला है। अगर ज्वरातिसारके साथ खाँसी, श्वास और वमन ये उपद्रव

---

* नं० २ नुसखे से बालकोंके ज्वर, अतिसार और खांसी निश्चय ही आराम हो जाते है। अगर खांसी का ही जोर हो और आराम न होता दीखे, तो इसी में "जवासा" मिला देना चाहिये। अगर दस्तों का जोर हो, तो "नागरमोथा" निकाल कर "धनिया" मिला देना चाहिये।

भी हों, तो वे भी इसी से नाश हो जाते हैं। ये नुसखा बालकों के लिये अमृत है। अनेक वार का परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे को पेटेण्ट दवा समझिये। इस मे प्रधान दवा "अतीस" है। इसका दूसरा नाम "शिशु भैषज्य" यानी बच्चों की दवा है। अतीस अकेला हो ज्वर मे बड़ा काम करता है। यह चढे हुए ज्वरमे देनेसे भी हानि नहीं करता। अतीस को तुलसीके रसके साथ देनेसे मलेरिया ज्वर नाश हो जाता है। बालकोको मलेरिया ज्वर हो, तो यह अवश्य देना चाहिये। अगर ज्वर चले जाने पर हलका ज्वर या हरारत रह जाय, तो अतीस, नीमकी छाल और गिलोय का काढा उचित मात्रासे पिलानेसे शेष रहा हुआ ज्वर नष्ट हो जाता है और बदनमे ताकत आती है तथा भूख लगती है। अतीस पुष्टिकारक भी है। गर्भवती स्त्रियोंको जबकि ज्वरनाशक और दवाएँ गरमी करती है, यह ज्वरको नाश करता है तथा गर्भको किसी तरहकी हानि नहीं करता।

(३) हल्दी, दारुहल्दी, मुलहटी, कटेरी और इन्द्रजौ—इनका काढा बना कर सेवन करनेसे बालकोंका ज्वरातिसार, श्वास, खाँसी और वमन ये नाश हो जाते हैं।

(४) धायके फूल, बेलगिरी, धनिया, लोध, इन्द्रजौ और सुगन्धवाला,—इन सब को महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, अवलेह की तरह, चटानेसे बालकोंका ज्वरातिसार और वात विकार नाश हो जाता है।

(५) लोध, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, सुगन्धवाला और नागरमोथा,—इनको महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे ज्वरातिसार नाश हो जाता है।

(६) कुटकी का चूर्ण बनाकर, उसे मिश्री और शहदके साथ चटानेसे बालकों का ज्वर नाश हो जाता है। यह अवलेह परीक्षित है।

(७) कुटकी को जलमें पीसकर, बालकोंके शरीर पर उसका लेप करने से बालकों का ज्वर शान्त हो जाता है।

(८) नागरमोथा, काकडासिंगी और अतीस—इन तीनोंको महीन पीस छानकर, शहतमें मिलाकर, चटानेसे दूध-पीनेवाले बालकोंके ज्वर, खाँसी और वमन निश्चयही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

बाल अतिसार नाशक नुसखे।

(१) मँजीठ, धायके फूल, सिरवाली (सारिवा) और पठानी लोध—इन चारोंका काढ़ा, शीतल करके, शहत मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार (दस्तोंका रोग) आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) धायके फूल, लोध, बेलगिरी, नागरमोथा, मँजीठ और नेत्रवाला—इनका काढ़ा बनाकर पिलानेसे अथवा इन सबको पीस कूट छानकर, इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चटनीकी तरह चटानेसे बालकोंका अतिसार निश्चय ही आराम हो जाता है। यह नुसखा बालकोंके दस्त आराम करनेमें रामबाण है। बहुत बारका परीक्षित है।

(३) बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध और गजपीपल—इनका काढ़ा, शीतल होनेपर, शहत मिलाकर, पिलानेसे बालकोंका अतिसार अवश्य आराम हो जाता है। इन दवाओंको कूटपीसकर, शहदमें मिलाकर, अवलेहकी तरह, चटानेसे भी बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है। अव्वल दरजे का नुसखा है।

(४) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ—इनका काढ़ा बनाकर, सवेरेही, पिलानेसे बालकोंके सब तरहके दस्त

बन्द हो जाते हैं। इसको "नागरादि क्वाथ' कहते हैं। बालकोंके अतिसार पर अव्यर्थ है। परीक्षित है।

(५) लज्जालू, धायके फूल, लोध्र और सारिवा—इनके काढेमें, शीतल होनेपर, शहद मिलाकर पिलानेसे, दुर्धर अतिसार भी आराम हो जाता है। कई बारका परीक्षित है।

नोट—लज्जालू या लज्जावतीकी जड लेनी चाहिये। यह नुसखा भी प्रथम श्रेणीका है। कैसे ही दस्त लगते हो बन्द हो जाते हैं।

(६) वायविडङ्ग, अजमोद और पीपलके चाँवल या दाने-इन तीनों का चूर्ण निवाये जलके साथ पिलानेसे बालकोंका आमातिसार (आँव मरोडोके दस्त) आराम हो जाता है।

(७) मोचरस, लज्जावतीकी जड और कमलकी केशर—इनको मिलाकर सवा तोले लो और चाँवल भी सवा तोले लो। पीछे ग्यारह तोले जलमें इन सबको मिलाकर, यवागूके कायदेसे, यवागू बनाकर बालकको खिलाओ। इससे रक्तातिसार या खूनके दस्त आराम हो जायँगे। इसको "मोचरसादि यवागू" कहते हैं। यह यवागू अन्न खानेवाले बडे बालकको दी जाती है।

(८) धानकी खील, मुलहटी, खाँड और शहद—इनको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके पानीके साथ पीनेसे, बालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(९) धनिया, अतीस, काकडासिंगी और गजपीपल—इनका चूर्ण बनाकर, शहतके साथ मिलाकर, चटानेसे बालकोंका अतिसार और वमन नाश हो जाते है।

(१०) सुगन्धवाला, मिश्री और शहद—इन तीनोंको एकत्र मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ पिलानेसे बालकोंके सब तरहके अतिसार, प्यास, वमन और ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(११) सफेद कमलकी केशरको पीसकर, उसमें मिश्री और शहद

मिला कर, चांवलोंके जलके साथ, सेवन करानेसे, बालकोंका प्रवाहिका रोग आराम हो जाता है।

(१२) बेलकी जडका काढा बनाकर, उसमें धीलोंका चूर्ण और मिश्री डालकर सेवन करानेसे, बालकोंकी वमन और अतिसार,—ये आराम हो जाते हैं।

(१३) कुलींजनको छाछमें घिसकर और थोडीसी हींग डालकर कढी बना लो और वही खिलाओ। इससे बालकोंका अतिसार नाश हो जाता है।

(१४) काकडासिंगीका माशे या डेढ माशे चूर्ण, शहदके साथ, चटाने से बालकोंका अतिसार आराम हो जाता है।

(१५) जरासे प्याजके रसमें बाजरे बराबर अफीम घोलकर देनेसे दस्त बन्द हो जाते हैं।



बालकोंकी हिचकीपर नुसखे।



(१) जामुन, तेंदूके फल और फूल—इन तीनोंको पीसकर घी और शहद में चटानेसे बालकोंकी हिचकी नाश हो जाती है।

नोट—जहां घी और शहद एक साथ लेने हो, वहां इनको बराबर-बराबर मत लेना। एक कम और एक जियादा लेना। जैसे, घी १ माशे और शहद २ माशे।

(२) पीपल और मुलेठी—इनको महीन पीसकर, शहद और मिश्री के साथ मिलाकर, बिजौरे नीबूके रसके साथ सेवन करनेसे हिचकी और वमन दूर होती हैं।

(३) कुटकीके चूर्णको शहतमें मिलाकर चटानेसे हिचकी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४) हींग, काकडासिगी, गेरू, मुलेठी, सोंठ और नागरमोथा—इन

का चूर्ण बनाकर, शहदमें चटानेसे हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं। यह अवलेह परीक्षित है।



बालकोंकी प्यास पर नुसख़े।

—※※※—

(१) प्रियंगू, रसौत और नागरमोथा—इनको महीन पीसकर, शहद में मिलाकर चटानेसे बालकोंको बढ़ी हुई प्यास, वमन और दस्त तीनों आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) अगर खाली प्यासका रोग हो तो अनारके दाने, जीरा और नागकेशर—इन तीनोंको महीन पीसकर, इनका चूर्ण मिश्री और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी प्यास कम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) सफेद प्याजको भूँजकर खूब महीन पीस लो, पीछे उसमें घी डालकर गोली बना लो और उसे भेजेपर लगा दो। ऊपरसे अरण्डका ताजा पत्ता रखकर कपड़ेसे बाँध दो। रोज शामको यह गोली निकाल फेंको और सिरको खूब धोकर तालुवेपर गाय का घी लगा दो। साथ ही सफेद प्याजका रस, थोड़ी सी मिश्री और जीरा मिलाकर, पिलाओ। इस तरह करनेसे बालकोंका प्यास-रोग अवश्य मिट जाता है।



बालकोंकी खाँसी आराम करनेवाले नुसख़े।

—※※※—

(१) काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस—इन तीनोंका चूर्ण बनाकर और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर

और वमन,—ये नाश हो जाते हैं। अथवा अकेले अतीसके चूर्णको ही शहद मिलाकर चटानेसे बालकोंकी खाँसी, ज्वर और वमन आदि आराम हो जाते हैं। खाँसीपर तो यह राम-बाण ही है। साथमें ज्वर आदि हो, तो उन्हें भी यह आराम करता है। परीक्षित है।

(२) नागरमोथा, अतीस, जवासा, पीपल और काकडासिंगी—इनका चूर्ण बनाकर, शहदमें मिलाकर चटानेसे, बालकोंको पाँचों प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३) धनिया और मिश्री—इनको पीसकर, चाँवलोंके जलके साथ पीने से बालकोंकी खाँसी और श्वास दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) दाख, अडूसा, हरड और पीपल—इनका चूर्ण करके, शहदमें मिलाकर, तीन या पाँच दिन तक चटानेसे, बालकोंका श्वास, खाँसी और तमक श्वास आराम हो जाता है।

(५) अगर दूध पीनेवाले बालकको भयानक सूखी खाँसी हो, तो उसको दूध पिलानेवालीको पीपल और घीसे भुना हुआ उडदोंका यूप पिलाओ

(६) दाख, पीपल और सोंठ—इनका चूर्ण बनाकर, शहद और घीमें मिलाकर, चटानेसे बालकोंकी पाँचों तरहकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(७) कटेरीके फूलोंकी केशरको पीसकर, उसे शहदमें मिलाकर, चटाने से बालकोंकी बहुत दिनोंकी पुरानी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८) सोंठ, कालीमिर्च, सेंधानोन और गुड—इनका काढा, सुहाता-सुहाता गरम-गरम, पिलानेसे बालककी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

वालकोंकी वमन नाश करनेवाले नुसखे।



(१) दालचीनी, इलायची, तेजपात और नागरकेशर—इन को महीन कूटपीस और छानकर, गायके गोवरके रस और शहद में मिलाकर चटानेसे वालकोकी वमन (कय) नाश हो जाती है।

(२) कुटकीको महीन पीस-छानकर, शहदमें मिलाकर, चटानेसे वालकोंकी वहुत पुरानी वमन और हिचकी आराम हो जाती हैं।

नोट—कुटकीका चूर्ण मिश्री और शहतमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका ज्वर आराम हो जाता है। केवल शहदमें मिलाकर चटानेसे कय और हिचकी अवश्य आराम हो जाती हैं। यह "कटुक रोहिणी अवलेह" वास्तवमें इन तीनों रोगोंमें बच्चोंके लिये मुफीद है।

(३) आमको गुठली, धानकी खील और सेंधानमक—इन तीनोका चूर्ण वनाकर, शहदमें मिलाकर चटानेसे, वालकोंकी दूधकी वमन आराम हो जाती है, यानी बच्चोंका दूध गेरना वन्द हो जाता है।

(४) कटेरीके फलोका स्वरस, वडी कटेरीके फलोका स्वरस, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोठ—इन सवको एकत्र मिला कर चटानेसे, वालकका दूध डालना अवश्य आराम हो जाता है।

(५) वेरके पत्ते, चाँगेरीके पत्ते, मकोयके पत्ते और कैथके पत्ते—इन को एकत्र पीसकर, इनकी लुगदीका वालकके सिरपर लेप करनेसे वालकके वमन और अतिसार (दस्त लगना) आराम हो जाते हैं।

(६) मुलेठी और पीपलको पीसकर, विजौरे नीवूके रसमें मिलाकर चटाने या पिलानेसे वालकोंकी वमन आराम हो जाती है।

(७) पीले गेरूको महीन पीसकर, शहतमें मिलाकर सेवन करनेसे

वालकोकी वमन आराम हो जाती है। इससे, बच्चेको अवश्य सुख होता है।

नोट—इसे सोना गेरू भी कहते हैं। इस नुसख़ेसे खाँसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

विसर्प महापद्मक नाशक नुसख़े ।



(१) सारिवा, लालकमल, नीलकमल, नागरमोथा, उशीर (खस), सफेद चन्दन, कमल, मँजीठ, मुलहटी और सरसों—इन सब को महीन पीसकर विसर्प पर लेप करने से विसर्प आराम होती है। परीक्षित है।

(२) बड, गूलर, पीपल, पाखर, बेंत और जामुन की छाल, मुलेठी, मँजीठ, चन्दन, खस और पद्माख,—इनको महीन पीस कर लेप करने से वालको के व्रण की जलन, लाली, विस्फोटक, पीडा और व्रण—ये आराम हो जाते हैं।

(३) घरका धूआँ, हल्दी, कूट, राल और इन्द्रजौ—इनको पीस कर लेप करने से वालको का विसर्प रोग शमन होता है।

(४) कडवे परवल, हरड, वहेडे, आमले, नीम और हल्दी,—इनका काढा पीने से क्षत, विसर्प, विस्फोटक तथा ज्वर नाश हो जाते हैं।

वालकों का अफारा और वातशूल नाशक नुसख़े ।



(१) सेंधानोन, सोंठ, हींग और भारगी—इनका चूर्ण वनाकर, घीके साथ मिलाकर, खाने से वालकों के पेट का अफारा और वादी का दर्द मिट जाता है।

बालकों के मूत्राघात पर नुसखा।



(१) पीपल, सोंठ, मिश्री, शहद, छोटी इलायची और सैंधानोन,—इन सब को पीसकर और चटनी सी बनाकर चटानेसे बालकों के पेशाब की जलन वग़ैर' सब तकलीफें आराम होती हैं।

बालकोंकी खुजली प्रभृति नाशक नुसख़े।



(१) घरका धूँआँ, हल्दी, कूट, राई और इन्द्रजौ इनको छाछ या माठेमे पीसकर लेप करनेसे सिध्म, पामा तथा विचर्चिका नामक कोढ दूर होता है।

(२) चन्दन, खस और पद्माख—इनको पीस कर लेप करने से भी सिध्म, पामा और विचर्चिका ये आराम होते हैं।

(३) बच कूट और वायविडङ्गका काढा बनाकर, उसमें कन्धों पर्य्यन्त बालक को स्नान करानेसे, कष्टसाध्य विचर्चिका, खुजली और दाद आराम हो जाते हैं।

(४) तिल और चाँवलोंको एक जगह पीसकर नाभि पर लेप करने से अथवा भारगी और मुलेठी को पीसकर नाभि पर लेप करने से बालकों के सारे रोग नाश हो जाते हैं।

बालकोंका भय और रोदन बन्द करनेवाले उपाय।



(१) अगर बालक बहुत ही रोता हो, तो पीपल और त्रिफलेका चूर्ण

करके, उसे घी और शहद में मिलाकर वालक को चटाओ। इससे वालकका वहुत रोना और डरना आराम हो जायगा।

(२) छछूंदर की लैंडी, उडद, हल्दी, वेलके पत्ते, इन्द्रजौ और सिरस के पत्ते—इन सव की आग पर धूनी देनेसे वालकोंका रात को रोना और डरना मिट जाता है।

वालकोंके मुखस्राव पर नुसखा।

—०—

(१) सारिवा, तिल, लोध और मुलेठी—इन का काढा वनाकर, रोज मुँहमें लगानेसे या मुँह धोनेसे स्राव आराम हो जाता है। परीक्षित है।

वालकोंके मुखपाक पर नुसखे।

(१) आमकी मींगी, लोह चूर्ण, सोना गेरू और रसौत—इन सवको पीसकर और शहतमें मिलाकर लेप करनेसे वच्चोंका मुख-पाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पीपल की छाल और पीपल के पत्तोंको पीसकर और शहत मे मिलाकर लेप करनेसे वालकोंका मुखपाक रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

तालुकंटक नाशक नुसखे।

(१) हरड, वच और कूट—इनको जलमें पीस कर, लुगदीसी वनाकर और उसे शहतमें मिलाकर, माता के दूधके साथ पिलाने से

तालुकण्टक रोग—यानी वह रोग जिसमे तालुआ नीचे लटक जाता है और सिरमें गड्ढा पड जाता है तथा जिस रोगके मारे बालक दूध नही पीता—अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—इस कल्कको माके दूधके साथ भी देते हैं और चाँवलोंके जलके साथ भी देते हैं। परीक्षित है।

कुकूणक नाशक नुसखे।

(१) हरड, बहेडा, आमला, लोध, पुनर्नवा (साँठ), अदरख, कटेरी, और कटाई—इनको जलमें पीस कर, कुछ कुछ गरम करके, सुहाता सुहाता पलकों पर लेप करनेसे कुकूणक रोग नाश हो जाता है।

नोट—यह रोग पलको पर होता है। नेत्रोंमे अत्यन्त पीडा, स्राव और खुजली होती है। बालक अपने माथे और नाक-आँखों को घिसता है, सूरजकी चमक बुरी लगती है और आँखें बन्द रखता है।

नाभि की सूजन और पाक आराम करनेवाले नुसखे।

(१) मिट्टी के ढेलेको आगमें गरम करके और पीछे दूधमें बुझा कर, उससे नाभि पर सुहाता-सुहाता सेक करनेसे नाभि (ढूँडी) की सूजन नाश हो जाती है।

(२) हल्दी, लोध, फूल प्रियगू और मुलेठी—इनको जलमें पीस कर, लुगदी सी बना लो और पीछे कलईदार बर्तनमें काले तिलका तेल और लुगदी मिलाकर तेल पकालो। इस तेलको नाभि

पर आहिस्ते-आहिस्ते लगाने और इन्हीं चारों दवाओंको महीन पीसकर बुरकनेसे नाभिपाक (सूंडी का पकना) आराम हो जाता है ।

(३) चन्दनका महीन बुरादा नाभि पर बुरकने से भी नाभि का पकाव आराम हो जाता है ।

(४) बकरी की मैंगनी जलाकर, उसकी राख नाभि पर लगानेसे भी नाभिका पकना मिट जाता है । परीक्षित है ।

(५) अगर नाभि उथल गई हो, तो हरा धनिया पीसकर लगाना चाहिये ।

गुदपाक नाशक नुसखे ।

बालकोंको गुदा के पकाव में पित्तनाशक चिकित्सा करनी चाहिये । विशेष करके रसौत पिलाने और रसौतका लेप करनेसे गुद्पाक आराम होता है ।

(२) शख, मुलहटी और रसौत—इन औषधियों को पानीमें पीसकर लेप करनेसे गुद्पाक आराम होता है । परीक्षित है ।

नोट—उत्कट गुदपाक रोगमे जौंक लगवाकर खून निकलवाना हितकारी है ।

अहिपूतन नाशक नुसखे ।



(१) गुदाके मल मूत्रको अच्छी तरह साफ न करनेसे खुजली और घाव हो जाते हैं तथा मवाद बहने लगता है,—उस रोगमें शङ्ख, सफेद सुरमा और मुलहटी—इनको पानीमें महीन पीसकर लेप करनेसे आराम होता है । परीक्षित है ।

पारिगर्भिककी चिकित्सा।



इस रोगमें वालकको अग्निदीपन करनेवाली दवाएँ देनी चाहियें।

व्रणपश्चातककी चिकित्सा।



इस रोगमें पित्तके कुपित होनेसे, जौंकके पेटकी समान, गुदामें लाल रङ्गका दाह, ज्वर और खाँसीयुक्त व्रण उत्पन्न होता है। इसमें मलका रङ्ग पीला होता है तथा मलस्तम्भ—कब्ज होता है। इसको व्रणपश्चातक रोग कहते हैं। यह अत्यन्त दारुण रोग है।

इस रोगमें चतुराईसे जौंक लगानी चाहियें और पञ्चक्षीर वृक्षोंके सुहाते-सुहाते गरम काढ़ेसे गुदाको धोना चाहिये।

(१) मुलेठीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे यह रोग आराम होता है।

(२) चन्दन, दोनों सारिवा और शङ्खनाभि,—इनको पानीमें पीसकर इनका लेप करनेसे तथा इन्हीं दवाओंको सूखी पीसकर शहदमें मिलाकर चटानेसे व्रणपश्चातक आराम हो जाता है।

(३) विजयसारके फूलोंको महीन पीसकर, भातके माँडमें गोली बना कर सेवन करनेसे व्रणपश्चातक रोग आराम हो जाता है।

वालकोंकी सूजन पर नुसखे।



(१) नागरमोथा, पेठेके बीज, देवदारु और इन्द्रजौ—इनको जलमें पीस कर पीनेसे वालकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

(२) कालीमिर्चको मौनी घीमें मिलाकर सेवन करनेसे बालकोंकी सूजन दूर हो जाती है ।

बालकोंके सूखापाई रोग नाशक नुसखे ।



(१) जो बालक अच्छा खाने और जठराग्नि दीपन होनेपर भी सूखता चला जाय अथवा जो बालक दुर्बल हो, पर जठराग्नि अत्यन्त तेज हो, निरन्तर भूखा हो भूखा चिल्लाता हो, उसको विदारीकन्द, गेहूँ और जौका आटा—इन तीनोंको घीमें मिलाकर खिलाना चाहिये और ऊपरसे शहद और मिश्रीके साथ दूध पिलाना चाहिये ।

नोट—अगर दूध कच्चा माफिक हो, तो शहद और मिश्री मिलाकर पिला देना चाहिये । अगर कच्चा नुकसान करे, तो दूध गरम करके, शीतल होनेपर, उसमे शहद और मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये ।

(२) सेंधा नमक, त्रिकुटा, बड़ो करञ्ज, पाढ और पहाडी करञ्ज—इनको एकत्र पीसकर, शहत और घीमें मिलाकर, सेवन करनेसे बालकोंका सूखना बन्द हो जाता है ।

दाँतोंका इलाज ।



(१) चूना और शहत मिलाकर दन्तपालीमें लगानेसे दाँत सहजमें जम जाते हैं ।

(२) धायके फूल, पीपल और आमलोंका रस—इनको एकत्र मिला कर लगानेसे भी दाँत सहजमें जम जाते हैं ।

(३) काकड़ासिंगी और सागोनके द्वारा दूध पकाकर, उस दूधको

(३) सम्मग अरबी १ तोला और एलुआ ६ माशे—इनको कूट-छान कर, घीग्वार के रसमें मिलाकर, पेटपर लगानेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(४) करेलेके पत्ते, अडूसे के पत्ते, पके नागरपान और जामुनकी छाल—इन सबका रस निकालकर और एकत्र करके, उस रसमें "वच" घिसकर, सात दिन तक पिलानेसे और पथ्य रखनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सिरमें जूँ।

अगर लडकी या लडकेके सिरमें जूँ पड जायँ, तो कडवे नीमके बीज पानीमें पीसकर सिरमें लगाओ या दाबो।

कानमे कीडा।

अगर बालकके कानमे कीडा या मच्छर घुस जाय, तो मकोयके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। अथवा कसौंदीके पत्तोंका रस कान में टपकाओ। अगर कानमे कनखजूरा घुस गया हो, तो मरोड-फली की जडको रेंडीके तेलमें घिसकर, १०।१५ बूंद कानमे टपकाओ। इससे जानवर मरकर और फूलकर ऊपर आजायगा।

बिच्छू प्रभृति का इलाज।

अगर डांस काट खावे, तो काटे स्थानपर प्याजका रस लगा दो।

अगर बिच्छू काट खाय, तो प्याजके दो टूकडे करके लगाओ। अथवा सफेद कनेरको घिसकर डङ्कपर लगाओ अथवा कनेरकी जड घिसकर पिलाओ। इसके लगाने और पिलानेसे साँप और बिच्छू दोनोका जहर उतर जाता है। हुरहुजके पत्तोंका रस नाकमें टपकाने और उसी रसको डङ्कपर लगानेसे बिच्छूका जहर उतर जाता

होठ फटना ।



अक्सर बालकोंके और बड़े लोगोंके होठ खुश्कीकी वजहसे फट जाते हैं। उनके लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहियें :—

(१) घीमें नमक मिलाकर, हर रोज दिनमें तीन दफा, नाभि पर मलना चाहिये।

(२) तरबूजकी मींगी पानीमें पीसकर होठों या जीभपर मलनेसे होठ और जीभका फटना आराम हो जाता है।

पसलीका रोग ।

—*—

इस रोगमें बुखार और खाँसी होती है और पसली दब जाती है। यह रोग दो तरहका होता है।—(१) वह जो मलकी गरमीसे होता है। इसमें ज्वर भी होता है। यह चिन्ताजनक नहीं है। इसमें भीतरके जोड़ छीलनेवाली चीजें जैसे,—तूतिया या जमालगोटा वगैर॰ न देने चाहियें, बल्कि अमलतासका गूदा, उन्नाव, दाख या बनफशा प्रभृतिसे शीघ्र ही मल निकालना चाहिये। (२) वह होता है, जिसमें कफका जोर होता है। यही भयदायक है। इसमें ज्वर और उर्द्ध्वश्वास होता है। इसीको डब्बेका रोग भी कहते हैं।

(१) कमीला आठ माशे और हींग एक माशे—इनको पीसकर और दहीके तोडमें खरल करके, गोलमिर्च-समान गोली बनाकर, दूध पीनेवाले बालकको एक गोली गरम जलके साथ देनी चाहिये और बड़े बालकको अन्दाजसे जियादा देनी चाहिये। इससे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(२) बालकके पेटपर रेंडीका तेल मलकर, उसपर बकायनकी पत्ती गरम करके सुहाती-सुहाती बाँधनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(३) सम्भग अरबी १ तोला और एलुआ ६ माशे—इनको कूट-छान कर, घीग्वार के रसमें मिलाकर, पेटपर लगानेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है।

(४) करेलेके पत्ते, अडूसे के पत्ते, पके नागरपान और जामुनकी छाल—इन सबका रस निकालकर और एकत्र करके, उस रसमें "बच" घिसकर, सात दिन तक पिलानेसे और पथ्य रखनेसे डब्बेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सिरमें जूँ।

अगर लड़की या लड़केके सिरमें जूँ पड़ जायँ, तो कड़वे नीमके बीज पानीमें पीसकर सिरमें लगाओ या दाबो।

कानमें कीड़ा।

अगर बालकके कानमे कीड़ा या मच्छर घुस जाय, तो मकोयके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। अथवा कसौंदीके पत्तोंका रस कान में टपकाओ। अगर कानमें कनखजूरा घुस गया हो, तो मरोड़-फली की जड़को रेंडीके तेलमें घिसकर, १०।१५ बूंद कानमे टप-काओ। इससे जानवर मरकर और फूलकर ऊपर आजायगा।

बिच्छू प्रभृति का इलाज।

अगर डांस काट खावे, तो काटे स्थानपर प्याजका रस लगा दो।

अगर बिच्छू काट खाय, तो प्याजके दो टुकड़े करके लगाओ। अथवा सफेद कनेरको घिसकर डङ्कपर लगाओ अथवा कनेरकी जड़ घिसकर पिलाओ। इसके लगाने और पिलानेसे सांप और बिच्छू दोनोंका जहर उतर आता है। हुरहुजके पत्तोंका रस नाकमें टप-काने और उसी रसको डङ्कपर लगानेसे बिच्छूका जहर उतर जाता

है। सेंधानोन घीमें मिलाकर बारबार लगाने अथवा तिलके तेलका तरडा देनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है। सत्यानाशीको जडकी छाल, पानमें रखकर, खानेसे विच्छूका जहर उतर जाता है। घीमें से'धानोन मिलाकर पीनेसे बिच्छूका जहर उतर जाता है। जीरेको जलमें पीसकर, लुगदी सी बनाकर, उसमें घी और सेंधानोन मिला कर गरम करो और शेषमें शहद मिलाकर विच्छूके काटेपर लेप करो, तो ज़हर उतर जायगा।

साँप काट खाय, तो सिरसके पत्तोंके रसमें सात दिन तक भावना दी हुई सफेद मिर्चों की नस्य दो या आँखोंमें आँजो। अवश्य लाभ होगा। घरका धूमाँ, हल्दी, दारुहल्दी और जड समेत चौलाई—इन सब को दहीमें पीसकर और घी मिलाकर पिलाओ।

बडका अङ्कुर, मजीठ, जीवक, ऋषभक, बला, गँभारी और मुल-हटीको महीन पीसकर पीनेसे सब तरहका ज़हर उतर जाता है।

सफेद चिरमिटीकी जड घिसकर पिलानेसे साँप का जहर उतर जाता है।

नीमके पत्ते और निमक अथवा नीमके पत्ते और कालीमिर्च चबानेसे भी साँपका जहर उतर जाता है। जब तक जहर न उतर जाय, इनका चबाना बन्द न करना चाहिये। जब जहर उतर जा यगा, तब ये कडवे लगने लगे गे।

सफेद कनेरके सूखे फूल और कडी तमाखू बराबर बराबर लेकर और थोडासा इलायचीका चूर्ण मिलाकर, पीस-छानकर सुँघानेसे साँपका जहर उतर जाता है।

पिठवनके पत्तोंका रस पिलानेसे साँपका जहर उतर जाता है।

सिरसकी जड बकरेके मूतमें पीसकर लेप करने या पिलानेसे चूहेका जहर उतर जाता है।

इन्द्रायणकी जड़, अङ्कोलकी जड, तिलकी जड़ और मिश्री,—

इन को पीसकर और शहद तथा घीमें मिलाकर पीनेसे भयानक चूहेका विष भी उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी समगा, पतग और नागकेशर—इनको जलमें पीसकर लेप करनेसे मकडीका जहर उतर जाता है।

हल्दी, दारुहल्दी और गेरूको जलमें पीसकर लेप करनेसे नाखून और दाँतोंका जहर उतर जाता है। आदमीको उस स्थानपर पेशाव करानेसे भी लाभ होता है।

नहरू या बाला।



अगर नहरू या बाला निकल आवे, तो कडवे नीमके पत्ते पीस कर उसका लेप करनेसे नहरू आराम हो जाता है।

बाल न आना।



अगर कहीं बाल न आते हों, तो कडवे परवलके पत्तोंका रस उस जगह लगाओ।

अगर सिरमें गञ्ज हो, तो अरीठेके पत्तोंसे सिर धोओ और करञ्जेका तेल, नीबूका रस और कडवे कैथके बीजोंका तेल मिलाकर लगाओ।

हाथीदाँतकी राख और रसौत लगानेसे फौरन बाल आ जाते हैं।

लू या आगकी लपक लगना।



अगर बालकको लू से बचाना हो, तो एक प्याजका गट्ठा हर समय उसके पास रक्खो।

अगर लू या आगकी लपक लग जाय, तो एक प्याजको भूँजलो और एकको कच्चा रखो, पीछे उनको सिलपर पीसकर और साथ ही दो माशे जीरा और दो तोले मिश्री मिलाकर खिलाओ।

धनिया जलमें पीसकर और मिश्री मिलाकर पिलानेसे—न लू लगती है और न आम खानेसे गरमी होती है।

अगर आगकी लपक लग जावे, तो खरबूजेके बीज पीसकर सिर पर लगाओ और रस शरीर पर मलो।

पेटका रोग।



अगर बालकके पेटमें कीड़े हों या बदहजमीका रोग हो, तो प्याजका रस निकालकर पिलाओ।

अगर बालकके पेटमें दर्द हो, तो करेलेके पत्तोंका रस एक पैसे भर जरा सी हल्दी मिलाकर पिला दो, कय और दस्त होकर पेट साफ हो जायगा।

अगर अजीर्ण हो, तो नीबूके रसमें केशर घिसकर चटा दो। अगर पेटमें मल रुक रहा हो, तो नीबूके रसमें जायफल घिसकर चटा दो।

अगर बालकके पेटमें कीड़े हों, तो केशर और कपूर एक-एक चाँवल भर या कम-जियादा मिलाकर दूध पिला दो।

अगर पेटपर अफारा हो, तो गधेकी लीद गरम करके पेट पर बाँधो अथवा सरसोंकी खल गरम करके बाँधो अथवा आकके पत्ते घीसे चुपडकर और सेककर बाँध दो अथवा हींगको जलमें पीसकर और गरम करके टूँडीके आसपास और टूँडीपर लेप कर दो।

बालकके पेटमे से मिट्टी निकालना।



अगर बालकके पेटमें मिट्टी हो, तो पका केला शहदमें मिलाकर खिलाओ।

केशर, मुलहटी, पीपर और निशोथ - इनका काढा बनाकर, चिकनी मिट्टीको काढेमें डुबाकर सुखादो। इस तरह चार बार डुबाओ और सुखाओ, पीछे उसी मिट्टीको बालकको खिलाओ। उसके खानेसे खाई हुई मिट्टी निकल आवेगी।

बालककी आँखमे रोग।

—※—

अगर बालककी आँखमें मातासे फूला पड जाय, तो दूधमें चिरमिटी घिसकर आँजो।

अगर बालककी आँखमें गरमी हो, तो प्याजके रसमें मिश्री मिलाकर आँजो। अथवा लालचन्दन घिसकर आँखके ऊपर लगाओ।

अगर बालककी आँख दुखती हो, तो प्याजका रस आँखमें डालो।

धनियाको एक कपडेकी पोटलीमें बाँध कर पानीमें भिगो दो। पीछे उसे बारम्बार दुखती आँख पर लगाओ। इससे सुख मालूम होगा।

अगर आँखोंमें जलन हो, तो गुलाब-जलके छींटे आँखोंमें मारो अथवा केशरको घोटकर शहदमें आँजो।

लोध १ माशे, भूनी फिटकरी १ माशे, अफीम आध माशे और इमलीकी पत्तियाँ ४ माशे सबको पीसकर पोटली बनालो और पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरो। इससे आँखोंकी पीडा निश्चय ही कम हो जाती है। इमलीकी पत्तियाँ, सिरसकी पत्तियाँ, हल्दी और फिटकरी,—सबको बराबर-बराबर सवा दो-दो माशे लेकर महीन कूट कर, पोटली बनाकर और पानीमें भिगोकर आँखों पर फेरनेसे और कुछ आँखोंमें टपकानेसे आँखोंकी पीडा और समल वायु आराम हो जाती है।

कपूर ३ माशे और पठानी लोध १ माशे—दोनोंको पीसकर पोटली बाँधकर और १ घण्टे पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे और भीतर टपकानेसे दुखती आँखमें लाभ होता है।

फिटकरी १ माशे और अफीम दो माशे—बिना पीसे पोटलीमें बाँधकर, पानीमें भिगोकर, आँखोंपर फेरनेसे आँखोंकी ललाई जाती रहती है।

जिस दिन आँख दुखनी आवे, उसी दिन धतूरे की पत्तियों का रस निकालकर और कुछ गरम करके कान में टपकाओ। अगर बाईं आँख में पीड़ा हो, तो दाहने कान में टपकाओ और अगर दाहनी आँख में दर्द हो, तो बायें कान में टपकाओ।

नीमकी कोंपले पीसकर रस निकाल लो और जरा गरम कर लो। अगर दोनों आँखों में दर्द हो, तो दोनों कानों में टपकाओ। अगर दाहनी आँख में ही दर्द हो, तो बायें कान में टपकाओ। अगर बाईं आँख में दर्द हो, तो दाहने कान में टपकाओ। दुखती आँख में लाभ होगा।

बड का दूध आँखों में लगानेसे नेत्र-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

कटाई के पत्तों का रस आँखों में टपकाने और कटाई के पत्ते पीस कर आँखों पर बाँधने से दुखती आँख में अवश्य लाभ होता है, पर लगता बहुत है।

अगर रतौंधी हो, तो प्याज का रस आँखों में लगाओ अथवा समन्दर-फलका गूदा बकरी के मूत्र में पीसकर आँजो अथवा लाहौरी नमक की सलाई आँखों में फेरो अथवा दही के पानी में थूक मिलाकर आँजो अथवा अदरख का रस आँखों में टपकाओ अथवा हुक्के के नेचे की कीट आँखों में आँजो अथवा कालीमिर्च थूक में घिस कर आँजो।

बालकके तुतलानेका इलाज।



अगर बालक तुतलाता हो, तो "लघु ब्राह्मी" के ताजा पत्ते कुछ रोज लगातार खिलाओ। इनसे जीभ नर्म और पतली हो जायगी।

बालकको जल्दी बढानेका उपाय ।

अगर बालकको जल्दी बढाना हो, तो प्याज और गुड मिला कर कुछ दिन खिलाओ। अगर बालककी चैतन्यता बढानी हो, तो मक्खन और छुहारे खिलाओ ।

बहरापन का इलाज ।

अगर किसी कारण से कान से कम सुनाई देता हो, तो सफेद कत्था कपडे में छान कर, गरम पानी में मिलाकर, पिचकारी द्वारा कानमें पहुँचाना चाहिये और पीछे कानको धोकर साफ कर लेना चाहिये । अगर किसी जख़्म वगैरः के कारण से बहरापन होगा या माता के पीछे बहरापन हो गया होगा, तो आराम हो जायगा ।

मुबारकी रोग का इलाज ।

अगर बालक के पेटमें मल की गाँठ बँध गई हो, पेट फूल रहा हो, पसली दुखती हो, गालों पर सूजन हो, पेशाब पीला हो, कम जोरी हो , तो समझ लेना चाहिये कि "मुबारकी' रोग है । अगर मुबारकी रोग हो, तो खैर की अन्तर छाल ३ माशे और गोरोचन आधे उडदके बराबर—गायके दूधमें घिस कर, रोज़ सवेरे, ३ दिन तक, सेवन करानेसे अवश्य लाभ होगा ।

मुख के घावों का इलाज ।

अगर बडे बालक के मुँह मे घाव हों, तो सफेद चिरमिटीके पत्ते, शीतलचीनी और मिश्री मुँहमें रख कर चूसनी चाहिये । अथवा चिरमिटी की जड चबानी चाहिये अथवा शहद और शीतल जल मिलाकर गरगरे करने चाहियें ।

जिन कारणोंसे हिचकी रोग होता है, उन्ही कारणोंसे श्वास होता है। वायु कफके साथ मिलकर प्राण, जल और अन्नके बहनेवाली राहोंको रोक देता है, तव कफके मारे उसकी आपकी राह भी रुक जाती है, तव वह श्वास पैदा करता है। श्वासमें वायुका कुपित होना ही मुख्य कारण है। श्वास पाँच प्रकारके होते हैं। उनके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भाग में लिखेंगे। यहाँ हम ज्वरमें यदि श्वासका उपद्रव हो, तो उसके दबानेके चन्द उपाय लिखते हैं, क्योंकि यह ऐसा उपद्रव है कि, शीघ्रही उपाय न करनेसे फौरन प्राण नाश करता है। यह वहुधा छाती पर कफके सूखनेसे होता है। कफको पतला करना और हवाके आने जानेकी राह साफ करना ही इसका उत्तम उपाय है।

श्वासनाशक उपाय।



(१) छोटी पीपर, कायफल और काकड़ासिंगी—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इनका ४।६ या ८ रत्ती चूर्ण शहतमें मिलाकर चाटनेसे श्वास दब जाता है। यह चूर्ण सुबह शाम दो बार चाटना चाहिये और कम-से-कम दो रोज देखना चाहिये। यह हमारा आज़मूदा नुसखा है। अवश्य फायदा करता है। अगर दो रोज में फायदा न करे या दवा चटानेपर भी रोग बढ़े ही बढ़े—घटे नहो, तो दूसरा उपाय करना चाहिये।

(२) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे श्वास, खाँसी और जुक़ाम में अवश्य लाभ होता है। जुकामके कारणसे हुए श्वास खाँसीमें तो निश्चय ही यह फायदा करता है। अनेक वार आजमा चुके हैं।

(३) सोंठका काढा बनाकर, उसमें शहद मिलाकर पिलानेसे भी श्वास में लाभ होता है।

(४) काकडासिङ्गी, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर), त्रिफला, कटेरी, भारङ्गी, पोहकरमूल और पाँचों नमक—इन सबको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको १।२ या ३ माशे, रोगीके बलाबल अनुसार, गरम जलके साथ खिलानेसे अवश्य लाभ होता है। यह चूर्ण हिचकी, श्वास, ऊर्ध्ववात, खाँसी, अरुचि और पीनसमें बड़ा गुण करता है।

(५) अगर गलेमें कफका घरघराहट बहुत हो, यानी कफका जोर हो, तो अदरखका रस निकालकर, उसमें २ चाँवल या ४ चाँवल या १ ही चाँवल-भर कस्तूरी घोटकर पिलानेसे बहुत लाभ होता है। जब तक श्वास न दबे तबतक, हलकी मात्रा कस्तूरीकी दिनरातमें ३।४ बार अदरखके रसमें पिलानी चाहिये। परीक्षित है।

(६) सोंठको तवेपर अधभूँजी करके और उसको महीन पीसकर, छातीपर मलनेसे श्वासमें बहुत जल्द लाभ नजर आता है। परीक्षित है।

(७) कुलथी, काकडासिंगी, अडूसा और सोंठ—इनका काढा करके उसमें पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे श्वास, खाँसी, हिचकी और अरुचि शीघ्रही आराम होते हैं।

(८) दशमूलके काढेमें पोहकरमूलका चूर्ण (अथवा अरण्डकी जड़) मिलाकर पीनेसे श्वास में अवश्य लाभ होता है, खाँसी और पसलीके दर्दमें भी फायदा होता है। श्वासवालेको यह परमोत्तम उपाय है। परीक्षित है।

(९) बिना धूएँकी आगमें की हुई मोरपंखकी राख २ रत्ती और पीपलका चूर्ण २ रत्ती—इनको शहद में मिलाकर चाटनेसे भी श्वासमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(१०) हल्दी, कालीमिर्च, दाख गुड, रास्ना, पीपल और कचूर—इन को बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर चूर्ण करके ३।२ या ६ माशे चूर्ण शहतके साथ चाटनेसे श्वास नाश होता है।

(११) साहस करने, भयङ्कर पदार्थ दिखाने, अति हर्ष, अति क्रोध या डरानेसे जिस तरह हिचकीमें लाभ होता है, उसी तरह श्वासमें भी अनेक बार लाभ होते देखा गया है।

(१२) दोनों पसवाड़ोंमें तथा हाथोंको बीचकी उँगलियोंमें गरम लोहे से दागनेसे घोर श्वास भी दब जाता है। किसी-किसीने कंठ-कूपको भी गरम लोहेसे दागना अच्छा लिखा है।

(१३) आरने ऊपलोंकी आगमें दरांतको गरम करके, उसकी नोकसे हड्डी पञ्जर—पसवाड़ेमें दाग देनेसे श्वास रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) धतूरेके जड़की छालको छायामें सुखा लो। पीछे कोई चार आने-भरके अन्दाजसे चिलममें रखकर, रोगीको तमाखूकी तरह पिलाओ। इससे भी श्वास दब जाता है; पर यह भी गरम ही उपाय है। अगर रोगी चिलम न पीसके, तो न पिलाना चाहिये।

(१५) हिचकी और श्वासमें पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे बड़ा फायदा होता है।

वमन नाशक उपाय।

(१) पित्तपापड़ेके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे ज्वर समेत वमन नाश हो जाती है। पित्तपापड़ा २ तोले लेकर, आधसेर जलमें औटाना चाहिये और चौथाई जल रहनेपर उतार लेना चाहिये।

(२) छोटी हरडके चूर्णको शहदमें मिलाकर चटानेसे अनेक तरहकी वमन या क्य नाश हो जाती हैं। इस उपायसे दोष नीचे जाता है, इसीसे वमन झट आराम हो जाती है।

(३) गिलोय, मोम, परवल और त्रिफला—बराबर-बराबर छै-छै माशे लेकर काढा बनाने और उसमें शहद मिलाकर पिलाने से पित्त प्रधान त्रिदोषजन्य दुर्जय वमन तथा अम्लपित्त भी आराम हो जाता है।

(४) चन्दन उबालकर, उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है।

(५) मक्खीका गू शहदमें मिलाकर चटानेसे पित्तकी वमन आराम हो जाती है। अगर शहद न हो, तो चीनीके साथ भी चटा सकते हो।

(६) पानीमें पुराने चाँवल भिगो दो। पीछे कोई घण्टेभर बाद मल कर पानी निकाल लो। उसमे जरासी मिश्री मिलाकर पिलाओ। इससे भी वमन आराम होती है।

(७) गिलोयके काढ़ेमें शहद मिलाकर पिलानेसे वमन आराम होती है, परन्तु काढेको शीतल करके शहद मिलाना चाहिये।

(८) पीपलकी छालको जलाकर राख करलो और उसी समय पानीमें भिगोदो। उसी पानीको थोडा-थोडा रोगीको पिलाओ। इस उपायसे कठिन से-कठिन वमन शान्त होगी। परीक्षित है।

(९) बरफका टुकडा मुँहमें रखनेसे वमन और हिचकी तथा प्यासमें लाभ होता है।

(१०) बायबिडङ्ग, हरड, बहेडा, आमला और, सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। इस चूर्णमेंसे माशे माशे भर चूर्ण शहद मिलाकर चटानेसे कफकी वमन आराम हो जाती है।

जो प्यासका उपद्रव होता है, उसीके चन्द उपाय लिखते हैं। जब प्यास का जोर होता है, तब गला, होंठ, मुँह और तालू ये सूखने लगते हैं और इससे मोह, भ्रम, दाह, सन्ताप और बकवाद ये लक्षण बहुधा होते हैं। सभी लक्षण हमेशा नहीं होते, कभी कम और कभी सभी लक्षण होते हैं।

(१) बडकी जटा, महुआ, धानकी खील, कूट और कमलगट्टेकी गिरी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। पीछे छान कर शहदमें गोली बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त होती है। कोई-कोई महुएकी जगह "आमला" लेते हैं। प्यास नाश करनेके लिये यह नुसखा उत्तम और परीक्षित है।

(२) बिजौरा, कैथ, अनार, लोध्र और बेर—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर, मस्तकपर लेप करनेसे दाह और शोष सहित प्यास आराम होती है।

(३) जीभ, तालू और कण्ठ सूखते हों और प्यास बहुतही हो, तो बिजौरे नीबूके रसको घी और सेंधे नमकके साथ पीसकर, मस्तक पर लगानेसे तत्काल शान्ति होगी।

(४) नागरमोथा, पित्तपापडा, सुगन्धवाला, धनियां, खस और सफेद-चन्दन—इनको बराबर-बराबर लेकर हांडीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार लो। पीछे छानकर शीतल करलो। इस "षडङ्ग पानीय"के पीनेसे प्यास, दाह और ज्वर शान्त हो जाते हैं।

नोट—इस नुसखेमें कुछ आमले भी डाल दो, तो और भी उत्तम हो।

(५) अगर प्यास बहुत ही बढी हो और पहले लिखे ज्वरमें वमन विरेचनके नियमोंके अनुसार गडबडी न होती हो, रोगी इस लायक हो, तो पीपलका काढा पिलाकर अथवा शीतल जलमें शहद मिलाकर, गले तक पिलाकर और अङ्गुली डालकर

कय करा दो। कफकी प्यासमें नीमका काढा पिलाकर वमन करा देना अच्छा है। तत्काल फायदा होगा।

नोट—जब प्यासका जोर तो घटे नहीं और पानी पीते-पीते पेट फूल जाय—अफारा हो जाय, तब इन उपायोंसे काम लेना चाहिये।

(६) आमले, कमल, कूट, धानकी खीले और बडके अङ्कुर—इन सबको बराबर बराबर लेकर और एक जगह पीसकर, शहतमें गोली बनाकर, मुँहमें रखनेसे महा उग्र प्यास और दारुण शोष फौरन आराम होता है।

(७) सोने, चाँदी या मिट्टीके ढेलेको आगमें लाल करके, पानीमें बुझा देनेसे और वही पानी रोगीको पिलाते रहनेसे वादीकी प्यास शान्त हो जाती है। इस जलको सुहाता-सुहाता पिलानेसे बहुत लाभ देखा गया है।

(८) कुमेर, चन्दन, खस, धनिया, दाख और मुलेठी—इनके काढेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे पित्तकी प्यास दूर होती है।

(९) चाँवलोंको साफ करके जलमें भिगो दो। १ घण्टे बाद मलकर पानी निकाल लो। इस चाँवलोंके जलमें शहद मिलाकर थोडा-थोडा पिलानेसे पित्तकी प्यास नाश होती है। परीक्षित है।

(१०) शहदको मुँहमें कुछ देर रखने और कुल्ला कर देनेसे प्यास और दाह शान्त हो जाते तथा मुँहके छाले भी मिट जाते हैं।

(११) औटाकर शीतल किये हुए जलमें, कपडेकी पोटलीमें सौंफ बाँधकर छोड दो और वही जल रोगीको पिलाओ। अथवा सौंफ और पुदीनेका अर्क थोडा थोडा दो। अथवा पानीमें भिगोई हुई सौंफकी पोटली बारम्बार रोगीको चुसाओ।

(१२) कुछ शीतलमिर्चें कूटकर रखलो। उसमेंसे जरा-जरासा

चूर्ण रोगीको खिलाकर पानी पिला दो। इससे प्यास निश्चयही कम हो जाती है। हमने इससे प्लेगज्वर तकमें देकर लाभ उठाया है।

(१३) धानकी खील २ तोले, बडकी जटा १ तोला और कमलगट्टे की गिरी आधे तोला—इनको रोगीके पानीमें पोटरीमें रखकर डाल दो। प्यास लगनेपर यही जल पिलाओ, प्यास कम हो जायगी।

(१४) आलूबुखारा चूसने को दो, इससे भी प्यास कम हो जाती है।

(१५) बिजौरा नीबू, जम्भीरी नीबू अनार, बेर और चूका—इनको एकत्र पीसकर मुखपर लगानेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) मुखके भीतर रूपेकी गोली रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१७) शीतल दूधमें शहद मिलाकर गले तक पी लो, फिर उङ्गली डालकर वमन कर दो। इस तरह कई दफा करनेसे प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) शहत, बडका अग्रभाग और खील—इनको पीसकर और गोलीसी बनाकर मुँहमें रखनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(१९) पोदीना १ तोला, बडी इलायचीके दाने ६ माशे, लौंग ५ दाने और कालीमिर्चें ९ दाने—सबको अढाई पाव जलमें पका कर शीतल कर लो और छानकर रखलो। रोगीको थोड़ा थोड़ा जल इसमें से पिलाओ। इससे वमन बन्द हो जाती और प्यासमें भी तस्कीन होती है।

अरुचि नाशक नुसखे।



अरुचि रोग पाँच प्रकारका होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा हम किसी अगले भाग में लिखेंगे, तोभी इतना जान लेनेमे हर्ज नहीं, कि वातकी अरुचिमें दाँत खट्टे और मुँह कषैला होता है। पित्तकी अरुचिमें मुँह कड़वा, गरम, बदबूदार और नमकीन होता है। कफ की अरुचिमें मुंह मीठा, लिबलिबा, भारी, शीतल, बँधा हुआसा और कफसे लिहसासा होता है। शोक, भय, क्रोध, अति लोभ आदि से मन बिगड़नेपर जो अरुचि होती है, उसमें मुखका स्वाद स्वाभाविक होता है और त्रिदोषजमें मुखका स्वाद अनेक तरह का होता है। जो मनुष्य मुंहमें दिये हुए अन्नको नहीं खाता अथवा मुँहमें देनेपर भी अन्न आगे नहीं जाता, उसे अरुचि कहते हैं।

(१) अदरखके रसमें शहद मिलाकर चटानेसे खाँसी, श्वास, अरुचि, जुकाम और कफ—इनका नाश होता है। कफकी अरुचि, कफकी खाँसी और सर्दीके जुकाममें यह नुसखा रामवाण है। सैकड़ों बारका आजमाया हुआ है।

(२) अदरखके रसमें जरासा सेंधानोन मिलाकर चटानेसे भी अरुचिमें बहुत बार लाभ देखा है।

(३) कागजी नीबूकी फाँक करके उसमें जरासा काला नोन और कालीमिर्च पीसकर बुरक दो और उसे आगपर सद्काकर चूसने को दो। इससे तबियत खुश हो जाती है और जबानका जायका सुधर जाता है, पर खाँसीका जोर हो, तो इसे न देना चाहिये।

(४) भोजनसे पहले अदरखके टुकड़ोंमे सैंधानमक लगाकर खानेसे अरुचि नाश होती और भूख लगती है। यह बिना रोगके अगर सदा खाया जाय तो क्या कहना। यह सदा पथ्य है, जीभ

और कंठको शोधता है, अग्निको दीपन करता है और हृदयको हितकारी है।

(५) वायविडङ्गको पीसकर, शहतमें मिलाकर, ऊपरसे अनारका रस डालकर, मुँहमें कवलकी तरह रखने से असाध्य अरुचि भी नाश हो जाती है।

(६) आमलों और मुनक्कोंको पीसकर मुँहमें रखनेसे भी अरुचि चली जाती है।

नोट—जबतक ज्वर नहीं जाता, अरुचि नहीं जाती, ज्वर जानेपर अरुचि नहीं रहती। इसलिये ज्वर चल गया हो अथवा कुछ शेष हो और मुख बहुत ही खराब हो रहा हो, अन्न पर मन न चलता हो या स्वाद न मालूम होता हो, तो इन नुसखोंसे काम लो। ये सभी परीक्षित नुसखे हैं।

(७) अगर ज्वर जाहिरा चला गया हो, पर कुछ अरुचि रहनेसे ज्वरांशके रहनेका वहम हो, तो सवेरे शाम एक या आधा माशा "गिलोयका सत" शहदके साथ चटाओ। इससे ज्वर चला जायगा और इसी गिलोयके सतको एक या आधे माशेकी मात्रा अनारके रसके साथ दो, तो अरुचि नाश हो जायगी। आजमूदा नुसखा है। अगर पित्त शेष हो, तो गिलोयका सत आधा माशा बूरेके साथ देना अच्छा है।

(८) अदरखके रसको गरम करके, उसमें सेंधानमक डालकर, उसका कवल बनाकर मुखमें रक्खो। इससे अवश्य अरुचि नाश होगी। परीक्षित है।

(९) बिजौरे नीबूकी केसर, सेंधानमक डालकर मुखमें रखनेसे अरुचि अवश्य नाश हो जाती है। परीक्षित है।

हिचकी नाशक उपाय।



हिचकी बडा भयंकर रोग है। हिचकी रोग पाँच प्रकार का होता है। उसके लक्षण और चिकित्सा किसी अगले भाग में लिखेंगे। ज्वरमें हिचकी चलना, मौतका वारण्ट समझना चाहिये। श्वास और हिचकी मनुष्यके प्राण बडी जल्दी नाश करते हैं। कहा है,—

कामंप्राणहरारोगा बहवो न तु ते तथा।
यथाश्वासश्च हिक्का च हरत प्राणमाशुवै॥

ज्वर प्रभृति रोग प्राय प्राणोंको हरनेवाले हैं, परन्तु श्वास और हिचकीके समान तत्काल प्राणोंको नाश करनेवाला कोई भी रोग नही है। और भी कहा है —

यथाग्निरिद्धो पवनानुवृद्धो वज्र यथा वा सुरराजमुक्तम्।
रोगास्तथैते खलुदुर्निवारा श्वास सहिक्काचविलम्बिकाच॥

जिस तरह हवासे बढी हुई ईंधकी आग और इन्द्रके हाथसे छूटा हुआ वज्र दुर्निवार है, उसी तरह श्वास, हिचकी और विलम्बिका ये रोग दुर्निवार हैं, इसलिये इन रोगोंके होते ही गफ़लत छोड कर शीघ्रही उपाय करना जरूरी है।

(१) बकरीके दूधमें ६ माशे सौंठ डालकर औटाओ, पीछे उस दूध को रोगीको पिलाओ। इस उपायसे हिचकी शान्त हो जाती है।

(२) मुलेठीको शहतमें मिलाकर सुँघाओ। पीपलके चूर्णको चीनी में मिलाकर सुँघाओ। सोंठको गुडमें मिलाकर नास दो। जरासे पानीमें जरासा सेंधानोन घोलकर नास दो। नाकमें हींग की धूनी दो। इनमेसे किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(३) समयपर बकरीका दूध न मिले तो आधा पाव पानीमें ६ माशे सोंठ औटाकर, मलछानकर, ऊपरसे एक तोला मिश्री मिलाकर पन्द्रह-पन्द्रह मिनिटमें, जरा-जरासा पानी पिलाओ। इस उपाय से और साथही नास भी देनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(४) मक्खीके गूको दूधमें पीसकर, उसकी नास दो अथवा चन्दन को दूधमें पीसकर उसकी नास दो अथवा पीपल और मिश्री पीसकर उसकी नास दो। इनमेंसे किसी न किसी उपायसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(५) हींग और उर्दों को पीसकर, विना धूएँके अङ्गारे या लाल कोयलों पर डालकर धूनी देनेसे, निश्चयही, पाँचों तरह को हिचकियाँ आराम हो जाती हैं।

(६) हिचकी शान्त करनेके लिये चिलममें तमाखूकी तरह रखकर "मैनसिलका धूआँ" पीना चाहिये। इससे लाभ न हो, तो "गायके सींगका धूआँ" पीना चाहिये। कूट, राल अथवा कुशा, इनमेंसे किसी एकका धूआँ पीनेसे भी हिचको आराम होती है।

(७) अनेक बार खाली शहद चाटनेसे हिचकी आराम होती देखी गई है।

(८) शहद और काला नोन मिलाकर बिजौरेका रस पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(९) सोंठ, धायके फूल और पीपल—इन तीनोंका चूर्ण चार-चार रत्ती लेकर शहतमें मिलाकर चाटनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) पीपल, आमले, मिश्री और सोंठ—इनको बराबर बराबर लेकर चूर्ण कर लो। पीछे आध आध माशे चूर्ण शहतमें

मिलाकर चटाओ। जरूरत होनेसे पाव पाव या आध-आध घण्टेमें चटाओ। इस योगसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(११) उड़दोंका बारीक चूर्ण लेकर, बिना धूएँके अङ्गारोंपर डाल कर, चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है।

(१२) पीपलके काढ़ेमें हींग डालकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(१३) स्त्रीके दूधकी नास लेने अथवा उसके पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है। स्त्रीके दूधमें मक्खीकी विष्ठा पीसकर नास लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) मैनसिल, बबूर, कूट, राल, कुशा और अडूसा—इनको एक जगह पीसकर और घीमें मिलाकर, चिलममें रखकर, धूआँ पीनेसे हिचकी आराम होती है।

(१५) अगर सन्निपात रोगमें श्वास और हिचकीका जोर हो, तो "दशमूल"का काढ़ा बनाकर, उसमें जवाखार और सेंधानमक मिलाकर दो। अगर बेहोशी और तन्द्रा हो, तो पीपलका चूर्ण मिला दो। ये नुसखे परीक्षित हैं। अगर हिचकी और श्वासमें प्यास भी हो, तब तो "दशमूलका काढ़ा" ही देना चाहिये।

(१६) हिचकी रोगमें सोंठ, पीपल और आमले,—इनको कूट-पीसकर शहतमें चाटनेसे निश्चयही लाभ होता है।

(१७) स्त्रीके दूध या लाखके रसमें मक्खीका गू उबालकर सुँघाओ, अथवा सोंठको उबालकर, उसमें गुड़ मिलाकर नस्य दो। अवश्य लाभ होगा।

(१८) काँसकी जड़का चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटनेसे भयङ्कर हिचकी आराम हो जाती है।

(१९) मोरके पंखको जलाकर उसकी राख करलो। पीछे २।३ रत्ती राख शहदमें मिलाकर चाटो। इससे हिचकी अवश्य नाश होती है।

(२०) बिजौरेके रसमें सेंधानोन मिलाकर चाटनेसे भी हिचकी आराम होती है।

(२१) ग्वारपाठेके रसमें सोंठका चूर्ण मिलाकर पीते ही हिचकी बन्द हो जाती है।

(२२) पोहकरमूल, जवाखार और कालीमिर्च—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई हिचकी भी आराम हो जाती है।

(२३) बिना धूएँके अङ्गारेपर हल्दी और उडदका चूर्ण डालकर, धूआँ पीनेसे अति भयङ्कर हिचकी शान्त हो जाती है।

(२४) सेंधे नमकको अत्यन्त बारीक पीस-छानकर, पानीमें मिलाकर, नास देनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२५) खाँडमें सोंठ मिलाकर नास देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२६) हींगकी धूनी देनेसे हिचकी बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) उडदोंको चिलममें रखकर, ऊपरसे आग रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२८) दो माशे गिलोयका सत्त शहदके साथ चाटनेसे हिचकी आराम होती है। परीक्षित है।

(२९) सोंठको गुडमें मिलाकर खानेसे अथवा २ माशे सोंठ ६ माशे गुडमें मिलाकर नास देनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(३०) घोडेकी सूखी लीदका धूआँ लेनेसे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(३१) पीपलके वृक्षकी सूखी छाल जलाकर, तत्काल पानीमें बुझा दो। उसी बुझे हुए पानीको रोगीको पिलाओ। इससे हिचकी, वमन और प्यास तीनोंमें निश्चयही लाभ होता है। परीक्षित है।

(३२) पेटके ऊपर मामूली तेल लगाकर, गरम पानीसे सेक करो या "नारायण तेल" पेटपर धीरे-धीरे मलकर, बोतलमें गरम पानी भर कर, काग बन्द करके, ऊपरसे कपड़ा लपेटकर, उससे सेक करो। इन उपायोंसे अक्सर लाभ होता है।

नोट—जो चीजें कफ और वातनाशक हैं, गरम हैं और वातको अनुलोम करनेवाली हैं,—वे हिचकी और श्वासमें हितकारी हैं।

(३३) ज्वर न हो और योंही हिचकी रोग खड़ा हो गया हो, तो आप पुराने चाँवलोंका भात बनवाकर, उसमें गरम करके घी मिला दें और उस भातको रोगीको खिलावें, फौरन हिचकी बन्द होगी, पर ज्वरकी अवस्थामें यह उपाय न करना चाहिये। हाँ, ज्वरकी अवस्थामें दशमूलके काढ़ेसे सिद्ध की हुई पेयाका देना अच्छा है। इस पेयासे खाँसी, श्वास और हिचकी तीनोंमें फायदा होता है।

(३४) साधारणतया हिचकी प्राणायाम करने, यानी प्राणवायुको रोकने, ताड़ना करने, विस्मयजनक बात कहने, भयभीत करनेवाली बात कहने, विचित्र कहानी कहने, मन पर घोर सदमा या चोट लगनेवाली बात कहने, शरीरपर शीतल जल छिड़कने, सहसा डराने, भुलाने, गुस्सा दिलाने, अत्यन्त हर्षकी बात कहने, जली हुई गरम मिट्टीके सुँघाने, नाभि पर सहता-सहता दबाने, पैरोंसे दो अंगुल ऊपर या नाभिसे दो अंगुल ऊपर दागने अथवा दीपकपर हल्दीकी गाँठ जलाकर, उससे

दागनेसे हिचकीमें निश्चय ही लाभ होता है। इन उपायोंसे हमने अनेक वार लाभ उठाया है।

खाँसीनाशक उपाय।

(१) पीपल, कचूर, पोहकरमूल, हरड़, सोंठ और नागरमोथा—इनको वारीक पीसकर और गुड़ मे मिलाकर गोली वनालो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे भयानक श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। इन गोलियों को "कणादि गुटी" कहते हैं।

(२) वहेड़े और पीपलका चूर्ण, शहतमें मिलाकर चाटने से सव तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

(३) कटेरीका काढा पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे सव प्रकारकी खाँसी आराम हो जाती हैं।

(४) काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, पोहकरमूल, हरड़, वहेड़ा, आमला, कटेरी, भारगी और पाँचों नमक—इन सव को वरावर-वरावर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ फाँकनेसे खाँसी, श्वास, अरुचि और पीनस—ये रोग आराम होते हैं। इस चूर्णको "शृंग्यादि चूर्ण" कहते हैं।

(५) गिलोय, सोंठ, भारङ्गी और शालिपर्णी—इनके काढेमें पीपलका चूर्ण डालकर सेवन करनेसे खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(६) अदरखके रसमें शहद डालकर पीनेसे श्वास, खाँसी, जुकाम और कफका नाश होता है।

(७) अकेले वहेड़ेको मुंहमें रखनेसे सव तरहकी खाँसी और श्वासमें लाभ होता है।

(८) हरड, सोंठ, नागरमोथा और गुड—इनकी गोली मुखमें रखने से सब तरहकी खाँसी और श्वासमें फायदा होता है।

(९) मैनसिलको पानीके साथ पीसकर, बेरीके पत्तोंपर लेप करके धूपमें सुखालो। पीछे चिलममें रखकर, उपरसे बिना धूएँ की आग रखकर पीओ। इससे भयानक खाँसी आराम हो जाती है, परन्तु ऊपरसे दूध पीना जरूरी है। यह नुसखा परीक्षित है। सब तरहकी खाँसियों पर दे सकते हो।

(१०) निशोथ, धतूरेकी जड, त्रिकुटा और मैनसिल—सबको एकत्र पीसकर कपडेपर लेप कर दो, सूखने पर चिलममें रखकर इसका धूआँ पीओ। इस उपाय से ३ दिनमे खाँसी जाती रहती है।

(११) कालीमिर्च १ तोला, पीपल २ तोला, अनारके छिलके ४ तोला, गुड ८ तोला और जवाखार आधा तोला,—इन सबको एक जगह पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे वह खाँसी भी आराम हो जाती है, जो सैकडों दवाओंसे आराम न हुई हो, जो वैद्योंने असाध्य कहकर छोड दी हो अथवा जिसमें थूकते समय राध निकलती हो। इन गोलियोंको "मरिचादि वटी" कहते हैं। परीक्षित है।

(१२) खैरसार १ भाग, छायामें सुखाये हुए अडूसेके पत्ते २ भाग, पीपल और त्रिकुटा ३ भाग—इन सबको पीसकूट और छानकर चूर्ण बनालो। इस चूर्णको शहदके साथ चाटनेसे सब तरहकी खाँसी आराम होती हैं।

(१३) पीपल, पीपलामूल इन्द्रजौ, पित्तपापडा और सोंठ—इन सब को समान भाग लेकर, कूट पीसकर चूर्ण करलो। पीछे ३।४ माशे चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटो। इससे ज्वरकी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) पोहकरमूल, त्रिकुटा, सोंठ, मिर्च, पीपल, काकडासिंगी, कायफल, जवासा और कलौंजा—इनको बराबर-बराबर लेकर, चूर्ण करके, शहतके साथ चाटनेसे खाँसी और कफ-सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) गिलोयका सत्त २ माशे, सोंठ, कालीमिर्च और पीपलका चूर्ण दो माशे—सबको मिलाकर, शहतके साथ चाटनेसे खाँसी और श्वासमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(१६) गठौना पीपरामूल, सोंठ और बहेड़ेका बक्कल—इन तीनोंके चूर्णको शहतमें मिलाकर चाटनेसे खाँसी बहुत जल्दी आराम होती है। परीक्षित है।

(१७) अगर खाँसी पुरानी हो, यकृत या लिवरमें सूजन या मवाद आगया हो, ज्वर बना रहता हो यानी तपेदिक हो, रोगीको दाहिनी करवट लेनेसे कष्ट होता हो या खाँसी बढ जाती हो, तो नीचेके उपायोंसे काम लेना चाहिये। लिवरसे सम्बन्ध रखने वाली खाँसी बडी कठिनसे आराम होती है।

तुख़्म खतमी	४ माशे
तुख़्म खुब्बाजी	४ माशे
तुख़्म पालक	४ माशे
सरे बनफशा	३ माशे
छिली मुलहटी	४ माशे
खाकसीर	३ माशे
गुलेसुर्ख	६ माशे

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें सबेरेही भिगोदो। शामको आगपर चढाकर जोशदो। जब आध पाव जल रहजाय, मल छानकर उतार लो और शीतल करके पिलादो। इस तरह ये दवायें रातको भिगोकर, सवेरे जोश देकर पिलादो। इसके साथ ही आगेका नुसखा न० १८ अलसी और बिहीदानेवाला भी बीच बीचमें रोगी को पिलाते रहो।

(१८) अगर छातीमें बलगम—कफ जम गया हो या फेंफडे सूज गये

हों, तो अलसीको पीसकर चूर्ण सा करलो और उसे तवेपर भूनलो। उससे गरमागरम रहते हुए सेक करो अथवा अलसीके सफूफ—चूर्ण को पुल्टिश बनाकर, गरमागरम रहते उससे सेक करो। इन उपायोंसे जमा हुआ बलगम छूट जायगा और फेफड़ोंकी सूजन नष्ट हो जायगी। परोक्षित है।

अलसी	४ माशे
बिहीदाना	४ माशे

इन दोनोंको १ पाव जलमें पकालो। जब आध पाव पानी रहजाय, चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। पीछे कपड़ेमें छानकर इसका लुआब सा निकाल लो। इस लुआबका एक-एक चमचा घण्टेमें ३।४ बार देते रहो। सवेरेका बनाया शाम तक पिलाओ और शामको तैयार करके रातको पिलाओ। इन दोनों नुसख़ोंसे यकृतकी अथवा बलगम जमी हुई पुरानी खाँसीमें बड़ा लाभ होता है। आजमाया हुआ नुसखा है। जब जीर्णज्वरी रोगीको या केवल खाँसीवालेको खुश्की बहुत पहुँच जाती है, तब कण्ठ सूखने लगता है और गलेमें काँटेसे पड़ जाते हैं, उस हालतमें भी यह नुसखा राम-बाण है। छातीपर जमा हुआ बलग़म बिना साफ हुए खाँसी आराम नहीं होती और जमे हुए बलगमको छातीसे छुड़ानेमें अलसी और बिहीदानेका लुआब अकसीर है। इसे ऊपरके न० १७के साथ बीच-बीचमें दो।

गुलबनफशा	४ माशे	
छिली मुलहटी	३	„
खतमीके बीज	३	„
अलसी (कुचलीहुई)	३	„
बिहीदाना	३	„
उन्नाब	४ दाने	

इन सब दवाओंको १ पाव जलमें पकाओ। जब पानी आध पाव रहजाय, मलछानकर गजीके कपड़ेसे लुआब निकाल लो। चूल्हेसे उतारते ही १ तोला मिश्री मिला दो। इसको सवेरे शाम पिलानेसे पुरानी खाँसी

और ज्वर दोनोंमें लाभ होता है। खाँसी तो अवश्य ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

जिस रोगीको पुरानी खुश्क खाँसी हो, बुखारकी हरारत हो, सिरमें दर्द हो और खाँसते-खाँसते वमन या क़य हो जाती हो, उसे ऊपरका नुसखा बहुत ही लाभदायक है—

नोट—छातीपर बलग़म जमा हो, तो ऊपरवाला अलसी और बिहीदानेका लुआब भी थोड़ी-थोड़ी देरमें देना चाहिये। सोडा बाइकार्ब ३ माशे और मिश्री ३ माशे दोनोंको फँकाकर, ऊपरसे जल पिला देनेसे भी ३।४ दिनमें छातीका बलग़म छूट जाता है।

(१९) अगर कौआ बैठ जानेसे खाँसी हो, तो कव्वा उठवा देना चाहिये। अगर दवा देते देते खाँसी आराम न हो, हर समय खस खस लगी रहती हो, तो वैद्यको कौए का ख़याल ज़रूर करना चाहिये। कापिकसे दाग देनेसे कौआ ठीक-ठिकाने आजाता है और ऐसी खाँसी फौरन आराम हो जाती है।

(२०) सूखी खाँसीमें जो पुरानी हो, जिसमें बलगम आताही न हो, रातको सोते समय मलाई मिश्री खाना अच्छा है। इससे बलगम तर हो जाता है। पर इस पर जल भूलकर भी न पीना चाहिये। *पुराने ज्वर की सूखी खाँसीमें हमने इससे लाभ उठाया है।* नये ज्वरकी सूखी खाँसीमें इसे न देना चाहिये।

(२१) बड़ी इन्द्रायणकी छालको चिलममें रखकर पीनेसे कफ पतला हो जाता और वमन होकर कण्ठ साफ हो जाता है। यह नुसखा परीक्षित है, पर कुछ ताकतवालेको देना चाहिये।

(२२) बहेड़ेको घी से चुपड़ लो, पीछे उसे गोबरके भीतर रखकर गोलासा बनालो। उस गोबरके गोलेको कण्डोंकी आगमें रख-कर पकालो। पीछे उस गोलेसे बहेड़ा निकालकर, ज़रा-ज़रासा टुकड़ा मुखमें रक्खो, इससे निश्चय ही खाँसी आराम हो जाती है। बहुत उत्तम उपाय है। अनेक बारका परीक्षित है।

(२३) अडूसेके रसमें शहत मिलाकर चटानेसे भी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

दस्तकब्ज मिटाने के उपाय ।



ज्वरोंमें—खासकर वातज्वर और वातप्रधान ज्वरोंमे बहुतही कब्ज रहता है, मल सूखकर गाँठसी हो जाती हैं। उस समय रोगीको बड़ा कष्ट होता है और पाख़ाना हुए बिना ज्वर हलका नही पड़ता। उस दशामें एकाध दस्त करा देना बहुत जरूरी है।

(१) बलाबल देखकर, ३।४ मासे काली निशोथका चूर्ण ६ माशे शहदमे मिलाकर चटा दो। अगर दस्त न होता दीखे—कोठा कड़ाहो, तो ६ या ८ माशे निशोथका चूर्ण भी शहतमे मिलाकर दे सकते हो। ज्वरोंमें दस्त करानेके लिये निशोथ सर्वोत्तम है। निशोथकी माला अधिक है, पर जियादा देना अच्छा नहीं और खासकर ज्वर-रोगीको। अनेक बार निशोथके चूर्ण और शहतके चाटनेसे विषमज्वर आरामही हो जाता है, इसलिये विषम ज्वरमे, कब्ज होनेपर, इस नुसख़ेको काममें लाना बहुतही हितकर है।

अरण्डीके तेल या साफ कैस्टर आयलसे भी दस्त साफ हो जाते हैं। यह जुलाब बड़ा हलका है। गर्भवती स्त्री तक को इसे दे सकते हैं। इसको चार पाँच तोले तक पिला सकते हैं। पर ज्वर की हालतमें अगर दस्त कराना हो, तो दो तोला अरण्डीका तेल १ पाव गर्म दूधमे मिलाकर पिला दो। इससे जियादा न देना।

हरी सनाय, सोंठ, सौंफ, बड़ी हरड और कालानोन—इनको

बराबर-बराबर लेकर कूटपीस और छानकर रखलो। इस चूर्ण में से ४ या ६ माशे चूर्ण, रातको सोते समय, फँकाकर, निवाया पानी पिला दो। इससे एक या दो दस्त निश्चय ही साफ हो जायँगे। अगर मिजाज गरम हो, तो दो तोला गुलकन्द गुलाब, १०।१५ दाना मुनक्का (बीज निकालकर) और ६ माशे ऊपरका चूर्ण, सबको एक मिट्टीकी छोटी हाँडीमें डालकर, ऊपरसे डेढ़ पाव जल डालकर, आग पर पकाओ। आधपाव जल रहजाने पर, मल छानकर रोगीको पिला दो। इससे अवश्य दस्त होगा और गरमी भी कम करेगा।

(४) अगर रोगीका कोठा नर्म हो, पर दस्त न होता हो, तो मुरब्बे की बड़ी हरड़ (गुठली निकालकर) एक या दो खिलाकर, ऊपरसे पावभर गर्मागर्म दूध पिला दो। नाजुक-मिजाजको एक हरड़से ही ३।४ दस्त हो जाते हैं।

(५) अगर २।३ दस्त कराने हों, तो चार तोले त्रिफलेको अधकचरा करके, आधसेर जलमें रातको भिगोदो, सवेरे मिट्टीकी हाँडीमें औटाओ। चौथाई पानी रहनेपर उतार लो और शीतल होने पर मलछानकर १ तोला गुलकन्द गुलाब मिलाकर पी जाओ। भरोसा है, २।३ दस्त होंगे।

(६) अमलतासका गूदा, पीपरामूल, नागरमोथा, कुटकी और जङ्गी हरड़—इन पाँचोंको ६।६ माशे लेकर, आधसेर जलमें औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतार लो। नवीन ज्वरमें यह "आरग्वधादि क्वाथ" पिलाना अच्छा है। इससे वातकफज्वर और आमशूल नाश होता है तथा दस्त साफ होकर अग्निदीप्त होती है। इसे "आरोग्य पञ्चक" भी कहते हैं।

नोट—हमने ऊपर दस्त करानेके लिये ६ नुसखे लिखे हैं। सभी नुसखे हमारे परीक्षित हैं। बलाबल देखकर, मात्रा घटा बढ़ा लेना—लेने या देनेवालेका काम है।

अगर मल और अधोवायु रुक गये हो और दस्त कराना मुनासिब न हो तो नीचे लिखी बत्ती या पहले पृष्ठ ८४—८५में लिखी हुई बत्तियोंसे काम लेना चाहिये।

(७) समन्दरनोन, अदरख, सरसों और काली मिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर महीन करलो। पीछे जलके साथ पीस कर, मोटी अँगुलीके समान कपडेकी बत्ती बनाकर, उसपर इसका लेप कर दो। शेषमें उस बत्तीपर जरासा घी लगाकर या गुदामें भी घी चुपड कर बत्तीको गुदामें प्रवेश करो। इससे दस्त साफ होकर हवा खुलेगी।

(८) अगर जीर्णज्वरमें कब्ज हो, तो हरड, अमलताश, कुटकी, निशोथ और आमला—इनको बराबर-बराबर लेकर और काढा बनाकर पिलाओ। इससे तत्काल मलबन्ध—दस्तका कब्ज शान्त होगा।

(९) रेवन्दचीनीका शीरा १ माशे पीसकर गुड, चीनी या शहद इन मेंसे किसी एकमें मिलाकर चटानेसे दस्त होंगे। जब दस्त बन्द करने हो, घी और भात खिला दो। यह नुसखा परीक्षित और उत्तम है, पर ज्वरकी सब हालतोंमें देने योग्य नहीं है। अगर रोगी बलवान हो, ज्वर पुराना हो, घी और चाँवल खानेमें हर्ज न हो, तब इससे काम लेना चाहिये। हमने तो जाडेके ज्वरवालोको, खासकर ताकतवर रोगियोंको, देकर इससे बहुत फायदा उठाया है। जब महीना-महीना भर ज्वर आता है और नही छोडता, तब इससे एक दिन दस्त कराकर, "महाज्वरा-कुश बटी" खिलानेसे ज्वर फौरन छोड जाता है। कमजोरको ४ या ६ रत्ती रेवन्दचीनीका शीरा बहुत है। बलवान १॥ माशे तक ले सकता है।

ज्वरातिसार नाशक नुसखे।

—※—

(पतले दस्त)



ज्वरमे दस्त भी होने लगते हैं। चटपटही उनको रोकना ठीक नही है। अगर बहुत दिनों तक बन्द न हों, दस्त होते ही रहें, तो अतिसारकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये। "सुश्रुतमें" लिखा है :—

च्यवमान ज्वरोत्क्लिष्टमुपेक्षेत मल सदा।
अतिप्रवर्त्तमान च साधयेदतिसारवत्॥

ज्वरके वेगसे चलायमान मलको कुछ समयतक बन्द न करना चाहिये। अगर बहुत जोर हो या कई दिन तक दस्त बन्द न हों, तो अतिसारकी तरह साधना करनी चाहिये।

नोट—बलवान ज्वरमें अगर अतिसार हो, तो लघनके सिवाय और दवा नहीं है, क्योंकि लघन बढे हुए दोषोंको शमन और पाचन करता है। अगर जरूरत हो, तो नीचेके नुसखोंसे काम ले —

(१) गिलोय, इन्द्रजौ, नागरमोथा, चिरायता, नीम, अतीस और सोंठ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर, इनका काढा बना कर पीनेसे ज्वरातिसार आराम होता है।

(२) सोंठ, गिलोय इन्द्रजौ और नागरमोथा—इनको समान भाग लेकर, काढा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें पैदा हुआ अतिसार आराम होता है।

(३) पाढ, गिलोय, पित्तपापडा, नागरमोथा, सोंठ, चिरायता और इन्द्रजौ—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर और काढा बनाकर पीनेसे, ज्वरमें उत्पन्न हुआ घोर अतिसार भी अवश्य आराम हो जाता है।

(४) धनिया, सोंठ, कच्ची बेलगिरी, खस और नागरमोथा—इन पाँचों को बराबर-बराबर लेकर, काढा बनाकर पीनेसे, शूल (मरोड़ी) समेत आमातिसार आराम होता है। यह काढा ज्वरमें हित कारी तथा दीपन और पाचन है।

(५) गिलोय, पाठा, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, सोंठ, पद्माख, लालचन्दन, कुड़ेकी छाल, धनिया, चिरायता और अतीस—इन १३ दवाओंको समान समान लेकर, काढा बनाकर और शीतल करके पीनेसे, ज्वर, प्यास, अरुचि, ग्लानि, दाह, उबकाई, मरोड़ी और शोफ समेत अतिसार आराम हो जाता है।

(६) पीपल, गजपीपल और खील—इनके काढेमें शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे ज्वरातिसार, वमन और प्यास नाश होती हैं।

(७) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय और इन्द्रजौ—इनको समान भाग लेकर, काढा बनाकर पीनेसे सब तरहके अतिसार और सब तरहके ज्वर आराम हो जाते हैं। मतलब यह है, किसी प्रकारके ज्वरमें अतिसार होनेसे इस काढ़ेको देनेसे लाभ होगा, केवल ज्वर आराम करनेके लिये इसे नहीं देना चाहिये।

नोट—ज्वरनाशक औषधियाँ प्राय भेदक होती हैं और अतिसारनाशक औषधियाँ मलस्तम्भक यानी मलको रोकनेवाली होती हैं। इसलिये दोनों परस्पर रोग बढ़ानेवाली हैं। अत ज्वरमें अतिसार होने पर, ज्वरातिसारमें खास तौरपर लिखी औषधियोंसे काम लेना चाहिये। ज्वर और अतिसारमें लिखी अलग-अलग दवाओंको मिलाकर हरगिज न देना चाहिये।

(८) धायके फूलका काढा, सोंठका चूर्ण और अनारका रस—इनसे सिद्ध की हुई पेया ज्वरातिसार और शूलको नाश करती है।

(९) दशमूलके काढ़ेके साथ सोंठके चूर्णको सेवन करनेसे, ज्वर,

अतिसार, सूजन और सग्रहणी आराम हो जाते हैं। वङ्गसेनमें दो तोले सोंठका चूर्ण लिखा है। बलाबल देखकर मात्रा नियत करनी चाहिये।

मूर्च्छा नाशक उपाय।



क्षीण मनुष्योंके बहुत दोषोंके संचित होनेसे, विरुद्ध आहार विहार करनेसे, मलमूल आदि वेगोंके रोकनेसे, लकडी प्रभृतिकी चोट लगनेसे और सतोगुण के नष्ट होनेसे, मनके बहनेवाली ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंमे जब वातादिक दोष प्रवेश करते हैं, तब मनुष्यको मूर्च्छा आती है। उस समय सतोगुणके कम होनेसे तमोगुण पैदा होता है। इससे सुख-दुःख का ज्ञान नहीं रहता। सुख दुःख का ज्ञान न रहनेसे मनुष्य लकडीसा मालूम होता है। उस अवस्थाको मूर्च्छा या मोह कहते हैं। यह मूर्च्छा रोग वात, पित्त, कफ, रक्त, मद्य और विष—इन भेदोंसे ६ तरहका होता है, परन्तु इन छहों तरहकी मूर्च्छाओंमें पित्तकी प्रधानता रहती है। कहा भी है,—"मूर्च्छा पित्ततमः प्रायेति।" अर्थात् मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिकतासे होते हैं।

मूर्च्छा, भ्रम, तन्द्रा और निद्रामें जो भेद है, वह भी जरूरही समझ लेना चाहिये। मूर्च्छामें पित्त और तमोगुण अधिक रहते हैं। भ्रम—रजोगुण, पित्त और वायुसे होता है। तन्द्रा तमोगुण, कफ और वायुसे होती है। निद्रा-कफ और तमोगुणसे होती है।

भ्रम—जिस तरह घूमते हुए चाकपर सब पदार्थ घूमते हुए दीखते हैं, उसी तरह भ्रमवालेको अपना शरीर और सब चीजें घूमती नजर आती हैं।

तन्द्रा—नींदसे घिरे हुएकी तरह जिसमें विषयोंका ज्ञान नाश हो जाय, शरीरमें भारीपन, जँभाई, ग्लानि या विना मिहनत थकान मालूम हो, उसे "तन्द्रा" कहते हैं। तन्द्रामें आधे नेत्र खुले रहते हैं। निद्रासे जागनेपर क्लम या थकान नहीं रहती, किन्तु तन्द्रामें तो जागने पर भी थकान बनी रहती है। निद्रामें इन्द्रियों और मनमें मोह होता है, किन्तु तन्द्रामें केवल इन्द्रियोंको मोह होता है, मनको मोह नही होता। यही तन्द्रा और निद्रामें भेद है।

यों तो रोगोंके बढ जानेसे मूर्च्छा कितने ही रोगोंमें होती है, किन्तु ज्वरका तो यह उपद्रव ही है। जियादातर मूर्च्छा या वेहोशी सन्निपात ज्वरोंमें होती है। ज्वरके वेगके कारण मस्तिष्कका खून गरम हो जाता है और वह श्लेष्मा या कफके साथ मिलकर जम जाता है। ऐसा अक्सर सन्निपात ज्वरोंमें होता है। इस दशामें डाक्टरोंकी तरह सिरपर वर्फ रखना या शीतल जलका कपडा सिर-पर रखना या सिरपर पानी डालना—रोगीको मारना है। इस दशा-में जमे हुए खून और कफको अलग करना चाहिये।

दूसरी मूर्च्छा योंही वात पित्तकी गरमीके सिरमें पहुँच जानेसे हो जाती है। ऐसी मूर्च्छा होनेसे कहते हैं कि, सिरपर, गरमी चढ गई है। इसमें वातपित्तको शान्त करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

मामूली तौर से, रोगीके शरीर पर पानी छिडकना, जलमें घुस-कर स्नान करना, मोती हीरे पन्ने प्रभृतिके हार पहनना, चन्दनादिका लेप करना, शीतल पखेकी हवा करना, गुलाब केवडा प्रभृति शीतल और सुगन्धित अर्कों का पीना, मीठे पदार्थों के साथ औटाया हुआ दूध, अनारके रसके साथ जगली जीवोंका मास, जौ, लाल चाँवल, मटर और मूँग—ये सब मूर्च्छामें हितकारी हैं।

अगर मलमूत्रके रुकने और उनमें गरमी पहुँचनेसे वेहोशी हो, तो ऐनीमा पिचकारी द्वारा या जैसे भी उचित समझो दस्त करा

देना अच्छा है, क्योंकि मलमूत्रमें गरमी पहुँचनेसे भी सन्निपात, बेहोशी और आनतान बकना आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं। अगर हिचकी आते-आते मूर्च्छा हो जाय, तो तत्काल कय करा देना अच्छा है। वङ्गसेनमें लिखा है :—मूर्च्छां प्रशस्तानु शिरो विरेकैर्जयेदभीक्ष्णं वमनैश्च तीक्ष्णैः ॥ बहुत तेज नस्य देने और तीक्ष्ण वमन करानेसे मूर्च्छा नाश होती है।

रुधिरके देखने और उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा हो जाती है। रुधिर की मूर्च्छामें शरीर जकड़ जाता और गूढ़ श्वास हो जाता है। रुधिर की मूर्च्छामें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। मद्यकी मूर्च्छामें फिर शराब पीना और सुखसे सोना हितकारी है। विषकी मूर्च्छामें विषनाशक औषधियाँ देना हितकारी है।

(१) पीपरका चूर्ण ८ या १० रत्ती शहदमें मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(२) सिरसके बीज, छोटी पीपर, कालीमिर्च और सेंधानोन—४।४ चाँवल भर, मैनसिल ४ चाँवलभर और लहसन २ चाँवलभर और बच ४ चाँवलभर या इन सबको बराबर बराबर लेकर, गोमूत्रमें पीस कर, अञ्जन की तरह आँखों में आँजनेसे रोगी को होश हो जाता है।

(३) कमलका कन्द, कमलकी नाल, पीपल और हरड़—इनको पीस कर शहतके साथ चाटनेसे भी बेहोशी नाश हो जाती है।

(४) नाक और मुखका साँस रोकनेसे भी होश हो जाता है।

(५) नागकेशर, छुहारा, कमलगट्टे की गिरी (हरी हरी पत्ती निकाल देना) मुनक्का और खस—इन सबको अढाई तोले लेकर, काढ़ा बनाने और मिश्री डाल कर पीनेसे भी बेहोशी चली जाती है।

(६) स्त्रीका दूध अथवा अनारका रस पिलानेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाता है।

(७) उसीजे हुए आमले, दाख और सोंठ—इनको एक जगह पीस-कर, शहत मिलाकर, चाटनेसे मूर्च्छा, श्वास और खाँसी,—ये सब रोग आराम हो जाते हैं।

(८) लहसन, पीपल, कालीमिर्च, वच, सोनापाठाके बीज और सेंधा-नोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें पीसकर आँज-नेसे, सब सन्निपातोंमे होश हो जाता है।

(६) मिर्च, मुलहटी, सेंधानोन, खस, कायफल और पीपल—इनको गरम पानीमें पीसकर, मृदु नस्य देनेसे सन्निपातमें लाभ होता है।

(१०) अगर अच्छे अच्छे उपाय करनेसे भी सन्निपात रोगीको होश न हो, तो उसकी पसली, भौं या ललाटपर लोहेकी कोई चीज गरम करके उससे दाग देना चाहिये।

(११) लहसन, मैनसिल और वच—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान कर आँखोंमे आँजनेसे बेहोशी दूर होती है।

(१२) सिरसके बीज, पीपल, कालीमिर्च और कालानोन—इन सब को समान भाग लेकर, गोमूत्रमे एकत्र पीसकर, आंखोंमें अञ्ज-नकी तरह आँजनेसे चैतन्यता होती है।

(१३) सिरसके बीज और कालीमिर्च—इन दोनों को बराबर बराबर लेकर, एक जगह बकरेके मूत्रमें पीसकर, आँजनेसे होश हो जाता है।

(१४) बिजौरेके रसमें हींग और सोंठ मिलाकर मुँहमें रखने और तेज तथा चरपरी और कड़वी दवाओंको नाक, कान और नेत्रोंमें फूँकनेसे भी होश जाता है।

नोट—मूर्च्छामें पित्तकी प्रधानता रहती है। इसलिये बेहोशीकी दशामें गरम-ही-गरम दवाये देनेसे रोगी मर जाते हैं। आजकल लोगोंमें कमजोरी बहुत होती है, इसलिये मामूली मातदिल उपायोंसे बेहोशी दूर करनी चाहिये। जब किसी उपायसे होश न हो तब जो उपाय उचित जँचे उसीसे काम लेना उचित है।

(१५) रोगीको अदरखके रसकी नास दो, मूर्च्छा दूर हो जायगी।

(१६) शहद, सेंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च को पीसकर, अञ्जन सा बनाकर, आँखोंमें आँजनेसे मूर्च्छा नाश होती है।

(१७) शीतल जल आँखोंमें सींचनेसे, सुगन्धित धूप देनेसे, सुगन्धित फूल सुँघानेसे, नर्म ताड़के पत्तेकी मन्दी-मन्दी हवा करनेसे और कोमल केलेके पत्ते छुलानेसे मूर्च्छामें लाभ होता है।

नं० १५।१६ और १७ तीनोंके उपाय मूर्च्छामें कई बार परीक्षा किये गये हैं।

(१८) नीले कमलके फूलोंकी कोंपलोंके पत्तोंको या विष्णुक्रान्ताको पत्थरपर पीसकर, कपड़ेमें रस निचोड़कर, पिचकारी द्वारा नाकमें पहुँचानेसे मूर्च्छित मनुष्य तत्काल होशमें आजाता है। परीक्षित है।

(१९) छायामें सुखाये हुए कनेरके पत्ते ६ माशे, चार कालीमिर्च और बादाम—इन सबको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस नस्य से घोर मूर्च्छित भी जाग उठता है। परीक्षित है।

(२०) मूर्च्छा या बेहोशी बहुत बार दिलकी कमजोरी या गरमीसे होती है। उस दशामें साधारण दवासे मूर्च्छा नाश करनी चाहिये। मूर्च्छाका उपाय करते समय इस बातको अवश्य मालूम कर लेना चाहिये, कि रोगीकी बेहोशी गरमीसे है, खूनसे है, सरदीसे है या दिलकी कमजोरीसे है। अगर गरमीसे गश आगया हो, तो सिर और आँखोंपर गुलाबजलके छींटे मारने चाहियें तथा सिरका, धनिया और गुलाबजल इनको एक शीशीमें भरकर रोगीको बारम्बार सुँघाना चाहिये और पैरोंमें मक्खन मलना चाहिये। इस उपायसे दिलकी कमजोरी और गरमीसे होनेवाली साधारण बेहोशी अवश्य आराम हो जाती है।

(२१) केवड़ेका अर्क १ शीशीमें भरकर, उसमें मलयागिर चन्दन घिसकर मिला दो और ऊपरसे जालीका या पतली मलमलका कपड़ा बाँधकर रोगीको बारम्बार सुँघाओ अथवा खीरा काटकर सुँघाओ। इन उपायोंसे कमजोरी-दिल और गरमी की बेहोशी मिट जाती है और सिरमें तरावट आकर सिरका दर्द भी मिट जाता है।

नोट—जीर्णज्वर और राजयक्ष्मावाली कितनीही बेहोश औरतें इन्हीं उपायोंसे होशमें आगई हैं। अगर मूर्च्छा सरदी से हो और कोई अनाड़ी इन नं० २०।२१ के नुसख़ों या और ऐसेही उधर लिखे हुए नुसख़ोंसे बेहोशी दूर करना चाहेगा तो परिणाम खोटाही होगा, इसलिये बेहोशीका कारण जानकर यथोचित उपाय करना चाहिये।

(२२) सिरका अङ्गूरी ख़ालिस १ छटाँक और काली तिली का तेल २ छटाँक तथा पानी १ सेर—इन तीनोंको एक चीनी या काँचके बर्तनमें अथवा पत्थरकी चौड़ी कूँडीमें रखकर खूब मिला लो। इस जलमें बारम्बार १ कपड़ा तर करके, रोगीके सर पर रखो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। इस उपायसे बेहोशीमें बड़ा लाभ होता है।

(२३) कपूर और चन्दन अथवा खीरा और ककड़ी सुँघानेसे होश हो जाता है और गरमीकी भयानक मस्तक-पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(२४) अगर रोग कफ या सरदीसे हो, तो लौंग, केशर और जायफल,—इनको खूब महीन पीसकर, तिलीके तेलमें मिलाकर, रोगीके सिर पर लेप करना चाहिये। साथही खूब गरम (जिससे पैर जल न जायँ) पानीसे रोगीके पैर धोने चाहियें। पैर धोते समय, सदा ऊपरसे नीचे हाथ ले जाना चाहिये, किन्तु नीचेसे ऊपरको नहीं, क्योंकि पाशोया करने यानी पैर धोनेसे रोग निकलकर बाहर जाता है। शेख अबूअलीने लिखा है, कि मैं

सिर पीड़ावालोंके हाथ-पाँवोंपर गरम पानीके तरडे उस वक्त तक देता रहता था, जबतक कि यह न मालूम होता कि, कोई चीज सिरसे हाथ पैरोंकी ओर उतरती है ।

(२५) अगर सन्निपात रोगीकी आँखे लाल हों और सिरमें भयानक दर्द हो, दर्दके मारे रोगीको चैन न पड़ता हो, तो नौसादर १ तोला और कलमी शोरा १ तोला—दोनोंको पीसकर अढ़ाई सेर जलमें घोल दो। जब पानी और दवाएँ एक दिल हो जायँ, तब इस जलमें १ कपड़ा भिगो-भिगोकर सिर और कनपटियोंपर रखते रहो। जब कपड़ा सूख जाय, फिर तर करके रख दो। पीड़ा शान्त होनेके बाद कपड़ा मत रखना ।

ये सब हकीमी उपाय आजमूदा हैं। नाजुक मिजाजोंकी बेहोशी और सिरका दर्द आराम करनेमें रामबाण हैं। फिरभी इनसे काम न चले, तो उग्र उपायोंसे काम लेना चाहिये। हमने इस पुस्तकमें एक-से-एक उत्तम उपाय प्रत्येक उपद्रवके लिखे हैं और खूबी यह है, कि अधिकाश परीक्षित लिखे हैं, पर कौनसा नुसख़ा किस रोगी पर प्रयोग करना चाहिये, इसके लिये मुआलिज या चिकित्सककी अक्लकी भी ज़रूरत है।

(२६) स्त्रीके दूधको नाकमें टपकाना या सिरपर दुहना अच्छा है। अगर स्त्रीका दूध न मिले, तो बकरीका दूध ही सिरपर डालना चाहिये ।

(२७) ताजा धनियेका जल और खीरा ककड़ीके बीजोंका पानी, थोड़ेसे सिरकेमें मिलाकर, शीशीमें भरकर रोगीको सुँघाना चाहिये। इसे "लखलखा" कहते हैं।

(२८) सफेद चन्दनका बुरादा, धनिया और कपूर—तीनोंको बराबर-बराबर-बराबर (छै-छै माशे या जियादा) लेकर, एक कपड़ेकी

पोटली में बाँधलो। एक चौड़े बर्तनमें थोड़ासा अर्क गुलाब रखलो। उसी अर्क में पोटली भिगो-भिगोकर रोगीको सुंघाओ।

(२९) चन्दन और कपूर घिसकर और काहूके पत्तोंके पानीमें मिला कर नाकमें टपकाओ।

(३०) खैरके फूल, नीलोफरके फल और छिला हुआ कद्दू—प्रत्येक आध-आध पाव तथा जौकी भूसी तीन मुट्ठी—इनको जलमें औटा कर निवाये निवाये पानीसे पाशोया करो, यानी इस पानीसे पैर धोओ। साथ ही चन्दन अथवा चन्दन और कपूर घिसकर सुंघाते रहो या न० २८ वाली पोटली गुलाब-जलमें तर करके बारम्बार सुंघाते रहो। बुखारका इलाज अलग करते रहो।

तन्द्रा और अत्यन्त निद्राके उपाय।



(१) घोड़ेकी लारमें सेंधानमक, कपूर, मैनसिल, पीपल और शहद—इनको महीन पीसकर आँखोंमें आँजनेसे निद्रा सहित तन्द्रा आराम हो जाती है।

(२) सेंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीसकर, बकरेके पेशाबमें खरल करके नास लेनेसे उसी समय तन्द्राका नाश होता है।

(३) सोंठ पीपल, बच और सेंधानमक—इनको समान भागसे लेकर, महीन पीसकर, नास लेनेसे महा घोर तन्द्राका भी विनाश होता है।

(४) कटेहरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, भारङ्गी और हरड़,—इन को बराबर बराबर मिलाकर, कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाकर पीनेसे तन्द्रा और निद्रा दोनों नाश होती हैं।

ज्वरमें मस्तक-शूल ।



वातज सिरदर्द नाशक नुसखे ।



(१) मुचकुन्दके फूल पीसकर सिर पर लगानेसे वादीका सिर दर्द आराम होता है ।

(२) कूट, अरण्डकी जड़ और सोंठ - इनको माठेमें पीसकर, गरम-गरम सिरमें लगानेसे वादीका सिर-दर्द आराम हो जाता है ।

नोट—वातज सिर दर्द —अगर बिना कारण ही सिर-दर्द पैदा हो जाय, रातमें दर्द बढ़ जाय, सिरको बाँधने या सेकनेसे दर्द कम हो जाय , तो समझ लो कि, यह सिरदर्द वादीसे है ।

पित्तज शिरदर्द नाशक नुसखे ।



(१) चन्दन, कमल, कमलकी केशर, मृणाल, कमलकन्द और पद्माख—इनको दूधमें पीसकर सिर पर लगानेसे पित्तका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(२) चन्दन, खस, मुलेठी, खिरेंटी, नखी और कमल—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तका सिर दर्द आराम होता है ।

(३) मुलेठी, दाख और मिश्रीको एकल पीसकर नास देनेसे अथवा दालचीनी, मिश्री और तेजपातको एकल चाँवलोंके पानीमें पीस कर नास देनेसे अथवा दूध और घीको मिलाकर नास देनेसे पित्तका और खूनका दर्द-सिर आराम हो जाता है ।

(४) सौ बारका धोया घी सिरपर रखने या मलनेसे पित्तका सिर दर्द आराम हो जाता है ।

(५) पित्तपापड़ेका रस, करेलेके पत्तोंका रस और गायका घी,—इन तीनोंको मिलाकर सिरपर मलनेसे पित्तसे भरा हुआ सिर तत्काल हल्का हो जाता है।

(६) चन्दन और कपूर पीसकर सिरपर लगानेसे गरमीका सिरदर्द फौरन आराम हो जाता है।

नोट—(१) पित्त या गरमीका सिरदर्द—अगर छूनेसे सिर ऐसा गरम मालूम हो, मानो अङ्गारोंसे तपाया गया है, आँखों और नाकमें गरम भाफ निकले, रातमें सरदी होनेसे सिरदर्द कम हो जाय, तो समझ लो कि, सिरका दर्द पित्त या गरमीसे है।

ध्यान धरो! वादीका सिरदर्द, रातके समय, सरदीका समय होनेसे बढ़ जाता है और पित्तका सिर दर्द रातके समय सरदी होनेसे घट जाता है।

खूनका सिरदर्द—अगर पित्तके सिर दर्दकी तरह सिर छूनेसे एकदम गरम जान पड़े, नेत्रों और नाकसे दाह निकले रातके समय दर्द कम हो जाय तथा सिरके कोई भी चीज़ छुलानेसे सही न जाय, तो समझ लो, यह रुधिर या खूनसे सिरदर्द है।

पित्तके और रुधिरके सिरदर्दमें कोई फर्क नहीं है। केवल जरासा फर्क है और वह यह कि, रुधिरके सिरदर्दवालेका मस्तक किसी भी पदार्थके स्पर्श-को सह नहीं सकता।

कफज सिरदर्द नाशक नुसखे।

—:o:—

(१) रेणुका, तगर, भूरिछरीला, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु, रास्ना, थुनेर और बालछड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और जलमें पीसकर तथा गरम करके लगानेसे सरदीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(२) धूप सरल, अगर, करञ्ज, देवदारु, रोहिषतृण और सेंधानोन—इनको बराबर बराबर लेकर, दूधमें पीसकर और गरम करके लगानेसे कफका सिरदर्द नाश हो जाता है।

(३) वचको पीसकर, कपडेकी पोटलीमें रखकर, सूँघनेसे सरदी, जुकाम और और सिरका दर्द नाश हो जाता है।

नोट—कफ या सरदीका सिरदर्द—अगर मनुष्यका सिर कफसे भरा मालूम हो, सिर भारी और जकड़ासा हो, छूनेमें शीतल जान पड़े, मुख और आँखोंपर सूजन हो— तो कफका सिरदर्द समझो।

मिश्रित नुसखे।



(१) सोंठको जलमें पीसकर और दूधमें मिलाकर सुँघानेसे अनेक दोषोंसे हुआ सिरदर्द मिट जाता है।

(२) गुड और सोंठको एकत्र पीसकर नास देनेसे सब तरहका सिर दर्द मिट जाता है।

(३) पीपर और सेंधानोन पानीमें घिसकर, उसकी २।३ बूँद नाकमें टपकानेसे सिरका दर्द तत्काल मिट जाता है।

(४) जायफल दूधमें घिसकर सिर पर लगानेसे सिरका दर्द मिट जाता है। गरम करके लगानेसे जुकाम और सरदीका दर्द जाता रहता है। कपूर सूँघनेसे भी जुकाममें लाभ होता है।

(५) अगर सरदीसे सिरमें दर्द हो, तो कनपटियों पर खानेका चूना लगा दो और सोंठको दूधमें पीसकर सूँघो। इस उपायसे हर तरहका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(६) केशरको घीमें भूजकर और मिश्री मिलाकर, सूर्योदयके समय नस्य देनेसे वातरक्तका सिरदर्द, भौं, कान, आँख और सिरका दर्द, आधाशीशीका दर्द और शङ्खक ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—शङ्खक—पित्त, खून और वायुके दूषित होनेसे कनपटीमें भयानक पीड़ा और भयंकर लाल सूजन होती है। यह विषके वेगके समान बढ़कर मस्तक और गले-

को पकड़ लेती है। इससे तीनही दिनमें आदमी मर जाता और अच्छा इलाज होनेसे तीनही दिनमें बच भी जाता है।

(७) मिश्री, केशर और दाख—इनको बराबर बराबर लेकर और इनके वजनसे चौथाई मक्खन लेकर, सबको मिलाकर नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और आधे सिरका दर्द तथा वात और पित्तका सिरदर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—सूर्य्यावर्त्त सिरदर्द—सूरज निकलतेही आँखों और भौओंमें मन्दी-मन्दी पीड़ा हो, ज्यों-ज्यों सूरज चढ़े त्यों-त्यों दर्द बढ़े और ज्यों-ज्यों सूरज उतरकर पच्छमको जाय, दर्द घटता जाय और सूरजके अस्त होते ही बिलकुल दर्द न रहे, तो समझलो कि यह "सूर्य्यावर्त्त" है। यह दर्द त्रिदोषके कोपसे होता है और अत्यन्त कष्टसाध्य है।

(८) हल्दी, नागरमोथा, अनारका फूल (अभावमें अम्लवेत), छरीला, इमलीकी छाल, बालछड़, तेजपात कमलगट्टेकी गिरी, दालचीनी, व्याघ्र नख, महुएकी अन्तर छाल और बिजौरे नीबू का छिलका—इन सबको समान समान लेकर अङ्गूरके या जामुनके सिरकेमें मिलाकर, सिर या ललाट पर लगानेसे सिर-दर्द, दाह, बेहोशी, वमन, उबकाई, हिचकी और कँपकँपी—ये सब नाश होते हैं। सैकड़ों बारका परीक्षित है। हर तरहके ज्वरवालेके सिरदर्दमें इसके लगानेसे लाभ होता है।

(९) बच और पीपलके चूर्णको पोटली बाँधकर सूँघनेसे सूर्यावर्त्त और आधाशीशीका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) भाँगका रस और बकरीका दूध बराबर-बराबर लेकर, दोनोंको मिलाकर और धूपमें तपाकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त-सिरदर्द नाश हो जाता है।

(११) प्याज काटकर सूँघनेसे गरमीका सिर दर्द नाश हो जाता है।

(१२) केशरको घीमें मिलाकर सूँघनेसे आधाशीशी और जुकाम नाश हो जाते हैं।

नोट—अर्द्धावभेदक या आधासीसी—यह सिर दर्द आधे सिरमें होता है। वायु या वातकफके कारणसे मन्या नाडी, भौंह, कान, आँख और ललाटमें—एक तरफ दर्द होता है। यह दर्द शस्त्र या आरीसे काटने-जैसा होता है। जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है, तब एक तरफके कान या नेत्रको नष्ट कर देता है।

(१३) अगर सिर बहुत भारी हो, तो कुलींजनको पीस छानकर सूँघो, छींकें आकर सिर हल्का हो जायगा।

(१४) छुहारेकी गुठली घिसकर सिरपर लगानेसे सिरदर्द मिट, जाता है।

(१५) चिरमिटीकी जड़ पानीमें पीसकर सुँघानेसे आधाशीशी जाती रहती है।

(१६) तिलोंके तेलमें नमक मिलाकर और गरम करके सूँघनेसे आधा शीशी जाती रहती है।

(१७) राई और खाँडको जलमें पीसकर सूँघनेसे आधाशीशी मिट जाती है।

(१८) नाकसे दूध पीनेसे आधाशीशी वगैरः सब तरहके सिर दर्द मिट जाते हैं।

(१९) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, करजके बीज और सहँजनेके बीज— इनको बराबर बराबर लेकर और बकरीके पेशाबमें पीसकर सूँघनेसे कीडे नाश हो जाते हैं।

नोट—कृमिज सिरदर्द—अगर सिरमे सुई चुभानेकासा दर्द हो, कीडो के माथेको खाली कर देनेसें माथा भीतरसे फडके, नाकसे राध, लोहू और कीडे गिरे, तो समझ लो कि सिरमे कीडे पड गये है।

ज्वर छूटनेके पूर्व्वरूप।



दाह स्वेदोभ्रमस्तृष्णाकम्पोविड्भेदसंज्ञिता।
कूजनं चातिवैगन्ध्यमाकृतिर्ज्वरमोक्षणे॥

दाह, पसीना, भ्रम, प्यास, कम्प मलका पतला होना, संज्ञाका नाश, गूँजना और देहमें अत्यन्त दुर्गन्ध—ये लक्षण ज्वर छूटनेके पहले होते हैं, यानी जब बुखार जानेवाला होता है तब होते हैं।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, दोषोंके नाश हुए विना रोग नहीं जाता और जब दोष क्षीण हो जाते हैं, तब दाह आदि उपद्रव कैसे रह जाते हैं?

इसका जवाब यह है कि, कोई-कोई चीज क्षीण होते समय अपनी शक्ति दिखाती है। जब दीपकमें तेल नहीं होता, तब वह बुझते बुझते जोरसे जल उठता और फिर बुझ जाता है। इसी तरह दोष भी शान्त होते समय, अपनी शक्ति—दाह आदिक दिखाते हैं। बन्दर पेडकी डाल हिलाकर दूसरी डालपर चला जाता है, फिर भी पिछली डाली थोडी देर तक हिलती ही रहती है; इसी तरह ज्वरके चले जानेपर भी, उसका असर कुछ समय तक बना ही रहता है। किन्तु ये दाहादि सब लक्षण त्रिदोष ज्वरोंके शान्त होनेके समय होते हैं, मामूली ज्वरोंमें तो केवल पसीने ही आया करते हैं। कहा है —

त्रिदोषजेज्वरे ह्येतदन्तर्वेगे च धातुजे।
लक्षणंमोक्षकालेस्याद यस्मिं स्वेदागमनम्॥

त्रिदोषजज्वर, अन्तर्वेगी ज्वर और धातुगत ज्वरोंके छूटते समय,—ये सब लक्षण होते हैं और ज्वरोंके छूटते समय तो पसीने ही आते हैं।

"चरक"में लिखा है,—ज्वरके त्यागकालमें यानी ज्वरके जानेके समय रोगीका कंठ गूँजता है, "वमन" होती है, रोगी अपने अङ्गोंको

इधर-उधर पटकता है, श्वास छोडता है, देहका रंग बिगड जाता है, पसीने आते हैं, शरीरमें कँपकँपी आती है, वारम्बार जडके समान हो जाता है, बकवाद करता है, हठसे सारा शरीर गरम या शीतल हो जाता है, संज्ञा नही रहती, रोगी कभी-कभी ज्वरके वेगसे घबरा जाता है, क्रोधीकी तरह चारो ओर देखता है और कभी आवाजके साथ पतला पाखाना फिरता है—चतुर वैद्यको इन लक्षणोंसे जानना चाहिये कि, ज्वर जानेवाला है। डाक्टर इस अवस्थाको "कॉलेप्स" (Collapse) कहते हैं।

"चरक"में लिखा है,—बहुत दोषवाले नवीन ज्वरमें (सख्त या सन्निपातज्वरमें) जल्दबाजी करनेसे, असमयमें दोषोंके पकनेसे, इस तरह दारुण भावसे ज्वर छूटता है। जो ज्वर लघनादि द्वारा कायदेसे आराम किये जाते हैं, जल्दबाजी नही की जाती, वे ज्वर देरसे आराम होते हैं, पर जाते समय दारुण लक्षणवाले नही होते, यानी उनके जाते समय ऐसे भयङ्कर लक्षण देखनेमें नही आते। जल्दबाजीके सभी काम खराब होते हैं, पर आजकलके रोगी, आयुर्वेदका ज्ञान न रखनेके कारण, अपना ही हानि-लाभ नही समझते और बडी जल्दी करते हैं। वैद्योंको मजबूर होकर वैसा ही करना होता है—ज्वर चढनेके दिन ही दवा देनी पडती है। लघन प्रभृतिके नियमोंको उल्लङ्घन करना पडता है। आयुर्वेदके मतसे कमसे कम ३ लघन भी नहीं कराये जाते। "ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लङ्घनं च दिनत्रय, न देय क्वथित वारि न च भैषज्य दापयेत्।" ज्वरके आते ही तीन लङ्घन कराने चाहिये। उन तीन दिनोंमें कोई काढा या दवा न देनी चाहिये, इसका कोई खयाल नही करता। अगर चौथे दिन दवा दी जाय, तो बडा उपकार हो।

"हारीत संहिता"में लिखा है,—भ्रम, शीतलता, विह्वलता, कम्प, मलका पतलापन, थकान, परिश्रम और पसीना—ये सब लक्षण उस समय होते हैं, जब ज्वर छूटनेवाला होता है।

"सुश्रुत"में लिखा है—

> धातून्प्रक्षोभयन्दोषो मोक्षकाले बलीयते।
> तेन व्याकुलचित्तस्तु म्रियमाण इवेहते॥

दोष, मोक्ष होनेके समय या शान्त होनेके समय, धातुओंको क्षुभित करके, अत्यन्त बलवान हो जाते हैं, जिससे घबराया हुआ रोगी मरनेवालेकी सी चेष्टायें करने लगता है, यानी जब रोग घटने या अच्छा होने लगता है, तब वह इतना बलवान मालूम होता है कि, रोगीके बचनेकी आशा नहीं रहती, परन्तु दोषके शान्त होते ही, रोगी अच्छा हो जाता है।

ज्वरमुक्त रोगीके लक्षण।



(ज्वर छूट जानेके लक्षण)

"सुश्रुत"में लिखा है—

> स्वेदोलघुत्वंशिरसःकण्डूः पाकोमुखस्यच ।
> क्षवथुश्चान्नकांक्षाच ज्वरमुक्तस्य लक्षणम्॥

पसीनोंका आना, शरीरमें हलकापन, मस्तकमें खाज, मुखपाक यानी होठोंपर पपड़ी जमना, छींक आना और भोजनकी इच्छा होना—ये ज्वरमुक्तके लक्षण हैं।

हारीतने लिखा है,—पसीने आवें, खाज चले, नाड़ी पुष्ट हो जाय, मुँहमें छींक आवें, शरीर हलका हो, भूख लगे, इन्द्रियाँ प्रसन्न हों, पीडा और ग्लानि जाती रहे—ये लक्षण हों तब समझो कि ज्वर उतर गया।

'चरक'में लिखा है,—ज्वरमुक्त होनेसे रोगी विगतक्लान्ति, विगत-सन्ताप, व्यथाहीन, विमलेन्द्रिय तथा पहले की तरह सत्ववान हो जाता है।

ज्वर लौट आनेके चिन्ह ।



विमुक्तस्यापि हि शिरोगुरुत्व नैव मुञ्चति ।
अविमुक्त विजानीयाज्ज्वर पुनरुपैतितम् ॥

अगर ज्वर छूट गया हो, पर सिरका भारीपन न गया हो, तो समझ लो कि, अभी कसर है—ज्वर फिर लौटकर आवेगा ।

नट—शोधन वमन आदि करनेपर भी अगर कुछ पित्त त्वचामे रह जाता है, तो ज्वर पैदा कर देता है। ऐसे स्थलमे ईखका रस या शीतल शर्बत या शर्करोदक* पिलाना और दूध भात खिलाना चाहिये। अगर कफ और वायु शेष रहे हो, तो स्वेद, अभ्यङ्ग यानी पसीने निकालने और मालिश वगैर से काम लेना चाहिये ।

"सुश्रुत"मे कहा है —

हतावशेष पित्त तु त्वक्स्थ जनयति ज्वरम् ।
पिबेदिक्षुरस तत्र, शीतं वा शर्करोदकम् ॥
शालिषष्टिकयोरन्नमश्नीयात् क्षीरसंप्लुतम् ।
कफवातोत्थयोरेव स्वेदाभ्यगौ प्रयोजयेत् ॥

नोट—जरूरत होनेसे पृष्ठ ४१४ के अन्तमे लिखे हुए तीनों नुसखोमे से कोई नुसखा विचारपूर्व्वक देना चाहिये ।

ज्वरारिष्ट ।

(न बचनेवाले ज्वर रोगियोंके लक्षण)

---

(१) जिसकी जीभ नीली पीली और खरदरी हो, अत्यन्त गरम श्वास आवे, रोमहर्ष हो, नीले, लाल और पीले नेत्र हो जायँ और कण्ठ घर-घर करे—वह रोगी नहीं जीता ।

---

* शर्करोदकके लिये पृष्ठ ७६ का फुटनोट देखिये।

(२) जिसके मुँहमें जल्दी-जल्दी श्वास आवे, दाँतोंकी कतार काली हो जाय, नेत्र ठहरेसे हो जायँ और शरीरमें वल आजाय—वह रोगी-नहीं जीता ।

(३) बहुत पेशाव करनेवाला, बहुत श्वास लेनेवाला, दुवला, अरुचि-वाला और नष्ट इन्द्रियोंकी कान्तिवाला रोगी मर जाता है ।

(४) जिसके मुखसे खून गिरे, सिरमें दर्द हो, भीतर दाह और बाहर जाड़ा लगे,—ऐसा रोगी मर जाता है ।

(५) जो बेहोश हो, सज्ञारहित होकर सोता हो, जिससे गिरकर उठा न जाय, बाहर शीत और भीतर दाहसे पीड़ित हो,—वह रोगी मर जायगा ।

(६) जिसके रोएँ खड़े हों, आँखें लाल हों, हृदय (छाती में) भया-नक दर्द हो और मुखसे निरन्तर ऊँचा श्वास लेता हो, वह ज्वर-रोगी मर जायगा ।

(७) हिचकी और श्वाससे पीड़ित हो, मूढ़ हो—विशेषकर भ्रमते हुए नेत्रोंवाला हो, निरन्तर ऊँचे श्वासवाला हो और क्षीण हो, —वह ज्वर रोगी मर जायगा ।

(८) जिसकी आँखें धूएँकेसे रङ्गकी हों, जिसे बेहोशी हो , अत्यन्त तन्द्रा हो यानी आँखें मिची जाती हों—ऐसा ज्वर रोगी मर जायगा ।

(९) जिसको बहुत कय होती हों, नेत्रोंसे जल गिरता हो, अरुचि हो, भीतर दाह हो और जीभ काली हो—ऐसा रोगी मर जायगा ।

(१०) जिसका एक उपद्रव तो शान्त न होता हो , किन्तु और बहुतसे उपद्रव पैदा होते हों और नये-नये रूप लाते हों—वह रोगी मर जायगा ।

शास्त्रमें कहा है :—

व्याधेरुपरि यो व्याधि सोपद्रव उदाहृत ।
सोपद्रवा न जीवन्ति जीवन्ति निरुपद्रवा ॥

रोगके ऊपर जो उपद्रव हो, वही रोगका उपद्रव है। उपद्रव सहित रोगवाले नही जीते, किन्तु उपद्रव रहित रोगवाले जीते हैं।

(११) जो ज्वर बहुत प्रबल कारणोंसे उत्पन्न हुआ हो और जिसमें सारे लक्षण मिलते हों, वह ज्वर प्राणनाशक है।

(१२) जो ज्वर पैदा होते ही और चिकित्सा करते-करते इन्द्रियोंकी शक्तिको नष्ट कर दे, यानी रोगीको अन्धा, बहरा, गूँगा प्रभृति कर दे, वह असाध्य है।

(१३) जिस ज्वरमें पुरुष ज्वरसे क्षीण हो गया हो अथवा देहमें सूजन आ गई हो, वह ज्वर असाध्य है।

(१४) जो ज्वर धातुके भीतर हो अथवा अन्तर्वेगी ज्वर हो अथवा जिस ज्वरमें वातादि दोषोंका निश्चय न हो सके और बहुत दिनों तक रहनेवाला हो, वह ज्वर असाध्य है। जिस ज्वरमें रोगी अपने बालोंकी सीमन्त रचना आदि करता हो, वह भी असाध्य है।

(१५) जो ज्वर आतेही विषम हो जाय और जो ज्वर बहुत दिनोंसे आता रहे, वह असाध्य है।

(१६) क्षीण और अति रूखी देहवालेके गम्भीर ज्वर हो, तो मृत्यु समझनी चाहिये। भीतर दाह, प्यास, विरुद्ध दोषोंका बढना, मलका रुकना, श्वास और खाँसी ये गम्भीर ज्वरके लक्षण हैं।

(१७) जिसके रोमाञ्च होते हों, हृदयमें शूल हो, अङ्गोंमें ताप हो, जो

बेहोश हो, उर्द्ध श्वास लेता हो, जिसके सिर पर पसीने आते हों परन्तु छातीपर न आते हों और जिसका सारा शरीर शीतल हो, वह रोगी मर जायगा।

यमघंट योग।

वार	नक्षत्र	
रविवार	मघा	इन योगोंको "यम घंट" कहते हैं। इन योगोंमें बीमार होने से रोगी शायद ही जीता है। सुख की आशा नहीं है। उदाहरण—वार रविवार हो और उस दिन नक्षत्र मघा हो, और उसी दिन रोग हुआ हो,तो समझना चाहिये कि "यम घट" योगमें रोग हुआ। इसी तरह औरोंको समझ लीजिये।
सोमवार	विशाखा	
मंगल	आर्द्रा	
बुध	मूल	
बृहस्पति	कृत्तिका	
शुक्र	रोहिणी	
शनिवार	हस्त	

मृत्यु-योग।

वार	नक्षत्र	
रविवार	अनुराधा	इन योगोंको मृत्युयोग कहते हैं। इनमें रोग होनेसे शुभ नहीं। उदाहरण—जिस दिन रविवार हो और उसी दिन नक्षत्र अनुराधा हो, अगर ऐसे दिन रोग हो, तो रोगीके जीनेकी उम्मीद न समझनी चाहिये।
सोमवार	उत्तरा	
मंगल	मघा	
बुध	अश्विनी	
बृहस्पति	मृगशिर	
शुक्र	अश्लेषा	
शनिवार	हस्त	

मृत्युयोग।



अश्लेषा, शतभिषा, आर्द्रा,धनिष्ठा, ज्येष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढा, पूर्वाफाल्गुनी, भरणी, कृतिका और विशाखा—ये नक्षत्र पापवारोंसे युक्त हों और नवमी, षष्ठी, द्वादशी और चौथ ये तिथि भी हों, तो मरण समझना चाहिये। जैसे,—अश्लेषा नक्षत्र हो, वार पापवार हो तथा नवमी तिथि हो अथवा द्वादशी हो या छठ अथवा चौथ हो—यानी तीनोंका मेल हो अथवा पापवार और नक्षत्र का मेल हो और उस दिन किसीको रोग हो, तो वह रोगी नहीं बचेगा।

नक्षत्रोंके भागानुसार

रोगोंकी मर्य्यादा।



१ कृत्तिका—इस नक्षत्रमें दारुण ज्वर और पित्तकी व्याधि उत्पन्न होती है। इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है, दूसरे भागमें रोग हो, तोभी दश दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे ५ दिन पीड़ा रहती है।

२ रोहिणी—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग हो, तो ६ रात, दूसरे भागमें रोग हो तो १८ दिन और तीसरे भागमें रोग हो, तो १० दिन पीड़ा रहती है।

३ मृगशिर—पहले भागमें रोग हो तो ५ दिन, दूसरे भागमें हो तो १२ दिन पीड़ा रहती है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १ मास तक पीड़ा रहकर मृत्यु हो जाती है।

४ आर्द्रा—पहले भागमें रोग हो तो पन्द्रह दिन और दूसरेमें हो तो

१२ दिन तक रोग रहता है। तीसरे भागमें रोग पैदा हो, तो रोगी मर जाता है।

(५) पुनर्वसु—इसके पहले भागमें आया हुआ ज्वर ४५ दिन रहता है। दूसरेमे आया हुआ ७ दिन और तीसरेमें आया हुआ २५ दिन रहता है।

(६) पुष्य—इसके पहले भागमे आया हुआ रोग ७ दिन, दूसरेमें आया हुआ २० दिन और तीसरेमें आया हुआ २१ दिन रहता है।

(७) अश्लेषा—इसके पहले भागमें ज्वर चढनेसे मनुष्य बडी मुश्किल से जीता है, दूसरे और तीसरे भागमें ज्वर आनेसे निश्चयही मृत्यु होती है।

(८) मघा—इस नक्षत्रके पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन, दूसरेमें होनेसे १० दिन रोग रहता है और तीसरे भागमें रोग होनेसे मनुष्य २० दिन तक बहुत तकलीफ पाता है।

(९) पूर्वाफाल्गुनी—इसके पहले अंशमें ज्वर होनेसे ५ रात तक रहता है, दूसरेमें होनेसे १२ दिन तक रहता है और तीसरेमें ज्वर होने से १ मास बाद मृत्यु हो जाती है।

(१०) उत्तराफाल्गुनी—पहले भागमें रोग होनेसे १४ दिन, दूसरेमें होनेसे सात रात और तीसरेमें होनेसे ९ दिन पीडा रहती है।

(११) हस्त—पहले भागमें रोग होनेसे ७ रात, दूसरेमे होनेसे ४ दिन और तीसरेमें होनेसे ५ दिन पीडा रहती है।

(१२) चित्रा—पहले भागमे ज्वर होनेसे मृत्यु होती है। दूसरे भागमें रोग होनेसे रोग भयङ्कर रूप धारण करके ३ महीनेमें दूर होता है और तीसरे भागमें रोग होनेसे १३ दिन पीडा रहती है।

(१३) स्वाती—पहले भागमें रोग होनेसे १७ दिन, दूसरे भागमें होनेसे

२१ दिन पीडा रहती और तीसरे भागमें रोग होनेसे मृत्यु ही होती है।

(१४) विशाखा—पहले भागमें रोग होनेसे ४८ दिन पीडा रहती है, दूसरे और तीसरे भागमें रोग होनेसे १२।१२ दिन पीडा रहती है।

(१५) अनुराधा—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन, दूसरे भागमें होनेसे १५ दिन और तीसरे भागमें होनेसे ६४ दिन पीडा रहती है।

(१६) ज्येष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे ४५ दिन और दूसरे तथा तीसरे भागमें रोग होनेसे १६ दिन पीडा रहती है।

(१७) मूल— पहले भागमें रोग होनेसे ६० दिन, दूसरेमें होनेसे १६ दिन और तीसरेमें होनेसे १५ दिन पीडा रहती है।

(१८) पूर्वाषाढा—पहले और दूसरे भागमें रोग होनेसे १५ दिन पीडा रहती है, किन्तु तीसरे भागमें रोग होनेसे रोगी मर जाता है।

(१९) उत्तराषाढा—पहले और दूसरे भागमें रोग होनेसे १२ रात और तीसरे भागमें रोग होनेसे २० दिन पीडा रहती है।

(२०) श्रवण—पहले भागमें रोग होनेसे ७ दिन, दूसरेमें होनेसे २० दिन और तीसरेमें होनेसे १६ दिन पीडा रहती है।

(२१) धनिष्ठा—पहले भागमें रोग होनेसे २० दिन, दूसरेमे होनेसे ६० दिन और तीसरेमें होनेस १ मास पीडा रहता है।

(२२) पूर्वाभाद्रपद—पहले भागमें दारुण रोग हो तो ४५ दिन, दूसरेमें हो तो ६ मास और तीसरेमें हो, तो १६ दिन पीडा रहती है।

(२३) उत्तराभाद्रपद—पहले भागमें रोग हो तो १५ दिन; दूसरेमें हो तो ३० दिन और तीसरेमें हो तो २८ दिन पीडा रहती है।

२४ रेवती—पहले भागमें रोग हो तो ८ दिन, दूसरेमें हो तो १६ दिन और तीसरेमें रोग हो तो ३० दिन पीडा रहती है।

२५ अश्विनी—पहले भागमें रोग हो तो १ दिन, दूसरेमें रोग हो तो ५ रात और तीसरेमें हो तो ७ रात पीडा रहती है।

२६ भरणी—पहले भागमें पीडा हो तो ७ दिन पीडा रहती है, दूसरे भागमें रोग हो तो मृत्यु होती है और तीसरे भागमें रोग हो, तो ६० दिन पीडा रहती है।

नक्षत्रोंके तीन भाग आत्रेय मुनिने किये हैं। इनका मर्म जान कर वैद्यको चिकित्सा करनी चाहिये। इन नक्षत्रोंकी शान्तिके अलग-अलग मन्त्र हैं। उनसे हवन करनेसे रोग की शान्ति होती है।

नक्षत्रोंके हिसाबसे ज्वर रोगीके

आरोग्य लाभ या मरणका निश्चय।



१ धनिष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन तक रहता है।

२ शतभिषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिनमें रोगीको मार देता है।

३ पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिन या १२ दिनमें मार देता है।

४ उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १४ दिन बाद आराम हो जाता है।

५ रेवती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ४ या ८ दिनमें तक रहता है।

६ अश्विनी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

७ भरणी नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमे रोगीको मार देता है।

८ कृत्तिका नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ७ या १२ दिनमें आराम हो जाता है, पीछे ३ पक्षमें संशय हो जाता है।

९ रोहिणी नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या ११ दिनमें आराम हो जाता है।

१० मृगशिर नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ६ या ९ दिन रहता है।

११ आर्द्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ५ दिनमें मार देता है। इससे अधिक रहनेसे संशय हो जाता है।

१२ पुनर्वसु नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर १३ या २७ दिनमे चला जाता है।

१३ पुष्य नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर ३ या ७ दिनमें चला जाता है।

१४ अशलेषा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर बहुत समय तक रहकर शेषमें मार देता है।

१५ मघा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १२ दिनमें मार देता है। अगर अधिक दिन निकल जायें, तो रोगी सुखी हो जाता है।

१६।१७ पूर्वा फल्गुन नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ या १० दिनमें तथा उत्तरा फाल्गुनमें हुआ ज्वर ८ या ९ अथवा २१ दिनमे चला जाता है या मार देता है।

१८ हस्त नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर ७ दिनमें मोक्ष कर देता है। आठ दिनसे अधिक होनेसे रोगी आराम हो जाता है।

१९ चित्रा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिनमें मोक्ष कर देता है। अधिक रहनेसे रोगी आराम हो जाता है।

२० स्वाती नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर १० दिन या ३ दिनमें आराम हो जाता है।

२१ विशाखा नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर २१ दिनमें मार देता है।

२२ अनुराधा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक रहता है। इसके वाद चिकित्सा वृथा है।

२३ जेष्ठा नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर पाँचवें दिन मार देता है अथवा १२ दिनमें सुखी कर देता है।

२४ मूल नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर दश या ३ सप्ताहमें आराम हो जाता है।

२५ पूर्वाषाढ नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर ६ दिनमें आराम हो जाता है।

२६ उत्तराषाढ नक्षत्रमे उत्पन्न हुआ ज्वर १ मास तक दुःख देता है। पीछे ८ या ६ मासमे आराम हो जाता है।

२७ श्रवण नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ ज्वर ८ दिन तक तकलीफ देता है।

नोट—२७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र मामूली तौरसे ६० घड़ी या २४ घण्टे तक रहता है। कभी-कभी ५५ घडी या ६५ घडी भी रहता है, पीछे दूसरा नक्षत्र बदल जाता है।



बाईसवॉ अध्याय

कुछ जरूरी बातें ।

औषधि-सम्बन्धी नियम ।

(१) बहुतसी दवाओंमेंसे कुछ की तोल लिखी हो और किसी की तोल न लिखी हो, तो जिसकी तोल न लिखी हो, उसे भी उन्हींके बराबर लेना चाहिये ।

(२) अगर कहीं दवा सेवन करनेका समय न लिखा हो, तो वहाँ सवेरेके समय दवा लेनी चाहिये । दवा सेवनका समय जानना चाहो, तो पृष्ठ १३१-१३३ तक देखिये ।

(३) अगर कहीं दवाके पकानेके लिये बर्तनका नाम न लिखा हो, तो मिट्टीके बासनमे दवा पकानी चाहिये ।

(४) अगर कहीं पतले पदार्थका जिक्र न हो और बिना पतले पदार्थ काम न चलता दीखे, तो वहां पानी लेना चाहिये । जहां यह न लिखा हो कि, अमुक औषधिके पत्ते, छाल, फल या फूल क्या लिया जाय, वहाँ आप उस दवाकी जड लीजिये । जिन

---

* ये सब बाते पहले भागके २९८-३०१ पृष्ठोमें विस्तारसे लिखी हैं, वहाँ अवश्य देख लीजिये ।

वृक्षोंकी जड़ें मोटी हों, उनकी छाल लीजिये, जिनकी जड़ें छोटी हों, उनका सर्व्वाङ्ग लीजिये। जैसे, वड़ नीम आदिकी छाल लीजिये, विजयसार आदिका सार, परवल और तालीसपत्र आदिके पत्ते और त्रिफला तथा अनार आदिके फल लीजिये।

कौन-कौन दवाएँ नयी या पुरानी लेनी चाहियें ?



(५) सभी कामोंमें नये पदार्थ लीजिये, किन्तु वायविडङ्ग, पीपल, गुड़, चाँवल, घी, शहद, धनिया और हींग पुरानी लीजिये। ये एक साल वाद पुराने समझे जाते हैं। अगर पुराना गुड़ न मिले, तो नये गुड़को १२ घण्टे तक धूपमें रखकर काममें लाना चाहिये।

दवाका खुलासा न लिखा हो तो क्या करना चाहिये ?



(६) अगर कहीं किसी दवाका विशेष परिचय न लिखा हो—जैसे, उत्पल लिखा हो तो नीलोत्पल समझो, पुरीपरस लिखा हो तो गोवर लीजिये, चन्दन लिखा हो तो लालचन्दन लीजिये, सरसों लिखी हो तो सफेद सरसों लीजिये, नमक लिखा हो तो सेंधानमक लीजिये, मूत्र लिखा हो तो गायका मूत्र लीजिये। दूध और घी लिखा हो, तो गायका दूध और घी लीजिये।

गीली सूखी दवाओंका विचार।



(७) गिलोय, कुड़ा, अड़ूसा, पेठा, शतावर, असगन्ध, पियावाँसा, सौंफ और प्रसारिणी—ये दवाएँ गीली ही लेनी चाहिये।

अड़ूसा, नीम, परवल, केवड़ा, खिरेटी, पेठा, शतावर, सोंठ, कुड़ा, गन्धप्रसारिणी, गिलोय, इन्द्रवारुणी, नागवला, कटसरैया,

गूगल और सौंफ —ये गीली ली जा सकती हैं, पर दूनो लेनेकी जरूरत नहीं।

नोट—सभी चीजें प्रायः सूखी ली जाती हैं। अगर कोई चीज अभाववश गीली लेनी पड़े, तो दूनी लेनी चाहिये; पर उपरोक्त चीजें, गीली होने पर भी, दूनी न लेनी चाहिये।

कहाँ लाल और कहाँ सफेद चन्दन लेना चाहिये ?

(८) चूर्ण, अवलेह आसव और तेलके नुसखेमें खाली "चन्दन" शब्द लिखा हो, तो "सफेद चन्दन" लीजिये, किन्तु काढ़े और लेपमें लाल चन्दन लीजिये।

कोई दवा न मिले तो बदल लेना चाहिये।

(९) अगर आपको कोई दवा न मिले, तो उसका प्रतिनिधि या बदल ले लीजिये। किसका क्या बदल है, यह देखना हो, तो आप पहले भागके ३०३—३०७ के पृष्ठ देखिये। वहाँ अनेक दवाओंके प्रतिनिधि या बदल लिखे हैं।

काढ़ेकी दवाओंका वजन कितना होना चाहिये ?

(१०) काढ़ेमें जितनी दवाएँ हों, वे सब बराबर-बराबर मिलाकर कुल २ तोले लेनी चाहियें। जैसे,—किसी नुसखेमें ६ दवाएँ हों, तो आप हरेकको चार-चार माशे लेकर दो तोले वजन पूरा कर लीजिये। अगर नुसखेमें दो दवाएँ हों, तो प्रत्येकको एक-एक तोले लीजिये। काढ़ेको १६ गुने यानी ३२ तोले जलमें औटाइये और चौथाई यानी ८ तोले जल रहनेपर उतार लीजिये। काढ़ेमें कोई चीज ऊपरसे मिलानी हो, तो काढ़ा पीते समय मिलानी चाहिये। मिलानेवाली दवा प्रायः ६ माशे मिलानी चाहिये। अगर एक चीज मिलानी हो, तो आधे

तोले मिलाइये और अगर दो चीज मिलानी हों, तीन-तीन माशे मिलाइये। काढा रोज ताजा बनाकर पीना चाहिये, बासी काढा न पीना चाहिये। औटाये हुए काढेको फिर दुबारा न औटाना चाहिये। काढेके सम्बन्धमें और भी उपयोगी बातें जाननी हों, तो इसी भागके पृष्ठ १३१—१३५ और १७३—१७४ देखिये।

काथ प्रभृति बनाने की विधि।

काथ।



(११) अगर काढा बनाना हो, तो २ तोले दवाको ३२ तोले जलमें, मिट्टीकी हाँडीमें, बिना ढकन लगाये, पकाओ और चौथाई जल रहने पर मल-छानकर पिलाओ।

नोट—कोमल द्रव्य चौगुना पानी, कड़ी अठगुना और अति कड़ी सोलह गुना पानी डाल कर औटानी चाहिये।

हिम।

—*—

अगर हिम या शीतकषाय बनाना हो, तो २ तोला दवाको १२ तोले या छैगुने जलमें पहले दिन शामको भिगो दो और सवेरे मल-छानकर पिला दो। देखो पृष्ठ १८३ का नं० १५

फाँट।



अगर फाँट बनाना हो, तो पहले दवासे चौगुना गरम जल तैयार कर लो। पीछे उसी पानीमें दवाको थोड़ी देर तक भिगो रखो और पीछे छानकर पिला दो।

कल्क।





अगर कल्क बनाना हो, तो गीली या सूखी दवाको सिलपर

डालकर जलके साथ भाँगकी तरह पीस लो, यही कल्क है। देखो पृष्ठ १७२ के सिरका नोट।

स्वरस।



अगर स्वरसकी ज़रूरत हो, तो कच्ची दवाको सिलपर बिना पानी मिलाये कूट पीसकर कपड़ेमें निचोड़ लो। यही "स्वरस" है। अगर स्वरसकी गीली दवाएँ न मिलें, तो सूखी दवाओंको जौकुट करके अठगुने जलमें रातको भिगो दो, सवेरे आगपर औटाकर, चौथाई जल रहनेपर उतारकर काममें लाओ। अगर स्वरसमें मिश्री, शहद, गुड़ जीरा, खार, नमक, चूर्ण या तेल मिलाने हों, तो आठ-आठ माशे मिलाने चाहियें। स्वरस १ या २ तोले तक दिया जा सकता है।

नोट—काढ़ा, हिम, फांट, कल्क और स्वरस—इनको पञ्च कषाय कहते हैं। स्वरससे काढ़ा, काढ़ेसे कल्क, कल्कसे हिम और हिमसे फांट हलका होता है।

पुटपाक।



पुटपाक करना हो, तो सब दवाओंको जामुन या बड़के पत्तेमें लपेट कर, ऊपरसे मजबूत धागा बाँधकर, दो अंगुल मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो, पीछे आगमें रख दो। जब मिट्टीका रंग लाल सुर्ख हो जाय, दवाको पकी हुई समझो और निकाल खोल कर काम में लाओ।

चूर्ण।



अगर चूर्ण बनाना हो, तो पहले सब दवाओंको बीन-चुन और फटककर साफ करलो, पीछे अच्छी तरह धूपमें सुखाकर प्रत्येक दवाको अलग-अलग कूट लो। पीछे दवाएँ जितनी-जितनी मिलानी हों, उतनी ही-उतनी तोल-तोलकर मिला दो। इस

तरह उत्तम चूर्ण बनता है। अगर चूर्णमें गुड़ मिलाना हो, तो बराबरका मिलाओ। अगर मिश्री मिलानी हो, तो दूनी मिलाओ। अगर चूर्ण पतले पदार्थमें मिलाकर पीना हो, तो चौगुने पतले पदार्थमें मिलाकर पीओ। अगर किसी चूर्णमें किसी चीजकी भावना देनी हो, तो जिसकी भावना देनी हो, उसकी भावना देकर चूर्णको सुखा लो।

भावना देनेकी विधि।



भावना देनेका यह कायदा है कि जिस काढ़े या रसमें भावना देनी हो, उस काढ़े या रसमें चूर्णको अच्छी तरह भिगोकर दिनमें धूपमें और रातमें ओसमें रखो। अगर सात भावना देनी हों, तो सात दिन तक भिगो-भिगोकर रोज दिनको धूपमें और रातको ओसमें रख दो। प्रत्येक दिन भावनाका रस या काढ़ा ताजा तैयार करके भावना देनी चाहिये।

अनुपान।



(१२) अनेक दवाओंके सेवन करनेके बाद कोई पतली चीज पीनेका कायदा है। दवाके साथ जो पतली चीज ली जाती है, उसे ही "अनुपान" कहते हैं। आजकल शहद प्रभृतिमें मिलाकर दवा चाटते हैं और वे शहद प्रभृति ही अनुपान कहे जाते हैं। अनुपानके साथ औषधि थोड़ी देरमें ही बड़ा अद्भुत चमत्कार दिखाती है। इसलिये प्राय दवाएँ अनुपानके साथ सेवन करनी चाहिये। औषधि जिस रोगका नाश करनेवाली हो, उसका अनुपान भी उसी रोगके नाश करनेवाला होना चाहिये।

कफज्वरमें अनुपान शहद, तुलसीके रस, अदरखका रस और पानका रस है।

पित्तज्वरमें अनुपान पित्तपापडेका रस, परवलका रस या काढा, गिलोयका रस, नीमकी छालका काढा या रस है ।

वातज्वरमें शहत, गिलोयका रस या चिरायतेको भिगोकर बनाया जल प्रभृति अनुपान हैं ।

विषमज्वरमें पीपलोंका चूर्ण तुलसीके पत्तोंका रस, गोलमिर्चोंका चूर्ण, शहद और बेलके पत्तोंका रस प्रभृति अनुपान हैं ।

खाँसी, कफ प्रधान श्वास और जुकाममें अडूसेके पत्तोंका रस, तुलसीके पत्तोंका रस, पानका रस, अदरखका रस, पीपलका चूर्ण, काकडासिंगीका चूर्ण, बंसलोचनका चूर्ण, मुलेठी, कटेहली, कायफल और अडूसेकी छाल—इनका काढा अनुपान है। वायुप्रधान श्वासमे शहद और बहेडेका काढा प्रभृति अनुपान हैं।

नोट—रोग और रोगीकी अवस्थानुसार अनुपानके लिये काढा ४तोले, स्वरस २ तोले या १ तोले और चूर्ण एक आने या आध-आध आनेभर देना चाहिये। चूर्ण के अनुपानमें शहद अच्छा है। पित्ताधिक्यके सिवा और सब अवस्थाओंमें शहद दिया जा सकता है।

गोलियाँ ।

—*—

अगर गोलियाँ बनानी हों, तो दवाओंके चूर्णमे पतले पदार्थ विशेषकी भावना देकर, खरल में अच्छी तरह घोटकर जौ, सरसों या चिरमिटीके समान गोलियाँ बनाओ। अगर यह न लिखा हो कि, किस पतली चीजको मिलाकर गोली बनाओ, तो आप पानीके साथ चूर्णको खरल करके गोलियाँ बनाओ। अगर यह न लिखा हो कि, इतनी बडी-बडी गोलियाँ बनाओ, तो आप प्राय एक-एक रत्ती भरकी गोलियाँ बनावे ।

नोट—गुटिका, वटी, मोदक, वटिका, पिंडी और गुड—ये सात गोलियोंके नाम है।

गुड, खाँड या गुगलका पाक करके, उस पाकमें दवाओंका चूर्ण मिलाकर गोली बनानी चाहिएँ। अगर बिना पाक किये गोलियाँ बनानी हों, तो गूगलको शोधकर और पीसकर तथा चूर्णमें मिलाकर घीसे गोलियाँ बनानी चाहियें।

अगर जल, शहद, दूध आदि पतली चीजोंमें चूर्णको डालकर गोलियाँ बनानी हों, तो इनमे चूर्ण को डालकर और खरल करके गोलियाँ बनानी चाहिये।

अगर खाँड या मिश्री आदि डालकर गोली बनानी हो, तो चूर्णसे चौगुनी खाँड या मिश्री मिलाकर गोलियां बनानी चाहिये।

अगर गुड डालकर गोलियां बनानी हो, तो चूर्णसे दूना डालकर गोलियाँ बनानी चाहिये।

अगर गूगल और शहद दोनों डालकर बनानी हो, तो इन दोनोंको चूर्णके बराबर लेकर गोलियाँ बनानी चाहिये।

अगर दूध या पानी वगैर पतले पदार्थोंसे गोलियां बनानी हो, तो चूर्णसे दूने लेकर गोलियाँ बनानी चाहिये।

मुद्रा और यत्र प्रभृति।

अनेक प्रकारकी मुद्राये।

दो शीशियों या दो हाँडियोंके मुँह मिलाकर, किसी चीजसे जोड दिये जाते हैं जिससे भीतरकी दवा अथवा पारा प्रभृति न उड़ें अथवा धूआँ वगैर न निकले—इसीको मुद्रा कहते हैं।

कही तो शीशियोंका मुँह गुड और चूनेसे वन्द किया जाता है और कहीं शहत और चूनेको मिलाकर उनसे वन्द किया जाता है। डमरूयन्त्रकी दोनों हाँडियोंके मुखोंको चिकने पत्थरपर घिसकर बराबर कर लेते हैं, पीछे दोनों हाँडियोंके मुँह मिलाकर उनको पहले लोहेके तारोंसे कस देते हैं, इसके बाद कपडेके टुकडोंको चिकनी मिट्टी या मुल्तानी मिट्टीमें ल्हेस ल्हेसकर, हाँडियोंके जोडों पर चढाते हैं। कभी कभी रूई, लोहेकी कीट, मिट्टी और राखको खूब कूटपीटकर, उससे हाँडियोंका मुँह वन्द कर देते हैं। अगर डमरुयन्त्र द्वारा हिंगलूसे पारा निकालते हैं; तो "वज्रमुद्रा" से,

दराजों को बन्द करते हैं। जहाँ पारेके उड जानेकी सम्भावना रहती है, वहाँ वज्र मुद्रासे काम लेते हैं।

पीपलका गोंद १ तोला, लोहचूर्ण १ तोला, रूई १ तोला, सैंधा नमक १ तोला, मुल्तानी मिट्टी १ तोला और वालू २ तोला—इन सब को मिलाकर और ऊपरसे पानी डाल डालकर, मजबूत पत्थरकी सिलपर रखकर लोढे या हथोडेसे कूटते हैं, तीन दिन बराबर कूट नेसे जब सब चीजें एकदम चिकनी और चिपक जाने लायक हो जाती हैं तब डमरूयन्त्रकी मुख घिसकर तैयार की हुई हाँडियोंके मुखोंको इसी कल्कसे बन्द कर देते हैं। इसीको "वज्रमुद्रा" कहते हैं। इससे मुख जोड देनेसे पारा उडकर नही जा सकता, परन्तु मुद्रा से मुख बन्द करके ऊपरसे कपड-मिट्टी अवश्य कर देनी चाहिये, इससे फटनेका भय नहीं रहता।

शहत और चूनेको मिलाकर, उससे शीशी और कागकी सन्धि को बन्द करते हैं अथवा गुड और चूनेको जरा पानी मिलाकर खूब एक कर लेते हैं, पीछे इससे भी शीशी और कागकी दराज बन्द करते हैं। इसको "दृढ मुद्रा" कहते हैं। चन्द्रोदय या सिन्दूर रसके बनानेमें दृढ मुद्रासे काम लेते हैं।

गोबर और चिकनी मिट्टी मिलाकर अथवा केवल चिकनी मिट्टी को पानीमें सानकर अभ्रक प्रभृतिके सम्पुट पर मुद्रा देते हैं, यानी शरावों (सराइयों) या हाँडियोंके मुख इसीसे बन्द कर देते हैं। इसको "साधारण मुद्रा" कहते हैं।

नोट—हर प्रकारकी मुद्रा देकर, ऊपरसे चार पाँच कपरौटी अवश्य कर देनी चाहिये, यानी ऊपरसे कपडेका मिट्टीमे लहेसकर ४।५ तह चढा देनी चाहिये। इससे फटने का भय नहीं रहता।

सेंधानोन, चिकनी मिट्टी और आरने कडोंको राख—इनको बराबर बराबर लेकर पानी मिलाकर एक दिल कर लेना चाहिये। इससे भी अनेक स्थलोंमें मुद्राका काम लेते हैं।

कज्जली तैयार करना।



शोधी हुई गन्धक और शोधे हुए पारेको खरलमें डालकर खूब आहिस्ता आहिस्ता खरल करो, जिससे पारा उछलने न पावे। जब घुटते-घुटते पारा और गन्धक एक हो जायँ, रङ्गत काजलकी तरह स्याह हो जाय, पारेकी चमक बिलकुल जाती रहे, तब समझ लो कि कज्जली तैयार हो गई।

नोट—किसी औषधिमें अगर कज्जली बनानेकी बात नहीं लिखी हो, किन्तु पारा और गन्धक अलग-अलग लिखे हों तो वहाँ भी उपरोक्त रीतिसे कज्जली बनाकर और पीछे दवाएँ मिलाकर औषधि तय्यार करनी चाहिये।

कपरौटी।



चिकनी मिट्टीमें लहेस-लहेसकर कपडेको हाँडी, शीशी या सराई पर चढाते हैं, इसीको कपरमिट्टी या कपरौटी कहते हैं।

सम्पुट।



दो मिट्टीकी सराइयों या सकोरोंके बीचमें दवा रखकर, पीछे मुद्रासे बन्द कर देते हैं। इसीको "शराव सम्पुट" कहते हैं। शराव और सकोरा एक ही चीजके नाम हैं। इसी तरह दो हाँडियोंके बीचमें पकाई जानेवाली दवा रखकर उनके मुँह मिलाकर, मुद्रासे बन्द कर देते हैं। इसको "हण्डिका सम्पुट" कहते हैं।

भूधरयंत्र।



एक गड्ढा खोद लो। उसमें एक हाँडी ऊपरको मुँह किये रख कर उसमें पानी भर दो। दूसरी हाँडीके भीतर दवाको लहेस दो

और उसे औंधी करके गड्ढेमें रखी हुई हाँडीपर औंधी इस तरह रक्खो कि, दोनोंके मुँह मिल जायँ। पीछे दोनों हाँडियोंको दर्जों या सन्धियोंको मुलतानी मिट्टी या और किस चीजसे ऐसा बन्द कर दो कि, दवा न उडने पावे और धूआँ प्रभृति न निकलने पावें। पीछे ऊपरवाली हाँडीके ऊपर आगके अङ्गार रख दो। इस तरह तपत लगनेसे ऊपरवाली हाँडीकी लिहसी हुई दवा नीचेवाली जल भरी हाँडीमें गिर जायगी। पारेका अधःपतन या नीचे गिरानेकी क्रिया इसी तरह की जाती है।

विद्याधर यंत्र।



एक हाँडीमें पारा रखकर, उसे ऊपर मुख किये रक्खो। उस हाँडीके ऊपर दूसरी हाँडी भी उसी तरह ऊपर मुँह करके रखो। ऊपरकी हाँडीमें पानी भर दो। दोनों हाँडियोंकी दर्जों या सन्धि-स्थलोंको मिट्टीसे या किसी उत्तम मुद्रासे बन्द कर दो। पीछे दोनों हाँडियोंको चूल्हेपर चढा दो। जब ऊपरवाली हाँडीका पानी गरम हो जाय, उसे निकालकर शीतल जल भर दो। इस तरह करनेसे नीचेवाली हाँडीमें रक्खा हुआ पारा ऊपरवाली हाँडीके पेंदेमें जा लगेगा। वही पारा काममें लाने योग्य होता है। जब पाक हो जाय, हाँडी ठण्डी हो जायँ, तब धीरेसे हाँडियोंको चूल्हेसे उतार और खोल कर पैंदीका पारा ले लेना चाहिये। यही पारेकी उर्द्ध-पातन या ऊपर गिरानेकी क्रिया है। इस यन्त्रको "विद्याधर यन्त्र" कहते हैं।

नोट—पारेका उर्द्धपातन डमरूयन्त्रमें भी होता है। विद्याधर और डमरूयन्त्र प्राय एक ही काममें आते हैं।

डमरू यंत्र।



दो मजबूत हाँडियाँ ऐसी लाओ, जो समान हों और जिनके मुँह मिल जायँ। दोनों हाँडियोंके मुखोंको चिकने पत्थर पर पानी डालकर धीरे धीरे घिस लो। पीछे दोनों हाँडियों पर ५ कपरौटी करके सुखा लो इससे हाँडियोंके फटनेका डर न रहेगा। पीछे एक हाँडीमें पारा या शिगरफ प्रभृति पदार्थ रखकर, दूसरी खाली हाँडी उसके ऊपर इस तरह औंधी रखो, जिससे मुँह मिल जायँ। पीछे दोनों हाँडियोंके मुखोंको मजबूत मुद्रासे बन्द कर दो, जिससे पारा प्रभृति निकलकर न जा सके। इसके बाद दोनोंके किनारे तारोंसे कसकर ऊपरसे कपड़े और मुल्तानी मिट्टीकी ४।५ तह लगा दो और पीछे धूपमें सुखालो और सूख जानेपर आगपर चढ़ा दो। ऊपर वाली पर शीतल जलकी धारा इस तरह देते रहो कि, ऊपरकी हाँडी गरम न होने पावे और पानीभी चूल्हेमें न जाने पावे, बाहरकी ओर बहकर गिरता रहे। अगर सुगमसे पार पड़ना चाहो, तो ऊपरकी औंधी हाँडी पर रेजीके कपड़ोंकी २०।२५ तह करके और उसे पानीमें तर करके रख दो। जब कपड़ा आगकी तपतसे सूख जाय या सूखने पर आवे, तभी उसे धीरे-धीरे जल-धारासे तर करते रहो। अगर पारेको शीतल जगह न मिलेगी, तो वह इधर-उधर भागा-भागा फिरेगा। शीतल जगह मिलनेसे वह वहीं आकर लगता रहेगा और उसमें गुण भी उत्तम रहेगा। इस तरह पाँच घण्टों तक आग लगाने और कपड़ा तर करते रहनेसे पारा उड़कर ऊपरकी हाँडीमें लग जायगा। यही "डमरू यंत्र" है।

नोट—चूल्हेमें आग इस तरह लगनी चाहिये, कि हाँडियोंके जोड़ोंपर की हुई मुद्रा और कपरौटीको जला न दे, जिससे राह पाकर पारा बाहर निकल जाय। इस खतरेसे बचनेके लिये भट्टीपर एक गोल छेदवाला ऐसा तवा रखना चाहिये, जिसमें बधी आग लगे और उसकी लपट कपरोटी और हाँडियोंकी मुखमुद्रा तक न पहुँच

सके। यह बात चित्र देखनेसे अच्छी तरह समझमे आजायगी। शिङ्गरफमे पारा निकालनेके लिये अथवा पारेका उर्द्धपातन करनेके लिये विद्याधर यन्त्रकी अपेक्षा डमरयन्त्रमे सुभीतेसे काम होता है। और बातोंमें होशियारीसे काम लेनेके सिवा, आग लगानेके लिये भट्टी और चूल्हेका काम होशियारीसे करनेसे सब काम सुखसे हो जाते हैं। जिन लोगोंको पारेके शोधनमें उर्द्धपातन और अध पातन और तिर्य्यक्पातन प्रभृति क्रियाओंमें झंझट जान पड़े, उन्हें शिङ्गरफमे पारा निकाल लेना चाहिये। शिङ्गरफमे निकाले हुए पारेको और शुद्ध करनेकी जरूरत नहीं रहती। वह सब कामोंमे लिया जा सकता है।

दोला यंत्र।

जिस चीजको दोलायन्त्रमे पकाना हो, उसे पहले भोजपत्रमें बाँधो, इसके बाद कपड़ेकी चार तह करके, उसमे भोजपत्रमें बँधी चीज रखकर, उसकी पोटलीसी बनाकर उस पोटलीको महीन डोरीसे बाँध देना चाहिये। पीछे एक हाँडीमें निर्द्दिष्ट पतले पदार्थ जैसे—गोमूत्र, काँजी प्रभृति अथवा सूखे पदार्थ जैसे नमक,—इनको भर देना चाहिये। हाँडीमे जो चीज भरी जाय वह आधी हाँडीमे भरी जानी चाहिये, आधी हाँडी खाली रहनी चाहिये। पीछे हाडीके मुँहपर एक लम्बी लकड़ी आडी रख देनी चाहिये और उसमें उस पोटलीकी रस्सीका एक सिरा बाँधकर पोटली हाँडीके बीचमें झूलेकी तरह लटका देनी चाहिये। पीछे हाँडीको चूल्हेपर रखकर मन्दी मन्दी समान आग लगानी चाहिये, तेज आगसे भीतरके पतले पदार्थ गोमूत्र वगैर के उफनकर बाहर आनेका और निकल कर बह जानेका खटका रहता है। पोटली हाँडीमें भरे गीले या सूखे पदार्थों से अलग न रहे इसका भी ख़याल रखना चाहिये, क्योंकि पोटलीके उन पदार्थोंसे अलग यानी ऊँची रहनेसे पूरी आग नही लगेगी और उन पदार्थों के गुण पोटलीकी दवामें न आवेंगे और तलीमें जा लगनेसे पारा उड जायगा। इसे "दोलायन्त्र" कहते हैं क्योंकि इसमें पोटली दोले या

झूलेकी तरह झूलती रहती है। अनेक पदार्थों को स्विन्न या सिद्ध करनेके काममें यह यंत्र लाया जाता है। मैनसिल, *कौडी तथा जमालगोटेके बीज वगैर इसी यँतसे शोधे जाते हैं। इस दोला-यँत्रको "स्वेदन यँत्र" भी कहते हैं।

वालुका यंत्र।

एक काले काँचकी मोटी बोतल लाओ। उस पर तीन बार कपड-मिट्टी करो और सुखा लो, पीछे उसमें कज्जली प्रभृति भर दो। इसके बाद एक ऐसी हाँडी लो, जो बोतलके गले तक ऊँची हो। उसमें बोतलको रख दो और उसके चारों ओर बालू भर दो। बालू बोतलके गले तक रहनी चाहिये। बोतल जमानेसे पहले, हाँडीके पैदेमें छोटी अँगुली घुसे इतना बडा छेद कर देना चाहिये। उस छेद पर बोतल इस तरह रखनी चाहिये, जिससे बालू न निकल सके। बहुतसे लोग छेदसे बालू न निकलने देनेके लिये, अभ्रकके पत्र छेदपर जमाकर पीछे बोतल रखते हैं। यह तरकीब सबसे अच्छी है। इससे बोतलको ठीक आग लगती है। इस तरह हाँडीमें बोतल जमाकर और गले तक बालू भरकर, हाँडीको चूल्हेपर चढा देते हैं। इस यन्त्रको "वालुका यन्त्र" कहते हैं। इस यन्त्रकी सहायता से "रस" सिन्दूर, "मकरध्वज" और "चन्द्रोदय" आदि रस तैयार किये जाते हैं।

पाताल यत्र।

एक हाथ गहरा गड्ढा खोदो। उसमें एक हाँडी जमाओ। हाँडीका मुख ऊपरकी ओर रक्खो। पीछे एक और हाँडी लो।

उसमें जिस या जिन दवाओंका तेल वगैरः निकलना हो भर दो और उसके मुखपर एक ऐसा ढकना लगा दो, जिसके बीचमें एक छेद हो। छेदवाले ढकने और हाँडीकी सन्धिको बन्द कर दो। पीछे इस ढकने समेत हाँडीका मुँह गढ्ढेमें रखी हुई हाँडीसे मिला कर, मिट्टीसे या और किसी मुद्रासे जो उचित जँचे बन्द कर दो। पीछे मिट्टी या बालूसे गढ़ेको भर दो और ऊपरवाली हाँडी पर आग जलाओ। आगकी तपतसे ऊपरवाली हाँडीमें रक्खी हुई दवा नीचेवाली हाँडीमें, उस छेदमें होकर, टप टपकर गिर जायगी। जब आग ठण्डी हो जाय तब गढ्ढेसे हाँडीको निकालकर गिरी हुई दवाको निकाल लो। इसीको "पाताल यन्त्र" कहते हैं।

वालुकागर्भ पाताल यंत्र।



बाजारसे आतिशी शीशी ले आओ। इन शीशियोंमें यह खूबी है कि, ये तेज आगसे भी नहीं तड़कती। जिन चीजोंका तेल निकालना हो, उन्हे कूट-पीसकर आतिशी शीशीमें भर दो। पीछे लोहेके बारीक तारोंको हाथसे दबा-दबाकर एक गोलीसी बनालो। तारोंकी गोली ऐसी होनी चाहिये जो शीशीके मुँहमें कागकी तरह घुस सके। उसमें इतनी साँस भी रहनी चाहियें, जिसमे होकर खुद शीशीकी दवा तो न निकल सके, किन्तु तेल टपक सके। शीशीमें दवा भरकर और तारोंकी गोली मुँहमें रखकर, शीशीपर तीन चार कपरौटी करके शीशीको सुखा लेना चाहिये।

कुम्हारके यहाँसे एक डेढ़ हाथ चौड़ी और खासी गहरी नाँद ले आनी चाहिये। उसके पैदेमें कीलसे धीरे-धीरे एक ऐसा छेद करना चाहिये, जिसमें दवा भरी हुई आतिशी शीशीका मुँह मात्र घुस जाय और साँस न रहे। मतलब यह है कि उस छेदमें शीशीका मुँह ठीक बैठे।

उस शीशी समेत नाँदको एक अंगरेजी चूल्हे पर या मामूली ईंटोंके चूल्हेपर रख दो। शीशीके मुँहके नीचे एक चीनी या काँचका प्याला रख दो अथवा नाँदवाली शीशीके मुँहसे मुँह मिलाकर दूसरी शीशी चूल्हेमें रख दो।

ऊपरकी तरफ नाँदमें शीशीके पैंदे तक बालू भर दो और उस बालू पर आरने कण्डे जला दो। आगकी तपतसे तेल टपक टपक कर नीचेके रक्खे हुए बर्तनमें गिर जायगा। आग बहुत तेज न लगानी चाहिये। बहुत तेज आगमें तेलके जल जानेका भय है। हमने इस विधिसे नामर्दोंके तिले प्रभृति अनेक बार निकाले हैं।

"रसायनसार"के लेखक स्वर्गीय पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य्य वैश्य अपनी पुस्तकमें लिखते हैं—शीशीको औंधी करके उसका मुख नाँदके छेदमें घुमादो और शीशीको इतनी बड़ी नलीसे ढक दो जिससे शीशी और नलीके बीचमें चारों ओर तीन अङ्गुल जगह रहे। इस शीशी और नलीके बीचकी खाली जगहमें दाब-दाबकर बालू भर दो, जिससे शीशी बालूके अन्दर ढँकी रही। नली इतनी ऊँची होनी चाहिये, जो शीशीसे चार अङ्गुल ऊँची उठी रही। इस यन्त्रको बड़े लोहेके चूल्हे पर रखदो या तीन तीन नम्बरी ईंटोंको तीन तरफ रखकर उन पर रख दो। नाँद और शीशी पर ढकी हुई नलीके बीचमें जो जगह हो, उसमें कण्डे रखकर आग लगा दो। यन्त्रके नीचे, शीशीके मुँहके ठीक सामने काँच पत्थर या चीनी प्रभृतिका प्याला रख दो। इस तरह करनेसे तेल टपक जायगा। इस यन्त्रसे तेल आसानीसे निकल आता है, शीशी वगैर फूटनेका भी भय नहीं रहता। धूआँ कम हो जाने पर, ऊपरसे एक छेदवाली लोहेकी नाँद ढक देनेकी बात भी वे लिखते हैं। उन्होंने इस यन्त्रकी बड़ी तारीफ की है, इसीलिये हमने इसे यहाँ लिख दिया है।

तेल निकालनेकी सहज तरकीब।

एक चीनी या लोहे प्रभृतिके कटोरेके मुँहपर पतला झन्नासा कपड़ा मजबूतीसे बाँध दो। उस कपड़े पर लौंग प्रभृतिको, जिन का तेल निकालना हो, कूटकर फैला दो। कटोरेके किनारों पर सफेद अभरकके टुकड़े जमा दो और उन पर एक थाली रख दो। उस थालीमें लकड़ीके कोयले सिलगा कर रख दो। अगर कोयले बुझने लगें तो पखा करते रहो। इस तरह करनेसे एक घण्टेमें तेल निकलकर कपड़ेमें होकर कटोरेमें जा गिरेगा। एक घण्टे बाद धीरेसे थालीको उठा लो और पीछे होशियारीसे अभरकके टुकड़ों और कपड़ेको हटा लो।

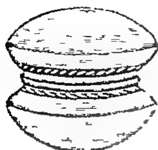
इस तरह बहुत जल्दी तेल निकल आता है, पर आधा माल हाथ आता है और आधा रह जाता है। इस उपायसे उन्हीं चीजोंका तेल निकलता है, जिनमें तैलका अँश अधिक होता है। जैसे लौंग, बादाम वगैर।

तिर्य्यक पातन यंत्र।



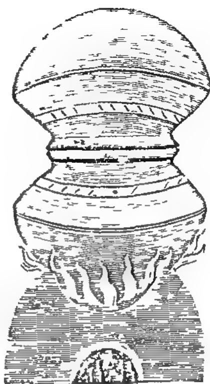
दो लम्बी-लम्बी हाँडी लाकर, एकमें पारा और एकमें पानी भर कर दोनों हाँडियोंका मुँह टेढ़ा करके मिला दो। एक हाँडीको चूल्हेपर रक्खो और दूसरीको चौकीपर रक्खो, ताकि दोनोंकी उँचाई समान होजाय। पीछे दोनों हाँडियोंमें ऐसा रास्ता रक्खो, कि एक की चीज दूसरी में जा सके और बाहरकी तरफसे ऐसा बन्द कर दो कि, साँस जरा भी न रहे। पारेवाली हाँडीके नीचे आग लगाओ। आग लगते ही पारा उड़-उड़कर पानीवाली हाँडीमें जाने लगेगा। इसीको "तिर्य्यकपातन यन्त्र" कहते हैं।

भूधर यंत्र।



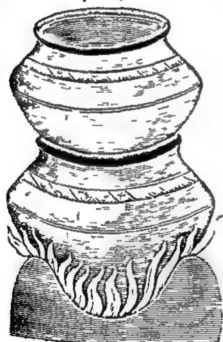
पृष्ठ ५६१

डमरू यन्त्र।



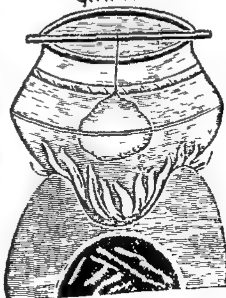
पृष्ठ ५६३

विद्याधर यंत्र।



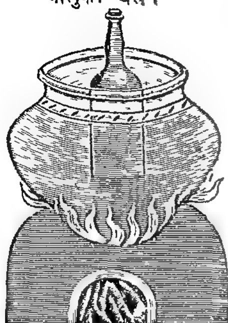
पृष्ठ ५६२

दोलायंत्र।



पृष्ठ ५६४

वालुका यंत्र।



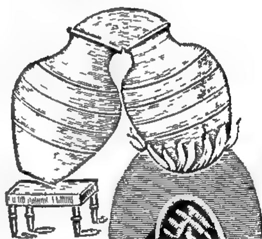
पृष्ठ ५६५

पाताल यंत्र



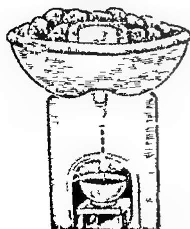
पृष्ठ ५६५

तिर्य्यकपातन यंत्र।



पृष्ठ ५६८

वालुकागर्भ पाताल यंत्र



बकयंत्र।



एक घड़ेमें पारा और दूसरे घड़ेमें पानी भरकर, दोनों घड़ों पर ढकने रखकर, उनकी दराजोंको सख्त मुद्राओंसे बन्द कर दो और ऊपरसे खूब कपड़मिट्टी कर दो। पीछे दोनों घड़ोंके गलेमें दो छेद करके,एक बाँसकी नलीके दोनों सिरे दोनों घड़ोंके गलेके छेदोंमे घुसा दो। सन्धियों या दराजोंमे मिट्टी प्रभृति लगाकर बन्द कर दो। पीछे पारेवाली हाँडीके नीचे आग जलाओ, बाँसकी नली की राहसे पारा उड़ उड़कर पानीके घड़ेमे चला जायगा।

नोट—पारा उर्द्ध्वपातन, अधःपातन और तिर्य्यकपातन—इन तीनो तरहसे पातन करनेसे शुद्ध होता है। पारेका उर्द्ध्वपातन विद्याधर यन्त्र या डमरू यन्त्रसे होता है, अधःपातन भूधरयन्त्रसे और तिर्य्यकपातन तिर्य्यकपातन यन्त्रसे होता है। दोलायन्त्रसे पारा स्वेदित होता है।



वकयन्त्र।

—❀—

इस वकयन्त्रको नलीयन्त्र या भभका कहते हैं। भभकेके नामसे साधारण लोग भी इसे जानते हैं। जिस चीजका अर्क निकालना होता है, इसीसे निकाला जाता है। यह यन्त्र मिट्टीका भी हो सकता है, किन्तु टूटनेके भयसे लोग इसको आजकल ताम्बेका ही बनवा लेते हैं। शहरोंमे ये यन्त्र कसेरोंकी दूकानों पर बने-बनाये भी मिलते हैं।

जितने बड़े यन्त्रकी जरूरत हो, उतना बड़ा बनवाकर भीतर कलई करा लो। इसके ऊपरका ढकना ऐसा होता है, जिसमे दो औंधे-सीधे कटोरे जड़े रहते हैं। इन दोनोंके मेलसेही एक ढकना बनता है। ढकनेके नीचेके हिस्सेमे और ऊपरके हिस्सेमे आमने सामने दो नलियाँ हाथ हाथ भरकी या कम जियादा लम्बी लगी रहती हैं। एक नली तो नीचेके कटोरेमे, यानी ढकनेके नीचेके हिस्सेमे लगी रहती है। इसको और भभकेके दवावाले वर्तनको

राह एक होती है। आग लगनेसे जो भाफके अवखरे उठते हैं, वह इसी नलीकी राहसे नलीसे लगी हुई बोतल या बर्तनमे जाते हैं। दूसरी नली जो ढकनके ऊपरो हिस्सेमें होती है,उसका दवावाले वर्तनसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। वह एक दूसरे खाली वर्तनसे मिली रहती है। ऊपरके कटोरेमे शीतल जल भरा जाता है। जब वह जल गरम हो जाता है, तब इस नलीके मुँहमे लगा हुआ कपडा हटा लेते हैं, और गरम पानी खाली टबमें जा गिरता है। इसके बाद नलीकी मोरीकी राहमें फिर कपडा ठूँसकर शीतल जल भर देते हैं। इस तरह जब जब ऊपरके ढकनेका भरा हुआ पानी गरम हो जाता है, उसी नलीको खोलकर निकाल दिया जाता है। इस शीतल जलकी वजहसे ही भाफ पानीके रूपमें हो होकर, अपनी नली द्वारा, बोतल या वर्तनमें जा जाकर गिरती है। अगर ऊपरके ढकनेका गरम जल न बदला जाय, तो अर्क न निकले।

अगर भभकेमें ३२ सेर पानी समाता हो,तो उसका चौथाई—आठ सेर जल भभकेमे भरना चाहिये और जलसे चौथाई दो सेर दवा डालनी चाहिये। पीछे ढकना लगाकर उसे मुल्तानी मिट्टीसे बन्द कर देना चाहिये। आग लगनेसे भभकेसे भाफ उडकर ऊँची जायगी और वह ढकनके शीतल जलसे सर्दी पाकर, पानीके रूपमे, अपनी नलीमें होकर, नलीसे लगे हुए वर्तनमें गिरती जायगी। आग समान और मन्दी लगानी चाहिये तथा ढकनेका गरम जल बारम्बार निकालकर उसकी जगह शीतल जल भर देना चाहिये।

जिस दवाका अर्क बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने या चौगुने जलमें ,कलईदार या चीनीके वर्तनमे भिगो रखना चाहिये। पीछे उसी पानी और दवाको भभकेमें डालकर अर्क खींच लेना चाहिये। जितनी दवा हो, उतनाही अर्क निकाला जाय, तो वह अर्क अव्वल दर्जेका होता है। सुदर्शन अर्क या गुडूच्यादि अर्क प्रभृति (देखो पृष्ठ १४८—१५२) इसी तरह निकालने चाहियें।

अर्क निकालनेसे काढा औटाने वगैरःकी दिक्कत नहीं उठानी पड़ती और अर्क का जायका भी उतना बुरा नहीं होता।

काँजी बनानेकी विधि।



एक सेर राई, दो सेर सेंधानमक, कुलथीका काढा चार सेर,* दो सेर चाँवलोंका पकाया हुआ भात और माँड, आधसेर पिसी हल्दी, आधसेर बाँसके पत्ते, पाव भर सोंठ, पावभर सफेद जीरा और दस तोले हींग,—इन सबमेंसे कूटने लायक चीजोंको कूटकर और शेषको योंही एक मिट्टीके बड़े घड़ेमें भरदो। इन चीजोंको घड़ेमें भरनेसे पहले, घड़ेको सरसोंके तेलसे पोत दो। पीछे इस घड़ेमें बीस सेर पानी भरदो। यदि पानी कम जान पड़े, तो और मिला दो। शेषमें सबको चला दो। पीछे आधसेर उड़दकी पिट्ठीके बड़े सरसोंके तेलमें पकाकर घड़ेमें डाल दो और ढक दो। इस तरह जाड़ेमें सात दिनमें और गरमीमें चार दिनमें ही काँजी तैयार हो जाती है। जब किसी धातुके शोधनेके लिये काँजी लेनी हो, कपड़ेमें छान कर ले लो।

हिंगलूसे पारा निकालनेकी विधि।



एक सेर हींगलूको नीबूके रसमें, एक पहर तक खरल करके, धूप में सुखा लो। अगर धूप न हो, तो भट्टीके पास रखकर सुखा लो। पीछे उसे एक हाँडीमें रखो। उस हाँडीके ऊपर दूसरी हाँडी औंधी रखो। दोनों हाँडियोंके मुँह पहले पानीसे घिसकर समान कर लो, ताकि

* दो सेर कुलथीको सोलह सेर जलमें पकाओ, जब चार सेर जल रह जाय उतार लो और वस्त्रमें छानकर पानीको घड़े में डाल दो।

राह एक होती है। आग लगनेसे जो भाफके अवखरे उठते हैं, वह इसी नलीकी राहसे नलीसे लगी हुई बोतल या वर्तनमें जाते हैं। दूसरी नली जो ढकनके ऊपरी हिस्सेमे होती है,उसका दवावाले वर्तनसे कोई सम्बन्ध नही होता। वह एक दूसरे ख़ाली वर्तनसे मिली रहती है। ऊपरके कटोरेमे शीतल जल भरा जाता है। जब वह जल गरम हो जाता है तब इस नलीके मुँहमे लगा हुआ कपडा हटा लेते हैं, और गरम पानी ख़ाली टबमे जा गिरता है। इसके बाद नलीकी मोरीकी राहमें फिर कपडा ठूँसकर शीतल जल भर देते हैं। इस तरह जब जब ऊपरके ढकनेका भरा हुआ पानी गरम हो जाता है, उसी नलीको खोलकर निकाल दिया जाता है। इस शीतल जलकी वजहसे ही भाफ पानीके रूपमें हो होकर, अपनी नली द्वारा, बोतल या वर्तनमें जा जाकर गिरती है। अगर ऊपरके ढकनेका गरम जल न बदला जाय, तो अर्क़ न निकले।

अगर भभकेमें ३२ सेर पानी समाता हो,तो उसका चौथाई—आठ सेर जल भभकेमें भरना चाहिये और जलसे चौथाई दो सेर दवा डालनी चाहिये। पीछे ढकना लगाकर उसे मुल्तानी मिट्टीसे बन्द कर देना चाहिये। आग लगनेसे भभकेसे भाफ उडकर ऊँची जायगी और वह ढकनके शीतल जलसे सर्दी पाकर, पानीके रूपमे, अपनी नलीमे होकर, नलीसे लगे हुए वर्त्तनमे गिरती जायगी। आग समान और मन्दी लगानी चाहिये तथा ढकनेका गरम जल वारम्बार निकालकर उसकी जगह शीतल जल भर देना चाहिये।

जिस दवाका अर्क़ बनाना हो, उसे २४ घण्टे तक तिगुने या चौगुने जलमें कलईदार या चीनीके वर्तनमे भिगो रखना चाहिये। पीछे उसी पानी और दवाको भभकेमें डालकर अर्क़ खींच लेना चाहिये। जितनी दवा हो, उतनाही अर्क़ निकाला जाय, तो वह अर्क़ अव्वल दर्जेका होता है। सुदर्शन अर्क़ या गुडूच्यादि अर्क़ प्रभृति (देखो पृष्ट १४८—१५२) इसी तरह निकालने चाहिये।

अर्क निकालनेसे काढा औटाने वगैर की दिकत नही उठानी पडती और अर्क का जायका भी उतना बुरा नही होता।

कॉंजी बनानेकी विधि।



एक सेर राई, दो सेर सेंधानमक, कुलथीका काढा चार सेर,* दो सेर चाँवलोंका पकाया हुआ भात और माँड, आधसेर पिसी हल्दी, आधसेर बाँसके पत्ते, पाव भर सोंठ, पावभर सफेद जीरा और दस तोले हीग, - इन सबमेंसे कूटने लायक चीजोंको कूटकर और शेपको योंही एक मिट्टीके बडे घडेमें भरदो। इन चीजोंको घडेमें भरनेसे पहले, घडेको सरसोंके तेलसे पोत दो। पीछे इस घडेमें बीस सेर पानी भरदो। यदि पानी कम जान पडे, तो और मिला दो। शेपमें सबको चला दो। पीछे आधसेर उडद की पिट्ठीके वडे सरसोंके तेलमें पकाकर घडेमें डाल दो और ढक दो। इस तरह जाडेमे सात दिनमें और गरमीमें चार दिनमें ही कॉंजी तैयार हो जाती है। जब किसी धातुके शोधनेके लिये कांजी लेनी हो, कपडेमें छान कर ले लो।

हिंगलूसे पारा निकालनेकी विधि।



एक सेर हीगलूको, नीबूके रसमें, एक पहर तक खरल करके, धूप में सुखा लो। अगर धूप न हो, तो भट्टीके पास रखकर सुखा लो। पीछे उसे एक हाँडीमे रक्खो। उस हाँडीके ऊपर दूसरी हाडी औंधी रक्खो। दोनों हाँडियोंके मुँह पहले पानीसे घिसकर समान कर लो, ताकि

* दो सेर कुल्थीको स[illegible] पकाओ, जब चार सेर जल रह जाय उतार लो और वस्त्रमें [illegible] डाल दो।

सन्धियाँ एकदम मिल जायँ। साथही दोनों हाँडियोंपर तीन-तीन कपरौटी करके धूपमें सुखा लो। हाँडियोंके मुँह मिलाकर, उनपर मुलतानी मिट्टी या चिकनी मिट्टी और बालूसे मुद्रा दे दो। इसके बाद तीन चार कपरौटी करके सुखा लो। पीछे चूल्हेपर रखकर आग लगाओ। ऊपरवाली हाँडीपर रेजीका कपड़ा २०।२५ तह करके और पानीमें तर करके रख दो। जब-जब कपड़ा सूखे, उसे शीतल जल से तर करते रहो। इस तरह पहले पृष्ठ ५६३ में लिखी हुई डमरू-यन्त्रकी विधिसे काम करनेसे हिङ्गलूका पारा ऊपरवाली हाँडीके पैंदेमें लग जायगा। उसे आग शीतल होनेपर धीरेसे हाँडी उतारकर निकाल लो। जिनसे पारेके शोधनेकी खटखट न हो, वे इसी तरह हिङ्गलूसे पारा निकाल ले। हिङ्गलूका पारा अत्यन्त शुद्ध होता है। उसे फिर शोधनेकी जरूरत नहीं। वह इसी तरह काममें लाया जा सकता है।

अनेक द्रव्योंके शोधनेकी विधि।



सुहागा शोधना।



आग पर रखकर खील करलेनेसे ही सुहागा शुद्ध हो जाता है।

भिलावा शोधना।



भिलावे वही लेने चाहियें, जो पानीमें डूब जायँ। भिलावे ईंटके चूणके साथ घिसनेसे शुद्ध हो जाते हैं।

धतूरेके बीज शोधना।



धतूरेके बीजोंको कूटकर, १२ घण्टों तक गोमूत्रमें भिगो रखा, इस तरह वे शुद्ध हो जायँगे।

अफीम शोधना।

अफीम अदरखके रसकी बारह भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है।

कुचला शोधना।

घीमें भून लेनेसे कुचला शुद्ध हो जाता है।

हींग शोधना।

लोहेकी कड़ाहीमें थोडासा घी डालकर गरम करो, पीछे उसमें हींगको डालकर चलाते रहो, जब हींगका रङ्ग लाल हो जाय, समझलो कि हींग शुद्ध हो गई।

नौसादर शोधना।

एक हाँडीमें चूनेका पानी भरकर, उसपर एक आड़ी लकडी रखकर, एक पोटली में नौसादर बाँधकर, उसी लकडी से हाँडी में लटका दो और दोलायन्त्रकी विधिसे पकाओ, नौसादर शुद्ध हो जायगी।

खपरिया शोधना।

एक हाँडीमे गोमूत्र भरकर, उसपर आडी लकडी रखकर, उस लकडीसे खपरियाकी पोटली हाँडीके भीतर झुलाकर, दोलायन्त्रकी विधिसे सात दिन तक औटानी चाहिये। गोमूत्र रोज बदल देना चाहिये। इस तरह करनेसे खपरिया शुद्ध हो जाता है। "स्वर्ण वसन्तमालती"में इसकी जरूरत पडती है।

हिंगलू शोधना।

हिङ्गलूका चूर्ण नीबूके रसमें और भेडके दूधमें सात सात भावना देने से शुद्ध हो जाता है।

गेरूमिट्टी शोधना ।

गायके दूधमें घिसनेसे या गायके घीमें भूननेसे गेरू शुद्ध हो जाता है ।

हरताल शोधनेकी विधि ।

पहले सफेद कुम्हडेके रसमें, फिर चूनेके पानीमें और इसके बाद तेल में एक एक बार हरतालको, दोलायतकी विधिसे, औटाओ, तब हरताल शुद्ध हो जायगी ।

वशापत्र हरताल सात दिन तक चूनेके पानीकी भावना देनेसे शुद्ध हो जाती है ।

तबकिया हरतालका चूर्ण करके, एक पहर तक दोलायतसे काँजीमें पचाओ, इसके बाद एक पहर तक पेठेके रसमें पकाओ, इसके बाद एक पहर तक तिलोंके तेलमें पचाओ और शेषमें एक पहर तक त्रिफलेके जलमें पचाओ । इस तरह चार पहर तक पचानेसे हरताल शुद्ध होती है ।

गोदन्ती हरताल शोधना ।

गोदन्ती हरताल गोमूत्रमें दो पहर तक पकानेसे शुद्ध हो जाती है ।

फिटकरी शोधना ।

तवे पर या आगमें फुला लेनेसे फिटकरी शुद्ध हो जाती है ।

जमालगोटा शोधना ।

जमालगोटेके बीजोंको ३ दिन तक भैंसके गोबरमें दबा दो । ३ दिनके बाद कडाहीमें डालकर, ऊपरसे गोमूत्र भरकर, दोपहर तक

पकाओ। इसके बाद उनको धूपमे सुखाकर, हाथसे मलकर, छिलके उतारदो। पीछे उनकी मोगियोंको गायके दूधमें चार घन्टे-तक पकाओ। इसके बाद उनको चीरकर, उनकी जीभी निकाल दो। इसके भी बाद उन्हें नीबूके रसमें घोटकर, कोरी नाँद पर लीप दो। उनका तेल नाँद सोखले और वे धूल-जैसे हो जायँ, तब नाँदसे उतार कर, फिर नीबूके रसमें घोटो और दूसरी कोरी नाँद पर लीप दो। फिर उस धूलसीको नाँद से उतार कर, फिर नीबूके रस में घोटो और तीसरी बार तीसरी नाँद पर लीप दो। इस बार सब चिकनाई निकल जायगी। इससे जो दवा बनाओगे, परमोत्तम बनेगी।

नोट—बीजोंको चीरकर, उनकी जीभ अवश्य निकाल देनी चाहिये, क्योंकि उनमें बहुत जहर होता है।

जमालगोटे के बीज शोधने की दूसरी विधि।



जमालगोटेके बीज शोधने हों तो बीजोंको चीरकर उनके बीच की पत्तीसी निकाल डालो। पीछे एक हाँडीमें दूध भरकर उस पर आडी लकडी रखकर, उसे आगपर चढा दो। बीजोंको पोटलीमें बाँधकर, डोरी लगाकर, एक सिरा डोरीका हाँडी पर आडी रक्खी लकडीसे बाँध दो। पोटलीको हाँडीके बीचमें लटकने दो और आग लगाते रहो। इस तरह दोलायंत्र की विधि से जमालगोटेके बीज शुद्ध हो जायँगे।

गंधक शोधना।



एक मिट्टीके बर्तनपर बहुत महीन कपडा बाँध दो। पहले उसमें दूध या दूध-पानी भर दो; पीछे कलछीमें घी भरकर गरम करो और उस घीके बराबर गन्धकका पिसा चूर्ण कलछीमे डालकर आगपर

तपाओ। जब गन्धक पानीसो हो जाय, कलछीको दूधके वर्तनमें उलट दो। भीतर साफ गन्धकके डले हो जायँगे।

सींगिया और वछनाभविष शोधना।

वत्सनाभ विपके पत्ते सम्हालूके पत्तों जैसे होते हैं। इसका आकार बछड़ेकी नाभि-जैसा होता है। इसके पास और वृक्ष नहीं लगते। अगर इसे शोधना हो, तो इसे ३ दिन तक गोमूत्रमें रक्खो। रोज-रोज मूत्र बदलते रहो। ३ दिन बाद गोमूत्रसे निकालकर, लाल राईके तेलसे भीगे हुए कपडेमें रक्खो। इस तरह यह विष शुद्ध हो जाता है। शुद्ध करनेसे इसका जोर कम हो जाता है। दवाओंमें इसे शोध करही डालना उचित है। यह विष प्राणनाशक है, पर तरकीबके साथ खाया जाय, तो जीवनदाता, रसायन, योगवाही, वात और कफको जीतनेवाला तथा सन्निपात नाशक है।

सींगिया विष और वछनाभ विषके शोधनेकी एकही विधि है।

मैनसिल शोधना।

मैनसिलको शोधना हो, तो एक घड़ेमे बकरीका दूध भरो और उसपर आड़ी लकडी रक्खो। मैनसिलको पोटलीमे बाँधकर, लकडीमे पोटलीको लटका दो। पोटली दूधमे लटकती रहे। नीचे चूल्हे मे आग जलाओ और उसपर हाँडी रख दो। ३ दिन इस तरह आग लगाते रहो, चौथे दिन मैनसिलको निकाल, खरलमे डाल, ऊपरसे बकरीका पित्ता इतना भरो कि डूबजाय. फिर खरल करो। जब सूख जाय, फिर पित्तेमें डुबा दो और खरल करो। इस तरह ७ वार करो, तब मैनसिल शुद्ध होगा।

कौडी प्रभृति शोधना।

कौडीको शोधना हो, तो हाँडीमे काँजी भर, मुखपर लकडी रख,

उससे कौडीकी पोटली लटका दो। एक पहर तक हाँडीके नीचे आग दो, कौडी शुद्ध हो जायगी। पीछे उसे मिट्टीके वर्तनमें रखकर आगमे जलाओ, भस्म होजायगी। कौडी, मुर्दासंग गेरू, शङ्ख, कशीस सुहागा और कालासुर्मा नीबूके रसमें उसी तरह हाँडीमे पोटली लटका कर दोलायंत्र की विधि से पकानेसे भी शुद्ध होते हैं।

शङ्ख आदिका शोधना।

पाँच सेर गोमूत्र, एक सेर सेंधानोन और आध पाव नीबूका रस—इनको एक हाँडोमें भरकर, उसमे एक सेर शङ्ख या सीप आदि रखकर, दो पहर तक तेज आग दो, पीछे उनको निकालकर धो लो। यह दूसरो विधि है।

नोट—इनकी भस्म करनी हो, तो इन्हें मिट्टीके बासनमें रखकर आगसे जला लो, बस यही भस्म है। शङ्ख चाँदीके समान सफेद और भारी लेना चाहिये। सीप मोती की लेनी चाहिये। कौडी पीले रंगकी लेनी चाहिये, जिसमें पीठपर गाँठ हो तथा नीचे ऊपर बारह बारह दाँत हों और तोलमें ६ माशे हो।

समन्दर फेन शोधना।

समन्दरफेन कागजी नीबूके रसमें पीसनेसे शुद्ध हो जाता है।

पारा शोधना।

राई और लहसनको खूब पीसकर सुनारकी सी मूस बनालो। उस मूसमें जितना पारा शोधना हो भरकर, उसके ऊपर भोजपत्र लपेटकर और ऊपरसे तीन तह कपडेकी लपेटकर, पोटली बाँध लो। पीछे एक हाँडीमें काँजी भरकर, उस हाँडीके मुँहपर लकडी रखकर, पोटलीको डोरीसे बाँधकर, उसका एक छोर उस लकडीसे बाँधदो और पोटलीको हाँडीके भीतर अधबीचमें लटका

दो। चूल्हेमें आग जलाकर, उसपर हाँडी रख दो। तीन दिन तक चूल्हेमें आग लगाते रहो, इस तरह करनेसे पारा स्वेदित होगा। इस यन्त्रको दोलायन्त्र कहते हैं।

३ दिन बाद पारेको मूसमेंसे निकालकर, खरलमें डालकर, एक दिन घीग्वारके रसमें खरल करो, इसी तरह एक दिन चीतेके रस में, एक दिन काँगनीके रसमें और शेषमें एक दिन त्रिफलेके काढेमे खरल करो। खरल किये पारेको काँजीसे ऐसा धो डालो कि, पहली दवाओंका अंश न रहे।

जब धोनेसे पारा साफ होजाय, तब पारेसे आधा सेंधानोन लेकर, दोनोंको खरलमें डालकर, नीबूका रस दे देकर एक दिन भर खरल करो। इसके बाद राई, लहसन और नौसादर—इन तीनोंको पारे के बराबर लेकर, इनके साथ पारा मिलाकर, खरलमें डालकर, धानके तुषोंका काढा डाल डालकर सबको खरल करो, जब खरल करते-करते सूख जाय, तब गोल-गोल टिकियाँ बना लो। उन टिकियोंके चारों ओर हींगका लेप करदो।

इन टिकियोंको एक हाँडीमें रखकर, उसमें नमक भरदो। पीछे इस हाँडीके मुँहपर एक दूसरी जरा बडी हाँडी उसी तरह ऊपर मुँह करके रक्खो। नीचेकी और ऊपरकी हाँडीकी सन्धि कपड मिट्टीसे ऐसी बन्द कर दो कि, साँस न रहे, पीछे धूपमें सुखालो। चूल्हे में आग जला,उसपर दोनों हाँडी इस तरह रख दो कि, नमकवाली हाँडी का पैंदा आग पर रहे। ऊपरवाली हाँडीमें जल भर दो। जब पानी गरम हो जाय, पानी बदल दो। अगर पानी न बदलोगे, तो आपकी मिहनत बर्बाद जायगी। इस तरह नीचे आग लगाते रहो और ऊपरकी हाँडीका गरम पानी निकालकर शीतल जल देते रहे। इस तरह ३ पहर आग लगानेसे, पारा उडकर ऊपरकी हाँडीके पैंदेमें लग जायगा। ३ पहर बाद आग बन्द करदो। पीछे शीतल होने पर धीरे धीरे हाँडियोंका जाड खोल लो और हलके हाथसे पैंदेमें लगा

पारा निकाल लो। यह पारा परम शुद्ध और दोषरहित सब कामके लायक होगा।

पारा शोधनेकी सहज तरकीब।



लाल ईंट का चूर्ण, रसोई-घर में लगा हुआ धूएँका काजल, हल्दी, ऊन की राख और बिना बुझा पत्थर का चूना—इन पाँचों को आध आध पाव लो और इन सब के वज़न से आधा यानी पाँच छटाँक पारा लो। सब को खरल में डालकर जँभीरी नीबू के रसके साथ (अभाव में कागजी नीबू या बिजौरे नीबू का रस भी ले सकते हो) तीन दिन या एक दिन खरल करो। पीछे डमरु यन्त्र की विधि से एक पहर या तीन घण्टे तक आग देकर हाँडी उतार लो। शीतल होनेपर, हांडी को खोलकर, पैंदी से पारा धीरे से निकाल लो। यह पारा परम विशुद्ध होगा। मकरध्वज और चन्द्रोदय को छोडकर, यह पारा स्वर्णसिन्दूर, रस सिन्दूर प्रभृति सब कामों में आ सकता है।

डमरु यन्त्र की विधि उधर लिख चुके हैं, फिर भी, ऐसे लोगों के लिये जो पुस्तक के पन्ने उलट कर देखनेमे भी आलस्य करते हैं, यहाँ हम पूरी विधि फिर समझाये देते हैं।

दो मजबूत हाँडियाँ कुम्हार के यहाँ से ले आओ। उनके मुखों को चिकने पत्थर पर पानी डाल-डाल कर ऐसे घिस लो कि, वे बराबर हो जायँ—ऊँचे नीचे न रहें। दोनो हाँडियों के मुँह मिला कर देख लो, कि दराज तो नहो रहती। जब हाँडियों के मुँह ठीक हो जायँ, तब उन पर तीन बार या सात बार कपड़-मिट्टी कर दो और धूपमें सुखा लो। इस तरह हाडियों के फटने या फूटने का डर न रहेगा। पीछे एक हाँडी में नीबू के रस द्वारा

खरल किया हुआ पारा रख दो और दूसरी हाँडी को उसके ऊपर औंधी रखकर वज्रमुद्रा की लुगदी से उनकी सन्धों को बन्द कर दो। वज्रमुद्रा का मसाला इस तरह दरज़ों में लगाओ कि, ज़रा भी सन्ध या दर्ज़ न रह जाय। इसके बाद हाँडियोंके किनारों को लोहे के तारों से कस दो और ऊपर से फिर वहाँ भी कपरमिट्टी लगा दो और सुखा लो। इस तरह पक्का काम करने से पारे के उड जाने या हाँडियों के फूट जाने का भय न रहेगा। जब दोनों हाँडियाँ इस तरह सूख कर तैयार हो जायँ, तब उन्हें चूल्हेपर चढा दो। ऊपरवाली औंधी हाँडी को शीतल जल से तर रखना परमावश्यक है, इस लिये उस हाँडी पर रेजी के कपडे की २० या २५ तह करके और पानी में तर करके रख दो। जब-जब कपडा सूखनेपर आवे, उसे शीतल जलसे तर करते रहो। इस तरह कपडा रख कर पानी डालने से ऊपरकी हाँडी गरम न होगी और शीतल रहने से नीचे की हाँडी से पारा उड-उड कर इस हाँडीमें आ लगेगा। इस तरह चार या पाँच घण्टेमें सब पारा ऊपर की हाँडी में आ लगेगा। पीछे शीतल होने पर, आहिस्ते-आहिस्ते खोल कर पारे को निकाल लेना चाहिये।

अगर कपडे के बजाय कोई चतुर मनुष्य ऊपर की औंधी हाँडी पर ऐसा गोल घेरा बना दे, जिसमे पानी भर दिया जाय, तो और भी आराम रहे, पर घेरे मे गरम पानी के निकालने को नाली भी बनानी होगी। उस नाली का मुँह खोल देने से गरम पानी निकल जायगा। गरम जलके निकल जानेपर, नाली के मुख में कपडा ठूँस देना होगा और शीतल जल भर देना होगा। मतलब असलमें ऊपर की हाँडी शीतल रखने से है। बुद्धिमान आदमी इस मकसद के पूरा करने को, अनेक नयी नयी तरकीबों से भी काम ले सकते हैं। हाँ, चूल्हे या भट्टी पर हलवाइयों की तरह एक बडे छेदवाला गोल तवा भी यदि रख दिया जायगा,

तो आग की लपटें हाँडियों की कपरौटी को न जला सकेंगी। आग नीचेवाली हांडी के पैंदे में ही लगनी चाहिये।

साधारणतया पारे को शोधने की यह सब से आसान तरकीब है। असल मे तो पारा स्वेदित करने, मूर्च्छित करने, उर्द्ध्वपातन और अधःपतन करने से शुद्ध होता है, पर जिन से यह खटखट न हो, वे इस तरह शुद्ध कर ले। और अगर इतना भी न हो, तो हिङ्गुल को नीबू के रस में या नीम के पत्तों के रस में ३ घण्टे तक खरल करके, इसी डमरु यँत्र की विधि से ऊपर की हाँडीमें चढाले। यह पारा भी शुद्ध होता है और सब कामों में आ सकता है। कुछ भी तकलीफ नही है। हिंगलू से पारा निकालने और इस विधि से पारा शोधने में कोई भेद नहीं है। केवल खरल करने के मसालों मे भेद है। हिंगलू नीबू के रस में घोटा जाता है और साधारण पारा ईंट के चूर्ण वगैर पाँचों चीजों और नीबू के रस के साथ घोटा जाता है। डमरु यँत्र की दोनों में ही जरूरत पडती है। पारे के शोधने की यह तरकीब हमने स्वर्गवासी रसायनशास्त्री पण्डितवर श्यामसुन्दर आचार्य्य वैश्य महाशय की "रसायनसार" नामक पुस्तकसे ली है। डमरू यन्त्र की विधिमें भी हमने उनकी विधिका सहारा लिया है, इस लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

कुछ अँगरेजी ज्वरोंका वर्णन।

टाइफस फीवर।

—*★*—

(सन्धिक सन्निपातज्वर ?)

निदान।



यह ज्वर जियादातर गन्दी और जहरीली हवासे पैदा होता है। रोगियोंके शरीरसे उनके श्वास और पसीनों द्वारा विष निकलकर

दूसरोंके शरीरमें समा जाता है। इसके सिवा अजीर्ण और कमजोरी वगैर भी इसकी उत्पत्तिके कारणोंमेंसे हैं। यह रोग छुतहा है यानी एकसे उडकर दूसरेको लगता है। जहाँ मनुष्योंका जियादा जमाव होता है, वहाँ यह अकसर होता है। कहते हैं, शीतकाल और शीतल स्थानोंमें इसकी पैदायश होती है।

पूर्वरूप ।

छूत लगननेके दिनसे बारह दिन तक तो छूत लगनेके आसार नजर नही आते। इसके होनेके पहले किसी-किसीको जाडासा लगा करता है, शरीरमें आलस्य थकान और ग्लानिसी रहती है, तबियत नहीं लगती, बेचैनी भी रहती है, कमरमें वेदना होने लगती है और प्यास कुछ वढ जाती है, जी मिचलाया करता है और सिरमें दर्द भी होता है। इसके बाद, यह ज्वर यकायक अपने जोर शोरसे हमला करता है और मनुष्यको जाडा देकर ज्वर चढ आता है।

पूर्णरूप ।

जब यह अपने पूर्णरूपसे रोगीपर चढ बैठता है, तब रोगीका मुख मलीन हो जाता है, चेहरेपर उदासी आ जाती है चेहरेकी रङ्गत स्याह हो जाती है, सिरमें वेदना होती है, आँखें सुर्ख हो जाती हैं, भूख जाती रहती है, प्यास वढ जाती है, होठों पर पपडियाँ जम जाती हैं, रोगी बल और सामर्थ्यसे हीन हो जाता हे सन्ध्या समय बेचैनी वढ जाती है रातको नींद नही आती, रोगी आनतान बकता है। अगर नींद आजाय, तो समझना चाहिये कि, रोगी आरोग्य लाभ करेगा। अगर नींद नही आती, तो रोगी बेहोश हो जाता है, रोगीका शरीर तपने लगता है और रूखापन वढ जाता है। उस समय टेम्परेचर—ज्वरका ताप १०५ डिग्री तक हो जाता है। कभी कभी

इससे भी जियादा पारा चढ जाता है। छठे सातवें दिनसे शहतूतके फलकी शकलके काले-काले दाग या फुन्सियाँ होने लगती हैं। कभी कभी तो ये दाग आपसमें मिले हुए देखे जाते हैं और कभी-कभी अलग देखे जाते हें। पैदा होनेके दूसरे या तीसरे दिन इनका रंग ईंटकासा गुलाबी रंग हो जाता है। अगर दोषोंका कोप जियादा नहीं होता, रोग हलका होता है, तो यह ज्वर सात दिन तक समान रूपसे रहकर धीरे-धीरे कम होने लगता है। दसवें दिनसे ज्वरका ताप घटने लगता है और चौदहवें पन्द्रहवें दिन रोगी आरोग्यसा हो जाता है। तापकी घटनीके साथ वे काले-काले दाग भी घटने लगते हैं, नींद आती है, भूख लगती हे और रोगीकी जीभ भी साफ हो जाती है।

अगर ज्वरकी गरमी ८वें दिनके वाद वैसीही वनी रहे, तो समझना चाहिये कि, शरीरके जोडोंमें शोथ या सूजन पैदा होगई है। इस दशामें रोग जोर पकडता है। बारहवें दिनसे बीसवें दिन तक ख़राब हालत रहती है। रोगीकी जीभ रूखी, भूरी और कालीसी हो जाती है। रोगी तन्द्रामें पडा रहता है, पर नींद नहीं आती। शरीर जकड जाता है, हाडोंमें वेदना होती है, मुखमें बदबू आती है, करवट लेनेमें कष्ट प्रतीत होता है, पेशाव होताही नही या कम होता हे और रङ्ग उसका लाल होता है। ज्वरके नवें दसवें दिन तन्द्रा का बडा जोर रहता है, रोगीको होश नही रहता, चारपाई परही पाखाना पेशाव फिर देता है। अन्तिम दशामें वाँइटे आने लगते हैं और रोगी परमधामको सिधार जाता है।

यह बराबर बना रहनेवाला ताप है। यह १४ से २१ दिन तक लगातार बना रहता है। यह कभी धीरे धीरे बढता है और कभी एकदमसे भयङ्कर रूप धारण कर लेता है। साधारण अवस्थामें भूख नष्ट हो जाती है, दस्त नहीं होता, उबकियाँ आया करती हैं,

जीभ मैली हो जाती है तथा शहतूतके रङ्गके दाग पैदा हो जाते हैं और यह ज्वर दूसरे हफ्तेमें धीरे धीरे उतर जाता है। अगर यह उग्र रूपसे होता है, तो इसमें मस्तकशूल मूर्च्छा, सन्धियोंमें वेदना, बाँइटे आना और सज्ञा न रहना तथा बेहोशीमें पाखाना-पेशाब निकल जाना प्रभृति लक्षण होते हैं।

जब पाँचवें छठें या सातवें दिन शरीरमे शहतूतकी शकलके चकत्ते उठते हैं, तब तो रोगीकी हालत बहुत खराब हो जाती है, प्रलाप या बकवादका बहुत जोर हो जाता है, रोगी बेहोश होकर बहरा हो जाता है, और मुँह फट जाता है। उस दशामें लोगोंको पहचानना कठिन हो जाता है, हाथ पाँव काँपते हैं, रोगी पलङ्गके सामानको खींचता है। अगर दवा देते ही आराम मालूम होने लगे, तब तो आरामकी आशा है, नही तो फुफ्फुसकी नलीमें खून बहकर चले जानेसे रोगी मर जाता है। अगर यह रोग कम उम्र वालेको होता है, तो बचनेकी उम्मीद रहती है। बडी उम्र वालेके बचनेकी आशा कम रहती है।

चिकित्साविधि।



डाक्टरी कायदेसे पहले ज्वरके हेतुको दूर करना उचित है। अजीर्णसे हुआ हो, तो अजीर्ण नाशक उपाय करना चाहिये। गन्दी हवासे हुआ हो तो रोगीको साफ हवादार स्थानमें रखना चाहिये। रोगीको लघु पथ्य और शीघ्र-शीघ्र दवा देनी चाहिये, दवामें देर होनेसे रोगीके प्राणनाशकी समावना है। रोगीके कमरेके द्वार पर आग रखनी चाहिये। बलकी रक्षाके लिये दूध और ब्राण्डी—शराब देनी चाहिये।

नोट—अनेक आयुर्वेदज्ञ चिकित्सक इसको सन्धिक सन्निपातज्वर समझते हैं और वैसी ही चिकित्सा करते हैं और कहते हैं कि, दूध न देना चाहिये। ये लोग आग रखना अच्छा बताते हैं और सन्धिक सन्निपातज्वरकी चिकित्सामें जो क्वाथ

प्रभृति लिखे हैं उनकोही, दोषोंको समझकर, ज़रूरत होनेसे उनकी दवाएँ घटाकर-बढ़ाकर देनेकी राय देते हैं। अधिकांश वैद्योंकी रायमें यह सन्धिक सन्निपातज्वर है, कुछ की रायमें यह कर्णक है। अभी इस पर वैद्योंकी कमेटी ने निश्चित राय कायम नहीं की है, इस लिये हम अपनी ओर से कोई राय नहीं दे सकते। निस्सन्देह यह एक प्रकारका सन्निपातज्वर है और भारतमें बहुत कम होता है। सन्धियों या जोड़ोंमें सूजन होनेसे ही लोग इसे सन्धिक सन्निपात ज्वर कहते हैं। हमारी रायमें, अगर रोगी मिलें, तो चतुर चिकित्सक को दोषोंकी वृद्धि क्षय और कोपके अनुसार इसकी चिकित्सा करनी चाहिये। इस तरह बिना नामवाले सभी रोगोंकी चिकित्सा की जा सकती है।

टाइफॉइड ज्वर ।



(तन्द्रिक सन्निपातज्वर ?)

निदान ।



यह ज्वर मरे हुए जानवरों और डाँगरोंकी दुर्गन्धसे पैदा होता है। उनसे खराब हुई हवा नाक और श्वास द्वारा मनुष्योंके शरीरमें प्रवेश करती और भीतर पहुँचकर जहरका काम करती है। बद्-बूदार चीज़ोंके खाने-पीने, गरम और खुश्क मौसम तथा वैसेही अन्यान्य कारणोंसे मनुष्योंकी आँतोंमें ज़ख्म हो जाते हैं। आँतोंमें खराबी होनेसेही विशेषकर टाइफॉइड ज्वर पैदा होता है।

पहली अवस्थाके लक्षण ।



दससे चौदह दिनके भीतर, इस जहरका असर मनुष्यों पर होता है। जब इसका प्रभाव देह पर पड़ता है तब शरीरमें आलस्य और थकानसी जान पड़ती है, काम करनेको जी नहीं चाहता, शरीर

शरीर घूमता सा मालूम होता है, पतले दस्त होते हैं, कभी गरमी और कभी जाडा लगता है, दिनमें तन्द्रा रहती और रातको नींद नहीं आती, अगर नींद आती भी है, तो अजीब अजीब चौंकानेवाले सुपने दीखते हैं, प्यास बढजाती है, नाकसे खून गिरता है। जीभका बिचला भाग मैला और किनारे तथा नोक सुर्ख़ रङ्गके रहते हैं, गालोंपर लाल लाल दाग हो जाते हैं नाडी भारी और निर्बल रहती है, श्वासमें बदबू आती है, पेट फूल जाता है, पेटको दबानेसे दर्द होता है, कभी-कभी वमन और अतिसारके लक्षण भी होते हैं। रोगीको किसी तरह चैन नहीं मालूम होता। रातको शरीर रूखा और गर्म हो जाता है। रातको टेम्परेचर—ताप १०५—१०६ डिग्री तक हो जाता है। बलकी हानि और कान्ति की मलीनता होती है। आँखें खड्डोंमें घुस जाती हैं, पेशाब या तो होता ही नहीं और यदि होता है, तो लाल और मिकदारमें थोडा होता है।

दूसरी अवस्थाके लक्षण।

—★—

सात दिन तक ज्वरका वेग मन्दा रहता है। दूसरे हफ्तेमें बुख़ार बढने लगता है। नवें दिनसे चौदहवें दिन तक तेजी रहती है। शरीर तपता है, चमडा रूखा रहता है, साँस जल्दी-जल्दी चलता और उसमें बदबू आती है, होठ सूख जाते हैं, जीभ सफेद हो जाती और उसमें लकीरसी हो जाती हैं एवं पेटमें दर्द होता है।

तापकी घटती-बढती।

—✶—

सवेरे अगर १०२ डिग्री ज्वर होता है, तो उस दिनकी शामको १०४ हो जाता है। अगले दिन सवेरे १ डिग्री कम होकर १०३ डिग्री ताप हो जाता है, शामको फिर दो डिग्री बढकर १०५ हो जाता

है। उसके अगले सवेरे १ डिग्री घटकर १०४ हो जाता है और उस दिन शामको १०६ डिग्री हो जाता है। हर दिन शामको २ डिग्री ताप बढना और अगले दिन सवेरे १ डिग्री घट जाता है। शामको और २ डिग्री फिर बढ जाता है। यह दशा ४ ५ दिन तक रहती है।

फुन्सियां।



बुखार आनेके सातवें आठवें दिन छाती और पेट पर गुलाबी रङ्गकी फुन्सियाँ पैदा होती हैं, जो ४।५ दिनमें मर जाती हैं। इसके बाद और जगह वैसीही फुन्सियाँ पैदा होती और नाश होती रहती हैं। अगर रोग हलका होता है, तो चौदहवें-पन्द्रहवें दिन सारी फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं।

रोगकी तेजी।



रोगकी तेजीमें पेट फूल जाता है, तिल्ली बढ जाती है, सूखी खाँसी आती हैं, कय होती हैं, दस्त पीले पतले और बदबूदार होते हैं, नाडीकी चाल और ताप बढ जाता है, कानोंमें सनसन शब्द होता है। कोई कोई रोगी कानोंसे बहरा हो जाता है। प्रलाप, हिचकी, सामर्थ्यहीनता, अरुचि, अतिसार, कृशता, सज्ञानाश, हाथपाँव काँपना, तन्द्रा और मूर्च्छा आदि लक्षण होते हैं। ऐसी अवस्थामें रोगी चल बसता है।

रोग नाशके पूर्व्वरूप।



२१ वें दिनसे इस ज्वरके जानेके आसार नजर आते हैं। उस समय जीभ साफ होने लगती है, भूख लगती है, नाडीकी चाल धीमी हो जाती है, दस्त बन्द हो जाते हैं और रोगी खाटपर बैठने-उठने लगता है तथा चेष्टा बदल जाती है।

नोट—(१) सभी रोगियोंमें प्रलाप, कुन्सियोंका होना, अतिसार, और बलहानि प्रभृति लक्षण नहीं देखे जाते। इस ज्वरमें २० से ३० दिन तक भय रहता है। २० वें दिनसे या तो ज्वर कम होने लगता अथवा मृत्युका सामना होता है।

इस ज्वरके लक्षण दुर्गन्धजनित ज्वरसे मिलते हैं। अष्टगन्धकी धूप या सर्वगन्धका क्वाथ, जो आगन्तु ज्वरोंकी चिकित्सामें लिखा है इस ज्वरमें हित है,—ऐसी अनेक वैद्योंकी सम्मति है। कोई-कोई कहते हैं, इस टाइफॉइड ज्वरके लक्षण तन्द्रिक सन्निपातसे मिलते हैं। अगर तन्द्रिकके लक्षण ही विशेष हों, तो तन्द्रिक सन्निपातज्वरकी सी चिकित्सा करनी चाहिये। टाइफस और टाइफॉइड दोनों ही सन्निपात ज्वर हैं, इसमें सन्देह नहीं। डाक्टर लोग कब्ज होनेसे, पहले काष्टर आयलका जुलाब देकर कोठा साफ करते हैं, दस्त बहुत होते हैं, तो कुछ ठहर कर, दस्त बन्द करनेकी दवा देते हैं, मलमूत्रके स्थानोंकी सफाई कराते हैं, आँतोंमें सूजन आजाने और घाव हो जानेके भयसे चलने फिरनेकी सख्त ममानियत करते हैं, खराब दशा होनेसे शराब देते हैं, साबूदाना वगैर हलका पथ्य देते हैं, दूध भी देते हैं और नमक या क्षार पदार्थोंका देना बुरा कहते हैं। अभी इस ज्वरके सम्बन्धमें भी वैद्योंमें मतभेद है। इसलिये हमने इसकी चिकित्सा नहीं लिखी, केवल लक्षण मात्र वैद्योंकी जानकारीके लिये लिख दिये हैं। चतुर वैद्य दोषोंके लक्षण समझ कर इलाज कर सकते हैं।

टाइफाइट ज्वर और टाइफस ज्वरमें भेद ।

टाइफॉइड ज्वरमें जाडा कई बार लगता है, किन्तु टाइफसमें आरंभमें ही शीत लगकर ज्वर चढता है। टाइफॉइड ज्वरमें खूनके दस्त होते हैं, पर टाइफस ज्वरमें दस्त कम होते हैं और उनमें खून नहीं होता। टाइफॉइड ज्वरमें आँतोंमें घाव होते हैं, पर टाइफसमें घाव नहीं होते। टाइफॉइड ज्वरमें ताप अजब ढङ्गसे घटता-बढता है। चार पाँच दिन तक सन्ध्याको २ डिग्री ज्वर बढता है, सवेरे १ डिग्री घटता है, शामको और २ डिग्री बढता है, यह क्रम चार-पाँच दिन तक जारी रहता है, किन्तु टाइफस ज्वरमें १ दिन बाद ज्वर बढने लगता है और तीसरे दिन तक बढता है, पीछे स्थिर हो जाता

और आठवें दिनसे घटना आरम्भ हो जाता है। टाइफॉइड ज्वरमें गुलाबी रङ्गकी फुन्सियाँ निकलती और नष्ट होती रहती हैं, किन्तु टाइफस ज्वरमें शहतूतकी शकल और रङ्गके दाग पैदा होते और पीछे वे ईंटके रङ्गकेसे हो जाते हैं और शेष तक रहते हैं। टाइफॉइड ज्वरमें रोगी ज्वर आते ही कमजोर नहीं होता, किन्तु टाइफस ज्वरमें ज्वर आते ही सामर्थ्य घट जाती है। ४ दिनमें ही रोगी ऐसा हो जाता है कि, उससे खाटसे उठा नही जाता।

इनफेन्टाइल रेमिटेन्ट फीवर।



यह ज्वर टाइफॉइड फीवरही है। बालकोंके टाइफॉइड फीवर का नाम इनफेन्टाइल रेमिटेण्ट फीवर रख लिया गया है। इनफेन्ट बालकको कहते हैं और इनफेण्टाइल इनफेण्टका विशेषण है। यह ज्वर दो तरहका होता है —(१) हलका, (२) तेज।

हलके ज्वरके लक्षण।



शुरूमें बालककी भूख मन्दी हो जाती है, प्यासका जोर हो जाता है और बच्चा सुस्त हो जाता है। इस अवस्थाके बाद बालक पडा रहता है। कोई छेडता है तो झुंझलाता है, क्योंकि मिजाज बिगड जाता है। साँझको गफलतमें पडा रहता है, किन्तु सोता नहीं और रातको नींद न आनेके कारण माता-पिताको हैरान करता है। रात भर बेचैनीमें कटती है। शरीर कभी गरम हो जाता है और कभी ठण्डा हो जाता है। नाडीकी चाल बेतहाशा तेज होजाती है। दस्त पतला और सडा हुआ होता है। मुँहसे बदबू निकलती है। सवेरेके वक्त जरा तबियत अच्छी मालूम होती है, शामके समय गरमी बढने लगती है और ज्यों ज्यो रात होती है, तबियत बिगडती जाती है।

रातके समय ताप जियादा रहता है। यह पहले हफ्तेकी हालत है।

दूसरे हफ्तेमें बेचैनी बहुत बढ जाती है।' बालक रातके समय चौंक चौककर चिल्ला उठता है। कभी-कभी तो इस तरह दाँत पीसने लगता है, जिससे मूर्खलोग भूत-प्रेतका साया पडना समझ लेते हैं। इस तरह कराहता है जिससे दया आती है। मालूम होता है,—भीतर भयानक वेदना रहती है, पर बालक कह नही सकता या कहनेका होश नही रहता। ज्वर कभी दिनमे दो बार आता है और कभी एक बार। दिनमें दस बजे बाद ज्वर चढता है और फिर ३ बजेके करीब उतर जाता है, शामको फिर चढता है और रातके पिछले पहरमें कम हो जाता है। बालककी जीभ बीचमें मैली और नोक तथा किनारोंपर लाल रहती है। नाक और मुँहको बालक बारबार नोचता है, पेट भी फूल जाता है। पन्द्रहवें दिनसे बहुधा सब तकलीफें घटने लगती हैं और बच्चा धीरे धीरे आराम होता चला जाता है।

तेज ज्वरके लक्षण।

—***—

तेज ज्वर होनेसे चेहरा भारीसा हो जाता है। सिरमें भयङ्कर वेदना होती है, भ्रम, मूर्च्छा, वमन, वगैरः लक्षण भी होते हैं। छठे दिनसे पेट, पीठ और छातीपर लाल लाल, छोटी-छोटी फुन्सियाँसी होने लगती हैं। इस अवस्थामें बेहोशी बढ जाती है, कय भी जियादा होने लगती हैं, श्वास जल्दी-जल्दी चलता है, हृदयमें शूल होता है, खुश्क खाँसी होती है, मटिया रङ्गके पतले दस्त होते हैं। ये पहले हफ्तेकी बातें हैं।

दूसरे हफ्तेमें बालक बिलकुल लकृट हो जाता, मास सब सूग

जाता है, उठ-बठ नही सकता, बेहोश पडा रहता है और नाडी धीरे-धीरे चला करती है। ताप१०५ और १०८ डिग्री तक हो जाता है।

तीसरे हफ्तेमें बच्चेकी कमजोरी बेहद बढ जाती है। वह बेहोश रहता है हाथ पैर ऐंठने लगते हैं। इस अवस्थासे कोई भाग्यवान् बच्चाही उठता है।

आराम होनेके लक्षण।

—*—

यह ज्वर धीरे-धीरे जाता है। कभी पसीने आकर ज्वर उतरता है, कभी पसीने आकर और दस्त होकर ज्वर उतरता है और कभी वमन द्वारा पित्त निकलनेसे भी ज्वर शान्त हो जाता है। इस ज्वरसे १०० में २० रोगी मरते हैं। २० दिनके बाद बहुधा मृत्यु होती है। जिसकी आँतोंमें घाव हो जाते हैं वे रोगी कम बचते हैं। ३० दिनमें रोगी आराम हो जाते या मर जाते हैं। कोई-कोई इससे भी अधिक दिनोंतक अपने कर्मफलोंको भोगकर मरते हैं।

पाइएमिया फीवर।

—*—

(रक्तविकारज्वर)

—*—

यह बुखार खूनके दोषसे होता है। यह वैद्यकका रक्तविकार ज्वर है। किसी अङ्गमें सूजन आकर पीव पड जाती है। उसकी वजहसे खून खराब हो जाता है और बुखार चढ आता है। कभी सफेद-सफेद धब्बे पैदा होजाते हैं और कभी सन्धियोंमे वेदना होती है। यह धूपमें रहने, अग्निके पास बहुत बैठने, तापने और रक्तके दूषित होनेसे होता है।

चिकित्सा।

—※—

इस ज्वरमें पीवको सुखाना और खूनको साफ करना चाहिये। उशबेका अर्क, चिरायतेका अर्क अथवा मजिष्ठादि अर्क प्रभृति खून साफ करनेवाली दवाएं देनेसे अवश्य लाभ होता है।

न्यूमोनिया।

डाक्टरी में इसके ५ भेद लिखे हैं—

(१) निमोनिया

(२) वर्को निमोनिया या लव्यूलर

(३) पुराना या इन्टर स्टिश्येल निमोनिया

(४) फुसफुस की गेंग्रीन

(५) फुसफुस में केन्सर (नासूर)

निमोनियाके लक्षण।



निमोनिया को फुसफुस का प्रदाह भी कहते हैं। इस रोग में फुसफुस में दाहने-बायें बहुत जलन होती है और नीचे की तरफ दर्द होता है। इस निमोनिया रोगके पेदा होने से पहले बुखार आता है, कम्प होता है और खाँसी चलती है। बहुत दिन पहले भूख कम हो जाती है, कमजोरी हो जाती है, हाथ पैर और छाती में दर्द होता है, श्वास जोर से चलता है, नाड़ी तेज हो जाती है, जीभ और होठ नीचे हो जाते हैं, एवं धीरे धीरे इस रोग में रोगी की चैतन्यता का नाश होकर मृत्यु हो जाती है।

यह रोग ६ से १० दिन तक बहुत कष्ट देता है। खाँसी और श्वाससे भयानक कष्ट होता है। उठकर बैठनेसे या ज़ोरसे साँस लेनेसे खाँसी आती और उसके साथ खून आता है। जब रोगी की मृत्यु होनेका खतरा होता है, तब ऊपर लिखे लक्षण या तो कम हो जाते हैं या बिल्कुल ही नहीं रहते।

इस रोगमें पहले तो बलगम पतला पतला आता है, पीछे दो एक दिनमें खूब गाढ़ा आने लगता है। कभी-कभी दो एक घण्टेमें ही आटेकी तरहका आने लगता है। कफमें कुछ सुर्खी सी मिली रहती है, यानी कुछ खूनका अंश रहता है, रोगीका बुखार बढ़ता ही जाता है। पहले दिन ताप १०२ से १०४ डिग्री तक और तीसरे दिन १०७ से १०६ डिग्री तक देखा जाता है। १०६ डिग्रीका ताप होनेसे रोगीका बचना कठिन हो जाता है। नाड़ीकाकी चाल यद्यपि नर्यंत समान नही होती, फिर भी तीसरे चौथे दिन १२० से १३० तक हो जाती है। सिरमें बड़ी वेदना होती है, नींद नहीं आती, बेचैनी बढ़ जाती है, पेशाबके साथ खूनकी झलक आती और उसके साथ धातु भी मिली रहती है।

(२) लब्युलर या बकोनिमोनियाके लक्षण।



इसके सब लक्षण निमोनियाके सेही होते हैं। फर्क यही होता है कि, निमोनियाकी तरह इसमें कम्प आदि लक्षण नही होते। ताप १०३ से १०५ डिग्री तक रहता है, कभी कभी ज्वर बढ़ जाता है। नाड़ीकी गति तीव्र हो जाती है।

(३) पुराने निमोनियाके लक्षण।



पहले लिखा हुआ निमोनिया जब पुराना हो जाता है, तब पसलीमें एक ओर खिचावसा होता है, श्वास और खाँसी बढ़ जाते हैं, कफ बड़ी कठिनता से निकलता और उसमें बड़ी दुर्गन्ध मारती है।

(४) फुसफुसके गेंग्रीनवाले निमोनियाके लक्षण ।



पुराना निमोनिया होकर, जहरीले कीडोंके जहरसे खूनके जहरसे अथवा उपदंश (गरमी रोग) से भी यह रोग हो जाता है । इसमें फुसफुसमें बडी तकलीफ होती है ।

(४) फुसफुसमें केन्सरवाले निमोनियाके लक्षण ।

यह रोग बहुत कम देखनेमें आता है । इसे कोई संक्रामक या छुतहा कहते हैं और कोई वंशपरम्परासे होनेवाला कहते हैं । इसमें श्वास, खाँसी, तीर छेदनेकीसी वेदना, दबानेसे तकलीफ बढना खाँसी के साथ कफ निकलना ये लक्षण होते हैं । कभी कभी फुसफुससे खून भी आता है, बुखार रहता है, रातमें पसीने आते हैं और रोगी कमजोर हो जाता है ।

निमोनियाके सामान्य लक्षण ।



पहले फेफडोंमे सूजन आ जाती है और वे सख्त हो जाते हैं तथा गलने लगते हैं । आरम्भमें जाडेका बुखार आता है, छाती बहुत गर्म हो जाती है, मुँह और नेत्र लाल हो जाते हैं, सिरमे दर्द होता है, प्यास बहुत लगती है, जीभ मैली हो जाती है, भूख जाती रहती है, छातीमे मन्दा-मन्दा दर्द होता है, सूखी खाँसी चलती है, कभी-कभी ऊकभा आता है, बीमारीके बढ जानेपर मुखसे खून भी गिरने लगता है, श्वास कष्टसे आता है, थूक लहेसदार चिपचिपा और बदबूदार आता है ।

निमोनियाकी उत्पत्तिके कारण ।



सर्दी लगना, कई तरहका ज्वर, ज्वरमें बदपरहेजोसे अपथ्य सेवन करना या शीतल जल वगैर पीना या और कोई शीतल पदार्थ

खाना-पीना, बहुत मिहनत करना, अति स्त्रीप्रसंग करना, मौसमका बदलाव या ऋतुपरिवर्त्तन आदि इसके कारण हैं। विशेष करके यह रोग शीतल हवा लगने या और किसी तरह सरदी लगनेसे होता है।

खुलासा।

—*—

असलमें "निउमोनिया" सन्निपातज्वरकी एक अवस्थाका नाम है। सन्निपात ज्वरमें साधारण लक्षणोंके सिवा और कितने ही विशेष लक्षण होते हैं। निउमोनिया होनेके पहले एकदमसे कमजोरी आ जाती है और भूख मारी जाती है। जब निउमोनिया होता ही है, तब पहले जाड़ेका बुखार आता है, सिरमें दर्द होता है, कय होती हैं, रोगी आनतान बकता है और हाथ पैर पटकता है। जब रोग बढ़कर पूर्णरूपसे प्रकट हो जाता है, तब छातीके छूतेही दर्द होने लगता है, साँस लेनेमें कष्ट होता है, खाँसी का बड़ा जोर रहता है, मैला और गाढ़ा तथा लसदार कफ निकलता है। यह कफ बासनमें रख दिया जाता है तो सहजमें छूटता नहीं। कभी-कभी उस कफके साथ जरा-जरासा खून भी आता है।

जब एक सप्ताह बीत जाता है, तब पेशाब और पसीना बहुत आता है। नाड़ीकी चाल हर मिनटमें ६० से १२० बार तक हो जाती है। टेम्परेचर १०३ से १०४ डिग्री तक हो जाता है। कोई-कोई १०७ डिग्री तक टेम्परेचर हो जाने पर भी आराम होते देखे गये हैं। असलमें इस रोगमें फुसफुस खराब होता और बहुधा सड़ भी जाता है। इस दशामें किसी कदर लाल और मैला तथा पतला कफ निकलता है। फुसफुसके सड़ जानेपर बदबूदार और पीवके जैसा बलगम निकलता है। फुसफुसके खराब हो जाने पर रोग कष्टसाध्य हो जाता है। अगर फुसफुसमें दाह या जलन हो, तोभी रोगकी

कष्टसाध्य समझना चाहिये। अगर छोटे बालक, बूढ़े, स्त्री और खास कर हामला—गर्भवती औरत तथा शराबीको यह रोग होता है, तो कठिनसे आराम होता है।

चिकित्सा विधि।

—*—

डाक्टर लोग इसमें अनेक दवायें देते हैं, परन्तु उनके यहाँ इसकी उत्तम दवा "काडलिवर आयल" है, पर रोगके मिट जानेकी दशा में इसका देना हित है। इसे वे १ ड्रामसे लेकर १ औन्स तक दूधके साथ देते हैं। इसका इलाज अनुभवी डाक्टरसे कराना चाहिये। यह भी एक प्रकारका सन्निपात है। डाक्टरी मतसे पहले-पहल चिरायतेका काढा या टिञ्चर खोल देना अच्छा है।

वैद्यकके रक्तष्ठीवी सन्निपातसे इसके बहुत लक्षण मिलते हैं। किसी-किसीने निमोनियाको राजयक्ष्मा या सिल लिखा है। यह उन्होंने कफके साथ खून आनेकी वजहसे लिखा है। राजयक्ष्मा या सिलमें इसकेसे लक्षण बहुत दिनोंमे होते हैं, परन्तु निमोनियामें सब लक्षण चटपट होते हैं, रक्तष्ठीवीमें मुखसे थूकके साथ खून आता है, न्यूमोनियामें भी खून आता है। रक्तष्ठीवीमें ज्वर, प्यास, बेहोशी, दर्द श्वास, वगेरः लक्षण होते हैं, इसमें भी होते हैं। रक्तष्ठीवीमें नेत्र लाल हो जाते है, न्यूमोनियामें भी नेत्र लाल होजाते हैं। रक्तष्ठीवीमें जीभ काली हो जाना लिखा है, न्यूमोनियामें नीली हो जाना लिखा है। यह कोई भेद नहो है। रक्तष्ठीवीमें अतिसार और खूनके चकत्ते होना बेशक अधिक लिखा है।

कोई कोई विद्वान् इसे "कर्कटक सन्निपात" भी कहते हैं। अभीतक निश्चित मत किसीने भी नहीं दिया है, फिर भी हम इसको आराम करनेवाले चन्द परीक्षित उपाय लिखते हैं। आशा है, भगवान्‌की दयासे, उनसे अनेक मौकों पर लाभ ही होगा।

इस रोगमें सन्निपातज्वरमें लिखे हुए काढे, दोषोंका विचार कर

के देने चाहियें। इसी तरह खाँसीकी दवा भी दोषानुसार देनी चाहिये। पृष्ठ ३०४ में अभिन्यास सन्निपात ज्वरकी चिकित्सामें लिखा हुआ नं० १ काकड़ासिंगी, भारङ्गी, हरड़ प्रभृति ३३ दवाओं का काढ़ा देनेसे निउमोनियामें अवश्य लाभ होता है। विचार-पूर्वक "कस्तूरी भैरव," अथवा "कफकेतु" देनेसे भी लाभ होता है। रस हमेशा विचारकर देने चाहियें,क्योंकि कभी-कभी लक्षणोंमें बहुत भेद पाया जाता है। कभी रक्तष्ठीवी केसे और कभी कर्कटककेसे लक्षण मिलते हैं, पर ऊपरका काढ़ा हर हालतमें लाभदायक साबित हुआ है, बशर्ते कि रोगीकी तूटी न हो, क्योंकि तूटीकी बूटी तो कहीं भी नहीं है।

स्वल्प कस्तूरी भैरव।

—※★※—

शुद्ध हिंगल, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध सुहागा, जावित्री, जायफल, कालीमिर्च, पीपल और असल कस्तूरी—सबको बराबर बराबर लेकर, पानीमें खरल करके, रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सन्निपात ज्वर या निउमोनियामें इन गोलियोंको बलाबल अनुसार अदरखके रसमें देना चाहिये। भयङ्कर अभिन्यास सन्निपात ज्वरमें भी "कस्तूरी भैरव" अच्छा काम देता है।

कफकेतु।



शङ्खभस्म, सोंठ, कालीमिर्च, शुद्ध सुहागा—प्रत्येक एक-एक माशे और शुद्ध मीठा विष ५ माशे—इन सबको अदरखके रसमें ३ दफा खरल करके, रत्ती रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। अदरखके रसके साथ देनेसे कफकी वजहसे रुका हुआ गला खुल जाता है। इससे भयानक सन्निपात और न्यूमोनिया आराम हो जाता है। नवीन ज्वरमें यह "कफकेतु" अच्छा काम देता है।

हो, तो शहदके साथ दो और वातपित्तज्वरमें देना हो, तो नारियलके पानी और चीनीके साथ दो।

ज्वर मुरारि।

—★—

शुद्ध हिङ्गुल, शुद्ध मीठा विष, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, भुना सुहागा और हरड—इन सबको बराबर बराबर लो और सबके वजनके बराबर शुद्ध जमालगोटेके बीज लो। सबको खरलमें डालकर पानीके साथ उड़दके दाने बराबर गोलियाँ बनालो। अगर ज्वर-रोगीको दस्त कराना हो, तो इसे अदरखके रसके साथ दीजिये। इससे ज्वर बहुत जल्दी भाग जाता है।

ज्वरान्तक रस।

—★—

शुद्ध पारा १ माशे, शुद्ध गन्धक १ माशे शुद्ध बच्छानाभ विष १ माशे, शुद्ध धतूरेके बीज ३ माशे सोंठ, १ माशे, पीपल १ माशे, कालीमिर्च ८ माशे और करञ्जेकी गिरी १ माशे—इन आठोंको तैयार करके रखलो। पहले पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर कज्जली बनालो। पीछे बाकीकी छै चीजोंको पीस छानकर, कज्जलीमें मिलाकर खरलमे सबको डालकर नीबूके रसके साथ एक दिन भर घोटो। घुट जाने पर ज्वारके दाने बराबर गोलियाँ बनालो।

सवेरे शाम एक-एक गोली अदरखके रस और शहतके साथ सेवन करानेसे इकतरा, तिजारी, चौथैया, प्रभृति आराम हो जाते हैं। अगर पित्तज्वर हो तो भुना हुआ जीरा, बडी इलायची, आमले और मिश्रीके साथ गोलियाँ देनी चाहिये, कफज्वरमे शहद और बहेड़ेके साथ देनी चाहिये, वातज्वरमे रेंडीके बीजोंकी मींगी और शहतके साथ देनी चाहिये, दाहज्वरमे कपूर और कत्थेके चूरणमे मिला कर देनी चाहिये और ऊपरसे चन्दन और गिलोयका काढा देना

चाहिये । सब तरहके ज्वरोंमे गिलोय, धनिया, नीमकी छाल, लाल-चन्दन और पद्मास—इनके काढेके साथ गोलियाँ देनी चाहियें। शीतज्वर या नये बुखारमें सोंठ, मिर्च, पीपल और गिलोयके काढेके साथ देनी चाहिये । अगर अनुपान न हो,तो केवल ताजा पानीके साथ देनी चाहियें ।

अग्निकुमार रस ।

—※※—

गोलमिर्च २ माशे, वच २ माशे, कूट २ माशे, नागरमोथा २ माशे और शुद्ध मीठा विष ८ माशे—इन सबको खरलमे डालकर, अदरखके रसके साथ घोटकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनालो ।

सन्निपातज्वरकी पहली अवस्थामे पीपलके चूर्ण और अदरखके रसके साथ दो । आमज्वरकी पहली अवस्थामे शहद और सोंठके चूर्णके साथ दो । कफज्वरमें अदरखके रसके साथ दो । जुकाममे अदरखके रसके साथ दो । खाँसीमें कण्टकारीके रसके साथ दो । श्वासमे सरसोंके तेल और पुराने गुडके साथ दो । सूजनमे दशमूलके काढेके साथ दो । अग्निमांद्यमे लौंगोंके चूर्णके साथ दो । दो गोली सेवन करनेसे तत्काल आराम होता है । सब तरहके रोगोंमे आमदोषकी शान्ति के लिये यह रस दिया जाता है । इससे अग्निकी वृद्धि होती है, इसीसे इसे "अग्निकुमार रस" कहते हैं ।
